भोट भारती ग्रन्थमाला - ४

आचार्य अभयदत्तश्री-प्रणीत

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

སློབ་དཔོན་མི་འཇིགས་སྦྱིན་གྱིས་མཛད་པའི་

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས།

भोट विद्या संस्थानम्

अनुवादक एवं सम्पादक
प्रो० सेम्पा दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी

ख्रीस्ताब्द-१९९८

बुद्धाब्द-२५४२

भोट-भारती ग्रन्थमाला - ४

आचार्य अभयदत्तश्री-प्रणीत

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

སློབ་དཔོན་མི་འཇིགས་སྦྱིན་གྱིས་མཛད་པའི་

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས།

भोट विद्या संस्थानम्

अनुवादक एवं सम्पादक

प्रो० सेम्पा दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४२ खीस्ताब्द-१९९८

भोट-भारती ग्रन्थमाला - ४

प्रधान सम्पादक : भिक्षु समदोङ् रिनपोछे

प्रथम संस्करण : ५०० प्रतियाँ, १९७९
द्वितीय संशोधित संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९८

मूल्य
सजिल्द : रु० ३००.००
अजिल्द : रु० २५०.००

© १९९८, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७
प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित

प्रकाशक
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक : शिवम् प्रिंटर्स, मलदहिया, वाराणसी

BIBLIOTHECA INDO - TIBETICA SERIES -IV

THE BIOGRAPHY OF EIGHTY FOUR SAINTS

BY

ĀCĀRYA ABHAYADATTA ŚRĪ

भोट विद्या संस्थानम्

Translated and Edited

by

Prof. Sempa Dorje

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2542 C.E. 1998

BIBLIOTHECA INDO - TIBETICA SERIES -IV

Chief Editor: ***Prof. Samdhong Rinpoche***

First Edition: 500 copies, 1979
Second revised Edition: 550 copies, 1998

Price : Hardback: Rs. 300.00
Paperback: Rs. 250.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath -221 007
Varanasi (U.P.) India, 1998.

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Shivam Printers, Maldahiya, Varanasi

प्रकाशकीय

भारत में कुछ समय से महायान बौद्ध दर्शन तथा विशेषरूप से तन्त्र के क्षेत्र में जिज्ञासु-जन चौरासी सिद्धों के जीवन-वृत्तान्त और उनके रचना आदि कार्यों के सम्बन्ध में विशेष रुचि लेते दिखलाई पड़ते हैं। इसके साथ ही हिन्दी भाषा जगत् में जब से सिद्धों के दोहे हिन्दी भाषा में प्रारम्भिक विकास-क्रम की अवस्था के रूप में माने जाने लगे तब से दोहा-कोशों तथा सिद्धों के जीवन-वृत्तान्त पर शोध किया जाने लगा। इस प्रकार सिद्धों के दोहे-स्वरूप उपदेश और उनका जीवन-दर्शन अनेक भारतीय विद्वानों के समक्ष महत्त्वपूर्ण आकर्षण-बिन्दु बन गये।

परन्तु भातीय भाषाओं में सिद्धों से सम्बन्धित बहुत कम साहित्य उपलब्ध है। अत: भोट भाषा के माध्यम से अनेक प्रामाणिक सूचनाएं एवं अध्ययन-स्रोत मिलने की आशा की गई। उपर्युक्त कारणों से प्रेरित होकर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के तत्कालीन पालिविभाग अध्यक्ष प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय के सुझाव पर संस्थान ने १९७७ ई० में "चौरासी सिद्धों का जीवन दर्शन" विषय पर एक अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी आयोजित की। उस गोष्ठी में सम्मिलित हुए विद्वानों के बीच वितरण करने के उद्देश्य से भोट तनग्युर में संगृहीत आचार्य अभयदत्तश्री द्वारा रचित "चौरासी सिद्धों का जीवन-वृत्तान्त" संस्थान के मूलशास्त्र विभाग के आचार्य श्री सेम्पा दोर्जे द्वारा हिन्दी में अनूदित कराया गया। इस अनुवाद को विद्वानों में वितरित किया गया, जिसका सभी ने यथेष्ट स्वागत किया। तदनन्तर मूल तिब्बती पाठ का भी प्रो० सेम्पा दोर्जे द्वारा संशोधित पाठ प्रस्तुत करवाके संस्थान द्वारा १९७७ ई० में प्रकाशित किया गया।

प्रथम संस्करण के समय साधन-अभाव के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण और प्रकाशन सन्तोषजनक नहीं हुआ है। उस समय के हिन्दी अंश का मुद्रण भी परिसंवाद के निश्चित समय पर निकाल देने की शीघ्रता में हुआ, जिससे उसमें कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं। उसी तरह पुस्तक के तिब्बती भाषा में भी यत्र-तत्र कुछ दोष रह गये हैं, उन सबको इस द्वितीय संस्करण में संशोधन करके प्रकाशित किया गया है।

इस प्रकाशन से भोट-भारत के अनेक सुधी जन जिज्ञासुओं को ज्ञानलाभ होगा, ऐसी आशा है।

बुद्धाब्द-२५४२
सन्-१९९८

भिक्षु सम्दोङ् रिन्पोछे
(निदेशक)

པར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།

༄༅། །འཕགས་ཡུལ་དུ་བར་སྐབས་ཤིག་ནས་ནང་པའི་ཐེག་ཆེན་གྱི་ཆོས་དང་། ལྷག་པར་གསང་སྔགས་ཀྱི་སྐོར་དོན་གཉེར་བྱེད་མཁན་ཆོས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུའི་རྣམ་ཐར་ལོ་རྒྱུས་དང་། གསུང་རྩོམ་བསྟན་བཅོས་ཁག་དང་། དོཧ་མགུར་འབུམ་སོགས་ལ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་རྒྱུའི་དོན་གཉེར་བྱེད་མཁན་མང་དག་བྱུང་འདུག་ཅིང་། ལྷག་པར་ཧིནྡིའི་སྐད་ཡིག་ལ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་མཁན་ཆོས་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དོཧའི་རིགས་རྣམས་ད་ལྟའི་ཧིནྡི་སྐད་ཡིག་འདིའི་འཕེལ་རིམ་གྱི་འགོ་འཛུགས་ཡིན་པར་ཚད་འཛིན་གྱིས་གྲུབ་ཐོབ་དང་དོཧའི་སྐོར་ལ་དོ་སྣང་ཉམས་ཞིབ་བྱེད་མཁན་ཧ་ཅང་མང་པོ་ཡོང་གི་འདུག་པ་བཅས་གང་ལྟར་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུའི་ལོ་རྒྱུས་དང་། ཁོང་ཚོའི་གསུང་མགུར་དོཧའི་རིགས་འདི་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་མང་པོའི་དོ་སྣང་ཉམས་ཞིབ་ཀྱི་གཞི་རྩ་གལ་ཆེ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་འདུག་པར་བརྟེན། བོད་སྐད་དུ་འགྱུར་བའི་བསྟན་བཅོས་ཁག་ནས་འདི་ཚོའི་སྐོར་མང་པོ་རྙེད་རྒྱུ་ཡོད་པའི་རེ་འདུན་བྱེད་མཁན་མང་བ་དང་། ལྷག་པར་ལེགས་སྦྱར་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཛགནྣཐཨུཔཱདྷྱཱཡ་མཆོག་གི་དགོངས་འཆར་ལམ་སྟོན་བཞིན། ཕྱི་ལོ་༡༩༧༧ ལོར་ "གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུའི་ལྟ་བ་དང་། རྣམ་ཐར།" ཞེས་པའི་བགྲོ་གཞིའི་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་མཁས་པའི་ཚོགས་འདུ་ཞིག་གོ་སྒྲིག་ཞུ་སྐབས། ཕྱོགས་ཕེབས་མཁས་པ་ཚོར་འགྲེམས་སྤེལ་ཞུ་ཆེད་བསྟན་འགྱུར་དུ་བཞུགས་པའི་བླ་མ་མི་འཇིགས་པ་སྦྱིན་པ་དཔལ་གྱིས་མཛད་པའི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུའི་རྣམ་ཐར་དེ

ཉིན་སྐད་དུ་བསྒྱུར་ན་ལེགས་ཚུལ་ཁྲིམས་མོལ་བྱུང་བ་ལྟར་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་སེམས་དཔའ་རྡོ་རྗེས་ཉིན་བསྒྱུར་མཛད་པ་དང་། བོད་ཡིག་ཏུ་ཡོད་པའི་རྣམ་ཐར་ང་མ་ཡང་སློབ་དཔོན་སེམས་རྡོར་མཆོག་ལ་རེ་བསྐུལ་ཞུས་པ་བཞིན་པར་རྩ་དག་ཞུས་གནང་བ་བོད་ཀྱི་སློབ་ཁང་ནས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༧ ལོར་པར་འགྲེམས་ཞུས་ཤིང་། པར་འདེབས་ཀྱི་མཐུན་རྐྱེན་ཇི་བཞིན་མ་འཛོམས་སྐབས། པར་ཐེངས་དང་པོ་སྤུས་དག་ཅིག་མ་བྱུང་བ་དང་། རྣམ་ཐར་ཉིན་བསྒྱུར་དེ་ཛ་དྲག་གིས་པར་འདེབས་ཞུས་པས་ཞུ་དག་ནན་ཏན་མ་སོང་བས་ཡི་གེ་མ་དག་པ་ཡང་མང་ཙམ་ཞིག་ལུས་འདུག་པ་མ་ཟད། དེ་མཚུངས་བོད་ཡིག་ཐོག་ཏུའང་ཞུ་དག་ཇི་བཞིན་མ་སོང་བའི་ཡི་གེ་དག་མིན་རེ་ཟུང་ལུས་འདུག་པ་རྣམས་དག་བཅོས་ཞུས་ཏེ་ད་ལམ་པར་ཐེངས་གཉིས་པ་པར་སྐྲུན་ཞུས་པ་ལགས། འདིས་ཀྱང་ཉིན་བོད་ཀྱི་སློབ་གཉེར་བ་དོན་གཉེར་ཅན་མང་དག་ལ་ཕན་ཐོགས་ཡོང་བའི་རེ་འདུན་བཅས། ལྷ་ཚ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆོས་མཛོད་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་བློ་བཟང་བསྟན་འཛིན་གྱིས་ ༡༩༩༨ ཕྱི་ཟླ་ ༥ ཚེས་ ༣༡ ལ་བྲིས།།

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय (हिन्दी) vii-viii

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

लोचाव्र का मंगलाचरण १

मंगलाचरण १

१. गुरु लूहिपा का वृत्तान्त १

२. गुरु लीलापा ,, ४

३. गुरु विरूपा ,, ६

४. गुरु डोम्बिपा ,, १३

५. गुरु शबरपा ,, १६

६. गुरु सरहपा ,, २१

७. गुरु कङ्करिपा ,, २५

८. गुरु मीनपा ,, २७

९. गुरु गोरक्षपा ,, ३०

१०. गुरु चौरङ्गीपा ,, ३४

११. गुरु वीणापा ,, ३६

१२. गुरु शान्तिपा ,, ३८

१३. गुरु तन्तिपा ,, ४२

१४. गुरु चमरिपा ,, ४६

१५. गुरु खड्गपा ,, ४९

१६. गुरु नागार्जुन ,, ५१

१७. गुरु कण्हपा ,, ५६

१८. गुरु कर्नरिपा	का वृत्तान्त	६२
१९. गुरु थकनपा	,,	६५
२०. गुरु नरोपा	,,	६८
२१. गुरु श्यालिपा	,,	७१
२२. गुरु तिल्लिपा	,,	७३
२३. गुरु चत्रपा	,,	७४
२४. गुरु भद्रपा	,,	७६
२५. गुरु धुखन्धि	,,	७९
२६. गुरु अजोगी	,,	८०
२७. गुरु कलपा	,,	८२
२८. गुरु धोबीपा	,,	८४
२९. गुरु कङ्कनपा	,,	८६
३०. गुरु कम्बलपा	,,	८८
३१. गुरु डिङ्गिपा	,,	९३
३२. गुरु भन्धेपा	,,	९६
३३. गुरु तन्तिपा	,,	९७
३४. गुरु कुकुरिपा	,,	९९
३५. गुरु कुचिपा	,,	१०१
३६. गुरु धर्मपा	,,	१०३
३७. गुरु महिलपा	,,	१०४
३८. गुरु अचिन्तपा	,,	१०६
३९. गुरु भवह (भवट्ठ)	,,	१०८
४०. गुरु नलिपा	,,	१०९
४१. गुरु भुसुकुपा	,,	१११
४२. गुरु इन्द्रभूति	,,	११७
४३. गुरु मेकोपा	,,	११९
४४. गुरु कोदलिपा	,,	१२१

४५. गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त १२४
४६. गुरु जालन्धरपा ,, १२६
४७. गुरु राहुलपा ,, १२८
४८. गुरु धर्मपा ,, १३०
४९. गुरु धोकरिपा ,, १३१
५०. गुरु मेधिनीपा ,, १३३
५१. गुरु पङ्कजपा ,, १३५
५२. गुरु घण्टापा ,, १३७
५३. गुरु जोकिपा ,, १४४
५४. गुरु चलुकपा ,, १४५
५५. गुरु गोधुरिपा ,, १४७
५६. गुरु लुचिकपा ,, १४९
५७. गुरु नगुणपा ,, १५०
५८. गुरु जयानन्द ,, १५२
५९. गुरु चपरिपा ,, १५४
६०. गुरु चम्पकपा ,, १५६
६१. गुरु भिक्षनपा ,, १५८
६२. गुरु घिलिपा ,, १५९
६३. गुरु कुम्भरिपा ,, १६१
६४. गुरु चर्बरिपा ,, १६३
६५. गुरु मणिभद्रापा ,, १६५
६६. गुरु मेखलापा ,, १६८
६७. गुरु कनकखला ,, १७०
६८. गुरु किलि-किलिपा ,, १७१
६९. गुरु कन्तलिपा ,, १७३
७०. गुरु बहुलिपा ,, १७५
७१. गुरु उडिलिपा ,, १७६

७२. गुरु कपालपा का वृत्तान्त		१७८
७३. गुरु किरपालपा	,,	१८०
७४. गुरु सागरपा	,,	१८२
७५. गुरु सर्वभक्ष	,,	१८६
७६. गुरु नागबोधि	,,	१८८
७७. गुरु दारिकपा	,,	१९१
७८. गुरु पुतलीपा	,,	१९५
७९. गुरु पनहपा	,,	१९७
८०. गुरु कोकिलपा	,,	१९८
८१. गुरु अनङ्गपा	,,	२०१
८२. गुरु लक्ष्मीकर	,,	२०३
८३. गुरु समुद्रपा	,,	२०६
८४. गुरु व्यालिपा	,,	२०८
नामावली		३२३-३३३
प्रतिमा निर्माण विधि		३३४-३५०

དཀར་ཆག

ས་བཅད།		ཤོག་གྲངས།
༡)	པར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།	vii- viii

སྙིང་གཞི།

༢)	བསྟན་པ།	xxiii
༣)	བསྟན་པ་དང་སྟོན་པའི་ངོ་བོ།	xxv
༤)	བསྟན་པའི་དབྱེ་བ།	xxvi
༥)	ཐེག་ཆེན།	xxix
༦)	རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ།	xxxii
༧)	སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ།	xxxiv
༨)	སྔགས་བསྟན་དར་རྒྱལ།	xxxviii
༩)	ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་སྔགས་དར་རྒྱལ།	xxxix
༡༠)	གྲུབ་ཐོབ།	xliii
༡༡)	གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གོ་རིམ།	xliii
༡༢)	སརཧཱ།	xlvi
༡༣)	ལཱུཧིཔཱ།	liii

༡༤)	སྙིནཔཱ།	lv
༡༥)	གྲུབ་པ་ཐོབ་ཚུལ།	lviii
༡༦)	ལྷ་གྲུབ།	lxiii
༡༧)	གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས།	lxviii
༡༨)	གྲུབ་ཐོབ་རྣམ་ཐར།	lxxi
༡༩)	གཞུང་མཛད་པ་པོ།	lxxii
༢༠)	དཔར་གསར་བསྐྲུན།	lxxiii
༢༡)	ཞུ་དག	lxxiii
༢༢)	ཚིག་དང་ཕད།	lxxv
༢༣)	ཟུར་བཀོལ།	lxxvi
༢༤)	མཚན་རིམ།	lxxvi
༢༥)	འབྲི་ཡིག	lxxvi

ལོ་རྒྱུས།

༡)	འགྱུར་ཕྱག	1
༢)	མཆོད་བརྗོད།	1
༣)	ལཱུཧིཔཱ།	2
༤)	གུརུལིལཱཔཱ།	6
༥)	གུརུཝིརཱུཔཱ།	9

༦)	ཊོམསྲིཔླ།	19
༧)	གུརུཕཡརཔླ།	24
༨)	གུརུསརདཔླ།	29
༩)	ཀཾཀརིཔླ།	33
༡༠)	སྨིནཔླ།	36
༡༡)	གོརཀླ།	41
༡༢)	ཙོརཀྐཔླ།	46
༡༣)	ཤྭིནྭཔླ།	49
༡༤)	གུརུཕྭཀྲིཔླ།	51
༡༥)	གུརུདཀྲིཔླ།	58
༡༦)	གུརུཙམརིཔླ།	63
༡༧)	གུརུཁཀྐཔླ།	67
༡༨)	ནྭགྭཛྲུན།	70
༡༩)	གུརུཀཆདཔླ།	71
༢༠)	གུརུཀཆརིཔླ།	87
༢༡)	གུརུཐཀནཔླ།	92
༢༢)	གུརུནྭརོཔླ།	96
༢༣)	གུརུཞུལིཔླ།	99
༢༤)	གུརུདིལིཔླ།	102

༢༥)	གུརུཙཏྲཔཱ།	104
༢༦)	གུརུབྷདྲཔཱ།	107
༢༧)	གུརུདྷོཾཁནཏིཔཱ།	110
༢༨)	གུརུཨཛོགིཔཱ།	112
༢༩)	གུརུཀལཔཱ།	114
༣༠)	གུརུཌོཾབྷིཔཱ།	117
༣༡)	གུརུཀཾཀནཔཱ།	119
༣༢)	གུརུཀམྦལཔཱ།	123
༣༣)	གུརུཏེངྒིཔཱ།	130
༣༤)	གུརུབྷནྡྷེཔཱ།	134
༣༥)	གུརུཏནྟེཔཱ།	137
༣༦)	གུརུཀཀྐུརིཔཱ།	139
༣༧)	གུརུཀུཙིཔཱ།	142
༣༨)	གུརུདྷརྨཔཱ།	145
༣༩)	གུརུམཧིཔཱ།	146
༤༠)	གུརུཨཙིནྟཔཱ།	148
༤༡)	གུརུབབྷཧི།	151
༤༢)	གུརུནལིནཔཱ།	153
༤༣)	གུརུབྷུསུཀཔཱ།	155

༤༤)	གུརུཨིནྡྲབྷུཏི།	163
༤༥)	གུརུམེཀོཔཱ།	166
༤༦)	གུརུཀོདལིཔཱ།	168
༤༧)	གུརུཀཾཔརིཔཱ།	173
༤༨)	གུརུཛཱལནྡྷར།	176
༤༩)	གུརུརཱཧུལ།	177
༥༠)	གུརུདྷརྨཔཱ།	180
༥༡)	གུརུདྷོཀརིཔཱ།	182
༥༢)	གུརུམེདྷིནི།	184
༥༣)	གུརུཔཾཀཛ།	186
༥༤)	གུརུགྷཎྜཔཱ།	188
༥༥)	གུརུཛོགིཔཱ།	198
༥༦)	གུརུཙེལུཀཔཱ།	199
༥༧)	གུརུགུཾཌརིཔཱ།	201
༥༨)	གུརུལུཙིཀཔཱ།	203
༥༩)	གུརུནགུཎཔཱ།	205
༦༠)	གུརུཛཡཱནནྟ།	207
༦༡)	གུརུཙཔརིཔཱ།	210
༦༢)	གུརུཙམཔཱཀ།	213

༦༣)	གུརུདྷིཀྵནཔཱ།	215
༦༤)	གུརུདྷིལིཔཱ།	217
༦༥)	གུརུཀུཀྐརིཔཱ།	219
༦༦)	གུརུཛཀྐརིཔཱ།	221
༦༧)	གུརུམཧིདྷདྲཱ།	225
༦༨)	གུརུམེཁལཱ།	228
༦༩)	གུརུཀནཁལཱ།	231
༧༠)	གུརུཀལཀལ།	232
༧༡)	གུརུཀནྟལི།	234
༧༢)	གུརུདྷཧུལི།	236
༧༣)	གུརུཨུདྷིལིཔཱ།	238
༧༤)	གུརུཀཔཱལ།	240
༧༥)	གུརུཀིརཔཱལ།	242
༧༦)	གུརུསཱགར།	245
༧༧)	གུརུསརྦབྷཀྵ།	250
༧༨)	གུརུནཱགབོདྷི།	252
༧༩)	གུརུདཱརིཀཔཱ།	256
༨༠)	གུརུཔུཏལིཔཱ།	261
༨༡)	གུརུཔནཧཔཱ།	263

༨༢)	གུརུཀཽཀིལཔཱ།	264
༨༣)	གུརུཨཙིཾགཔཱ།	267
༨༤)	གུརུལཀྵམིཀར།	270
༨༥)	གུརུསམུདྲ།	275
༨༦)	གུརུབྱཱལིཔཱ།	276

ཟུར་བཀོལ།

༡)	གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་བྲིས་ཡིག	281- 322

संकेत विवरण

१. अ० -	अमरकोष,
२. इति० -	इतिहास, छोस्-जुङ्
३. ञिङ्मा० -	ञिङ्मा- सम्प्रदाय के,
४. डुब्-थब्स कुनतु० -	साधना-विधि-समुच्च्य,
५. तन-ग्युर० -	भारतीय आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों का भोट भाषा में अनुदित ग्रन्थ-संग्रह।
६. तारा० ई० -	तारानाथ का भारत में सद्धर्म का इतिहास,
७. ता० ई० -	,, ,, ,,
८. ति० काग्युर०-	बुद्ध-वचन तिब्बती भाषा में अनुदित,
९. द्र० -	द्रष्टव्य
१०. दिल्ली० फो० -	दिल्ली से फोटो-ऑफसाईट द्वारा मुद्रित।
११. दोहा-वृत्ति० -	आचार्य वीरप्रभ द्वारा रचित सिद्धों की दोह-वृत्ति।
१२. दुजोम्० -	दुजोम रिन्पोछे कृत,
१३. दोङ्-थोग्० छो० -	दोङ् थोग् रिन्पोछे कृत छोस् जुङ्
१४. पुट० -	भाग, जैसे 'क' भाग, 'ख' भाग,
१५. पद्म० कर०-	कुन खेन पद्मा करपो कृत सद्धर्म- इतिहास,
१६. पद्० इति० -	,, ,, ,,
१७. पद्० कर०-	,, ,, ,,
१८. पद् छो०-	,, ,, ,,
१९. बुस्तोन०-	बुस्तोन रिनछेन डुब कृत,
२०. राहुल० -	राहुल सांकृत्यायन कृत
२१. पुरातत्त्व नि०-	पुरातत्त्व निबन्धावली,
२२. पुरातत्त्व नि०-	,, ,, ,,
२३. पुरा० नि०-	,, ,, ,,
२४. रा० पुरा०-	,, ,, ,,

བརྡ་རྟགས།

༡	ན།	མདུན།
༢	བ	རྒྱབ།
༣	པེ། ཉི།	པེ་ཅིང་པར་མ་ལས། ཉི་ཧོང་གློག་པར་དུ་སྤར་བ།
༤	པད་ཚོས།	ཀུན་མཁྱེན་པདྨ་དཀར་པོའི་ཆོས་འབྱུང་།
༥	སྒྲུབ་ཀུན།	སྒྲུབ་ཐབས་ཀུན་བཏུས།
༦	འཇུག་འགྲེལ།	ཟླ་བའི་འཇུག་པ་རང་འགྲེལ།
༧	བཞི་འགྲེལ།	ཟླ་གྲགས་ཀྱི་བཞི་བརྒྱ་པའི་འགྲེལ་པ།
༨	སྡེ།	སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར།
༩	འོག	ཤོག་གྲངས་འོག་མ།
༡༠	གོང་།	ཤོག་གྲངས་གོང་མ།
༡༡	ཡ།	ཀ་རྟགས་ ཡ།
༡༢	ཤོག	ཤོག་གྲངས།
༡༣	རཱཧུལ།	རཱཧུལསཾཀྲྀཏྱཱཡན།

གླེང་གཞི།

༄༅། །དེ་ལ་འདིར་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་གྲུབ་པ་བཀྲེས་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་བ་དང་། དེ་དག་གི་གྲུབ་པའི་མཐའ་དང་། ནང་གི་རྟོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཇི་ལྟ་བའི་གནས་སྣང་ས་ནི་གོ་འཕང་མཆོག་གི་ས་ལ་གནས་པའི་སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ཕན་ཚུན་ཁོ་ནའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་གྱི། སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་དཔག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པར་མྱོང་བས་གྲུབ་ལ། འོན་ཀྱང་དམ་པ་གོང་མ་རྣམས་ཀྱི་གསུང་དང་། མན་ངག་དང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་ཁངས་ལྡན་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས་གཤམ་གསལ་རྣམ་ཐར་དུ་འཁོད་པའི་བརྗོད་བྱའི་གླེང་གཞི་ཅུང་ཟད་ཅིག་བཀོད་པ་ལ། དེ་ནི་བསྟན་པ་སྤྱི་དང་། བྱེ་བྲག་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ལམ་ལས་གྲུབ་པ་བཀྲེས་པའི་ཚུལ་དང་། གྲུབ་པ་བཀྲེས་ནས་བསྟན་པ་ལ་བྱ་བ་མཛད་ཚུལ་ཏེ། དོན་མདོར་བསྡུས་ན་གསུམ་དུ་འདུས་སོ།།

བསྟན་པ — སྤྱིར་བསྟན་པ་ཞེས་པ་མིང་དང་བྱ་ཚིག་གཉིས་ལས་བྱ་ཚིག་ཡིན་ཞིང་། བྱ་ཚིག་གང་ཡིན་ལ་བྱ་ཡུལ་དགོས་པས། བསྟན་པ་ཞེས་པའི་ཚིག་གི་བརྗོད་བྱ་ལ་ཡང་དེ་གསུམ་ཡོད་དགོས། དེ་ཡང་ཨུ་རྒྱལ་སྟོན་པོས་རང་གཟུགས་བསྟན་ཞེས་པ་དང་། རང་རིག་རང་གསལ་ཞེས་པ་ལྟ་བུའི་བྱ་བྱེད་ཐ་དད་མེད་པ་དང་། བྱ་བ་དང་བྱ་ཡུལ་ཐ་དད་ཐ་དད་མེད་པ་དང་། ཤེས་ ཀྱིས་ལམ་བསྟན་ཞེས་པ་ལྟ་བུའི་བྱ་བྱེད་སོགས་ཐ་དད་པའི་རྣམ་གཞག་སྒྲ་རིག་པས་འདིར་མི་སྤྲོས་ལ། འདིར་ནི་སྤྱིར་ལས་བྱུང་བ་མང་ཡང་སྐབས་མ་ཡིན་

སྒྲས་འཇུག་ཚུལ་ལ་ སྒྲ་ཡངས་པ་དང་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་འཇུག་ཚུལ་གཉིས་ལས། འདིར་སྒྲའི་འཇུག་པ་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བསྟན་པ་ཞེས་པ་ནི་ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་སྣང་ངོར་གྱི་གནས་གསལ་བར་བྱེད་པ་དང་། དེ་ལ་འཇུག་པའི་འཇུག་ངོགས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །ཡང་ན་རྒྱུད་འདུལ་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །

དེ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྐད་དོད་ལ་ཤཱསན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་ལ། དེ་ནི་'ཤཱསུ་'ཞེས་པའི་བྱིངས་ལ་ལྱུཊ྄་ཞེས་པའི་བྱེད་རྐྱེན་སྦྱིན་པས་གྲུབ་ལ། ཤཱསུ་ཞེས་པའི་བྱིངས་དོན་ནི་སྒྲ་པཱ་ཎི་པ་ལས་"ཤཱསུ་ཨནུ་ཤིཥྚཽ་།ཤཱསུ་རྗེས་སུ་གདམས་པ་ལའོ།།" ཞེས་པ་ལྟར་སློབ་པ། སྐྱོང་བ། བཀའ་བསྒོ་བ། ངེས་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པའམ་བྱ་བ་སྟེ། ལམ་ལ་སོགས་པ་སྟོན་པ། (ཁྲིམས་) ནང་དུ་བཙུད་པ། དབང་དུ་བྱེད་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ལས་སུ་རུང་བར་བྱེད་པ་དང་བྱ་བ་དང་བྱས་པ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། དེ་ཡང་དགོས་པ་དང་། མཐར་ཐུག་གི་དགོས་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་གིས། ཆོས་དང་། སྲིད་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལུགས་ཀྱི་ 'བསྟན་པ་'སོགས་མང་དུ་ཡོད་པ་ལ། འདིར་ནི་ཆོས་ཀྱི་དམ་པ་མཐར་ཐུག་གི་མྱང་འདས་དང་། དེ་ཐོབ་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། བསྟན་པ་ཞེས་པའི་

1 ''शासु अनुशिष्टौं'' – १०७५, अदादिगण. पा. ।

འདི་སྒྲ་པཱ་ཎི་པའི་ཨད་ལ་སོགས་པའི་བྱིངས་ཚིག་ནང་གི་བྱིངས་གྲངས་ ༡༠༧༥ ལ་གཟིགས་དགོས། གྲུབ་མཐའ་ཟླ་འོད་དུ་ལེའུ་ཚན་འཁྲུགས་ཡོད་པས་ལེ་ ༩༩ པར་གཟིགས་དགོས།

རྣམ་གཞག་བྱེད་པ་ཡིན་པས་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་བསྟན་པའོ།། དེས་ན་འདིར་བྱེད་པ་པོ་ནི་སྟོན་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། བསྟན་པ་ནི་ལུང་དོར་དགག་སྒྲུབ་ཀྱི་གཞི་ལམ་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསྟན་ཡུལ་ནི་གདུལ་བྱའི་སྐྱེས་བུ་སྤྱིའོ།། ཡང་ན་གང་ཟག་གམ་སྒྲུབ་པ་པོ་བྱེ་བྲག་པ་དང་། ཁྱད་པར་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེའི་རྒྱུད་ཀྱི་བདག་མེད་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་སོགས་སྟོན་པ་དང་། དེས་ཉོན་མོངས་དང་སྒྲིབ་སོགས་ལ་དབང་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་ནི་བསྟན་པ་དང་། གཞི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ལྟ་བུ་སྒྲུང་བྱའམ་བསྟན་པའི་བྱ་བ་འཇུག་པའི་ཡུལ་ཡིན་པ་སོགས་རྒྱ་ཆེར་སྤྲུར་དུ་རུང་ངོ་[1]།།

བསྟན་པ་དང་སྟོན་པའི་ངོ་བོ།— བསྟན་པ་དང་དེ་སྟོན་པའི་སྟོན་པ་ནི་དཔལ་ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པས་—

ལུང་དང་དོར་བྱའི་དེ་ཉིད་ནི།།
ཐབས་དང་བཅས་པ་རིག་མཛད་པ།།
གང་དེ་ཚད་མ་ཉིད་འདོད་ཀྱི།།
ཐམས་ཅད་རིག་མཛད་མ་ཡིན་ནོ།[2]།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ལུང་དོར་གྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཐབས་དང་བཅས་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་། དེ་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བའི་དོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཟིགས་

1 འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྒྲ་བྱ་ཚིག་གི་དབང་དུ་བྱས་ཀྱི་བྱ་ཚིག་མིང་དུ་འདོད་པ་ལྟར་ན་གོ་བ་གཞན་དུ་ཤེས་དགོས་སོ།།

2 (༣/ ༣༣/ ཚད་རྣམ་)

ཤིང་། གཟིགས་པ་ལྟར་བརྗེ་བས་གཞན་ལ་སྟོན་པ་ལ་དབང་ཕྱུག་པ་དེ་ནི་འདིར་སྟོན་པའོ།།

བསྟན་པའི་དབྱེ་བ།— དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་དབྱེ་ན་མང་དུ་ཡོད་ཀྱང་། མདོར་བསྡུས་ན་དེ་ནི་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་མཁས་མཆོག་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་—

སྟོན་པའི་དང་ཆོས་རྣམས་གཉིས་ཏེ།།
ལུང་དང་རྟོགས་པའི་བདག་ཉིད་དོ།།
དེ་འཛིན་བྱེད་པ་སྨྲ་བྱེད་དང་།།
སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།།[1]

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི[2]བསྟན་པ་དམ་པའི་ཆོས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ལུང་སྡེ་སྣོད་གསུམ་ལྟ་བུ་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་ལྟ་བུ་རྟོགས་པའི་ཆོས་སམ་བསྟན་པའོ།།[3]

---

1) (༨ / ༣༩ / མངོན་མཛོད་)

2) ཀྱི་ཞེས་འགྲེལ་བའི་སྒྲ་ཁོ་ན་ཐམས་ཅད་དུ་བཀོད་འདུག་པས་འདིར་ཡང་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན་ལ། གོང་དུ་སྒྲ་བཤད་པ་རྣམས་ནི་སྒྲའི་བྱིངས་ལས་འཕྲོས་པའི་བཤད་པ་ཡིན་ཅིང་། དེ་ཡང་བསྟན་པ་ཞེས་པ་བྱ་ཡུལ་ཅན་གྱི་བྱ་བ་ལ་བསམ་པ་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་ཚིག་མིང་རྐྱང་གི་དབང་དུ་བྱས་སོ། །དེས་ན་འགྲེལ་སྒྲ་ཡང་འཐད་པ་ཉིད་དོ།།

3 (ཀ) तत्रागमः सूत्रविनयाभिधर्माः अधिगमो बोधिपक्ष्याः (अभि० को० वृत्ति० पृ० ११८१) ।
(ཁ)དེ་ལ་ལུང་གི་ཆོས་ནི་མདོ་སྡེ་དང་། འདུལ་བ་དང་། མངོན་པའི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་པ་ནས། "མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ཆོས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་སུམ་ཅུ་རྩ་

དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་འཛིན་པའི་ཚུལ་ལ་དང་པོ་ལུང་གི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་ནི། ལུང་བཞིན་དུ་ཤེས་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་བསམ་པས་གཞན་ལ་སྟོན་པའོ།།[1] གཉིས་པ་རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་སོ་བདུན་བསླབ་པ་གསུམ་གྱིས་བསྡུས་པ་རྣམས་རང་གི་རྒྱུད་ལ་སྒྲུབ་ཅིང་ཉམས་སུ་ལེན་པར་བྱེད་པ་རྣམས་སོ།།

དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་ཡང་དུས་ཀྱི་རིམ་པས་དབྱེ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འབུམ་པའི་འགྲེལ་ཆེན་གནོད་འཇོམས་ལས་གསུངས་པ་ལྟར། སྤྱི་ཚན་བཞི་དང་། ལོའུ་བཅུ་རུ་དབྱེ་བ་ཡིན་ལ། སྤྱི་ཚན་བཞི་ནི་འབྲས་བུའི་དུས་དང་། སྒྲུབ་པའི་དུས་དང་། ལུང་གི་དུས་དང་། རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་དུས་ཏེ་[2]བཞིའོ།།

ལོའུ་བཅུ་— ནི་དང་པོ་འབྲས་བུའི་དུས་དེ་དེ་ལ་ཡང་དགྲ་བཅོམ་པའི་ལོའུ། ཕྱིར་མི་འོང་གི་ལོའུ། རྒྱུན་ཞུགས་ཀྱི་ལོའུ་དང་གསུམ་མོ། །གཉིས་པ་ནི་སྒྲུབ་པའི་ལོའུ་སྟེ། དེ་ལ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལོའུ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལོའུ།

བདུན་དང་། ཇེས་སུ་རྣམ་གྲོལ་གྱི་ལམ་ཟད་པ་དང་བཅས་པ་སྟེ།" ཞེས་དང་། "དེ་ལྟར་ན་བསྟན་པ་དམ་པའི་ཆོས་ནི། ལུང་དང་། སྒྲུབ་པ་དང་། འབྲས་བུའི་ཆོས་གསུམ་མོ།།" མཆིམས་མཛོད། ཤོག ༨༣༦ བོད་དཔར།

1 'ལུང་གི་བསྟན་པ་དེ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལུང་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་སྨྲ་བར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།' མཛོད་ཊཱིཀ་ཐར་ལམ། ཤོག ༣༤༤ །

2 'ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ལོའུ། སྒྲུབ་པའི་ལོའུ། ལུང་གི་ལོའུ། རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་ལོའུ་དང་བཞི།' མཛོད་ཊཱིཀ་ཐར་ལམ། ཤོག ༣༤༤.

སྒྲས་འཇུག་ཚུལ་ལ་ སྒྲ་ཡངས་པ་དང་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་འཇུག་ཚུལ་གཉིས་ལས། འདིར་སྒྲའི་འཇུག་པ་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བསྟན་པ་ཞེས་པ་ནི་ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་སྣང་ངོར་གྱི་གནས་གསལ་བར་བྱེད་པ་དང་། དེ་ལ་འཇུག་པའི་འཇུག་ངོགས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །ཡང་ན་རྒྱུད་འདུལ་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །

དེ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྐད་དོད་ལ་ཤཱསན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་ལ། དེ་ནི་'ཤཱསུ་'ཞེས་པའི་བྱིངས་ལ་ལྱུཊ་ཞེས་པའི་བྱེད་རྐྱེན་སྦྱིན་པས་གྲུབ་ལ། ཤཱསུ་ཞེས་པའི་བྱིངས་དོན་ནི་སྒྲ་པཱ་ཎི་པ་ལས་"ཤཱསུ་ཨནུ་ཤིཥྚཽ་།ཤཱསུ་རྗེས་སུ་གདམས་པ་ལའོ།།" ཞེས་པ་ལྟར་སློབ་པ། སྐྱོང་བ། བཀའ་བསྒོ་བ། ངེས་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པའམ་བྱ་བ་སྟེ། ལམ་ལ་སོགས་པ་སྟོན་པ། (ཁྲིམས་) ནང་དུ་བཅུད་པ། དབང་དུ་བྱེད་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ལས་སུ་རུང་བར་བྱེད་པ་དང་བྱ་བ་དང་བྱས་པ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། དེ་ཡང་དགོས་པ་དང་། མཐར་ཐུག་གི་དགོས་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་གིས། ཆོས་དང་། སྲིད་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལུགས་ཀྱི་ 'བསྟན་པ་'སོགས་མང་དུ་ཡོད་པ་ལ། འདིར་ནི་ཆོས་ཀྱི་དམ་པ་མཐར་ཐུག་གི་མྱང་འདས་དང་། དེ་ཐོབ་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། བསྟན་པ་ཞེས་པའི་

1 “शासु अनुशिष्टौ” - १०७५, अदादिगण. पा. ।

འདི་སྒྲ་པཱ་ཎི་པའི་ཨད་ལ་སོགས་པའི་བྱིངས་ཚིག་ནང་གི་བྱིངས་གྲངས་ ༡༠༧༥ ལ་གཟིགས་དགོས། གྲུབ་མཐའ་ཀློ་འོད་དུ་ལེའུ་ཚན་འཁྲུགས་ཡོད་པས་ལེ་ ༩༩ པར་གཟིགས་དགོས།

རྣམ་གཞག་བྱེད་པ་ཡིན་པས་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་བསྟན་པའོ།། དེས་ན་འདིར་བྱེད་པ་པོ་ནི་སྟོན་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། བསྟན་པ་ནི་གླང་དོར་དགག་སྒྲུབ་ཀྱི་གཞི་ལམ་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསྟན་ཡུལ་ནི་གདུལ་བྱའི་སྐྱེས་བུ་སྤྱིའོ།། ཡང་ན་གང་ཟག་གམ་སྒྲུབ་པ་པོ་བྱེ་བྲག་པ་དང་། ཁྱད་པར་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེའི་རྒྱུད་ཀྱི་བདག་མེད་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་སོགས་སྟོན་པ་དང་། དེས་ཉོན་མོངས་དང་སྒྲིབ་སོགས་ལ་དབང་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་ནི་བསྟན་པ་དང་། གཞི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ལྟ་བུ་སྦྱང་བྱའམ་བསྟན་པའི་བྱ་བ་འཇུག་པའི་ཡུལ་ཡིན་པ་སོགས་རྒྱ་ཆེར་སྤྲར་དུ་རུང་ངོ་[1]།།

བསྟན་པ་དང་སྟོན་པའི་ངོ་བོ།— བསྟན་པ་དང་དེ་སྟོན་པའི་སྟོན་པ་ནི་དཔལ་ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པས —

གླང་དང་དོར་བྱའི་དེ་ཉིད་ནི།།
ཐབས་དང་བཅས་པ་རིག་མཛད་པ།།
གང་དེ་ཚད་མ་ཉིད་འདོད་ཀྱི།།
ཐམས་ཅད་རིག་མཛད་མ་ཡིན་ནོ།[2]།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གླང་དོར་གྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཐབས་དང་བཅས་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་། དེ་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བའི་དོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཟིགས་

1 འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྒྲ་ཚིག་གི་དབང་དུ་བྱས་ཀྱི་བྱ་ཚིག་མིང་དུ་འདོད་པ་ལྟར་ན་གོ་བ་གཞན་དུ་ཤེས་དགོས་སོ།།

2 (༢/ ༣༣/ ཚད་རྣམ་)

ཤིང་། གཟིགས་པ་ལྟར་བརྗེ་བས་གཞན་ལ་སྟོན་པ་ལ་དབང་ཕྱུག་པ་དེ་ནི་འདིར་སྟོན་པའོ།།

བསྟན་པའི་དབྱེ་བ།— དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་དབྱེ་ན་མང་དུ་ཡོད་ཀྱང་། མདོར་བསྡུས་ན་དེ་ནི་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་མཁས་མཆོག་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་—

སྟོན་པའི་དང་ཆོས་རྣམས་གཉིས་ཏེ།།
ལུང་དང་རྟོགས་པའི་བདག་ཉིད་དོ།།
དེ་འཛིན་བྱེད་པ་སྨྲ་བྱེད་དང་།།
སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།།[1]

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་[2]བསྟན་པ་དམ་པའི་ཆོས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ལུང་སྡེ་སྣོད་གསུམ་ལྟ་བུ་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་ལྟ་བུ་རྟོགས་པའི་ཆོས་སམ་བསྟན་པའོ།།[3]

---

1) (༨ / ༣༩ / མངོན་མཛོད་)

2) ཀྱི་ཞེས་འབྲེལ་བའི་སྒྲ་ཁོ་ན་ཐམས་ཅད་དུ་བཀོད་འདུག་པས་འདིར་ཡང་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན་ལ། གོང་དུ་སྒྲ་བཤད་པ་རྣམས་ནི་སྒྲའི་རྩིངས་ལས་འཕྲོས་པའི་བཤད་པ་ཡིན་ཅིང་། དེ་ཡང་བསྟན་པ་ཞེས་པ་བྱ་ཡུལ་ཅན་གྱི་བྱ་བ་ལ་བསམ་པ་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་ཚིག་མིང་རྐྱང་གི་དབང་དུ་བྱས་སོ། །དེས་ན་འབྲེལ་སྒྲ་ཡང་འཐད་པ་ཉིད་དོ།།

3 (ཀ) तत्रागमः सूत्रविनयाभिधर्माः अधिगमो बोधिपक्ष्याः (अभि० को० वृत्ति० पृ० ११८१)।
(ཁ)དེ་ལ་ལུང་གི་ཆོས་ནི་མདོ་སྡེ་དང་། འདུལ་བ་དང་། མངོན་པའི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་པ་ནས། "མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ཆོས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་སུམ་ཅུ་རྩ་

དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་འཛིན་པའི་ཚུལ་ལ་དང་པོ་ལུང་གི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་ནི། ལུང་བཞིན་དུ་ཤེས་ནས་ཉིན་མཚངས་པ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་བསམ་པས་གཞན་ལ་སྟོན་པའོ།།[1] གཉིས་པ་རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་སོ་བདུན་བསླབ་པ་གསུམ་གྱིས་བསྡུས་པ་རྣམས་རང་གི་རྒྱུད་ལ་སྒྲུབ་ཅིང་ཉམས་སུ་ལེན་པར་བྱེད་པ་རྣམས་སོ།།

དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་ཡང་དུས་ཀྱི་རིམ་པས་དབྱེ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འབུམ་པའི་འགྲེལ་ཆེན་གནོད་འཇོམས་ལས་གསུངས་པ་ལྟར། སྡེ་ཚན་བཞི་དང་། ལྔའུ་བཅུ་རུ་དབྱེ་བ་ཡིན་ལ། སྡེ་ཚན་བཞི་ནི་འབྲས་བུའི་དུས་དང་། སྒྲུབ་པའི་དུས་དང་། ལུང་གི་དུས་དང་། རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་དུས་ཏེ་[2]བཞིའོ།།

ལྔའུ་བཅུ་— ནི་དང་པོ་འབྲས་བུའི་དུས་དེ་དེ་ལ་ཡང་དགྲ་བཅོམ་པའི་ལྔའུ། ཕྱིར་མི་འོང་གི་ལྔའུ། རྒྱུན་ཞུགས་ཀྱི་ལྔའུ་དང་གསུམ་མོ། །གཉིས་པ་ནི་སྒྲུབ་པའི་ལྔའུ་སྟེ། དེ་ལ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྔའུ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལྔའུ།

བདུན་དང་། རྗེས་སུ་རྣམ་གྲོལ་གྱི་ལམ་ཟད་པ་དང་བཅས་པ་སྟེ།" ཞེས་དང་། "དེ་ལྟར་ན་བསྟན་པ་དམ་པའི་ཆོས་ནི། ལུང་དང་། སྒྲུབ་པ་དང་། འབྲས་བུའི་ཆོས་གསུམ་མོ།།" མཆིམས་མཛོད། ཤོག ༢༣༧ བོད་དཔར།

1 'ལུང་གི་བསྟན་པ་དེ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལུང་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་སྨྲ་བར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།' མཛོད་ཊཱིཀ་ཐར་ལམ། ཤོག ༣༨༨ །

2 'ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ལྔའུ། སྒྲུབ་པའི་ལྔའུ། ལུང་གི་ལྔའུ། རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་ལྔའུ་དང་བཞི།' མཛོད་ཊཱིཀ་ཐར་ལམ། ཤོག ༣༨༨.

ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །གསུམ་པ་ལུང་གི་ལེའུ་ལ་ཡང་། མངོན་པའི་ལེའུ། མདོ་སྡེའི་ལེའུ། འདུལ་བའི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །བཞི་པ་ལ་རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་ལེའུ་སྟེ་ལེའུ་བཅུའོ། །འདི་དག་ལེའུ་རེ་རེ་ལ་འང་ལོ་ལྔ་བརྒྱ་པ་ཕྲག་རེ་སྟེ་ལྔ་བརྒྱ་པ་ཕྲག་བཅུའོ།།

དེ་ལྟ་བུའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དེ་ཡང་། སྟོན་པ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ། ཞག་བདུན་ཕྲག་བདུན་གྱི་རྗེས་སུ་ཡུལ་ཝཱ་རཱཎསཱིར་ཁྲོན་ལ། ལྔ་སྡེ་ལ་བདེན་བཞི་ཆོས་འཁོར་གསུངས་ཏེ། ཀུན་ཤེས་ཀཽཎྜི་ནྱའི་རྒྱུད་ལ་ཟག་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེས་པ་ན། སྟོན་པའི་བསྟན་པ་གདུལ་བྱའི་རྒྱུད་ལ་དང་པོར་འཕོས་པ་ཡིན་ལ། དེ་ནས་བཟུང་ལོ་ཞེ་ལྔའི་རིང་སྟོན་པ་རང་ཉིད་ཀྱིས་བསྟན་པ་བསྐྱངས། ཆོས་འཁོར་རིམ་པ་གསུམ་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་རིམ་པ་ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པ་རྫོགས་པར་བསྟན། དེ་ནས་བསྟན་པ་འོད་སྲུང་ཆེན་པོ་ལ་གཏད་དེ། ཡུལ་རྩ་ཅན་དུ་སྐུའི་བཀོད་པ་བསྡུས་ཏེ་གཉིས་སུ་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་སུ་ཞུགས་སོ།།

དེའི་རྗེས་སུ་འོད་སྲུང་ཆེན་པོས་བཀའ་བསྡུ་བ་དང་པོ་མཛད། དེ་ནས་བསྟན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་གཏད་དེ་འོད་སྲུང་ཆེན་པོ་ཞི་དབྱིངས་སུ་ཐིམ། ཀུན་དགའ་བོས་ལོ་མང་དུ་ཐེག་པ་སྤྱིའི་བསྟན་པ་བསྐྱངས་ཤིང་། ཕྱིས་བྱུང་གི་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ལས་ཀུན་དགའ་བོས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་བསྐྱངས་པའི་ཚུལ་མི་གསལ་ཡང་། མདོ་སྡེ་ལས་སྟོན་པ་འདས་ནས་ལོ་བཞི་བཅུའི་རིང་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་སོགས་པས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་སྐྱོང་བར་གསལ་བར་གསུངས་

ཡོད་པས།། དེ་ཁུངས་སུ་བྱས་ན་སྟོན་པ་འདས་རྗེས་ཀུན་དགའ་བོས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་ཡང་སྐྱོང་བར་མཛད་ཅིང་། དེའི་རྗེས་སུ་རེ་ཞིག་རིམ་གྱིས་ཐེག་ཆེན་ནུབ་པ་ལྟར་སོང་ཡང་། ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་དར་བར་གནས་ཤིང་། འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་ཡང་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བྱུང་བར་ལུང་ལས་ཤེས་སོ།[2]།

ཐེག་ཆེན་ — ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྒྱུད་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་དང་བཅས་པ་རྣམས་སུ་ ‘ཐེག་པ་ཆེན་པོ’ ཞེས་པ་སྟོན་པ་མཆོག་གི་སྤྲུལ་སྐུས་དངོས་སུ་མ་གསུངས་པ་དང་། ཕྱིས་སུ་སློབ་དཔོན་གཞན་དང་། སྟོན་པ་གཞན་གྱིས་བྱས་པའི་ཚུལ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་གསལ། ཕྱིས་བྱུང་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་། སྡེ་པ་འགའ་ཞིག་གིས་དེ་ལྟར་འདོད་པ་ནི་རང་རང་གི་འདོད་མོས་ཀྱི་ཚད་མ་ཉི་ཚེ་བ་རེ་ལ་བརྟེན་པར་སྣང་བས། ཡིད་ཆེས་པར་ཅུང་ཟད་དཀའ་བ་དང་། ཡང་ཐེག་ཆེན་གྱི་ལྟ་གྲུབ་ཀྱི་དངོས་འབྲེལ་གནས་སྣང་དང་། དད་པའི་སྟོབས་འདྲེན་ཐབས་སུ་བཤད་པའི་བཏམ་རྒྱུད་རྣམས་ཉ་དང་ཉུང་མ་བསྲེ་བའི་དཔེ་ལྟར་དུ་སོང་ནས། ཡིད་ཆེས་པའི་གཞུང་ཁུངས་མ་མང་པོ་ཞིག་ཀྱང་ཐེ་

---

1 ཛ་བོ་ཆེའི་མདོ་དང་། མདོ་སྡེ་སྤྲིན་ཆེན་པོ་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་གཉིས་པ་སོགས་ - བཀའ་འགྱུར་དུ་གསལ། འདིར་རྒྱའི་མཁན་པོ་ཧྭེན་ཙང་གི་རྒྱ་གར་གནས་སྐོར་སོགས་ཀྱི་ཡིག་དེབ་ཏུ་སྟོན་པ་འདས་རྗེས་ལོ་མ་བདུན་པའི་རི་ཕུག་ཏུ་བཀའ་བསྡུས་པ་དང་པོའི་སྐབས་སུ་རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཉིད་དུ་ཐེག་ཆེན་གྱི་བཀའ་བསྡུ་བ་དང་པོ་མཛད་པ་དང་། ས་དེར་མཆོད་རྟེན་ཞིག་ཡོད་པར་མཐོང་ཚུལ་སོགས་གསལ་བར་བྲིས་འདུག “इस स्थान पर एक बड़ा भारी सभा ” ह्वेन सं० या वि० पृ० ३१३ हि० अनु० ।

2 ལུང་ཕྲན་ཚེགས། - འདུལ་བ - བཀའ་འགྱུར ।

ཆོམ་གྱི་རྒྱུར་སོང་བའང་མང་མོད། དེ་དག་བསལ་དགོས་ནའང་སྐབས་མ་ཡིན་པས་རེ་ཞིག་བཏང་སྙོམས་སུ་བཞག་པར་བྱའོ།།

དེ་ལ་འདིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལུང་སྡེ་སྣོད་གསུམ་དང་། དེ་དག་གི་བརྗོད་བྱར་གྱུར་པའི་ས་བཅུ་ལམ་ལྔ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་རྣམ་གཞག་རྣམས་ནི་སྟོན་པས་ཆོས་འཁོར་རིམ་པ་གསུམ་དུ་བསྐོར་བའི་ཚུལ་རྣམས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོའི་གཞུང་།ཡན་ལག་དང་བཅས་པ་རྣམས་སུ་ཤིན་ཏུ་གསལ་ལ། སྐྱེས་རབས་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡེ་སྣོད་མང་པོ་ཞིག་ནི་གནས་བརྟན་སྡེ་པ་སོགས་སྡེ་པ་སོ་སོའི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་གྱི་ནང་དུའང་རྒྱས་པར་བཞུགས་ཡོད་ལ། མདོ་སྡེ་ཚངས་པའི་དྲྭ་བ་དང་། རྟེན་འབྲེལ་སྙིང་པོ་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ་སོགས་ཀྱང་དེང་སང་དངོས་ཡོད་གནས་བརྟན་པའི་སྡེ་སྣོད་ན་བཞུགས་ཡོད་པས་[2] སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་དང་། བྱང་སེམས་ཀྱི་བསླབ་བྱ་ཕྱིན་དྲུག་གི་ཉམས་ལེན་སོགས་སྡེ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྡེ་སྣོད་ལ་ཡོད་པར་སྣང་བས་ཐེག་ཆེན་བསྟན་པ་ཕྱི་དར་དུ་དོགས་མི་དགོས་ཤིང་། ལུང་གྲིགས་བམ་གྱི་ཚུལ་དུ་བྱུང་བ་དང་། བསྟན་འཛིན་གྱི་སྐྱེས་བུ་གྲངས་མང་ཉུང་འཆད་ཉན་དར་ཁྱབ་ཆེ་ཆུང་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་

---

1 རྩ་ཤེས། རིན་འཕྲེང་། མདོ་རྒྱན། མངོན་རྒྱན། དྭང་ངེས་ལེགས་བཤད་སོགས་…།

2 (ཀ) जातक-खुद्दक-निकाय-भाग २. सुत्त पालि।

(ཁ) མདོ་སྡེ་ཚངས་དྲྭ། ब्रह्मजाल सुत्त,-१ ।१ ।१ । दीघ० नि० पालि. ।

(ག) སྟོང་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ -महासुञ्तसुत्त'-मज्झिम, नि० २२ ।१... । पृ० १७४ ।

(ང) རྟེན་འབྲེལ, परित्तारम्मण -१३ ।१ । पृ० ३५८ । पट्ठान. भाग-२, अभि० पि० ।

ནི་,བདེན་ཏེ། ཐེག་ཆེན་གྱི་སྡེ་སྣོད་ལས་ཐེག་དམན་གྱི་སྡེ་སྣོད་ཀྱི་གླེགས་བམ་བྱུང་སྔ་བར་སྣང་སྟེ། ཐེག་ཆེན་གྱི་ཆོས་གླེགས་བམ་གྱི་ཚུལ་དུ་འཕགས་ཡུལ་དུ་བྱུང་བའི་དང་པོ་ནི་བརྒྱད་···སྟོང་པའམ་གསང་འདུས་རྩ་རྒྱུད་ཡིན་ལ། དེ་སྟོན་པ་འདས་ནས་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཞི་པའི་ནང་རྒྱལ་པོ་ལྷ་བ་སྲུང་གི་དུས་སུ་མངོན་གསལ་དུ་བྱུང་བར་ལོ་རྒྱུས་ཁུངས་མ་རྣམས་[1]ལས་མཐུན་པར་བྱུང་བས་སོ།།

བསྟན་འཛིན་གྱི་སྐྱེས་བུ་དང་། འཆད་ཉན་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། ཐེག་ཆེན་ལས་སྡེ་པ་གཞན་རྣམས་ཀྱི་རྗེས་འབྲངས་སྔོན་དུ་དར་ཆེ་སྟེ། སྟོན་པ་ཞལ་བཞུགས་པའི་དུས་སྐབས་ཉན་ཐོས་ཀྱི་སྐྱེ་བོའི་གྲངས་ཙམ་ཐེག་ཆེན་གྱི་གྲངས་མི་མངོན་ལ། སྟོན་པ་འདས་རྗེས་བསྟན་པའི་གདན་རབས་རྣམས་ཀྱི་དུས་སྐབས་ཐེག་ཆེན་གྱི་དགེ་བདུན་ཤིན་ཏུ་ཉུང་བར་གནས་པས། བར་སྐབས་དེར་ཐེག་ཆེན་མི་མངོན་པ་ལྟ་བུར་ཡང་སོང་བའི་དུས་ཤིག་བྱུང་། དེ་ནས་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོའི་དུས་ལས་ཅུང་ཟད་སྔ་བ་ཙམ་ནས་དཔལ་སརཧ་དང་། ཀླུ་སྒྲུབ་སོགས་བྱོན་ཏེ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སླར་དར་བའི་དབུ་ཚུགས་ཤིང་། ཐེག་ཆེན་གྱི་སྡེ་སྣོད་ཐམས་ཅད་མངོན་གསལ་དུ་བྱུང་ལ་[2]། ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བདུན་པ་བརྒྱད་པ་ཙམ་ན་ཨེ་ཤི་ཡའི་ཡུལ་གྲུ་ཕལ་ཆེར་ཐེག་ཆེན

1 ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐ་ རྒྱ ཆོས ཤོག ༥༠ ལེ ༡༣།

2 ཨོ་ཊི་ཝི་ཤའི་ཡུལ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལྷ་བ་སྲུང་གི་དུས་སུ་དེའི་ཁྲིམ་དུ་ཐེག་ཆེན་གྱི་གླེགས་བམ་ཞིག་བྱོན་ལ་དེ་ཐེག་ཆེན་སླར་དར་བའི་ཐོག་མ་ཡིན། ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐ་རྒྱ་ཆོས་ཤོག ༥༧ ལེ ༡༣ དང་། ཏཱ་རཱ་རྒྱ་ཆོས་ལེ ༡༣ གཟིགས།

གྱིས་ཁྱབ་པ་ལྟར་སོང་ངོ་། །འདི་དག་ནི་ཐེག་ཆེན་སྔ་ཕྱི་ཇི་ལྟར་དར་བའི་ཚུལ་ཡིན་ལ། དོགས་གཅོད་རྒྱས་པར་འདིར་མི་སྤྲོའོ། །

རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་— སྤྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་ཐེག་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་སློབ་པའི་ཚུལ་དེ་ལ་རིགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་རིགས་ཅན་གསུམ་ལ་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་གཞག་དང་། ཐབས་ལམ་ལ་སློབ་པའི་རྩ་བ་སེམས་བསྐྱེད་ཡིན་ལ། དེའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གཉིས་དང་། མཐར་ཐུག་འབྲས་བུའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཐེག་པ་གཅིག་གི་རྣམ་གཞག་རྣམས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བཀའ་དང་དགོངས་འགྲེལ་ཕལ་ཆེ་བ་ལས་མཐུན་པར་བྱུང་བས་ན་འདི་ཐེག་ཆེན་པ་སྤྱིའི་བཞེད་ཚུལ་ཡིན་ལ། ལམ་གྱི་རྩ་བ་སེམས་བསྐྱེད་དང་། རིགས་དང་། འབྲས་བུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། སྐུ་གཉིས་ཟུང་འཇུག་སྟེ། མཐར་ཐུག་གི་ཐོབ་བྱ་སོགས་ལ་ཁྱད་པར་མེད་ཀྱང་། ལམ་ཐབས་ཤེས་གཉིས་ལས་ཐབས་སེམས་བསྐྱེད་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ལ་འབྲས་བུ་ལམ་འཁྱེར་དང་། བསྒོམ་བྱ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡུལ་སྟོང་ཉིད་ལ་ཕྲ་རགས་མེད་ཀྱང་། ཡུལ་ཅན་ཤེས་པ་སྒྱུ་ལུས་ཀྱི་ཉེར་ལེན་དུ་གྱུར་པའི་རླུང་དང་ངོ་བོ་གཅིག་པའི་སེམས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་ལ་ལམ་གྱི་ལུས་སུ་འཇོག་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཐེག་ཆེན་ལ་ཡང་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རྒྱུའི་ཐེག་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་སྔ་འབྲས་བུའི་ཐེག་པ་གཉིས་སུ་ཕྱེས་པ་ཡིན་ནོ།། སྤྱིར་ཐེག་ཆེན་གཉིས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཟབ་མོའི་ལམ་གྱི་སྒོ་ནས་མི་འབྱེད་པར་རྒྱ་ཆེ་བ་ཐབས་ཀྱི་སྒོ་ནས་འབྱེད་དགོས་པར་རྒྱུད་དགོངས་འགྲེལ་དང་བཅས་པ་ལས་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་། གོང་སློས་ཤེས་རབ་ཁྱད་པར་བ་

དེའི་དབང་དུ་བྱས་ན་སྔགས་དང་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་ལམ་ལ་རྒྱ་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་ཁྱད་པར་ཡོད་པ་མ་ཟད་ཟབ་མོའི་ལམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཀྱང་ཁྱད་པར་འཛོག་དགོས་པར་མཛོད་དོ།།

དེ་ལ་འདིར་‘ཐེག་པ་’ཞེས་པ་ནི་ཡུལ་གཅིག་ནས་ལམ་དུ་ཞུགས་ཏེ་བགྲོད་ཡུལ་ངེས་ཅན་ཞིག་ཏུ་སླེབས་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་སམ་བགྲོད་བྱེད་ཞིག་ལ་ཟེར་བ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་རྟ་དང་། ཤིང་རྟ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ནང་ས་ལམ་ལ་སོགས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། བགྲོད་ཡུལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་ལ་སོན་པར་བགྲོད་བྱའི་ལམ་ས་བཅུ་ལ་སོགས་པ་བགྲོད་བྱེད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ནི་འདིར་ཐེག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ལམ་ལ་སློབ་པའི་ཐབས་སམ་ལུས་ལྷ་བུ་སེམས་བསྐྱེད་དང་། ཡན་ལག་ཕར་ཕྱིན་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་གཞག་ནི་འདིར་ཐེག་པའོ། །དེ་ནི་བསྟན་པ་སྤྱིའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་ཐེག་པའི་སྒྲ་བཤད་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་སྟེ་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་དུ་གྱུར་པའི་ཐེག་པའམ་རྡོ་རྗེའི་གོ་འཕང་ཐོབ་བྱེད་ཀྱི་ཐེག་པའོ།།

དེ་ལ་འདིར་སྒྲ་བཤད་པ་དང་པོའི་དབང་དུ་བྱས་ན་རྡོ་རྗེ་ཡང་ཡིན་ལ་ཐེག་པ་ཡང་ཡིན་པས་ན་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།། ཇི་སྐད་དུ་སྟིམ་པའི་མི་ཏོག་ལས —

“ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མ་ལུས་པ་བསྡུས་པ་ནི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ཡིན་ལ། དེ་རྣམས་བསྡུས་པ་ནི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཡིན། དེ་དག་ཀྱང་བསྡུས་པ་

རོ་གཅིག་པ་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་རྡོ་རྗེ་ཡིན་ནོ། །རྡོ་རྗེ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཐེག་པ་ཡང་ཡིན་པ་ན་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་སྟེ་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་[1]པའོ།།”

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཐབས་ཤེས་གཉིས་མེད་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སམ་[2]རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་སྔགས་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་པོས་ལམ་མ་ལུས་པ་བསྒྲོད་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་སྟེ་བསྒྲོད་བྱེད་ལམ་གྱི་ལུས་ལྟ་བུ་ཡིན་པས་འདིར་ཐེག་པ་ཞེས་པའི་སྒྲ་འཇུག་པའི་འཇུག་གཞིའི་གཙོ་བོའོ།།

གཉིས་པ་ཡང་རྡོ་རྗེའི་གོ་འཕང་སྟེ་ཁ་སྦྱོར་ཡན་ལག་བདུན་ལྡན་རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་གོ་འཕང་ནི་འབྲས་བུ་དང་། དེའི་རྒྱུའི་གཙོ་བོའམ་དེའི་ཉེར་ལེན་དུ་གྱུར་པའི་ཐབས་ཤེས་ཟུང་འཇུག་གམ་སྣང་སྟོང་ཟུང་འཇུག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ནི་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་པས་ན་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའོ།།

སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་— སློམ་པའི་མི་རྟོག་ལས་བཤད་པ་ལྟར་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ནི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་སྔགས་ཞེས་པའི་ལེགས་སྦྱར་ལ་ ‘མནྟྲ’’ ཞེས་པ་ཡོད་ཅིང་། འདིར་མནྟྲཞེས་པ་ནི་ ‘མན་’ཞེས་པ་དང་། ‘ཏྲཱ’ ཞེས་པའི་ཚིག་གཉིས་ལས་གྲུབ་པའི་ཚིག་སྡུད་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ངེས་ཚིག་གི་དབང་དུ་བྱས་ན་དབང་པོ་དང་། ཡིའི་ཡུལ་དང་། སེམས་ཀྱི་གོམས་སྦྱོང་ལས་བྱུང་བའི་བག་ཆགས་སད་པ་ལས་ངང་གིས་བྱུང་བའི་ནང་

1 སློམ་མི་ སྔགས་རིམ་ཆེན་མོར་དྲངས - ཤོག ༡༣ དེ་ལི - 25 །

2 ན་རོ་པའི་དུས་འཁོར་དབང་མདོར་བསྟན·····

གི་གཡོ་བ་སྟེ། གསུམ་འདུས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡུལ་འཛིན་པའི་ཡིད་དེ་ལ་ 'མན་ 'ཞེས་བྱ་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་ཡིད་དེ་ལ་རང་ཆས་སུ་རྗེས་སུ་འབྲེལ་ཡོད་པའི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་ནད་དང་། ལྟ་བའི་འཛིགས་པ་ཀུན་འཇོམས་པར་བྱེད་པའི་གཉིས་མེད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ལ་ 'ཏྲ་ 'སྟེ་ 'སྐྱོབ་པ་ 'ཞེས་བྱའོ། །སྐྱོབ་པ་དེ་ 'མན་ 'དང་ཡོངས་སུ་འདྲིས་པར་བྱས་པས་ 'མན་ 'ནམ་ཡིད་དེ་འཛིཏ་པ་ལས་རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་གྲོལ་བར་འགྱུར་བས་ན་དེ་ལ་ 'མནྟྲ་ 'སྟེ་ཡིད་སྐྱོབས་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། དེ་ཡང་སྔགས་ལ་དོན་དམ་པའི་སྔགས་དང་། ས་བོན་གྱི་སྔགས་དང་། སྙིང་པོའི་སྔགས་ལ་སོགས་པ་མང་དུ་ཡོད་པ་ལས། འདིར་ནི་དང་པོ་སྟེ། སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལམ་གྱི་ལུས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མཚན་གཞི་དེའོ།། དེ་ཡང་ཇི་སྐད་དུ་འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས་—

"དབང་པོ་དང་ནི་ཡུལ་རྣམས་ཀྱི།།
རྐྱེན་གྱིས་གང་དང་གང་བྱུང་བ།།
ཡིད་དེ་ 'མན་' ཞེས་བྱ་བར་བཤད།།
'ཏྲ་'ནི་སྐྱོབ་པར་བྱེད་པའི་དོན།།[1]" ༦༩ — ༧༠

ཅེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་དང་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་དོན་གཅིག་ལ། རྒྱུད་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། རྒྱུད་ཀྱི་ལམ་སོགས་ཀྱང་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་དོན་གཅིག་པ་ཡིན་ནོ། །

---

1 (འདུས་ཕྱི་ ཤོག ༥༣༦ ། སྡེ་ བསྟན་ རྒྱུད་ ང)

དེ་ཡང་ ‘རྒྱུད་ ’ཅེས་པའི་སྐད་དོད་ལ་ཏནྟྲ (=तन्त्र) ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་ལ། དེ་ནི་‘ཏནུ་’འཕེལ་བ་ལའོ་[1]ཞེས་པ་ལྟར། འཕེལ་བ་དང་རྒྱུན་ཆགས་པ་དང་། རྒྱུན་མི་ཆད་ཅིང་རྣམ་པར་འབྲེལ་བ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། འདིར་ནི་རྒྱུན་ཆགས་པའི་དོན་ཅན་ཡིན་ཏེ། འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས—

“རྒྱུད་ནི་རྒྱུན་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས།།
རྒྱུན་དེ་རྣམ་པ་གསུམ་འགྱུར་རོ།།
གཞི་དང་དེ་བཞིན་རང་བཞིན་དང་།།
མི་འཕྲོགས་པ་ཡིས་རབ་ཕྱེ་བས།། ༣༣
གཞི་དང་རང་བཞིན་རྒྱུད་ཡིན་ཏེ།།
དེ་བཞིན་མི་འཕྲོགས་འབྲས་བུའོ།།
གཞི་ནི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ།།
གསུམ་གྱིས་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་བསྡུས་པའོ།།[2]” ༣༨
ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།།

དེ་ལ་འདིར་རྒྱུད་ཅེས་པའི་སྤྱིའི་དོན་ནི། ཟག་བཅས་ཟག་མེད་གཉིས་ཀའི་རྟེན་བྱེད་པའི་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་གསལ་ཞིང་རིག་པའི་བདག་ཉིད་རིགས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་གཞིར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡིན་ལ། དེ་ནི་འཁོར་བའི་གནས་སྐབས་སུ་ཟག་བཅས་ཀྱི་རྟེན་བྱེད་ལ། ལམ་དང་འབྲས་བུའི་སྐབས་སུ་

---

1 ‘तनु’ विस्तारे । पा० व्या० गणपाठ–तनादि, गण. सं० १४६३ ।।

2 འདུས་ཕྱི་ ཤོག་ ༥༣༨ ན་ [སྡེ་བསྟན་རྒྱུད་ ང་]

ཟག་མེད་ཀྱི་ལས་དང་ལམ་གྱི་རྟེན་བྱེད་ཅིང་། ཐོག་མ་མེད་པའི་འཁོར་བ་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་དུ་རྒྱུན་མི་ཆད་པས་རྒྱུད་དམ་རྒྱུན་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་¹དེ་ནི་གཞི་ལམ་འབྲས་བུ་གསུམ་ག་ལ་རྟེན་གྱི་ཚུལ་དུ་ཁྱབ་པར་གནས་པས་རྒྱུད་སྤྱི་ཙམ་པ་དང། དེ་ལ་ཁྱད་པར་གྱིས་དབྱེ་ན་གཞི་དང་། རང་བཞིན་རྟེ་ལམ་དང་། འབྲས་བུའི་དབྱེ་བས་གསུམ་དུ་གསུངས་ཤིང་། དེ་ལ་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོས་རྒྱུད་ལྷག་པར་དུ་ལྡན་པའི་རིགས་ཁྱད་པར་པ་དེ་ནི་འདིར་གཞིའི་རྒྱུད་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་ས་ཆེན་བསོད་ནམས་རྩེ་མོའི་རྒྱུད་སྡེ་སྤྱི་རྣམ་ལས —

"རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སོ་སོ་རང་གི་སེམས་ཉིད་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་འདི་ཉིད་ལ་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་སྟེ། ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་དུ་ཟག་བཅས་ཀྱི་སེམས་རྒྱུན་མི་ཆད་པས་ན་རྒྱུད་ཅེས་བྱའོ།།²" ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་རོ།།

དེ་ལ་ལམ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་'བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་'ཞེས་དུས་འཁོར་དབང་ལེ་དང་། དེའི་འགྲེལ་པ་ན་རོ་པའི་དབང་མདོར་བསྟན་དང་། འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་སོགས་ལས་མཐུན་པར་བཤད་དེ་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས་—

---

1 འདིར་ 'ཆོས་ཉིད་' ཅེས་ཆོས་ཅན་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཤིས་ལ་བྱ་ཡི། ཆོས་ཉིད་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

2 [བསོད་ནམས་ རྒྱུ་སྤྱི་ ཤོག ༥༤ གསུང་ ག]

3 [འདུས་ཕྱི་དེ་ཉིད་]

"ཐོག་མ་ཐ་མ་མེད་ཞི་བ།།
དངོས་དང་དངོས་མེད་མི་ཟད་གཙོ།།
སྙོང་ཉིད་སྙིང་རྗེ་མི་ཕྱེད་པ།།
བྱང་ཆུབ་སེམས་[1]ཞེས་བྱ་བ་ཡིན།།" ༣༨ ||

ཅེས་སོགས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།།

སྔགས་བསྟན་དར་ཚུལ་— འབྲས་བུའི་ཐེག་པ་སྔ་གསང་སྔགས་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་དོན་དེ་ལྟར་ཡིན་ན། འོ་ན་དེ་ལྟ་བུའི་ཐེག་པ་མཆོག་གི་ལམ་དེ་འཇིག་རྟེན་དུ་དར་བའི་ཚུལ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལ་གཉིས་ཏེ། སྤྱིར་གསང་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་ཚུལ་དང་། སློབ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་གསང་སྔགས་དར་བའི་ཚུལ་ལོ།།

དང་པོ་ནི་སྤྱིར་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་འཇིག་རྟེན་དུ་དར་བའི་སྐོར་རྣམས་མདོ་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་རྣམས་ལ་མི་མཐུན་པ་མང་ཞིང་། རྗེ་རིགས་སྟོན་བྱུང་དང་། ཕག་མོ་སྟོན་བྱུང་དང་། གཤིན་རྗེ་གཤེད་སྟོན་བྱུང་གི་ལོ་རྒྱུས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་དང་། མཁས་མཆོག་བུ་སྟོན་གྱི་བདེ་མཆོག་གྱི་དོན་ཡོ་ག་གྲུ་གཟིངས་སོཀ་སུ་གསང་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་པོ་ལྷ་ཡུལ་དུ་དར། ཕྱིས་མི་ཡུལ་དུ་དར་བ་སོགས་ཀྱི་བཞེད་པ་སྣ་ཚོགས་པ་བཀོད་འདུག་ཅིང་། བོད་དུ་ལྷག་པར་དར་བའི་སྒྲུབ་རྒྱུད་རྙིང་མའི་བརྒྱུད་འཛིན་ཆེན་པོ་རྣམས་དང་། དེ་དག་གིས་

[1] འདིར་ "བྱང་ཆུབ་སེམས་" — ཞེས་བྱང་ཆུབ་དོན་གཉེར་གྱི་སེམས་མིན་གྱི། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུ་མཐུན་ཡིན་ནོ།།

མཛད་པའི་གཞུང་ལུགས་མང་པོ་ཞིག་ལ་གསང་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་པོ་སྟོན་པ་ཆོས་སྐུ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོས་འོག་མིན་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་གནས་སུ་སྤྲོས་མེད་ལྷུན་འགྲུབ་ཀྱི་ཚུལ་དུ་སྤྱིལ་བ་སོགས་ཀྱི་བཤད་པ་མཛད་པ་མང་ཡང་། དང་པོ་ནི། ཡུལ་ཕྱོགས་རེ་བ་དང་། དུས་ཉི་ཚེ་བའི་ལོ་རྒྱུས་དང་འབྲེལ་བ་མང་བས་སྔགས་བསྟན་དར་ཚུལ་སྤྱིའི་རྣམ་གཞག་མིན་ནམ་སྙམ་པ་འདུག་ལ། ཕྱི་མ་ནི་རྫོགས་པ་ཆེན་པོའི་ལྷ་གྲུབ་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་ལམ་གྱི་ཆེ་བ་འདོན་ཚུལ་ཤིན་ཏུ་ཟབ་པའི་གནད་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་ཡིན་ཡང་། དེ་ཉིད་ཕལ་པའི་རང་སྐད་དུ་བཤད་ན་མུ་སྟེགས་གསང་བ་པའི་གྲུབ་མཐའ་དང་ཁྱད་མེད་དུ་འགྲོ་ཉེན་ཆེ་བས་རེ་ཞིག་མི་སྨྲ་བའི་བརྟུལ་ཞུགས་ལ་གནས་པ་ཉིད་མཛེས་པར་སེམས་སོ།།

དེས་ན་སྔགས་ཀྱི་གདུལ་བྱའི་གཙོ་བོ་ནི་ཁམས་དྲུག་ལྡན་གྱི་འདོད་ཁམས་པ་ཡིན་པས་གསང་སྔགས་དང་པོ་འདོད་ཁམས་སུ་དར་བར་མངོན་ལ། སྤྱིར་འཁོར་བ་ལ་ཐོག་མ་མེད་པ་ལྟར། དུས་འདི་ཕན་ཆད་ལ་གསང་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་བ་མེད་ལ་འདི་ཚུན་ལ་ཡོད་དོ་ཞེས་སྨྲ་མི་ནུས་ཤིང་། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་གདུལ་བྱ་དང་བསྟན་པ་ཡང་རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་འཕྲིན་ལས་ལྟར་ཐོག་མཐའ་དང་བྲལ་བར་མངོན་ནོ།།

ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་སྔགས་དར་ཚུལ་— བསྟན་པ་འདིའི་དབང་དུ་བྱས་ན་སྟོན་པ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཚེ་སྲིད་ལ་བདུད་བཏུལ་བའི་དུས་སུ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྐུར་བཞེངས་ནས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཆོས་སྐོར་གསུངས་པ་སོགས་ཀྱི་བཤད་པ་ཡང་འདུག་མོད།

དངོས་འབྲེལ་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་འབྲེལ་བའི་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཆོས་སྐོར་ནི་སྟོན་པ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དུས་སྐྱེ་ཟླ་བ་སྔ་མ་དཔའ་བོ་ལུགས་འབྲུག་གི་ནག་པའི་ཉ་ལ་འཕགས་ཡུལ་སའི་ཆར་གདོགས་པ་དཔལ་ལྡན་འབྲས་སྤུངས་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ཆེན་པོར་གསུངས་པ་ཡིན་ལ་།། སྔགས་ཕྱོགས་ཀྱི་མཁས་པ་མང་ཆེ་བ་རྣམས་དེ་ཉིད་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བསྐོར་བའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བཞི་པར་ཡང་བཞེད་དོ། །

དེ་ནས་བཟུང་ལྷ་ཡུལ་ཀླུ་ཡུལ་སྲིན་ཡུལ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཡུལ་དང་མི་ཡུལ་སོགས་སུ་གསང་སྔགས་དར་བའི་ཚུལ་མང་མོད། གང་ལྟར་ཡང་ཨུ་རྒྱན་

མཆན 1—ཀ དུས་འཁོར་རྩ་རྒྱུད་ལས — "སྟོན་པས་བྱ་རྒོད་ཕུང་པོ་རུ།། ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་ཚུལ་བཞིན།། ཆོས་བསྟན་དཔལ་ལྡན་འབྲས་སྤུངས་སུ།། དེ་བཞིན་གསང་སྔགས་ཚུལ་རབ་བསྟན།།" — པད་ཆོས་ཤོག ༡༥ བ ༣༠, དེ་ལྟ།།

ཁ དེ་བཞིན་ཉི་མ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་བརྗོད་འགྲེལ་པར། རྒྱས་པ་དང་བསྡུས་པའི་དབྱེ་བས་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་ཐམས་ཅད་བསྟན་ཏོ།།—པད་ཆོས་ ཤོག ༡༥ བ ༣༠ དེ་ཉིད། གཞན་ཡང་—དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགུང་ལོ་རེལ་པོ་བརྒྱད་ཅུ་རྫོགས་ནས་ངོ་བོ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་གཅིག་བཞེས་ཤིང་། སངས་རྒྱས་ནས་ལོ་བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པ་གནམ་གནོན་ལུགས་འབྲུག་དཔྱིད་ཟླ་འབྲིང་པོ་ནག་པའི་ཆེས་བཅོ་ལྔའི་ཉི་མ་ཕྱི་དྲོ་བདུད་འཇོམས་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་དུས་སྦྱོར་དང་ལྡན་པའི་ཚེ། ལྷོ་ཕྱོགས་དཔལ་ལྡན་འབྲས་སྤུངས་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་དུ་དཔལ་མཆོག་དང་པོའི་སངས་རྒྱས་སོགས་བླ་མེད་ཀྱི་ཐེག་པ་མཐའ་ཡས་པ་གསུངས། དེའི་ཟླ་བ་ཕྱི་མ་ས་ག་ཟླའི་ཆེས་བཅོ་ལྔའི་མཚན་མོ་ཐུན་ཐ་མའི་འགོ་ལ་གྲོད་ཀྱི་ཡུལ་རྩ་ཅན་དུ་གཟུགས་སྐུ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སུ་ལྷག་མ་མེད་པར་གཤེགས་སོ། །སྙིང་ཆོས་ལྷ་དབང་གཡུལ་རྒྱལ་ཤོག ༣༤༥ མན། མཁས་བཙུན། དེབ་ཤོག ༣༣ དེབ་ ༧།

ག རིགས་ལྡན་སྙིང་ཐིག ཤོག ༤/ན བོད་དཔར།

ང པད་དཀར་ཞལ་ལུང་། ཤོག ༥༨/བ །

གྱི་ཡུལ་དང་ཤམྦྷལ་སོགས་སུ་སྟོན་པ་ནས་དངོས་སུ་རྒྱུད་གསན་པའི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་དང་། ཟླ་བ་བཟང་པོ་སོགས་ཀྱི་བརྒྱུད་པ་ད་ལྟའི་བར་དུ་མ་ཉམས་པར་གནས་ཡོད་ལ། བརྒྱུད་པ་འདི་རྣམས་ཀྱི་བཀའ་དང་མན་ངག་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས་འབྲས་བུ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་མཛད་པའི་གྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་ཀྱང་བསམ་བརྗོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཞིག་བྱུང་ཡོད་པར་རྒྱུད་སྡེའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ལས་ཤེས་ཐུབ།།

མགྡྷ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་དབུས་དང་རྒྱ་གར་ལྷོ་བྱང་དང་། བོད་དང་། རྒྱ་ནག་དང་། འགྲོ་ལྡིང་དང་། ལྷག་པར་རྒྱ་གར་ཤར་ནུབ་གཉིས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་སུ་གསང་སྔགས་དར་བའི་དུས་ནི་གྲུབ་ཆེན་སརཧ་དང་། འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་དུས་ཙམ་ནས་ཡིན་ལ། འདི་ནི་མ་ཤི་ཁའི་འདས་ལོ་མ་ཚུགས་གོང་གི་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོ་དང་། སྟོན་པ་འདས་ནས་ལོ་ངོ་བརྒྱ་ཕྲག་གསུམ་པའི་མཐའ་མ་ཙམ་དང་བཞི་པའི་མགོ་ཙམ་གྱི་དུས་ཡིན་ཞིང་། སརཧ་ཆེན་པོའི་སྔོན་དུ་གོང་གསལ་ཡུལ་གྲུ་རྣམས་སུ་ནང་པའི་སློབ་དཔོན་གསང་སྔགས་མངོན་གསལ་དུ་སྤྱོད་པ་ཡོད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཡིག་ཐོག་ལ་ཡོད་པ་ནི་མི་སྣང་ངོ་། །རྒྱལ་པོ་ཛ་དང་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་སོགས་ནི་དེ་སྔོན་ན་ཡོད་ཀྱང་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་གྱི་གསང་སྔགས་པའོ།།

དེང་སང་རིག་གསར་གྱི་སློབ་གཉེར་བ་འགའ་དང་། ཤེས་ཡོན་ཅན་གྱི་མཁས་པ་མང་པོ་ཞིག་ལ་ནང་པའི་གསང་སྔགས་དར་ཚུལ་དང་། གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་སྐོར་ལ་བཞེད་པ་མི་མཐུན་པ་ཤིན་ཏུ

མང་ལ། ཕལ་ཆེ་བ་ཞིག་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་བའི་དུས་ནི་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བདུན་པའི་མཇུག་ཙམ་དང་། གྲུབ་ཐོབ་ལཱུཧིཔཱ་དང་ས་རཧཔཱ་ལ་སོགས་པའི་དུས་ཀྱང་བརྒྱ་ཕྲག་བརྒྱད་པའི་ནང་དང་། ཀླུ་སྒྲུབ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་དེ་ལ་གནོད་པར་དོགས་ནས་རྩ་ཤེས་མཛད་པ་པོའི་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་། གྲུབ་པ་ཐོབ་ཅིང་སྔགས་ཀྱི་རྒྱུད་འགྲེལ་མཛད་པ་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་སྟེ་ཀླུ་སྒྲུབ་གཉིས་ཡོད་པའི་སྒྲུབ་བྱེད་མང་དུ་བཀོད་པ་སོགས་བྱེད་ཀྱང་། ཕལ་ཆེ་བ་ཞིག་ནི་བརྗོད་བྱས་སྟོང་པའི་རྗོད་བྱེད་དང་། བསྒྲུབ་བྱས་སྟོང་པའི་སྒྲུབ་བྱེད་ཁོ་ནར་སྣང་བས། འདི་དག་ལ་དགག་གཞག་གི་ངལ་བའི་ཁུར་འཁུར་བར་མི་སྤྲོ་ལ། ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་ལྔ་པ་དང་དྲུག་པའི་ནང་གི་མཁས་ཤིང་གྲུབ་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཟླ་བ་གྲགས་པས་རང་གི་སྔགས་གཞུང་ཐམས་ཅད་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་མིང་ངག་ལ་བརྟེན་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་ལ། ལྷག་པར་འདུས་པའི་རྒྱུད་འགྲེལ་སྒྲོན་གསལ་དུ་འགྲེལ་པ་དེ་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་མིང་ངག་ལ་བརྟེན་ནས་མཛད་པར་དངོས་སུ་བཀོད་ཡོད་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་ཀླུ་སྒྲུབ་དེ་བརྒྱ་ཕྲག་བརྒྱད་པའི་ནང་གི་ཀླུ་སྒྲུབ་ཡིན་མི་སྲིད་ཅིང་། བརྒྱ་ཕྲག་གཉིས་པའི་ནང་གི་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷས་རིམ་ལྔའི་དོན་འགྲེལ་ལམ་ཁ་སྐོང་གི་ཚུལ་དུ་མཛད་པའི་སྤྱོད་བསྡུས་སྒྲོན་མེ་ལ་ཡང་ཚུལ་དེ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་དགོངས་པར་བཞེད་པས། ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་། རིག་པ་འཛིན་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་སོ་སོར་འཇོག་པ་ལ་སྙིང་པོ་མེད་པར་ཤེས་ནས་སོ།། འདིའི་སྐོར་ལ་མཁས་པ་གཞན་གྱི་བཞེད་པ་དང་། འཐད་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒྲུབ་བྱེད་དང་། མི་འཐད་པར་གནོད་བྱེད་སོགས་འཕགས་པའི་གཞུང་ཞིབ་མོ་རྣམ་འཐག་བོད་སྐད་ནས་ལེགས་སྒྱུར་

དང་ཉིན་སྐད་གཉིས་ཀར་ལྷན་དུ་བསྒྱུར་ཡོད་པའི་གླིང་གཞིར་ཙུང་ཟད་སྤྲོས་ཏེ་བཀོད་[1]ཡོད་པས་འདིར་མི་སྤྲོའོ།།

གྲུབ་ཐོབ— རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ལམ་ལ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་ཚུལ་རྣམས་རེ་རེ་ནས་བརྗོད་ཀྱིས་མི་ལང་ལ། གོང་སློས་ལྟར་ཨུ་རྒྱན་དང་། ཤམྦྷལ་སོགས་གྲུབ་པའི་བསྟི་གནས་རྣམས་སུ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་བསྟན་པ་སངས་རྒྱས་ཞལ་བཞུགས་པ་ནས་བཟུང་མ་ཉམས་པར་ཡུན་རིང་དུ་གནས་ལ། ཡུལ་དེ་དག་དང་། ཡུལ་དབུས་ཏེ། མགྷ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་སུ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ལམ་ལ་ཞུགས་ཏེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའམ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་མཛད་དེ་གྲུབ་ཐོབ་ཏུ་གྲགས་པ་ནི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་སྟེ། དེ་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྲགས་པ་དང་། རྒྱ་མཚན་ཁྱད་པར་བའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིར་གྲགས་པ་ཡིན་གྱི། ཕྱིར་གྲུབ་ཐོབ་ལ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིར་གྲངས་ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གོ་རིམ— འདིར་རྣམ་ཐར་དུ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ཐོག་མར་ལཱུ་ཧི་པའི་རྣམ་ཐར་བྱུང་ལ། སརཧ་པ་དང་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་སོགས་ཕྱིས་སུ་བཀོད་འདུག་ཀྱང་དུས་རབས་དང་། བླ་སློབ་ཀྱི་གོ་རིམ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན། གསང་སྔགས་ཀྱི་ལམ་ལ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་ཐོག་མར་ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་དང་། མཏི་བློ་གྲོས་བཟང་མོའམ་ཀླུ་ལས་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་དང་། དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ཝིསུཀལྤ་སོགས་ཡིན་ལ། འདི་དག་ནི་ཨུ་རྒྱན་དུ་བྱུང་

1 ཉིན་སྐད། གླིང་གཞི་ཤོག ༡༡ - ༣༩/བ གཟིགས ༡༩༧༩།

བའི་དང་པོའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཡིན་ཞིང་། ཡུལ་དབུས་སུ་ནི་སརཧཔཱ་དང་།
ཀུཀུརིཔཱ་དང་ཀླུ་སྒྲུབ་སོགས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་བུ་བྱུང་བའི་དང་པོ་ཡིན་ནོ།
།ལཱུཧིཔཱ་ནི་སརཧཔཱ་དང་། རི་ཁྲོད་དབང་ཕྱུག་ཤྲཱི་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་སློབ་མ་དཔལ་
ཤཝརིའི་དབང་ཕྱུག་གཉིས་ཀའི་སློབ་མ་ཡིན་པས་ཀླུ་སྒྲུབ་ལས་ཕྱིས་ཀྱི་གྲུབ་ཐོབ་
པོ། །ཝིརཱུཔཱ་ལ་སོགས་པ་ནི། དབྱིག་གཉེན་དང་། ཕྱོགས་གླང་དང་དུས་
མཚུངས་ཡིན་པ་དང་། ཁྱད་པར་ཟླ་གྲགས་ཀྱི་སྐུ་ཚེའི་སྟོད་ཙམ་ལའང་
བཞུགས་སྣང་བས་དུས་ཕྱིས་ཀྱི་ཡིན་པར་གསལ་བར་གོ་ནུས་ལ། དེ་ལྟར་ན་
རྣམ་ཐར་གྱི་གོ་རིམ་དང་། བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་གྲངས་དེ་རྒྱ་མཚན་གང་ལ་
བརྟེན་ནམ། འདིར་ལཱུཧི་པ་དང་པོར་བྱུང་ལ། གཞན་རྣམས་ལའང་ཟླ་སློབ་
དང་དུས་ཀྱི་གོ་རིམ་གཞུང་གཞན་ནས་གཞན་དུ་བཤད་པ་དང་། བརྒྱད་པ་
རིམ་བྱོན་གྱི་ཟླ་རྒྱུད་སོགས་དང་ཡང་མི་མཐུན་པར་གོ་རིམ་གཞན་དུ་བྱུང་བའི་
ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། སྤྱིར་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་བསྟན་པ་ལ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་དུས་ཀྱི་རིམ་
པ་དེ་ཟླ་བརྒྱུད་སོགས་ལས་བྱུང་བ་ལྟར་ཡིན་ནའང་། འདིར་རྣམ་ཐར་དུ་བྱུང་
བའི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་གྲངས་ཀྱི་གོ་རིམ་ནི། ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་
པའི་ནང་ཙམ་ལ་ཟླ་མ་རྡོ་རྗེ་གདན་པ་ཆེན་པོས་ཚོགས་འཁོར་ཆེན་པོ་ཞིག་
བཤམས་ཏེ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་སྤྱན་དྲངས་པས་ཐམས་ཅད་དངོས་སུ་རིམ་གྱིས་
བྱོན་ཏེ་གདན་བཤམས་པ་ལ་བཞུགས་པ་ལ། དེར་བྱོན་པའི་རིམ་པ་དང་།
གདན་བཤམས་པ་ལ་བཞུགས་པའི་གོ་རིམ་དུ་ལཱུཧིཔཱ་དང་པོར་བྱོན་ནས་གདན་

ལ་དང་པོར་བཞུགས་པས་འདི་ནི་དེའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་གོ་རིམ་མོ།།[1] དེར་བྱོན་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གྲངས་ཀུང་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་ཡིན་པས་འདི་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་གྲངས་ཀུང་དེའི་དབང་དུ་བྱས་པར་གསལ་ལོ།། གཞུང་འགར་ནད་པ་ཞིག་གི་ནད་གསོ་བ་དང་། ཚེ་རིང་བར་བྱ་བའི་ཐབས་སུ་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིར་ཚོགས་འཁོར་བྱས་པའི་ཚུལ་དང་།[2] དེ་ཡང་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞིག་གིས་བསྐུལ་བ་ལས་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་རྡོ་རྗེ་གདན་གྱི་ལྷོ་ཕྱོཊ་སི་བ་ཚལ་དང་ཉེ་བར་རིམ་པས་འདུས་པ་སོཊ་ཀྱི་གཏམ་བཀོད་པའང་ཡོད། གང་ལྟར་ཡང་རྡོ་རྗེ་གདན་དུ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་བུར་དུ་བྱོན་པའི་གནས་ཚུལ་ཐོས་ནས་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་མཇལ་བའི་དོན་དུ་རྡོ་རྗེ་གདན་དུ་བྱོན། སློབ་དཔོན་རྡོ་རྗེ་གདན་དུ་འབྱོར་ཆེ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་གཤེགས་ཟིན་པས་དེར་བཞུགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཕོ་མོ་རྣམས་ལ་འདྲི་རྟོཊ་བྱས་ཏེ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་དེར་བྱོན་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམ་ཐར་དང་། ཚོཊ་འཁོར་སྐབས་གསུངས་པའི་སོ་སོའི་རྟོཊ་བརྗོད་‘དོ་ཧ’’ལ་སོཊ་པ་རྣམས་ཡི་གེར་བཀོད། ཕྱིས་དོ་ཧ་རྡོ་རྗེ་གླུའི་འགྲེལ་པ་ཡང་མཛད་དོ།།[3]

---

1 སྒྲུབ་ཀུན་གྲུབ་ཐོབ་རྗེས་གནང་བཤད་པ – ཤོག ༡ ༣ ། དེ་ལི་ སློག་དཔར།

2 སྒྲུབ་ཀུན་རྗེ་ །དེ་ཉིད། དེ་བཞིན་ – དོ་ཧའི་ལོ་རྒྱུས།

མཆན – འདིའི་སྐོར་ལ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱི་ལོ་རྒྱུས་རྒྱས་པ་ཞིག་ཡོད་པར་མངོན་ཏེ། སྒྲུབ་ཀུན་ལས – “གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་སོ་སོའི་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་བསྒྲིགས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ལས་ཤེས་ཤིང་།” – སྒྲུབ་ཀུན་གྲུབ་མཆན་གོ་རིམ་ – ཤོག ཐ་མ།

3 འགྲེལ་པ་འདི་སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར་རྒྱུད་ ‘ལུ’ པར་ཞུཊ། ཉི་ཧོང་ དེབ ༤༧/ཤོག ༡༧༦/ནས།

ལོ་རྒྱུས་འདི་ནི་སློབ་དཔོན་དེས་བསྒྲིགས་པའི་ལོ་རྒྱུས་འགྲེལ་པ་སོགས་ལ་གཞིར་བྱས་ཏེ་ བླ་མ་ཨཱཏྨཡད་རྣ་ཤྲཱིའམ་མི་འཇིགས་སྦྱིན་པའི་དཔལ་གྱིས་གསུངས་པའི་དོན་རྣམས། དེའི་སློབ་མ་མི་ཉག་ལོ་ཙཱ་བ་སྨོན་གྲུབ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་ཅིང་བསྒྲིགས་པ་ཡིན་པས། རྣམ་ཐར་འདིའི་ལོ་རྒྱུས་དང་། གྲངས་དང་གོ་རིམ་སོགས་ནི་གོང་གསལ་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟན་བཙོས་དང་ལོ་རྒྱུས་ལ་བརྟེན་པའི་གོ་རིམ་དང་ལོ་རྒྱུས་སོ།། དེས་ན་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་གོ་རིམ་སོགས་འདི་དག་ལ་དུས་རབས་དང་། བརྒྱུད་པ་རིམ་བྱོན་གྱི་བླ་སློབ་ཀྱི་རིམ་པ་སོགས་སུ་འཁྲུལ་བར་མི་བྱའོ།།

སརཧཔ་— ལྭཱ་ཧི་པཱ་དང་པོར་འཇོག་པ་དང་། བྲཱུ་ལི་པཱ་ཐ་མར་འཇོག་པའི་གོ་རིམ་དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ལ། སྔེར་སྔགས་ལམ་གྱི་གྲུབ་ཐོབ་དང་པོ་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུ་ཏི་དང་པོ་དང་[1]། ཡུལ་དབུས་སུ་བྱོན་པའི་དང་པོ་ནི་སརཧཔཱ་ཡིན་ལ[2]། སརཧཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམ་ཐར་དུ་གསལ་བ་ལས་དེའི་འཁྲུངས་ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་རཱཛྙི་ཞེས་བྱ་བའི་བྲེ་བྲག་'རོ་ལི་པ་'[3]ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་བཤད་ལ། རིགས་བྲམ་ཟེ་ཡིན་པ་དང་། དངོས་འབྲེལ་འདི་མཁའ་འགྲོའི་བུ་ཡིན་པར་ཡང་བཞེད།

---

1 གསང་བའི་སྒྲོན་མ (སྒྲོལ་མ) ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས - "གསང་བ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་འདི་ཤེས་པ་དང་། བཤད་པ་སུས་བྱེད། བཀའ་སྩལ་བ་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོའི་གནས་སུ ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏི ཞེས་བྱ་བ་དེས ཤེས་པ་དང་། བཤད་པ་དང་། སེམས་ཅན་ལ་གསལ་བར་བྱེད་དོ།" པད་ཆོས་ཤོག ༦༣/125 དུ་དྲངས་འདུག

2 ས་སྐྱ་བཀའ་འབུམ 'པ' ཤོག ༦༩།

3 'སརོལི' ཉི་རྫོང དེབ ༥༧ ཤོག ༡༧༧ ། ཡུལ་འདི་དག་དེང་སང་ངོས་མི་ཟིན་པས་མིང་སྔ་ཉམས་པའམ་བོད་པས་བྲིས་ནོར་དུ་སོང་བ་གང་ཡིན་དཔྱད།

འདི་རྒྱལ་པོ་རཏྣཔཱལ་སྡེ་རིན་ཆེན་སྐྱོང་དང་དུས་མཉམ་དང་། དོ་ཏ་སོགས་རྒྱལ་པོ་དེ་དང་དེའི་འབངས་བཙུན་མོ་སོགས་ལ་གསུངས་པའི་ཚུལ་ཡང་ཡིན་ཡིན་འདྲ་བཞེད། འོན་ཀྱང་འདིར་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་ལོ་རྒྱུས་མི་འདུག

ཇོ་བཙུན་ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང་དུ་སློབ་དཔོན་འདི་རྒྱལ་པོ་ཙཎྜ་སྐྱོང་དང་དུས་མཉམ་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་དེ་མགྷའི་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ལ། དེའི་དུས་སུ་སློབ་དཔོན་འདི་ནཱ་ལེནྡྲ་རུ་བྱོན། བཙུན་པ་ནག་པོ་ལས་བསྙེན་པར་རྫོགས་པར་བཞེད་ཅིང་[1]། དེ་ནཱ་ལེནྡྲའི་མཁན་པོ་མཛད་པ་དང་། བསྟན་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་གཏད་པ་སོགས་ཀྱང་ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐའི་གསུང་ལས་མང་དུ་བྱུང་། སློབ་དཔོན་ཁ་ཅིག སརཧ་འདི་བཙུན་པ་སྒྲ་གཅན་འཛིན་འོད་ལས་བསྙེན་པར་རྫོགས་པ་དང་། སྒྲ་གཅན་འཛིན་འོད་ཀྱི་མཁན་པོ་བཙུན་པ་ནག་པོ་ཡིན་པར་བཞེད།[2] འདི་ནི་དོ་ཏ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ལས་སརཧ་འདི་སྟོན་པ་འདས་ནས་ལོ་སུམ་བརྒྱ་ནས་བྱོན་པར་བཤད་པ་དང་མཐུན་པར་སྣང་ལ། དུས་རབས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་ཚུལ་འདི་འཐད་ཕྱོགས་སུ་སྣང་ངོ་།།

པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་[3]དུ་སློབ་དཔོན་འདིའི་འཁྲུངས་ཡུལ་ཡུལ་དབུས་ཀྱི་ཤར་དུ་གཏོགས་པ་ཨུཊྚཱཀྵིའི་ནང་ཚན་གྲོང་ཁྱེར་‘གསེར་གྱི་བྲེ’ ཞེས་བྱ་བར་འཁྲུངས་པར་བཤད་ལ། དེའི་དང་པོའི་མཚན་ཡང་ཡང་དག་རྒྱལ་བ

1 རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང - ཤོག ༦༥ - ༦༦ ཨྥཱ. དེབ ༡༩༦༨ དཔར།

2 རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང - ཤོག ༦༦ - དེ་ཉིད།

3 པད་ཆོས་ - ཤོག ༦༧ - 140 དེ་ལི་གློག

ཅན་ཏེ་བདེ་བྱེད་བདག་པོ་ཡིན་པར་བཞེད་པས། འདི་ནི་མཐོ་བཙུན་གྲུབ་རྗེ་དང་། བདེ་བྱེད་བདག་པོ་སྟེ། སྐུ་མཆེད་གཉིས་ཀྱི་ནང་ཚན་བདེ་བྱེད་བདག་པོ་དང་། དེ་ཡང་ཁྱད་པར་འཕགས་བསྟོད་ཀྱི་འགྲེལ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་བཀོད་ནས་དེ་གཉིས་གཞོན་ནུ་དོན་གྲུབ་ཀྱི་སྲས་སྒྲ་ཅན་འཛིན་ལས་བསྙིན་པར་རྫོགས་པ་དང་། རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཤྲིསུཀལྱ་སརཧའི་བླ་མ་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་སྲས་སྒྲ་གཅན་འཛིན་མིང་སྤོས་ཙམ་ཡིན་པ་དང་། མཐོ་བཙུན་སྐུ་མཆེད་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ལས་ཆེ་ཉི་ཟླ་དང་མཉམ་པའི་མཆོག་ཐོབ་པ་སོགས་བཤད་ཀྱང་། སྤྱི་མཐུན་གྱི་རྣ་བར་འོས་པའི་གཏམ་དུ་མི་སྣང་ལ། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ཚུལ་ནི་འདིར་དཔྱད་པར་མི་སྤྲོའོ། །གོང་སྨྲོས་འདི་དག་ནི་བླ་མ་ཇོ་རྗེ་གདན་པའི་གཏམ་རྒྱུན་ལ་བརྟེན་པར་སྣང་ལ། དེ་ཡང་མདོ་སྡེ་སྙིང་རྗེ་པད་དཀར་ལས—

"ང་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ནས་གྲོང་ཁྱེར་གསེར་གྱི་བྲེ་ཞེས་བྱ་བ་ན། བྲམ་ཟེའི་རིགས་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་བ་དགེ་སློང་མཁས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཡང་དག་རྒྱལ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་འབྱུང་སྟེ། རྫུ་འཕྲུལ་ཆེ་བ་མཐུ་ཆེ་བ་དབང་ཆེ་བར་གྲགས་པ། གསལ་བ་དུལ་བ་འཇིགས་པ་མེད་པ་མང་དུ་ཐོས་པ་མདོ་སྡེ་འཛིན་པ་འདུལ་བ་འཛིན་པ་མ་མོ་འཛིན་པ་"ཞེས་པ་ནས་"དེ་གཉིས་ཀྱང་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་རྫུ་འཕྲུལ་དང་བཅས་པས་ (མདོ་) འདི་རྒྱས་པར་བྱེད་པའི་བར་དུ་འགྱུར་གྱི།"[1] ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་དེ།

---

1 པད་ཆོས་ ཤོག ༧༠/བ དྲངས་པ།

ས་རཏ་ལུང་བསྟན་པའི་མདོ་ཚིག་ཏུ་བཞིད་པ་ལ་ཐུག་ལ། འོན་ཀྱང་མདོ་འདི་ནི་ས་རཏའི་ལུང་བསྟན་ཡིན་པར་ཅུང་སྒྲུབ་དཀའ་བར་སྣང་ངོ་།།

དེས་ན་བླ་མ་མི་འཇིགས་སྤྲིན་གྱིས་གསུངས་པ་མི་ཉག་སློན་གྲུབ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བསྒྱུར་བའི་ལོ་རྒྱུས་སུ་ས་རཏཔཱ་རབ་ཏུ་བྱུང་བ་དང་། དེས་ནཱལནྡཱའི་མཁན་པོ་མཛད་པ་སོགས་ཀྱི་སྐོར་རྣམས་མི་བྱུང་བས། ལོ་རྒྱུས་འདི་རྒྱུད་སངས་རྒྱས་ཐོད་(བུདྡྷཀཔཱལ་)པའི་ཟིན་བྲིས་འགའ་ཞིག་[1]ལས་བྱུང་བའི་ལོ་རྒྱུས་ལ་བརྟེན་པར་སྣང་ལ། སློབ་དཔོན་འདིའི་མཁན་པོ་སུས་སྒྲ་གཅན་འཛིན་ཡིན་པར་འདོད་པ་ནི་ལེགས་སྦྱར་དང་པཱལི་ [གསོད་སྤྲིན་གྱི་སྐད་དམ་རྒྱ་མཚོའི་མཐའི་སྐད་] སོགས་ལས་གཉིས་ཀའི་མཚན་དུ་རཱཧུལབྷདྲ་ཞེས་པ་དང་། ཐྲདཧྲ་རཱཧུལ་ཞེས་མཐུན་པར་བྱུང་བ་ལས་སྒྲ་གཅན་འཛིན་དང་ས་རཏའི་མཁན་པོ་སྒྲ་གཅན་འཛིན་འོད་གཉིས་ཀ་གཅིག་ཏུ་འཁྲུལ་ཞིང་། ས་རཏ་བདེ་བྱེད་བདག་པོ་དང་། ཀུཀུ་རིཔཱ་མགོ་བཙུན་གྲུབ་རྗེ་ཡིན་པའི་གདམ་རྒྱུད་ནི་གོང་སྨོས་ལྟར་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ཚུལ་ཙམ་ལས། སྤྱིར་བཏང་དངོས་འབྲེལ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་པར་དཀའོ།། དེས་ན་གསང་འདུས་འཕགས་སྐོར་དང་། ཡོ་གའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་གང་བསྒྲིགས་ན་སློབ་དཔོན་འདི་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་སུ་གཏོགས་པ་[2]

---

1 ‘སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་ཟིན་བྲིས་རྒྱ་དཔེ་འཁོར་བ་ཞིག་ན་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་སྐོར་མེད’ - ཏཱརནཱཐ་བཀའ་བབས་དང་། མཁས་ཆོས་དེབ ༡ ཤོག 159 - 163.

2 དཔེ་འགར་‘རཱཏྲའི་ཡུལ་’ཞེས་བྱུང་ཡང་། དེ་རཱཌྷ་ཡིན་ནམ་མཏྲཱཌྷཡིན་དཔྱད་དགོས། གང་ལྟར་ཡང་དེ་ཨོཌིཝིཤའི་ནང་ཚན་ཡིན་པར་ངེས།

ཨོཊྚི་ཡཱ་ནའི་ཡུལ་[1]དུ་འཁྲུངས། རིགས་བྲམ་ཟེ་ཡིན་ལ་བྲམ་ཟེའི་ལས་དྲུག་ལ་མཁས་པ་སོགས་མཁས་པའི་གྲགས་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ། ཡུལ་དེར་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཚང་འཚོང་མའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་དེས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་རྩི་ཆང་གི་ཚུལ་དུ་ཕུལ་བས་སློབ་དཔོན་གྱིས་རྣམ་རྟོག་མེད་པར་བཞེས་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མང་དུ་སྐྱེས། ཨོཊྚི་ཤི་ཤའི་རྒྱལ་པོ་ཤྲི་སུ་ཀ་ལྤ་དང་། རྒྱལ་པོ་མཐོང་ན་དགའ་བའི་བུ་མོ་རོལ་པ་མོ་སྙེ་ཕྱིས་དངོས་གྲུབ་བརྙེས་པའི་མཚན་‘མདི་སློ་གྲོས་བཟང་མོ་’འགའ་ཞིག་ཏུ་‘མདི་སྐལ་བ་བཟང་མོ་’ཞེས་ཀྱང་བྱུང་བ་དེ་སོགས་ལས་གདམས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་གསན། ཆང་འཐུང་བ་བྲམ་ཟེ་རྣམས་ཀྱིས་གོ་བས་དེ་དག་གིས་སློབ་དཔོན་གནས་དབྱུང་བྱེད་ཐབས་སུ་མི་དམངས་དང་རྒྱལ་པོ་སོགས་ལ་དྲིལ་བསྒྲགས་བྱས་པ་སོགས་སྐྱེར་བཏང་ལྟར་ལ། དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ནཱ་ལནྡྲ་རུ་བྱོན། གནས་བརྟན་[2]རྟ་སྐད་ (ཨ་ཤྭ་གྷོ་ཥ་) ཀྱི་མཁན་བུ་གནས་བརྟན་ནག་[3]པོ་ལས་བསྙེན་པར་རྫོགས། མཚན་སྒྲ་གཅན་འཛིན་བཟང་པོར་བཏགས། དེར་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་གཞུང་ལུགས་སྤྱི་དང་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ཚུལ་དར་བར་མཛད། རྒྱུད་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་འགྲེལ་པ་སོགས་ཀྱང་མཛད། ཀླུ་སྒྲུབ་རབ་ཏུ་བྱུང་ནས་མཐར་བསྙེན་པ་དེ་ལ་གཏད་དེ་སྤྱོད་པ་ལ་གཤེགས་སྐབས་ལྷོ་ཕྱོགས་མཏྭ་རནྡྷ་ར་[4]ཞིང་གི་མཁའ་འགྲོ་མ་མདའ་མཁན་གྱི་བུ་

1 ཏཱ་ར། བཀའ་བབས། མཁས་ ཆོས་དེབ་ 1 ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 རྟ་སྐད་འདི་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་བཙུན་པ་རྟ་སྐད་ཡིན་གྱི་དཔའ་བོ་མིན་ནོ།། ཏཱ་ ར་ རྒྱ་ ཆོས་ ༦༥_༦༦

3 ཏཱ་ར་རྒྱ་ཆོས་ ཤོག ༦༥ - ༦༦།

4 ཁ་ཅིག་ཏུ་“ཥྭ་རྣན་སླིར་ཞིང་གི་ལྷ་མོ་དེ་གཟིགས་”ཟེར་བའང་འདུག

ཀོས་[1]མདའ་སྒྲོང་བའི་བྱ་བ་ལ་གཟིགས་པས་ཆོས་ཉིད་མངོན་དུ་གྱུར་[2]། དེ་ཉིད་ཕྱག་རྒྱར་ཁྲིད་དེ་ཡུལ་ལྷ་ཚོགས་སུ་སྤྱོད་ཅིང་མདའ་བཟོ་བའི་བྱ་བ་མཛད་པས་སརཧ་སྟེ་མདའ་བསྣུན་ཞེས་མཚན་དུ་གྲགས་སོ།།

དགེ་འདུན་གྱི་གནས་བརྟན་ཆེན་པོ་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཡིན་པ་ལ་ཆང་དང་མདའ་མཁན་གྱི་བུ་མོ་བསྟེན་པ་སོགས་མི་འོས་པ་ཆེན་པོར་མཐོང་ནས་རྒྱལ་འབངས་ཀུན་བལྟར་འོང་བ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་མདའ་སྒྲོང་བཞིན་དུ་འདི་ལྟར་གསུངས་ཏེ—

ཀྱེ་ལགས་ང་ནི་བྲམ་ཟེའི་ཧེ།།
སྨྱིག་མཁན་མོ་དང་ལྷན་ཅིག་སྤྱོད།།
རིགས་དང་རིགས་མིན་ངས་མ་མཐོང་།།
དགེ་སློང་མགོ་བྲེག་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན།། ༢
ཆུང་མར་བཅས་ཏེ་ལྷན་ཅིག་རྒྱུ།།
ཆགས་དང་ཆགས་བྲལ་དབྱེར་མེད་ཡིན།།
མི་གཙང་འདིར་ནི་རྣམ་རྟོག་སྟེ།།
འདི་ལྟ་གཞན་གྱིས་མི་ཤེས་སོ། ༣ །

---

1 ཞིང་གི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཟེར་བ་མང་“ཡང་ཀླུ་ལས་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་གདོལ་བའི་ཆ་བྱད་ཅན་གྱིས་རྗེས་སུ་བཟུང་། དེ་དང་ལྷན་ཅིག་གནས་པས” - ཞེས་སོ། པད་ཆོས ཤོག ༧༣ 144

2 ཆོས་ཉིད་མངོན་དུ་གྱུར་ཚུལ་ནི - མདའ་དྲང་པོར་བསྲུངས་པས གནད་འཕིག་པ་ལྟར་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དྲང་པོར་བསྲུངས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པར་གཟིགས་ནས་དེ་ཉིད་མངོན་དུ་མཛད་དོ།། བྱ་སྟོན - འདུས་པ་བཤད་ཐབས - ཤོག ༣༨ - ༣༩།

སྤྲུལ་གདུག་ལྷ་བུའི་སྐྱེ་བ་འདི།[1]།

ཞེས་སོགས་གསུངས་དེ་ཀུན་ལ་གདམས་པར་མཛད་དོ།།

གཞུང་དང་ཆོས་འབྱུང་ཕལ་ཆེ་བར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་དོན་སྐོར་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་བཤད་པ་མང་ཡང་། རྒྱལ་པོ་དོན་དང་བཙུན་མོ་དོན་གཉིས་ཕྱིས་བལ་ཡུལ་གྱི་ལྷ་བྲིས་པ་མཁས་པ་ཞིག་གིས་བརྐམས་པ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱི་མཚན་གཡར་བ་ཡིན་པར་བུ་སྟོན་རིན་པོ་ཆེས་གསུངས།[2]

སློབ་དཔོན་འདིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་གྲུབ་ཐོབ་ནི་ཀླུ་སྒྲུབ་ལྷུ་ཧི་པ་སོགས་ཡིན་ལ། ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་བླ་མ་བྱང་སེམས་བློ་གྲོས་རིན་ཆེན་ཡང་སརཧའི་མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་པ་སོགས་དཔྱད་རྒྱུ་མང་ཡང་། མང་བས་འཇིགས་པས་རེ་ཞིག་འདི་ཙམ་ཞིག་གོ།

སརཧཔ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་ཀའི་རྒྱུད་རིམ་དུ་དཔྱད་གཞིར་སྣང་བས་འདིར་ཅུང་ཟད་བཤད་པ་ཡིན་ལ། ལྷུ་ཧི་པ་ལ་སོགས་པའི་གྲུབ་ཐོབ་གཞན་རྣམས་ནི་དཔྱད་གཞི་དེ་ཙམ་མི་ཆེ་ཞིང་། འཁྲུངས་ཡུལ་དང་དུས་རབས་ལ་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་དང་། ལོ་རྒྱུས་ལ་གནམ་འདྲིས་པ་འགའ་འདུག་ཀྱང་དེ་དག་རྒྱུད་པ་སོ་སོའི་བཤད་ཚུལ་མི་མཐུན་པ་ཙམ་ལས་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ཁུངས་གསལ་བར་མི་སྣང་།

---

1 ཀང་པ་འདི་ནི་ཏཱརཱནཱཐའི་གསུང་"བཀའ་བབས་བདུན་ལྡན་གྱི་རྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར་ངོ་མཚར་རྨད་བྱུང་ལ་བཀོད་འདུག་ཅིང་། ཕྱིས་མཁས་བཙུན་བཟང་པོས་ཀྱང་དེ་ཉིད་ཁུངས་སུ་བྱས་འདུག" མཁས་༠ཚོས་༠ — དེབ་ ༧ ཤོག 159

2 འདུས་པ་བཤད་ཐབས - ཤོག ༣༨ — ༣༩ དེབ Vol. 9 དེ་ལི་དཔར།།

གྲུབ་ཆེན་ཀུ་ཀུ་རི་པཱའི་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་མཚན་ཤྲཱིཊཧྣདྭ་ཡིན་པ་དང་། དེ་ཡང་བདེ་བྱེད་བདག་པོའི་སྤྱན་མགོ་བཙུན་གྲུབ་རྗེ་ཡིན་པ་དང་། དེ་སྲས་སྒྲ་གཅན་འཛིན་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་ཞིང་བསྙེན་པར་རྫོགས་པ་དང་། དེ་ལ་མཁན་པོས་དབང་བསྐུར་པ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཀྱང་། གོང་སྨོས་སརཧའི་སྐབས་སུ་བཤད་པ་ལྟར་ལུང་ཁུངས་མི་གསལ་ཞིང་དུས་སོགས་ཀྱང་ཅུང་འཕྲིག་དཀའོ། །འདིའི་སྐོར་བུ་སྟོན་གྱི་ཡོ་ག་གྲུ་གཟིངས་སུ་གསལ་ལ། སློབ་དཔོན་འདིས་མཧཱམཱཡཱའི་རྒྱུད་ཨུ་རྒྱན་ནས་སྤྱན་དྲངས། དེའི་ཆོས་སྐོར་བདུན་དུ་གྲགས་པ་ལས་དྲུག་འདིས་མཛད། འདི་རྣལ་འབྱོར་པ་བརྒྱད་ཀྱི་ཡབ་ཏུ་ཡང་གྲགས་སོ།། ད་ལྟ་བསྟན་འགྱུར་ནང་འདིས་མཛད་པའི་གཞུང་བཅུ་དྲུག་ཙམ་བཞུགས་སོ།།

ལཱུཧིཔཱ— ལཱུ་ཧི་པ་དང་། ལཱུ་ཨི་པ་དང་། ལུ་ཡི་པ་དང་། ལཱུ་ཡི་པ་ལ་སོགས་པ་བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་བྲིས་ལུགས་མི་འདྲ་བ་མང་ཡང་། ལོ་ཙཱ་བ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཞི་དབྱིངས་སུ་ཐིམ་རྗེས་བོད་སྟོན་གསུང་རབ་ལ་དག་ཐེར་བྱེད་པོ་རྣམས་ལ་ལེགས་སྦྱར་སོགས་ཀྱི་སྐོར་ལ་ཡིད་བརྟན་བཞག་ས་གང་ཡང་མི་འདུག་པས་འདིར་ལུ་ཡི་པ་སོགས་ཀྱི་ཚིག་དོན་གང་ཡིན་བཤད་པར་དཀའ་ལ། རྗེ་དཔེ་འགར་ཡང་ལཱུཧིཔཱ་ཞེས་བྱུང་བས་དེ་ནི་ཉ་ལྟོས་འཚོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་མངོན་ནོ།། སློབ་དཔོན་འདིའི་འཁྲུངས་ཡུལ་རྣམ་ཐར་དུ་སིངྒལ་དང་། དེའི་རིགས་ཀྱང་རྒྱལ་རིགས་ཏེ། རྒྱལ་པོའི་བུ་བར་པ་ཡིན་པར་བཤད་ཀྱང་བུ་སྟོན་དང་[1]པད་དཀར་

---

1 བུ་སྟོན་གསུང་ ཆ ཤོག ༣༧ 2

ཆོས་འབྱུང་[1]དང་གཞན་ཆོས་འབྱུང་[2]མང་པོར་སློབ་དཔོན་འདིའི་འཁྲུངས་ཡུལ་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་ཡིན་པ་དང་[3]། དེ་ཡང་ཨོ་ཊི་ཤ་ཡིན་པར་བཤད་ལ། རིགས་ཀྱང་ཡིག་མཁན་གྱི་རིགས་ཡིན་པར་བཤད་དོ།[4]།

དེ་ཡང་ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོའི་ཡིག་མཁན་ཟླ་བ་རོལ་བའི་སྲས་སུ་འཁྲུངས། ‘ཀུན་ཏུ་དགེ་’ཞེས་མིང་བཏགས། ཕྱིས་སུ་སརཏཔཱ་དང་། ཤཝརཔཱ་གཉིས་ཀས་རྗེས་སུ་བཟུང་བས་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ།།

འཁྲུངས་ཡུལ་སིནྡྷལར་བཤད་པ་ནི་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་ལ་ཤར་ལྷོ་གཉིས་སུ་ཕྱེས་པ་ལས་ལྷོ་ཡི་ཆ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ལངྐཱ་པུ་རི་དང་། ཤར་གྱི་ཆ་དེ་ལ་སཾ་བྷོ་ལ་ཞེས་གྲགས་ལ། སཾ་བྷོ་ལ་ལ་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏིས་དབང་བྱེད་པར་བཤད་ཅིང་། ལངྐཱ་པུ་རི་ལ་ཛཱལནྡྷརས་དབང་བྱེད་པ་སོགས་ཀྱི་བཤད་ཚུལ་ཡོད་ལ[5]། ལངྐཱ་པུ་རི་ཞེས་པ་སིནྡྷལའི་གླིང་གི་མིང་དུ་ཡང་བྱུང་བས། དེ་གཉིས་གཅིག་ཏུ་བསམ་ནས་སློབ་དཔོན་འདིའི་འཁྲུངས་ཡུལ་སིནྡྷ་ལ་ཡིན་པར་བཤད་དམ་སྙམ། འཁྲུངས་ཡུལ་མགྡྷ་དང་། རྒྱལ་པོ་རཏྣ་པཱ་ལའི་ཡིག་མཁན་ཡིན་པ་སོ་ཊ་ནི་[6] དུས་ཕྱིས་ཡུལ་དབུས་སུ་ཕེབས་པའི་དུས་ཡིན་སྙིད་པ་ཙམ་ཡིན་གྱི། འདིའི་

---

1 པད་ཆོས ཤོག, བ, 148 དེ་ལ།

2 མཁས་བཙུན་, ཆོས དེབ 91 .

3 པད་ཆོས ཤོག བ, 148 དེ་ལ།

4 དེ་ཉིད།

5 ཨིནྡྲ་བྷུ་ཏི་རྣམ - ८३ ।

6 राहुल. पु. नि० १२० तथा-१४३ ।

འཁྲུངས་ཡུལ་མགྷ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དུས་རབས་ནི་སློབ་དཔོན་འདི་ཐོགས་མེད་སྐུ་མཆེད་ཀྱི་དུས་ཙམ་གྱི་ཡིན་པར་ངེས་ལ། སརཧས་རྗེས་སུ་བཟུང་བར་བཤད་ཀྱང་། ཕྱིས་བྱིན་གྱིས་རླབས་པ་ལ་ངེས་པ་མེད་ལ། དངོས་ཀྱི་ཞབས་ཟིན་པ་སོགས་ནི་ཏུང་མི་འགྲིག་མོད། འོན་ཀྱང་སརཧ་སྐུ་ཆེ་རིང་པོར་བཞུགས་པས་ཡིན་སྲིད་པ་ཙམ་མོ།།

མཱིནཔཱ— གྲུབ་ཆེན་མཱིནཔཱ་ནི་ནང་པའི་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ཅུའི་ནང་དུ་གྲགས་པར་ཚད་ལྡན་གྱི་གཞུང་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུན་མོང་དུ་གྲགས་ལ། ཕྱི་རོལ་པའི་གཞུང་ལའང་གྲགས་ཆེ་བར་སྣང་སྟེ། དེང་སང་ཡོངས་གྲགས་ལྟར་"ནཱཐསཾཔྲདཱཡ་"ཟེར་བ་དང་། "སིཏ་སཾཔྲདཱཡ་"ཟེར་བའི་ཆོས་རྒྱུད་གཉིས་ཡོད་པ་ལ། ནཱཐསཾཔྲདཱཡ་ཟེར་བའི་ཆོས་རྒྱུད་དེའི་ཐོག་མ་ནི་མཏྶྱེནྡྲནཱཐ་ཟེར་བ་དེ་ཡིན་ཅིང་། མཏྶྱེནྡྲནཱཐ་ནི་ཉའི་དབང་པོའམ་ཉ་འཛིན་དབང་པོ་སྟེ་མཱིནཔའོ།། མཱིནཔཱདང་མཱིནནཱཐ་དང་དེ་བཞིན་མཏྶྱེནྡྲནཱཐ་རྣམས་ནི་མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་སོ།། གཞུང་ཁ་ཅིག་ཏུ་མཆིཆྪཔཱ་ཞེས་པའང་འདུག ཇོ་རྗེ་ཞབས་དང་ཨཙིནཏཔཱ་ཡང་འདིའི་མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་སུ་གྲགས་སོ།།

འདིའི་རྣམ་ཐར་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའི་བླ་མ་མཏྣདེཝ་དང་། དེ་ཡང་རྒྱ་མཚོའི་ནང་གི་ཕོ་བྲང་དུ་བཞུགས་ཏེ་ཆོས་བཤད་པ་གོ་ནས་ཉའི་ལྟོ་བར་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་སོགས་ཕྱི་གཞུང་ཕལ་ཆེར་ལས་ཀྱང་མཐུན་པར་བྱུང་ལ།[1]

---

1 बौद्ध सिद्धों के चर्यापाद, आ. पा. च. पृ० १०५ ।राय बहादुर के० एल० बरूआ.- के आर्ली हिस्ट्री ऑफ कामरूप. पृ० १५९ ।इसी में उद्धृत मीननाथ की रचना—

འདིས་དང་པོ་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ། ཕྱིས་ཙཔརིཔཱད་ (པཙརིཔཱ་) དང་མཇལ་ཏེ།[1] ནང་པའི་སྔགས་ཀྱི་གདམས་པ་ཞུས་པས་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་སྣང་ངོ༎ དེས་ན་དང་པོ་ནས་སངས་རྒྱས་ལ་སྐྱབས་སུ་སོང་བ་ཡིན་མིན་མི་གསལ་བས་འདི་ཕྱི་ནང་ཐུན་མོང་ལ་གྲགས་པའི་གྲུབ་ཐོབ་ཞིག་གོ །

འདིའི་འཁྲུངས་ཡུལ་དང་རིགས་སོགས་ཀྱང་རྣམ་ཐར་ལས་བྱུང་བ་ལྟར་མཁས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་འདོད་པར་སྣང་ལ། སྔོན་གྱི་ཕྱི་རོལ་པའི་གཞུང་ཏཾཏྲཱལོཀ་སྤེ་རྒྱུད་སྣང་བྱེད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་ལས་ —

"འཇིགས་བྱེད་ཉིད་ནི་འཇིགས་བྱེད་ལས་ཐོབ་སྟེ༎ ཞེས་པ་ནས་
ཀཱམརཱུཔ་གྲུབ་པའི་བསྟི་གནས་སུ༎
མཚྪེནྡྲ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཡིས།"།[2]

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། དེ་བཞིན་གཞན་ལའང་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་། འདི་སྐོར་ཞིབ་ཏུ་བཤད་དགོས་ནའང་། འདིར་སྙིང་གཞི་ཙམ་ཞིག་འབྲི་རྒྱུ་དམིགས་ཡུལ་ཡིན་པས་མང་བས་འཇིགས་ནས་མ་བྲིས་སོ༎ 'ནཱ་ཐ' ཞེས་པའི་ཆོས་

"बहन्ति गुरू परमार्थेर बाट, कर्मकुरंग समाधिक पाट ।
कमल विकसित कहिहणजमरा, कमल मधु पिवित्रिन भमरा ।।"

1 ནཱཏུལ - पुरा. नि. पृ. १३४।-१५४ ।

2 भैरव्या भैरवात् प्राप्तं योगं व्याप्य ततः प्रिये ।
तत्सकाशात्तु सिद्धेन मीनाख्येन वरानने ।
"कामरूपे महापीठे मच्छेन्द्रेण महात्मना" ।।

(त्रिवेन्द्रम्-संस्कृत सीरीज पृ० २४, २५, उद्धृत-Indian Histrorical Quarterly March 1950।

རྒྱུད་དང་། སཁྱ་ཤེས་པའི་ཆོས་རྒྱུད་གཉིས་ཀ་ནང་པའི་རྗེས་འབྲང་དུ་འདུག་ཅིང་། ར་ལྷ་ཡང་དེ་དག་གི་ཉམས་ལེན་ཆོ་ག་སོགས་རིག་བྱེད་པ་ལས་ཐ་དད་ཞིང་ནང་པའི་སྔགས་གཞུང་དང་ཤིན་ཏུ་ཐག་ཉེ་བར་མཐོང་རྒྱུ་ཡོད།

མདོར་ན་གོང་སློས་ལྷར་ནཱཐསཾཔྲདཱཡ་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་གར་ལ་སྤྱོད་ནས་ད་བར་མ་ཉམས་པར་ཡོད་པའི་སྔགས་ལུགས་དང་འབྲེལ་བའི་ཆོས་སྐོར་ཐམས་ཅད་སྤྱོད་ནང་པ་ཡིན་པ་ལ་ཕྱིས་སུ་ནང་བསྟན་མདོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ངེས་འབྱུང་བྱང་སེམས་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བའི་གནད་རྣམས་ཉམས་པ་དང་། ཁྱད་པར་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གནས་ལུགས་ལ་བརྟེན་པའི་རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ཕྲ་མོ་རྣམས་ལ་གོ་བ་ལེན་མ་ཐུབ་སྐབས། རྟག་པ་ལ་རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་འགལ་འདུ་ཡོད་པ་མ་མཐོང་བར་སྟོང་ཉིད་ལ་རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་འགལ་འདུ་ཡོད་པར་མཐོང་ནས། བདག་དང་། དབང་ཕྱུག་སོགས་ཁས་ལེན་པ་ཙམ་ལས་འདི་དག་ཕྱི་པ་དངོས་ཡིན་པར་མི་སྣང་། ཡིན་ནའང་དེ་དག་ལ་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་། སྐྱབས་འགྲོའི་སྐོར་མེད་པས་ཕྱི་པ་ཡིན་ཙམ་ནི་ཁས་ལེན་དགོས། འདི་དག་གི་ཉམས་ལེན་སྐོར་གྱི་ནང་དུ་ཕྱི་རོལ་པའི་སྤྱོད་ཀྱི་ཞི་བ་པའི་སྐོར་གྱི་རྒྱུད་རྙིང་པ་འགའ་ཡོད་པར་སྣང་ཡང་། དེ་རྣམས་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོ་དང་། དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་རྒྱུད་དང་ཆ་འདྲ་བ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་དེ་དག་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་འདྲ་ལ། རུདྲ་ཞེས་པ་དྲག་པོའི་རྒྱུད་དང་ལྷ་རྣམས་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྒྱུད་སོགས་དང་འདྲ་ལ། རྒྱུད་འདི་དག་སྔོན་ཐོག་མ་ནས་ནང་པ་དང་སོ་སོ་ཡིན་མིན་དབྱེ་དཀའ། མདོ་ཕྱོགས་ཀྱི་སྟོང་ཉིད་དང་སྙིང་རྗེ་སོགས་ཀྱིས

ཕྱིས་ན་ནི་ལེགས་པར་ཕྱེད་ཐུབ། སྒྱུ་ལུས་དང་འོད་གསལ་གྱི་སྐོར་སོགས་ནི་རྒྱུད་ལས་མངོན་གསལ་དུ་མི་བྱུང་ཞིང་མན་ངག་ལས་རྟོགས་དགོས་པའི་གནད་རྣམས་ཏེ། ཕྱི་རྒྱུད་དང་། དེའི་ཉམས་སུ་ལེན་པ་རྣམས་ལ་ཐུ་མོ་ནས་ཡོད་པར་མི་སྣང་ངོ་། །དེས་ན་སྨྲིནཔྣི་ "ནཱཐ" ཞེས་པའི་ཐོག་མའི་སློབ་དཔོན་ནོ།།[1]།

འདིར་གྲུབ་ཐོབ་གཞན་རྣམས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ལའང་གོང་སྨོས་ལྟར་དུས་རབས་དང་བརྒྱུད་པ་སོགས་ལ་དོགས་གཅོད་ཙུང་ཟད་བྱེད་དགོས་ཀྱང་ཡིག་ཚོགས་ཧ་ཅང་མང་བར་འགྱུར་བས་འཇིགས་པས་མ་བྲིས་ལ། ས་སྐྱ་བཀའ་འབུམ་[2]སོགས་རྒྱ་དཔེ་དང་འབྲེལ་ཆེ་ལ། བཅོས་བསླད་ཀྱང་ཉུང་བས་འདིའི་སྐོར་དེ་དག་དང་མཐུན་པར་ཁས་ལེན་པ་ལེགས།

གྲུབ་པ་ཐོབ་ཚུལ— རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷུཏི་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་བུ་རྣམས་ནི་དང་པོ་ནས་རྒྱུད་སྨིན་པའི་གང་ཟག་ཡིན་པས། གང་ཟག་རང་འགའ་བ་དང་མི་མཚུངས་ལ། ལམ་གོང་མ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་རྒྱུའི་ཆ་རྐྱེན་གང་ཡང་མེད་པ་ཞིག་གིས་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ལ་ཞུགས་ནས། ལམ་གོང་མ་ལོ་འགའ་ལ་མངོན་དུ་བྱས་པ་དང་། མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་རྟེན་འབྲེལ་དང་མཐུན་པར་མི་སྣང་ངོ་། །དེས་ན་འོད་སྲུངས་ཆེན་པོ་དང་

1 'नाथपन्थ' के चौरासी सिद्धों का उत्तराधिकारी सिद्ध हो जाने पर फिर कबीर से सम्बन्ध जोड़ने में दिक्कत नहीं रहती–राहुल. पु. नि. पृ० १३५ ।
नाथपन्थ चौरासी सिद्धों से ही निकलता है । – राहुल. पु. नि. पृ० १३२ ।

2 ས་སྐྱ་བཀའ་འབུམ་ 'ཕ' པར་གཟིགས།

ཀུན་ཤེས་ཀཽཎྜི་ནྱ་ལ་སོགས་པའི་ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་རྣམས་ལྟར། ཡང་དག་པའི་དོན་ངོ་སྤྲོད་བྱས་པ་ཙམ་དང་། སྒོམ་ཙམ་ལས་དོན་མངོན་དུ་གྱུར་པ་དང་། ཁ་ཅིག་གིས་ཟླ་བ་འགའ་དང་། ཁ་ཅིག་གི་ལོ་འགའ་ལས་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་སོགས་ནི་གདུལ་བྱ་སྣོད་དུ་རུང་མ་རུང་གི་ཁྱད་པར་ཡིན་ལ། འདོད་ཆགས་ལམ་ཁྱེར་ལ་སོགས་པ་ནི་ཕར་ཕྱིན་ཐེག་པ་ལ་འང་ཡོད་མོད། ཤིང་སྲིན་ཤིང་ལས་སྐྱེས་ནས་ཤིང་ཉིད་ཟ་ཞིང་ཤིང་གི་སྲོག་འགག་པར་བྱས་ཏེ་རང་གི་སྲོག་འཚོ་བ་ལྟ་བུའི་ཉོན་མོངས་ལམ་འཁྱེར་དང་། དེ་ཡང་འབྲས་དུས་ཀྱི་ཐོབ་བྱ་ལམ་གྱི་རྒྱུད་དུ་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ནི་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཁྱད་ཆོས་དང་། གང་ཟག་རང་འགའ་བ་ཞིག་གིས་དེ་ལྟར་ཉམས་སུ་བླངས་ནས་འབྲས་བུ་མྱུར་དུ་ཐོབ་པ་དང་། དེ་ཡང་ངེས་འབྱུང་ཇེ་ཙམ་ཤུགས་དྲག་པ་དེ་ཙམ་ཐེག་ཆེན་གྱི་རིགས་ཅན་ལ་སྙིང་རྗེ་ཤུགས་དྲག་པ་འོང་ལ། སྙིང་རྗེ་ཇེ་ཙམ་ཤུགས་དྲག་པ་དེ་ཙམ་སེམས་བསྐྱེད་ཤུགས་དྲག་ཅིང་ས་ལམ་གྱི་བགྲོད་པ་མྱུར་བ་དང་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་མྱུར་ལ། སྙིང་རྗེ་དང་སེམས་བསྐྱེད་ཀྱི་ལུས་སྟོབས་ཤིན་ཏུ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་རྣམས་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ལྟ་བུའི་ལམ་འདི། ལུས་སྟོབས་དང་གོ་ཁྲབ་ཤིན་ཏུ་བཟང་པོ་ཅན་གྱི་དཔའ་བོ་ལ་དགྲ་བོའི་དམག་དཔུང་གི་དབུས་སུ་གནམ་ལྕགས་ཀྱི་རལ་གྲི་ལག་ཏུ་ཐོབ་པ་ལྟར། ཉོན་མོངས་པའི་དགྲ་ཚོགས་མ་ལུས་པ་འཇོམས་པར་བྱས་ཏེ། འཇིགས་པ་མ་ལུས་པ་ལས་རང་གཞན་གཉིས་ཀ་སྒྲོལ་བར་བྱེད་པ་ཞིག་འོང་ངེས་སོ།།

དེ་ཡང་ཕར་ཕྱིན་ཐེག་པ་ལ་ལྟ་སྤྱོད་གཉིས་ཟུང་འབྲེལ་དུ་མེད་ན་ཚོགས་སྦྱོར་ལ་སོགས་པའི་ལམ་གོང་མར་བགྲོད་པ་དཀའ་བའི་ཚུལ་ཤིན་ཏུ་གསལ་ཡང་། གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་མཆོག་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་ལ་དཔག་ན། དབང་པོའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་གྱུར་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པའི་ཡོན་ཏན་ངོ་མཚར་ཅན་ལ་དད་པ་དང་། རང་གི་དངོས་འབྲེལ་ལུས་འདིས་མྱོང་གྱུར་གྱི་སྡུག་བསྔལ་ལ་དམིགས་པའི་ཡིད་བྱུང་བཅོས་མིན་དང་། རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་བྱ་བ་ངན་པ་ལས་ཡིད་བྱུང་བ་དང་། ཇོ་འཕྲུལ་དང་ཡ་མཚན་གྱི་སྤྱོད་པ་ལ་བཅོས་མིན་གྱི་དད་པ་དང་འདུན་པ་སོགས་གང་ཡང་རུང་བའི་སེམས་རེ་ལ་བརྟེན་ནས་བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་ལམ་ལ་ཞུགས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་མང་ལ། བླ་མའི་བཀའ་བཞིན་སྒྲུབ་པའི་དམ་བཅའ་ནི་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུན་མོང་པར་སྣང་ངོ་[1]།། དཔེར་ན་གུ་རུ་ལཱུ་ཡི་པཱ་ལྟ་བུ་ (ཤོག་༥) བླ་མའི་ནུས་པ་དང་བཅུད་ལེན་གྱི་གདམས་པ་སོགས་ལ་ལྷག་པར་དད་པས་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུ་རུ་ཤ་བ་རི་པཱ་ལྟ་བུ་ (ཤོག་༣༣) ངན་སོང་གི་སྡུག་བསྔལ་ལ་དམིགས་པས་ཡིད་བྱུང་བས་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུ་རུ་ཀཾ་ཀ་རི་པཱ་ (ཤོག་༣༧) ལྟ་བུ་རང་གི་ཆུང་མ་དང་བྲལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་ཙམ་ཞིག་ལས་དམིགས་པ་སྤྲོས་ཏེ་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུ་རུ་མི་ན་པཱ་ (ཤོག་༣༨) ལྟ་བུ་ལ་གྲུབ་ཐོབ་ཙ་པ་རི་པཱ་ (པ་ཙ་རི་པཱ་) དང་མ་མཇལ་གོང་ངེས་འབྱུང་སོགས་དང་ལྟ་

1 འདི་དག་ནི་བསྐལ་བ་མང་པོའི་ལམ་དང་རྒྱུ་ཚོགས་རྣམས་བླ་མའི་བཀའ་སྒྲུབ་པའི་ཉམས་ལེན་སྐད་ཅིག་མ་རེས་བགྲོད་པར་གསུང་རབ་ལས་མང་དུ་བྱུང་བ་རྣམས་གྲུབ་འབྲས་སུ་མངོན་པའི་དཔེ་ཡང་ཡིན་ནོ།།

བའི་གོ་བ་གང་ཡང་ཡོད་པར་མི་སྣང་ལ། མ་ཟད་འདིས་མུ་སྟེགས་ཞི་ང་ཕའི་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བའི་བདག་དང་། ཞི་བ་པ་སྟེ་དབང་ཕྱུག་སྒྲོས་མེད་ཀྱི་དངོས་པོ་སོགས་ལ་དམིགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཉམས་སུ་ལེན་པའི་ཚུལ་གསལ་ཞིང་། དེ་བཞིན་དུ་གུཧྱཏྲིཔ་ལྷ་བུ་ (ཤོག་༥༨) རང་ཉིད་ན་བའི་སྡུག་བསྔལ་དང་། བུ་དང་མཐའ་མའི་བརྟས་པ་ལས་ཡིད་བྱུང་བ་ཙམ་ཞིག་རྒྱུ་མཚན་དུ་བྱས་ཏེ་གདམས་པ་ཉམས་སུ་བླངས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་དང་། གུ་རུ་ཤྲཱི་ལི་པ་ (ཤོག་༦༣) ལྷ་བུ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་སྐྱོང་ཀའི་སྐད་ལ་དམིགས་པའི་འཇིགས་པ་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། མཡོ་གི་པ་(ཨརྡྷ་ཀིཔ་ཤོག་ ༡༠༨) ལྷ་བུ་ཕ་མས་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱུར་བ་དང་། རང་ཉིད་ཀྱིས་བྱ་བ་གང་ཡང་སྒྲུབ་མི་ནུས་པ་ཙམ་ལ་དམིགས་པའི་ཡིད་བྱུང་ཙམ་ལ་བརྟེན་ནས་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུ་རུ་ཀུ་ཙི་པ་ (ཤོག་༡༣༡) ལྷ་བུ་ལྷག་ཕྲའི་སྡུག་བསྔལ་ཙམ་ལ་ཡིད་བྱུང་བས་གྲུབ་པ་ཐོབ་ཚུལ་སོགས་ཤིན་ཏུ་མང་ལ། འདི་དག་ལ་དཔག་ན་ཡིད་བྱུང་དང་། འཇིགས་པ་དང་། དད་པ་གསུམ་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱུན་བརྟན་པ་ཞིག་སེམས་རྒྱུད་དང་འདྲེས་ངེས་སུ་ཡོད་ན་ཐོར་ཐར་པ་མྱང་འདས་དང་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་སོགས་ལ་གོ་བ་གང་ཡང་མེད་རུང་། གཞན་གྱི་བསམ་པ་དང་བག་ལ་ཉལ་གཟིར་ཐུབ་པའི་བླ་མ་སྙིང་རྗེ་ཅན་ཞིག་དང་མཇལ་ཚེ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ལམ་གྱིས་ཚེ་གཅིག་ལ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་ངེས་སོ།།

དེ་ཡང་ཚུལ་འདི་ནི་ཐབས་མཁས་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་དགོངས་པ་རྒྱུད་སྡེར་གསུངས་པ་རྣམས་གཟུར་གནས་དང་ཅན་

གྱི་སློབ་མ་ཞིག་ལ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ཡོན་ཏན་བཅུ་ཟུང་ལྡན་པའི་བླ་མ་ཞིག་གིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཡིན་གྱི། སློབ་མ་སོམ་ཉི་ཅན་དང་། བླ་མ་འོལ་ཚོད་ཅན་སོགས་ཀྱིས་བཤད་སྒྲུབ་ལས་རྒྱུད་ནས་བཤད་པའི་གྲུབ་འབྲས་ཡོད་པར་ནི་མི་སེམས་སོ།། རྩལ་གསུམ་སྒྲོན་མེ་ལས་ཀྱང་—

དོན་གཅིག་ན་ཡང་མ་རྨོངས་དང་།།
ཐབས་མང་དཀའ་བ་མེད་པ་དང་།།
དབང་པོ་རྣོན་པོའི་ཆེད་བྱས་ན།།
སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་འཕགས།། [1]

ཞེས་ཐོབ་བྱ་རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་གོ་འཕང་ལ་ཁྱད་པར་མེད་ཀྱང་། ཐབས་མང་བ་དང་། འདོད་ཡོན་ལམ་འཁྱེར་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་གྱིས་ལམ་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ཡོད་པས་མི་དཀའ་བ་དང་། གདུལ་བྱ་ཤིན་ཏུ་དབང་རྣོན་ཡིན་པས་ཉོན་མོངས་དང་གཉེན་པོ་སྦྱོད་པ་ལ་མཁས་པས། སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་འདི་ཕར་ཕྱིན་ཐེག་པ་ལས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པར་གསུངས་པའང་། ནད་པ་ལྟ་བུའི་གདུལ་བྱ་དང་། སྨན་པ་ལྟ་བུའི་བླ་མ་གཉིས་ཚོགས་ལ་རག་ལས་ཏེ། དེ་ཡང་གདུལ་བྱའི་ཁྱད་ཆོས་ནི་ཅི་གསུངས་བཀའ་བཞིན་སྒྲུབ་པ་ལ་ཞུམ་པ་མེད་པ་

1 རྩལ་ཤོག ༡༦/རྒྱུད་ཙྭ། བོད་གཞུང་རྣམས་སུ་ལུང་འདི་དྲངས་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ལ། སྡེ་བསྟན་དཀར་ཆག་ཏུ་འདི་ཉིད "སློབ་དཔོན་མཐོ་བཙུན་ཏྲི་པི་ཊ་ཀམ་ལས་མཛད་པ" ཡིན་པར་གསུངས། – ཤོག ༨ ༣༧/ན། འདི་སྡེ་བསྟན་ཤོག ༩ – ༣༩ རྒྱུད་ ཙུ་པར་བཞུགས། རྒྱ་གར་གྱི་དཔེ་འགའ་ལས་གཞུང་འདི སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེས་མཛད་པར་བཤད་འདུག །
– གོ་པི་ནཱཐ་ཀཝི་རཱཛའི བཽདྡྷ་ཏནྟྲ་ཀྱི་སྙིང་གཞི། ཤོག ༣༦།།

དང་། དེ་ལས་ཕྱིར་མི་བཟློག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་སྣང་ངོ་།། གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ནི་ཚུལ་འདི་ལ་བརྟེན་པ་མང་ལ། ལྷ་གང་དང་རྒྱུད་གང་ལས་གྲུབ་པ་ཇི་ལྟར་ཐོབ་པའི་ཚུལ་ནི་རྒྱུད་ཀྱི་སྒྲུབ་ཐབས་སོ་སོའི་བླ་རྒྱུད་སོགས་སུ་གསལ་བ་ལྟར་ཡིན་ཞིང་། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་ལས་རྒྱུད་སྡེ་འོག་མ་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དང་། སྒྲོལ་མ་སོགས་ལས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་འགའ་འདུག་ཀྱང་། གཙོ་བོར་གསང་བདེ་གཉིས་དང་། ཀྱེ་རྡོར་གདན་བཞི་སོགས་དང་། རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྐོར་དང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྐོར་ལ་བརྟེན་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ཁོ་ནར་སྣང་ཞིང་། དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་དང་། ཕུར་བའི་སྐོར་དང་། གྲུབ་པ་བཀའ་བརྒྱད་ལ་སོགས་པའི་ལམ་ལ་བརྟེན་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་མཚན་གཞན་གྱིས་ཡོད་སྲིད་ཀྱང་། དངོས་སུ་ནི་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་འདིར་དེ་འདྲ་ཡོད་པར་མི་མངོན་ནོ།།

ལྷ་སྒྲུབ་— སྔགས་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ཙམ་ལ་ལྟ་བ་རྙེད་པ་མི་དགོས་ཤིང་། མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ལ་ནི་ལྟ་བ་ཙམ་མ་ཟད་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་ཟག་མེད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་རོ་གཅིག་ཏུ་བསྐྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་ཡང་ཐིམ་གསུམ་གྱི་རིམ་པ་ལས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པའི་སྣང་བ་ཤར་ཆེ་ཆོས་ཅན་དེ་ཉིད་ཀྱི་སྟེང་དུ་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བའི་གནད་ངོ་སྤྲད་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་སྐུའི་དེ་ཉིད་སྒོམ་པ་དང་། དེ་ཡང་སྒྲུབ་པ་པོའི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ལྟ་བུ་གཞི་ལྡོག་ནས་ཆོས་སྐུར་སྒོམ་པ་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར་ཐམས་ཅད་རོ་གཅིག་པའི་ཆོས་སྐུ་རང་ལྡོག་པ་དགོས་པས། འདིར་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་ནི་སྔགས་ལམ་གྱི་སྲོག་ལྟ་བུར་

གནས་ལ། དེ་ལྟ་ནའང་སྔགས་ལུགས་ཀྱི་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་སྟེ། བདེ་སྟོང་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་ཟུང་འཇུག་གི་ཡ་རྒྱལ་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་ལ་ནི་ཐལ་རང་གི་ལྟ་བས་ཁྱབ་པར་ནི་མི་བཞེད་དོ།། ཐལ་རང་གི་ལྟ་བའི་སྒོ་ནས་བདེ་སྟོང་སྦྱོར་ཚུལ་སོར་ནི་ཀླུ་སྒྲུབ་ཡབ་སྲས་དང་[1]། མིའི་དབང་པོ་གྲགས་པ་[2]དང་། པད་དཀར་[3]སོགས་ཀྱི་གཞུང་ལས་ཤིན་ཏུ་གསལ་ལ། སརཧའི་དོ་ཧ་མཛོད་ཅེས་བྱ་བའི་གླུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནལ་དུ་མཚོན་པ་དོན་དམ་པའི་ཡི་གེ་[4]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དོ་ཧའི་སྐོར་རྣམས་སུའང་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དང་། དེའི་ཡུལ་དོན་དམ་པའི་སྐོར་རྣམས་དབུ་མ་རབ་ཏུ་མི་གནས་པའི་ཚུལ་ཁོ་ནར་གསལ་ལོ། །དེ་བཞིན་དུ་པདྨ་བཛྲ་མཛད་པའི་གསང་བ་གྲུབ་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ཡན་ལག་མེད་པའི་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་ཐབས་ཤེས་གྲུབ་པ་སོགས་གྲུབ་པ་སྡེ་བརྒྱད་ལ་སོགས་པའི་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་གཞུང་ཀུན་ལས་ཀྱང་རབ་ཏུ་མི་གནས་པའི་དབུ་མའི་

---

1 རིམ་ལྔ། སྡེ་བསྟན་རྒྱུད། ངི། བྱང་ཆུབ་སེམས་འགྲེལ - སྡེ་དེ་ཉིད། འཕགས་ལྷའི་སྤྱོད་བསྡུས་སྒྲོན་མ་བདག་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པ། མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པ - སྡེ་དེ་ཉིད། རྒྱུད་འགྲེལ་སྒྲོན་གསལ - སྡེ་བསྟན - རྒྱུད ‘ཏ’།

2 རང་གི་ལྟ་བ་མདོར་བསྟན - སྡེ............།

3 དྲི་མེད་འོད། སྡེ་བསྟན་རྒྱུད ‘ཐ’།

4 ‘དོ་ཧ་མཛོད’’ ཅེས་བྱ་བ་སྤྱོད་པའི་གླུ་དང་། ‘མི་ཟད་པའི་གཏེར་མཛོད་མན་ངག་གི་གླུ’ ཞེས་བྱ་བ་འདི་གཉིས་ལ་རྒྱལ་པོ་དོ་ཧ་དང་། བཙུན་མོ་དོ་ཧར་གྲགས། སྡེ་བསྟན་དཀར་ཆག་ཏུ (འདི) “བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོས་མཛད་མ་མཛད་ཐེ་ཚོམ་གྱི་གཞིའོ།།” གསུངས། ཤོག ༣༥༥/བ། ཆོས་རྗེ་བུས་འདི་གཉིས་ཕྱིས་བལ་ཡུལ་གྱི་མཁས་པ་ཞིག་གིས་བྲིས་པར་བཞེད། བུའི་འདུས་པ་བཤད་ཐབས – ཤོག ༣༥ – ༣༨ དེབ Vol. No 9. དེ་ལ།

ལྟ་བ་ཁོ་ན་བཤད་པར་སྣང་ངོ་།།

སློབ་དཔོན་ཧོག་ཙེ་བའི་[1]བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་རིམ་པའི་མན་ངག་དུ་ལྟ་བ་དབུ་སེམས་གང་ཡིན་མི་གསལ་ཞིང་། ཤཱནྟིཔཱ་སེམས་ཙམ་པ་ཡིན་པ་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་ལྟར་ན། ཞི་འཚོ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པ་ཡིན་པར་དེའི་གཞུང་ཉིད་དུ་གསལ། ཨིནྡྲཔཱའི་སྤྱོད་པ་ལ་མ་ཐེབས་གོང་གི་མཚན་དཔལ་ལྡན་ཆོས་སྐྱོང་ཡིན་པ་དང་། དེ་ནཱ་ལནྡཱའི་མཁན་པོ་མཛད་པ་སོགས་དངོས་འབྲེལ་ཡིན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེ་དབུ་མ་བཞི་བརྒྱ་པའི་དགོངས་པ་སེམས་ཙམ་དུ་བཀྲལ་བའི་འགྲེལ་བྱེད་དེ་ཡིན་པར་ངེས་ལ། དེ་ལྟར་ན་དེ་སེམས་ཙམ་གྱི་ལྟ་བ་ལ་གནས་པ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་དགོས་ཤིང་། ཨིནྡྲཔའི་མན་ངག་ནག་པོ་པའི་ངོར་བརྩམས་པའི་ ‘ལམ་འབྲས་རྡོ་རྗེ་ཚིག་རྐང་’ དང་། དེ་ལས་བྱུང་བའི་རྒྱུད་པའི་མན་ངག་ཐམས་ཅད་ལས་བདེན་གཉིས་ཟུང་འཇུག་གི་ལྟ་བ་དང་། དེའི་གནད་རྣམས་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་གཞིའམ་ཆོས་ཅན་ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ལ་འདོད་པས་སློབ་དཔོན་འདི་སེམས་ཙམ་གྱི་ལྟ་བ་མཐར་ཐུག་དང་བདེ་སྟོང་སྦྱར་དེ་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོའམ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་མཛད་པར་གསལ་ལོ།། དེ་ལྟར་ན་ཐོགས་ཟླ་མེད་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་ལྟ་བ་དབུ

1 མཚོ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེའི་གསང་བ་གྲུབ་པ། ཡན་ལག་མེད་པའི་རྡོ་རྗེས་མཛད་པ་ཐབས་ཤེས་གྲུབ་པ། ཨིནྡྲབྷཱུཏིའི་ཡེ་ཤེས་གྲུབ་པ། ལཀྵྨཱིཀཱརའི་ – གཉིས་མེད་གྲུབ་པ། སྒེག་པའི་རྡོ་རྗེའི་དངོས་པོ་གསལ་གྲུབ། དཱརིཀཱཔཱའི་གསང་ཆེན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མན་ངག (གྲུབ་པ་)། རྣལ་འབྱོར་མ་ཙི་ཏོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གྲུབ་པ། ཌོམྦིཧེརུཀའི་ – ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་གྲུབ་སྟེ། འདི་རྣམས་ལ་གྲུབ་པ་སྡེ་བརྒྱད་ཟེར། སྡེ་བསྟན་དཀར་ ཤོག ༣༨༦/ན – བ།

སེམས་གཉིས་ཀ་ཡོད་པ་དང་། ལྟ་བ་དེ་གཉིས་ཀ་རྫོགས་རིམ་སྒོམ་པའི་རྟེན་དུ་རུང་ངམ་སྙམ། སྤྱིར་སློབ་དཔོན་ཞི་འཚོས་ —

"སེམས་ཙམ་ལ་ནི་བརྟེན་ནས་སུ།།
ཕྱི་རོལ་དངོས་མེད་ཤེས་པར་བྱ།།
ཚུལ་འདིར་བརྟེན་ནས་དེ་ལས་ཀྱང་།།
ཤིན་ཏུ་བདག་མེད་ཤེས་པར་བྱ།།[1]"

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གོ་རིམ་བཞིན་དང་པོ་སེམས་ཙམ་གྱི་ལྟ་བ་བསྒོམས་ནས་ཕྱིས་དབུ་མ་པའི་ལྟ་བ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡང་སྲིད་མོད། གྲུབ་ཐོབ་རང་གི་གཞུང་དུ་ནི་རིམ་པ་དེ་ལྟར་མི་གསལ་ལོ།།

སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེའམ་ཨཝདྷཱུཏིཔ་ཡི་གསུང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེའི་འཕྲེང་བར་མདོ་སྡེ་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོར་བཞེད་པ་དང་། དེ་ཡང་ཐེག་ཆེན་ལ་དབང་པོ་རབ་འབྲིང་ཐ་གསུམ་ལས་མདོ་སྡེ་པ་ཐ་མ་དང་། དེ་ར་འཁོར་གསུམ་མི་དམིགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྔ་ལ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་ཅིང་། འབྲས་བུ་ལ་རེ་བ་མེད་པར་སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལྟ་བ་[2]འོ།། ཞེས་གསུངས་ནས་མདོ་སྡེ་པའི་ལྟ་བ་ཡང་སྔགས་ཀྱི་ལམ་གྱི་དམིགས་པར་རུང་ཚུལ་བཤད་འདུག་ཅིང་། སློབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོས་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་སྙིང་

1 དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་ ༦༣ སྡེ་བསྟན་ ས)།

2 དེ་ཉིད་རིན་འཕྲེང་ — ཤོག ༡༣༩ སྡེ་བསྟན་རྒྱུད་ — 'མི'

པོ་ཀུན་ལས་བཏུས་ཀྱི་བཤད་སྦྱར་དུ་[1]མདོ་སྡེ་པ་ལ་བཟང་སྤྱོད་ལ་སོགས་པ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་ཁས་ལེན་པའི་གྲུབ་མཐའ་སྨྲ་བར་གསུང་འདུག་པས། མདོ་སྡེ་པའི་ལྟ་བ་གཞིར་བཟུང་སྟེ་བསྐྱེད་རྫོགས་སྒོམ་པ་ཡོད་སྲིད་ལ། དེ་ལྟ་ནའང་རྗེ་བློ་བཟང་གྲགས་པ་སོགས་རྒྱུད་ཀྱི་གནད་དོན་ལ་མཁས་པའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་རྣམས་ནི་དེ་ལྟར་མི་བཞེད་པར་མངོན་ནོ། །འོན་ཀྱང་མདོ་སྡེ་པ་རྟོག་བཏགས་ཙམ་ལ་ཡོད་པ་དང་། ཚད་གྲུབ་ཀྱི་རྣམ་གཞག་བྱེད་ཤེས་པས་བསྒོམ་བྱའི་ལྷ་སྐུ་གཞལ་ཡས་ཁང་སོགས་དང་། ལྷུང་དབུ་མར་ཞུགས་གནས་ཐིམ་གསུམ་བྱས་པ་ལས་གཞིའི་སྟོང་པ་འཆར་བའི་ཆེ་ཆོས་ཅན་དེ་དག་གི་སྟེང་དུ་སྣང་བ་ལ་བདེན་ཞེན་འགོག་ནུས་པ་ལ་དགོངས་ནས་དེ་ཉིད་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པའི་སྐོར་རུང་དུ་བཤད་པ་ཡིན་ནམ་སྙམ་སྟེ། དཔྱད་གཞིར་སྣང་། མཁས་གྲུབ་འཇམ་དབྱངས་བཞད་པས་གྲུབ་མཐའི་རང་འགྲེལ་དུ་འདི་སྐོར་ཅུང་ཟད་བཀོད་འདུག་ཀྱང་། ཐེག་གཙོད་གསལ་པོར་མཛད་མི་འདུག[2]ཅིང་། སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་གྲགས་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པ་སོགས་སུའང་མདོ་སྡེ་པ་ལ་ཐེག་ཆེན་ཡོད་པ་དང་། དེ་སྔགས་ལམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་སྒོམ་པའི་སྐོར་རུང་དུ་བཞེད་པར་གསལ་བས། མདོ་སྡེ་པ་ཡིན་པར་གྱུར་པའི་སྔགས་ལམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་སྒོམ་པ་པོ་ཞིག་ཁས་ལེན་དགོས་ལ། དེ་ལྟ་ན་སྔགས་ལམ་གྱི་ཆེད་དུ་བྱ་བའི་གདུལ་བྱ་ལ་མདོ་སྡེ་པ་ཡོད་པ་དང་། བདེ་སྟོང་གི་ཡ་གྱལ་སྟོང་པ་ལ་མདོ་སྡེ་པའི་ལྟ་བ་ཡོད་པར་སྣང་བས་དཔྱད་དགོས།

---

1 ཡི་སྙིང་བཤད་སྦྱར – སྡེ་བསྟན་དབུ་མ ‘ཚ’ ། ཉི་ཧོང Vol. 95. ཤོག ༩༠ – ༩༣།

2 གྲུབ་མཐའ་ཆེན་ རང་ ‘ག’ ཤོག ༩/བ ༥/ན སྣར་ཐང་ དཔར།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ནང་ན་མདོ་སྡེ་པའི་ལྟ་བ་ལ་གནས་པ་ནི་ཡོད་པར་མི་མངོན་ལ། གོང་སྨོས་མདོ་སྡེ་པ་སྔགས་ལམ་ལ་འཇུག་རུང་དུ་བཤད་པའི་གཞུང་རྣམས་ཀྱི་དགོངས་པ་སྔགས་ལམ་ལ་འཇུག་པའི་གོ་རིམ་ཙམ་ཞིག་གི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་ན་ནི་མཁས་པའི་གཞུང་ཐམས་ཅད་འགལ་མེད་དུ་གོ་རྒྱུ་ཡོད་པ་ཞིག་ཀྱང་འདུག་པས། མཁས་པའི་བཞེད་པ་དགག་པ་ལས་དགོངས་པ་འཚོལ་བ་ལེགས།

གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་— ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅོ་བརྒྱད་པའི་མགོ་ཙམ་ནས་རིགས་སར་གྱི་མཁས་པ་མང་པོ་ཞིག་བྱོན། ཚན་རིག་གི་ཆ་རྐྱེན་མང་པོ་ཞིག་ལ་བརྟེན་ནས་འཇིག་རྟེན་གྱི་སྔོན་གྱི་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ཀྱི་སྐོར་ལ་སྤྱིར་ཞིབ་འཇུག་བྱས་ཏེ་དངོས་འབྲེལ་གནད་དོན་མང་པོ་ཞིག་ལ་གསལ་བཤད་བྱེད་ཐུབ་པའང་ཡོད། རིགས་གསར་གྱིས་སྔོན་གྱི་གནས་སྟངས་སོགས་ཀྱི་སྐོར་དང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་གཙུག་ལག་གི་འབྱུང་ཁུངས་སོགས་ཀྱི་སྐོར་ལ་ཡང་གནད་དོན་གསལ་བཤད་མང་དུ་བྱས་འདུག་ཀྱང་། མང་ཆེ་བ་ཞིག་ནི་འོལ་ཚོད་དང་། གཏམ་རྒྱུད་སོགས་ལའང་བརྟེན་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་དང་ས་ཆའི་མིང་འདྲ་བ་རྣམས་དུས་ཕྱིའི་འཕྲུལ་གཞིར་སོང་བའང་མང་། དེ་མཚུངས་ནང་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཀྱང་དེང་སང་ཡོངས་གྲགས་ལྟར་ན་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བརྒྱད་པ་ནས་བཅུ་གཉིས་པའི་བར་ཁོ་ནར་འདོད་དོ།།[1] །འདི་དག་གི་འཕྲུལ་གཞི་ནི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ལྷ་སློབ་ཀྱི་འབྲེལ་བ་དང་།

---

1 राहुल. पु. नि. पृ. १९९० द्र० । बौ. सिद्ध धर्मपाद, पृ. ४५, आ. पा. च. ।

ངོ་མཚར་བའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་དེ། དཔེར་ན་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོ་གཉིས་པའི་ནང་གི་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་། ཨཱརྱདེཝ་སོགས་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་པའི་ནང་བླ་མ་རྡོ་རྗེ་གདན་པའི་ཚོགས་འཁོར་ལ་ཕེབས་པ་ལྟ་བུའོ།། གང་ལྟར་ཡང་བླ་རྒྱུད་དང་། གསུང་རབ་ཀྱི་རྒྱུད་པ་མ་འཚོལ་བར་བརྩིས་པ་རྣམས་ཚད་མར་བཟུང་ནས་ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་དང་པོ་ནི་གོང་སློས་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཞལ་བཞུགས་དུས་ཀྱི་གྲུབ་ཐོབ་ཡིན་ལ། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ནང་དུ་མི་བརྩིས་ཤིང་། དེ་དང་རྒྱལ་པོ་ཛི་སུ་ཀ་ལྤ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་མཏི་བློ་གྲོས་བཟང་མོ་(མཏི་སྐལ་པ་བཟང་མོ་)འམ་ཀླུ་ལས་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡང་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིར་མི་བརྩིས་སོ།། ཕྱིར་ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་“ཨིནྡྲབྷཱུཏི”ཞེས་པའི་མཚན་ཅན་དགུ་ཙམ་བྱུང་བ་ལས་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ནང་ཚན་བཞི་བཅུ་ཞེ་གཉིས་པ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་ནི་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་བར་པར་གྲགས་པ་ལཀྵྨཱིཀཱརའི་སྤུན་དེའོ།།

དེ་ནས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ཐོག་མ་ནི་བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོའམ་སརཧཔ་ཉིད་ཡིན་ལ། སརཧ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་བླ་མ་ཡིན་པ་ལ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་སློབ་དཔོན་སུ་ལ་ཡང་དོགས་པ་མེད་པས། སརཧའི་དུས་ནི་ཕྱི་ལོ་མགོ་མ་ཆུགས་གོང་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོ་ཙམ་དང་། སངས་རྒྱས་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཏེ་ལོ་སུམ་བརྒྱ་ཙམ་གྱི་མཇུག་ཡིན་ལ། སརཧ་ལོ་མང་པོ་མྱ་ངན་ལས་མ་འདས་པར་བཞུགས་པ་སོགས་ནི་ཐུན་མོང་མིན་པའི་བཤད་ཚུལ་དང་འབྲེལ་བས་འདིར་མི་སྤྲོའོ།།

སརཧའི་སློབ་མ་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་གྲུབ་ཆེན་ཤཝརཔ་སོགས་ཡིན་ཞིང་། དེའི་སློབ་མ་ལཱུཧིཔ་ཡིན་པ་དང་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་སློབ་མ་ཨཱརྱདེཝའམ་ཀརྞརིཔ་ཡིན་

ཞིང་། འདི་དག་གི་དུས་ནི་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོ་ནས་གསུམ་པའི་བར་ཡིན་ནོ།། ཕྱི་རབས་པ་དང་ཕྱོགས་སྐྱོང་དབྱིག་གཉེན་སོགས་སྐུ་ཆེའི་སྟོད་སྨད་ཙམ་ལས་དུས་མཉམ་དང་།། ཆོས་གྲགས་ཀྱིས་ཐུགས་ལམ་གྲུབ་ཆེན་ཐཀྐནའི་(ཐཀྐནཔ་)མན་ངག་ལ་བརྟེན་པར་བཤད་པས་[2]དེ་བརྒྱ་ཕྲག་བདུན་པ་དང་། ཞི་འཚོ་བརྒྱ་ཕྲག་བརྒྱད་པར་བཞུགས་ཡོད་པ་ཡོངས་གྲགས་ལྟར་ལ། ནཱ་རོ་པ་སོགས་བརྒྱ་ཕྲག་དགུ་པ་བཅུ་པའི་ནང་བྱོན་པ་དང་། ཤཱནྟི་པ་དང་ནཱ་རོ་པ་ཛེ་ཏཱ་ཨ་རི་ཤའི་བླ་མ་ཡིན་པ་དང་། དེ་ར་མ་ཟད་མར་སྟོན་ཆོས་ཀྱི་བློ་གྲོས་ནཱ་རོ་པའི་དངོས་སློབ་ཡིན་པ་དང་། དེའི་དུས་རབས་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་པ་བཅུ་གཅིག་པ་ཡིན་པས་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་པའི་མཇུག་ཙམ་ལ་ཡང་ནཱ་རོ་པ་བཞུགས་ཡོད་པར་མངོན་ལ། འདི་ནི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ཐ་མའི་དུས་ཡིན་པར་སྣང་ངོ་།།

དུས་རབས་བཅུ་པ་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་རྣམ་ཐར་འདི་མི་ཉག་ལོ་ཙཱ་བས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར། དེ་དག་གི་སྒྲུབ་ཐབས་སོགས་དང་། དོཧ་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཡང་ལོ་ཙཱ་བ་འདིས་བསྒྱུར་བར་སྣང་བས། གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཀྱི་ཐ་མ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་ཁོ་ནར་ངེས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཕྱི་ལོ་མ་ཆགས་གོང་གི་བརྒྱ་ཕྲག་དང་པོ་ནས་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་བར་ངེས་པར་གྲུབ་བོ།།

1 པད་ཆོས་ ཤོག ༦༧ ན 133. དེ་སློག

2 པཎ་ཆེན་དཔལ་ལྡན་ཡེ་ཤེས་དྲི་ལན།

གླུ་བ་ཐོབ་རྣམ་ཐར།— གླུ་བ་ཐོབ་པའི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་འདི་མི་ཉག་ལོ་ཙཱ་བ་སྨོན་གྲུབ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་གར་གྱི་སྐད་ནས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བར་གསལ་བར་བཤད་འདུག་ཀྱང་། འདི་དང་པོ་ནས་རྒྱ་སྐད་དུ་བྲིས་ཡོད་པ་ཞིག་ཕྱིས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། བླ་མ་ཨབྷཡདཏྟ་ཤྲཱི་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱ་གར་ཙམཔརྣན་གྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་སློབ་དཔོན་ཞིག་གིས་དང་པོར་རྒྱ་སྐད་དུ་ཞལ་ནས་གསུངས། དེ་ཉིད་ལོ་ཙཱ་བས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བར་སྣང་སྟེ། རྣམ་ཐར་བྲིས་པའི་ཐོག་མར་ལོ་ཙཱ་བས་བླ་མ་ཨབྷཡཤྲཱི་སྟེ་མི་འཇིགས་སྦྱིན་པའི་དཔལ་ལ་མཆོད་བརྗོད་མཛད་ནས་རྣམ་ཐར་འདི་རང་གིས་འབྲི་བར་དམ་བཅའ་གསལ་བར་བཀོད་འདུག་པས་སོ།[1]།

རྣམ་ཐར་འདི་རྒྱ་གར་གྱི་སྐད་གང་ལས་བསྒྱུར་གསལ་ཁ་མི་འདུག་ཅིང་། བོད་བསྒྱུར་སྔར་སྤེའི་དཔར་གཉིས་ཀར་རྒྱ་གར་སྐད་དུ་ཞེས་བཞག་བྱང་དུ་བཀོད་ཡོད་མེད་མ་དཔེ་ཆད་འཐོར་སོང་བས་མ་ཐོབ་ལ། སོག་པོ་སྐལ་བཟང་གིས་སྤྱར་པའི་གླུ་བ་ཐོབ་རྣམ་ཐར་དང་། གཞན་ཡང་དེ་ལི་གློག་དཔར་ལས་སྤྱར་བའི་མ་དཔེ་རྣམས་ཀྱི་བཞག་བྱང་དུ་རྒྱ་གར་སྐད་བཀོད་མི་འདུག་ཀྱང་། པེ་ཅིང་མ་དཔེ་ལས་གློག་དཔར་དུ་བསྐྲུན་པ་ཉི་ཧོང་མ་དཔེར། 'རྒྱ་གར་སྐད་དུ་ཙཏུརཱ་སིདྡྷིསིདྡྷཔྲབྲིཏྟི'ཞེས་བཀོད་འདུག་པས། དེ་ལས་དཔག་ན་གཞུང་འདི་དང་པོར་ལེགས་སྦྱར་དུ་གསུངས་པར་གསལ་ལོ།། རྣམ་ཐར་འདི་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་མཛད་པའི་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པའི་དོན་འགྲེལ་ལམ་དོན

1 རྣམ་ཐར ཤོག ༣༦༣ གཟིགས།

བསྡུས་ཡིན་པ་དང་།   དེས་མཛད་པའི་རྣམ་ཐར་ཞིག་ཡོད་པར་བཤད་ཀྱང་།། སྔར་སྔོན་པའི་བསྟན་འགྱུར་དུ་ལྷ་བཞུགས་པ་འདིའི་ནང་ན་མི་འདུག་པས་དཔྱད་དགོས།།

གཞུང་མཛད་པ་པོ་— རྣམ་ཐར་འདི་བླ་མ་ཨ་སླཡད་ཛྙཱ་ཤྲཱིས་མཛད་པ་ཡིན་པར་ལོ་ཙཱ་བས་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་བཀོད་པ་ཙམ་ལས་དེའི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ཆོས་འབྱུང་དང་བརྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར་སོགས་གང་ནའང་གསལ་ཁ་ཞིག་མ་ཐོབ་པས་འདིར་དེ་ཙམ་ཞིག་གོ །

ལོ་ཙཱ་བ་འདི་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་འགོ་ཙམ་ལ་ཁམས་མི་ཉག་ཏུ་སྐུ་འཁྲུངས།   རིམ་གྱིས་མཁས་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སྦྱངས་པ་མཛད་དེ་རྒྱ་གར་ལ་ཐེབས།   ལོ་ཙཱ་སོགས་ལེགས་པར་སྦྱངས།   དུས་འཁོར་རྩ་བའི་རྒྱུད་གསུམ་སོགས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར།   པཎྜི་ཏ་སུནཡནཤྲཱི་བོད་དུ་གདན་དྲངས་པ་སོགས་བསྟན་པ་ལ་བྱ་བ་མང་དུ་མཛད་དོ།།   འདི་དང་(རྩ་མ་)ཙ་མི་སངས་རྒྱས་གྲགས་གཉིས་གཅིག་གམ་ཐ་དད་ཡིན་དཔྱད་དགོས་ཏེ།   རྩ་མ་སངས་རྒྱས་གྲགས་ཀྱང་ཁམས་མི་ཉག་ཏུ་འཁྲུངས་ལ།   འདི་མཁས་ཤིང་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་པ་དང་།   རྒྱ་གར་ལ་བྱོན་ཏེ་རྡོ་རྗེ་གདན་དུ་སྟོན་པའི་རྒྱལ་ཚབ་མཛད་པར་གྲགས་ཏེ།   ཚད་ལྡན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི་མ་མཐོང་ངོ་།།

---

[1] "གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་སོ་སོའི་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་བསྒྲིགས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ལས་ཤེས་ཤིང་།"   སྒྲུབ་ཀུན་········།

དཔར་གསར་བསྐྲུན་—གོང་སྨོས་རྣམ་ཐར་འདི་དེ་ལི་སོགས་ནས་དཔར་གསར་དུ་བསྐྲུན་པ་མང་ཡང་བྲིས་སྐྱོན་དང་དཔར་སྐྱོན་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་གོ་བ་གསལ་པོ་སྟེར་མི་ཐུབ་པ་དང་། གཞན་ཡང་རྣམ་ཐར་འདི། དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་ལ་མཁོ་གནད་ཆེ་བ་དང་། ཁྱད་པར་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༨ ལོར་ཧྭུནྭཚསྭིའི་བོད་ཀྱི་མཐོ་སློབ་ནས་མཁས་པའི་ཚོགས་འདུ་ཞིག་གོ་བསྒྲིགས་ཞུ་སྐབས་ཚོགས་འདུའི་བགྲོ་གཞི་ལའང་"ནང་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ལྷ་སྤྱོད་"ཞེས་བཞག་དགོས་བྱུང་སྐབས། རྣམ་ཐར་འདི་ཉིན་སྐད་དུ་བསྒྱུར་དགོས་པ་བྱུང་ཞིང་། དེ་ཉིད་ཚོགས་འདུས་སུ་འགྲེམས་སྤེལ་ཞུས་ཟིན་ཀྱང་། སློབ་ཕྲུ་ཟམ་གདོང་མཆོག་དང་། གཞན་ཡང་མཁས་པ་མང་པོས་སླར་རྣམ་ཐར་འདི་བོད་ཉིན་ཤན་སྦྱར་དང་། གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ངོས་འཛིན་འདྲ་དཔར་བཅས་ལྷན་ཅིག་དེབ་གཟུགས་སུ་བཀོད་ཐུབ་ན་ལེགས་ཆ་ཡོད་ཚུལ་དང་། སློབ་གྲྭ་ནས་ཀྱང་འདིའི་སྐོར་རོགས་རམ་གནང་དགོས་བཀའ་སྩལ་གནང་བ་ལྟར་འདིར་རྣམ་ཐར་དེབ་གཟུགས་སུ་བཀོད་སྐབས་མ་དཔེ་ལའང་ཞུ་དག་ཤིན་ཏུ་མང་བ་བྱེད་དགོས་བྱུང་།

ཞུ་དག— གྲུབ་ཐོབ་རྣམ་ཐར་འདི་སྔར་ཐང་སྟེ་དགེ་སོགས་བསྟན་འགྱུར་ནང་རྒྱུད་'ལུ'པར་བཞུགས་ལ། ཕྱིས་སྒྲུབ་ཐབས་ཀུན་བཏུས་དང་། རྣམ་ཐར་རྐྱང་པའི་ཡང་དཔར་མང་ཙམ་འདུག་ལ། དེ་དག་གོ་བསྡུར་བྱས་ཆེ་དག་མ་དག་སྣ་ཚོགས་ཤིག་འདུག་པ་རྣམས་ལས། དག་པ་གང་ཡིན་རང་འཇགས་སུ་བཞག་ནས་མ་དག་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་ཟུར་བརྗོད་

དང་བཅས་ཏེ། གཤམ་དུ་ཟུར་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད། གོང་གི་ཚིག་མཚམས་དང་གཤམ་གྱི་མཆན་གཉིས་མི་ནོར་བའི་ཆེད་དུ་ཨང་རྟགས་བཀོད་ཡོད། གཞུང་རང་གི་ཡི་གེ་སོགས་གང་གི་སྐོར་ལ་ཟུར་བརྗོད་དགོས་རིགས་ལ་དེ་ཉིད་ཀྱི་མགོར་ ཨང་༡ བཀོད་ཡོད་ན་གཤམ་དུ་ཟུར་བརྗོད་ཀྱི་དང་པོར་ཨང་༡། རང་བཀོད་པས་དེ་བཞིན་ངེས་དགོས།

བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་བོད་ཡིག་ལ་རྒྱ་སྐད་ཀྱི་མིང་བྲིས་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་མ་དག་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་། དཔེར་ན་དེཝཱཔཱལ་ཞེས་པ་ལ་དེབ་ཕ་ལ་ཞེས་པ་དང་། རྣམཆའི་ཞེས་པ་ལ་རམལའི་ཞེས་པ་དང་། རཏྣཔཱལ་ཞེས་པ་ལ་རཏྣཕ་ལ་ ཞེས་པ་དང་། མིཏྲཡོགི་ཞེས་པ་ལ་མིཏྲ་ཛོ་ཀི་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ།། འདི་དག་གི་རིགས་ལ་ལེགས་སྦྱར་དང་ཡུལ་སྐད་སོགས་ཀྱི་རྒྱ་དཔེ་དང་ཞིག་མཇོད་གང་ཐོབ་ལ་གདུགས་ནས་དག་པར་བྱེད་ཁལ་ཡང་། ད་ལྟའང་མ་དག་པ་མང་ཙམ་ལུས་འདུག དཔེར་ན་ལུཧིཔཱ་ཞེས་པ་ལ་ལུཧི་པ་ཞེས་པ་དང་། གུཧྱལིལཱཔཱ་ཞེས་པ་ལ་གུཧྱལཱིལཱཔ་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་སྟེ། འདིར་རྒྱ་སྐད་གང་ཡིན་ལ་བར་ཚིག་མི་དགོས་ཤིང་། བར་ཚིག་བརྒྱབ་ན་ལེགས་སྦྱར་ལ་མཚམས་སྦྱོར་ཉམས་འགྲོ་བས་སོ། །གཞན་ཡང་གྲུབ་ཐོབ་ཕལ་ཆེ་བའི་མཚན་གྱི་མཐར་པཱ་ཞེས་པ་ཡོད་ལ། དེ་ནི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ པཱད་ཞེས་པའི་སྒྲ་ཟུར་ཆག་པའོ།། སྤྱིར་པ་དང་པཱ་གཉིས་ཀ་གོ་རིམ་བཞིན་པཱལ་དང་པཱད་ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་ལ། དང་པོ་ནི་ཀཱཤྱཔ་ཞེས་པའི་པ་དང་། གཉིས་པ་ནི་སརཧཔཱ་ཞེས་པའི་པཱ་ལྟ་བུའོ། །དེ་ལས་དང་པོ་ནི་སྐྱངས་པའམ་སྐྱོང་བའི་དོན་ཅན་ཏེ། འོད་སྲུངས་ཞེས་པ་ལྟ་

བུ་དང་། གཉིས་པ་ནི་ཞབས་ཞེས་པའི་དོན་ཅན་ཏེ། དཔེར་ན་སརཏའི་ཞབས་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ། །ཚིག་འདི་དག་ནི་ད་ལྟ་ཡང་རྒྱ་གར་གྱི་ཡ་རབས་རྣམས་ཉིན་རེ་བཞིན་ (བྱེད་སྤྱོད་) བེད་སྤྱོད་བྱེད་བཞིན་ཡོད། དེས་ན་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་མཐར་ཡོད་པའི་པཱ་ཞེས་པ་དེ་ནི་ཞབས་ཞེས་པའི་དོན་ཅན་ཡིན་པས་རིང་པོའི་མཐའ་ཅན་པཱ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི་པ་ཞེས་མ་དག་པའོ། །དེ་ཡང་གྲུབ་ཆེན་བིརཱུཔཱ་ཡི་མཚན་ཕྱི་རྟུ་པ་ཞེས་པའི་པ་ནི་མིང་མཐའི་པ་ཡིན་གྱི་ཞབས་ཞེས་པའི་པ་མ་ཡིན་པས་རིང་པོ་བྲིས་པ་ནོར་རོ། །དེས་ན་མ་ནོར་བར་དོན་གོ་དགོས་སོ།།

ཚིག་དང་ཤད་— བོད་དཔེ་གསར་རྙིང་མང་པོར་ཡིག་བར་གྱི་ཚིག་ལ་བྲིས་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་མེད་ཀྱང་། ཚིག་གི་གཅོད་མཚམས་སུ་ཤད་ལ་སོགས་པ་ཡིག་རྟགས་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་། རིན་ཆེན་སྤུང་ཤད་ལ་ནང་གསེས་གཉིས་སུ་ཕྱེས་ཏེ་ཤད་ཆ་ཚང་དང་ཕྱེད་ཤད་བྱེད་ཚུལ་ཡང་རྗེ་དགེ་འདུན་གྲུབ་ཀྱི་འདུལ་བའི་གླེང་འབུམ་སོགས་ལ་གསལ་བར་བྲིས་འདུག་པས། དང་པོ་ནི། ལྟ་བུ་དང་། གཉིས་པ་ནི། ། ལྟ་བུའོ།། དེ་ལ་འདིར་ཕྱེད་ཤད་དེ་ལ་ཅུང་ཟད་གཟུགས་བསྒྱུར་ཏེ་དེང་སང་ལེགས་སྦྱར་ཧིན་སྐད་ཨིན་སྐད་སོགས་ལ་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་ལྟར་གྱི་ཡིག་རྟགས་'ཀཱ་མ་'ཞེས་པ་དེ་བཞིན་འདིར་བོད་སྐད་ལའང་བྱེད་སྤྱོད་བྱས་ཡོད་པས། བློ་གསར་བློའི་མིག་ཅན་ཀུན་ལ་དགའ་པོ་ཡོང་ངེས་ཀྱང་། བསྟན་འཛིན་མིས་པོའི་ཁུར་འཆང་བ་རྣམས་ལ་དབྱིངས་འགལ་མེད་པར་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།། འདིའི་སྐོར་ཚད་མ་རིགས་པ་ལ་འཇུག་པའི་སྐོའི་

འགྲེལ་པ་ལེགས་སྦྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་དེའི་གླེང་བརྗོད་དུ་རྒྱས་པར་བྲིས་ཟིན་པས་དེར་གཟིགས་དགོས།

ཟུར་བཀོལ་— འདིར་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པའི་ནང་གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་འདྲ་པར་[དཔར་འདི་དག་རྡོ་རྗེ་གདན་གྱི་རྒྱལ་བ་རིན་པོ་ཆེའི་གཟིམས་ཆུང་ནང་གི་གསེར་ཐང་ལ་འདྲ་དཔར་ལེན་པ་ཡིན་]དང་། དེ་དག་སོ་སོའི་གཤམ་དུ་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་ངོ་སྤྲོད་རྣམས་ཧིན་སྐད་དུ་བྲིས་ཡོད། བོད་སྐད་དུ་བྲིས་ན་ཡིག་ཚོགས་མང་བས་འཇིགས་ནས་མ་བྲིས།

མཚན་རིམ་— གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་མཚན་རྒྱ་བོད་ཤན་སྦྱར་དང་། དེ་དག་གི་ཐད་ཀར་སོ་སོའི་རིགས་དང་། ཡུལ་སོགས་བཀོད་པའི་མཚན་གྱི་གོ་རིམ་ཡང་སྒྲུབ་ཐབས་ཀུན་བཏུས་ཀྱི་གཤམ་ན་འཕོད་པ་ལ་ཞུ་དག་ཅུང་ཟད་བྱས། པཎྜིད་རཱཧུལ་ལགས་ཀྱི་པུརཱཏཏྭནིབནྡྷཱཝལི་ལ་ས་ཆེན་གོང་མའི་བཀའ་འབུམ་ལ་བརྟེན་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཡུལ་སོགས་བཀོད་འདུག་པ་དང་བསྡུར་ཏེ། ཟུར་མཚན་ཅུང་ཟད་བཅས་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་ཟུར་བཀོལ་གྱི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད། འདི་སྐོར་ས་ཆེན་བསོད་ནམས་རྩེ་མོའི་རྒྱུད་སྡེ་སྤྱི་རྣམ་ལ་ཡང་ཞུ་གདུགས་ཅུང་ཟད་བྱས་པ་ཡིན།

འབྲི་ཡིག་— གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་བྲིས་སྐུ་ངོས་འཛིན་སྐབས་དཀའ་ངལ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་བྱུང་སྟབས། ཐབས་ཤེས་མང་ཙམ་བྱས་རྗེས་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་འབྲི་ཡིག་ཏཱརཱནཱཐའི་གསུང་རྒྱུན་ཞིག་འགྱུར་ལ་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་ངོས་འཛིན་བྲིས་སྐུའི་ཐོག་ནས་བྱེད་ཐུབ་ཙམ་བྱུང་ལ། དཀའ་

ངལ་དེར་བརྟེན་འབྲི་ཡིག་ཆ་ཚང་བ་ཞིག་ཞུ་དག་ནོར་བཅོས་སོགས་ལེགས་པར་བྱས་ཏེ། ཧིན་བོད་ཤན་སྦྱར་གྱི་ཚུལ་དུ་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་ཟུར་བཀོལ་གཉིས་པའི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད།

འབྲི་ཡིག་འདིའི་མ་དཔེ་ལག་པས་བྲིས་པའི་ཡི་གེ་ཚུགས་ཆུང་ལ་འདུག་སྐབས་མ་དག་པ་ཤིན་ཏུ་མང་བས་མ་དག་པ་རྣམས་དྲགས་གཅོད་ཀྱི་གཞིར་མགོ་ངེས་བསམ་ནས་གཤམ་དུ་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད་པས་དཔྱད་པ་ཡོད་ན་དེར་གཟིགས་དགོས་སོ།།

དཔལ་ལྡན་བདེ་ཆེན་མཆོག་གི་དབྱིངས་དང་རོ་གཅིག་རྟག་ཏུ་ཞི་གྱུར་ཀྱང་།།
སྟོང་ཉིད་སྙིང་རྗེའི་སྒྱུ་འཕྲུལ་དྲྭ་བ་སྤྲིན་བྲལ་མཁའ་ལ་འཇའ་ཚོན་བཞིན།།
འཆར་བའི་མོད་ལ་ཐུགས་རྗེའི་ཆུ་ཆར་གདུལ་བྱའི་རིགས་ཀྱི་ནོར་འཛིན་ལས།།
བཟང་འདུག་མཆོག་གི་ལོ་ཏོག་འབྲས་བུ་སྨིན་མཁས་བླ་མ་ལྷར་བཏུད་ནས།།

ཞི་ལྷག་བཅུ་ཕྲག་བརྒྱད་དེ་གྲུབ་པའི་གཙོ།།
རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་དབང་པོའི་སྲིད་ཚལ་དུ།།
དྲི་བསུང་འཕྲུལ་བའི་གླིང་གཞིའི་ཕྲེང་བ་སྤེལ།།
ལྷ་དབང་གཞོན་ནུའི་ཚོགས་རྣམས་དགྱེས་དགྱེས་མཛོད།།

༈ གང་ཐུབ་པའི་ཟླ་བ་ལ་འགྲན་བཞི་ལྷག་བཅུ་ཡི་ཟླ་བ་ཡི།།
སྤྲིན་བྲལ་བསིལ་སྦྲིན་ཆ་ཤས་ཙུང་ཟད་གཏྣའི་རྒྱུན་དང་འགྲོགས་པ་ལས།།
དབང་ཕྱུག་རྩེ་གསུམ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་ཀུ་ཤིཀུ་ཡི་བསྙི་གནས་སུ།།
རིག་གཞུང་བསླབ་པའི་ཆུ་རྒྱུན་ཙུང་ཟད་འཁྱིལ་ལས་ལེགས་ཐོན་པཎྜི་འདི།།

ཉི་མ་མིག་དང་ལྡན་པ་གང་གི་སྐུའི༎
ཞབས་ཟུང་ཆེ་ཡི་མན་ཤེལ་ལས་བརྟན་ཅིང་༎
ཕྱོགས་མཐའ་ལ་འགྲན་འགྲོ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་འདི༎
སྐུ་གསུམ་ལྷུན་འགྲུབ་ས་ལ་དབང་ཕྱིར་བསྒྲོས༎

ཤུབྷཾབསྟུ༎ ༎

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ་ ༢༥༣༣ ལ་སློབ་སེམས་པས་སོ༎
ཕྱི་ལོ་ ༡༩༨༩ ཟླ་ ༦་ ཚེ་ ༣ ལ༎

१. लुहिपा

ये सिद्ध लुहिपा हैं। ये श्याम वर्ण के और शरीर से दुबले हैं। सामने मछली की आँतों का ढेर रखा हुआ है। उनमें से एक मछली लेकर खा रहे हैं। हलकी-सी जटा रखे हुए और उसकी शिखा बाँधे हुए हैं। छाती में हलके बाल निकले हुए हैं।

२. लीलापा

ये राजा के वेश में सिंहासन पर बैठे हुए हैं। ये चारों ओर से अपनी रानियों एवं मन्त्रियों से घिरे हुए हैं। सामने एक मन्त्री खड़ा है।

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

लोचावा का मंगलाचरण

सत् गुरुजनों को प्रणाम है (लोचावा स्मोन डुब शेरब गैरा)

मंगलाचरण

त्रैकालिक बुद्ध एवं गुरुपरम्परा, जो खेचर भूमि प्राप्त हैं, तथा साक्षात् गुरु परमसिद्धि प्राप्त अभय श्री के पद मैं कमल में (स्मोन डुब शेरब गैरा) काय, वाक् एवं प्रसाद मन से प्रणाम करता हूँ। (प्रणाम कर) लूहिपा आदि चौरासी सिद्धों के वृत्तान्त सम्यग् रूप से लिखूँगा।[१]

१. गुरु लूहिपा का वृत्तान्त

नाम—मछली की आँत खाते हुए साधना करते रहने से[२] उनका नाम लूहिपा पड़ा।[३]

जीवन-वृत्तान्त—किसी समय सिंहलद्वीप में एक राजा[४] राज करता था, जिसका राज्य वैश्रवण (कुबेर के राज्य) के समान वैभव-सम्पन्न था। राजभवन सब तरह के रत्नों, मोती, सोना, चाँदी आदि से अलंकृत (सुशोभित) था।

उस राजा के तीन पुत्र थे। एक समय राजा द्वारा ज्योतिषियों से यह पूछा गया कि मेरे देहान्त हो जाने पर किस पुत्र को राज भार-सौंपना अच्छा होगा?

---

१. यहाँ शास्त्रकार एवं अनुवादक के अलग-अलग नाम न होने के कारण इस वृत्तान्त को अभयदत्त श्री ने मौखिक रूप से कहा और उनके शिष्य भिक्षु स्मोन् डुब शेस् रब्ने उसे उसी रूप में भोट भाषा में अनुदित कर दिया है।

२. मछली की आँत खाने का वृत्तान्त बुस्तोन-चक्रसंवर सामान्य "शेस् रब्" पृ० ३७, 'छ' पुट, तारानाथ के-छोसव्युङ् , साक्या काबुम, न्याय-व्याख्या में समान रूप में मिलता है।

३. 'लूई' या 'लूहि' शब्द संस्कृत 'लोहित' शब्द से सम्बन्ध रखता है।

४. यह ओडियान के, राजा विमलचन्द्र के समकालीन थे, बुस्तोन—वही पृ० ३८।

ज्योतिषियों ने ज्योतिष देखकर कहा कि मध्यम पुत्र को यदि राजगद्दी सौंप दी जाय तो राज्य बहुत सुदृढ़ रहेगा और प्रजा सुखी होगी, यह गुण उसमें है। तदनुसार उस राजा ने अपने मध्यम पुत्र को ही अपना उत्तराधिकार और राज-काज सौंप दिया। राजा के देहान्त के बाद बड़े और छोटे दोनों भाइयों तथा जनता ने मिलकर उस (मध्यम पुत्र) को राज्याभिषेक कराकर गद्दी पर आसीन किया। पर उनको राजपद की चाह नहीं थी और राज-काज त्याग कर उन्होंने पलायन की चेष्टा की, तो उनके दोनों भाइयों और जनता ने उन्हें पकड़ कर सोने की जंजीर वाले जेल में डाल दिया। तब भी उन्होंने अपने रक्षकों (पहरेदारों) को सोना-चाँदी आदि (रत्न) देकर (अपनी बात मनवाई) रात में (दौती छोड़कर) सिले हुए वस्त्र पहने (वेश बदल दिया) और अपने को (दूर तक) पहुँचाने वाले लोगों को भी सोना आदि (रत्नों) से पुरष्कृत किया और उनसे विदा ली। राजपुत्र स्वयं रामल[1] के देश रामेश्वर[2] चले गये। वहाँ पर राजमहल के रेशमी आसन त्यागकर मिट्टी के भीतर कृष्णसार (कृष्णसारङ्ग) का (चमड़ेका) बिछौना बिछाकर सोये। वह राजपुत्र बहुत सुशील सुन्दर प्रियदर्शी थे, (जिसके कारण) लोग उन्हें खाना-पीना आदि निरन्तर पहुँचाने लगे।

तत्पश्चात् (कुछ समय के बाद) वे बुद्ध गया गये, तो वहाँ एक डाकिनी ने उन्हें अनुगृहीत किया और अववाद (महत्वपूर्ण तांत्रिक उपदेशों के मर्म का अवबोध करा) दिया। तत्पश्चात् वह राजपुत्र पाटलिपुत्र चले आये। वहाँ सब लोगों ने उन्हें जहाँ बैठे,भोजन-छाजन देना निरन्तर जारी रखा और वह लोगों द्वारा दिये हुए अन्न खाते हुए श्मशान में सोते रहे। एक दिन नगर में मेला लगा। राजपुत्र उस मेले में गये और वहाँ के मदिरालय में पहुँचे, तो वहाँ मदिरा बेचने वाले लोगों की एक प्रधान लौकिक डाकिनी थी। वह उस राजपुत्र को देखकर कहने लगी कि इनके सभी चतुष्चक्र

---

१. भोट ग्रन्थ में 'रामल' का देश लिखा है पर सम्भवतः यह 'रामल' नहीं अपितु 'राम' शब्द ही शुद्ध जान पड़ता है। राम ने लंका जाते समय एक मन्दिर बनवाया था जिसका नाम 'रामेश्वर' है। या मूल शब्द राम-लक्ष्मण हो सकता है।

२. साधकों के शरीर में साधना करते समय के चार स्थानों (मूर्द्धा, ग्रीवा इत्यादि) में भव्य चार चक्र होते हैं। विस्तृत जानकारी के लिएं नागार्जुन के पंचक्रम एवं चोङ् खा पा की व्याख्याएँ देखिए।

मलरहित हो चुके हैं, पर इनके हृदय (चक्र) में मटर के बराबर जाति का विकल्प अभी भी शुद्ध नहीं हो पाया (अभी विद्यमान) है—तत्पश्चात् उसने उस (योगी) राजपुत्र को एक मिट्टी के बर्तन में सड़े हुए खाद्य-पदार्थ डालकर दिये। राजपुत्र ने उसे फेंक दिया, तो उस डाकिनी ने क्रुद्ध होकर कहा कि तुमको खाने के प्रति अच्छे-बुरे की विकल्पना बिना छोड़े, धर्म कहाँ से आयेगा? उसकी बातों के सुनने के बाद वह योगी सोचने लगे कि विकल्पना एवं निमित्त (निमित्त विषयक संज्ञाएं) बोधि प्राप्ति के लिए एक महान विघ्न है, ऐसा जानकर उन्होंने सभी प्रकार के विकल्पों एवं निमित्तों को छोड़ दिया। पटना के पास गंगा तट पर मछुआ लोग गंगा से मछली मारने के बाद तट पर मछली की आँतों को फेंक दिया करते थे और राजपुत्र उसको खाते हुए बारह वर्षों तक वहीं साधना करते रहे। जब मछुआ औरतों ने देखा कि एक योगी उन लोगों द्वारा फेंकी गयी मछली की आँतों को उठाकर रोज खा रहे हैं, तो उन लोगों ने उन्हें लूहिपा (लूई) कहना आरम्भ कर दिया। उसीसे उनका नाम 'लूहिपा'पड़ गया और सर्वत्र उनके लिए 'लूहिपा' संज्ञा व्यवहृत हुआ। इसी नाम के साथ उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई।

(इसका कुछ अंश दारिकापा एवं डिङ्गीपा के वृत्तान्त के साथ आयेगा)

सिद्ध लूहिपा का वृत्तान्त समाप्त[१] ॥

---

१. पद्मकर० के अनुसार लूहिपा, सरहपा एवं शबरपा दोनों के शिष्य थे और ये ओडियान के थे। (पद्म०-इति० पृ० ७४)

दुजोम के अनुसार इनका जन्म-स्थान 'षंपर' था। ओडियान में जाकर वे भिक्षु बने और तीनों पिटकों के विशेषज्ञ बने। 'आर्यमञ्जुश्री नाम संगीति तन्त्र' की साधना से सिद्धि प्राप्त हुई। इनके चार नाम हैं—श्री भागवत परमबोधि, लीलापा या लीलावज्र, भाणु सदृश, ना रूपी। दुजोम, ञिङ् मा० इति० पृ० ४३

२. गुरु लीलापा का वृत्तान्त

दक्षिण भारत के एक राजा अपने सिंहासन पर बैठे ही थे, उसी समय अन्य प्रदेश से एक सुअभ्यस्त योगी उनके पास पहुँचे। राजा ने उस योगी से पूछा कि तुम्हारा इस तरह सभी राज्यों में घूमते रहना बहुत कष्टदायक है। उत्तर में योगी ने कहा— मैं तो दुःखी नहीं हूँ , पर तुम्हें कष्ट है, क्योंकि तुम्हें अपना राज्य छूट जाने का भय और प्रजा के खुश न होने का भय है। मैं तो अग्नि में कूद जाऊँ तो भी नहीं जलूँगा, विष खालूँ तो भी नहीं मरूँगा, इसी प्रकार बूढ़े होने तथा मरने का दुःख भी मुझे नहीं है क्योंकि मुझे रसायन का उपदेश है अर्थात् मैं रसायन प्रयोग की विधि जानता हूँ।

ऐसा सुनकर राजा के मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई और उन्होंने कहा— मैं आप ही की तरह राज्य-राज्य घूम तो सकता नहीं, फिर भी अपने राज्य में आसन पर बैठकर भावना (अभ्यास) तो कर सकता हूँ। अतः आप अपनी विधियों में से एक की देशना मुझे दीजिए। उस (योगी) ने उन्हें अनुमति दे दी और हेवज्र के अनुसार अभिषेक द्वारा उन्हें मण्डल में प्रवेश करा दिया तथा उसी का अववाद (दीक्षा) देकर उनसे 'एकाग्र-स्मृति' नामक समाधि का अभ्यास कराया। उस राजा ने (गुरु के कथनानुसार) अपने सिंहासन पर ही विशेष प्रकार के आसन, तकिया आदि सजाए और अपनी रानियों एवं मंत्रियों के साथ सभी प्रकार के वाद्य-यंत्रों से परिवृत्त होकर भावना की। यही कारण है कि उनका नाम लीलापा (अर्थात् नृत्य लीला आदि में लीन योगी) पड़ गया।

उनका असली अववाद (क्रिया-विधि) अपने दाहिने हाथ के अंगूठे को आलम्बन बनाकर निर्विक्षिप्त रूप से भावना करना (समाधि लगाना) ही था।

जब वह उसमें निर्विकार रूप से अभ्यस्त हो गये, (राजा ने) तो उनके गुरु ने अंगूठे के अन्दर 'हेवज्र' के समस्त देव-मण्डल की भावना करने का उपदेश दिया। राजा ने उन्हें उसमें भी निश्चित रूप से स्थित हो जाने की बात कही, तो गुरु ने उन्हें

'उत्पत्ति' एवं 'निष्पन्न'[१] के युगनद्ध (सहज रूप से) भावनाओं का अभ्यास करवाया और तदनुसार सहज रूप से उनमें ज्ञान (प्रकाश) उदित होने लगा और उन्हें महामुद्रा (परम) सिद्धि प्राप्त हुई। वह अभिज्ञादि अनेक प्रकार के गुणों से सम्पन्न हो गये।

इस प्रकार गुरु के (मार्मिक) उपदेश, स्वयं अपने उद्यम और साथ ही पूर्व कर्मों के शुभ अवशेष इन तीनों का यदि योग हो जाता है, तो भोग विलास को बिना त्याग किये भी व्यक्ति मुक्त हो जाता है। उस (परम सिद्ध पुरुष) ने (सिद्धि प्राप्ति के बाद) अपरिमित जगत्-कल्याण का कार्य किया और 'लीलापा' नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। अन्त में वे खेचर (लोक में) चले गये।

गुरु लीलापा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. 'उत्पत्ति' एवं 'निष्पन्नक्रम' तन्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं, विस्तृत जानकारी के लिए, चोङ् खा पा के 'ङग्-रिम् छेन् मो' में देखिये। चोङ् खा पा ग्रन्थ संग्रह ४, '५०' 'ग' पुट में।

३. गुरु विरूपा का वृत्तान्त

गुरु विरूपा का जन्म पूर्वी भारत त्रिपुरा, जो राजा देवफल (देवपाल) का राज्य था, में हुआ[१]। उस समय दक्षिण में सोमपुरी नामक एक महाविहार था। उस धर्मपीठ में एक हजार भिक्षुओं का विशाल संघ था। उसमें विरूपा भी प्रविष्ट हो गये और भिक्षु बने। यद्यपि विरूपा भिक्षु थे, फिर भी उन्होंने अभिषेक लेकर गुह्य रूप से बारह वर्ष तक वज्रवाराही का जप एक-एक लाख का दो बार किया। पर उससे उन्हें अच्छे स्वप्न तक नहीं आये। सिद्धि की बात दूर रही। इससे मन विक्षुब्ध होकर उन्होंने अपनी 'माला' शौचालय में फेंक दी और यथेच्छ (दिन) चर्या में लग गये। उसी रात (नित्यकर्म) पूजा के समय अपनी माला का ख्याल आया, तो डाकिनी (वज्रवाराही) ने आकर उन्हें अपनी माला हाथ में दे दी और कहा कि ''कुलपुत्र! तुम दुःखी न हो, मैं तुम्हें अधिष्ठित कराती हूँ और सभी प्रकार के विकल्प एवं निमित्तों का परित्याग कर ही साधना किया करो'' और कहा—

'प्रकृति में स्थितचित्त ही वज्रवाराही;
अपने पास होते हुए भी अन्य से अपेक्षा करना।
यह अत्यन्त अनविज्ञ बालक का स्वभाव है;
चिन्तामणि रूपी चित्त विकल्पों से अस्पृष्ट होकर,
जो सन्तोष के साथ साधना करता है, वही उत्तम है।'

तत्पश्चात् पुनः बारह वर्ष तक वही साधना करते रहे; फलतः उन्हें महामुद्रा परम सिद्धि की प्राप्ति हुई।

उस सिद्धि लाभ के बाद उनका परिचारक मांस एवं मदिरा खरीद कर उन्हें खिलाने लगा और विहार में स्थित कबूतरों को मारकर उन्होंने खाना आरम्भकर दिया।

---

१. विरूपा जाति के क्षत्रिय (राजकुमार) थे। उनके भिक्षु-दीक्षा के गुरु का नाम 'जिनदेव' था। भिक्षु का नाम 'श्रीधर्मपाल' था। ये वसुबन्धु के भी शिष्य रहे। ये बहुत दिन तक नालन्दा में भी रहे। ये विज्ञानवादी दार्शनिक थे। (पद्म० इति० पृ० ६, B. D. १७१)

३. विरूपा

विरूपा सिर में पुष्प-माला सजाये हुए हैं। अन्य कोई अलङ्कार या आभूषण नहीं है। दाहिना हाथ तर्जनी मुद्रा में और बायें हाथ में कृष्णसार-मृग का सींग है।

४. डोम्बिपा

डोम्बिपा हड्डी-निर्मित अलङ्कारों, जिनकी संख्या छ: मानी जाती है, से विभूषित हैं। दाहिने हाथ में विषैले सर्प का चाबुक और बायें हाथ में नर-कपाल है। पीछे सर्प का फन लहरा रहा है। बायीं ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन कर रही है। दोनों एक साथ सद्य:प्रसूता व्याघ्री पर सवार हैं।

कपोत (दिनों दिन कम होते गये और) समाप्त होने को आये, तो वहाँ के संघ ने उनसे पूछा कि हमारे पूज्य लोग (कबूतर) किसने खाए? विरूपा ने कहा हम लोग नहीं खाए। शंका होने पर सभी लोगों के कमरे की तलाशी ली गई तो विरूपा के कमरे में भी लोग देखने गये, वहाँ उस समय विरूपा मदिरा पीते हुए कबूतर का मांस खा रहे थे। इसे लोगों ने 'खिड़की' से देख लिया।[१]

तदुपरान्त संघ ने घण्टी बजाकर सभा बुलाई और सभी के निर्णयानुसार उन्हें (विरूपा को) अपने स्थान से बाहर जाने को कह दिया। संघ के आदेशानुसार विरूपा ने भी अपना चीवर और पात्र बुद्ध की मूर्ति के सामने रखकर प्रणाम किया और दरवाजे[२] से बाहर चले गये।

विहार के समीप एक झील थी, विरूपा जब उसके तट पर पहुँचे तो वहाँ पर बैठे एक भिक्षु ने विरूपा से पूछा कि आप किस रास्ते से जा रहे हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि— मुझे तुम लोगों ने निकाल ही दिया है तो अच्छे रास्ते का क्या भरोसा ? यह कहकर उन्होंने उस झील के पानी के ऊपर तैरते कमल की पत्तियों पर पैर रखते हुए बिना पानी में डूबे कमल तोड़े और (विहार की ओर झुक कर) बुद्ध की पूजा की तथा झील के पार चले गये।

सोमपुरी विहार के सभी लोग पश्चात्ताप करते हुए उनके चरणों में प्रणाम करते हुए कहने लगे कि आपने हमारे कबूतरों को क्यों खाया? विरूपा ने उत्तर दिया—सब कबूतर यहीं हैं, मैंने नहीं मारा, तब तक उनके सेवक कुछ कबूतरों के पंखों के टुकड़े ले आये। आचार्य (विरूपा) ने एक चुटकी बजाई तो (सभी कबूतर जितना खाये थे उनके) पंखों के (अवशेष) टुकड़े सब कबूतर बनकर पहले की

---

१. पद्मकर० के अनुसार लोगों ने विरूपा को पन्द्रह देवकन्याओं से परिवृत और मदिरा पीते एवं मांस खाते देखा। तत्काल संघ ने घण्टी बजा कर संघ-सभा बुलाई और संघ-विधान के अनुसार विरूपा को संघ से बाहर किया और कहा कि तुम विरूप आचरण के हो। उन्होंने स्वयं भी अपनी विरूपता को स्वीकार किया। उनका नाम 'विरूपा' इसी से पड़ा और वहाँ से वह बाहर चले गये (द्रष्टव्य पद्म० इति पृ० ८७)

२. कहीं दीवार से बिना टकराये जाने की भी .....।

अपेक्षा कुछ अधिक स्वस्थ एवं ताजे होकर सामने से उड़ गये। यह दृश्य वहाँ बैठे सभी लोगों ने देखा।

उसके बाद विरूपा भिक्षु-वेश छोड़कर योगी के वेश में ही (अपनी) चर्या करते रहे। तत्पश्चात् गंगा के तट पर जाकर, उन्होंने गंगा देवी से भोजन मांगा, नहीं मिलने पर वे क्रुद्ध होकर पानी की धारा को पूर्ण रूप से विच्छिन्न कर पार चले गये। तत्पश्चात् कनसत (काञ्ची)[१] नगर गये। वहाँ के मदिरालय में जाकर उन्होंने मदिरा खरीदी। मदिरा बेचने वाली ने उन्हें एक प्याला मदिरा एवं एक तश्तरी भात दिया, तो वे बराबर मदिरा लेते रहे और उठे नहीं (खाते रहे)। जब ढाई दिन तक सूर्य अस्त नहीं हो पाया तो वहाँ के तत्कालीन राजा ने (उस घटना को देखकर) आश्चर्य चकित होकर कहा कि यह किसका चमत्कार है? पता करो। जब यह घोषणा कर डाली तब सूर्य देव ने राजा को स्वप्न में अपना रूप दिखलाकर कहा कि एक योगी ने मुझे मदिरा बेचने वाली के यहाँ रेहन के रूप में रख दिया है, मैं कैसे चलूँ? तब राजा एवं प्रजा सब लोगों ने मिलकर उस (योगी) की मदिरा का दाम (हिसाब) लगाया तो कोटि तक हो गया और लोगों ने सब अदा कर दिया तो विरूपा वहीं से अन्तर्ध्यान हो गये।

तत्पश्चात् वह 'इन्द्र'[२] नामक तैर्थिकों के स्थान पर पहुँचे[३]। उस स्थान में महादेव की एक बहुत बड़ी मूर्ति थी[४] जिसकी ऊँचाई इक्यासी हाथ थी, वहाँ के लोगों ने विरूपा को भगवान् के उस प्रतीक को प्रणाम करने को कहा। तब विरूपा ने कहा कि मैं बड़ा भाई हूँ, बड़े भाई द्वारा छोटे भाई को प्रणाम करने की

---

१. पद्म० के अनुसार इस स्थान नाम 'धकिनित' है, जो 'विमोसार' के समीप है (दोनों स्थान इस समय अज्ञात हैं)।

२. सम्भवत: यह 'इन्द्र' शब्द स्थान के लिए नहीं अपितु महादेव के लिंग के लिए प्रयुक्त है।

३. उस स्थान का नाम 'चपति' था, वहाँ के तीर्थ केन्द्र के रूप में 'भीमहरि' नामक एक लिंग था, जिसकी स्थापना महाभारत के भीमसेन द्वारा मानी जाती है। (पद्म० इति, पृ० ८८)

४. मूर्ति की जगह पद्म के इति० में लिङ्ग का उल्लेख हैं।

प्रथा नहीं है। वहाँ के राजा आदि सब लोगों ने कहा कि फिर तुमको हम लोग यहीं मार डालेंगे।'

आचार्य (विरूपा) ने कहा—यदि मैं इसको प्रणाम कर लूँ तो पाप लगेगा। इसलिए मैंने इसे प्रणाम नहीं करने को कहा है।

राजा ने कहा— उस पाप का प्रायश्चित मुझसे कर लो।

तब आचार्य ने (प्रणाम करने के लिए) अञ्जलिबद्ध किया तो महादेव की मूर्ति दो टुकड़ों में विभक्त हो गयी। आकाश से यह आवाज आयी—'आचार्य! मैंने तो जैसी प्रतिज्ञा की थी, वैसा ही मानूँगा।' आचार्य ने कहा— शपथ लो? शपथ लिया तो मूर्ति के दोनों टुकड़े आपस में जुड़ गये। महादेव की मूर्ति के लिए प्रयुक्त सभी पूजा सामग्री आचार्य को अर्पित कर दी। वे सब अन्य बौद्धों की (स्थानीय संघ के) जीविका में समिल्लित कर दिये गये, कहा जाता है कि यह परम्परा अभी तक (आचार्य अभयदत्त श्री के समय तक) प्रचलित है।

तत्पश्चात् आचार्य पूर्वी भारत-स्थित देवीकोट नामक स्थान में पहुँचे। उस स्थान के सभी लोग तब तक डाकिनी (चुडैल) बन चुके थे। एक डाकिनी रास्ते में रहकर आने वाले सभी लोगों को डाकिनी मंत्र फूँककर छोड़ती थी। यह वहाँ की एक प्रथा-सी बन गयी थी।

जब आचार्य देवीकोट पहुँचे, तो नगर के रास्ते में उस मंत्र फूँकने वाली डाकिनी के आने से पहले ही एक विहार (जो नगर के पास में ही था) में जाकर सो गये। तत्पश्चात् एक ब्राह्मण पुत्र उस रास्ते से आ रहा था, उसे (उस मार्ग-डाकिनी ने) डाकिनी ने मंत्र फूँककर ही जाने दिया।

नगर पहुँचने पर उसको (ब्राह्मण को) भोजन सामग्री तो मिल गयी, पर सोने की जगह नहीं मिली। घूमते हुए उसकी एक आदमी से भेंट हुई, जो बौद्ध थे। उस व्यक्ति ने कहा कि यहाँ के सब नागरिक डाकिनी बन गये हैं, यहाँ कोई मनुष्य नहीं मिलेगा। डाकिनियाँ तुम्हें कुछ बाधा कर सकती हैं। अतः तुम उस पार के विहार में जा कर ठहरो। वह (यात्री ब्राह्मण) उस विहार में गया तो 'विरूपा' से भेंट हुई और आचार्य ने उसे (डाकिनी मंत्र से परिभूत देख कर पुनः अपने) मंत्र

से अधिष्ठितकर (सुरक्षित कर) दिया। जब रात में सभी डाकिनियाँ एकत्र होकर एक दूसरे से पूजा-सामग्री के बारे में प्रश्न कर रही थीं तो सब लोगों ने यही कहा कि 'आज हमें सभी प्रकार का मांस (मदिरा) मिल गया, पर 'महामांस' नहीं मिल पाया। उनमें से एक ने कहा—मुझे दो महामांस (विरूपा और एक ब्राह्मण) मिले हैं।'

तब प्रधान डाकिनी ने उसे ले आने के लिए कहा। वह (अपनी सहेलियों सहित) उसको लेने गयी, परन्तु (विरूपा के मंत्र प्रभाव से) बहुत प्रयत्न करने पर भी वे लोग उस (ब्राह्मण) के पास नहीं जा सकीं। बार-बार जाकर प्रयत्न किया तो एक बार विरूपा एक बड़े लकड़ी के खण्ड पर बैठे मिले। उन लोगों ने उसी लकड़ी खण्ड सहित उठाकर उन्हें सभा में ला रखा। वहाँ पहुँचने पर सभी डाकिनियाँ उनकी पूजा वन्दना करने लगीं। विरूपा ने उन लोगों के सभी (मांस एवं) मदिरा को (खा) पी लिया (और समाप्त कर दिया)। डाकिनियों ने उन्हें मारने के अभिप्राय से हाँस कुतूहल मचाना[१] आरम्भ किया, तो आचार्य ने भी 'द्वादश महाक्रोध परिहास'[२] हँस दिया, जिससे सभी डाकिनियाँ बेहोश होकर गिर पड़ी। इस प्रकार सभी डाकिनियाँ (वश में कर के) प्रतिज्ञा-बद्ध (शपथ से परिबद्ध) कर दी गयी; उन्हें आज्ञा हुई —'जो व्यक्ति त्रिशरण की शरण में जाता हो और मेरे प्रति श्रद्धा रखता है, उन्हें किसी प्रकार की बाधा न पहुँचाना। जो लोग (त्रिरत्न के) शरणागत न हों, चित्तोत्पाद नहीं करते हों, उन लोगों के शरीर से बिना किसी प्रकार की बाधा पहुँचाये तुम लोग एक अञ्जलि खून पी सकती हो। तुम लोगों में से यदि कोई भी अपनी प्रतिज्ञा से

---

१. यह 'हाँस' कौतूहल या परिहास-गर्जन (भीषण ध्वनि) से अभिप्रेत सामान्य ध्वनि नहीं थी। यह गर्जन है, जो डाकिनियाँ किसी अन्य जीव या व्यक्ति को परिभूत करने के लिए शक्ति के रूप में प्रयोग किया करती हैं।

२. यह बारह प्रकार के 'परिहास' तन्त्र शास्त्र के विधानानुसार एक विशेष प्रकार से परिहास हैं— ह-ह, हु-हु आदि। विशेष प्रकार की सिद्धि प्राप्ति के बाद ही इस परिहास की शक्ति का लाभ होता है। विशेष जानकारी के लिए चक्रसंवर तन्त्र की व्याख्या (तनग्युर संग्रह भोट भाषा) देखें।

विमुख (अपनी शपथ से विमुख) हो जाय, तो यह चक्र उसका सिर काटे (यह कहकर एक चक्र वहाँ स्थापित किया) और उत्तरी (प्रधान) यक्ष[१] (राज) उस प्रतिज्ञाच्युत डाक-डाकिनियों का खून पीये (कहकर एक यक्षराज को अधिकृत किया)। उस यक्ष एवं चक्र की छाया आज भी (आचार्य वीरप्रकाश एवं आचार्य अभयदत्त श्री के समय में भी) उस जगह (पूर्व देवीकोट)[२] आकाश में विद्यमान है।

इस प्रकार वहाँ की सभी डाकिनियों को रक्षकों (धर्मपाल) के परिवार के रूप में प्रतिनिबद्धकर (परिवार में सम्मिलित करके) शपथ में प्रतिबद्ध किये और फिर आचार्य वहाँ से अन्यत्र चले गये।

पुन: देवीकोट लौटते समय रास्ते में महादेव और उमादेवी दोनों ने साढ़े चार लाख की संख्या वाले नगर का निर्माण (चमत्कार द्वारा) करके उनमें विरूपा का आतिथ्य ग्रहण किया और त्रयस्त्रिंशत् आदि सभी देव स्थानों से लाये गये नैवेद्ये (खाने के पदार्थ) आदि द्वारा उनकी विस्तृत पूजा की।

विरूपा का दोहा—

सोमपुरी महाविहार में परिव्राजक-उपसम्पदा-विनयशील का सम्यक् पालन किया।

पूर्व कर्मवश नैर्माणिक (व्यक्ति द्वारा), अभिषेक- अधिष्ठित अववाद का सम्प्रदान हुआ (सम्यक् रूप से मिला)।

विकल्प द्वारा बारह वर्ष तक साधना की, तो स्वप्न तक न देखा;

थके हुए मन से क्रुद्ध होकर माला का त्याग किया, तब डाकिनी की अपनी वाणी से अनुमति (आशीर्वाद) पायी।

---

१. आकाश में विचरण करने वाले उत्तर दिशा के यक्षराज।

२. कहीं-कहीं देवीकोटि, देवीकुट, देवीकोट भी लिखा हुआ है। यह स्थान पूर्वीभारत वारेन्द्र क्षेत्र, ग्रोमो (यडोङ्) नामक जगह के दक्षिणी भाग में स्थित 'पञ्चप' नामक नगर से चार कोस की दूरी पर स्थित है। यह देवी का स्थान एवं सिद्ध पीठ है। 'श्री चक्रसंवर तन्त्र की सामान्यार्थ वृत्ति'। (बुस्तोन—पृ० २८, 'छ' पुट ॥ B.N.६)

इसी प्रत्यय (कारण) से (अपने) धातु अध्याशय (आन्तरिक सामर्थ्य) की परीक्षा हुई। सांसारिक लक्षण (स्वरूप) से सम्यक् अवगत हुआ, निर्विकल्प चर्या का मैंने आचरण किया।

विप्रतिपत्ति ज्ञान के कारण महासाङ्घिक संघों के द्वारा मुझे स्थान-च्युत किया गया।

उन सभी लोगों की विप्रतिपत्ति परिहार के हेतु (मैंने) जल पर बिना निमग्न हुए ध्यान लगाया;

गंगा को विपरीत दिशा में उलट कर, विविध (भोजन) खाया;

सूर्य को धरोहर (न्यास) (के रूप) में रखकर, (मदिरादि) भोगे।

तैर्थिक देव-प्रतिष्ठान भग्नकर (उन लोगों का) अभिमान तोड़ा; देवीकोट में डाकिनियों का दमन किया।

महाभैरव ने गुणाभिव्यक्त कर पूजार्थ नगर का निर्माण किया, और मेरी पूजा की।

इतनी चर्याएँ यदि मैंने नहीं की होती तो सनिमित्त धर्म के[१] प्रति कौन झुकता?

ऐसा कहकर वे सात सौ वर्ष बाद खेचर (लोक) चले गये।

गुरु विरूपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. 'सनिमित्त धर्म' = निमित्त से संयुक्त धर्म को 'सनिमित्त धर्म' कहा जाता है। अर्थात् परिकल्पित या विकल्पना की प्रतीति के निमित्त या प्रधान कारण ही यहाँ निमित्त शब्द का अभिप्रेत अर्थ है। यही लौकिक सहज बुद्धि का प्रवृत्ति-विषय भी है। यही 'प्रतीत्य-समुत्पाद' का व्यावहारिक पक्ष एवं सांवृत्तिक स्वरूप भी है। इसी के आधार पर कर्म-फल, मार्ग-फल आदि की अत्यन्त सूक्ष्म व्यवस्था की जाती है। यही 'सनिमित्त धर्म' का सारतत्त्व है।

(दोहावृत्ति० पृ० २०१-१९, तन-ग्युर 'लू' पुट। जापान संस्करण—Vol-870), (डुब थबस् कुन० तु-पृ० १३७-२३२, Vol-14)

४. गुरु डोम्बिपा का वृत्तान्त

गुरु डोम्बिपा जाति के क्षत्रिय थे। वे (राजा) मगध के रहने वाले थे। उनकी सिद्धि (इष्टदेव) हेवज्र से प्राप्त हुई।

इन्हें गुरु (कृष्ण) चर्यापा द्वारा अभिषिक्त कर दीक्षित किया गया था और तन्त्र का उपदेश (अववाद) दिया[१] गया। तदनुसार उन्होंने अनुष्ठान किया। जब अपनी प्रजाओं के प्रति एक मात्र पुत्र के समान (प्यार स्नेह के साथ) सोचने और व्यवहार करने लगे तब सभी लोग समान रूप से कहने लगे कि (हमारे) महाराज ने धर्म की दीक्षा ली है, यह तो नहीं सुना, पर स्वभावतः प्रजा के प्रति मैत्री भाव रखने वाला, यह राजा एक धार्मिक ही प्रतीत होता है।

उस समय राजा ने अपने मंत्री से कहा कि 'हमारे देश में चोरी करने वाले और भय दिखाकर सभी लोगों को लूटमारकर धन प्राप्त करने वाले भरे हुए हैं। मेरी अपनी पुण्य कर्म (शक्ति) भी बहुत मन्द है। गरीबी बहुत है, इन सभी प्रकार के भय-आतंक और दरिद्रता के त्राण हेतु, हमारी उस काष्ठ-घण्टी (लकड़ी की घण्टी) को बजा कर वहाँ के बड़े वृक्ष में बाँध आओ। जहाँ-कहीं बाधा एवं दरिद्रता दिखलाई पड़े, जब भय-आतङ्क और अतिदरिद्रता उपस्थित हो तो उस घण्टी को बजाओ, अन्यथा उसे न बजाओ।

जैसा राजा ने आदेश दिया, मंत्री ने भी तत्काल वही काम किया और मगध में इस प्रकार दरिद्रता एवं सभी प्रकार के भय-आतंक समाप्त कर दिये।

किसी समय उस राजा के राज्य में कुछ नीच जाति की गाना गानेवाली एक मण्डली पहुँची। राजा के लिए गाना-बजाना आदि का आयोजन किया गया। जब राजा ने देखा कि उस गायक की सुपुत्री, जो बारह वर्ष की थी, लौकिक धर्मों से अस्पृष्ट

---

१. लामा तारानाथ के अनुसार यह महासिद्ध नडपा (नारोपा) के शिष्य थे। नडपा के साक्षात् शिष्य श्रीवर डोम्बिपा कहे गये हैं—(भा० इ० पृ० २४५, अध्या ३३)

मनोहारी, बहुत सुन्दर चेहरे, अच्छे रंग-रूप, एवं पद्मिनी के सभी गुणों से सुसम्पन्न थी। राजा ने उस हीन जाति के गायक से कहा—अपनी यह सुपुत्री हमें दे दो।

तब उस गायक ने क़हा—आप मगध के राजा, आठ लाख नगरों के अधिपति हैं। निर्बाध राजसम्पत्ति वाले महान् राजा हैं। हम जाति के हीन, जन समुदाय से पददलित त्यागे हुए हैं। अतः हम आपकी इस तरह की आज्ञा के योग्य नहीं है।

ऐसा निवेदन करने पर राजा ने जोर देकर उसे समझाया और लड़की के शरीर के वजन के बराबर सोना उसके माता-पिता को प्रदान कर उस लक्षण सम्पन्न कन्या को अपने लिये ले लिया।

उस राजयोगी ने बारह वर्षों तक उसे अपनी कर्म-मुद्रा के रूप में सेवन किया तो यह किसी को पता नहीं लगा। पर बारह वर्ष के बाद लोगों को उक्त घटना का पता लगा तो 'मगध' वालों ने सर्वत्र यह घोषित कर दिया कि राजा ने एक डोमिनी (डोम की लड़की) ग्रहण की है। यह सुनकर राजा अपने राजपुत्र और मंत्री आदि को राज्य सौंपकर उस डोमिनी कन्या के साथ वन में चले गये और वन में ही (तान्त्रिक) साधना करते हुए बारह वर्ष बिताए।

राजपुत्र एवं मंत्रियों द्वारा राज-काज अच्छी तरह नहीं चला पाने के कारण जब देश बरबाद होता गया तब सब लोगों ने मंत्रणा करके यह तय किया कि पहले के राजा को ही खोज कर राज करने दिया जाय। सब लोगों ने यह तय कर कुछ लोगों को उसे खोजने भेजा। लोग उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ वह राजा उस लड़की के साथ साधना में लीन थे। लोगों ने देखा—राजा एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं। लड़की पानी लेने जा रही थी। उसने (एक झील के पास जा कर) झील के ऊपर कमल के पत्तों पर पैर रखते हुए बिना पानी में डूबे (झील के बीच तक जा कर) झील के पन्द्रह हाथ नीचे की सतह से शुद्ध पानी भरकर राजा को पिलाया। इस दृश्य को देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित हो गये और उन राजयोगी से कुछ कहे बिना वे लोग नगर में लौट आये और उन्होंने सब वृत्तान्त लोगों को सुनाया।

उसके बाद राजपुत्र और मंत्री सहित सब नगर के लोगों ने राजा के पास जाकर उनसे राजभवन आने की प्रार्थना की। (प्रार्थना स्वीकार हुई)। एक दिन दम्पत्ति चीता

पर सवार होकर विषैले सर्पों का चाबुक हाथ में लटकाए नगर पहुँचे। सब नगरवासी अत्यन्त आश्चर्यपूर्वक उन्हें देखते रहे; निवेदन किया कि आप यदि राज्य ग्रहण करें तो बहुत सुचारूरूप से गृहीत हो सकते हैं, अतः आप वैसा करें।

(उस योगी के रूप में) राजा ने उत्तर दिया—मैं तो शूद्र जाति का हूँ, राजकार्य करने के योग्य कहाँ रह गया, फिर भी आदमी के मर जाने के बाद उसकी ऊँच-नीच जाति की कल्पना का विच्छेद हो जाता है। अतः (तुम लोग) मुझे अग्नि में जला दो, उसके बाद जब जन्म होगा, फिर राज-कार्य करूँगा।

तदनुसार—नागरिकों ने गोशीर्ष (नामक) चन्दन की लकड़ी (भारी मात्रा में एकत्र कर) के बीच में उन्हें (सपत्नीक) रखकर जला दिया। ईंधन अधिक हो जाने से सात दिन तक आग जलती रही और बुझी नहीं। अग्नि शांत हो जाने के बाद जब लोगों ने देखा तो (एक बहुत बड़े) कमल (सदण्ड विकसित पुष्प) के अन्दर दम्पत्ति हेवज्र (देव) के रूप में सजल (पुष्प के समान) दिखलाई पड़े।

मगध नगर के सभी लोगों को यह देख कर उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी और वे 'डोम्बिपा' के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

राजा (जो अग्नि में जलाये जाने के बाद बचे) मंत्री आदि लोगों से बोले—

'तुम सब लोग मेरी तरह यह (साधना चमत्कार आदि) कर सकोगे तो मैं राज्य करूँगा, अन्यथा नहीं कर सकूँगा।

लोग आश्चर्य चकित होकर बोले—'इस प्रकार (हम लोगों में से) कौन कर सकता है? यह कहकर वे बैठ गये।

पुनः राजा ने कहा—राजसत्ता बहुत ही लचीली एवं दोषों से भरी हुई है। मैं तो धार्मिक राज-सत्ता ही चला सकूँगा। यह कहकर वे वहीं से जगत्-कल्याण के लिए 'खेचर' लोक को चले गये।

गुरु डोम्बिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

५. गुरु शबरपा का वृत्तान्त

[१]शबरपा मंत्र-विक्रम[२] नामक पर्वत में श्री शबरपी (शबरपा) नामक एक शिकारी रहता था।[३] उसका काम अनेक विध प्राणियों को मारकर उनका माँस खाना (जीविका चलाना) और सब समय जीविका के लिए प्राणि-वध एवं अनेक प्रकार की हिंसा आदि पाप-कर्म करना था। आर्य लोकेश्वर (बोधिसत्त्व) ने उसे इस प्रकार के कार्य करते हुए देखा तो (उनके मन में उस शिकारी के प्रति अगाध) करुणा उत्पन्न हो गयी।

आर्य ने उस (शिकारी) की प्रचण्ड मनोवृत्ति के दमन हेतु अपने को श्री शबरपा के ही समान एक शिकारी का रूप धारण किया (चमत्कार शक्ति द्वारा) जो उस (असली शबरपा) के पास जा मिला। श्री शबरपा ने पूछा कि तुम कौन हो, (नैर्माणिक) शबरपा ने उत्तर दिया कि—मैं भी शबरपा हूँ।

शबरपा ने पूछा कि तुम्हारा देश कहाँ है?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—बहुत दूर प्रदेश में है।

शबरपा ने कहा—तुम एक शर (बाण) द्वारा कितने हिरण मार सकते हो?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—तीन सौ मार सकता हूँ।

शबरपा ने कहा—उस प्रकार की धनुष विद्या और बाण चलाना मुझको भी सिखाओ।

---

१. कुछ लोग 'शबरपा' को और 'सरहपा' को एक ही व्यक्ति मानते हैं, पर ये, दोनों अलग-अलग व्यक्ति थे। 'चतुरशीति सिद्ध गीतिका क्रम' में भी इन दोनों का अलग-अवग स्थान है। गुरु गयाधर के चौरासी सिद्धों की 'स्तुति' में भी इन दोनों के अलग-अलग नाम एवं स्तुतियाँ हैं, (तिब्बती-तनग्युर)। बुस्तोन ने भी इन दोनों को एक मानना गलत बतलाया है—चक्रसंवर तन्त्र का सामान्यार्थ भाष्य—पृ० ३६-३७, 'छ' पुट। (बुस्तोन ग्रन्थ संग्रह Vol.N.6)

२. 'मंत्र विक्रम' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। बुस्तोन ने इस जगह का नामार्थ 'मन-विश्राम' दिया है—(वही. पृ० ३६, B.P. 72, Vol. 6)

३. अन्यत्र-ये जाति से 'नर्तक' =नाचने वाले कहे गए हैं—वही।

५. शबरपा

शबरपा रंग के कृष्ण हैं। उनके दक्षिण हाथ में वाण और बायें हाथ में बाँस का धनुष है। धनुष के दोनों छोर की नोक पर सुअर के शव का ऊपरी हिस्सा और निचला हिस्सा अलग-अलग करके टाँगे हुए हैं। फल और फूल से बने आभूषण तथा मोर के पंखों से बने अधोवस्त्र पहने हुए हैं। दोनों ओर उनकी दोनों पत्नियाँ बाण की तूणीर या तरकश लिए हुए खड़ी हैं।

६. सरहपा

सरहपा गोरे रंग के हैं। जनेऊ धारण किये हुए हैं। एक बाण लेकर उसे सीधा कर रहे हैं। वे यौवन अवस्था में हैं।

दूसरे दिन (बाण-विद्या को सिखाने हेतु) श्री शबरपा उस (नैर्माणिक) शबरपा को लेकर एक बड़े मैदान में पहुँचे। वहाँ (नैर्माणिक शबरपा ने पहले से) पाँच सौ निर्मित हिरण बनाकर छोड़ रखे थे। जब शबरपा न उन्हें देखा तो (अपने मित्र) उस नैर्माणिक शबरपा से पूछा—तुम्हारे शर द्वारा कितने हिरण मरेंगे?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—सभी पाँच सौ हिरण मर सकते हैं।

शबरपा ने कहा—चार सौ छोड़, दो सौ मारो।

आर्य द्वारा निर्मित शबरपा ने एक सौ हिरण एक ही बाण द्वारा धराशायी कर दिये। एक हिरण कीलाश शबरपा से उठाने को कहा और उन्होंने उठाने की चेष्टा की तो, नहीं उठा सके। शबरपा का सारा अभिमान (घमण्ड) समाप्त हो गया और घर लौट गये। उस (नैर्माणिक) शबरपा से कहने लगे—उस प्रकार की (मैदान में दिखायी) अपनी शक्तिशाली बाण विद्या मुझे (अवश्य) सिखा दीजिए।

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया —उस प्रकार की बाण-विद्या को सीखने के लिए एक महीने तक माँस खाना छोड़ना होगा, यह आवश्यक है।

शबरपा ने उसे मान लिया और उसी दिन से प्राणि-वध और हिंसा बन्दकर दी। एक सप्ताह के बाद जब उस (नैर्माणिक शबरपा) ने उनके पास जाकर पूछा—आप लोगों ने क्या खाया है?

शबरपा ने. उत्तर दिया —हम लोगों ने फल आदि खाया है।

नैर्माणिक शबरपा ने कहा -अब आप लोग प्राणि मात्र के लिए मैत्री-भावना एवं दयाभावना करें (यह कहकर वे वहाँ से चले गये)। एक महीना पूरा होने के उपरान्त (वह नैर्माणिक शबरपा) वहाँ आये, तो शबरपा ने कहा—अब हमें हिरण के आखेट का उपदेश दें।

उस नैर्माणिक (शबरपा) ने वहाँ एक मण्डल बनाया और उसे पुष्प आदि से सजाकर शबरपा दम्पत्ति को कहा कि आप लोग इस मण्डल की ओर देखो। (तत्काल बाद) उन्हें फिर पूछा कि क्या देखा? दोनों को उस मण्डल के अन्दर

आठ नरक सपरिवार दिखलाई पड़े और साथ ही उन दोनों (दम्पत्ति) ने स्वयं को वहाँ (नरकपालों द्वारा) अग्नि में पकाये जाते देखा। इससे अत्यन्त भयभीत, विकम्पित होकर वे दोनों (उस प्रश्न् का, जो नैर्माणिक शबरपा ने पूछा था कि[१]— इस मण्डल के अन्दर तुम्हें क्या दिखलाई पड़ा) उत्तर नहीं दे सके।

उस (नैर्माणिक शबरपा) के बार-बार पूछने पर कहने लगे कि इस प्रकार के नारकीय प्राणी दिखलाई पड़े हैं।

नैर्माणिक ने कहा—आप लोगों को वहाँ जन्म ग्रहण करने में डर नहीं लगता?

शबरपा ने उत्तर में कहा कि हम तो इससे अति भयभीत हैं पर आपके पास इससे मुक्त होने का कोई उपाय है?

पुन: नैर्माणिक शबरपा ने पूछा —उस उपाय की साधना आप लोग कर सकेंगे?

शबरपा ने उत्तर दिया— हाँ, अवश्य कर सकेंगे।

तब उस नैर्माणिक (शबरपा) ने उन्हें धर्मोपदेश दिया। वह इस प्रकार है :

प्राणि-वध का विपाक परिणाम नरक में पैदा होना है। कारित्र[२] एवं नि:ष्यन्द हेतु के सदृश फल को नि:ष्यन्द फल कहा जाता है। फल के रूप में प्राणि-वध करने की इच्छा निरन्तर आती रहती है।

---

१. इस विवरण में जो नैर्माणिक शबरपा के साथ शबरपा का जो संवाद हो रहा है, बुस्तोन चक्रसंवर सामान्य भाष्य में यह दूसरे प्रकार से है। वहाँ शबर के साथ बोधिसत्व रत्नमति का संवाद होने का वृत्तान्त दिया है। यह सम्भव है कि रत्नमति ही उस निर्मित 'शबर' का नाम हो। (वही, पृ० ३६)

2. 'कारित्र' फल और 'निष्यन्द' फल,—कारित्र = क्रियाशीलता या कारकत्व अर्थात् कर्म के कर्ता में निहित कर्तृत्व शक्ति को कारित्र कहा जाता है। 'निष्यन्द' वह फल है, जो हेतु के समान स्वरूप का हो (नि:ष्यन्दो हेतुसदृश:' अभि० को भा० ५७, २, इन्द्रिय निर्देश पृ० ३३०, बौद्ध भा० सं० १९७०)

अधिपति फल आयुक्षीण (अल्प आयु मात्रा वाला) होता है और पुरुषकार फल रूप व्यक्तित्व प्रभाव हीन होता है।

प्राणि-वध (प्राणातिपात) कर्म को त्यागने से बोधि की प्राप्ति होती है। उस से कारित्र निःष्यन्द फलतः प्राणातिपात करने की इच्छा (प्रवृत्ति) नहीं होती है। अधिपतिफल दीर्घायु होता है और पुरुषकार फल प्रभाव (एवं सुन्दरता आदि) से युक्त होता है।

इत्यादि दश अकुशल धर्मों के दोष एवं कुशल धर्मों की अनुशंसा (गुण) (सम्बन्धी, उपदेश दिया, तो शबरपा में सांसारिक धर्मों के प्रति घृणा एवं निरर्थकता बुद्धि उत्पन्न हो गई।) और उन्हें धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा प्राप्त हो गई।

तत्पश्चात् आर्य-अवलोकेश्वर उन्हें अनेक मार्मिक उपदेश देकर दन्तीर (दन्तिर) पर्वत के लिए प्रस्थान कर गये।

शबरपा बारह वर्षों तक निर्विकल्प महाकरुणा की भावना एवं साधना करते रहे, जिसके फलस्वरूप उन्हें परम सिद्धि की प्राप्ति हुई। जब उन्हें महामुद्रा परम सिद्धि का लाभ हो गया तो वह एक दिन महाकरुणा की धर्मता (समाधि) से व्युत्थित होकर (उठकर) आर्य अवलोकेश्वर के चरणों में गये। आर्य ने शबरपा के गुणों की भूरिशः प्रशंसा की और कहा—कुलपुत्र तृण अग्नि-शमन (बुझने) के समान एक पक्षीय निर्वाण उत्तम (पर्याप्त) नहीं है। तुम सत्त्वार्थ (जगत् कल्याणार्थ) संसार में रहकर अचिन्त्य सत्त्वों (अपरमित प्राणियों) का अर्थ (कल्याण) करो।

तत्पश्चात् शबरपा अपने गुरु की आज्ञा पाकर अपने देश लौट गये और वहीं रहने लगे।

इनके तीन नाम प्रसिद्ध हैं—शबरपा, मयूरपक्ष (पंख) ओढ़कर रहने के कारण मयूरवसन, सदा पर्वतों में रहने के कारण 'गिरिनाथ' भी कहे जाते हैं।

ये मैत्रेयनाथ नामक बुद्ध के शासन के उदय होने तक उसी शरीर के साथ इस जम्बु-द्वीप में ही रहेंगे।[१]

गुरु शबरपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१. बुस्तोन के अनुसार उनके रहने का स्थान दक्षिणी श्रीपर्वत है। 'शबरपा' रहने वाले पूर्व भारत बंगाल (भंगल) के थे। 'भंगल' के 'गोन्पा' (गिरिगोन्-विहार) नामक विहार में आचार्य नागार्जुन से उनकी भेंट हुई। सर्वप्रथम उन्होंने नागार्जुन से ही श्री चक्रसंवर (के मण्डल में) दीक्षा ग्रहण की। उसके बाद बोधिसत्त्व रत्नमति से उनका साक्षात्कार हुआ। (चक्रसंवर सामान्य भाष्य—पृ० ३६-३७, बुस्तोन) पद्यकरपो के अनुसार शबरपा 'नागार्जुन' और 'सरह' दोनों के शिष्य थे।

६. गुरु सरहपा का वृत्तान्त

गुरु सरहपा[१] जाति के ब्राह्मण थे। उनका जन्मस्थान पूर्वीभारत के 'राजी'[२] (राँची) नामक नगर के अन्तर्गत सरोली (पेकिंग सं०, जापान से प्रकाशित वाल्युम ८७ लू पृ० १७७) नामक स्थान (गाँव) है। यह डाकिनी के पुत्र थे और वास्तव में यह डाकि ही थे।[३] यह गुरु ब्राह्मण होते हुए भी बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे। बहुत से बौद्ध (तान्त्रिक) आचार्यों से धर्मोपदेश सुनते थे। फलतः गुह्य धर्म (तन्त्र नय) के प्रति उन्हें विश्वास हो गया। ब्राह्मण और बौद्ध दोनों (धर्मों) के विधानानुसार वे (तांत्रिक विधान के अनुसार) संवर और दीक्षा के नियमों का पालन करने लगे। दिन में ब्राह्मण धर्म के अनुसार कार्य करते थे और रात में बौद्धों के। कुछ दिन बाद मदिरा का सेवन किया, तो ब्राह्मण लोग यह जानकर उनको अपने समाज और देश से निकाल बाहर करने के हेतु एकत्र हो गये और तत्कालीन महाराज रत्नफल (संभवतः रत्नपाल) से उन लोगों ने निवेदन किया—आप राजा हैं, तो देश में विधर्मियों को पनपने देना क्या उचित है? यह 'सरह' रोलि नगर का पन्द्रह हजार आबादी वाले गाँव का प्रधान ब्राह्मण होते हुए भी मदिरा पान करके जाति (धर्म) से च्युत हो गया है। अतः इसे (इस देश से) निकाल देना चाहिए।

राजा ने कहा कि पन्द्रह हजार आबादी के इस अधिपति को मैं इस देश से निकालना नहीं चाहता हूँ। यह कहकर; स्वयं राजा ने 'सरहपा' के पास जाकर उनसे कहा—आप ने ब्राह्मण होते हुए भी मदिरा पानकर यह उचित कर्म नहीं किया।

---

१. सरहपा वज्रपाणि के शिष्य थे। 'अनुत्तर तन्त्र' का अधिकांश भाग वज्रपाणि ने उन्हें दिया। उन्होंने आचार्य नागार्जुन को दिया (चक्रसंवर सामान्य भाष्य पृ० ३६)

२. राजी की जगह पर-राज्ञी, राज्ञि, राञ्ज्ञ और राञ्ज्ञी आदि शब्द विभिन्न ग्रन्थों में मिलते हैं।

३. डाकि होने की बात अन्यत्र भी है। करुणा पुण्डरीक में भी इनकी भविष्यवाणी की बात है— पद्-द्कर् छोस् ब्युङ्=पद् कर इति० पृ० ७१।

'सरहपा' ने उत्तर दिया — मैंने मदिरापान नहीं किया, फिर भी शपथ (कसम) खाना हो तो सभी ब्राह्मणों एवं जनता की सभा एकत्रित कीजिये।

जब सब लोग एकत्र हो गये, तो सरहपा ने कहा कि 'मैंने यदि मदिरा पान किया हो, तो मेरा हाथ जल जाय और नहीं पिया हो, [१]तो हमारा हाथ न जले, यह कहकर उन्होंने उबलते हुए तेल के अन्दर अपना हाथ डाल दिया, पर हाथ नहीं जला। राजा ने लोगों से पुनः पूछा कि क्या इनका मदिरापान सत्य है?

सभी ब्राह्मणों ने एक साथ कहा कि सत्य है, इसने मदिरापान किया है। सरहपा ने पहले के वचन दोहराते हुए उबलते ताँबे का पान किया, तो भी वह नहीं जले। उसके बाद पुनः राजा ने लोगों से कहा कि विश्वास हो गया कि इन्होंने मदिरा नहीं पी, ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि नहीं, इन्होंने पी है।

(पूरी परीक्षा) राजा ने कहा कि आप लोगों में से एक सरह के साथ पानी के ऊपर बैठे, जो डूबेगा उसने पी और जो नहीं डूबेगा उसने नहीं पी 'वैसा ही हो' कहकर अन्य एक ब्राह्मण के साथ सरह गहरे पानी में प्रविष्ट हुए तो 'सरह' नहीं डूबे और अन्य ब्राह्मण डूब गये। सरहपा ने कहा कि (देखा) मैंने नहीं पी है। फिर भी लोगों ने स्वीकार नहीं किया कि सरह ने मदिरा नहीं पी। (पुनः तुला पर परीक्षा हुई) यह कहकर कि तुला पर रखो, जो भारी होगा उसने नहीं पी और जो हलका पड़ेगा उसने पी। वैसा ही किया तो सरहपा भारी निकले, तो उन्होंने कहा कि मैंने मदिरा नहीं पी। उसके बाद तीन आदमी के बराबर लोहखंड के साथ तौलने पर भी सरह अधिक भारी निकले। उसके बाद छः आदमी के बराबर लोहे के खंड के साथ तौलने पर भी सरह भारी निकले। राजा ने यह कहकर घोषणा की कि—इनके समान यदि सामर्थ्य (शक्ति) हो, तो मदिरा पी सकते हैं।

---

१. मदिरापान नहीं करने का तात्पर्य-मदिरा को उस रूप में नहीं पीने से है, जो साधारण लोग पीते हैं। अर्थात् उन्होंने मदिरा को अलौकिक शक्तिवर्द्धक के रूप में परिणत कर दिया (पंच मकारों के सेवन की एक विशेष अवस्था में विशेष स्थिति होती है।)

तत् पश्चात् सभी ब्राह्मणों एवं राजा ने उनके (सरह के) चरणों में प्रणाम किया और उपदेश की याचना की। (सरहपा ने) राजा, रानी और प्रजा (तीनों) के लिए अलग-अलग दोहों का गायन किया, जो बाद में गायन दोहा ''दोहत्रयी'' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

सरह के प्रभाव में आकर (वहाँ के) सभी ब्राह्मणों ने अपने धर्म का त्याग करते हुए सुगत के शासन में प्रवेश किया। (सरह के उपदेश के आधार पर) राजा ने सपरिवार सिद्धि लाभ किया।

उसके बाद सरहपा पन्द्रह वर्षीया एक लड़की[१] को जो पहले से ही उनके पास खाना बनाने वाली नौकरानी के रूप में रहती थी, लेकर अन्यत्र चले गये। एक विहार में रहकर पति साधना करते रहे और पत्नी भोजन आदि की व्यवस्था करती रही। एक बार सरहपा ने कहा कि मैं मूली का शाक खाना चाहता हूँ। पत्नी ने भैंस के दही के साथ मूली की सब्जी बनाकर पहुँचाया। तो उस समय (सरह) समाधि में बैठे हुए थे। पत्नी ने उन्हें नहीं जगाया, और वापस चली आयी। सरहपा बारह वर्ष तक उस समाधि से नहीं उठे, जब उठे तो अपनी पत्नी से पूछा— मूली की सब्जी कहाँ है? पत्नी ने उत्तर दिया—आप बारह वर्ष तक समाधि से नहीं उठे, अब वह सब्जी कहाँ मिलेगी। इस समय शीतकाल चल रहा है, नहीं मिलेगी।

सरहपा ने अपनी पत्नी से कहा—मैं पर्वतों और वनों में साधना करने जाऊँगा।

पत्नी ने उत्तर दिया— काय विविक्ति कोई विविक्ति नहीं है। चित्तगत निमित्त एवं विकल्पना विविक्ति ही परम विविक्ति है। आप बारह वर्षों तक समाधि में (लीन) रहने के बाद भी सूक्ष्म (बहुत छोटी सी) मूली (की सब्जी) का निमित्त भी नहीं तोड़ सके, तो पर्वतों के बीच जाने से क्या लाभ?

---

१. महान साधक 'श्री पद्म करपो' के अनुसार यह 'लड़की' एक नाग जाति 'डोम' या चा[illegible] की लड़की थी, जो 'शर' बाण बनाती थी। (पद्म० इति० पृ० ७२)

सरहपा को (उसकी बातों की) सच्चाई की अनुभूति होने लगी। उन्होंने निमित्त एवं विकल्पना को (सदा के लिए) परित्याग कर, प्राकृतिक स्वभावगत अर्थ का अनुष्ठान (निदिध्यासन) किया; फलत: उन्हें 'महामुद्रा-परम सिद्धि' का लाभ हुआ। उन्होंने अपरिमित जगत् कल्याण का कार्य किया। अन्त में वे दम्पत्ति खेचर भूमि चले गये।

गुरु सरहपा[१] का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. सरहपा-के अन्य नाम रत्नमति, रत्नबुद्धि, देवपुत्र रत्नमति, बोधिसत्व रत्नमति भी थे। (पद्म० इति० पृ० ७४, B. 148)

७. गुरु कङ्करपा (कङ्करिपा) का वृत्तान्त

गुरु कङ्करिपा जाति के शूद्र थे। उनका जन्मस्थान मघाहुर था।

वह मघाहुर नगर के एक गृहपति स्वसमान जाति से विवाह कर के गृहस्थ काम-भोग के गुणों का रस-आस्वादन करते हुए रह रहे थे। उनका धर्म और मोक्ष पथों के प्रति थोड़ा भी मन नहीं लग रहा था। (सदा) लौकिक सुख-सुविधा का ही अर्जन करते रहते थे।

ऐसी ही अवस्था में एक दिन कर्म संस्कार को प्राप्त हो जाने से उनकी पत्नी की इह लीला समाप्त हो गयी। जब वह (गृहपति) अपनी पत्नी का शव श्मशान में पहुँचाने गये, तो वे उस शव को त्यागने में असमर्थ हो गये और शव (पकड़े उस) के पास बैठ कर रोते रहे। उस समय एक सुविज्ञ योगी वहाँ आ गये और उस गृहपति के पास जाकर उस से कहा—तुम इस श्मशान में क्या कर रहे हो? गृहपति ने उत्तर में कहा— हे योगी (महाराज) (आप) मेरी इस दुर्दशा (दुःख की दशा) को नहीं देख रहे हैं? आँख निकले हुए अन्धे के समान, गृहस्वामिनी से छूटा हुआ श्रीहीन, इस लोक में मुझसे अधिक दुःखी और क्लेश भरा दूसरा कौन हो सकता है?

योगी ने उस गृहपति से कहा— जन्म का अन्त मरण, संयोग का अन्त वियोग है और सभी संस्कार (धर्म) अनित्य हैं। संसारगत सभी (धर्म) दुःखमय हैं। अतः दुःखमय सांसारिक (धर्म) से क्या तुम्हें दुःख नहीं होगा? (अवश्य ही होगा)। तुम मरे हुए आदमी का शव, जो पत्थर और मिट्टी के समान है, पकड़ कर बैठे रहोगे, तो क्या होगा? इससे (अच्छा हो कि) तुम धर्म का सहारा लेकर दुःख का (समूल) प्रहाण कर लो।

(दुःखी) गृहपति ने कहा— हे महायोगी! सांसारिक जन्म-मरण के दुःख से मुक्त होने का कोई उपाय हो तो मुझे अवश्य बता दें।

योगी ने कहा— उन (दुःखों) से मुक्त होने का उपाय (मेरे) गुरु के उपदेश में है।

गृहपति ने कहा— वही मुझे प्रदान करें।

उस योगी ने उसे (गृहपति को) अभिषिक्त कर दिया; नैरात्म-विन्दु (नैरात्म्य के रहस्य) का उपदेश दिया।

(पुनः) गृहपति ने पूछा— (महागुरु) इसकी भावना मैं कैसे करूँ?

मरी हुई पत्नी का विकल्प त्याग दो और नैरात्म्य पत्नी— सुख एवं शून्यता का अद्वैत भाव (चित्त में संनिवेश कर उस युगनद्ध स्थिति) की भावना करो। यह कहकर उन्हें भावना करने दिया।

(निरन्तर उस भावना के अभ्यास में उन्होंने छः वर्ष लगाये) छः वर्ष के बाद साधारण पत्नी की कल्पना ''सुख एवं शून्यता'' के (युगनद्ध) रस में खो गई। उनका चित्त, मल से विशुद्ध हो गया। उस के चित्त में महासुख-प्रभास्वरता का रस उत्पन्न होने लगा। फलतः वह गृहपति जैसे धतूरा (नामक) विष के उड़ जाने से भ्रांतियाँ दूर होकर मस्तिष्क स्वच्छ हो जाता है, उसी प्रकार अविद्या (जो) भ्रांति का मूल कारण है, नष्ट हो जाने से उन्हें परम सिद्धि का लाभ हुआ। उनका नाम भी 'योगी कंकरिपा' (कंकाल वाले) प्रसिद्ध हुआ।

अपने प्रदेश (अथवा गांव) मघाहुर में अनेक लोगों को धर्मोपदेश देकर उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये।

गुरु कङ्करिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७. कंकारिपा

कंकारिपा (कंकरिपा) श्मशान में बैठे हुए हैं। उनके सामने विविध प्रकार के कंकाल बिछे हुए हैं। सिर के बाल मुड़े (घुँघराले) हुए हैं। साँवले रंग के हैं। भावना 'सूत्र' जो विशेष प्रकार की अवस्था में योगी लोग धारण करते हैं, पहने हुए हैं।

८. मीनपा

मीनपा रंग के साँवले हैं। वह मछली का पेट फाड़कर निकल रहे हैं और दोनों पैर उसके पेट के अन्दर प्रविष्ट हैं। उनके दोनों हाथ नृत्य मुद्रा में हैं।

८. गुरु मीनपा का वृत्तान्त

गुरु मीनपा का जन्म स्थान पूर्वी भारत (बंगलादेश) है। जाति के वे धीवर (मछुआरे) थे। उनके प्रथम गुरु महादेव थे, जिनसे उन्होंने लौकिक सिद्धियों का लाभ प्राप्त किया था।

पूर्वी भारत के कामरूप नामक स्थान से कुछ ही दूरी पर 'ईता' नामक 'सागर' था (यानी समुद्र के उस भाग को 'ईता' कहा जाता था)। वहाँ के (उस समुद्र के तट पर स्थित गाँव के) लोग मछुआरे थे। वे सभी मछुआरे मछली मारकर सब समय बाजार में बेचते थे। (उसी से वे अपनी जीविका चलाते थे) एक दिन जब एक मछुए ने सूती जाल में अङ्कुश बाँधकर उसकी नोक में माँस लगाकर पानी में छोड़ा, तो एक बहुत बड़ी मछली उस जाल के अन्दर आ गई। उसने जाल बाहर खींचा, तो खींच नहीं पाया, उलटा मछली ने मछुआरे को ही पानी की ओर खींच लिया। फलतः वह मछुआरा पानी में डूब गया। (पानी में डूबते ही) तत्काल उस मछुए को एक बड़ी मछली अपने मुँह में डालकर निगल गयी। फिर भी कर्मवश (संयोग से) वह मछुआरा मरा नहीं (जीवित रहा)।

उस समय कैलाश पर्वत पर बैठी उमादेवी ने महादेव से कुछ धर्मोपदेश की याचना की थी, तो महादेव ने उमा से कहा—मेरा यह धर्म हर किसी को नहीं बताया जा सकता, यह अत्यन्त गुह्य है। अतः तुम समुद्र के अन्दर एक मकान बनाओ, वहीं बताऊँगा। उमादेवी ने वैसा ही किया। वहीं जाकर महादेव ने उमादेवी को अपना उपदेश देना आरम्भ कर दिया। महादेव, उमादेवी को उपदेश दे ही रहे थे उसी समय उस (सामुद्रिक) मकान के नीचे वह मछली भी आ गई जिसने मछुआरे को खाया था और जिसके पेट के अन्दर अब भी वह (मछुआरा) जीवित था। धर्मोपदेश अभी महादेव बोल ही रहे थे और समाप्त भी नहीं हो पाया था कि उमादेवी को नींद आ गई। महादेव बोलते रहे और बीच-बीच में पूछने लगते कि समझ गई हो कि नहीं? उमा सोई हुई थी पर मकान के नीचे मछली के पेट में रहने वाले मछुआरे ने जी हाँ, कहते हुए उपदेश पूरा सुन लिया। जब धर्मोपदेश

समाप्त हो गया, उमादेवी की नींद टूटी और कहने लगीं कि अब उपदेश दीजिए। उत्तर में महादेव ने कहा— सब धर्मोपदेश मैं दे चुका हूँ। उमादेवी ने कहा मैं तो आपके उपदेश, कुछ अंश तक ही सुन पायी हूँ , उसके बाद नींद लग जाने से नहीं सुना।

महादेव ने कहा — फिर जी हाँ ,समझ गई, कहने वाला कौन था?

उमा— ऐसा कहने वाली मैं नहीं हूँ।

महादेव ने अपनी अभिज्ञा से देखा तो (उस प्रकार के उत्तर देने वाला) मकान के नीचे मछली के पेट में स्थित आदमी था, जिसने उनका धर्मोपदेश पूरा सुन लिया। उन्होंने सोचा कि यह तो हमारा शिष्य बन गया है। अब इसे समय-प्रतिबद्ध (प्रतिज्ञा से प्रतिबद्ध) करना होगा। उन्होंने उस मछुआरे को (मछली के पेट से बाहर किये बिना) अभिषेक (देकर साधना करने का आदेश) दिया।

मछुए ने बारह वर्ष तक मछली के पेट में ही रह कर साधना की।

एक बार श्रीतपरी (श्रीतपरि) नामक स्थान के एक मछुए ने पुनः उस बड़ी मछली (जिसके पेट में मछुआ साधना कर रहा था) को पकड़ा और उसे बाहर निकाल लाया। उसके भारीपन को देखने से लगा कि सम्भवत: उसके पेट से सोना-चाँदी आदि (कोई) चीज निकल सकती है, ऐसा सोचते हुए उसने मछली का पेट चीर कर देखा तो अन्दर एक आदमी बैठा हुआ था। उससे पूछा कि तुम कौन हो?

(मछली के पेट से) उत्तर दिया—मैं मछुआ हूँ। अमुक राजा के समय (जब मैं मछली पकड़ने समुद्र के तट पर गया, तो) इस मछली ने मुझे पकड़ लिया और निगल गई। (उसके कथनानुसार) लोगों ने हिसाब लगाया, तो ठीक बारह वर्ष बीते थे। इस घटना से सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। उनका नाम 'योगी मीनपा' प्रसिद्ध हो गया (तब तक वे सिद्धि लाभ कर चुके थे)।

सब लोगों ने उनकी पूजा की। जब 'मीनपा' ने धरती पर नाचा, तो उनके पैर धरती के नीचे धँसने लगे। पत्थर पर नाचा, तो पत्थर में भी कीचड़ के समान उनके

पैर नीचे धँसने लगे। सब लोग इससे बहुत अचम्भित हुए। इस पर मीनपा ने (निम्न) उदान कहा—

'पूर्व सञ्चित कर्म से सम्बद्धता और इस (जीवन) समय के धार्मिक छन्द (= धर्म के प्रति प्रबल श्रद्धा) के बल पर,

मैं इस प्रकार के गुण सम्पन्न हुआ, 'अहो स्वचित्त रत्न।'

उसके बाद पाँच सौ वर्ष तक वे सत्त्वार्थ (जगत् कल्याण) का कार्य करते रहे।

मीनपा, वज्रपाद और अचिन्तपा, ये तीन उनके नाम पर्याय के रूप में विख्यात हैं।

उन्हें प्रथमतया लौकिक सिद्धि प्राप्त हुई और बाद में अन्य सिद्ध गुरुओं के सम्पर्क में आने से[१] क्रमश: भूमि, मार्ग आदि प्राप्त करके उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु मीनपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१. उन्होंने बाद में जालन्धरपा के चरणों में उपदेश सुने। वही उनके परम सिद्धि के गुरु रहे।

९. गुरु गोरक्ष का वृत्तान्त

पूर्वी भारत में (एक समय) जब महाराज देवपाल राज कर रहे थे, उन्हें एक पुत्र हुआ। जब राजपुत्र बारह वर्ष की अवस्था का हुआ तो उसकी माँ महारानी बहुत बीमार हुई और मरणासन्न पर पड़ गयी। माँ ने अपने पुत्र से अन्तिम वचन के रूप में कहा—प्राणी-मात्र के सुख-दु:ख तो उनके स्वयं किये गये पाप एवं पुण्य कर्मों से होते हैं। अत: तुम, चाहे प्राण छूट जाय, पर पाप कर्म न करना। यह कहकर उन्होंने अपनी अन्तिम साँस लेकर आँखें बन्द कर ली।

तत्पश्चात् उनके पिता महाराज से सब लोगों ने (जनता ने) यह निवेदन किया कि आप अन्य प्रदेश से दूसरी रानी ग्रहण करें। राजा, दूसरी रानी ले आये। कुछ ही दिन बीते, एक दिन जब राजा वन में सैर करने गये थे तो रानी ने राजभवन के ऊपरी छत पर जाकर देखा, तो वहाँ राजपुत्र बैठे हुए दिखाई दिये और वह उनके प्रति (अत्यन्त) आसक्त हो गई। उन्हें दूत भेजकर कहा कि आप इधर आयें। जब दूत ने रानी का सन्देश राजकुमार तक पहुँचाया तो उन्होंने अनिच्छा प्रकट की। इससे रानी बड़ी लज्जित हो गई और सोचने लगी कि 'इसने मेरा अपमान किया, इससे अधिक मन को कष्ट देनेवाला कौन हो सकता है? नाना उपाय के द्वारा अब इसे मार ही देना चाहिए'।

तब उस रानी ने सभी जनता (अपने राजपुरुषों) से कहा और आज्ञा दी कि इस (नीच व्यक्ति) को मार दो, पर लोगों ने कहा—यह महाराजा का एक मात्र पुत्र है, इसको मारना सम्भव नहीं।

तब उस (रानी) ने छल-कपट का सहारा लिया और अपने पूरे शरीर को खुरच-खुरच कर जगह-जगह खून निकलवा दिया, शरीर पर पहने सभी वस्त्र फाड़-फाड़कर छिन्न-भिन्नकर बिस्तर में सो गई, जब राजा अपने महल वापस लौटे तो उन्होंने रानी की हालत देखकर, उससे पूछा— तुम्हारी यह दशा किसने की है?

९. गोरक्ष

गारक्ष गोरे रंग के हैं और उनके बाल मुड़े (घुँघरैले) हुए हैं। हाथ समाहित-मुद्रा में है और कान में सींग और कण्ठ में शंख से निर्मित आभूषण धारण किये हुए तथा निर्वसन हैं। गुरुदर्शन की प्रतीक्षा में आकाश की ओर देख रहे हैं।

१०. चौरङ्गीपा

चौरङ्गीपा के दोनों हाथ समाहित-मुद्रा में हैं और वे सिर में हलकी जटा की शिखा बाँधे हुए हैं। एक वृक्ष के मूल में बैठे हुए हैं। उनके समीप बगल के रास्ते से कुछ व्यापारी जा रहे हैं। ये भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं।

तो रानी ने उत्तर दिया—आपके राजकुमार ने मेरे शरीर की यह दुर्दशा की है जिसके कारण मेरे शरीर की ऐसी हालत हो गयी है। यह सुनकर, राजा को बड़ा क्रोध आया और कहने लगे कि तुम्हारी ऐसी दशा कर दी, उसे मार डालो। राजा ने दो व्याध बुलाये और उन्हें आज्ञा आज्ञा दी कि 'इस राजपुत्र को जंगल में ले जाकर सभी हाथ-पैर काट डालो।'

दोनों यम-पुरुषों (व्याधों) ने सोचा कि इसे मारना उचित नहीं है। (किसी लड़के को मारना तो आवश्यक हो गया, अन्यथा राजा हमें प्राणदण्ड दे सकते हैं) अत: हम अपने पुत्रों को मारकर इसको जीवित रहने देंगे। यह तय कर उन दोनों ने राजकुमार से कहा— आप को मारना हमारे लिए असम्भव हो रहा है (हृदय नहीं चाह रहा है) अत: हम अपने पुत्र को आपके लिए मार देंगे।

राजकुमार ने उत्तर दिया—यह सर्वथा अनुचित है, आप मुझको ही मारिये। मेरी (दिवंगत) माँ ने अन्तिम वचन के रूप में मुझे कहा था कि 'शरीर और प्राण के लिए (अर्थात् शरीर छूट जाय, प्राण तक भी छूट जाय तो) भी 'पाप कर्म न करें।' अत: आप लोग जैसा मेरे पिता ने आज्ञा दी है, वैसा ही करें।

तब वे दोनों (व्याध) उन्हें जंगल में ले गये और उनको एक 'पादप' (वृक्ष) के मूल में लेटा दिया और उनके सभी हाथ-पैर काट डाले। उसके बाद दोनों व्याध अपने घर लौट गये।

राजकुमार सभी हाथ-पैर कट जाने पर भी जीवित रह गया। तब तक उस स्थान में महायोगी अचिन्तपा आ पहुँचे। राजपुत्र की दशा एवं उसकी पात्रता देखकर महायोगी अचिन्त (अचिन्त्य) ने उन्हें अभिषेक देकर (सम्बन्धित) अववाद (धर्मोपदेश) प्रदान किया। वहाँ से आगे एक कोस की दूरी पर कुछ गो चरानेवाले लोग दिखलाई पड़े, तो योगी ने उन लोगों के बीच जाकर कहा—तुम लोग वहाँ जाओ जहाँ गीध आकाश में घूम रहे हैं, उसके निकट एक वृक्ष के मूल में सभी अंग-प्रत्यङ्ग विच्छिन्न एक आदमी रह रहा है। तुम लोगों में से कौन उसके पास जा सकता है? उनमें से धूप बेचनेवाली जाति का एक लड़का था उसने स्वीकार

किया कि मैं जा सकता हूँ, पर मेरी यह शर्त है कि मैं आपका कार्य पूरा करूँगा और आप मेरा कार्य पूरा करें।

उसने अपनी सभी गायें योगी को सौंपकर गीध के उड़ान को लक्ष्य कर चला, जब वह एक दण्डवाले वृक्ष के पास पहुँचा, तो वहाँ उस (अंग-प्रत्यङ्ग कटे व्यक्ति) को देखकर पुनः अपनी जगह लौट आया। योगी अचिन्त से कहा— वह वहाँ वैसा ही है। योगी ने उस गोपालक से कहा— तुम्हारे पास खाने-पीने के लिए क्या-क्या है? उसने उत्तर दिया मुझे एक गोपालक स्वामी सांझ-सबेरे खाने के लिए कुछ टुकड़े दे देते हैं। उसमें से आधा मैं, उस (अंगहीन व्यक्ति को जो एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में स्थित है) को पहुँचा दूँगा। (योगी ने कहा) यह उचित है। तुम उस चौराङ्ग का पालन करो। यह कह कर वे योगी चले गये।

तत्पश्चात् उस (बालक) ने वहाँ (जहाँ अंगरहित व्यक्ति था) वृक्ष के साथ ही एक झोपड़ी बनाई और उसके अन्दर उसे बैठाया, भोजन आदि देता रहा और उसका मल-मूत्र आदि सभी गन्दगी अपने हाथ से उठाकर साफ करता रहा। ऐसा करते उसे बारह वर्ष बीत गये। उसके बाद किसी समय वह (बालक) वहाँ झोपड़ी में गया, तो उस (निरङ्ग व्यक्ति) को उठ खड़े हुए देखा। अचम्भित होकर पूछा, तो उसने (निम्न दोहा) कहा—

उपाय कौशल्य परम गुरु द्वारा, धातु संवित्ति परिचय करा देने से।

मैं सर्वधर्म एक स्वभावेन अधिगत हुआ हूँ और अद्भूत है यह सुख-दुःख का अभाव।

मुझे इस प्रकार हाथ-पैर भी पैदा हो गये— कहकर वे आकाश में उठे, आकाश में ही बैठ कर गोपालक के उस बालक से कहा— मैं तुम्हें उपदेश दूँ? गोपालक ने कहा— मैं उपदेश नहीं चाहता हूँ। मेरा एक आचार्य था। उसने मुझे आपकी सेवा करने को कहा था, इसलिए मैंने आपका इस प्रकार आदर-सत्कार किया। यह कहकर गोपालक लड़का वापस चला गया और पूर्ववत् गो का पालन करता रहा।

पुन: एक दिन महायोगी अचिन्त गोपालक के पास आये। गो चरानेवाले बालक ने अपना पूर्व वृत्तान्त उन्हें सुनाया, तो योगी बहुत प्रसन्न हुए। पुन: अचिन्त योगी ने उस गो चरानेवाले बालक को अभिषेक एवं दीक्षा (उपदेश) देकर वे अन्यत्र चले गये। गोपालक अपने गुरु के उपदेश के अनुसार साधना (भावना) करता रहा। फलत: उसे 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ। एक दिन वह बैठा ही था कि अचिन्त उसके पास आ पहुँचे और उसे आदेश दिया—तुम्हारे द्वारा जब तक शतलक्ष (एक सौ लाख) प्राणियों का अर्थ (कल्याण) न हो जाय, तब तक तुम बुद्धत्व लाभ न करो।

अपने गुरु का आदेश पाकर, उसने सभी प्राणी, जो भी मिले, उसे अभिषेक कराकर उपदेश देना आरम्भकर दिया। एक दिन महादेव ने उनके पास आकर कहा कि तुम्हें जो मिले, उसे अभिषेक मत करो। जो प्रार्थना करेंगे, केवल उनको ही अभिषेक दो, जो सत्त्व प्रज्ञाहीन हैं और जिनके अन्दर कोई श्रद्धा नहीं है, उनके लिए ऐसा करना उचित नहीं है। उसके बाद उसने यथा व्याकृत वैसा ही किया।

अनेक विनेय लोगों को मुक्त कराते और गोपालन कार्य करते रहने से उनका नाम भी 'गोरक्ष' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया।

आज भी (अभयदत्तश्री के काल में भी) जिस सत्त्व का उन गोरक्ष के साथ कर्म सम्बन्ध रहा हो (या भाग्यवान हो) उसे (उनके द्वारा) अभिषेक प्राप्त होता है। कर्म विपाक से जिसकी सन्तति विशुद्ध हो, उसे उनके डमरू की आवाज सुनाई पड़ती है और अन्य लोगों को सुनाई नहीं पड़ती और दिखलाई नहीं देती। वह अदृश्य रूप से आज भी रह रहे हैं।

गुरु गोरक्ष का वृत्तान्त समाप्त॥

१०. गुरु चौरङ्गीपा का वृत्तान्त

गुरु चौरङ्गीपा, वही राजकुमार हैं जो अंग-प्रत्यङ्ग काटकर एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में रह रहे थे। उन्हें (गुरु) अचिन्त्य ने अभिषेक देकर दीक्षित किया और कुम्भक-वायु की साधना-विधि आदि द्वारा उसको साधना करने दिया। गुरु जी ने कहा कि 'जब तुम्हारी साधना से साध्य की सिद्धि हो जायगी तब तुम्हारा शरीर भी पूर्ववत हो जायेगा।' यह भविष्यवाणी कहकर अचिन्त्य अन्यत्र चले गये थे।

उन्होंने (तदनुसार) भावना की और बारह वर्ष के बाद जब उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई उसी समय (जहाँ राजकुमार के पिता रहते थे, वहाँ से) राजा के व्यापारी लोग बहुत से सोना, चाँदी, स्फटिक, मणि आदि अनेक रत्न लेकर उस ओर आ रहे थे। वे लोग चोर आदि के डर से रात को उस वृक्ष के समीप से गुजर रहे थे (जहाँ राजकुमार के हाथ पैर कटे थे), तो राजपुत्र ने उन व्यापारियों के पद-आहत के शब्द सुनकर कहा—तुम कौन?

व्यापारियों को शंका हो गई कि वहाँ कोई चोर है। वे कहने लगे कि हम लोग कोयला बनाने वाले हैं। राजपुत्र ने कहा कि वैसा ही हो। जब व्यापारी लोग अपने-अपने स्थान पर पहुँचे तो जिन बर्तनों में सोना आदि रखे हुए थे, वे सभी सोना-चाँदी; कोयला हो गये थे। इसे देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और सब लोग यह सोचने लगे कि ऐसा किसलिए हुआ और क्यों हुआ? उन व्यापारियों में से एक बुद्धिमान व्यक्ति ने (यह समझकर) बताया कि हम लोगों को रात में आते समय जिस व्यक्ति ने पूछा था कि तुम कौन हो? वह निश्चय ही एक सत्य-वचन-सिद्ध व्यक्ति होगा। अन्यथा ऐसा कौन कर सकता है?

उसके बाद वे (व्यापारी लोग) पुनः उस स्थान पर गये, जहाँ से वे रात को गुजरे थे और एक व्यक्ति के साथ प्रश्न-उत्तर हुआ था। उन्होंने वहाँ एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में हाथ-पैर कटे एक आदमी को बैठे हुए देखा। उसे (व्यापारियों ने) अपना पूरा पूर्व वृत्तान्त सुनाया और पुनः उनको सत्यवचन का प्रयोग करने के लिए कहा। उस राजकुमार ने कहा कि यह मेरा दोष नहीं है। यदि है, तो तुम लोगों का

माल (सम्पत्ति) पूर्ववत् हो जाये। जब व्यापारी लौटकर अपने-अपने स्थान पर पहुँचे; अपने माल-सम्पत्ति को देखा, तो वह पूर्ववत् सोना, चाँदी के रूप में देखा गया। तब वे सब आश्चर्य चकित होकर पूजा-सामग्री आदि लेकर पुनः उस राजकुमार के पास लौटकर आये और उनसे सभी वृत्तान्त सुनाया। सब सुनने के बाद राजपुत्र को उनके गुरु के द्वारा कथित भविष्यवाणी की याद आ गयी और वह कहने लगे कि ऐसा हो, तो मेरा शरीर भी पूर्ववत् हो जाये। ऐसा कहने के (तत्काल) बाद उनका शरीर पूर्ववत् हो गया।

तब उन्हें सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी और अनेक प्रकार के चमत्कार भी उन्होंने दिखाए।

दीक्षा आदि उपदेश के प्रति उनका रूख बहुत कड़ा होने से किसी को उन्होंने कुछ कहा नहीं, पर उस वृक्ष को जिसकी छाया में उन्होंने सिद्धि लाभ की थी, उसे उन्होंने अधिष्ठित किया था, तो वह वृक्ष अमर होकर अब भी विद्यमान है (ऐसा माना जाता है)।

अमरत्व प्राप्त गुरु चौरङ्गीपा का वृत्तान्त समाप्त॥

११. गुरु वीणापा का वृत्तान्त

वीणापा 'धहुर' (गौड़ देश) के रहनेवाले और जाति के क्षत्रिय थे। उनके गुरु 'बुद्धपा' थे और सिद्धि उन्हें इष्टदेव 'हेवज्र' से प्राप्त हुई।

घहुर (धहुर) देश के राजा को एक ही पुत्र हुआ था। माता-पिता एवं प्रजा सभी के लिए वह राजकुमार अत्यन्त प्रिय था। उनके पालन-पोषण आदि के लिए उन्हें अठधात्री को सौंप दिया गया। राजपुत्र के बड़े होने पर उनके लिए मनोविनोद करनेवाले बहुत से बाजा बजानेवाले भी लाये गये, वे सदा उनके साथ रहते थे। चित्त-संस्कार-वश तम्बूरा की आवाज के प्रति उनका मन एकाग्र रूप में स्थित हो जाता था और वे वीणा बजाने में सदा ही लीन होकर अन्य लौकिक कार्यों के प्रति कुछ ख्याल तक नहीं रखते थे।

तब उनके माता-पिता, मंत्री और सभी प्रजा उनकी निन्दा करने लगे और कहने लगे कि इस राजकुमार का पालन-पोषण राजा के उत्तराधिकारी के लिए किया गया था। पर यह राज-कार्य न कर केवल वीणा की झंकार ध्वनि में ही तल्लीन होकर रह जाता है, अब इससे क्या होगा?

जब लोग ये सब चर्चा कर ही रहे थे, उस समय एक सुअभ्यस्त योगी 'बुद्धपा' उस राजकुमार के पास आ पहुँचे; तो योगी के प्रति उन्हें बड़ी श्रद्धा हो गयी। उन्होंने योगी को प्रणाम किया और प्रदक्षिणा करके उन्हें अपनी विविध बातों से अवगत कराया। योगी उस राजपुत्र के पास कुछ देर बैठे रहे और देखा कि यह उसके उस राजकुमार को सुविनीत करने का अवसर है।

योगी ने उस राजकुमार से कहा कि क्या तुम धर्म (कुछ धार्मिक अनुष्ठान) नहीं करोगे? राजकुमार ने उत्तर में कहा—हे योगी! 'धर्म ग्रहण करने में तो मैं बहुत तत्पर हूँ। पर मैं इस वाद्य-यंत्र तम्बूरे (वीणा) को त्याग नहीं सकता। यदि इसे बिना छोड़े कोई धार्मिक साधना करने का उपाय हो, तो मैं अवश्य ही आपका धर्म ग्रहण करूँगा।'

११. वीणापा

वीणापा, राजा के वेश में हैं। ये वीणा बजाने की मुद्रा में बैठे हुए हैं।

१२. शान्तिपा

शान्तिपा भिक्षु एवं पण्डित के वेश में हैं । सिर में पण्डितों के लिए निर्धारित टोपी है । गोरे रंग के हैं तथा शरीर में कुछ बुढ़ापा झलक रहा है।

योगी ने कहा धर्म के लिए आवश्यक श्रद्धा और उद्यम हो, तो वीणा के बिना त्याग किये भी धार्मिक अनुष्ठान करने की विधि (उपाय) मेरे पास है। तब राजपुत्र ने कहा महाराज! मुझे, वही दें।

तब उस योगी ने उनकी अपरिपाक सन्तति के परिपाक के लिए अभिषेक दिया। उनके द्वारा दी गयी भावना (साधना- अभ्यास) की विधि इस प्रकार है—

"हे राजपुत्र! तम्बूरा (वीणा) के शब्द, कान में सुनाई पड़नेवाले विकल्प त्याग दो और चित्त-आलम्बन और शब्द-विकल्प दोनों को एक करके (उसी की) भावना करो"

उन्होंने वैसा ही किया, तो नौ वर्ष बाद उनके चित्त का मल विशुद्ध होकर दीपक के समान प्रभास्वरता का उन्हें अनुभव होने लगा और 'महामुद्रा परम सिद्धि' की प्राप्ति हुई। वह अभिज्ञा आदि अनेक गुण धर्मों से सम्पन्न होकर और वीणापा के नाम से सर्वत्र विख्यात हो गये।

उसके बाद 'धहुर'[१] नगर के जनसमुदाय के सब लोगों को उन्होंने अनेक-अनेक (अपरमित) धर्म उपदेश दिये; अन्त में अपना अवदान आदि प्रवचन देकर उसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि को चले गये।

गुरु वीणापा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. 'धहुर' शब्द "गौड़" शब्द के अपभ्रंश तिब्बती उच्चारण का रूप है, ऐसा प्रतीत होता है।

१२. गुरु शान्तिपा का वृत्तान्त

गुरु शान्तिपा—जब मगध में राजा देवपाल (फल) राज कर रहे थे, उस समय विक्रमशिला में एक ब्राह्मण जाति से प्रव्रजित होकर आचार्य 'रत्नाकर शान्ति' नामक एक बड़े विद्वान् हुए थे। यह आचार्य सभी पञ्च महाविद्या स्थानों के सुविज्ञ विशेषज्ञ थे। उनकी विद्वता एवं सदाचार का यश दिग्-दिगन्तर तक व्याप्त हो गया था।

उस समय सिंहल द्वीप में 'कपिन' नामक राजा, जिसके पास अपने पुण्य कर्म-वश किसी भी प्रकार से काम-गुणों (भोग-विलास) का अभाव नहीं था, रहते थे। सिंहल द्वीप में पहले बुद्ध-शासन[१] नहीं था। जम्बूद्वीप से जो लोग आते थे, उनसे बुद्ध-शासन के गुणों के बारे में उन्होंने सुन रखा था, पर धर्मोपदेश देने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिल पाया था। एक समय उन्होंने सुना कि मगध में एक महान विद्वान् आचार्य रत्नाकर शान्ति विद्यमान हैं। महाराज कपिन एवं सिंहल द्वीप के सभी लोगों ने विविध भेंट के साथ निमन्त्रण के लिए दूत भेजे। वे लोग सीधे (विक्रमशिला) पहुँचे। दूसरे दिन वे लोग आचार्य से मिले और उन्हें प्रणाम अभिवादन किया। सिंहल राजा एवं वहाँ की जनता द्वारा प्रेषित भेंट में सोना, चाँदी, मौक्तिक, रेशमी वस्त्र आदि जो भी थे, आचार्य के चरणों में चढ़ा दिये। तब उन लोगों ने कहा कि हमारे राजा आदि लोगों का आपसे यह निवेदन है कि 'हम लोग छोटे द्वीप प्रत्यन्त जनपद में पैदा हुए हैं, अविद्या के अन्धकार से आवृत्त हैं, काम-अग्नि से जल रहे हैं, द्वेष-अग्नि से आतङ्कित हैं, विपरीत तिमिरादि से प्रज्ञा का प्रकाश आच्छादित है। महायान धर्म का मुक्ति मार्ग खो चुके हैं। अतः हमें महाकृपा करके सिंहल द्वीप के जगत् कल्याण के हेतु, आप वहाँ न पधारें तो अनुचित होगा (अर्थात् किसी भी दशा में आप वहाँ दर्शन दें) यही वहाँ के लोगों की प्रार्थना है। आचार्य ने अपने आशय को सम्मुख रखकर (समाधि के द्वारा परीक्षा करके) उन लोगों को अपने वहाँ जाने की स्वीकृति प्रदान की।

---

१. 'यहाँ मूल पाठ में सिंहल देश में पहले बुद्धशासन नहीं था।' यह पाठ है। पर शान्तिपा १० वीं सदी के आदमी थे। उस समय सिंहल देश में स्थविरवादी धर्म प्रचलित था। अतः उक्त पाठ का अभिप्राय वहाँ महायान धर्म में न होना ही है।

तत्पश्चात् आचार्य शान्तिपा दो हजार शिष्य-परिवार के साथ अनेक पिटकों से सम्बन्धित ग्रन्थों से घोड़े, हाथी लाद कर सिंहल देश की ओर रवाना हुए। नालन्दा, ओदन्तपुरी, राजगिरि और बुद्ध गया आदि क्रमश: पारकर सिंहल (जाने के मार्ग से) समुद्र के तट पहुँचे। वहाँ से उन लोगों को, जो दूत के रूप में आये थे, आगे भेज कर स्वयं अपने शिष्यों के साथ नाव पर बैठकर चले।

दूत लोगों ने आगे जाकर राजा को आचार्य के आने की सूचना दी, तो राजा मंत्री एवं जनपद के लोगों के साथ प्रथम भूमि प्राप्त योगी के समान आनन्दित हुआ और सब अपने लौकिक सभी कार्यों को त्यागकर समुद्र की ओर चल दिये और एक सप्ताह के उपरान्त (जब आचार्य सपरिवार समुद्र के समीप पहुँचे तो) लोगों को हाथी और छाता (जो लोगों ने आचार्य के लिए उठा रखे थे) आदि दिखलाई पड़े, तो लोगों ने सहर्ष रास्ते की सफाई की और समुद्र तट से अपने जनपद तक के रास्ते को चारों ओर से सजाया; नीचे रेशमी वस्त्र बिछा दिये। उसी पर पैर रखते हुए सशिष्य आचार्य पाद चले। राजभवन पहुँचने के बाद कपिन महाराज सहित सभी लोगों ने गन्ध-पुष्प आदि सब प्रकार की पूजा सामग्रियों से (सशिष्य आचार्य परिवार की) व्यापक पूजा की। उनके लिए शयन-आसन आदि की यथोचित व्यवस्था की। तीन आचार्य वर्ष तक वहीं त्रिपिटक सम्बन्धी उपदेश देते रहे।

जब आचार्य शान्तिपा के सशिष्य परिवार मध्य देश (मगध) (लौट) जाने के लिए तैयारियाँ करने लगे तो राजा कपिन तथा वहाँ के प्रमुख लोगों ने घोड़ा, हाथी, सोना, चाँदी, मौक्तिक आदि अपरिमित (धन की) दक्षिणा दी। उसके बाद आचार्य अपने शिष्यों के साथ मध्य देश लौटे। लौटते समय दो रास्ते में से वे लोग दीर्घतम (सबसे लम्बे) रास्ते से चले। क्रमश: रामेश्वर, जहाँ राजा राम ने अपनी पत्नी (सीता) को खोजते हुए लङ्कापुरी जाते समय महेश्वर का एक मन्दिर बनवाया था और जिसका नाम रामेश्वर पड़ा, जनपद में पहुँचे। वहाँ से (मगध आने के लिए) सात दिन बिना मानव बस्ती के रास्ता पार करना पड़ता था। आचार्य ने अपने साथियों से सात दिन तक की खाद्य-सामग्री ले जाने के लिए कहा और वैसा करके वे लोग चार दिन चले, तो (एक जगह पर) भाग्यशाली (व्यक्ति) 'कोदलिपा'

से मिले। उनके वृत्तान्त का उन्हीं के प्रसङ्ग में उल्लेख है। तत्पश्चात् आचार्य अपने शिष्य-परिवार के साथ क्रमशः विक्रमशिला पहुँचे।

तत्पश्चात् समय के बीतते आचार्य बहुत वृद्ध हो गये, जिसके कारण उन्हें आँखों से दिखलाई नहीं पड़ता था। शरीर के जोड़ भी काफी ढीले पड़ गये थे और शिष्यवर्ग उनका सेवा-सत्कार कर रहे थे। उन्हें स्थूल भोजन भी नहीं पचता था। वे केवल भैंस के दूध के दही में शक्कर (चीनी) मिलाकर सेवन किया करते थे। कुल मिलाकर जब आचार्य सौ वर्ष के समीप हो रहे थे, उस समय सिंहल द्वीप से लौटे, आचार्य को बारह वर्ष बीत रहे थे, तब तक वे विकल्प (प्रपञ्चों) के साथ ही चल रहे थे। उस समय तक कोदलिपा ने निर्विकल्प भावना द्वारा उस बारह वर्ष की अवधि में 'महामुद्रा' नामक परम सिद्धि प्राप्त कर ली और वे सहज समाधि में स्थित हो गये।

जब वे उस (समाधि) से उठे, तो सभी डाकिनियों एवं देवेन्द्रशक्र ने मूर्धन्य मार्ग से अमृत डालकर उन्हें संतृप्त कर दिया, जबकि आचार्य शान्तिपा अपने शिष्यों द्वारा ही पूजित थे। सभी डाकिनियों-देवताओं ने एक साथ यह वचन कहा— 'यह (कोदलिपा) तो साक्षात् वज्रसत्त्व ही हैं। इनके प्रभाव से देवताओं के सभी काम-गुण वहाँ आ गये हैं।'

कुलदिपा ने कहा— गुरु के उपदेश मिलने से पहले मैंने बाहर के पहाड़ खोदे थे और जब से गुरु के उपदेश मिले, मैंने चित्त का (आध्यात्मिक) पहाड़ खोदा इसलिए सिद्धि का लाभ हुआ।

उसके बाद देवेन्द्रशक्र आदि ने (कुलदिपा को) उन्हें, (त्रयस्त्रिंशत) लोक देवस्थान आने के लिए निवेदन किया, तो 'कुदलिपा' ने अनिच्छा प्रकट की और कहा—मैं तो गुरु के चरणों में प्रणाम करने जाऊँगा। बुद्ध से भी अधिक (मेरे लिये) कृतज्ञता के भाजन गुरु हैं। क्योंकि मेरे लिए गुरु ही बुद्ध है, गुरु ही धर्म हैं तथा गुरु ही संघ है। मैं इन तीनों परम शरणों की शरण में जाता हूँ और परमत्रिशरण मुझे अधिष्ठित करें।

यह कहकर उन्होंने ज्ञान-चक्षु से अपने गुरु को देखा और वहाँ से मगध के बीच छः माह का रास्ता होता था, पर वह एक ही क्षण में वहाँ से विक्रमशिला आ

पहुँचे। उन्होंने ज्ञानकाय (योगीकाय) द्वारा अपने गुरु की प्रदक्षिणा कर उन्हें प्रणाम किया। गुरु और उनके समीप बैठे शिष्यों ने उन्हें नहीं पहचाना। 'कुदलिपा' ने (अपने पुराने) विपाककाय को साक्षात् दिखाकर पुन: प्रणाम किया और अनेक प्रणाम एवं प्रदक्षिणा करके आचार्य के चरण में सिर से स्पर्श किया, तो (आचार्य) शान्तिपा ने पूछा कि आप कौन हैं? (कुदलिपा ने कहा) मैं गुरुजी का शिष्य हूँ। (आचार्य ने कहा कि) मेरे अनेक शिष्य हैं, आपको मैं पहचान नहीं सका हूँ। पुन: (उन्होंने) कहा—मैं कुदलिपा हूँ।

जब एक दूसरे को पहचान लिया तो दोनों ने शान्त वातावरण में आपस में एक दूसरे से अनेक प्रासङ्गिक बातें की। गुरु ने शिष्य से पूछा कि आपने क्या-क्या गुण और विशेषता पायी है? कुदलिपा ने उत्तर दिया मेरे साक्षात् गुरु, आपके उपदेश के अनुसार साधनानुष्ठान करने से मुझे 'महामुद्रा धर्मकाय' की प्राप्ति हुई है। गुरुजी (शान्तिपा) ने कहा—मैंने तो प्रधानत: बोलने का ही काम किया है, साधना को प्रधानता नहीं दी। अभी तक तात्त्विक अर्थ की प्राप्ति नहीं हो पायी है। पर तुमने प्रधान रूप से साधना की, बोलने को प्रधानता नहीं दी, फलत: तुमको तात्त्विक अर्थ का साक्षात्कार हो गया।

मैंने तुम्हें जो उपदेश दिया है, वह भी भूल गया हूँ। अब उपदेश भी दो और गुण-विशेषताओं की जो प्राप्ति हुई है, उन सभी धर्म को मुझे प्रदान करो।

'कुदलिपा' ने अपने गुरु को धर्म के अनेक गुण सुनाये और जो उपदेश पहले गुरु ने उन्हें दिये थे (जिनके कारण वह सिद्ध बने) वह भी पुन: उन्हें प्रत्यर्पित कर दिया।

गुरु (शान्तिपा) ने भी पुन: बारह वर्षों तक उपदेशों का अनुशरण कर साधना अनुष्ठान किए। तदुपरान्त रत्नाकर शान्ति को भी 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ और अनेक प्रकार के जगत् कल्याण करने के बाद वह भी खेचर भूमि के लिए रवाना हो गये।

गुरु रत्नाकर शान्तिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१३. गुरु तन्तिपा (तनापा, तन्त्रीपा) का वृत्तान्त

गुरु तन्तिपा, सेन्धोनगर (सिन्धुनगर) नामक स्थान[1] के एक जुलाहा थे। उनके अनेक पुत्र (सन्तान) थे। उन लोगों ने बुनाई का कार्य चलाया, परन्तु अन्त में वे बहुत धनी हो गये। उन्होंने अपने सभी पुत्रों को जाति-अनुकूल विवाह कराकर अलग-अलग व्यवस्था कर बसा दिया। फलत: उस जनपद में जुलाहा जाति का अपरिमित विस्तार हो गया।

जब उस जुलाहे की अपनी पत्नी मर गयी और स्वयं भी नवासी वर्ष का वृद्ध हो गया तो अधिक वृद्ध हो जाने के कारण शरीर चलाने (हिलाने-डुलाने) में भी वह असमर्थ हो गया था। उसका पालन-पोषण क्रमशः बारी-बारी से उसकी पुत्र-वधुओं द्वारा ही हो रहा था। उसका बुढ़ापा एवं बुढ़ापे के आचरण को देखकर सब लोग उसकी हँसी-मजाक उड़ा रहे थे और उसका अपमान किया करते थे। इस दशा को देखकर उसकी पुत्र-वधुओं ने एक-दूसरे से विचार-विमर्श करके यह तय किया कि हमारे यह श्वसुरजी बहुत वृद्ध हो गये हैं, लोगों को इन्हें देखकर घृणा आने लगती है, हम सब लोगों से भी इनको बुरा-भला कहकर बहुत पाप हो जाता है। अत: इन्हें कहीं उद्यान में घास की झोपड़ी बनाकर बैठाया जाय और भोजन पानी आदि हम लोग बारी-बारी से पहुँचा दिया करेंगी। अन्त में सब इस बात के लिए सहमत हुए और उस बुड्ढे को अपने उद्यान में घास की झोपड़ी बनाकर वहाँ पहुँचा दिया गया।

बुड्ढा उस झोपड़ी में अपने भाग्य के सहारे दिन बिता रहा था एक समय गुरु जालन्धरपा उस जनपद में पहुँचे और उस जुलाहे के सबसे ज्येष्ठ पुत्र के पास पहुँचकर उससे कहा—'मुझे भोजन दो'। (जुलाहा पुत्र भी सादर) 'आप यहीं

---

१. तारानाथ के अनुसार—'तन्तिपा' मालव जनपद के आवन्ति (अवन्ति) नामक नगर के रहने वाले थे। यह धर्मकीर्ति के जीवन के अन्तिम काल में हुए थे, इन्हें सिद्धि प्राप्ति धर्मकीर्ति के देहान्त के बाद हुई। इनके गुरु सिद्ध जालन्धरपा थे। (तारा इ, पृ० १८२-८३)

१३. तन्दीपा (तन्तीपा)

तन्तीपा या तन्दीपा अर्थात् तन्तु से कपड़ा बुनने वाले, सिर पर जटा बाँधे हुए हैं। कपड़ा बुनने के उपकरण से कपड़ा बुन रहे हैं। ये अत्यन्त वृद्धावस्था में हैं।

१४. चमरीपा

ये जूता बनाने के काम को बीच में छोड़कर उसी जगह पर समाधि लगाये हुए हैं। उनके हाथ समाहित-मुद्रा में हैं। कन्धे के ऊपर भावना-सूत्र लगा हुआ है। आँखें सामने की ओर स्थिर हैं।

विराजिये'—कहकर स्वयं कमरे के अन्दर चला गया। अपनी पत्नी से कहकर उसने अनेक प्रकार के भोज्य-पदार्थ बनवाये। उसकी पत्नी ने उससे कहा— आप उन (महानुभाव) को अन्दर बुलाएँ। पति ने वैसा ही किया और गुरु अन्दर पधारे। जब भोजन कार्य समाप्त हो गया और जालन्धरपा अन्यत्र जाने के लिए तैयारी कर रहे थे, तो जुलाहा-पत्नी (गृहस्वामिनी) ने (नम्रता से) कहा— गुरुजी, आप अन्यत्र न जाकर यही सोयें (हम लोग व्यवस्था करेंगे)। 'जलन्धरपा' ने उत्तर दिया—मैं गृहस्थ मनुष्य के मकान में नहीं सोऊँगा। इस पर उस (गृहस्वामिनी) ने कहा—ऐसा हो तो आप हमारे उद्यान में सोयें। यह कहकर वे उन्हें अपने उद्यान में ले गये और वहाँ दीपक, शयन आदि की व्यवस्था किये।

जब जालन्धरपा, उद्यान में पहुँचे तो वृद्ध जुलाहे ने वहाँ कुछ लोगों के आने के शब्द सुने, पर उनको यह पता नहीं था कि कौन आया है, क्योंकि आँख से दिखलाई नहीं देता था। वह वृद्ध पूछने लगा—यहाँ शब्द करने वाला कौन है? आचार्य (जालन्धरपा) ने कहा कि मैं एक अतिथि हूँ। आप कौन हैं? (बुड्ढे ने उत्तर दिया) मैं उन सभी जुलाहों का बाप हूँ। जब मैं जवान था, उनकी सब चल-अचल सम्पत्ति का स्वामी था, पर अब (मैं बुड्ढा हो गया हूँ तो) मेरे सभी पुत्र एवं पुत्रवधुएँ मेरा मजाक उड़ाते हैं और मुझसे घृणा करते हैं तथा अन्य लोगों के देख लेने के डर से मुझे इस उद्यान में छिपाकर रखा है। यही सांसारिक धर्मों की निस्सारता है।

तत्पश्चात् जालन्धरपा ने (वृद्ध) जुलाहे से कहा— सभी संस्कृत धर्म अनित्य हैं। भगवत (सांसारिक) सभी (धर्म) दु:खमय हैं। समस्त धर्म निरात्म है, शान्त एवं सुख निर्वाण है। अत: मरने के लिए पथ्य-धर्म तुम नहीं चाहोगे?

वृद्ध जुलाहे ने उत्तर दिया— जी हाँ, अवश्य चाहिए।

जालन्धरपा ने उस वृद्ध जुलाहे को 'हेवज्र' के मण्डल में अभिषेक देकर भावना-अभ्यास में लगा दिया। सुबह गुरु जालन्धरपा वहाँ से अन्यत्र चले गये।

उस (वृद्ध) ने भी अपने गुरु की दीक्षा को मन में रखकर पहले की तरह अपनी पुत्रवधुओं का अपलाप करना बन्दकर दिया और अपनी जबान को संयम में

रखते हुए बारह वर्षों तक अपनी साधना करता रहा। इससे उसे अनेक प्रकार के गुण (सिद्धियाँ) प्राप्त हुए, पर यह बात कोई और आदमी नहीं जानता था।

एक दिन एक विशेष घटना घटी उस (वृद्ध) के बड़े लड़के को एक उच्चकोटि का रेशमी वस्त्र बुनाना था। बुन कर उसे सँवारने के कार्य में व्यस्तता के कारण पिता को खाना पहुँचाना भूल गया। रात में उसकी पत्नी को इसकी याद आयी कि आज उस बुड्ढे के लिए खाना नहीं पहुँचाया है। उससे वह मन से दुःखी और लज्जित होकर यह हाल अपने पति आदि अन्य लोग न जानें, इस ख्याल से खाना लेकर वहाँ पहुँच गयी। पर वहाँ तो उस झोपड़ी में जहाँ वृद्ध को रखा था, अन्दर से अग्नि की तेज रोशनी निकल रही थी। वृद्ध पन्द्रह के लगभग देवकन्याओं से घिरा हुआ था और विशेष उत्तम खाद्य-सामग्री चारों ओर रखी हुई थी वे देवकन्याएँ मनुष्य लोक में नहीं मिलने वाले अनेक प्रकार के आभूषणों से सजी हुई दिखाई दीं। वह जुलाही आश्चर्यचकित होकर जल्दी से लौट गई और अपने पति से कहने लगी कि अपने वृद्ध पिता को देख आओ।

उसने सोचा कि मेरे पिता मर गये होंगे—रोने लगा। फिर अन्य बहुत से लोग आ पहुँचे और सब लोग उद्यान में उन्हें देखने चले। जैसे पहले उसकी पत्नी ने देखा था, वैसा ही सब लोगों ने देखा और सब लोग आश्चर्य में होकर घर लौटे। उस वृत्तान्त को लोगों को सुनाया तो सब लोग यह कहकर बैठे कि वह कोई अमानुषिक होगा।

दूसरे दिन सैन्धवनगर के सब लोग उन्हें देखने गये और सब ने उन्हें प्रणाम किया, तो वह बाहर निकल आये। लोगों ने देखा कि उनका शरीर परिवर्तित होकर एक षोडशवर्षीय के समान हो गया था। उनके काय से अपरिमित रश्मियाँ निकल रही थीं और सब लोग, उसे सहन नहीं कर पा रहे थे। उनका शरीर विमल दर्पण के समान होकर सभी दृश्य स्वच्छ और प्रभास्वर के रूप में प्रतिभासित हो रहा था।

उस समय उनका नाम तन्तिपा (तन्तुपा, तन्त्रीपा, तन्त्रिपा आदि) विख्यात हो गया। अनेक जनकल्याण कार्य करने के बाद सैन्धवनगर (सिन्धुनगर) के अपरिमित लोगों के साथ उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

अत: जो अपनी श्रद्धा द्वारा गुरु की दीक्षा (उपदेश) का एकाग्रचित्त से अभ्यास करे, तो अति वयस्क वृद्ध होने पर भी इसी जन्म में 'महामुद्रा परमसिद्धि' को पा सकता है। (अर्थात् परमसिद्धि लाभ करने में आयु बाधक नहीं होती)

गुरु तन्तिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१४. गुरु चमरिपा का वृत्तान्त

'चमरि' से तात्पर्य (चमड़े के काम करने वाले) जूता बनाने वाले से है। इनका वृत्तान्त इस प्रकार है—पूर्वी भारत के जनपद विष्णुनगर नामक स्थान में एक समय सभी अट्ठारह प्रकार के कलाकार पूर्ण रूप से भरे रहते थे। उनमें इस जाति से जूता बनाने वाले चमरिपा स्वयं भी विष्णुनगर में सभी नये-पुराने जूते बनाने का काम करते थे। इसी प्रकार वह अपना समय बिता रहे थे। एक समय एक (बौद्ध) भिक्षु[१] उनके यहाँ पधारे। उन्होंने अपना जूता बनाने का काम छोड़कर उन भिक्षु के चरणों में प्रणाम किया और उनसे अनेक प्रकार के योगक्षेम सम्बन्धी बातें की। उन्होंने कहा कि मैं सांसारिक दुःखों से बहुत दुःखी हूँ। कुछ धार्मिक कार्य करना चाहता हूँ, पर अभी तक कल्याण मित्र (गुरु) के न मिलने से मैं धर्म में प्रवेश नहीं कर पाया हूँ। अब आप मुझे इह लोक और परलोक दोनों के लिए उपकारी धर्म (की दीक्षा) दें।

भिक्षु ने कहा कि यदि आप धर्म की साधना करने में समर्थ हों तो मैं आपको दीक्षा दे सकता हूँ।

चर्मकार ने उस भिक्षु से कहा— मैं तो नीच जाति का हूँ, मेरे घर में आप भोजन करने की अनुमति देंगे?

भिक्षु ने उत्तर दिया— आज रात को आकर खाऊँगा।

उसने अपनी पत्नी आदि अपने घर के सभी लोगों को (रात में) भिक्षु के आने की सूचना दे दी। जब उस रात्रि में वह भिक्षु वहाँ आये, तो चर्मकार ने उन्हें आसन (आदि) लगाकर बैठाया और पैर धोना, आदि (सेवा) करके उन्हें उत्तम भोजन खिलाये, अपनी पत्नी, पुत्री आदि सब लोगों को उस महात्मा की सेवा में लगाकर उनका सत्कार किया।

---

१. यहाँ "**बौद्ध भिक्षु**" से तात्पर्य चीवरधारी भिक्षु नहीं है; अपितु भिक्षा माँगने वाले योगी हैं।

उनकी सेवा से प्रसन्न होकर भिक्षु ने सपत्नीक चर्मकार एवं उसके परिवार को अभिषेक एवं दीक्षा देकर (अनुगृहीत किया और) कहा—

'क्लेशादि ही चर्म' हैं, मैत्री करुणा की गोद में,
गुरु-दीक्षा की सूई एवं अष्ट धर्मों के त्याग रूपी तन्तु द्वारा
सम्यक् रूप से मिला देने पर, अनाभोगिक
फल रूपी जूता बनता है।

'अद्भुत धर्मकाय जूता, मिथ्यादृष्टि से नहीं ज्ञात होगा। हर्ष एवं हर्ष-हीन दोनों के हेयोपादेयता से रहित तन्तु (सुतली) बनाओ। सभी प्रकार के विकल्प एवं निमित्त को चम्बरा (चर्म) बना दो। (वे सब) करुणा के अञ्चल में त्याग दो। गुरु के उपदेश एवं अपना अनुभव रूप सुतली के द्वारा (उसे) मिलाकर अनाभोगिक धर्मकाय का जूता बनाने की भावना करो।'

इस तरह की दीक्षा एवं शिक्षा दी जाने पर उसने पूछा कि इस प्रकार से भावना करने से सिद्धि के क्या-क्या लक्षण होंगे?

गुरु जी ने उत्तर दिया—सर्वप्रथम संसार के प्रति घृणा का लक्षण पैदा होगा, उसके बाद सभी भूत (भौतिक) क्रमशः धर्मता में विलीन होने का लक्षण आने लगेगा। यह कहकर भिक्षु वहाँ से अन्तर्धान हो गये।

चर्मकार ने अपना पुराना मकान त्याग दिया और एक निर्जन स्थान में रहने का प्रबन्ध किया और भावना द्वारा घोर साधना आरम्भ कर दी। उन्होंने गुरु के वचनानुसार क्रमशः सभी लक्षण (अपने अन्दर) उत्पन्न होते देखे।

उन्हें इस प्रकार का ज्ञान होने लगा कि अविद्या सहित मूल षट् क्लेशों (की स्थिति) को उपमा के माध्यम से (जो गुरु ने उन्हें बतलाएं हैं) उनके यथास्वरूप का अवबोध उन्हें हो गया है। गुरु के उपदेशरूपी जूता पहना और सभी अविद्या भूमि पर व्याप्त होकर (हावी होकर) बारह वर्ष तक उन्होंने साधना की। फलतः उनके चित्त, अविद्या आदि समस्त मलों से विशुद्ध होकर उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' की प्राप्ति हो गई।

बारह वर्षों तक रात-दिन जूता बनाने का काम और गुरु के उपदेश दोनों को अद्वैतभाव से (चित्त में) भावना करने पर, उनके सभी जूता बनाने के कार्य आदि विश्वकर्मा आदि देवताओं ने कर दिया। विष्णुनगर के लोगों को यह पता नहीं लगा कि उक्त चर्मकार साधना एवं भावना कर रहे हैं। उन्हें विशेष गुणों के लाभ होने का भी किसी को पता नहीं चला। एक दिन उनका काम करनेवाला एक आदमी उन्हें देखने उनके निवास स्थान पर आया, तो देखा कि—चर्मकार तो समाधि में लीन बैठे हैं, पर जूता बनाने का उनका कार्य 'कारीगर (देव कारीगरों) विश्वकर्मा' कर रहे थे। इस दृश्य को देखकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। (वह लौट गया) एक दूसरे से कहते-सुनाते यह बात अन्त में सब लोगों में फैल गयी और सभी ने उनका दर्शन किया। सबने उनसे उपदेश (दीक्षा आदि) देने के लिए निवेदन किया।

तब उन्होंने लोगों को गुरु-चरण की सेवा अनुशंसा (प्रशंसा एवं महिमा) आदि अनेक प्रकार के उपदेश दिये। उन्होंने विष्णुनगर के सभी लोगों को अनेक प्रकार से धर्म-उपदेश भी दिये और अपरिमित जगत्-कल्याण के कार्य किये। उनका नाम 'योगी चमरिपा' विख्यात हो गया। अन्त में उसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु चरमरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१५. गुरु खड्गपा का वृत्तान्त

खड्गपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह मगध के रहनेवाले तथा जाति के शूद्र थे। इनको गुरु जोगिचपत्रि (योगी चरपटि) से सामान्य (लौकिक) खड्ग सिद्धि की प्राप्ति हुई थी।

मगध नगर का एक किसान-कर्म से अपनी जीविका चलानेवाला गृहस्थ अपने पैतृक कार्य को त्यागकर सब समय चौर कर्म (चोरी) करता था। रात दिन चोरी में ही लगे रहने से (उस काम में) उसे चित्त-एकाग्रता प्राप्त हो गयी। एक दिन वह चोर मगध के एक नगर में चोरी करने के लिए गया, पर उस दिन उसको कुछ नहीं हाथ लगा। लौटते समय वह एक श्मशान से गुजर रहा था। उस श्मशान में चरपटिपा नामक योगी से उसकी भेंट हो गयी। चोर ने उससे पूछा— आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

योगी ने उत्तर में कहा— सांसारिक जन्म-मरण से भयभीत होकर मैं यहाँ (कुछ) भावना (साधना) कर रहा हूँ।

चोर ने कहा—भावना करने से क्या फल मिलेगा?

योगी ने कहा—भावना का फल अभ्युदय और निःश्रेयस् सुख की प्राप्ति होती हैं। क्या तुम भी इस धर्म को ग्रहण नहीं करोगे?

चोर ने कहा—मेरे अन्दर धर्म के प्रति छन्द (झुकाव या श्रद्धा) तो है, पर श्मशान में भावना (साधना) करते रहने की मुझे फुरसत नहीं है। मैं तो सब समय चोरी का ही काम करता हूँ; राजा, मंत्री या गृहस्थ स्वामी आदि किसी से चोरी के द्वारा कुछ द्रव्य मिल जाता है, पर उस द्रव्य के पीछे उन लोगों से लड़ना भी होता है। अतः उन सब लोगों द्वारा मेरा दमन न हो सके; ऐसी एक सिद्धि मुझे चाहिए।

योगी ने उस चोर को अभिषेक दिया, दीक्षा दी और उससे कहा—तुम यहाँ से जाओ मगध में 'गोरसमकर' (गौरीशंकर) नामक स्तूप के अन्दर देवालय है,

उसके अन्दर आर्य अवलोकेश्वर की एक प्रभावशाली मूर्ति रखी हुई है। तुम तीन सप्ताह अर्थात् इक्कीस दिन तक रात-दिन बिना भूमि पर नीचे बैठे उसकी परिक्रमा करो, खाना भी खड़े-खड़े ही खाओ। मूर्ति के पैर के नीचे यदि एक सर्प आते देखोगे तो बिना डरे उसे सिर से पकड़ लो। इसी से तुम्हें सिद्धि का लाभ हो जायगा।

इस प्रकार की दीक्षा देकर योगी ने उसे साधना में लगाया।

वह चोर भी योगी के दिये हुए उपदेश एवं वचन के अनुसार उस स्थान पर जाकर विधिवत अनुष्ठान करता रहा और साधना करने में लग गया। इक्कीस दिन के बाद सच में सर्प निकल आया। उसने सर्प को सिर से पकड़ा, तो सर्प एक तलवार (खड्ग) बन गया। उस प्रकाशमान ज्ञान की तलवार हाथ में मिलते ही चोर का चित्त मलों से विशुद्ध हो गया और उसे खड्गसिद्धि का लाभ हो गया। उस समय से उनका नाम योगी खड्गपा प्रसिद्ध हो गया।

इस प्रकार उन्हें आठ सामान्य सिद्धियों में से 'खङ्ग सिद्धि' का लाभ हुआ। इसके बल से काय, वाक् और चित्त के सभी भ्रान्तिमूलक मल विशुद्ध हो गये। उन्होंने मगध के सभी प्रकार के सत्त्वों (सभी लोगों) के लिए इक्कीस दिन तक धर्मोपदेश दिया। अन्त में कुछ (अपने) अवदान भी कहे। उसके बाद वे उसी शरीर के साथ वहाँ से खेचर भूमि चले गये।

गुरु खड्गपा का वृत्तान्त समाप्त॥

१५. खड्गपा

खड्गपा हाथ में तलवार लेकर आकाश में उड़ रहे हैं। उनके नीचे की ओर छाये हुए बादल, उनकी उड़ने की क्रिया को परिलक्षित कर रहे हैं। नीचे की धरती पर एक स्तूप है, जिसके नीचे सर्प निकल रहे हैं और स्तूप के अन्दर आर्यलोकेश्वर की मूर्ति विद्यमान है।

१६. नागार्जुन

नागार्जुन भिक्षु वेश में हैं। ये अत्यन्त सुन्दर और साँवले रंग के हैं। उनके सिर के मध्य भाग से बुद्ध की भाँति छोटी-सी उष्णीष उभरी है। सिर के पीछे की ओर सर्पों के फन लहरा रहे हैं। हाथ प्रवचन या उपदेश-मुद्रा में हैं।

१६. नागार्जुन का वृत्तान्त

गुरु नागार्जुन या आचार्य नागार्जुन[१] का वृत्तान्त इस प्रकार है—इनका जन्मस्थान पूर्वी भारत के अन्तर्गत काञ्ची[२] नामक जनपद का अंग 'कहोर' था और जाति के यह ब्राह्मण थे। सिद्धि की प्राप्ति इन्हें आर्या तारा से हुई।

कहोर (नामक जनपद) नगर की आबादी संख्या पन्द्रह हजार थी। नागार्जुन ने सब लोगों का सामान छीनना और सब लोगों का दमन करना आरम्भ कर दिया, तो (एक समय) वहाँ के ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर (विचार विमर्श करने के बाद, यह) तय किया कि इसने हम सब लोगों से बहुत अनुचित व्यवहार किया अब इससे लड़ने की अपेक्षा, इस नगर को त्यागकर हमारा आन्ध्रप्रदेश में चला जाना ही अच्छा होगा।

जब यह बात आचार्य ने सुनी तो सभी ब्राह्मणों के पास आदमी भेजकर उन्हें यह सूचित कर दिया कि आप लोग अन्यत्र प्रदेशों में न जायँ। अन्यत्र बहुत दुःख भोगना पड़ेगा। हमारी सारी द्रव्य-सम्पत्ति आप लोग ले लें। यह कहकर उन्होंने सभी अपनी सम्पत्ति उन्हें दान कर दी और आचार्य 'कहोर' से पलायन कर शीतवन (सिलवाई छल) पार करके नालन्दा पहुँचे। वहाँ परिव्राजक (भिक्षु) की दीक्षा ग्रहण करके उन्होंने सभी पाँच विद्या संस्थानों में अध्ययन किया। अन्त में वे सर्वोत्कृष्ट सुविज्ञ विद्वान् बन गये।

तत्पश्चात् भाषण से ऊब कर वे मुख्य रूप से साधना में लग गये। फलतः उन्हें आर्या तारा का दर्शन प्राप्त हुआ। वह धर्मपीठ नालन्दा का संघ एवं जीविका

---

१. ये सरह के शिष्य, श्री शबरपा के गुरु थे। चक्रसंवर सामान्यार्थ वृत्ति० पृ० ३६, बुस्तोन ग्रन्थ० ६ ('छ' पुट)।

२. पूर्व भारत में 'काञ्ची' नामक स्थान होने की कहीं कोई सूचना नहीं मिलती। 'काञ्ची' दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर है। अतः यहाँ 'पूर्व' शब्द विचारणीय है। दूसरा नागार्जुन के पूर्व भारत में जन्म होने का वृत्तान्त, इसके अतिरिक्त कहीं नहीं मिलता। सम्भवतः यह केरल प्रदेश के पूर्व है।

छोड़कर अन्यत्र चले गये। परन्तु एक दिन नगर में भिक्षाटन करके पुनः अपने पुराने स्थान में लौट आये। सोचने लगे कि मेरे इस तरह के विचार से सत्त्वार्थ (लोक कल्याण का कार्य) सम्पादन नहीं हो सकेगा। विशेष गुण प्राप्त करके मुझे लोक कल्याण करना होगा। तत्पश्चात् वह राजगिरि चले गये। वृषभभूत (वृषभ नामक भूत) की बारह भूतनियों का जप किया, तो पहले दिन भूकम्प हुआ, दूसरे दिन (धरती से) पानी (निकला), तीसरे दिन अग्नि का प्रज्वलन हुआ, चौथे दिन आँधी उठी, पाँचवें दिन शस्त्र (तलवार, छुरा आदि) की वृष्टि हुई, छठे दिन वज्रपात होने लगा, सातवें दिन सभी भूतनियों ने एकत्र होकर (उनकी साधना में) विघ्न आरम्भ कर दिया। पंर आचार्य की अचल समाधि के कारण उनका कुछ नहीं बिगड़ा। उन्हें विचलित करने में वे असमर्थ हो गयीं। सभी भूतनियाँ आचार्य के सम्मुख आकर पूछने लगीं कि तुम्हें क्या चाहिए? हम लोग क्या दे सकती हैं?

आचार्य ने आदेश दिया कि मुझे कुछ नहीं चाहिए केवल मेरे लिए जीविका का प्रबन्ध करो। वे लोग उन्हें चार अञ्जलि (कुछ माप) चावल (भात) और पाँच प्रकार के शाक नित्य देने लगीं। इस भोजन को ग्रहण करते हुए आचार्य ने बारह वर्ष तक साधना की। सोचने लगे कि यदि एक सौ आठ भूतनियाँ (विद्यायें) वश में हो जायँ, तो जगत् का कल्याण हो सकता है। तत्पश्चात् घन्दशिला नामक गिरि[१] में चले गये और वहाँ उन्होंने यह सोचा कि 'इस पहाड़ को सोने का बना दिया जाय, तो जगत्-कल्याण कर सकूँगा। उन्होंने पहले उस पहाड़ को लोहे के रूप में परिवर्तित किया। उसके बाद उसे ताम्र (ताँबे) के रूप में बदल दिया। तब आर्य मञ्जुश्री ने अपने मुख से कहा—यदि तुम इस पहाड़ को सोना बना दोगे तो लोगों में अनेक विवाद खड़े हो जायेंगे और पाप का ही अर्जन होगा।' उसके बाद उस कार्य को उन्होंने स्थगित कर दिया। कहा जाता है कि वह पहाड़ आज भी नील-ताम्र के रंग में ही है।[२]

---

१. घन्यशील पर्वत।

२. पहाड़ को सोना बनाने के इतिवृति में कुछ पौराणिकता झलकती है।

उसके बाद वे दक्षिण भारत के श्रीपर्वत की ओर चले गये। जाते समय रास्ते में वे एक नदी के तट पर पहुँचे। गो चराने वाले बहुत से लड़के उन्हें मिले और उन्होंने उनसे पानी से पार निकले का रास्ता पूछा कि कहाँ से पार करना है? उन लड़को ने खराब रास्ता, जहाँ से कीचड़ और जल-जन्तुओं का खतरा है, दिखाया। एक दूसरे ग्वाले के लड़के ने कहा कि भन्ते! यह रास्ता बहुत खराब है। आप यहाँ से चलें, कहकर वह लड़का आचार्य को (साथ) लेकर चल दिया। जब दोनों पानी के बीच में पहुँचे, तो आचार्य ने अनेक जल-जन्तु के खतरे आदि का चमत्कार से भय दिखलाया। गो चरानेवाला लड़का कहने लगा—जब तक मैं न मर जाऊँ, आप डरें मत। आचार्य ने निर्मित भय समाप्त कर दिया। नदी के पार जाने के बाद आचार्य ने गो चरानेवाले उस लड़के से कहा— मैं 'आर्य नागार्जुन हूँ' तुमने पहचाना? उसने उत्तर दिया बात तो सुनी है, पर मैं आपको पहचान नहीं सका।

आचार्य ने गो चरानेवाले से कहा—तुमने मुझे इस नदी से पार करा दिया, अब तुमको मैं जो चाहो इनाम दूँगा। गो चरानेवाले (लड़के) ने कहा— आप मुझे राजा हो जाने का उपाय दें। आचार्य ने उस स्थान में एक शालवृक्ष पर कुछ पानी छिड़क दिया और तत्काल वह वृक्ष एक बहुत बड़ा हाथी बन गया। उस लड़के को राजा बनाकर, उस हाथी पर आर्य नागार्जुन ने सवार करवा दिया। लड़के ने कहा— राजा के लिए सेना की भी आवश्यकता होगी। आचार्य ने कहा— जब यह हाथी खुंखार आवाज करेगा, तत्काल सेना भी आ जायगी, वैसा ही हुआ। राजा का नाम सालभन्ध (शालवाहन) प्रसिद्ध हो गया[१] और रानी का नाम हुआ सिन्धी। राजा के राज्य का नाम था अहितन जनपद। यह अति सुन्दर एवं विशेष नगर था। इस राजा के राज्य में कर देने वाले लोग चौरासी लाख थे। इतनी जनसंख्या के वे राजा थे।

आचार्य वहाँ से दक्षिण श्रीपर्वत चले गये। वहाँ भावना एवं साधना-अनुष्ठान करते बहुत समय बीत गया। सालभन्ध (शालवाहन) राजा बार-बार अपने गुरु का स्मरण आने से रह नहीं सके और श्रीपर्वत पर जाकर आचार्य को प्रदक्षिणापूर्वक

---

१. लामा तारानाथ के अनुसार आचार्य ने अपने जीवन के उत्तरकाल में दक्षिण में जाकर सातवाहन राजा (भद्रसातवाहन) को अपना विनीत शिष्य बनाया।

(ता० इति पृ० ७०-७१, अध्याय १५)

प्रणाम एवं अभिवादन करके उनसे कहा— यह राजश्री तो बहुत क्षीण प्रयोजन वाली और अनेक दोषों से भरी हुई है। अत: यह हमको नहीं चाहिए। मैं आचार्यजी के पास ही बैठूँगा।

आचार्य ने उनसे कहा— राजश्री मत छोड़ो, रत्नावली को अपना गुरु बनाकर राजकाज करो, राज्य का पालन करो। अकाल मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिए तुम रसायन का प्रयोग करो।

राजा ने कहा— मुझे आचार्यजी के साथ रहने का अवसर हो, तो राज्य और रसायन चाहूँगा, अन्यथा नहीं। यह कहकर राजा ने वहाँ से जाना नहीं चाहा। वहीं रहने लगे। आचार्य ने राजा को अनेक उपदेश एवं दीक्षा दी और उन्होंने अपने स्थान में जाकर रसायन सिद्ध किया। वह एक सौ वर्ष तक राज करते रहे। उस अवधि में उनके राज्य के सभी लोग धन-धान्य से समृद्ध हो गये और पशु-पक्षी तक सुख से जीवन बिताने लगे। आचार्य ने भी बुद्ध-शासन के विस्तार के अनेक कार्य किये। इस शुभ कार्य का भार सुरतीश्वर कामदेव सहन नहीं कर सके। उन्होंने अनेक प्रकार के विघ्न एवं अमङ्गलकारी विनाशलीलाएं आरम्भ कर दीं। सूर्य-चन्द्र का प्रकाश मन्द कर दिया, फल-पुष्प, पत्ती अपने आप असमय से गिरने लगे। अनावृष्टि, अकाल, महामारी, शस्त्र-अस्त्र का प्रयोग और वन, उद्यान आदि का सूखना आदि अनेक अशुभ घटनाएं घटने लगीं। इस दृश्य को देखकर शालवाहन राजा बहुत चिन्तित हो उठे और सोचने लगे कि यह सब और कुछ नहीं मेरे गुरु के सम्बन्ध में कुछ विघ्न-बाधा आने के ही लक्षण हैं। यह सोचकर अपने पुत्र सिद्धि कुमार (सिन्धि कुमार) को अपना राज्य सौंपकर कुछ थोड़े सेवकगण लेकर वह श्रीपर्वत पर पहुँचे।

आचार्य ने पूछा कि हे पुत्र! तुम किसलिए यहाँ पधारे हो? राजा ने उत्तर दिया— मेरा और सत्त्वों (अन्य प्राणियों) का भाग्य क्षीण हो गया है, क्या?

जिन-शासन का क्षय हो गया है क्या?
कृष्णपक्ष (पापपक्ष) का क्या विजय हो गया है?
महाकरुणा जो चन्द्रमा सदृश प्रकाशमान है,
क्या काली घटा और मेघ द्वारा आवृत्त हो रहा है?
वज्रवत् मेरे सत् गुरु में, संस्कार स्वभाव पाप लक्षण हो रहा है?

यह होते देखकर मैं यहाँ आया हूँ। महाकृपा दृष्टि से मुझे अधिष्ठित करें।

आचार्य ने उत्तर में कहा—सभी जातिधर्म मरणशील हैं।

सभी संयोग का वियोग होता है। सभी सञ्चित सम्पत्ति का क्षय हो जाता है। सभी संस्कार का अन्त अनित्य होता है। अत: इसमें अरति (दु:ख) की क्या बात है। तुम रसायन (दवाई) लेकर अपने स्थान पर जाओ। पुन: उस राजा ने कहा—यदि गुरुजी के पास रसायन का सेवन करते रहने की अनुमति हो, तो उचित है, अन्यथा मुझे रसायन नहीं चाहिए। यह कहकर वह बैठ गया। आचार्य ने (बोधिसत्त्वदान अनुष्ठान के अनुसार) सभी भोग्य सम्पत्ति का दान करना आरम्भ कर दिया, तो ब्रह्मदेव ने एक साधारण ब्राह्मण का रूप धारणकर आचार्य से 'सिर' का दान माँगा। आचार्य ने भी उसे अपना 'सिर' देना स्वीकार किया। सालवाहन राजा ने आचार्य की मृत्यु के शोक-भय से पीड़ित होकर आचार्य के निधन से पहले ही उनके चरण में अपना 'सिर' रखा और मर गया। सब लोगों ने उस ब्राह्मण की निन्दा की।

जब आचार्य ने 'सिर' दान देने के लिए काटा तो किसी भी प्रकार से 'सिर' का छेदन नहीं हो पाया, बाद में एक कुश के तृण से काटकर 'सिर' (ब्रह्म के छद्म रूप) ब्राह्मण को दे दिया। उस समय सभी वन वृक्ष सूख गये और लोगों के पुण्य का भी बहुत क्षय हो गया।

उसके बाद पहले की आठ यक्षिणियों के द्वारा आचार्य के शरीर को सुरक्षित कर देने से उनका शरीर अब भी विद्यमान माना जाता है।

आचार्य के धार्मिक कुल के रूप में आचार्य नागबोधि बैठे (श्रीपर्वत में) उनका काय प्रकाशमान चन्द्रमा के समान अब भी रात को दिखलाई पड़ता है। आचार्य का शरीर जो आठ यक्षिणियों द्वारा सुरक्षित हैं, जिन मैत्रेयबुद्ध के शासन काल में पुन: उत्थित होकर जगत् कल्याण करेगा ऐसा कहा जाता है।

गुरु नागार्जुन का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. आचार्य के 'सिर' को दान के रूप में माँगने वाले खुद शातवाहन राजा के राजकुमार होने के वृत्तान्त भी मिलते हैं।

१७. गुरु कण्हपा का वृत्तान्त

गुरु 'कण्हपा'[१] का वृत्तान्त इस प्रकार है। इन्हें आचार्य कण्हपा अर्थात् इनका नाम आचार्य कृष्णाचार्य पाद कहा जाता है। इनका जन्म-स्थान सोमपुरी था[२]। उनके गुरु जालन्धरपा और वह स्वयं जाति से लेखक कायस्थ (सम्भवत: ब्राह्मण) थे[३]।

वह राजा देवपाल द्वारा निर्मित सोमपुरी विहार के एक भिक्षु थे। पर गुरु जालन्धरपा से मिलने के बाद उन्होंने उन्हें अभिषेक देकर हेवज्र के मण्डल में दीक्षित किया और उपदेश देकर साधना में लगाया। बारह वर्ष तक (निरन्तर) साधना करने के बाद, एक समय भू-कम्पन के साथ हेवज्र के देवमण्डल का दर्शन हुआ, तो उन्हें बड़ा हर्ष और आनन्द हुआ। उस समय डाकिनियों ने (प्रकट होकर) उनसे कहा— 'कुलपुत्र! यह (हेवज्र मण्डल का दर्शन) कोई विशेष लक्षण नहीं है। इससे तुम्हें घमण्ड उत्पन्न न हो। क्योंकि (इसमें) सत्य-तत्त्व का साक्षात्कार नहीं है।

एकबार (अपने समीप के) एक बहुत बड़े पत्थर के शिलाखण्ड पर उन्होंने पैर रखा, तो पैर नीचे धँस गया। उनके मन में (बहुत) अभिमान हो गया कि अब मुझे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी हैं। उस समय भी डाकिनियों ने उन्हें रोका। जब वह अपने साधना आसन से बाहर आये, तो उनके पैर धरती से बिना स्पर्श किये एक हाथ की ऊँचाई में आकाश पर चलने लगे। उस समय भी उन्हें वही अभिमान हुआ, पर डाकिनियों ने उन्हें पुन: पूर्ववत् रोका।

अपने ऊपर के आकाश में सात छत्रों का घूमते चलना, सात डमरुओं का आकाश से स्वत: शब्द करते हुए निकलते देखकर उन्होंने कहा—मुझे सिद्धि प्राप्त

---

१. 'कृष्ण' नाम के बहुत बड़े पण्डित और सिद्ध हुए थे, पर यह जालन्धर पाद के शिष्य कृष्णपा ही थे।

२. पद्म० इति० के अनुसार इनका जन्म-स्थान भंगाल के विशेष भाग ओडिविषय (ओडियान) था।

३. जाति के यह वैश्य थे। (पद्म० इति०—पृ० ८१) इस प्रकार इनके वर्ण के सम्बन्ध में सर्वत्र मतैक्य नहीं है।

१७. कृष्णपा

कृष्णपा (कृष्णाचार्य) साँवले रंग के हैं। हाथ में डमरू और कपाल (नरकपाल) धारण किये हुए हैं। अस्थि (हड्डी) निर्मित छः प्रकार के आभूषणों से आभूषित हैं और व्याघ्र-चर्म अधोवस्त्र के रूप में पहने हुए हैं। वैताली या राक्षसी पर सवार हैं।

१८. आर्यदेव

आर्यदेव भिक्षु एवं पण्डित के वेश में हैं। सामने की ओर एकटक देखते हुए हाथ में 'करना' नामक वृक्ष की एक बहुत बड़ी पत्ती लिए हुए हैं।

हो गई है, अब जगत् कल्याण के लिए राक्षस देश लंकापुरी जाना है। तुम लोगों को भी जाना होगा। तत्पश्चात् तीन हजार अपने शिष्य परिवार के साथ वे लंका की ओर प्रस्थान किये। जब वे समुद्र तट पर पहुँचे तो आचार्य ने शिष्यों को समुद्र तट पर रोक दिया और स्वयं पानी में बिना डूबे समुद्र के ऊपर से चलने लगे। उस बीच उनके मन में पुनः यह अभिमान होने लगा कि 'मेरे गुरु को भी इतनी शक्ति नहीं थी, पर मुझे इतनी शक्ति प्राप्त हो गयी है।' मन में इस तरह के विचार आते ही वह पानी में डूब गये। जब पानी की तरंगों द्वारा उन्हें समुद्र के तट पर फेंका गया, उन्होंने आकाश में देखा, तो उनके गुरु जालन्धरपा आकाश में विराजमान दिखाई पड़े। गुरु ने उनसे कहा कि 'कण्हपा तुम कहाँ गये हो, क्या हो गया तुम्हें?'

कण्हपा ने बड़ी लज्जा के साथ कहा—मैं जगत् कल्याणार्थ लंकापुरी जा रहा था, पर मन में गुरु से भी मैं अधिक गुण वाला हूँ, यह अभिमान पैदा होने से मेरी शक्ति क्षीण हो गयी और मैं पानी में डूब गया हूँ।

गुरु ने कहा—'अब तुम्हारी इस साधना से कुछ उपकार नहीं होगा। मेरे देश के 'सालिपुत्र' नामक स्थान में धर्मराज धर्मपाल बैठे हैं। वहीं पर मेरा एक जुलाहा शिष्य है। तुम वहीं जाकर वह जो कहे, वही करते रहना।

तब वहीं उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि गुरुजी ने जो कहा है, वही करूँगा। साथ ही उनके पूर्व उपदेशों को भी मन में रखा, तो तत्काल पूर्ववत् पैर का पृथ्वी से ऊपर जाना, अपने ऊपर के आकाश में सात छत्र का घूमना, आकाश में डमरू की आवाज सुनाई देना, पत्थर पर पैर रखने से नीचे धँसना आदि प्रारम्भ हो गये। इन सभी शक्तियों के प्राप्त हो जाने के बाद वे वहाँ से अपने तीन हजार[१] शिष्य परिवार के साथ सालिपुत्र जनपद में पहुँचे। वहाँ उन्होंने शिष्यों को एक ओर रखा और स्वयं उस जुलाहे (जो गुरु जालन्धरपा ने बताया था) को खोजने गए। रास्ते में उन्हें बहुत से जुलाहे मिले। उन लोगों को जब आचार्य ने देखा, तो उन लोगों की तन्तु

---

१. शिष्यों की संख्या तीन हजार की जगह पद्म० के इति० में ७२ मिलती है। (पद्म० इति० पृ० ८२)

टूटती थी और वे लोग स्वयं उन्हें जोड़ते थे। उन्होंने सोचा कि यह सब वह नहीं है, जो गुरुजी ने उन्हें बतलाया था। उसके बाद नगर के अन्त में एक जुलाहा बसा हुआ था, वहाँ जाकर उन्होंने देखा, तो वह जब कपड़ा बुन रहा था तो तन्तु टूटने पर पुनः उसे स्वयं नहीं जोड़ना पड़ता था। सभी टूटी हुई तन्तुएं स्वयं जुड़ रही थीं। आचार्य ने निश्चय किया कि यही है, जो गुरुजी ने बताया था। उन्होंने उस जुलाहे के चरणों में प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम किया।

जुलाहे ने उनसे कहा जो मैं कहूँगा, उसे तुम वैसा ही मानोगे? आचार्य कृष्णाचार्य ने कहा— हाँ, वैसा ही मानूँगा। जुलाहे ने उन्हें साथ लिया और दोनों एक श्मशान में पहुँचे। वहाँ, एक आदमी का शव पड़ा मिला। जुलाहे ने कहा 'तुम इसका माँस खा सकोगे? यदि खा सकते हो, तो इसे खाओ? कण्हपा छुरा निकालकर खाने के लिए बढ़े और काटना आरम्भ किया, तो जुलाहे ने कहा— 'अभी ठहरो? अर्थात् अभी तुम्हें मांस खाने की अवस्था प्राप्त नहीं है, रुक जाओ'। उसने स्वयं सियार का रूप धारण किया और उस आदमी के शव का मांस खा डाला। तत्पश्चात् वह जुलाहा फिर आदमी बन गया और कृष्णाचार्य से कहने लगा कि इस प्रकार का निर्माण कार्य (चमत्कार द्वारा) करने की स्थिति (क्षमता) जब प्राप्त हो जाती है, तब मांस खाना होता है।

उसके बाद जुलाहे ने टट्टी की और उसमें तीन टिकिया (गोलियाँ) निकलीं। उनमें से एक कृष्णपा को दी और कहा कि इसको खाओ। 'लोग इसकी निन्दा करेंगे' यह कहकर कृष्णपा ने खाने की अनिच्छा व्यक्त की। एक गोली जुलाहे ने खुद खा ली; एक आकाश के देवताओं ने ले ली और एक धरती के नीचे नाग लोगों ने ले ली।

वहाँ से दोनों आचार्य नगर वापस लौट आये। जुलाहे ने पाँच गण (माषक) की मदिरा ली और खाने की चीज भी। उसने कृष्णपा से कहा—अब अपने शिष्य परिवार को भी बुलाओ, हम सब एक गण-चक्र की व्यवस्था करेंगे। कण्हपा ने सोचा कि यह तो एक आदमी के खाने के लिए भी भर पेट नहीं है, इससे हमरा, आचार्य और तीन हजार शिष्यों का क्या होगा? यह सोचते वे सब यहाँ

आ गये। योगी के प्रभाव से लड्डू, भात, आदि इष्ट-भोग्य वस्तु से सब प्रकार के बर्तन भर गए। इस गण-चक्र को खाते-पीते सात दिन बीत गये, पर भोग्य-सामग्री फिर भी समाप्त नहीं हुई। कण्हपा ने कहा कि आपके खाने-पीने की सामग्री समुद्र के समान है, हम लोगों से इतना नहीं खाया जायगा, कहकर शेष भोजन की विधि द्वारा 'शेष गण भोज्य'[1] बाहर करके कण्हपा सपरिवार जाने के लिए तैयार हो गये, तो जुलाहे ने कहा— 'अहो, जैसे बाल पृथग् जन, स्वत: स्वयं का विनाश किया करते हैं, उसी प्रकार प्रज्ञा एवं उपाय से रहित योगी की भी दशा होती है। अब अन्यत्र जाने पर भी कुछ नहीं होगा। छत्र-डमरू आदि अल्प सिद्धियाँ हैं। अब भी धर्मता का ज्ञान नहीं हुआ, साधना ही करो।' पर कण्हपा इन बातों के प्रति अनिच्छा व्यक्त करते हुए 'भधोकर' नामक स्थान पर चले गये।

पूर्वी सोमपुरी से लगभग सौ योजन के पार एक नगर था, उसके पास वन था, वहाँ गए। वहाँ—जम्बिर[2] नामक फल का एक वृक्ष था। उस वृक्ष के समीप एक लड़की (कुमारी) बैठी हुई थी। कण्हपा ने उससे कहा— मुझे फल दो। पर उस लड़की ने उन्हें फल देना नहीं चाहा। आचार्य ने उस फल-वृक्ष पर एक दृष्टि डाली तो वृक्ष पर लगे सभी फल भूमि पर गिर गये। लड़की ने पुन: उन फलों पर एक दृष्टिपात किया तो सभी फल वृक्ष में अपनी-अपनी जगह पर ऊपर चिपक गये। इससे कण्हपा बड़े कुपित हुए और लड़की पर मन्त्र फूँक दिया और लड़की के सभी अंग- प्रत्यङ्ग से खून गिरने लगा और वह धरती पर गिर पड़ी।

---

१. 'गण-अवशेष भोज्य' या 'शेष-गण' यह तांत्रिकों के पारिभाषिक शब्द हैं। भोजन विशेष नाम 'गणचक्र' है। इसमें केवल वही लोग सम्मिलित हो सकते हैं, जिन्होंने पञ्चमकारों के सेवन करने में विशेषता पाई हो। इसका उपक्रम एक सीमा विशेष या अवस्था विशेष के अन्दर ही होता है। इसके बाद जो बची खाद्य-सामग्री होती है, वह भी हर किसी को नहीं दी जा सकती। अत: इसे विशेष आज्ञाकारी धर्मपालों एवं दिग्पालों को ही दिया जाता है। (मूल पतित भाष्य, चोङ्खापा- 'क' पुट)

२. मूल ग्रंथ में इसका नाम 'लिखि' लिखा है। पर कुन खेन पद्म करपो के इतिहास में 'जम्बि' लिखा है। यह अन्दर से खट्टा पानी निकलनेवाला फल था। (पद्० इति० पृ० ८३)

वहाँ आस-पास के सभी लोगों ने कण्हपा की निन्दा करते हुए कहा— बौद्ध लोग बड़े कृपालु होते हैं, पर यह योगी आदमी को मारने जा रहा है। यह सुनकर कन्हपा ने चिन्तित होकर लड़की के प्रति दयापूर्वक अपने मंत्र (की शक्ति) का दमन कर दिया और साथ ही अपनी रक्षा के लिए जो उपाय किया जाता है, वह भी छोड़ दिया। जब लड़की उठी तो उसने भी कण्हपा को मंत्र फूँक दिया[१] फलतः कण्हपा को भी ऊपर (मुँह) और नीचे दोनों से खून स्त्रवित होने लगा और वह बीमार पड़ गये। कन्हपा ने 'मन्धे' नामक एक डाकिनी, जो उनके साथ थी, से कहा—मेरे इस खून उलटी होने वाली बीमारी की दवा दक्षिण के श्रीपर्वत पर मिलती है, उसे लाकर मुझे दो। 'वहाँ से दक्षिण श्रीपर्वत के बीच की दूरी छः मास का रास्ता था, पर मन्धे उसे एक दिन में पार करके दवा ले आई और सातवें दिन जब वह अपने नगर पहुँच रही थी, उस लड़की ने, जिसने कण्हपा पर मन्त्रपात कर दिया था, एक बुढ़िया का रूप धारण किया और रास्ते में जाकर रोती हुई बैठ गई[२]। मन्धे ने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो? बुढ़िया ने कहा—'क्यों न रोयें, योगी कण्हपा मर गये हैं अब वह नहीं हैं, मन्धे ने दवा भूमि पर फेंक दी। बुढ़िया उस दवाई को लेकर चल दी। डाकिनी मन्धे घर पहुँची, तो कण्हपा को जीवित देखकर (बड़ी दुः खी हुई) कण्हपा ने कहा—दवा कहाँ है? मन्धे ने अपना वृत्तान्त सुनाकर कहा—अब दवा नहीं है।

कण्हपा ने अब जीवित रहने के उपाय न देखकर सात दिन तक अपने शिष्यों की सभा में धर्म-प्रवचन किया और अन्त में (वज्र) वाराही सिरच्छेदा (छिन्न

---

१. कुन ख्येन पद्म कारपो के अनुसार—कण्हपा को मंत्र फूँकने वाली लड़की जम्बिका फल की रक्षक नहीं थी। वह देवीकोट की एक धान कूटने वाली लड़की थी। (पद्० इति० पृ० ८५)

२. बुढ़िया के वृत्तान्त की जगह अन्यत्र रास्ते में बहुत सी लड़कियों के एक झील में स्नान करने की बात कही गई है। उन लड़कियों ने कण्हपा के शिष्यों को जो दवाई लेकर लौट रहे थे, यह कहकर कि कण्हपा अच्छे हो गए हैं, स्नान के लिए रोककर दवा छिपा दी। (पद्मकर०- इति० पृ० ८५)

मस्तका) से सम्बन्धित उपदेश दे दिया। अपने कर्म-विपाक वाले शरीर को वहीं छोड़कर कण्हपा खेचर भूमि चले गये[१]।

इस घटना से डाकिनी मन्धे ने अत्यंत क्रुद्ध होकर (बदला लेने की इच्छा से) उस लड़की (जिसने आचार्य को मंत्र द्वारा मार डाला) को तीनों लोक में ढूँढा, किन्तु वह नहीं मिली। अन्त में वह 'शम्मिल' नामक एक वृक्ष के खोखले के अन्दर बैठी मिली और वहीं उसे मंत्र फूँककर मार डाला।

इस प्रकार परम योगियों को भी अभिमान एवं ईर्ष्या परम सिद्धि प्राप्त करने में बहुत बड़े बाधक बनते हैं, यह जानना चाहिए।

गुरु कण्हपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. वह उक्त घटना को डाकिनी का विघ्न या व्यवधान समझ गये और इस शरीर के साथ परम सिद्धि की प्राप्ति न देखकर अन्तराभव की अवस्था में परमसिद्धि की आशा करते हुए परिनिर्वृत्त हो गये। (पद० कर० इति पृ० ८५-८६)

१८. गुरु कर्नरिपा (कनापा) का वृत्तान्त

कर्नरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। चार योनियों में से इनका जन्म उपपादुक योनि में हुआ। उन्होंने श्री नालन्दा में आकर परिव्राजकत्व ग्रहण करने वालों का उपाध्यायत्व किया। इनके शिष्यों की संख्या एक लाख के लगभग हो गई। पर स्वयं अनेक आचार्यों के शिक्षा-दीक्षा, अववाद करने पर भी विशेष ज्ञान नहीं प्राप्तकर सके। दक्षिण भारत में आचार्य नागार्जुन के रहने का समाचार सुनकर उन्हें उनके प्रति श्रद्धा हुई, इच्छा हुई कि उनके चरणों में जाकर कुछ सीखें। इससे प्रेरित होकर वे नालन्दा से चले। एक दिन वह समुद्र के तट पर पहुँचे जहाँ आर्य मञ्जुश्री एक मछुआ का रूप धारणकरके बैठे हुए थे। कर्नरिपा ने उन्हें देखा और (वह समझ गये कि यह मछुआ विशेष व्यक्ति है) उन्हें प्रणाम पूर्वक मण्डल आदि अर्पित करके उनसे निवेदन किया—मुझे दक्षिण देश के तन्त्र और पीठ में, जहाँ आचार्य नागार्जुन हैं, वहाँ जाना है, आप हमें रास्ता दिखा दें जिससे हम वहाँ जा सकें। उस मछुआ ने कहा— वहाँ जाओ, जहाँ गहन वन दिखलाई पड़ रहा है, वहाँ आचार्य रसायन सिद्ध करने में बैठे हैं।

उस (मछुआ) के निर्देशानुसार वह वहाँ गये, तो वहाँ आचार्य रसायन की बहुत-सी द्रव्य-सामग्री इकट्ठी कर उसका प्रयोग कर रहे थे। यह देखकर, प्रणामकर अभिवादन पूर्वक अनुग्रह करने के लिए उनसे प्रार्थना की। आचार्य ने भी उन्हें अनुगृहीत करने की अनुमति दे दी।

आचार्य ने उनको गुह्य-समाज (तन्त्र के मण्डल में) अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा अववाद देकर अपने पास में ही रहकर भावना (साधना) करने दी। वैसा ही कर, कर्नरिपा वहीं बैठ कर साधना करते रहे।

उस वन से थोड़ी दूरी पर एक नगर बसा हुआ था। एक दिन दोनों आचार्य वहाँ भिक्षाटन करने गये। कर्नरिपा को बहुत अच्छा और स्वादिष्ट भोजन मिला और आचार्य को उतना अच्छा स्वादिष्ट नहीं मिला। इसको देखकर आचार्य ने कहा— तुम्हारा यह स्वादिष्ट भोजन, जो लोग दे रही हैं, वे स्त्रियाँ तुम पर आसक्त होकर दे

रही हैं, यह अच्छा नहीं है। इसे तुम वृक्ष के पत्ते पर मत लो, सुई से लेकर, सुई की नोक से जितना ले सको, उतना ही लो। दूसरे दिन उन्होंने वैसा ही किया, तो भात का एक ही दाना सुई पर लगा और वही खाकर (कर्नरिपा) रह गये।

दूसरे दिन स्त्रियों ने गेंहू के आटे से बहुत अच्छी पूड़ियाँ बनाई और उन पर अनेक स्वादिष्ट शाक रखकर उसे सुई की नोक पर चढ़ा कर आचार्य (कर्नरिपा) को दिया। कर्नरिपा ने उसे ग्रहण किया और अपने आचार्य को खिलाया। साथ ही स्वयं भी खाये। आचार्य ने पूछा—यह तुमने कैसे ग्रहण किया? कर्नरिपा ने उंत्तर दिया—जैसा गुरुजी ने निर्देश दिया है, मैंने वैसा ही करके ग्रहण किया है। तब आचार्य ने कहा, 'तुम नगर में मत जाओ, इस मकान में ही रहो। उन्होंने भी वैसा ही किया। उस मकान के समीप एक वृक्ष पर रहने वाली वृक्षदेवी प्रकट होकर मकान के अन्दर आई और उसने उन्हें अनेक स्वादिष्ट भोजन खिलाया तथा प्रणाम अभिवादन पूर्वक बातें भी की।

कर्नरिपा ने उसका भी भोजन (दान) ग्रहण करके अपने गुरु को खिलाया। गुरु ने पुन: पूछा कि तुमको इस तरह का भोजन कहाँ से मिला? उन्होंने कहा कि यह वृक्षदेवी ने दिया है। आचार्य ने इस बात की परीक्षा की और वृक्षदेवी के पास जाकर देखा, तो देवी का शरीर दिखलाई न पड़ा, पर उसके बाजू सहित हाथ दिखलाई पड़े। आचार्य ने उससे पूछा कि मेरे शिष्य को तुम साक्षात् शरीर दिखाती हो, पर मुझे नहीं दिखाती, यह क्यों?

वृक्षदेवी ने उत्तर दिया (वृक्ष से यह वाणी निकली) कि आप के अन्दर सभी प्रहातव्य क्लेश विद्यमान हैं, पर आपके शिष्य समस्त प्रहणीय क्लेशों से विशुद्ध हो चुके हैं, उन्होंने मुझे पूर्ण रूप से देख लिया है।

तत्पश्चात् आचार्य शिष्य दोनों में विचार-विमर्श करके यह तय हुआ कि रसायन खाना चाहिए। आचार्य ने कर्नरिपा अर्थात् आर्यदेव को रसायन औषधि दिया और स्वयं भी खाये। कर्नरिपा ने उस दवा को एक सूखे वृक्ष पर लेप दिया, फलत: वृक्ष से छाल-पत्तियाँ निकलने लगी। आचार्य ने जब इसे देखा तो थोड़ा-सा हँस कर कर्नरिपा से कहा—तुमने मेरी रसायन औषधि लकड़ी पर लगा दी, अब हमारा रसायन ले आओ। कर्नरिपा ने कहा कि यदि गुरुजी चाहें, तो अवश्य ले आऊँगा।

यह कहकर उन्होंने एक सुराही पानी से भर दी और उसमें थोड़ा-सा अपना मूत्र छोड़ दिया। उस पानी को फिर सूखी लकड़ी पर लगाया, तो पूर्ववत् उसमें छाल और पत्तियाँ उगने लगी। मालूम हो गया कि यह भी रसायन बन गया है। उसे लेकर आचार्य के पास गये और वह रसायन आचार्य को दे दिया। आचार्य ने कहा—यह इतना अधिक बन गया, कहकर उसे सूखे वृक्ष पर लगाया तो छाल और पत्तियाँ निकल आयी। यह तो आचार्य का अपने शिष्य के अन्दर ज्ञान उत्पन्न हुआ या नहीं, इसकी परीक्षा थी।

जब उनको यह मालूम हो गया कि शिष्य के अन्दर ज्ञान उत्पन्न हो चुका है तब उन्होंने कहा कि अब तुम संसार में मत बैठो। यह सुनते ही वह आकाश मार्ग से जाने के लिए भूमि से उड़े। कर्नरिपा के साथ जो पहले से ही (वृक्षदेवी) थी, उस लड़की को उन्होंने कहा कि आपने किस आशय से मेरी सेवा की है? लड़की ने उत्तर दिया मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैंने केवल आपकी आँख के प्रति आसक्त होकर आपकी सेवा की है, अत: मुझे आपकी आँख चाहिए। आचार्य ने अपनी एक आँख निकालकर उसे दे दी। फलत: सर्वत्र यह प्रसिद्ध हो गया कि—आर्यदेव 'एकाक्ष' (काने) हैं, इसीसे उनका नाम 'कानपा' प्रसिद्ध हो गया।

आर्यदेव अथवा कर्नरिपा के नागार्जुन के, उपदेश के अनुसार साधना-अभ्यास करने से चित्त के सभी मल विशुद्ध हो गये। सन्तति अति विशुद्ध एवं विमुक्त हो जाने से गुरु की वाणी सुनते ही आकाश में सात ताल के वृक्ष की बराबर ऊँचाई पर बैठकर, अपने अनेक लोगों को धर्म का उपदेश दिया और आशय और अध्याशय परिपाक कराया। जब अपने नीचे, अपने गुरु को रहते देखा, तो आकाश से ही नीचे सिर करके आचार्य को प्रणाम किया। जब ऊपर के आकाश में उड़े तो ऊपरी देवताओं ने पुष्प वृष्टि की। वहीं से वह अदृश्य हो गये।

आचार्य आर्यदेव अथवा कर्नरिपा, दो नाम वाले का वृत्तान्त समाप्त॥

१९. थकनपा का वृत्तान्त

गुरु थकनपा (ठगने वाला) का वृत्तान्त इस प्रकार है। इनका जन्म-स्थान पूर्वी भारत था। ये जाति के शूद्र थे, कर्म से अन्त (सबसे नीचे) क्रम में जीविका चलाने वाले थे।

वह एक दिन किसी वृक्ष की शाखा पर बैठकर यह सोच रहे थे कि लोगों से कैसे झूठ बोला जाय। इस तरह की कल्पना में लीन थे, तब तक उनके पास सुनिपुण एक भिक्षु पधारे और उन्होंने कहा— तुम यहाँ क्या करने बैठे हो?. उसने उत्तर दिया— आर्य मैं यह नहीं कह सकता। भिक्षु ने कहा— तुम झूठ न कहो और बोलो। यदि तुम झूठ बोलोगे, तो उसके परिणाम स्वरूप तुम नरक योनि में पैदा होगे। कर्म-निष्यन्द फल झूठ बोलने की इच्छा तुम्हारे अन्दर बराबर चलती रहेगी और तुम लोगों के अविश्वास के पात्र बनोगे। उसका अधिपति फल परलोक में अपने जीव पर खेत में हल की तरह चलेगा। भोग्य निष्यन्द-फ़ल, मुख से दुर्गन्ध आना, वचन का असत्य आदि होना और उसका पौरुष-फल, लावणिक-भूमि में पैदा होना, फल अन्नादि के रस हीन स्थान में पैदा होना आदि कहा गया है।

वह व्यक्ति झूठ बोलने के विपाक परिणाम, जो पहले नहीं सुने थे सुनकर बहुत भयभीत हो गया। सच बोलने लगा— आर्य! मैं तो थकनपा (ठगने वाला) नाम का आदमी हूँ। सदा झूठ ही बोला करता हूँ। सच तो एक बाल के शतांश (सौवें भाग) भी नहीं बोलता हूँ। अभी भी किस को क्या और कैसे झूठ बोलूँ, यही सोच रहा हूँ।

भिक्षु ने उससे कहा तुम कुछ धर्म-कार्य नहीं कर सकते हो?

थकनपा ने कहा धर्म तो अवश्य करना चाहता हूँ, किन्तु आरम्भ से झूठ बोलने की आदत बन चुकी है, अतः इसको छोड़ नहीं पाऊँगा।

भिक्षु ने पुनः कहा— झूठ बोलने पर भी धर्म चल सकता है। ऐसा उपदेश (उपाय) मेरे पास है। थकनपा इससे बहुत प्रसन्न हो गया और कहने लगा कि (वही) धर्म हमें चाहिए, आप दें।

उस समय भिक्षु ने उसके (थकनपा के) विचार, आशा और अध्याशय के अनुसार कान से पानी निकालने की विधि नामक (जैसे कान में पानी घुस जाने पर निकाला जाता है ऐसे) शिक्षा दी और झूठ ही झूठ का प्रतिपक्ष हो, ऐसी भावना के लिए उसे तैयार किया। इस सिलसिले में उन्होंने प्रथमतया (साधना) सन्तति परिपाक के हेतु उसे (थकनपा को) अभिषेक प्रदान किया। उनके द्वारा दिये, साक्षात् उपदेश इस प्रकार हैं—

'समस्त ज्ञेय धर्म आदि काल से ही झूठ मात्र हैं। देखे, सुने जानेवाले आदि छः विषयों के छः इन्द्रियों के द्वारा तुमने जो कुछ भी अनुभव किये हों, वे सब के सब झूठ हैं।

''इस प्रकार (उन) सबों की झूठेपन की भावना करो (=ये सब मात्र झूठ हैं ऐसी भावना करो) तथाहि—

यह प्रतिभासित भव धर्म के,

झूठेपन को न समझने से, (तुम) कहते हो मैं (मैंने) झूठ बोला वास्तव में ज्ञान-ज्ञेय सब के सब झूठ होते हैं। इस तरह छः इन्द्रिय समूह और छहों विषय॥ १॥

झूठ है इन में सत्य कहाँ हैं?

झूठ में सत्य का अध्यास होता है।

उस अध्यवसित सत्ता के कारण ही,

जीव सांसारिक दु:ख को भोगते हैं॥ २॥

अहो! बाल (जन) झूठ को न जानने से,

उसे सत्य के रूप में ग्रहण करते हैं।

इसी कारण वे ''गराड़ी-चरखे'' के तरह, बराबर संसार में भटकते हैं॥ ३॥

अत: सभी धर्मों के झूठेपन की भावना करो, जैसे शब्द झूठ है, उसी प्रकार रूप भी झूठ है।

१९. थकनपा

थकनपा दो नगरों के बीच में एक वृक्ष के मूल में बैठे हैं। उनके दोनों ओर नगर का दृश्य है। एक सिद्ध-ज्ञानी भिक्षु उनके सामने आकर कुछ पूछ रहे हैं। उनका चेहरा कुछ परेशानी की मुद्रा में है।

३०. नरोपा

नरोपा (नडपा) गहरे साँवले रंग के अर्थात् नील एवं लाल रंग मिश्रित काले रंग के हैं। सिर में जटा बाँधे हुए हैं। अस्थि से निर्मित आभूषण धारण किये हुए हैं तथा सहस्तपाद नरचर्म अधोवस्त्र के रूप में पहने हुए हैं और समाधिसूत्र या भावनासूत्र लगाकर कुछ हलके से क्रुद्ध भाव में भावना करते हुए बैठे हैं।

तद् विषयक चित्तादि की भी झूठेपन की भावना करो॥ ४॥

गुरु के यह कहने के बाद उन्होंने (थकनपा ने) समस्त ज्ञेय (ज्ञान धर्मों) के मिथ्यात्व या झूठेपन को समझा और उसकी भावना की। सात वर्ष की घोर भावना (साधना) के बाद उनमें समस्त दृश्य-जगत के झूठेपन (मिथ्यात्व) का ज्ञान उत्पन्न हो गया। समस्त धर्मों के मिथ्यात्व के ज्ञान से सत्याभिनिवेश का व्यावर्तन (मूल उच्छिन्न) हो गया।

तत्पश्चात् एक दिन उनके गुरु (वही भिक्षु, जिन्होंने उनको यह उपदेश दिये थे) आ गये। उन्होंने पुनः कहा—ये सभी धर्म झूठ के रूप में सिद्ध नहीं हैं, मिथ्यात्व में भी इनका अस्तित्व नहीं है। ये सब अनुत्पन्न, अनिरुद्ध स्वभाव शून्य हैं। तुम इस तरह की भावना करो (साधना करो)।

उन्होंने (थकनपा ने) भी यही किया और वैसा ज्ञान पाकर सभी तरह के विकल्प (बोधि) मार्ग के रूप में पाकर उन्हें परम सिद्धि की प्राप्ति हो गयी।

उनका नाम भी सर्वत्र गुरु थकनपा विख्यात हो गया। उस भाग्यशाली विनेय को उस परम गुरु ने 'कर्णे-पाताञ्जलि निःसरण अववाद' (कानों में घुसे पानी निकालने वाले उपदेश) नामक उपदेश देकर उसी शरीर के साथ उन्हें खेचर भूमि के लिए प्रस्थान करा दिया।

गुरु थकनपा का वृत्तान्त समाप्त॥

२०. गुरु नरोपा (नडपा) का वृत्तान्त

गुरु नडपा (नरोपा) जाति के मदिरा बेचनेवाले थे[१]। पर जाति (धर्म) से भ्रष्ट होकर वे पूर्वी भारत में सालिपुत्र नामक स्थान में (जीविका के लिए जंगल में) लकड़ी इकट्ठी करके बेचते थे। लकड़ी बेचते समय एक दिन उनको यह समाचार मिला कि विष्णुनगर नामक महानगर में एक बहुत बड़े विद्वान् तिल्लीपा रहते हैं। विष्णुनगर में पहुँचने पर लोगों से पूछा, तो लोगों ने कहा कि आचार्य यहाँ से भागकर चले गये हैं। यहाँ नहीं हैं। नरोपा ने सभी नगर और जगहों पर उन्हें खोजा, पर नहीं मिले। बहुत दिन के बाद अन्त में एक रास्ते में उन्हें वे मिले।

नडपा ने उन्हें प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम अभिवादन करके आचार्य से योगक्षेम पूछा तो तिल्लिपा ने कहा कि तुम्हारा गुरु, मैं नहीं हूँ, तुम मेरे शिष्य भी नहीं हो। यह कह कर वे क्रुद्ध होकर उन्हें मारने लगे। पर नडपा इससे विचलित नहीं हुए। मिट्टी के बर्तन में भिक्षा लेते रहे और गुरु को खिलाते रहे। पर गुरु ने भोजन को लेने के बाद अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन्हें पीटा तो भी नडपा उनके प्रति अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ उनसे बचा हुआ भोजन खाते और उसके बाद प्रदक्षिणा एवं प्रणाम करते रहे।

इस तरह वह रात होते ही वहाँ (गुरु के पास) आकर सोते और सबेरे दिन निकलते ही भिक्षाटन करने चले जाते थे, भिक्षा पाकर गुरु को खिलाते। इस प्रकार बारह वर्षों तक अथक सेवा की, तो भी गुरु ने उनके प्रति क्रोध के (कटुवचन) के अलावा एक शब्द भी सामान्य (शब्द या वाक्य) नहीं कहा।

---

१. टिप्पणी— ''नडपा'' को यहाँ मदिरा बेचनेवाली जाति का माना है। पर अन्यत्र प्राप्त नडपा के वृत्तान्तों में इन्हें ''क्षत्रिय'' कुल का माना गया है। पद्मकर इतिहास के अनुसार यह मूलतः काश्मीर के ब्राह्मण थे। वहाँ के ब्राह्मणों में आठ प्रकार के अलग-अलग कुल होते हैं। उनमें से नडपा राजशासन चलाने वाले राजकुल के ब्राह्मण थे। नडपा=नरोपा, शब्द ''नरोत्तमपाद'' शब्द का अपभ्रंश है। इनके पिता काश्मीर के राजा ''शुभवर्मा'' (या कल्याण वर्मा) थे। इनकी माता का नाम ''श्री-मति'' था। नडपा का मूल नाम ''समन्तभद्र'' था।

द्र० पद्मकर० इति० पृ० १२७/ भो०

एक दिन एक गृहपति के यहाँ विवाहोत्सव था। वहाँ जाकर भिक्षा माँगी तो बहुत से अच्छे-अच्छे भोज्य-पदार्थ विशेष रूप से चौरासी प्रकार के विभिन्न व्यञ्जन वहाँ बने हुए थे उनमें से 'पात' (पालक) की स्वादिष्ट एक सब्जी मिली। सब लेकर गुरुजी को खिलाया, तो गुरुजी ने उस दिन यह सब बड़े चाव से लिया और विशेषतया उस शाक को खाकर तिल्लिपा ने कहा—हे बेटा! इस प्रकार का खाना तुम्हें कहाँ से मिला?

इस कथन से नडपा इतने प्रसन्न हुए मानो, उन्हें प्रथम भूमि (प्रमुदित भूमि) प्राप्त हो गई हो। सोचने लगे कि मैंने बारह वर्षों तक इनकी सेवा की, पर इन्होंने मुझे तुम कौन हो? तक नहीं कहा। आज मुझे 'बेटा' कहकर सम्बोधन कर रहे हैं।

तिल्लिपा ने पुनः कहा— 'यह स्वादिष्ट सब्जी और भी ले आओ' ऐसा कहने पर चार बार वह उस सब्जी को लेने उस घर में गये। लोग भी सहर्ष उन्हें वह सब्जी देते रहे। जब पाँचवी बार गुरु ने उस सब्जी को लेने भेजा तो नडपा ने सोचा कि उसे माँगने जायें, तो अब शर्म भी आ रही है, न जायें तो गुरुजी नाराज हो जायेंगे फिर भी वह माँगने गये, तो उस समय घर के सभी लोग अन्य कामों में व्यस्त थे। अतः सब्जी नहीं मिलने पर नडपा ने उस सब्जी को बर्तन सहित उठाकर चुरा लिया और ले आकर गुरुजी को खिलाया, तो गुरुजी ने प्रसन्न होकर सब खा लिया।

इससे खुश होकर तिल्लिपा ने कहा हे बेटा! तुम उद्यमी बेटे हो, तुमने तो अच्छा उद्यम किया और मेरी परीक्षा की। यह कहकर प्रसाद एवं अभिषेक देकर (इन्हें परिपक्व किया और वज्रवाराही की दीक्षा (अववाद) दी। तदनुसार भावना(के माध्यम से साधना) करने पर छः महीने की अवधि में ही इन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया। उस समय से उनका नाम नडपा सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया।[१]

---

१. 'नडपा' के इस वृत्तान्त को किस स्रोत से ग्रहण किया गया, यह सही पता नहीं चला। नडपा की बहुत-सी जीवनियाँ पाई जाती हैं। उन सभी में प्रायः नडपा को क्षत्रिय कुल का कहा गया है। यहाँ 'नड' एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम है। 'नड' शब्द की व्युत्पत्ति (नल + अच्,

क्रमशः ....

सभी दिशाओं से लोग इनके पूजन के लिए आने लगे और सब आने वालों को इनके हृदय-प्रदेश से विशेष प्रकाश निकलता दिखलाई पड़ता था, कुछ लोगों को तो एक मास के दूर रास्ते से यह दिखलाई पड़ता था।

इन्होंने अपरिमित विनेय लोगों का (कल्याण) अर्थ पूरा किया और अन्त में इसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु नडपा का वृत्तान्त समाप्त॥

लस्य डत्वम् = नड) है; भारत में इस कुल के लोगों को चूड़ी बनाने का पेशा करनेवाली जाति माना जाता है। ये मदिरा बेचनेवाली जाति के नहीं थे।

दूसरा ये तिल्लिपा दर्शन से पहले नालन्दा महाविहार के महान् पण्डित थे और भिक्षु थे; यह निर्विवाद है। ये आचार्य दीपङ्कर श्रीज्ञान के भी गुरु थे। भोट्देशीय मारपा लोचावा के मूल गुरु थे। ये दसवीं-ग्यारहवीं सदी के महान् आचार्य थे। तिल्लिपा से भेंट होने के पहले की उनकी बहुत सी रचनाएँ भी हैं। तब इसे कैसे कहा जा सकता है कि तिल्लिपा से भेंट करते समय यह एक लकड़हारा थे? यह सब कुछ विचारणीय है।

२१. गुरु श्यालिपा का वृत्तान्त

श्यालिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— यहाँ श्यालिपा से तात्पर्य 'सियारवाला' है। इनका जन्मस्थान बल्हिपुर (विघपुर) था। यह जाति के शूद्र एवं मजदूरी से जीविका चलानेवाले थे।

विघपुर (बल्हिपुर) नामक नगर के समीप एक श्मशान था। उसके निकट रहनेवाले निवासियों में से एक व्यक्ति सियार की आवाज से अत्यन्त भयभीत हुआ करता था। सियार वहाँ रोज इकट्ठे होकर रात को आवाज करते थे, इससे रात-दिन वह व्यक्ति सियार के भय की ही चिन्ता में पड़ा रहता था।

एक दिन उसके पास एक भिक्षु आये और उससे भिक्षा देने के लिए कहा। उसने भिक्षु के चरणों में प्रणाम किया। सच्चे हृदय से वार्ता की, पानी पिलाया। भिक्षु ने दान की अनुशंसा (उपादेयता एवं पुण्य अर्जन की बात) का प्रवचन दिया।

उसके बाद उस आदमी ने कहा— हे आर्य! आपकी दान सम्बन्धी अनुशंसा एवं देशना बहुत अद्‌भुत है, पर इसके अतिरिक्त यदि कोई निर्भय होने का धर्म हो, तो वह मुझे अवश्य प्रदान करें। भिक्षु ने उससे पूछा कि तुम संसार के दुःख से डर रहे हो या किसी दूसरे से? उस व्यक्ति ने कहा— संसार के दुःख का भय तो सर्वसाधारण है पर मैं दुर्भाग्यवश श्मशान के निकट रहनेवाला होने से निरन्तर रात-दिन सदा सियार की आवाज से डरता हूँ। यदि इस डर की दवा कोई धर्म हो, तो मैं उसे अवश्य ही ग्रहण करूँगा।

भिक्षु ने कहा— उस भय की दवा, मंत्र एवं दीक्षा, तो मेरे पास है पर उसके लिए पहले अभिषेक करना होगा। तब उस व्यक्ति ने भिक्षु के चरणों में सोना, चाँदी आदि अनेक द्रव्य-दक्षिणा के रूप में समर्पित किया और उनसे अभिषेक ग्रहण किया।

उनका अववाद (दीक्षा) भय से भय प्रहाण का अववाद था। वह इस प्रकार है—

'तुम शत्रु आदि के भय से भयभीत नहीं हो, पर सियार के शब्द से भयभीत हो। अतः तुम इस लोक में जो भी शब्द-ध्वनि होती हो, सब की सब सियार

की आवाज से अभिन्न रूप में निरन्तर, रात-दिन, सदा यही भावना करते रहो। श्मशान में ही एक कुटिया बनाकर रहो। भिक्षु ने उसे यही उपदेश दिया।

उस व्यक्ति ने भी जैसा गुरुजी ने कहा, वैसा ही किया और भावना करते रहे। फलतः सभी शब्द शून्य-ध्वनि के गर्भ में सियार की आवाज से अभिन्न होकर खो गये, इस ज्ञान के अन्दर सियार की आवाज भी खो गयी। इस प्रकार उनमें स्वतः भय से मुक्त अभय महासुख की अनुभूति उत्पन्न होने लगी और इसी ज्ञान की नौ वर्ष तक भावना करते रहे। उनके काय एवं चित्त के सभी मल विशुद्ध होकर उन्हें महामुद्रा परमसिद्धि की प्राप्ति हो गई।

तत्पश्चात् एक सियार का शव कन्धे पर लेते हुए चर्या-विहार (चारिका) किया, तो दिग्-दिगन्त में उनका नाम योगी 'श्यालिपा' प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने विनेय जनों को अभिन्न शून्यता एवं प्रभास्वरता के अद्वैतभाव की अनेक देशनाएँ दी। अन्त में वह उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये।

गुरु श्यालिपा (श्यलिपा) का वृत्तान्त समाप्त॥

२१. श्यालीपा

श्यालीपा नृत्य अथवा बहुत प्रसन्न-मुद्रा में हैं। उनके सामने कपाल आदि श्मशान का दृश्य है। सियार का शव कन्धे पर रखा है, उसका सिर सामने की ओर लटक रहा है।

२२. तिल्लीपा

तिल्लीपा साँवले रंग के अर्थात् गहरे नील रंग के हैं। तिल कूट रहे हैं। उनकी पत्नी एक पात्र लेकर सामने से ओखली में तिल डाल रही हैं। वे पत्नी को ओर देखते हुए बड़ी प्रसन्न-मुद्रा में हैं।

२२. गुरु तिल्लिपा[१] का वृत्तान्त

गुरु तिल्लिपा का जन्म स्थान विष्णुनगर (सम्भवत: पूर्वी भारत) था। विष्णुनगर नामक स्थान में आचार्य तिल्लिपा नामक एक महान् विद्वान् रहते थे। वह राजपुरोहित थे। एक दिन में पाँच सौ माषक उनका खर्च था। वह अपरिमित शिष्य-समुदाय के बीच धर्म-उपदेश किया करते थे। इस व्यस्तता में एक दिन उन्हें यह विचार आया कि मेरे जन्म के इस तरह की व्यर्थता में बिताने से क्या होगा? यह सोचकर वे कई बार घर से भाग गये, पर परिवार के लोग उन्हें पकड़-पकड़कर ले आये और उन्हें जाने नहीं दिया। एक दिन आचार्य ने अपना चीवर वहीं छोड़ दिया और एक सिला हुआ वस्त्र धारण किया। घर में एक पत्र लिखकर रख दिया कि अब मैं लौटकर नहीं आऊँगा। लौटानेवाले न आयें। वह रातों-रात भागकर काञ्ची नगर में पहुँचे। उस नगर के श्मशान में अपने रहने की जगह बनाई और रहने लगे। भिक्षाटन करते हुए उन्होंने जीविका चलाई और साधना करते रहे।

एक दिन नारोपा(नडपा) से उनकी भेंट हुई। नडपा ने उनकी जीविका जुटाई और नडपा के लाभ-सत्कार ग्रहण करते हुए दश वर्षों तक वह साधना करते रहे। दस वर्ष में उनके सभी मल विशुद्ध होकर महामुद्रा परम सिद्धि का लाभ हुआ। देवलोक में गये, तो सभी देवताओं ने देव - नैवेद्य से उनका लाभ-सत्कार किया। काय-वाक्-चित्त सभी सिद्धियाँ प्राप्त होने के कारण सर्वत्र उनका नाम तिल्लिपा प्रसिद्ध हो गया।

अनेक विनेय जनों को (बोधि) पथ में आरूढ करके अन्त में उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु तिल्लिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. 'तेलोपा',—नामावली—डुवथब कुनतु पृ० ६१; बी० एन० ४० दिल्ली संस्करण।

२३. गुरु चत्रपा का वृत्तान्त

'चत्रपा' का अर्थ-धर्म की पोथी उठाकर भिक्षाटन करनेवाला है। उनका जन्म-स्थान सेन्धोनगर था। उस नगर में व्याकरण की पोथी हाथ में उठाकर वह सदा लोगों से भिक्षा माँगने जाते थे।

एक समय एक सुअभ्यस्त योगी से उनकी भेंट हुई। उस योगी ने कहा— तुम क्या कर रहे हो?

उस ने कहा— मैं जीविका के लिये भिक्षा माँग रहा हूँ।

उस योगी ने फिर कहा— तुम्हें परलोक का पथ्य नहीं चाहिए?

उसने कहा उस मार्ग को हम कैसे सोचें?

योगी ने उसको हेवज्र के मण्डल में अभिषिक्त कर दीक्षा दी। उनका दीक्षा प्रवचन इस प्रकार है—

सभी पापों की प्रतिदेशना करो,

अहोरात्र नित्य महासुख की भावना करो

पूर्व जन्मों में जो कुछ किया है,

उसे इस जन्म के शरीर में देखो,

अपर (जन्म) में जो कुछ होना है, वह अब इस

जन्म के चित्त पर निर्भर करता है॥ १॥

इस प्रकार की देर तक भावना करो तो,

(तुम्हें) इसी जन्म में बुद्धत्त्व की प्राप्ति होगी,

उसके लक्षण भी क्रमशः (प्रकट) होंगे॥ २॥

'चत्रपा' इन वचनों का अर्थ नहीं समझ पाये और उन्होंने अपने गुरु से कहा— 'यह मैं नहीं समझ पाया हूँ'।

२३. चत्रपा

चत्रपा भिक्षु वेश में और चलने की मुद्रा में हैं। पीठ में पोथियाँ उठाये हुए हैं और हाथ में भी एक छोटी-सी पोथी लिये हुए हैं।

२४. भद्रपा

भद्रपा गम्भीर स्वभाव के हैं। वे भावनासूत्र तथा जनेऊ धारण किये हुए बैठे हैं। सँवरे बाल और हलके आभूषण से विभूषित हैं। एक ओर कुछ ऊँचे स्थान पर उनके गुरुजी शिखा बाँधे हुए बैठे हैं। सामने मदिरा से भरा कलश और उस पर सुअर का मांस रखा हुआ है।

पुनः गुरु ने कहा— पाप से तात्पर्य अविद्या से है और उससे नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं। भवलोक को 'महामुद्रा' के रूप में जाननेवाली दृष्टि से पाप की शुद्धि होती है। अहोरात्र सुख की भावना से अभिप्राय सदा करुणा की भावना करने से है। इससे स्वयं के अन्दर सुखोदय होना एक स्वाभाविक धर्मता है। पूर्व-अपर जन्म के कर्मों को अभिनिवेश पूर्वक ग्रहण न करें, तो तत्बलेन चर्या पूर्ण हो जाती है।

'आगे क्या हो' से तात्पर्य—सुख-दुःख सबका सब चित्त से ही उत्पन्न होता है, चित्त में अब भी (उनका कारणभूत) अभिनिवेश है या नहीं, देख लेना।

इस प्रकार दीर्घकाल तक—से तात्पर्य-उद्यम को बढ़ाकर (प्रयत्न को बढ़ाकर) अविक्षिप्त रूप से अपने चित्त में देखना है।

इस प्रकार सदा भावना करने से चित्त-गत भ्रान्तियाँ परिनिवृत्त होकर इसी जन्म में फूल रूपी बुद्धत्व की प्राप्ति हो जाती है।

गुरु ने इस प्रकार की देशना दी। तदनुसार चत्रपा अपने स्थान सेन्धोनगर में भावना करते रहे।

छः वर्ष के बाद उन्हें महामुद्रा परमसिद्धि का लाभ हुआ। उनका नाम सर्वत्र 'चत्रपा' प्रसिद्ध हुआ। सातवें वर्ष पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु चत्रपा का वृत्तान्त समाप्त॥

२४. गुरु भद्रपा का वृत्तान्त

गुरु भद्रपा जाति के ब्राह्मण थे। वे "मणिधर[१]" प्रदेश के रहनेवाले थे।

उस स्थान में एक ब्राह्मण अपने परिवार के साथ एवं धन-धान्य से परिपूर्ण जीवन बिता रहे थे। वे सदा उद्यत-चित्त के साथ रहते थे। एक समय परिवार के सब लोग बाहर स्नान के लिए गए हुए थे और वह अकेले घर में थे, उनके पास तभी एक सुअभ्यस्त शिक्षित योगी आ पहुँचे। उन्होंने उनसे खाना माँगा। ब्राह्मण ने कहा—तुम गन्दे हो। हमारे परिवार के अन्य लोग मेरी निन्दा करेंगे। तुम यहाँ से शीघ्र जाओ। योगी ने कहा— हे ब्राह्मण! गन्दा किसको कहते हैं?

ब्राह्मण ने उत्तर दिया— शरीर से स्नान न किया हो, वस्त्र न हो, कपाल का बर्तन लिया हो, खाना गन्दा खाता हो, नीच जाति का हो, उसे गन्दा कहते हैं, तुम यहाँ से शीघ्र जाओ। योगी ने कहा— ये सब गन्दे नहीं हो सकते (अर्थात् तुम्हारी 'गन्दे' की परिभाषा गलत है)। काय, वाक् और मन से अकुशल ही गन्दा है, अशुचि है। शरीर धोने से चित्त का मल साफ नहीं हो सकता। जिसने गुरु के वचन (दीक्षा) द्वारा चित्त का मल धोया हो, वही शुद्ध होता है।

और भी—

महायाण गोत्रीय उत्तम होता है,
जैन ब्राह्मण ऐसा नहीं है।
काय आदि का अकुशल मल,
परम्परागत गुरु उपदेश से॥ १॥
धोये हो तो (वही) अनुत्तर शुद्धि है,
पानी से धोयी शुद्धि ऐसी नहीं है।
निरासक्त पात्र और भोजन उत्तम है,

---

१. सम्भवतः— मणिपुर।

शुक्ल त्रयादि[१] (भोजन) ऐसा नहीं है॥ २॥

यह (दोहा) कहने पर ब्राह्मण के मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई और उसने कहा— आप इस तरह की मुझे दीक्षा दो।

योगी ने कहा— पहले मुझे खाना दो। फिर वैसा करूँगा।

ब्राह्मण ने कहा— यदि मैं यहीं बैठकर आप से धर्मोपदेश सुनूँ तो परिवार के लोग और अन्य लोगों को अच्छा नहीं लगेगा उन्हें श्रद्धा नहीं है।

जहाँ आप रहते हैं (धर्मोपदेश सुनने के लिए) मैं वहाँ आऊँगा। आप कहाँ रहते हैं?

योगी ने कहा—मैं श्मशान में रहता हूँ। सुअर का मांस एवं मदिरा लेकर तुम वहीं आओ।

ब्राह्मण ने कहा— हम ब्राह्मण लोगों के लिए मदिरा एवं शूकर के मांस का नाम तक का उच्चारण करना अनुचित है, तो वहाँ कैसे ले आ सकते हैं?

योगी ने कहा— यदि तुम्हें दीक्षा चाहिए तो ले आना।

ब्राह्मण ने कहा— दिन में तो मैं वहाँ नहीं आ सकूँगा। रात को वैसा करके आऊँगा।

तत्पश्चात् रात में ब्राह्मण ने अपनी वेश-भूषा बदली और बाजार में जाकर मदिरा एवं शूकर का मांस खरीदा। उसे लेकर श्मशान गया। योगी को उसे खिलाया।

योगी ने उसको स्वयं तो खाया ही, ब्राह्मण को भी खिलाया। उसके बाद "अधिष्ठान-उत्क्रान्ति" नामक अभिषेक देकर (उसे दीक्षित किया) ब्राह्मण को अभिषेक के लिए मण्डल अर्पण करने को कहा और उसने वैसा ही किया। ब्राह्मण के मन में निहित जाति-विकल्प को तोड़ने के लिए वहाँ उनसे झाड़ू देकर सफाई

---

१. शुक्लत्रय तीन प्रकार की सफेदी वाला भोजन = दूध, दही और नवनीत की मक्खन = से निर्मित नैवेद्य खाना।

कराई और इसके द्वारा दृष्टि (विशुद्धि) का संकेत दिया। उसके बाद उनसे वहाँ लिपाई भी करवाई। इसके द्वारा 'चर्या' विशुद्धि का संकेत दिया, लिपाई के रंग द्वारा भावना का संकेत दिया गया। इन तीनों (दृष्टि, चर्या और भावना) के एकत्व (अर्थात् अद्वैत भाव) से फल का संकेत दिया गया है। उसके बाद, ब्राह्मण ने उपर्युक्त सभी संकेतों का अभिप्राय समझ लिया। फलत: उन्हें भवलोक की भ्रान्तिओं (के अस्तित्व) की विवर्त-मात्रता का अवबोध हो गया। उसने सभी प्रकार के जाति विकल्पों का परित्याग कर दिया और योग में प्रवेश लेकर भावना की। छ: वर्ष की अवधि में उसे 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हो गया। सर्वत्र योगी भद्रपा के नाम से वह प्रसिद्ध हो गये।

अनेक जगत् कल्याण करने के बाद पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ वह उसी शरीर से खेचर भूमि चले गये।

गुरु भद्रपा का वृत्तान्त समाप्त॥

२५. धुखन्तिपा

धुखन्तिपा श्मशान में बैठे हुए हैं। श्मशान के बहुत से चिथड़े (कफन) इकट्ठे करके हाथ से सिल रहे हैं। वे प्रसन्न-मुद्रा में हैं।

२६. गुरु योगिपा

योगिपा (या अयोगिपा) श्मशान में सो रहे हैं अर्थात् लम्बे होकर लेटे हैं। वे लम्बी जटा की शिखा बाँधे हुए हैं।

२५. गुरु धुखन्धि का वृत्तान्त

गुरु धुखन्धि, धुखन्धि का अर्थ दो का एक करनेवाला है। इनका जन्म-स्थान गन्धापुर (सम्भवत: गन्धार) था। वह जाति से भिखारी कूड़ा-कर्कट उठाने वाले, (संभवत: जमादार) थे। एक दिन एक निपुण योगी उनके निकट आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा—तुम व्यर्थ इस तरह के दु:ख क्यों भोग रहे हो? क्या कोई धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उसने कहा— मुझे धर्म उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा— मैं दूँगा, यह कहकर उन्होंने उस (व्यक्ति) को श्रीचक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया और उत्पत्ति तथा सम्पन्न-क्रम दोनों की युगल भावना की देशना दी। जब वह भावना करता तो कपड़ा (चिथड़े) सिलाने के विकल्प ने उसे भावना करने में अनिच्छा पैदा कर दी।

पुन: उन्होंने योगी से कहा कि हे योगी महाराज! मेरे चित्त-विकल्प से विक्षिप्त होकर मन में भावना करने में अनिच्छा पैदा हो रही है। इस पर योगी ने कल्पना को मार्ग में बदलने की देशना दी। वह इस प्रकार है—

'धर्मों के तात्विक रस में सीना, सिलाई कुछ नहीं होती इष्टदेव और मंत्र भी वैसे ही हैं, तीनों (के प्रकार इस) का ज्ञान ही धर्मधातु है[१]।'

उस (जमादार) ने भी वैसी भावना की, तो कपड़े सिलने की कल्पना देवता और मंत्र तीनों धर्मता के रस में खो गये। उसे उत्पत्ति और सम्पन्न-क्रम का युगनद्ध ज्ञान उत्पन्न हो गया। बारह वर्षों तक साधना करने पर उसे 'महामुद्रा परमसिद्धि' की प्राप्ति हो गई। तत्पश्चात् अपरिमित जगत्-कल्याण के बाद वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु धुखन्धि का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. अर्थात्- तात्विक अर्थों में सीना और सिलाई का कोई अपना स्वभाव नही होता है, ठीक वैसे ही इष्टदेव और उसके मंत्रों का स्वभाव है। इन तीनों की नि:स्वभावता का यथार्थ ज्ञात हो जाता है, वही धर्मधातु के स्वभाव का साक्षात्कार है।

२६. गुरु अजोगी का वृत्तान्त

गुरु अजोकि (अजोगी-अयोगी) का अर्थ है, आलस्यवाले, आलसी। इनका जन्म-स्थान पाटलिपुत्र था। वहाँ एक गृहपति का पुत्र बहुत अधिक मोटा हो जाने से चारों चर्या (खाना, शौच करना आदि) सोकर ही किया करता था। उसके माता-पिता एवं सभी सम्बन्धियों ने यह कहकर कि इस तरह के पुत्र से क्या हो सकता है, अपशब्द कहते हुए उसे श्मशान पहुँचा दिया।

वह श्मशान में ही सोता रहा, एक दिन वहाँ एक योगी आये और उस सोये हुए लड़के को देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। योगी ने नगर से खाना आदि ले आकर उसे खिलाया, पर उसे खाना खाते समय भी नहीं उठते देखकर योगी ने कहा— तुम खाना खाते समय भी नहीं उठ पाते, तो लौकिक कार्यों में कौन-सा काम कर पाओगे?

उस व्यक्ति ने कहा— मेरे कुछ भी करने में असमर्थ होने के कारण मेरे माता-पिता ने मुझे यहाँ त्याग दिया है।

योगी ने कहा— क्या तुम सोते हुए कुछ धर्म-कार्य कर सकोगे?

उसने उत्तर दिया— कर तो सकता हूँ, परन्तु मेरे जैसे को धर्म-उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा— मैं देता हूँ। यह कहकर योगी ने उसको 'हेवज्र' के मण्डल में प्रवेश कराया और अभिषेक दिया तथा अगम्भीर[१] सम्पन्नक्रम का उपदेश दिया और कहा कि ऊर्ध्व द्वार के, नासिका के अग्रभाग में सरसों के बराबर बिन्दु के अन्दर त्रिसहस्र लोक धातु (पूर्ण रूप से) समाविष्ट कर भावना करो।

उस व्यक्ति ने पूछा— ऐसा करने पर क्या-क्या लक्षण प्रकट होंगे?

---

१. यहाँ अगम्भीर से तात्पर्य सप्रपञ्च सम्पन्न-क्रम से है।

योगी ने कहा— अभ्यस्त हो जाने पर समझ में आयेगा। उसने वैसी ही भावना की, तो सरसों के बराबर बिन्दु एवं त्रिसहस्त्र लोक, दोनों शून्यता के रस में खो गये और उन्हें शून्यता, महामुद्रा का ज्ञान प्राप्त हो गया। नौ वर्षों तक इसी की भावना करने पर उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हुई।

अनेक जगत्-कल्याण के बाद उसी शरीर के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु अजोगी का वृत्तान्त समाप्त॥

२७. गुरु कलपा का वृत्तान्त

कलपा का अर्थ है विक्षुब्ध। इनका जन्म-स्थान राजपुर था। इनके गुरु एक सुअभ्यस्त सन्ततिवाले योगी थे।

कलपा पूर्व जन्म में की गई क्षान्ति भावना के फलस्वरूप अत्यन्त सुडौल और सुन्दर शरीर के थे। राजपुरी के सभी लोग इन्हें देखने के लिए इनके पीछे पड़ते थे। वह इस घटना से अत्यन्त उद्विग्न और क्षुब्ध होकर एक दिन श्मशान में जा बैठे, तब तक एक बड़े निपुण योगी वहाँ आ पहुँचे।

योगी ने कहा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उन्होंने कहा—मुझे नगर के सभी लोगों ने चैन से रहने नहीं दिया, इसलिए यहाँ आकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा— तुम्हें कोई धर्मोपदेश तो नहीं चाहिए?

उन्होंने कहा— धर्मोपदेश तो अवश्य ही चाहता हूँ, पर मुझे यह कौन देगा?

योगी ने कहा— यदि तुम्हें धर्म की आवश्यकता हो, तो मैं देता हूँ, यह कहकर इन्हें 'चक्रसंवर' के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया। दीक्षा देकर इन्हें 'उत्पत्ति' एवं 'सम्पन्न-क्रम' की भावना करने दिया। फलतः इन्हें उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम का युगनद्ध ज्ञान हो गया और इनके अन्दर स्व और पर के द्वैतभाव का आलम्बन खो गया। उस के बल से उत्पन्न मुक्त चर्या का आचरण किया तो राजपुरी के सभी उन्हें पागल कहने लगे।

तब इन्होंने निम्न दोहा कहा—

आत्म-ग्रहण से पर को देखता है, द्वैतभाव से दुःख पैदा होता है,

प्रबुद्ध ऐसा जानने से, विकल्प देव-मण्डल।

(एवं) 'अ' अक्षर के अन्दर में ही, जैसे इन्द्रधनुष आकाश में तिरोहित होता है; उसी प्रकार उत्पन्न, निरोध, स्थिति तीनों, चर्या पागल मैंने नहीं किया।

२७. गुरु कणकणपा

कणकणपा श्मशान में बैठे हुए हैं। रूप-रंग के बहुत सुन्दर हैं। हलकी-सी जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। भावना-सूत्र धारणकर समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। सामने एक स्त्री खड़ी है।

२८. धोबीपा

धोबीपा नदी के समीप बैठे हुए हैं। बहुत से पुराने कपड़े लेकर नदी में धो रहे हैं। बहुत दूर देख रहे हैं तथा अन्दर से गम्भीर चिन्तन का भाव झलक रहा है।

सुखी है, अद्वैत बल से सम्भूत चर्या,

सुखी है अनिरोध प्रभास्वर ज्ञान;

अनिरुद्ध छः विज्ञान-समूह की भावना सुखी है, सुखी है निराभोग फल की प्राप्ति।

यह कहकर वह आकाश में सात ताड़ वृक्षों की ऊँचाई तक ऊपर उड़ गये और अनेक प्रतिहारियाँ (चमत्कार)दिखाये।

उनका नाम सर्वत्र 'गुरु कलपा' प्रसिद्ध हो गया। अन्त में वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु कलपा का वृत्तान्त समाप्त॥

२८. गुरु धोबीपा का वृत्तान्त

गुरु धोबीपा जाति के धोबी थे और उनका जन्म-स्थान सालिपुत्रनगर (शारिपुत्रनगर) था। उस नगर में वह और उनका पुत्र, दोनों सदा कपड़ा धोने का कार्य करते थे, इसी से वे अपनी जीविका चलाते थे।

एक दिन एक बड़े योगी उनके यहाँ आये और उन दोनों पिता-पुत्र से खाना माँगा। उन दोनों ने योगी को खाना खिलाया और पूछा कि 'भन्ते' आपके कोई कपड़ा धोना तो नहीं है? यदि हो तो, हम लोग धो देंगे। योगी ने एक कोयले का टुकड़ा हाथ में उठाकर कहा— इसको धोने पर मल से शुद्ध हो सकता है?

धोबी के बेटे ने उत्तर दिया—कोयला तो स्वभाव से ही काला है, इसे धोकर सफेद नहीं किया जा सकता।

योगी ने कहा—तुम लोगों ने बाहर के मल तो साफ किए, पर इसके अन्दर के तीनों क्लेशों का मल शुद्ध नहीं होता और बाहर के स्नान से आदमी शुद्ध होता हो, ऐसा मैं नहीं देखता। अतः सदा स्नान करने की आवश्यकता न हो, एक ही स्नान से शुद्ध हो जाने की दीक्षा मेरे पास है। वह तुम्हें नहीं चाहिए?

धोबी (पिता-पुत्र) ने कहा— महाराज! यदि ऐसा हो तो हमें अवश्य चाहिए। योगी ने धोबी के पुत्र को वहीं श्रीचक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक, दिया। मंत्र, मुद्रा और समाधि के द्वारा अधिष्ठित किया तथा उपदेश दिया। (तदनुसार उन्हें साधना में लगाया) साधना करने पर बारह वर्ष के बाद मुद्रा के द्वारा शारीरिक मल की शुद्धि हो गई। मंत्र से वाक्-मल की शुद्धि हो गयी और समाधि के द्वारा चित्त सम्बन्धी मल की विशुद्धि हो गई।

उनका उपदेश इस प्रकार है—

प्रज्वलित मुद्रा-जल के द्वारा, शारीरिक मल धोया जाता है

अलि-कलि जल द्वारा, वाक्-मल धोया जाता है,

वीर-माता-पिता के योग से, चित्त-मल का समुच्छेद किया जाता है।

इस प्रकार उन्होंने, 'काय मुद्रा' 'वाक् जप' और चित्त-उत्पत्ति एवं 'सम्पन्न-क्रम' की अविरल भावना की। फलस्वरूप उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हो गई। उस समय पानी में गन्दे कपड़े छोड़ देने पर बिना धोये विशुद्ध होते सब लोगों ने देखा। लोगों को यह मालूम हुआ कि इन्होंने विशेषता प्राप्त की है।

इनका नाम भी सर्वत्र धोबीपा प्रसिद्ध हो गया। बहुजन-हितार्थ साधने के बाद सौ वर्ष की अवस्था में वे उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि गये।

गुरु धोबीपा का वृत्तान्त समाप्त॥

२९. गुरु कङ्कनपा का वृत्तान्त

गुरु कङ्कनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—इनका जन्म-स्थान (सिन्ध) विष्णुनगर था। जाति के यह क्षत्रिय थे। उक्त नगर में एक राजा रहता था, जिसकी अपार सम्पत्ति थी और उसका राज्य बहुत सम्पन्न था। काम-गुणों के भोग में कोई कमी नहीं थी। वैसे दिन बिताते समय एक दिन एक सुनिपुण योगी उस (राजा) के पास आ पहुँचा और उससे भिक्षा माँगी। राजा ने उसे बहुत उत्तम भोजन कराया।

(भोजन समाप्ति के बाद) उस योगी ने राजा से कहा— हे राजन्! राजश्री निःसार है, भवगतश्री से सब कुछ दुःख ही हुआ करते हैं। जन्म-मरण, पानी की चरखी (गराड़ी) के समान घूमते हैं; विभिन्न दुःखों का कोई अन्त नहीं है। स्वर्ग-सुख का भी एक परिणाम दुःख है। त्रिसहस्र का चक्रवर्ती राजा भी दुर्गति में उत्पन्न होता देखा जाता है। अतः इस प्रकार के आडम्बरपूर्ण काम-गुण, जो तृणों पर जमे ओस-बिन्दु के समान हैं, के प्रति आसक्ति छोड़कर महाराज आप धर्म ग्रहण करें।

राजा ने उत्तर दिया—योगी महाराज! यदि काम-गुणों को बिलकुल न त्यागे कोई धर्म साधना होती हो, तो अवश्य ही करूँगा, अन्यथा सिले वस्त्र एवं भिक्षा से भोजन पूरा करके, मैं जीवित नहीं रह सकूँगा।

योगी ने कहा— सिले गये वस्त्र (चिथड़े) और भोजन भिक्षा पर निर्भर हो तो बहुत उत्तम है। अतः आपको भी इसका सेवन करना होगा।

राजा ने कहा—सिलाए गये वस्त्र, खाने का बर्तन, कपाल और (लोगों के द्वारा प्रदत्त) बासी खाने से मुझे बहुत घृणा आती है। यह हम से सम्भव नहीं है।

योगी ने कहा—तुम इस तरह का अभिमानपूर्वक राज-कार्य करोगे तो अन्त में दुर्गति का दुःख भोगना (ही) पड़ेगा। मुझे सिले वस्त्र (चिथड़े), बासी खाने और कपाल का पात्र ग्रहणकर घूमने पर भी फल अनास्रव-सुख की प्राप्ति होगी। अतः हम दोनों का राज्य बहुत भिन्न है। फिर भी काम-भोग बिना त्यागे धर्म की साधना करने का उपाय (मेरे पास) अवश्य है।

२९. गुरु कङ्कनपा

कङ्कनपा अपने हाथ के कङ्कण-प्रभा को देख रहे हैं। इसी पर उनकी समाधि लगी है। हलके अलङ्कार एवं भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं। सामने आकाश की ओर से कुछ देवी-देवता उनकी पूजा कर रहे हैं।

३०. कम्बलपा

कम्बलपा भिक्षु के वेश में हैं। ये पत्थर की चट्टान के बीच गुफा के अन्दर समाहित-मुद्रा में बैठे हुए हैं।

राजा ने कहा—तब तो मैं अवश्य ही धर्म ग्रहण करूँगा, आप दें।

तत्पश्चात् योगी ने राजा से कहा— हे राजन्! तुम अपने हाथ के प्रज्वलित रत्न कङ्कण के प्रति आसक्ति और अभिमान त्याग दो। उस कङ्कण में जटिल प्रज्वलित रत्न-प्रभा एवं निरासक्त-चित्त दोनों को एक करके (अद्वयभाव से) भावना करो।

(इस सम्बन्ध में कहे दोहे निम्न प्रकार हैं)—

कङ्कन के सुप्रज्वलित प्रभा को देख अपना चित्त भी सुखी,
बाह्य नाना प्रत्ययों से अनेक वर्ण आ भी जाय।
परिवर्तन नहीं आता उसके स्वभाव में तत्सदृश नाना आभासों से,
विविध विकल्प-स्मृतियाँ आ भी जाय चित्त प्रज्वलित रत्नवत्।

इस देशना के बाद, राजा ने दाहिने हाथ के कङ्कण (जो प्रज्वलित रत्न-जटित सुवर्ण का बना हुआ था) को आलम्बन बनाकर उसी में चित्त लगा कर भावना की। छः महीने में ही उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गयी।

एक दिन उनके नौकरों ने बन्द दरवाजे के छिद्र से देखा, तो उन्हें (अन्दर) अनेक देवनारियों से परिवृत देखकर सब लोग अचम्भित हो गये। अन्दर जाकर उनसे उपदेश के लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने (राजा ने) अपने मुख से कहा—

निम्न दोहा—

चित्त ज्ञान ही राजा है, राज्य है महासुख,
(दोनों की) युगनद्ध (स्थिति) है परम भोग, राजा चाहो, तो वैसा ही करो।

उसके बाद वे अपने परिवार और विष्णुनगर के (बहुत से) नागरिकों को साथ लेकर पाँच सौ वर्ष की अवस्था में उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये। उनका नाम सर्वत्र कङ्कणपा प्रसिद्ध हो गया।

गुरु कङ्कणपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३०. गुरु कम्बलपा का वृत्तान्त

कम्बलपा का जन्म-स्थान 'ककरम' (सम्भवतः कांगड़ा या कंगढ़) था।

वे जाति के राजपूत थे। उनकी गुरु उनकी जन्मदाता माँ ही थी और इष्टदेव श्रीमहासुख अथवा चक्रसंवर थे।

एक समय ककरम प्रदेश में एक राजा अस्सी लाख जनसंख्या के जनपद पर राज करते थे। उनके दो पुत्र थे। पिता के देहान्त होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र को वहाँ की जनता ने राजगद्दी पर बैठाकर राज्याभिषेक कराया, क्योंकि वे बहुत भद्र स्वभाव के थे।

उनके पुण्य (सौभाग्य) से जनता बड़ी सुखी और धन-धान्य से परिपूर्ण थी। वह सोने, चाँदी आदि के बर्तनों को खाने-पीने के लिए उपयोग किया करते थे।

राजपुत्र को राजगद्दी पर बैठे छः महीने बीत गये पर उनकी माँ से उनकी भेंट नहीं हुई। एक दिन उन्होंने पूछा— मेरी माँ कहाँ गई? यहाँ क्यों नहीं आती? लोगों ने उत्तर दिया— माँ, पिताजी के देहावसान से दुःखी होकर बैठी हैं, इसलिए वह यहाँ नहीं आती।

एक वर्ष के बाद माँ उनके पास आई और रोने लगी।

राजा ने पूछा कि हे माँ! आप क्यों रो रही हैं?

माँ ने कहा—तुम रत्न-जटित सिंहासन पर बैठकर राज कर रहे हो? यह देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ इसलिए रो रही हूँ?

राजा ने कहा—यदि माँ इससे अप्रसन्न हो, तो छोटे भाई को राज सौंपकर मैं परिव्राजक बन जाऊँ?

माँ ने उत्तर दिया—यह तो उचित ही है।

उन्होंने तत्काल छोटे भाई को राज सौंप दिया और स्वयं घर छोड़ परिव्राजक हो गये। वे तीन सौ भिक्षु शिष्यों के साथ एक विहार में रहने लगे। पुनः उनकी माँ

वहीं आकर रोने लगी, फिर पुत्र ने माँ के चरणों में प्रणामकर, कारण पूछा— हे माँ! आप फिर क्यों रो रही हैं?

माँ ने उत्तर दिया— तुम परिव्राजक भिक्षु होकर भी राजा की तरह से परिवार और सभा-संघ के अन्दर विराजमान हो, यह देखकर मुझे बड़ा दु:ख हुआ इसलिए रो रही हूँ।

पुत्र ने फिर माँ से पूछा— फिर क्या करूँ?

माँ ने कहा— संघ-सभा त्यागकर, विरक्ति की जगह में बैठो।

राजकुमार विहार त्यागकर, शून्य जगह पर एक वृक्ष के मूल में बैठे, पर पुण्य से सम्बन्धित खाना-पीना आदि बहुत मात्रा में प्राप्त होता रहा।

पुन: उनकी माँ वहाँ आई, उन्हें देखकर रोने लगी।

पुत्र ने माँ के चरण में प्रणाम किया और पूछा— अब माँ क्या करूँ?

माँ ने कहा— परिव्राजक भिक्षु के लिए अतिरिक्त व्यर्थ जीविका-सामग्री रखकर क्या करोगे?

उन्होंने चीवर-पात्र सब वहीं छोड़कर योगी का रूप धारण किया और अन्य प्रदेश चले गये।

वास्तव में उनकी माँ एक डाकिनी थी, उनको (राजकुमार) जाते समय एक रास्ते में पुन: माँ आ मिली। वह रास्ते में ही अपने पुत्र को श्रीसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक और धर्म-उपदेश दिया। बारह वर्ष के उपरान्त वह 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त होकर उड़ते हुए वहाँ से निकले, तो पुन: उनकी माँ अनेक डाकिनियों के साथ आकर अपने पुत्र से बोली—तुम्हारे सत्त्वार्थ (जगत् कल्याण) छोड़कर आकाश मार्ग से जाने में कौन-सी आश्चर्य की बात है? ऐसा पक्षी भी कर सकते हैं। जगत् कल्याण का काम करो।

तब वह पश्चिमी (भारत) ओग्यन (ओडियान) के मालापुर (मालपुर)[१] नामक प्रदेश में ढाई लाख अवधि के नगर में गये। (उस नगर के एक कोने में) 'करवीर'

नामक गाँव के फनशीला नामक आरण्यक-वन में 'तलचि गुफा' नामक एक गुफा थी, वहीं बैठकर उन्होंने साधना करना आरम्भ किया। यह बात वहाँ की बहुत-सी चुड़ैल, जो वहाँ रहती थी उन लोगों ने जान लिया। एक चुड़ैल पद्मदेवी नामक चुड़ैलों की प्रधान थी। उसे इस घटना की जानकारी दी गई, वह आचार्य को विघ्न डालने के लिए अनेक सहेलियों के साथ उस स्थान में आई।

उस समय आचार्य एक काला कम्बल ओढ़कर नगर में भिक्षाटन करने जा रहे थे। उनकी रास्ते में चुड़ैल-लड़कियों के एक झुण्ड से भेंट हुई।

उन लोगों ने आचार्य से कहा— आपको हम लोग भोजन दान करेंगी, अत: आप हमारे घर पधारें।

आचार्य ने उत्तर दिया— मैं एक ही घर से भोजन नहीं ग्रहण करता। अत: भिक्षाटन करूँगा। यह कहकर पद्मदेवी आदि उस झुण्ड के पास अपना कम्बल रखकर भिक्षाटन करने चले गये, तो चुड़ैलों ने एक दूसरे से परामर्श करके यह तय किया कि इस वस्तु में कुछ शक्ति होगी अत: इसे खा लिया जाय। सब लोगों ने उस (कम्बल) को खाया और जो बचा वह आग में जला दिया।

जब आचार्य लौटकर आये, चुड़ैलों से कहा कि 'मेरा कम्बल कहाँ है? दो।' तब पद्मदेवी ने एक अन्य कम्बल दिया। आचार्य ने कहा— 'मुझे तो मेरा अपना कम्बल चाहिए।' यह कहकर उसको नहीं लिया। चुड़ैल ने सोना आदि (द्रव्य) उसके दाम के रूप में दिया तो उन्होंने उसे भी लेने से इनकार किया।

आचार्य ने वहाँ के राजा के पास जाकर शिकायत की कि तुम राजा हो, यहाँ चोरों की यह भरमार क्यों है?

राजा ने पूछा— 'चोरों ने किसका क्या लूटा?'

आचार्य ने कहा 'तुम्हारी चुड़ैलों ने मेरा कम्बल चुरा के ले लिया।'

राजा ने सभी चुड़ैलों को बुलाकर कहा 'तुम लोग, इस योगी का कम्बल

---

१. ''मालपुर'' सम्भवत: आज का 'मक्का' है, जो मुसलमानों का प्रधान तीर्थ हैं। करवीर= काबा-नामक स्थान भी वहीं है। यह लामा तक्छड़ रस्पा जी की यात्रा विवरण से पता चलता है।

लौटाओ' चुड़ैलों में एक-एक कर सब लोगों ने मेरे पास नहीं है, कहकर, कम्बल नहीं लौटाया।

आचार्य वहाँ से चले और 'तलचि' गुफा में लौटकर साधना करते रहे। उन्होंने 'दश महाक्रोध' को बलि दी, तो चुड़ैलों के एक दल ने उस गुफा का पानी सूखा दिया। आचार्य ने पृथ्वी देवी को आदेश दिया कि पानी निकालो।' तो भूमि से पानी निकला। वहाँ की सभी चुड़ैलों ने एकत्र होकर चारों द्वीप (समुद्र पर्वत) सुमेरू पर्वत आदि में रहने वाली सभी चुड़ैलों को भी वहाँ आने की सूचना दी। वे सब आई और आचार्य को विघ्न डालने की चेष्टा की तो आचार्य ने उन सब लोगों को 'भेड़' बनाकर रख दिया। रानी आदि सब लड़की भेड़ बन गई और सब लोग आश्चर्यचकित हो गये। आचार्य से ऐसा न करने के लिए लोगों ने प्रार्थना की। आचार्य ने सभी भेड़ों के सिर से बाल छील कर छोड़े तो सब स्त्रियाँ (जो चुड़ैल थीं) नंगे सिर (अपने सिर में बाल न देखकर) रोने लगीं।

आचार्य उसी तलचि गुफा में बैठे रहे। एक बार काम-धातु के देवों ने गुफा की चट्टान गिरा कर आचार्य को मारने की चेष्टा की। आचार्य ने गिर रहे चट्टान को तर्जनी से निर्देश किया तो चट्टान ऊपर लौटकर आकाश में लटक गई जो अभी विद्यमान है[१]।

वहाँ के राजा ने कहा— (अपनी रानी प्रमुख) इतनी चुड़ैल एकत्र होकर भी एक आदमी का सामना नहीं कर पाई; यह क्या हो गया? अब सब लोग उनसे क्षमा याचना करो और उनसे प्रतिज्ञा लेकर उसका पालन करो? पर लोगों ने इनकी बात नहीं सुनी। तब आचार्य ने उन लोगों को एक पंक्ति में निबद्धकर कहा कि तुम लोग मेरे शासन में प्रवेश लेकर प्रतिज्ञाबद्ध रूप से नहीं रहोगी तो सब लोगों को या तो यमराज को सौंप दूँगा या घोड़ा बनाकर ले जाऊँगा। आचार्य की शक्ति से भयभीत होकर सभी चुड़ैलों ने 'त्रिशरण' की दीक्षा ली और आचार्य का वह कम्बल (जो उन लोगों ने पहले खा लिया था) उलटी कर निकाला। आचार्य ने

१. यह भी 'मक्का' में ही है।

सभी (कम्बल के) टुकड़ों को जोड़ा, तो पहले की अपेक्षा कुछ छोटा हुआ (क्योंकि कम्बल का कुछ अंश उन लोगों ने आग में जला दिया था)। पुन: उसी कम्बल को ओढ़कर वह चल दिये, तो सब लोगों ने 'कम्बलपा' कहना आरम्भ कर दिया। तब उनका नाम 'कम्बलपा' प्रसिद्ध हो गया। उनका दूसरा नाम 'श्रीप्रभात' भी कहा जाता है।

अनेक वर्षों तक जगदर्थ कर अन्त में उसी शरीर के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु कम्बलपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३१. गुरु डोम्बीपा

डोम्बीपा मूसल लेकर ओखली में धान कूट रहे हैं। उनके शरीर पर हलके वस्त्र एवं सिर पर जटा बँधी हुई है। उनके बगल में एक मदिरा बेचनेवाली स्त्री बैठी हुई है।

३२. गुरु भन्देपा

भन्देपा राजकुमार या राजपुत्र के वेश में अपने आसन पर बैठे हुए हैं। एक हाथ में मणिमय-चक्र धारण किये हुए हैं। दूसरा हाथ आकाश मार्ग से उड़ते हुए एक भिक्षु, जो भिक्षापात्र हाथ में लिए हुए है, की ओर संकेत करते हुए उसे देख रहे हैं। बगल में देवताओं के शिल्प-विशेषज्ञ राजपुत्र से कुछ कह रहे हैं।

३१. गुरु डिङ्गिपा का वृत्तान्त

गुरु डिङ्गिपा जाति के ब्राह्मण थे, जन्मस्थान शालिपुत्र[१] था। वह शालिपुत्र के राजा 'इन्द्रपाल'[२] के मंत्री थे। एक बार राजा के मन में सांसारिक धर्मों के प्रति संवेग उत्पन्न हुआ[३]। अपने मंत्री को साथ लेकर वह उस श्मशान में गये, जहाँ लूहिपा विराजमान थे। उस स्थान पर पहुँचने पर लूहिपा के कुटी में जाकर उनका दरवाजा खटखटाया। आचार्य ने पूछा— कौन हो?

उन लोगों ने कहा— मैं राजा और यह मंत्री है।

आचार्य ने कहा— अन्दर आओ। (अन्दर गये) आचार्य ने उन लोगों की प्रार्थनानुसार दोनों को श्री चक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश करा के अभिषेक दिया[४]। अभिषेक की दक्षिणा[५] के रूप में उन लोगों ने अपने-अपने शरीर अर्पित कर दिये। तीनों लोग वहाँ से अन्य प्रदेश 'ओदोश' (नामक स्थान) चले गये। वहाँ तीनों आचार्य भिक्षाटन करते रहे, उसके बाद उन लोगों ने राजा को बेच दिया (इसका वृत्तान्त दारिकपा के प्रसङ्ग में है)।

---

१. कुन खेन पद् कर के अनुसार इस जगह का नाम या उनके जन्मस्थान का नाम कुमारक्षेत्र (तिब्बती अनुवाद में कुमारी क्षेत्र) था, जो दक्षिण भारत के समीपतम ओडिविषय (ओडिविष्टि का विशेष नगर) है। (पद् ई०, पृ० ७५)

२. यह राजा विमलचन्द्र का मंत्री था। (पद्० वही)

३. राजा के मन में संवेग उत्पन्न होने से पहले एक विशेष घटना घटी—वह यह कि राजा के राजधानी में 'कुमुद-पुष्प-उत्सव' होता था उस समय राजा बड़े सज-धज के साथ अपने उद्यान में जाया करता था। इस उपक्रम में राजा के लिए राजगद्दी सजा रखी थी, आचार्य लूहिपा जाकर उस गद्दी पर बैठ गये। इत्यादि। (प० कर० इ० पृ० ७५-७८)

४. कुन खेन पद् कर के अनुसार यह वहीं राजमहल में ही दिया (३० पद्-ई० पृ० ७६-७७)

५. दीक्षा के समय उनसे यह पूछा गया कि तुम ब्राह्मण हो, ब्राह्मण शुद्धता एवं जाति के बड़े प्रेमी होते हैं। हम योगी लोग मांस खाते हैं, मदिरा पीते हैं, तो मेरे प्रति श्रद्धा हो सकती है? मंत्री ने श्रद्धावान् होने का प्रमाण दिया—फिर दीक्षा हुई। (पद्० ई०, पृ० ६७-७७)

आचार्य लूहिपा और मंत्री ब्राह्मण जयन्तपुर में जाकर एक बौद्ध राजा के पास एक सप्ताह तक बैठे। उसके बाद आचार्य ने उस मंत्री को तौलकर बेच दिया इसका वृत्तान्त इस प्रकार है—

आचार्य और मंत्री दोनों (वहाँ से) एक मदिरा बेचनेवाली के पास गये। मदिरा बेचनेवाली प्रधान का दरवाजा खोलकर दोनों वहाँ पहुँचे और कहा कि तुम्हारी प्रधान कोई आदमी नहीं खरीदना चाहेगी? उस (द्वारपालिका) ने अन्दर जाकर अपनी स्वामिनी से पूछा, तो उसने उत्तर दिया— हाँ, साथ ही उनसे यह भी पूछो कि दाम क्या लोगे? बाहर आकर सब स्थिति सुनी, तो आचार्य ने कहा कि तीन सौ तोला सोना चाहिए। उसने भी उतना ही देकर उस मंत्री को खरीद लिया। पर आचार्य ने उस ब्राह्मण को देते समय एक शर्त लगाई कि इनको उद्यान में अकेला सोने दो और तुम्हारे सोने का दाम पूरा हो जाने पर इनको वापस भेज देना। यह कहकर आचार्य वहाँ से चले गये।

उस ब्राह्मण (मंत्री) ने मदिरा बेचनेवाली के यहाँ बहुत अच्छा काम किया और सब लोग उसको स्वामीजी कहने लगे। एक दिन, दिन भर काम किया और सन्ध्याकाल में खाने की प्रतीक्षा न कर रात को उद्यान में चले गये। मदिरा बेचनेवाली प्रधान को रात में स्मरण आया कि आज उनको खाना नहीं दिया गया, उसने, उनका खाना वहीं पहुँचाने के लिए भेजा। भोजन लेकर एक नौकरानी उद्यान में पहुँची तो वहाँ क्या देखती हैं कि पन्द्रह देवपुत्रियाँ ब्राह्मण पुत्र का लाभ-सत्कार कर रही हैं और वे अपने शरीर के प्रकाश में बैठे हुए हैं। यह दृश्य देखकर वह नौकरानी वहाँ से लौट गई और इस घटना को जाकर अपनी स्वामिनी से कह सुनाया। उससे उनको बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने आचार्य (ब्राह्मण) से निवेदन किया कि आपसे हम लोगों ने बारह वर्षों तक अपने नौकर के रूप में रखकर काम लिया। हमें इसका पाप है। इसके प्रायश्चित्त के लिए अब बारह वर्ष तक आप हमारा पूज्यपद (गुरु का रूप) स्वीकार करें, हम आपकी सेवा करेंगी। पर आचार्य ने उसे स्वीकार नहीं किया।

मदिरा बेचनेवाली प्रमुख सहित जयन्तीपुरी के सभी प्रकार के लोगों को उन्होंने बहुत से धर्मोपदेश और दीक्षा दिए। अन्त में सात सौ शिष्य-परिवार के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

जब वह मदिराशाला में काम करते थे, उस समय मुख्य रूप से वे धान कूटने का काम करते थे, इसलिए उनका नाम 'डिङ्गिपा' पड़ा। उनका दोहा निम्न॰ प्रकार है—

वेद पाठक डिङ्गिपा धान कूटक ध्यानी हो,
ओखरी में खूब धान कूटते हैं, झाडू से बिखरे को संगृहीत करते हैं।
गुरु उपदेश से धान कूटता हूँ, दूसरा काम न कर, काले धानों को कूटता हूँ। प्रथमतः कुशलों के द्वारा पाप कूटता हूँ।
प्रतिसंविद बज्र हथौड़ा है, उसका[१] प्रकाश सूर्य-चन्द्र है।
शून्य धर्मता की ओखरी में, हेय-उपादेयता को अद्वैतभाव से कूटता हूँ।
'हूँ' कार शब्द से विकल्पों के दधि मथने पर, महासुख नवनीत का सर्जन हुआ है,
और (उससे) अद्वैत रस की अनुभूति हुई है।

यहाँ डिङ्गिपा के मदिराशाला में बेचे जाने का प्रयोजन ब्राह्मण होने के नाते उनमें जाति-अभिमान-विकल्प की प्रबलता थी। जाति महत्ता का विकल्प मदिराबेचने (के कार्य) से क्षीण हो जाता है। अत: जाति अभिमान त्यागने के लिए उनको वहाँ बेचा गया।

गुरु डिङ्गिपा[२] का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. भोट भाषा में (ओद् सेर्॰) शब्द हैं,उसका हिन्दी रूप प्रकाश, प्रभाव, प्रयास होता है; यहाँ 'प्रभाव' अर्थ है, पर शब्द प्रकाश ही है।

२. इनके लिए 'डिङ्गिपा' का नामकरण इसलिए हुआ कि जब राजा और मंत्री दोनों अभिषेक एवं दीक्षा लेकर आचार्य के पास उपदेश के लिए बैठे थे, तो आचार्य ने मंत्री से प्रश्न किया कि इस समय तुम्हारे मन में सब से अधिक स्पष्ट प्रतीति किस विषय की है? ब्राह्मणमंत्री ने उत्तर दिया—'डिङ्ग' (मूसल, जिसके द्वारा धान कूटा जाता है) के शब्द का; आचार्य ने उस डिङ्ग (मूसल) के शब्द को ही आधार बतला कर शून्य-धर्मता की देशना दी। तदनुसार उन्हें सिद्धि का लाभ हुआ। इसलिए उन्हें डिङ्गि कहा गया, पा शब्द आदर सूचक है (द्र॰ पद्॰ इ॰ पृ॰ ७७)।

३२. गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त

गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—भन्धे का अर्थ है— 'धनदेवधर'। इनका जन्मस्थान श्रावस्ती था और जाति के यह देवयोनि थे। उनके गुरु आचार्य कृष्णाचार्य थे।

भन्धेपा आकाश में रहते थे। एक समय एक 'आर्य-अर्हत' चीवर-पात्र और दण्ड लेकर सप्रकाश आकाशमार्ग से जा रहे थे। यह देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने देव-कारीगर विश्वकर्मा से पूछा—हे स्वामी-सुत! इस प्रकार का अद्भुत व्यक्ति आकाश में उड़कर जानेवाला, यह कौन है?

विश्वकर्मा ने कहा—यह क्लेशों को प्रहीण किये हुए आर्य-अर्हत कहे जाते हैं। इसे सुनकर भन्धेपा को इसकी (अर्हत्त्व) प्राप्ति की बड़ी इच्छा हुई।

भन्धेपा ने पुनः जम्बूद्वीप की धरती पर आकर आचार्य कृष्णपा से धर्मोपदेश एवं दीक्षा के लिए प्रार्थना की। कृष्णपा ने उन्हें गुह्य-समाज मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया। योग-रक्षण के उपाय के रूप में चार अप्रमाणों के उपदेश दिए।

तदनुसार उन्होंने करुणा दृष्टि (दर्शन), मुदिता-भावना, मैत्रीचर्या और उपेक्षा के फल के रूप में भावना की। फलतः विपरीत भ्रान्तियों का सारा विष (सभी मल) विशुद्ध हो गया और उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हो गया। उनका नाम सर्वत्र भन्धेपा प्रसिद्ध होने लगा।

जब विश्वकर्मा ने उनसे पूछा कि आपने क्या कर लिया है? तब उन्होंने निम्न दोहा कहे—

निरालम्बन दर्शन, भावना के, नैरन्तर्य
माता-पिता के सदृश चर्या, आकाश के समान फल। ये चारों के अद्वैतभाव का साक्षात् दर्शन हुआ है, अब अभिनिवेशों की सिद्धि कहाँ से होगी?
अहो गुरु! अद्भुत हैं, ये पण्डितों के सदा सेव्य हैं।

श्रावस्ती आदि छः जनपदों में चार सौ वर्ष तक अपरिमित जगदार्थ करने के बाद चार सौ शिष्य-परिवार के साथ उसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३३. गुरु तन्देपा

तन्तेपा या तन्देपा अलङ्कार एवं जटा-मुकुट तथा भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं। वे प्रसन्न मुद्रा में 'जुआ' खेल रहे हैं (नोट—यहाँ दिखाई पड़नेवाले जुए का खेल प्राचीनतम परम्परा का लगता है, इसका स्वरूप आज भी तिब्बत, मंगोल, चीन के पश्चिमी क्षेत्रों में देखा जाता है)।

३४. गुरु कुक्कुरीपा

कुक्कुरीपा या कुकुरिपा षड् अलङ्कार जो तान्त्रिक विधि के आधार पर हड्डी से बने होते हैं, धारण किये हुए हैं और सिर पर जटा शिखा मुकुट सहित सजी हुई है। प्रेम-विह्वल मुद्रा में एक कुतिया को गोद में लिए हुए हैं।

३३. गुरु तन्तिपा का वृत्तान्त

'तन्तिपा' का अर्थ जुआ खेलनेवाला है। इनका जन्म-स्थान कोशम्भि था और जाति के यह शूद्र थे।

कोशम्भि जनपद में शूद्र जाति के व्यक्ति सदा जुआ खेलते रहते थे। इसी खेल से तन्तिपा का भी अन्त में सभी धन समाप्त हो गया, फिर भी आदत हो जाने से पुन: जुआ खेलने लगे। बाजी हार जाने के बाद उनके पास देने के लिए कुछ नहीं रह गया, तो लोगों ने उन्हें पीटना शुरु कर दिया। इससे बड़े दु:खी होकर वह एक श्मशान में जा बैठे। एक योगी वहाँ आये और उनसे मिले। पूछा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उन्होंने उत्तर दिया—जुआ खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता था और जुआ खेलने की आदत बन गयी; जिसके कारण मेरी सभी सम्पत्ति उसी में चली गई। अत: अब मैं काय और चित्त दोनों दु:खों से पीड़ित होकर यहाँ आ बैठा हूँ।

योगी ने कहा कि तुम धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उसने उत्तर दिया— मैं जुआ खेलना नहीं छोड़ सकता, यदि बिना जुआ छोड़े कोई धर्म होता हो, तो अवश्य करूँगा, और वही हमें दें।

योगी ने कहा—हाँ मेरे पास वैसा धर्म है। यह कहकर उन्होंने उसे अभिषेक दिया और यह उपदेश दिया—

जैसे जुआ से तुम्हारे धन द्रव्य क्षीण होकर अन्त में समाप्त हो गये, वैसे ही समस्त त्रिधातु की शून्यता की भावना करो। जैसे त्रिधातुक शून्य है, वैसा ही चित्त (अपने चित्त) की भी शून्यता की भावना करो।

दोहा—

जैसे जुआ से सभी प्रकार के धन का क्षय हो गया, ज्ञान जुआ से त्रिधातुक के समस्त विकल्प का क्षय कर दो, जैसे उसने अपने को पिटवा दिया।

वैसा ही विकल्पों को धर्मकाय के द्वारा पीट दो, जैसा विरक्त हो श्मशान में सोये थे।

वैसे ही महासुख के गर्भ में सो जाओ।

इस प्रकार जैसे निर्देश दिया वैसे ही उसने भावना की। फलतः त्रिधातुक विकल्प धर्मता में लीन हो गये। इस तरह के ज्ञान से निःस्वभावता में लीन होकर उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हुई।

उन्होंने (अपना अनुभव) कहा—

प्रथमतया संवेग[१] का उत्पाद न हुआ हो तो मोक्षमार्ग में प्रवेश कहाँ होता?

श्रद्धा से गुरु का सेवन न किया, तो (मुझ में) परमसिद्धि का प्रवेश कहाँ से होता?

यह कहकर आकाश में ऊपर उड़े और उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये ।

गुरु तन्तिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. 'संवेग' 'विराग' का प्रथम चरण माना जाता है।

३४. गुरु कुकुरिपा का वृत्तान्त

गुरु कुकुरिपा का[१] जन्म-स्थान कपिलवस्तु (कविल-स-कुन) था, जाति के आप ब्राह्मण थे[२]।

कपिलवस्तु के एक ब्राह्मण को तन्त्र के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। वह योगी की चर्या करते हुए क्रमशः लुम्बिनी नगर जा रहे थे, रास्ते में एक कुतिया अपने से उठ पाने में असमर्थ थी। उसे देखकर उसके प्रति उनके मन में अपार मैत्री पैदा हो गई। उस कुतिया को लेकर वह नगर में पहुँचे और चारों ओर देखा, तो एक ओर एक खाली गुफा दिखाई दी। उसीमें उसे रखा। भिक्षाटन कर जीविका चलाकर वह उसी गुफा में अपनी साधना करते रहे। बारह वर्ष के बाद कुछ लौकिक सिद्धि 'अभिज्ञा' आदि की उन्हें प्राप्ति हुई।

उसके बाद त्रयस्त्रिंशत् देवताओं के निमन्त्रण पर वे त्रयस्त्रिंशत् गये पर कुतिया वहीं रह गई। आदमी के अभाव में कुतिया ने भूमि खोदी और वहाँ से जब पानी कीचड़ आदि निकला तो वह उसी को खाती रही। देवताओं ने योगी की विस्तृत भाव्य पूजा की। पर योगी को कुतिया की याद आई और वे वहाँ से लौटने की तैयारी करने लगे।

देवताओं ने उनसे कहा— आपको इतने गुण प्राप्त हो गये पर कुतिया का विकल्प? क्या इतना भी नहीं छूट सका? यह अच्छा नहीं हुआ। आप यहीं बैठें।

---

१. कुकुराजा, कुत्ताराजा, आदि नाम भी है (दुजोम-त्रिडमा इ० पृ० ८९)।

२. कुन खेन पद्मकर के अनुसार—इनका जन्मस्थान वाराणसी के पूर्व भाग में सुवर्णकुंड (भोट भाषा में 'श्रे' शब्द है) है। ये सरह के छोटे भाई थे। इनका बचपन का नाम उद्भटस्वामी था, राहुल नामक उपाध्याय से उपसम्पदा लेकर भिक्षु बने, भिक्षु का नाम वीर्यभद्र था। उसी उपाध्याय से मन्त्रयान-साधना की दीक्षा लेकर बुद्ध गया में साधना करते रहे। वहाँ उनका नाम 'त्यायिपा' प्रसिद्ध हो गया। वहाँ वे दिन में एक सौ कुतियों के बीच में रहते थे और रात में उन डाकिनियों के साथ गण-चक्र का उपक्रम किया करते थे। इस कारण उनका नाम 'कुकुरिपा' पड़ा (पद्मकर—इ०, पृ० ७२-७३)।

इस प्रकार उनको रोक दिया गया। एक समय देवताओं के मना करने पर भी उन्होंने नहीं सुना और उस गुफा में वापस लौट आये। कूकरी को देखकर उस पर हाथ फेरा, तो वह एक डाकिनी के रूप में परिणत हो गई। उसके मुख से ये शब्द निकले—

साधु-साधु कुल-पुत्र विघ्न के वशवर्त्ति न होकर तुम,

परमसिद्धि लेने आये, पूर्वसिद्धि मिथ्या है।

वह परमसिद्धि विपरीत दृष्टिवालों में भी होती है,

वह काई अद्भुत नहीं परिवर्तनशील है,

अनास्त्रव महासुख परमसिद्धि (तुम्हारी) मा (मैं) देती हूँ।

यह कहकर प्रज्ञोपाय-युगल का संकेत दिखलाया, फलत: अपरिवर्तनीय और अविपरीत दृष्टि प्राप्त होकर परमसिद्धि का लाभ हुआ।[१] उसके बाद लुम्बिनी[२] आदि सर्वत्र उनका नाम गुरु कुकुरिपा प्रसिद्ध हो गया।

अन्त में अनेक जगतार्थ के बाद कपिल कु (कपिलवस्तु) के बहुत से जन समुदाय को लेकर उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कुकुरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. बहुत से वृत्तान्तों के अनुसार कुकुरिपा ने 'सर्वबुद्ध समायोग तत्त्व' एवं 'गुह्यचन्द्रबिन्दु' नामक योग-तन्त्रों की साधना से परमसिद्धि का लाभ किया (दुजोम् ई० पृ० ४२, कलिमपोङ् संस्करण)।

२. तारानाथ बुस्तोन एवं दुजोम की कृतियों में 'लुम्बिनी' की जगह गया (बुद्धगया) या 'वज्रासन' ही लिखा है। (दुजोम इ० पृ० ४१-४२)। बुस्तोन ने उनका कार्य-क्षेत्र मध्यदेश का मालव (मालवा) कहा है (योगावतार—पृ० १६। 'द' पुट, B.N. ६७)।

३५. गुरु कुचिपा

गुरुकुचिपा अर्थात् कुबड़ा, उनके गले के पीछे बहुत बड़ी कूबड़ या गण्ड निकला हुआ है। जिसकी वजह से वे सामने की ओर झुके हुए हैं। भावनासूत्र लगाकर बैठे हैं। सामने आचार्य नागार्जुन कुछ उपदेश दे रहे हैं। दोनों एक वीरान स्थल पर बैठे हैं।

३६. गुरु धर्मपा

गुरुधर्मपा ब्राह्मण पण्डित के वेश में हैं। हलकी जटा शिखा, जनेऊ, गले एवं कान में हल्के आभूषण पहने हैं। एक पैर पर दूसरा पैर रखकर अध्यापन की मुद्रा में हैं। उनके आस-पास बहुत-सी पोथियाँ रखी हुई हैं।

३५. गुरु कुचिपा का वृत्तान्त

कुचिपा का अर्थ कुबड़ा है। इनका जन्म-स्थान 'कहरि' (कहिरार) नामक स्थान था। वह जाति के शूद्र थे।

कहरि नामक स्थान में शूद्र जाति का एक व्यक्ति कृषि से अपनी जीविका चला रहा था। एक समय अपने पूर्व कर्मवश उसकी गर्दन के पीछे एक मांस का टुकड़ा 'कुचि' सूज कर उभर आया। उसके बहुत बढ़ जाने के कारण उनके लिए चलना-फिरना भी कठिन हो गया। कूबड़ से दुःखी होकर वह विशेष एकान्त जगह में जाकर बैठा।

एक समय वहाँ आचार्य नागार्जुन आ पहुँचे। आचार्य को देखकर उस आदमी के मन में अपार श्रद्धा उत्पन्न हुई और अञ्जलिबद्ध करके उनके सामने बैठकर उसने कहा— 'अहो आर्य! आप कहाँ से आये हैं? मैं तो कुकर्म से पीड़ित हूँ। इस प्रकार के असह्य दुःख में हूँ। इससे मुक्त होने का उपाय आप मुझे बता दें।'

आचार्य ने उत्तर दिया—इससे मुक्त होने का उपाय तो है, पर आप उद्यमपूर्वक उसकी साधना कर पाएंगे? यदि सक्षम हों, तो समस्त दुःखों का मूल उच्छिन्न करके सुख की स्थिति प्राप्त करने का उपाय तो अवश्य है।

उसने कहा—आर्य, उद्यम से साधना क्यों नहीं कर सकेंगे, अवश्य कर सकेंगे।

तब आचार्य ने उसे गुह्य-समाज मण्डल में अभिषेक दिया। दुःख को मार्ग के रूप में परिणत करने के उपाय, उत्पत्ति एवं सम्पन्न (क्रम) की देशना दी। वह इस प्रकार है—

'उत्पत्ति-क्रम के अनुसार आलम्बन का निर्देश देते हुए आचार्य ने उनसे कहा— 'तुम अपनी गर्दन के पीछे के कुचि (मांस का टुकड़ा) को क्रमशः बढ़ते हुए भावना करो।' उसने वैसा ही किया। फलतः कुचि बहुत बढ़ गयी और दुःख पीड़ा भी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। पुनः एक दिन आचार्य ने वहाँ आकर उनसे पूछा कि 'क्या अच्छा हुआ?'

उसने उत्तर दिया कि नहीं, इसमें तो अत्यधिक पीड़ा बढ़ रही है।

आचार्य ने सम्पन्न-क्रम के आलम्बन अनुसार उससे कहा कि समस्त धर्म (ज्ञेय-वस्तु) उसी के अन्दर संगृहीत हो रहा है; ऐसी भावना करो। उस व्यक्ति ने वैसा ही किया। फलतः उसकी वह (भयंकर) कुचि समाप्त हो गई। वह सुख से विहार करने लगा। पुनः आचार्य वहाँ आ पहुँचे और उससे पूर्ववत् अच्छा हो रहा है? यह पूछा। उसने उत्तर दिया— 'जी हाँ, बहुत अच्छा हो गया।

आचार्य ने उन्हें उपदेश दिया—

''सत्-असत् से सुखी-दुःखी हुआ करता है, जो अन्त-द्वय से विरत हो जाता है, उसमें सुख एवं दुःख कहाँ से होता है, सभी धर्म स्व-स्व स्वभाव से शून्य हैं।''

उस व्यक्ति को इसका सम्यक् अवबोध हो गया। कुचिपा को निरालम्बन 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हो गया। वह 'कहरि' जनपद आदि [अनेक स्थानों] में सौ वर्ष तक जगतार्थ करते रहे। उनका नाम भी 'कुचिपा' प्रसिद्ध हुआ। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु कुचिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३६. गुरु धर्मपा का वृत्तान्त

गुरु धर्मपा-का वृत्तान्त इस प्रकार है। धर्मपा [धम्बा?] का अर्थ है, 'श्रुत-मयी प्रज्ञा'

उनका जन्म-स्थान विक्रमसुर [पुर] नामक जनपद था और वह जाति के ब्राह्मण थे।

विक्रमसुर में एक ब्राह्मण सदा श्रवण [शास्त्र सुनने] में लगे रहते थे; परन्तु चिन्तामयी एवं भावनामयी प्रज्ञा से वह शून्य थे। एक समय उनके पास एक योगी आ पहुँचे और योगी ने उनसे कहा— बहुश्रुत बुद्धि में बहुत धर्म होगा?

उस ब्राह्मण ने योगी से कहा—हे आर्य! मैंने धर्म का श्रवण तो बहुत किया, पर सुनने के तुरन्त बाद भूल जाता हूँ। [मेरे पास कुछ नहीं है, अत:] आप मुझे न भूलने की [कोई] दीक्षा [हो, तो] दें।

योगी ने उचित है, कहकर ये उपदेश दिये—

जिस प्रकार अनेक रत्नचूर्णों को सोनार सम्यक् रूप से एकत्रित कर देते हैं,

उसी प्रकार नाना प्रकार के श्रवणों को भी, चित्त-धातु के अन्दर पिघला दो।

इस [उक्ति] का अर्थ अवबोध होकर उस व्यक्ति को समस्त श्रुत-धर्मों एवं अनेक चित्त-वृत्तियों की [नाना] समरसता का ज्ञान हो गया। फलत: उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ और उनका नाम धर्मपा प्रसिद्ध हो गया।

अनेक विनेय लोगों को मार्ग में आरूढ़ करके उसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३७. गुरु महिलपा का वृत्तान्त

गुरु महिलपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—महिलपा का अर्थ है, घमण्डी। उनका जन्म-स्थान मगध था और वे जाति के शूद्र थे।

मगध जनपद में रहनेवाला शूद्र जाति का एक व्यक्ति शरीर से बहुत बलवान एवं स्वस्थ था। वह सदा यह सोचकर कि मेरे द्वारा अभिभूत न किया जा सकनेवाला आदमी या कोई प्राणी नहीं है, इस प्रकार के अभिमान से वह सदा अभिभूत होकर रह रहा था। ऐसे में एक दिन एक योगी उसके पास आये और उसको देखकर कहने लगे कि तुम क्या सोच रहे हो?

उसने उत्तर दिया कुछ नहीं सोच रहा हूँ? योगी ने कहा — मेरे द्वारा दबाया नहीं जा सकता हो, ऐसा (दुनियाँ में) कोई प्राणी नहीं है। यह विचार क्या है?

यह सुनकर वह [बलवान आदमी] उस योगी के प्रति बहुत श्रद्धालु हो गया। उसने योगी को 'नमः' कहकर प्रणाम किया।

योगी ने उसके उत्तर में कहा— 'अभिमान का मल विशुद्ध हो'।

उस [बलवान] ने योगी से निवेदन किया कि आप मुझे कुछ धर्म का उपदेश दें।

योगी ने हो सकता है [औचित्यम्] कहकर उन्हें अधिष्ठान-उत्क्रान्ति नामक अभिषेक दिया और कहा—

''लोक [प्रतीतियों को] चित्त के रूप में ही जान लेना चित्त शून्य अनिरोध और अनुत्पाद है। उसी में निर्विक्षेप रहना भावना है, (सब कुछ) धर्मता में लीन होना फल है।''

उसने योगी से कहा— मैं नहीं समझ पाया।

पुनः योगी ने कहा—

३७. गुरु महिपा

गुरु महिपा (महिलपा) पहलवान के रूप में हैं। ये बल-प्रतियोगिता दिखाने की मुद्रा में हैं। इनके बाहु, जंघा आदि अङ्ग-प्रत्यङ्ग बहुत स्थूल एवं मोटे हैं। गले में हलके गण्ड (गाँठ) उभरे हुए हैं। उस पर कुछ मोटी झुर्रियाँ या रेखाएँ भी पड़ी हुई हैं।

३८. गुरु अचिन्तपा

गुरु अचिन्तपा निर्जन वन में आधा लेटे हुए हैं। अपने को आकाश के मध्य में सितारे के रूप में रखकर भावना कर रहे हैं। यहाँ जो उनकी चित्र-प्रतिमा दिखाई पड़ रही है, वह उनकी समाधि की अवस्था का परिचायक है अर्थात् यह मन का चित्र है।

''तुम भी बहुत बलवान हो,

तुम्हारे द्वारा नहीं हो सकता ऐसा कुछ नहीं है।

आलोक [विषय], वायु एवं चित्त, तीनों को तुम आकाश के मध्य में ही ग्रहण कर लो''

इस प्रकार उन्होंने विरोध को मार्ग के रूप में उपयोग करने का उपदेश दिया।

उस [बलवान] ने भी यह तो क्या कठिन है, सोचकर ग्रहण किया, तो ग्राह्य विषय नहीं मिल सका, जिसके कारण ग्राहक-चित्त भी खो गया। सर्वत्र 'आकाश' के मध्य-बिन्दु के समान देखकर, उन्हें 'परमसिद्धि' की प्राप्ति हो गई।

मगध अदि अनेक जगहों में तीन सौ वर्षों तक अपरिमित विनेय जनों के लिए नि:स्वभाव धर्मता की बलवत्तर देशना करते रहे। अन्त में ढाई सौ शिष्य परिवार के साथ उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु महिलपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३८. गुरु अचिन्तपा का वृत्तान्त

गुरु अचिन्त का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'अचिन्त' का अर्थ स्मृति-रहित है। इनका जन्म-स्थान 'मानिरूप' था और वे जाति के काष्टहारी (लकड़ी बेचनेवाले) थे।

वे अत्यन्त गरीब एवं दरिद्रता के कारण रात-दिन धन-द्रव्य की तृष्णा में लगे रहते थे। अन्य कोई भी लौकिक विकल्प (लोक व्यवहार की बातों के विचार) उनके मन में कभी उठते ही नहीं थे। सब समय धन-द्रव्य के विकल्प से पीड़ित होकर एक दिन एकान्त जगह में बैठे थे कि योगी कम्बलपा उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने कहा—तुम एकान्त में काय-वाक् एकान्त होकर बैठे क्या सोच रहे हो?

उस (गरीब) ने उत्तर दिया—हे योगी! मुझे तो लौकिक धन-द्रव्य की चिन्ता के अलावा और कुछ नहीं सूझता। धन की चिन्ता करने पर भी कुछ नहीं मिलता।

आचार्य (कम्बलपा) ने कहा—मेरे पास धन-द्रव्य प्राप्त करने के उपदेश हैं। तुम इसकी साधना कर सकोगे?

उस (गरीब) ने कहा—उसकी साधना न कर पाने का प्रश्न ही नहीं है, वह मुझे अवश्य दें।

आचार्य ने उसे श्री चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक दिया और गम्भीर सम्पन्न-क्रम की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है—(दोहा में)

कामना मात्र से प्राप्ति कहाँ होती है? जैसे वन्ध्या का पुत्र,

अतः काम चिन्ता को त्यागकर, अपने काय के आकाश मध्य में।

अपने चित्त को नक्षत्र के रूप में स्पष्ट भावना करो, वही धन देवता है,

साक्षात्कार होने पर समस्त इष्ट काम आ जायगा।

उसने भी इस दोहे के अर्थ अवबोध के साथ वैसी ही भावना की। फलतः

उसका धन-द्रव्य का विकल्प नक्षत्र के रस में खो गया। नक्षत्र भी आकाश के बीच में विलीन हो गये और वह निर्विकल्प की अवस्था में पहुँच गया।

तब पुनः एक दिन आचार्य ने स्वयं उसके पास आकर पूछा— क्या हुआ और क्या देखा?

उसने उत्तर दिया — कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ ऐसा कहकर वह निर्विकल्प की स्थिति पर पहुँच गया।

आचार्य ने उसकी निर्विकल्प (भावना) की अवस्था को देखकर, पुनः उससे कहा—(दोहा)

आकाश स्वभाव को यथावत्, तुमने विषय के रूप में ग्रहण किया है क्या?

जो वर्ण-संस्थान से रहित है, उसके प्रति कैसी आसक्ति और कैसी भावना?

शिष्य ने इसका अभिप्राय समझ लिया और उसे 'महामुद्रा' (परमसिद्धि) का लाभ हो गया। उसका नाम गुरु 'अचिन्त' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अचिन्त ने तत्त्व- धर्मता की देशना द्वारा तीन शताब्दियों तक सत्त्वार्थ सम्पादन किया; अन्त में अपरिमित शिष्य परिवारों के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु अचिन्तपा का वृत्तान्त समाप्त॥

३९. गुरु भवह (भवहि) का वृत्तान्त

गुरु भवह का वृत्तान्त इस प्रकार है। भवह का अर्थ है, जल से क्षीर (दूध) लेनेवाला। उनका जन्म-स्थान 'घञ्जुर' था। जाति के वह क्षत्रिय थे। घञ्जुर नामक प्रदेश (जनपद) में क्षत्रिय जाति के एक व्यक्ति काम-भोगों से उन्मद होकर राज कर रहे थे। एक दिन उनके पास एक सु-अभ्यस्त योगी आ पहुँचे, उन्होंने भोजन के लिए उनसे भिक्षा की याचना की। उन्हें उत्तम भोजन कराया गया और राजा उनके श्रद्धालु हो गये। राजा ने उन योगी से कहा— 'आप कुछ धर्मोपदेश दें।'

योगी ने 'समस्त धर्मों का मूल समय[2] है, सभी सिद्धियों का मूल गुरु है।' कहकर उन्हें अधिष्ठाता उत्क्रान्ति का अभिषेक दिया और 'नाड़ी' , वायु और बिन्दु की देशना दी। वह इस प्रकार है—(दोहा)—

''उपाय युक्त परदेह विशेष के,
भग रूपी मण्डल के मध्य स्थित,
रक्त के महासमुद्र में,
बोधिचित्त का दूध मिलाकर लिया करो ॥ १ ॥
(वह) अन्तिम स्थान में पहुँचने पर भीतर खींचो,
यह विछिन्न प्रवाहवाली उस सुख की तरह नहीं है।
सुख से सुख का प्रहाण होने पर,
उसकी भावना शून्यता से अभेदभाव में करो।'' ॥ २ ॥

उन्होंने भी इन (दोहों के अर्थ साक्षात्कार) की भावना का अनुष्ठान किया। बारह वर्ष बाद दर्शन-प्रहातव्य मल-विशुद्ध होकर परम सिद्धि को प्राप्त हो गये। उन्होंने अनेक विनेय-जनों के अर्थ साधन के बाद सशरीर खेचर भूमि की ओर प्रस्थान किया।

गुरु वभह (वभहि) का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. वभट्टि की जगह ववहि, वभह आदि रूप मिलते हैं। कदाचित् इन शब्दों का अर्थ 'बतख' हो।
२. 'समय' से तात्पर्य आज्ञा का शब्दशः पालन करना है।

३९. गुरु भवहिपा

गुरु भवहि या भवह राजा के वेश में हैं। वे दोनों पैर की अंगुलियों के बल पर खड़े हुए हैं। हाथ में अमृत-भरा कपाल है। एक ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन कर रही है।

४०. गुरु नलिपा

गुरु नलिपा कमल से पूर्ण झील या सरोवर के तट पर बैठे हुए हैं। कमल या पद्म के समूहों से कुछ पद्म मूल सहित तोड़कर दूसरे हाथ में थामे हुए हैं। वे बहुत प्रसन्न मुद्रा में हैं।

४०. गुरु नलिनपा का वृत्तान्त

गुरु नलिनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'नलिनपा' का अर्थ है, पद्ममूलवाला। इनका जन्म-स्थान शालिपुत्र था और वह क्षत्रिय जाति के थे।

शालिपुत्र जनपद में एक क्षत्रिय व्यक्ति अत्यन्त गरीब होने के कारण झील के अन्दर से पद्ममूल लेकर अपनी जीविका चला रहे थे। एक समय एक योगी से उनकी भेंट हुई। उन्होंने योगी को भी उस पद्ममूल का भोजन कराया। उस योगी ने भी उन्हें संसार के दोष एवं निर्वाण के गुणों की देशना दी।

उसने संसार के प्रति विरक्त होकर गुरु से कहा—गुरुजी! मुझे उस निर्वाण को प्राप्त करने के लिए कुछ उपाय की देशना दें। योगी ने उचिततम् कहकर उन्हें गुह्य-समाज के मण्डल में प्रवेश कराया और अभिषेक दिया। योगी का उपाययुक्त स्वकाय आश्रित उपदेश इस प्रकार था—(दोहा)

मूर्ध में स्थित महासुख (रूपी),

शुक्ल हँकार की सम्यग् भावना करनी चाहिए।

नाभि (प्रदेश) में स्थित निर्मितक अक्षर वँकार के,

प्रज्वलित प्रकाश से हँकार स्त्रवित होने पर।

नन्द, आनन्द, परमानन्द,

और सहज-आनन्द के क्रमशः

उदय होने पर, सांसारिक दोषों और,

मोक्ष (रूपी) महासुख को छोड़ते हुए लेना है॥

उसने भी (इन दोहों की यथा अभिप्राय) वैसी ही भावना की।

फलतः जैसे पद्म 'पंक' से उत्पन्न होने पर भी पंक से अस्पृष्ट होता है, वैसे ही भव्याचार-आनन्द को चार चक्रों के आधार पर भावना करने से भी आलम्बन एवं संसार के दोषों से अस्पष्ट ही रहा जाता है।

नौ वर्ष के बाद (उस भाव्य) अर्थ का अवबोध होकर सभी प्रकार के भ्रांति मलों से उनका चित्त विशुद्ध हो गया। फलत: 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उन्हें लाभ हुआ।

उन्होंने शालिपुत्र में अनेक जगदार्थ सम्पादन किए। वह चार शताब्दी के बाद साढ़े पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ सशरीर खेचर भूमि चले गये॥

गुरु नलिनपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४१. भुसुकुपा

गुरु भुसुकुपा (शान्तिदेव) भिक्षु वेश में हैं। वे भिक्षुओं के बहुत बड़े संघ के बीच, बहुत ऊँची गद्दी पर बैठे हुए उपदेश-मुद्रा में हैं।

४२. गुरु इन्द्रभूति

गुरु इन्द्रभूति राजा के वेश में हैं। उनके हाथ धर्म-उपदेश एवं जलदान-मुद्रा में हैं। वे नाना प्रकार के वाद्य-संगीत के साथ नृत्य करने वाली स्त्रियों से परिवृत्त हैं।

४१. 'गुरु भुसुकु' पा का वृत्तान्त

गुरु भुसुकुपा[१] का वृत्तान्त इस प्रकार है। ये नालन्दा[२] के थे। जाति के क्षत्रिय और बड़े भद्र स्वभाव के थे। ये परिव्राजक ग्रहण करके भिक्षु बने।

उस समय नालन्दा में राजा देवपाल राज करते थे। उनके धर्मपीठ में सात सौ भिक्षुओं के संघ का भोजन-पानी आदि भव्य लाभ-सत्कार हुआ करता था। चारों निकायों के भिक्षु लोग वहाँ विद्यमान थे। उनमें से महासांघिक निकाय के एक उपाध्याय के पास तीन सौ शिष्य थे। अन्य सब लोग बड़े उद्यमी थे और सभी पाँच विद्या स्थानों के वे लोग विशेषज्ञ थे। एक क्षत्रिय भिक्षु थे। वह सब समय सोते रहते थे और उनकी पाचन शक्ति भी बहुत प्रबल थी। प्रतिदिन पाँच सेर (पका) चावल खाते थे। उसे देखकर राजा देवपाल कहने लगे— यह तो भुसुकु है। इससे उनका नाम भुसुकु प्रसिद्ध हो गया। 'भुसुकु' से तात्पर्य— खाना, सोना और शौच जाना। भुक्ता, सुप्ता और कुकता का संक्षिप रूप भुसुकु है।

उस समय नालन्दा विद्यापीठ में यह प्रथा प्रचलित थी कि वहाँ के सभी विद्वान् बारी-बारी से सभा में सूत्रों का पाठ करें। वहाँ के सभी लोग भुसुकु की बड़ी निन्दा किया करते थे। उनके उपाध्याय ने भी उनसे कहा कि 'तुमसे सूत्र-पाठ आदि कार्य नहीं हो पायेगा। अतः यहाँ से चले जाओ।'

---

१. 'भुसुकु' का अर्थ है—भुक्ता, सुप्ता और कुकता अर्थात् खाना, सोना और पचाना (पेट में पचा कर—मलमूत्र के रूप में फेंकना) समास— 'भुसुकु' है।

२. 'नालन्दा' उनका अध्ययन स्थान ही था। इनका जन्मस्थान 'भद्रनगर' या सौराष्ट्र था। ये जाति के क्षत्रिय थे। इनके पिता का नाम महाराज कल्याणवर्मा था। इनका नाम शान्तवर्मा था। बचपन से ही ये बड़े तीव्र बुद्धि के थे। एक 'भुसुकु' योगी से इन्होंने 'तीक्ष्ण मञ्जुश्री' की साधना ग्रहण की और फलतः इष्टदेव का साक्षात्कार हुआ। जब इनके पिता का देहान्त हुआ इन्हें राजगद्दी पर बैठना था। उसी समय राजमहल छोड़कर, वे नालन्दा आये थे।

(इ० बुस्तो० इ० पृ० ११३ B. vol, No 240, P. 858 । तारा, इ०, के अनुसार इनका नाम मञ्जुवर्मा था।)

भुसुकु ने उत्तर दिया—भिक्षु नियम के शील के बिना भ्रष्ट हुए मुझे स्थानच्युत करना उचित नहीं है। विद्या अध्ययन का मुझे सौभाग्य प्राप्त नहीं है। यह कहकर उन्होंने वहाँ से जाने में अनिच्छा व्यक्त की और बैठे रहे। एक दिन सभा में सूत्र-पाठ की उनकी बारी आ गयी। संघ ने उन्हें सूचना दी कि कल सभा में तुम्हारी सूत्र-पाठ की बारी है, पाठ करें। उन्होंने स्वीकार किया। नालन्दा के सभी भिक्षु एवं विद्वान् परिहास कर रहे थे कि कल भुसुकु का सूत्र-पाठ देखना है।

इससे उनके उपाध्याय[१] बहुत चिन्तित हो गये और उनसे कहा कि तुम विद्या-अध्ययन के समय तो खाते और सोते रहे। अब नालन्दा के विद्वानों के बीच में सूत्र का पाठ नहीं कर पाओगे। भुसुकु ने उत्तर दिया— 'हम सूत्र-पाठ करेंगे।' यह कहकर उन्होंने उपाध्याय की बात अनसुनी कर दी।

फिर उपाध्याय ने कहा—तुम्हारे द्वारा यदि सूत्र का पाठ ठीक से न हुआ, तो तुम्हें स्थान-च्युत किया जायगा। अतः तुम्हें यह काम छोड़ बैठना ही उचित होगा।

फिर भी भुसुकु ने कहा— 'मैं खुद जानता हूँ', उपाध्याय की बात सुना नहीं। उपाध्याय बड़ी विपत्ति में पड़ गये और उन्होंने भुसुकु को आर्य मञ्जुश्री का मन्त्र— 'ओं अर-पचन धीः' देकर कहा कि इसको रात भर बिना सोये जप करो। उन्होंने इस मन्त्र की दीक्षा ली और रातभर बिना सोये गले में रस्सी बाँधकर मन्त्र का जप किया।

फलतः आर्य मञ्जुश्री प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि भुसुकु तुम क्या कर रहे हो?

उन्होंने कहा—मुझे कल (सभा में) सूत्र-पाठ के लिए उपस्थित होना है। अतः आर्य मञ्जुश्री से प्रार्थना कर रहा हूँ।

आर्य ने कहा— तुमने हमको पहचाना?

भुसुकु— मैं नहीं पहचान पाया हूँ।

---

१. इनके उपाध्याय का नाम 'जिनदेव' था। ये नालन्दा के पाँच सौ बड़े पण्डितों के अग्रगण्य थे। जब शान्तवर्मा अपने राजमहल छोड़कर नालन्दा आये थे, तो इन्हीं के उपाध्यायत्व में उन्होंने भिक्षु संवर ग्रहण किया था। बुस्तोन इ० पृ० ११३। B. vol. No. 240, P. 8581

आर्य— मैं मञ्जुश्री हूँ।

भुसुकु— फिर मुझे प्रज्ञा-सम्पन्नता की सिद्धि प्रदान करें।

आर्य—तुम्हें मैं प्रज्ञा दूँगा, कल तुम सूत्र-पाठ करो।

यह कहकर वह अन्तर्धान हो गये।

दूसरे दिन सूत्रपाठ के समय संघाराम में राजा आदि सभी जनसमूह यह कहते हुए कि भुसुकु का सूत्र-पाठ देखेंगे, एकत्र हो गये। पुष्पादि पूजा के उपक्रम सहित भव्य व्यवस्था करके सब लोग वहाँ गये।

भुसुकुपा, संघ के दिन का भोजन विधिवत करके, निर्बाध होकर विहार में आये और गद्दी पर बैठ गये[१]। उनके विशेष प्रभाव को देखकर सब लोगों को कुछ संदेह हुआ। सामने से पर्दा लगाकर उन्होंने कहा— अब मैं पहले से ही विद्यमान सूत्र का पाठ करूँ या जो पहले नहीं है, ऐसे सूत्र का पाठ करूँ? इनके इस कथन को सुनकर पण्डित लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे और राजा एवं अन्य जन-समुदाय इसे सुनकर हँस पड़े। राजा ने कहा— तुम्हारे खाने का ढंग भी अपूर्व है, सोना और शौच की चर्या भी अपूर्व ही है, अब धर्म भी अपूर्व ही, बतलाओ।

उन्होंने दस परिच्छेदात्मक 'बोधिचर्यावतार' का पाठ आरम्भ किया और (अन्त में) आकाश में उड़ गये। नालन्दा के पाँच सौ पण्डित, राजा देवपाल और जन-समुदाय में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी। उन लोगों को पुष्प आदि चढ़ाने से (सभा के चारों ओर) पुष्प की राशि धरती में घुटने भर इकट्ठी हो गई।

सब लोगों ने कहना आरम्भ कर दिया कि यह भुसुकु कहाँ है, यह तो बहुत प्रकाण्ड पण्डित है। राजा सहित सब लोगों ने इनको 'शान्तिदेव'[२] कहा। अर्थात् राजा

---

१. बहुत ऊँची गद्दी को हाथ के स्पर्श मात्र से नीचा कर देने का वृत्तान्त भी है। सामने पर्दा लगाने की बात अन्यत्र नहीं मिलती।

२. बुस्तोन के अनुसार—'शान्तिदेव' नाम उनके उपाध्याय महापण्डित जिनदेव ने उस समय रखा था जिस समय उन्होंने परिव्राजक भिक्षु संवर ग्रहण किया था। इससे पूर्व उनका नाम शान्तवर्मा था।

और सभी पण्डितों का अभिमान उन्होंने शान्त किया, अत: यह शान्ति[१]देव है। वहाँ इकट्ठे पण्डितों एवं सभी लोगों ने उनसे निवेदन किया कि इसकी (बोधिचर्यावतार की) एक टीका की रचना करें। वह बाद में की[२] गई। सब लोगों ने उपाध्याय के रूप में वहाँ रहने के लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

तत्पश्चात् उन्होंने चीवर-पात्र आदि भिक्षु की उपयोगी सामग्री विहार में त्रिरत्न के समक्ष अर्पित कर दी और वहाँ के उपाध्याय एवं संघ के न सुनी में वे वहाँ से चुप-चाप चले गये। वे क्रमश: वहाँ से धोकरि नगर जिसकी जनसंख्या ढाई लाख थी, पहुँचे उनके पास सोने से रंगी एक काष्ट की तलवार थी। वहाँ के राजा से उन्होंने निवेदन किया—मुझे आप तलवार धारियों में सम्मिलित करें। राजा ने स्वीकार किया। वेतन के रूप में प्रतिदिन दस तोला सोना दिया गया। इसी को जीविका बना कर बारह वर्षों तक तलवार का काम करते रहे। और साथ ही रहस्यार्थ (रहस्यात्मक) की (अविच्छिन्न रूप से) साधना करते रहे।

एक समय-शरत् काल में तलवारवाले (राज-सेवक) इकट्ठे होकर उमादेवी की पूजा करने की प्रथा के अनुसार पूजा में बैठे तो शान्तिदेव ने भी वैसा ही किया। उसके बाद एक दिन सब लोगों को अपनी तलवार धोनी होती थी उस दिन सब लोगों ने अपनी तलवार धोई तो उन लोगों में से एक ने यह देख लिया की शान्तिदेव की तलवार लकड़ी की है। उसने राजा से इसकी शिकायत की।

राजा ने शान्तिदेव से कहा— हमें अपनी तलवार दिखाओ।

शान्तिदेव ने कहा—दिखायेंगे, तो आप लोगों का अनिष्ट होगा, अत: दिखाना उचित नहीं होगा।

राजा ने कहा— अनिष्ट हो, तो क्या होगा, अवश्य दिखाओ।

---

१. सम्भवत: लोगों ने उनके नाम की सार्थकता की व्याख्या की।

२. यहाँ 'टीका' की बात कुछ अस्पष्ट है। बोधिचर्यावतार की स्ववृत्ति की चर्चा कहीं भी नहीं है। नालन्दा के पण्डितों ने बाद में आचार्य शान्तिदेव के पास जाकर उक्त ग्रन्थ पर व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की और उन्होंने दिए भी, यह टीका की बात हो सकती है (बुस्तोन इ० पृ० ११३, B. २५ P. ८६०)।

शान्तिदेव ने कहा— आप सब लोग अपनी एक आँख (हाथ से) ढक दें। सब लोगों ने वैसा ही किया। शान्तिदेव ने अपनी तलवार, म्यान (कोष) से निकाली, तो उसकी चमक से अक्षम होकर सभी लोगों की आँखे जो खुली थीं, अन्धी हो गईं।

राजप्रमुख आदि सब लोगों ने क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि उन लोगों की आँखों की रोशनी लौट आए। उन्होंने सब लोगों की आँख पर जो अन्धी हो गई थीं, अपने मुँह का पानी (थूक) लगा दिया। तत्काल सब आँखे पूर्ववत् हो गई। इस घटना से सब लोगों ने अचम्भित होकर अपने यहाँ पूज्य स्थविर के रूप में रहने के लिए निवेदन किया, तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे वहाँ से चले गये[१]।

उसके बाद वे एक पहाड़ के बीच में रहकर निर्मित वन-प्राणियों को मारते और उनका मांस खाते हुए रहने लगे। लोगों ने इसे देखा और उनका वृत्तान्त राजा को सुनाया। राजा ने अपने सैन्य-परिवार के साथ वहाँ जाकर उनसे कहा—हे योगी! आपने पहले नालन्दा के राजा आदि का (अभिमान) दमन करके धर्म में आरूढ किया। यहाँ (मेरे राज्य में) भी सब लोगों की आँखों का पुनरुद्धार आदि कार्य किया। इतनी शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी प्राणी-वध करना क्या उचित है?

शान्तिदेव ने उत्तर दिया— मैंने, नहीं मारा, देख लो, कहकर अपनी झोपड़ी का दरवाजा खोला, तो वहाँ उनके द्वारा मारे गये वन के प्राणी पहले की अपेक्षा दुगने स्वस्थ और ताजे बैठे थे और वहाँ से निकलकर वे चारों ओर छा गये। राजा आदि को उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी और मृगादि वनप्राणी कहाँ गये? सब वहीं खो गये। इस दृश्य को देखकर राजा आदि सौभाग्यशाली लोगों को समस्त धर्म (रूपादि धर्म) माया—स्वप्नवत् आद्यानुत्पन्न असिद्ध, नि:स्वभावता का ज्ञान हो गया और वे सब बोधि मार्गारूढ हुए।

---

१. तलवार वाली घटना बुस्तोन और तारानाथ के वृत्तान्तों में कुछ भिन्न प्रकार से है, (बुस्तोन इं० B. vol. No. २५ P. ८५८-६१)।

तारानाथ इ० पृ० १५३-५४, अध्याय २५ तारानाथ के समान ही खनपोजन् द्न् स्नङ् वा के शान्तिदेव वृत्तान्त में भी उल्लिखित है (प्र० १-६ यावत्)।

शान्तिदेव ने कहा—(दोहा)—

मैंने जिन मृगों को मारा, वे आदितः कहीं से भी नहीं आये,

मध्य में कहीं भी स्थित नहीं हैं, अन्त में कहीं निरुद्ध भी नहीं होंगे।

आदितः असिद्ध धर्मों में, बाध्य-बाधक कहाँ सिद्ध होगा?

अहो जीव करुणा के योग्य हैं,

यही कहता हूँ भुसुकु मैं।

इस प्रकार वहाँ के राजा आदि के सभी तरह के मान-अभिमान का दमनकर सब लोगों को बोधि मार्ग में आरूढ़ किया। श्रद्धालुओं को धर्मारूढ करने के बाद भुसुकु ने एक ही रात की साधना से 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया। काय, वाक् एवं चित्त, तीनों के अभिन्न एकता का ज्ञान पाकर क्षण-धर्म[१] से निकल और अन्त में सौ वर्ष की अवस्था में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु भुसुकुपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. क्षण धर्म से निकल-यहाँ 'क्षण' से अभिप्राय : आयु की अनित्यता से है। जिसका 'क्षण' जन्म-मरण धर्म के पराधीन है; उस पराधीनता से मुक्त होकर परमसिद्धि अर्थात् अमरत्व का लाभ ही क्षण-धर्म से निकलना है।

४२. गुरु इन्द्रभूति का वृत्तान्त

उग्यन या औडियाण (उज्जैन)[१] देश के महानगर में एक समय पाँच लाख घराने (घर के) के लोग रहते थे और उन पर दो राजा राज करते थे। उक्त देश से 'सम्भोल' नामक ढाई लाख की जनसंख्यावाले जनपद के राजा इन्द्रभूति थे। लंकापुरी की ढाई लाख की आबादी पर महाराज जालन्धर शासन किया करते थे।

सम्भोल के राजा इन्द्रभूति की एक बहिन थी, जिसका नाम लक्ष्किंकर (लक्ष्मीकर) था। वह सात वर्ष की अवस्था में ही थी, तो लंकापुरी के राजा जालन्धर ने अपने पुत्र के लिए उस राजकुमारी लक्ष्किंकर की मांग के लिए इन्द्रभूति के पास दूत भेजा था। महाराज इन्द्रभूति ने अपने मन्त्रि-परिषद् की बैठक बुलाई और अन्त में यह तय हुआ कि राजा जालन्धर धर्मकार्य नहीं करते, इसके अलावा वे सब तरह से हम लोगों से समानता रखते हैं। अत: लक्ष्किंकर उनको दे दी जाय। दूत से यह सन्देश भेजा गया कि 'धर्म' ग्रहण करने न करने मात्र का अन्तर है, पर सम्बन्ध बन सकता है।

दूसरे वर्ष जालन्धर के राजकुमार सम्भोल राजा के यहाँ आये और लक्ष्किंकर से उनकी भेंट हुई। उन्हें देखकर वह फिर अपनी राजधानी लौट रहे थे, तो इन्द्रभूति ने उन्हें बहुत-सा अश्व, हाथी, सोना, चाँदी आदि धन-सम्पत्ति भेंट में देकर लौटाया। राजकुमार के अपने महल पहुँचने पर उनके पिता ने पूछा कि वधू कहाँ हैं? राजकुमार ने कहा— अभी वह बहुत छोटी है, इसलिए उनके भाई ने उन्हें मेरे साथ नहीं भेजा। राजा ने कहा— 'साधु'।

इधर राजा इन्द्रभूति की कई रानियाँ थीं। वे सब धर्म के प्रति बहुत श्रद्धा रखने वाली थीं। उनकी बहिन और रानियों ने गुरु कम्बलपा से अभिषेक एवं दीक्षा ग्रहण की और सब के सब साधना में लग गई।

---

१. ''औडियान'' के दो तरह के उल्लेख मिलते हैं, पश्चिमी औडियान और औडियान (सम्भवत: यह पूर्वी औडियान)।

लक्षिंकर जब सोलह वर्ष की हुई तो महाराज जालन्धर ने उन्हें ले आने के लिए दूत भेजा।

[यहाँ उनको कैसे दिया गया, बहिन ने सांसारिक धर्म से विरत होकर साधना कैसे की, साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त करके एक 'जमादार' को कैसे अनुगृहीत किया, उसके बाद वे खेचर भूमि कैसे गई। ये सब आगे उन्हीं के (लक्ष्मीकर के) वृत्तान्त में दिखाया जायगा।]

जब महाराज जालन्धर ने इन्द्रभूति को, उनकी बहिन ने जो-जो किया, उसका विवरण-पत्र एवं दूत भेजा तो इन्द्रभूति ने कहा— मेरी बहिन ने सिद्धि प्राप्तकर ली; यह बहुत सुखद बात है, पर मैं स्वयं शान्त सुखी होकर यों ही बैठ गया, यह अच्छा नहीं हुआ।

इन्द्रभूति ने यह सोचा कि मेरी बहिन ने अपना जन्म सार्थक कर लिया। मैं भी अल्पार्थ और अनेक दोषों से भरे इस राज-काज को छोड़कर क्यों नहीं धर्म की ओर चलूँ। यह सोचकर वे अपने पुत्र को राज-काज सौंपकर एक गृह में बैठे साधना करते रहे। बारह वर्ष में उन्होंने 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया। परन्तु राज-परिवार के लोगों को इसका पता नहीं चला। एक दिन उनके पुत्र प्रमुख परिवार के लोग और जनता के लोग उनको देखने गये तो दरवाजा बन्द था। लोगों ने उसे खोलने की चेष्टा की, तो आकाश से यह आवाज सुनाई पड़ी कि—दरवाजा मत खोलो, मैं यहीं हूँ। लोगों ने ऊपर देखा, तो इन्द्रभूति आकाश में ही विराजमान थे। सब लोगों को प्रथम भूमि प्राप्ति जैसा आनन्द हुआ और सब लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ उन्हें प्रणाम किया। वे सब एक ओर बैठ गये। राजा (इन्द्रभूति) ने आकाश में ही विराजमान होकर सात दिन तक अपने राजकुमार प्रमुख सभी राज-परिवार के लोगों और जनता को बड़े विस्तृत एवं गम्भीर धर्मों के अपरिमित उपदेश दिये। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वह उसी शरीर से खेचर भूमि गये॥

गुरु इन्द्रभूति का वृत्तान्त समाप्त॥

४३. गुरु मैकोपा

गुरु मैकोपा विविध प्रकार की खाद्य-सामग्री से भरे बहुत बड़े पात्र उठा रहे हैं। ये पूड़ी और सब्जी बेच रहे हैं। हलके अलङ्कार और जटा-मुकुट आदि धारण किये हुए हैं।

४४. गुरु कुदालिपा

गुरु कुदालिपा (कोदलिपा) एक पहाड़ की तलहटी में कुदाल लेकर पहाड़ की जमीन खोद रहे हैं। सिर पर पगड़ी बाँधे हुए हैं। वे गरीबी की द्योतक सस्ती धोती पहने हुए हैं।

४३. गुरु मेकोपा का वृत्तान्त

गुरु 'मेकोपा' का वृत्तान्त इस प्रकार है—बंगाल जनपद में भोजन बेचनेवाली जाति का एक व्यक्ति, एक योगी को सब समय भोजन आदि देकर सेवा करता रहा। एक दिन योगीने उससे पूछा— हे आयुष्मान! तुम मेरा इतना सत्कार क्यों कर रहे हो?

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—हे योगीश्वर!—मुझे परलोक जाते समय मार्ग-पथ्य की आवश्यकता है।

योगी ने (पुन:) पूछा — तुम परलोक के 'मार्ग-पथ्य' की साधना कर सकोगे?

उसने उत्तर दिया—अवश्य मैं उसमें समर्थ होऊँगा।

योगी ने उन्हें ''प्रभाव उत्क्रान्ति'' का अभिषेक प्रदान किया और चित्त परिचायक (चित्त की तत्त्व ज्ञापक) दीक्षा इस प्रकार दी। दोहा—

स्वचित्त चिन्तामणि (के दर्पण) में, लोकालोक के भेद का अवभास होता है,

ज्ञात-अज्ञात दो ही (धर्म) हैं, उन्हें अपरिवर्तनशील चित्त-रस में ही देखो।

द्वैत ग्राहक विकल्प (वहाँ) कैसे आयेगा? उस निःस्वभाव रस में,

कोई भी धर्म किसी (भी प्रकार) में सिद्ध नहीं है, (इस स्थिति) के

अनविज्ञ भ्रान्त (जीव) राग (आदि) से आबद्ध होते हैं।

इन वचनों के अनुसार उस व्यक्ति ने भी समस्त लोक में (प्रतीयमान) सभी धर्म अपने ही चित्त के अन्दर देखे और चित्त को गतागत धर्मों से रहित तत्त्व के रूप में जान गया। अपरिणामित-स्वचित्तगत अर्थों (के रस) में छः मास तक स्थित रहने के बाद उन्हें चित्त की प्राकृतिक (तात्विक धर्मता) भूतार्थता का ज्ञान प्राप्त हो गया। वे चमूमृग (हिंसक जन्तु) की तरह श्मशानों में घूमते रहे। कभी पागल का आचरण करते हुए गाँव एवं नगरों में आकर बहुत बड़ी आँख खोलकर

(लोगों को) देखते रहते थे। लोगों ने उन्हें 'गुरु भयंकर द्रष्टा' कहना आरम्भ कर दिया। (सम्भवत: मेकोपा का यही अर्थ हो) सर्वत्र उनका नाम मेकोपा प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने गम्भीर धर्मोपदेश के द्वारा बहुत से विनेय लोगों का कल्याण किया तथा अवदान (के रूप में बहुत से दोहे भी) कहे। अन्त में वे उसी शरीर के द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु मेकोपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४४. कोडलिपा का वृत्तान्त

गुरु कोडलिपा (कोदलिपा) का वृत्तान्त इस प्रकार है। रामेश्वर नामक स्थान से चार दिन का मार्ग पार करने के बाद (एक जगह में एक व्यक्ति जिसका नाम) कोदलिपा [था] रहने की जगह एवं क्षेम के लिए पहाड़ खोद रहे थे। उस समय आचार्य रत्नाकरशान्तिपा सिंहल द्वीप के राजा के निमंत्रण पर लंका जाकर उस रास्ते से लौट रहे थे। उपर्युक्त जगह में कोदलिपा से उनकी भेंट हुई।

आचार्य ने उनसे कहा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

कोदलिपा ने आचार्य का अभिवादन किया और उनका योगक्षेम पूछा। अन्त में कहा— मैं यहाँ पहाड़ खोद रहा हूँ।

आचार्य ने पूछा— पहाड़ खोदकर आप क्या कीजिएगा?

कोदलिपा ने उत्तर दिया—दुष्ट राजाओं ने देश को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। सभी जनता दु:खी पीड़ित है। अब हमारा कोई देश नहीं है। यहाँ मैं पहाड़ की तलहटी को खोदकर अपने रहने की जगह बनाऊँगा और यहीं हम लोग अपना देश बनायेंगे।

आचार्य शान्तिपा ने कहा—पहाड़ खोदने की शिक्षा (अववाद) मेरे पास है। यह तुम सुनना नहीं चाहोगे?

उन्होने (कोदलिपा ने) कहा—भन्ते अवश्य सुनना चाहूँगा।

आचार्य ने कहा—(उपदेश-दोहा)

तुम्हारे इस प्रकार का काम,
(मात्र) शरीर को थका देनेवाला है।
अत: यह बहुत तुच्छ काम है,
(यह तो) छ: प्रकार के विपरीत कामों में से एक है॥ १॥
(दूसरी ओर) दान ही भूमि खोदना है,
दूसरों की हिंसा न करना ही शील है।

(तप में) दु:ख को सहना क्षमा है,

उस में उद्यम करना वीर्य है॥ २॥

उसमें अविक्षेप होकर स्थित होना ध्यान है,

उन्हें ठीक से जान लेना ही प्रज्ञा है।

विपरीत छः तरह के कर्मों को त्यागकर,

छः प्रकार के सम्यक् कर्मों को किया करें॥ ३॥

गुरु के प्रति नम्रता दान है,

अपने (चित्त) सन्तति की रक्षा करना शील है।

चित्त की(धर्मता को जनने की) क्षमता क्षमा है,

उसी की भावना वीर्य है।। ४॥

उस में निर्विक्षेपता ध्यान है,

इसी का सही ज्ञान प्रज्ञ है।

सदा सब समय (इन्हीं की) भावना करो॥ ५॥

यह कहने पर कोदलिपा ने पुनः आचार्य से कहा—यह बहुत विस्तृत है, अतः इसका एक संक्षेप हमें बतलायें।

पुनः आचार्य ने कहा—गुरु के प्रति नम्रता रखो।

सभी सुख-दु:ख अपने से ही उत्पन्न होते हैं। अतः स्वचित्त की प्राकृतिक (धर्मता) भूतार्थ के ज्ञान के लिए अभ्यास करो। यह भी जैसे—स्वचित्त के प्राकृतिक स्वरूप पहाड़ के समान है।

अनिरुद्ध प्रकाशमान संवित्ति (= ज्ञान प्रभास्वर) है, वह कोदली के समान है। उसी के द्वारा खोदा करो। दो प्रकार के उद्यम (वीर्य) हैं, वे दोनों दांये-बांये बाहु के समान हैं। दोनों को अविरल लगन से खोदना चाहिए।

इसका भाव दोहा द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

सभी सुख और दुःख, चित्त से उदित होते हैं;

दीक्षा के द्वारा चित्त के पहाड़ को खोदो।

मिट्टी के पहाड़ खोदने पर भी,

प्राकृतिक महासुख का ज्ञान नहीं होता है॥ ६॥

इस प्रवचनानुसार भावना करने से बारह वर्ष में उनको(कोदलिपा को) परम सिद्धि का लाभ हुआ। तत्पश्चात् अनेक जगत् कल्याण करके अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गए॥

गुरु कोदलिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४५. गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त

गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। कम्परि का अर्थ है—'लोहार'। उनका जन्म-स्थान शालिपुत्र था। वे जाति के लोहार थे। वे (जातिगत जीविका कर्म) सदा लोहार का काम ही किया करते थे। एक समय उनके लोहे की कर्मशाला में एक योगी आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा— तुम क्या करते रहते हो?

लोहार ने उत्तर दिया—मैं जातिगत कर्म-लोहार का कार्य करता रहता हूँ।

योगी ने पूछा— तुम इस काम के द्वारा सुखी हो?

लोहार ने कहा—सुखी की तो बात ही कहाँ? अंगार-चिनगारी पिघले लोहा और अग्नि से सदा हाथ-पैर, शरीर जलते रहते हैं, फिर भी जीविका के लिए विवश होकर दुःख का भी स्वागत करना पड़ता है।

योगी ने—उससे खाना माँगा। लोहार दम्पत्ति ने यह सोचकर कि हम नीच लोगों के हाथ से योगी को भोजन कराना बहुत आश्चर्य की बात है, यह सोचकर वे बहुत आनन्दित हुए। भोजन-दान किया।

योगी ने (भोजन समाप्त होने पर) कहा— तुम लोग कोई धर्म नहीं ग्रहण करोगे?

उन लोगों ने कहा—हम नीच लोगों को कौन आदमी धर्म-उपदेश देगा?

योगी ने कहा—यदि धर्म के प्रति श्रद्धा हो, साधना करने में समर्थ हो तो उपदेश मैं दूँगा।

यह सुनकर वे लोग बड़े प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार की पूजा-प्रणाम और सत्कार करके, योगी से उपदेश की याचना की।

योगी ने प्रभाव-उत्क्रान्ति का अभिषेक देकर उन्हें तीन मूल आलम्बन की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है- भाथी, अंगार, अग्नि के द्वारा लोहा गलाने का यह आलम्बन आध्यात्मिक रूप में परिवर्तित कर भावना करो। ललना और रसना (दोनों नाडी) को भाथी बनाओ। अवधूती को अंगारशयन बनाओ। विज्ञान को लोहार बनाओ, ज्ञान

४५. कमरिपा

गुरु कमरिपा (कम्पारिपा) लोहार के वेश में हैं। लोहारी के कुछ औजार आस-पास बिखरे हुए हैं। खुद जलता लोहा पीटकर उससे कुछ बना रहे हैं। गले और कान में कुछ आभूषण भी हैं।

४६. गुरु जालन्धरपा

गुरु जालन्धरपा पूर्ण योगी वेश में हैं। जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। हड्डी-निर्मित्त आभूषणों से विभूषित हैं। एक पैर पीछे की ओर मोड़कर कन्धे पर रखे हुए हैं और दूसरा पैर फैलाकर जमीन पर घुटने के बल पर बैठे हैं। दोनों हाथों की तर्जनी की नोक मिलाकर और शेष अँगुलियाँ परस्पर आलिङ्गित मुद्रा में अपने सिर के ऊपर उलटकर रखे हुए हैं। उनको सामने की ओर से उनकी कर्म-मुद्रा (पत्नी) उन्हें दण्डवत् प्रणाम कर रही हैं।

की अग्नि जलाओ। विकल्पों को अंगार बनाओ। त्रिकाल को लोहा बनाकर, पिटाओ। अद्वैत धर्मकाय महासुख के शिल्पकार का फल परिपाक होता जायगा।

(उक्त कथन का दोहा)—

जैसे तुम बाह्य कामों में,
अभ्यस्त हो, उसी प्रकार आभ्यन्तर में भी।
ललना और रसना (नामक दोनों नाडियों को),
दायनाँ और वायनाँ दो भाथी (बनाया) करो॥ १॥
अवधूती की भट्ठी में, विज्ञान (रूपी) लोहार के द्वारा।
विकल्पों के अंगार में,
संवित्ति ज्ञान की अग्नि जलाओ॥ २॥
तीनों क्लेशों के लोहे को गलाकर,
अनास्त्रव धर्मकाय (रूपी) फल का निर्माण करो॥ ३॥

इस वचनानुसार उन्होंने अपने (दैनिक) कर्मों के अनुरूप भावना करना आरम्भ किया, छः वर्ष में उनको परमसिद्धि का लाभ हुआ। आस-पास के किसी को भी यह ज्ञात नहीं हुआ कि उन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया।

उसके बाद उनके अंगाराशय (जहाँ लोहा आदि गरम करके विभिन्न औजार बनाया जाता है) में सभी प्रकार के शिल्प (बिना कुछ किये) स्वतः सब कुछ तैयार होते गये। इस घटना को देखकर 'शालिपुत्र' को सभी लोगों ने यह कहना प्रारम्भकर दिया कि हम लोगों के यह लोहार सभी प्रकार के गुण-धर्मों से सम्पन्न हो गये हैं। सब लोग इस घटना से अचम्भित हुए, उनका नाम सर्वत्र 'गुरु कम्परिपा' प्रसिद्ध होने लगा।

विनेय लोगों के अनेक अर्थ साधन के बाद उन्होंने कुछ अपने 'अवदान' भी कहे। अन्त में उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४६. गुरु जालन्धरपा का वृत्तान्त

जालन्धरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। जालन्धर का अर्थ है, जाल धारण करने-वाला। इनका देश नगर थोड़्था (नगर कोटा)था और जाति के ये ब्राह्मण थे।

सांसारिक धर्म के प्रति घृणा उत्पन्न होते ही वे एक दिन श्मशान में जाकर एक वृक्ष के मूल में जाकर बैठे। वहाँ उन्हें अपने चित्त में कुछ शान्ति एवं सुख की अनुभूति होने लगी। उसी समय उन्हें आकाश से डाकिनी की वाणी सुनाई पड़ी— हे कुलपुत्र ! तुम भूतार्थ के मनसिकार (योनिशोमनसिकार) करो। यह सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द और हर्ष हुआ। वह पुन: उस डाकिनी से प्रार्थना करते रहे कि क्या करना है? फलत: एक ज्ञानी डाकिनी ने साक्षात् रूप दिखाया और उन्हें हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया। उन्हें सम्पन्न-क्रम की दीक्षा इस प्रकार दी।—

बाह्य-आध्यात्मिक-त्रैधातुक, भाजन-लोक और सत्त्व-लोक समग्र अपने ही काय-वाक् और चित्त में समाविष्ट हैं। इन तीनों के विकल्प तीन प्रकार की नाडियों में समाविष्ट हैं। दो नाडी अवधूती में मिली हुई हैं। वहाँ (अवधूती के अन्दर) नाना प्रकार की स्मृति-संवित्तियाँ एवं विकल्पना होती रहती हैं उन सब को मूर्धन्य ब्रह्म-द्वार से ऊपर निकाल दो और प्रतिभास (प्रतीयमान) और शून्यता दोनों की (अभिन्नता) भावना करो।

(तदर्थक दोहा)—

बाह्य-अभ्यन्तर के अशेष धर्म,

(अपने ही) काय-वाक्-चित्त में समाविष्ट हैं।

दक्षिण-वाम (नाडियाँ) अवधूती में संगृहीत हैं,

वही (अवधूती) ब्रह्मद्वार है॥ १॥

(वही) शून्यता परम महासुख है,

(उसका) उदय योगी की विशुद्ध रस-भाव से होता है।

(इस तरह चित्त का) सुख-शून्य की युगलता में पहुँचाया करो॥ २॥

इस प्रकार सम्पन्न का उपदेश दिया, तो उन्होंने भी तदनुसार भावना (घोर साधना) की। उन्होंने सात वर्ष में 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया।

अपने अवदान (दोहे) भी कहे। अपरिमित जगतार्थ साधन के पश्चात् तीन सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु जालन्धरपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४७. गुरु राहुल का वृत्तान्त

राहुल का वृत्तान्त इस प्रकार है—राहुल का अर्थ 'राहु' को धारण करनेवाला है। ये काम-रूप देश के थे और जाति के शूद्र थे। ये बहुत वृद्ध होने से अपने शरीर का संचालन भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे थे। सभी बन्धु एवं पुत्रादि परिवार के लोग भी इनसे घृणा करते और गालियाँ देते थे। इससे इन्हें बहुत दु:ख हुआ और परलोक का स्मरण हो आया तथा ये एक श्मशान में चले गये।

(वे श्मशान में बैठे ही थे) एक योगी उनके पास आया। योगी ने कहा—तुम इस श्मशान में क्या करने बैठे हो?

इन्होंने कहा—(दोहा)

मेरे यौवन चाँद को, वृद्धपन के राहु ने विनष्टकर दिया,

पुत्र-पौत्रादि भी डाँटने लगे, अच्छा है मरना सोच बैठा हूँ यहाँ।

योगी ने पुन: उनसे कहा—(दोहा)

तुम्हारे विपाक भूत (शरीर तत्त्व) को,

तीन नदी (धाराओं) ने बिखेर दिया है,

अब तो मरण नदी (बहा) आने वाली है,

मरण पथ्य का धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उन्होंने कहा—हे गुरु! धर्म का ग्रहण तो अवश्य करूँगा। परन्तु वृद्ध, धन से रहित मेरे जैसे को धर्म-उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा—

प्रकृति चित्त में जरा नहीं होती, श्रद्धादि धन का क्षय नहीं होता,

नम्रता से सद्धर्म साध सको, तो तुम्हें अनुगृहीत करूँगा मैं।

योगी ने इन्हें प्रभाव-उत्क्रान्ति का अभिषेक प्रदान किया। विन्दु की दीक्षा इस प्रकार दी—तुम अपने मूर्धन्य प्रदेश में "ॐ" कार से सम्भूत चन्द्र-मण्डल और

४७. गुरु राहुलपा

गुरु राहुलपा श्मशान में बैठे हुए हैं। वे साँवले रंग के हैं। सिर के बाल मुड़े (घुँघराले) हुए हैं। अवस्था में कुछ बुढ़ापा झलक रहा हैं। दोनों हाथ समाहित-मुद्रा में हैं। श्मशान के शव की ओर देख रहे हैं।

४८. गुरु धर्मपा

गुरु धर्मपा भिक्षु वेश में हैं। हाथ में पोथी लिये हुए अध्ययन की मुद्रा में हैं। अवस्था में बहुत अधिक वार्धक्य झलक रहा है।

उसी के अन्दर समस्त भवलोक (प्रतीयमान भव) की कल्पना समाविष्ट (सम्पन्न) कर भावना करो।

(तदर्थ दोहा)—

अद्वैत ज्ञान राहु द्वारा, ग्राह्य-ग्राहक विकल्पों का प्रहाण करके,

मूर्धन्य महासुख (मण्डल) में, गम्भीर बिन्दु रस में ही।

सुख-शून्य के युगनद्ध प्रवाह द्वारा, स्कन्धादि अरि के प्रहाण से,

बुद्ध गुणों का उदय होता है, अहो, यह अनिरोध अद्‌भुत है।

इस वचन के अनुसार वे भावना (साधना) करते रहे। जब समस्त द्वैत चाँद, अद्वैत राहु द्वारा खा लिया गया और अद्वैत अमृत मूर्धन्य ब्रह्म-द्वार के नीचे प्रविष्ट होने लगा, समस्त काय (शरीर मण्डल) अमृत से भर गया और शरीर (आनन्द) प्रफुल्ल होकर सोलह वर्ष की अवस्था में परिणत हो गया तथा 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उनको लाभ हुआ। कामरूपादि के अनेक विनेय लोगों को विनीत करके अवदान (दोहे) भी उन्होंने कहे।

अन्त में उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु राहुल का वृत्तान्त समाप्त॥

४८. गुरु धर्मपा का वृत्तान्त

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। धर्मपा का अर्थ धर्म ग्रहण करनेवाला या धार्मिक है। उनका देश बोधिनगर था। सम्भवत: जाति के वे ब्राह्मण थे। धर्मपा बहुत बड़े पण्डित थे। पर वे प्रधानत: भाषण ही किया करते थे, साधना नहीं। जब बाद में बहुत वृद्ध हो गये और अन्धे हो गये। उनको यह चिन्ता हुई कि 'एक गुरु से मेरी भेंट क्यों न हो जाय?'

एक दिन स्वप्न में एक डाकिनी ने उन्हें निर्देश दिया — 'तुम्हारा गुरु मैं ही हूँ।' उन्होंने (वृद्ध ने) उसी को ध्यान में रखकर प्रार्थना की। फलत: डाकिनी ने साक्षात् रूप से प्रकट होकर उन्हें अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी।

उनका उपदेश इस प्रकार है—समस्त ज्ञेय धर्मों को पात्र के रूप में और समस्त विकल्पों को तेल के रूप में तथा अपने विज्ञान को (चित्त को) बत्ती के रूप में एवं उसी से ज्ञान-अग्नि जलती हुई भावना करो।

तदर्थक दोहा—

अशेष धर्म-पात्र के अन्दर, विकल्पों का तैल भरकर,

संविति की बत्ती में आग जलाने से चित्त की चिन्तामणि का दर्शन होगा।

ऐसा कहा है— विकल्प को ज्ञान (परमज्ञान) के रूप में उपस्थित करनेवाली देशना की साधना करते पाँच वर्ष में ही जैसे विष में मन्त्र फूँक दिया गया हो, उसी प्रकार (सभी) विकल्प-ज्ञान के रूप में परिणत हो गये। उनका शरीर आठ वर्ष के बालक के समान हो गया। इस घटना से सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उन्होंने कहा—

जैसे हेतु प्रत्ययों की समाग्रता,

फल से शून्य कहाँ हो सकता है,

अत: प्रसाद बुद्धिवाले को, उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए।

(वे बहुत दिन तक) एक पाठक (ग्रन्थादि पढ़नेवाला) के रूप में जगत् का कल्याण करते रहे। कुछ अपने अवदान (दोहे) भी कहे। अन्त में वे खेचर भूमि को चले गये॥

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४९. गुरु धोकरिपा का वृत्तान्त

'धोकरि' का अर्थ है, पात्र लेकर चलनेवाला। ये शालिपुत्र के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे। उक्त देश में एक शूद्र व्यक्ति सदा एक पात्र उठाकर भिक्षा माँगता रहता था और जो मिले वही उस पात्र में डालता जाता था। एक दिन उसे उस पात्र में डालने के लिए कुछ भी नहीं मिल पाया, तो वह एक वृक्ष के मूल के समीप जा बैठा। एक योगी उसके पास आ पहुँचे और उससे खाना माँगा। उस भिक्षु ने कहा— 'हे योगी! आज मुझे तुम्हें देने के लिए कोई भी द्रव्य नहीं मिला।'

योगी ने कहा—तुम्हें कोई धर्म की आवश्यकता नहीं है क्या?

उस (भिक्षु) ने कहा— 'चाहिए तो अवश्य ही, पर कल्याण मित्र से अभी तक भेंट ही नहीं हो पाई।'

योगी ने कहा—तुमको यदि धर्मोपदेश मिल जाय, तो उसकी साधना कर सकोगे?

उस (भिक्षुक) ने कहा—अवश्य करेंगे।

उस योगी ने उसको हेवज्र मण्डल में अभिषेक दिया और साधना के लिए उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम का उपदेश इस प्रकार दिया—

हे धोकरिपा तुम, धर्मधातु के पात्र में

संवित्ति द्रव्यों को डालकर, उनमें अद्वैतता की भावना करो।

उन्होंने भी इस वचन का यथार्थ ग्रहण करते हुए तदनुसार भावना की। अर्थ का साक्षात्कार होकर तीन वर्ष में ही उन्हें परमसिद्धि प्राप्त हो गई। पुनः उन्होंने (पूर्ववत्) पात्र उठाकर माँगना प्रारम्भ किया तो सामान्य लोगों ने उनसे कहा—गुरुजी आप का ग्रहण किया हुआ यह क्या चीज है?

उन्होंने उत्तर दिया—(दोहा)—

''महाशून्यता का पात्र उठाकर,

महासुख फल की माँग कर रहा है।

(इस) कामना के साथ है धोकरि,

सौभाग्यवान (आप) लोगों को (यह) नहीं ज्ञात है?''

इस प्रकार उन्होंने अनेक जगत् कल्याण किये और अपने अवदान भी कहे। उनका नाम सर्वत्र धोकरिपा प्रसिद्ध हुआ।

अन्त में वे उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु धोकरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

४९. गुरु धोकरिपा

गुरु धोकरिपा एक भिखारी के वेश में हैं। हाथ में एक कपड़े का थैला (झोला) लिये हुए हैं, उसके अन्दर एक बड़ा-सा पात्र रखा हुआ है। सस्ता चादर ओढ़े हुए हैं और खड़े होकर भिक्षाटन करने की मुद्रा में हैं।

५०. गुरु मेधिनपा

गुरु मेधिनपा (मेधिपा) एक कृषक के वेश में हैं। वे पहाड़ की तलहटी की जमीन में दो बैलों पर धूरी रखकर हल जोत रहे हैं। सामने पहाड़ का दृश्य है। उसके निकट एक झील के ऊपर से हंस आदि पक्षी उड़ रहे हैं। पीछे एक मन्दिर के अन्दर से एक मूर्ति दिखाई पड़ रही है। ये सब उनकी साधना का दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

५०. गुरु मेधिनीपा का वृत्तान्त

गुरु मेधिनी का वृत्तान्त इस प्रकार है—मेधिनी का अर्थ है, कृषक। वह जाति के शूद्र थे और शालिपुत्र देश के रहने वाले थे।

एक दिन वे खेत में काम करने से बहुत थक गये और आराम के लिए किनारे बैठे थे तो उनके पास उस समय एक योगी आ पहुँचे। उस योगी ने उनसे कहा कि तुम क्या कर रहे हो?

कृषक ने कहा—मैं तो कृषि काम से थक गया हूँ और आराम के लिए यहाँ बैठा हूँ।

योगीने कहा— इस तरह के दुःख से तुम्हें बुरा नहीं लगता? कुछ धर्म ग्रहण करो।

''कृषक ने उत्तर दिया—मुझे धर्मोपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा—यदि तुम साधना कर सकोगे, तो धर्मोपदेश मैं दूँगा।

कृषक—साधना करने में मैं अवश्य ही समर्थ हो सकूँगा।''

उस योगी ने उन्हें अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा देकर उन्हें भावना (साधना) में प्रयुक्त किया। परन्तु पूर्व संस्कार के कारण कृषि-विकल्प (अर्थात् कृषि काम से सम्बन्धित विचारों से उनका मन आक्रान्त हो रहा था, इसलिए भावना में उन्हें अरुचि पैदा हो रही थी। इस स्थिति को उन्होंने गुरु से कह सुनाया। गुरु ने उन्हें अपने विकल्पों के आलम्बन के अनुरूप दीक्षा, इस प्रकार दी—

तुम अपने चित्त को हलके रूप में समझो, सुख-दुःखादि अनुभव को बैल बना लो, शरीर को क्षेत्र (खेत) मानकर (वहीं से) सदा धर्मता महासुख का फ़ल होता हुआ-भावना करो।

(तदर्थ दोहा)—

''अपने विकल्प को हल (के रूप में),

और सुख-दुःख की अनुभूति को बैल बनाओ,

विपाक पञ्च-स्कन्धों की भूमि में, (धर्म) धातु बीज का आरोपण करो।
महासुख का फल निरविच्छिन्न (रूप से) होता रहेगा,
(अतः) इसी तरह के कृषि-कर्म में तुम उद्योग करो।''

उसने इस (वचन) के अनुसार भावना की। बारह वर्ष में सांसारिक नाना विकल्प अवरुद्ध हो गये, महामुद्रा परमसिद्धि का उन्हें लाभ हो गया। फिर उन्होंने सात ताल वृक्ष की ऊँचाई तक के आकाश में बैठकर अपना अवदान कहा। शालिपुत्र नगर में अनेक जन-कल्याण करने के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु मेधिनीपा का वृत्तान्त समाप्त॥

५१. गुरु पङ्कजपा

गुरु पङ्कजपा ब्राह्मण-कुमार के वेश में हैं। हलके आभूषण, दरी और धोती पहने हुए हैं। ये पद्मयुक्त झील के तट पर बैठकर उस झील के समीपस्थ आर्यलोकेश्वर के मन्दिर में एक आर्य भिक्षु की पूजा कर रहे हैं। दृश्य को आश्चर्य-भाव से देख रहे हैं। कन्धे पर दुशाला है।

५२. गुरु घण्टापा

गुरु घण्टापा वज्र और घण्टा लिए कर्ममुद्रा वज्रयोगिनी से आलिङ्गन-मुद्रा में हैं। वज्रयोगिनी खुडखुनी (शस्त्रविशेष) एवं अमृत-भरा कपाल हाथ में लिए हुए हैं। आचार्य ''सहजचक्रसंवर'' के रूप में खड़े हैं, अधोवस्त्र के रूप में व्याघ्र-चर्म पहने हुए हैं। एक पैर पसारे हुए और दूसरा पैर समेटकर एड़ी बस्ती स्थान पर सटाए हुए हैं। वे दो बादल के बीच आकाश मार्ग से उड़ते हुए जा रहे हैं।

५१. गुरु पङ्कजपा का वृत्तान्त

गुरु पंकज का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये जाति के ब्राह्मण थे और उन्हें सिद्धि अवलोकितेश्वर से प्राप्त हुई।

'पंकज' नामक एक ब्राह्मण पुत्र यानी ब्रह्मण पुत्र के रूप में विविक्त (निर्जन) स्थान में कमल-पंखुड़ी के समान कमल से उत्पन्न हुए। उस स्थान के समीप एक 'कमल की झील' थी। उस झील के किनारे एक आर्य अवलोकितेश्वर की मूर्ति थी। 'पंकज' स्वयं महादेव को माननेवाले थे। उस मूर्ति को महादेव की मूर्ति मानकर उन्होंने बारह वर्षों तक उसकी पूजा की, पुष्पादि चढ़ाते रहे। उस जनपद की संस्कृति के अनुसार उस मूर्ति की तीनों समय में पूजा करके, उस पर चढ़े फूलों को लोग अपने सिर पर रखा करते थे।

उस बीच आचार्य नागार्जुन वहाँ पहुँचे और उन्होंने भी उस मूर्ति की पूजा की, उस पर फूल चढ़ाये तो उस मूर्ति ने उनका (नागार्जुन का) फूल हाथ में ले लिया और उनके (नागार्जुन के) सिर पर रख दिया। इस घटना से पंकज को बड़ा क्रोध आया कि मैंने बारह वर्षों तक इसकी पूजा की, आज तक इन्होंने (मूर्ति ने) मेरे फूल को अपने हाथ से ग्रहण नहीं किया। पर इसने (नागार्जुन ने) एक बार इन पर फूल चढ़ाये तो हाथ फैलाकर ले लिया। इस पर उस मूर्ति के मुख से यह कहते सुनाई पड़ा कि 'तुम्हारा मन अशुद्ध है, यह मेरा दोष नहीं है।' यह शब्द सुनकर पंकज को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उन्होंने आचार्य नागार्जुन का चरण शिरोधार्य करके उनसे निवेदन किया कि मुझ पर अनुग्रह करें। उन्होंने (नागार्जुन ने) भी वैसा ही किया। आचार्य ने उनको अभिषेक प्रदान किया तथा दर्शन एवं चर्या की युगनद्ध दीक्षा दी वह इस प्रकार है—

कृपामय रागात्मक सुख,
अद्यनुत्पन्न (तत्त्व) एक ही है।
(इस) अद्वैतता का सम्यग् दर्शन करो,

(यही) आर्य (लोकेश्वर) की अनुसंधि (= आशय[१]) है।

यह कहने पर उन्होंने (पंकज) सुचारु रूप से इसे समझ लिया। वे साधना में लगे, तो सात दिन में ही उन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया; तत्पश्चात् जगत्-अनुग्रह दृष्टि से चर्या करते हुए अनेक उपदेश दिये और कल्याण-कार्य सम्पादन किये। अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु पंकजपा का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. कृपारूपी अनुराग अर्थात् कृपारूपी जगत् अनुराग एवं प्रपञ्च उपशमन शिव-स्वरूप निर्वाण आद्यतः असिद्ध शून्यता एवं निःस्वभाव रस में एक ही है। यही तत्त्व आर्य (लोकेश्वर) के आशय और चिन्त्य का विषय है।

५२. गुरु घण्टापा का वृत्तान्त

गुरु घण्टापा का वृत्तान्त इस प्रकार है— वे श्री नालन्दा जनपद के (महा-विहार स्थित एक) निकाय के थे।[१] वे अक्षुण्ण भिक्षु संवर से युक्त थे। सभी पंच-विद्या स्थानों में पारङ्गत विद्वान् होने के नाते उनका सुयश सर्वत्र फैल रहा था। आचार्य सभी प्रदेशों में जन कल्याण के लिए जाया करते थे।

उस समय राजा देवपाल नामक शासक अपने पुण्य-बल से प्राप्त अपरिमित राज्य-सम्पत्ति का भोग, भोग रहा था। वह अपने अट्ठारह लाख नगर (१८ लाख की आबादीवाले जनपद), कामरूप के नौ लाख नगर (९ लाख की आबादी सम्भवत:) और बंगाल के चार लाख आबादीवाले नगर, कुल मिलाकर इकतीस लाख आबादीवाले नगरों पर राज किया करता था। एक समय आचार्य उसके नगर शालिपुत्र[२] पहुँचे। वे भिक्षाटन करके एक वृक्ष के मूल में अपना स्थान जमाकर बैठे थे।

यों, महाराज देवपाल के अनेक पूज्य गुरु थे। एक समय रात में राजा ने अपनी रानी से परामर्श किया और कहा कि सभी संस्कार अनित्य हैं, भवगत सभी धर्म दु:ख हैं। सांसारिक धर्मों में कोई तत्त्व नहीं हैं। मैं तो इहलोक और परलोक दोनों में राज करूँगा। हम दम्पत्ति को परलोक के पथ्य के लिए अनेक पूज्य स्थानों (गुरुओं) से सम्भार (पुण्य) का सञ्चय करना क्या उचित नहीं होगा?

रानी ने उत्तर दिया— 'आप के लिए बहुत से पूज्य स्थान (भदन्त) पहले से ही थे। अब भी अन्य पूज्य लोगों से विशिष्ट एक महान् विनयधर इस नगर के बाहर

---

१. घण्टपा का जन्मस्थान पूर्व भारत था; वे वारेन्द्र जनपद के राजकुमार थे। पिता के देहावसान के बाद राजगद्दी पर आसीन हुए, तो उन्होंने उसे छोड़कर नालन्दा की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने नालन्दा में जिनदेव नामक उपाध्याय से उपसम्पदा ग्रहण की। नाम 'मतिसार' रखा गया। उनका दूसरा नाम 'जितारि' भी था। (पद्मकर० इति०, पृ० ७९-८०)

२. कुनख्येन पद्मकर के अनुसार 'ओडिविष'। (सम्भवत: पाटलिपुत्र)

एक वृक्ष के मूल में जीविका भिक्षा, चीवर आदि अल्पमात्र सामग्री से जीनेवाले हैं। उनकी सेवा में चौरासी प्रकार के व्यंजन, दाँत से काटकर खाने वाले चौदह प्रकार के चर्व्य, अंगूर के रस आदि पाँच प्रकार के पेय पदार्थ, दीप-प्रकाश के अतिरिक्त रत्नादि प्रकाश आदि-आदि राजा के सभी काम-गुण उन्हीं को अर्पित किया जाय तो अच्छा होगा, राजा ने भी कहा कि 'यह उचित है।'

दूसरे दिन राजपुरुषों के एक दल को आचार्य को निमन्त्रण के लिए भेजा, पर आचार्य नहीं ले आये जा सके। फिर राजा स्वयं बहुत से राज-परिवार के लोगों को साथ लेकर आचार्य के पास गये।[१] वहाँ यथायोग्य प्रणाम, अभिवादन किया और योगक्षेम पूछा। साथ ही बहुत-सी सहज बातें हुई।

(आचार्य ने कहा) आप इधर क्यों पधारे हैं?

(राजा ने उत्तर दिया) हे महाचार्य! श्रद्धा से आपको अपने पूज्य स्थान (पुरोहित) के लिए निमंत्रण अनुनय लेकर आया हूँ।

आचार्य ने कहा— राजा का राज-भक्त पाप से युक्त होता है। मैं वहाँ नहीं आऊँगा।

राजा— आप सदा के लिए (हमारे यहाँ) नहीं रहें, तो एक वर्ष तक तो अवश्य बैठने के लिए आयें। वह भी आचार्य ने स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार क्रमशः छः मास, तीन मास, एक मास, आधा मास और अन्त में एक दिन के लिए कम से कम आने को कहा तो आचार्य ने क्रमशः सब स्वीकार नहीं किया और कहा कि पापी व्यक्ति चार प्रकार की चारिकाओं में से कोई भी करे, सब पाप मात्र ही होता है। अतः मैं वहाँ नहीं आऊँगा। इस प्रकार राजा के चौदह दिन तक पुनः निवेदन करने पर भी आचार्य ने जाना स्वीकार नहीं किया।

---

१. कुनख्येन पद्मकर के अनुसार राजा आखेट खेलते-खेलते उनके पास पहुँचे। आचार्य की दयनीय शारीरिक अवस्था को देखकर राजा को बड़ी दया आ गई। राजा ने उन्हें नगर (राजधानी) आने के लिए निमंत्रण दिया। (पद्मकर० इति, पृ० ७९-८०)

राजा तथा उनके सभी राजपरिवार[१] के लोग बड़े क्रुद्ध हो गये। द्वेष की आग जलने लगी। राजा ने घोषणा की कि इस भिक्षु से ब्रह्मचारित्व जो छीन सकेगा, उसे मैं आधा राज्य पुरस्कार में दूँगा, बीस सेर सोना दूँगा। यह घोषणा सर्वत्र पहुँचाई गई। उस समय, उस नगर में एक छल-कपट से परिपूर्ण प्रधान नर्तकी रहती थी, उसने राजा से कहा—वह काम मैं कर सकूँगी।

राजा ने कहा— 'तुम प्रयत्न एवं उद्यम से इस कार्य को अवश्य सिद्ध करो।'

नर्तकी ने सोचा कि उसके पास एक बारह वर्षीय लड़की थी जो लौकिक धर्म से अस्पृष्ट, सुन्दर चेहरा, सुन्दर चाल, बोलने में अति मधुर स्वरवाली शरीर मांस से भरी, गहन स्तन, यदि उसे सूर्य भी देख ले तो विचलित हो जाय, ऐसी विशेषताओं से युक्त थी। मैं उसे भेजकर उस योगी को संसार में वापस ले आकर ब्रह्मचारित्व से च्युत कर सकूँगी। इस उद्देश्य से उस लड़की की माँ (नर्तकी प्रधान) आचार्य के पास गई और प्रणाम एवं प्रदक्षिणा करके लौट आई। इस प्रकार उसने इस कार्य को दस दिन तक जारी रखा। अन्त में उसने आचार्य से निवेदन किया—

मैं तीन मास के वर्षावास में तीनों मास के भोजन की व्यवस्था करनेवाली दायक बनना चाहती हूँ। आप स्वीकार करें। आचार्य ने इसको भी स्वीकार नहीं किया। वह एक महिने तक इस बात को लगातार दोहराकर आचार्य से निवेदन करती रही। अन्त में आचार्य ने उसे स्वीकार कर लिया। नर्तकी ने प्रसन्न होकर बहुत से उत्सव का आयोजन किया[२] और कहा—

नारी का छल इक्यासी तरह का होता है, काम[३] भी उससे सौ गुना है।

यदि मैं हिलाना चाहूँ तो चारों द्वीप हिला सकती हूँ और ठग सकती हूँ, फिर यह एक भिक्षु को भ्रष्ट करना कौन-सी बड़ी बात है। उसने यह सोचा और बोलती भी गई।

---

१. परिवार से अभिप्राय—सेना, पुलिस और राजपुरुष से है।

२. सारा खर्चा राजभवन से पाती थी। (पद्-इति द्र० व्या०-पृ० ७८)

३. 'प्रेमराग' को ही यहाँ काम शब्द से कहा गया है।

(आचार्य वर्षावास के लिए उस वन में ही रह रहे थे) उससे आचार्य ने कहा— मेरा भोजन आदि पहुँचाने में लड़के ही भेजो, लड़कियों को मत भेजो। उसने उत्तर दिया—वैसा ही करूँगी।

उसने आधे मास तक चीनी का शर्बत एवं भात आदि आचार्य के पास पुरुष द्वारा ही पहुँचाया। तत्पश्चात् अपनी लड़की को नाना प्रकार के अलंकारों से सुसज्जित किया और अनेक प्रकार के खाद्य, पेय-पदार्थ, उत्तमकोटि के भोजन की व्यवस्था करके पाँच सौ सेवकों के साथ उस लड़की को आचार्य के पास भोजन पहुँचाने के लिए भेजा[१]। सेवकों को यह आदेश दिया गया कि वन के बाहर से लौट आयें लड़की को वहाँ अकेली छोड़ दें।

सब लोगों ने वैसा ही किया और लड़की भी अपनी माँ द्वारा सिखाये गये सभी छल-हाव-भाव को स्मरण करती हुई अन्दर पहुँची। भिक्षु ने भी (आचार्य ने भी) पहले के भोजन पहुँचानेवाले समझकर कमरे के अन्दर प्रवेश किया, तो वहाँ एक कुमारी को सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित देखकर कहा कि 'सब पुरुष लोग कहाँ गये?'

लड़की ने उत्तर दिया—वे लोग अन्य काम में व्यस्त हैं, इसलिए मैं आई हूँ। लड़की (आचार्य के भोजन कर लेने के बाद भी) बहुत देर तक बैठी रही। आचार्य ने कहा—'अब तुम जाओ।' लड़की ने कहा 'अभी आकाश में पाँच प्रकार के रंग वाले आच्छन्न-मेघों से वर्षा हो रही है।' यह बन्द हो जाय तो जाऊँगी। यह कहकर बहुत देर तक बैठी रही, जब तक सूर्य अस्त न हो गये।

लड़की ने कहा—मेरे साथ रास्ते में चलनेवाले साथी नहीं हैं, वस्त्र एवं आभूषण को देखकर मेरे मन में प्राण जाने का डर है। आचार्य ने भी यह सच मान लिया और उसको वहीं पर सोने की व्यवस्था की गई। लड़की रात को भयभीत होने

---

१. पद्कर के अनुसार लड़की को सेविका के रूप में स्वीकार करने के लिए उसकी माँ ने पहले से ही आचार्य से अनुमति माँगी थी। आचार्य ने भी उसे स्वीकृति दे दी थी। (पद्० इ० पृ० ८०)

के बहाने चिल्लाई। फिर उसे कुछ समीप सोना पड़ा। विषय की समीपता से उन दोनों का शरीर मिल गया[१]।

उन्होंने (आचार्य ने) यौगिक प्रयोग किया। चार प्रकार के महासुख उत्पन्न करके सभी मार्ग क्रमश: आरूढ़ हो गये। दूसरे दिन से लड़की अपनी माँ के पास जाना छोड़कर वहीं रहने लगी। दोनों का भोजन साथ आने लगा। इस प्रकार उन दोनों को वहाँ रहते एक वर्ष पूरा हो गया और एक बच्चा भी हो गया।

उधर राजा उस नर्तकी से पूछ-ताछ करते रहे, पर उसने साफ-साफ नहीं बतलाया। इस प्रकार तीन साल बीत गये तब नर्तकी ने राजा से कहा—

'हे राजन्! आपकी आज्ञा पूर्ण हो गयी है। आप खुश रहें। राजा ने कहा—यदि ऐसा है तो तीन दिन के बाद उस भिक्षु को मेरे पास ले आने का कार्य करो, ऐसा तुम अपनी पुत्री से कहो। राजा सालिपुत्र नगर के सभी लोगों को साथ लेकर उस भिक्षु की ओर चला। उधर भिक्षु (आचार्य) ने लड़की से पूछा कि अब हम लोगों को यहीं रहना चाहिए या और जगह जाना चाहिए?

लड़की ने उत्तर दिया—हम दोनों के इस खराब काम की सब निन्दा कर रहे हैं, यहाँ से अन्यत्र चला जाय तो अच्छा होगा।

(दोनों जाने के लिए तैयार हुए) लड़की ने अपने बच्चे को उठाया और मदिरा का तुम्बा (पात्र विशेष) लिये दोनों चल दिये। रास्ते में राजा (सालिपुत्र के नागरिकों सहित) से भेंट हो गई। राजा ने हाथी के ऊपर से उतरकर (भिक्षु से) कहा—भिक्षु जी! आपके चीवर के अन्दर क्या है? यह लड़की आपकी क्या है?

भिक्षु ने उत्तर दिया—चीवर के अन्दर छोटे बच्चे हैं और यह मदिरा का तुम्बा है। यह लड़की हमारी पत्नी है।

---

१. कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि वहाँ उस लड़की को आचार्य ने अपनी कर्म-मुद्रा के रूप में योग्य बनाने के लिए सामान्य दीक्षा भी दी। क्रमश: अभिषेक एवं तन्त्र की दीक्षा देकर सन्तति परिपाक कर्म-मुद्रा के रूप में सेवन किया। (पद्कर इ० पृ० ८०)

राजा—जब मैंने आपको निमंत्रण दिया तो आप ने कहा था कि तुम पापी के पास मैं नहीं आऊँगा। अब तुम पुत्र एवं पत्नी से क्या करोगे? तुम स्वयं एक पापी हो।

आचार्य ने कहा—मुझे कोई दोष नहीं है, तुम (व्यर्थ) अपवाद मत करो।

पुनः राजा आदि पूर्ववत् कहने लगे, तो आचार्य ने छोटे बच्चे और[1] मदिरा के पात्र तुम्बा-जो चीवर में बाँधकर रखे थे, भूमि पर पटके। पृथ्वीदेवी भयभीत हो गई और भूमि फट गई; वहाँ से पानी उभर आया[2]। उस पानी के अन्दर बच्चे और पात्र (तुम्बा) वज्र और घण्टा बन गये[3]। वे स्वयं श्री चक्रसंवर के रूप में परिणत हो गये और लड़की वज्रवाराही के रूप में। सपरिवार राजा (एवं सालिपुत्र की जनता जो वहाँ एकत्र थे) के ऊपर आकाश में चक्रसंवर मातृ-पितृ युगनद्ध रूप, वज्र और घण्टा धारणकर बैठे।

सब लोग आकाश की ओर देखकर आचार्य की शरण में जाकर, उनसे प्रार्थना करने लगे। पर उनके वज्र-क्रोध-समाधि से व्युत्थित न होने के कारण राजा और अन्य नागरिक भूमि फटकर निकले पानी में डूब-डूबकर मरने लगे। उसी समय आर्यावलोकितेश्वर वहाँ आ पहुँचे और फटी भूमि पर पैर रखकर पानी उभरने से रोकने लगे। राजा और प्रजा को राहत मिली।

पुनः लोगों ने गुरुजी (घण्टापा-आचार्य) से प्रार्थना की तो उन्होंने (समाधि से उठकर) 'हूँ' शब्द को ध्वनित किया। इससे सभी (भयंकर पृथ्वी पर) पानी (की बाढ़) अदृश्य हो गया। राजादि सभी लोगों ने उनसे क्षमा याचना की। आर्यावलोकितेश्वर की मूर्ति भी पत्थर की मूर्ति होकर वहीं स्थिर हो गई। कहा जाता है कि आज भी (अभयदत्त श्री के समय में भी) उस मूर्ति के पैर के नीचे से पानी बहता है। उसके बाद आचार्य ने राजा आदि को अनेक प्रकार के उपदेश दिये। उपदेश इस प्रकार हैं—

---

१. इन्हें दो बच्चे हो चुके थे—एक बच्चा और एक बच्ची।

२. कहीं मदिरा उभर आने की बात लिखी थी-पद्कर, पृ० ८०।

३. कहीं-कहीं—तुम्बा वाराही, लड़की घण्टी और लड़का वज्र बने।(पद्कर-इ०, पृ० ८०-८१)

जैसे औषधि और विष,

अपना स्वभाव एक होने पर भी।

(उनसे) दो भिन्न तरह के फल निकलते हैं,

उसी प्रकार प्रहेय और प्रतिपक्ष भी ॥१॥

एक ही स्वभाव के होते हैं, न कि भिन्न,

पण्डितजन (इसे) जानकर (किसी को) नहीं त्यागते।

बाल अज्ञानी अज्ञान (वश) पंच विषों[1] के कारण संसार में भटकते हैं ॥२॥

यह कहने पर, राजादि जन-समुदाय के लोगों में जो आचार्य के प्रति सर्वथा के लिए श्रद्धा निवृत्त हो गई थी सब लोग समान रूप से श्रद्धालु हो गये। इस घटना से अपरिमित सत्त्व मार्ग आरूढ़ हो गये। सब लोगों ने उन्हें 'घण्टापा' कहना आरम्भकर दिया।

कहा जाता है कि उस लड़की ने इनको इससे पूर्व के छः जन्मों में शील से भ्रष्ट किया। इस जन्म में भी उसने यही करने की चेष्टा की थी, परन्तु तब तक आचार्य धर्मधातु के रस में सभी द्वैत-विकल्प खो चुके थे और जिसके कारण उनकी सन्तति (तन्त्र) बहुत परिशुद्ध हो चुकी थी। इसलिए बाधा की जगह उनके लिए ये परम सहायक सिद्ध हुए। पुत्र वज्रपाणि थे। वह लड़की भी पूर्व जन्मों में जब-जब इन आचार्य के सम्पर्क में आयी, इनको लाभ-सत्कार से पूजती रही, जिसके कारण उसने भी मलविशुद्ध होकर साथ ही फल की प्राप्ति की।

इस प्रकार गुणसम्पन्न आचार्य घण्टापा (सपत्नीक) इसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु घण्टापा (घण्टीपा) का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. पंच विष— राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, मत्सर्य, ये पाँच विष हैं।

५३. गुरु जोकिपा (योगीपा) का वृत्तान्त

गुरु जोगिपा (जोकिपा=योगीपा) ओदन्तपुरी के रहनेवाले थे और जाति के चाण्डाल थे। उनके गुरु शबरपा थे।

ये बड़े उद्यमी थे, पर प्रज्ञा की इनमें बड़ी कमी थी। एक समय गुरु शबरपा उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने हेवज्र के मण्डल में जोगीपा को अभिषेक प्रदान करके उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा दी और तदनुसार उन्हें भावना करने को कहा। पर गुरु के उपदेश का अर्थ वे नहीं समझ पाये। उन्होंने गुरु से प्रार्थना की कि 'हे गुरु जी! मेरे द्वारा भावना सम्भव नहीं हो रही है। अत: इसके अतिरिक्त मुझे शरीर एवं वाणी के द्वारा कुछ पुण्य करने का उपाय बतलायें।'

गुरु ने उन्हें 'वज्र हेरुक' का जप सिखाया और कहा कि जाओ तुम चौबीस महान तीर्थ स्थानों में जाकर इसकी साधना करो। उन्होंने भी वैसा ही किया। बारह वर्ष में (चित्तादि) मल-विशुद्ध होकर 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उन्हें लाभ हो गया।

अन्त में उन्होंने कुछ अवदान भी कहे और पाँच वर्षों तक जगत् कल्याण करने के बाद उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु जोगिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

५३. गुरु योगिपा

गुरु योगिपा या जोगिपा चंक्रमण-मुद्रा में हैं। सिर में जटा बाँधे हुए हैं। लंगोटी के अलावा लगभग निर्वसन हैं। हाथ में डण्डा है तथा सभी सामान कपड़े में बाँधकर उसे डण्डे के एक छोर में लटकाकर कन्धे पर रखे हुए बहुत दूर नजर गाड़े चल रहे हैं।

५४. गुरु चलुकिपा

गुरु चलुकिपा (चलुकपा) हलके वस्त्र पहने हुए और जटा बाँधे हुए हैं। मृग-चर्म बिछाकर पहाड़ के समान एक बहुत बड़े शिला-खण्ड को तकिया के रूप में रखकर सोये हुए हैं। ठीक सामने एक बड़ा-सा ध्यान-स्तन्बा गड़ा हुआ हैं।

५४. गुरु चलुकपा का वृत्तान्त

गुरु चलुक या चलुकिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— इनका देश भङ्गलपुर (बंगालपुर) था और जाति के वह शूद्र थे। उनके गुरु मैत्रीपा थे।

ये अत्यन्त निद्रा प्रिय थे। सब समय नींद के वशीभूत होकर कोई भी उद्यम नहीं कर पाते थे। तब उनके पास एक योगी आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा—तुम यहाँ क्या करने बैठे हो?

चलुक ने उत्तर दिया—मैं संसार से मुक्ति पाने के लिए एक धर्म-साधना करने के लिए सोच रहा हूँ। परन्तु किसी धर्मोपदेशक आचार्य से मेरी भेंट नहीं हो पाई। आवरण (मल के बाहुल्य) स्वभाव के कारण नींद के वशीभूत होकर उद्यम नहीं कर पाता; अत: आप मुझे धर्मोपदेश तो दें, साथ ही यदि नींद कम होने का उपाय न दें, तो मुझे कोई लाभ नहीं हो पायेगा।

योगी मैत्रीपा ने उनसे कहा—तुम्हें अभिषेक दिया जायगा, जिससे तुम्हारी नींद भी कम हो जायगी और संसार से भी मुक्ति पाओगे। उन्होंने चलुकि को चक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया तथा गम्भीर 'सम्पन्न-क्रम', नाडी एवं वायु की दीक्षा इस प्रकार दी—

समग्र दृश्यभाव (दृश्य-जगत्) को अपने काय, वाक् एवं चित्त इन तीनों में समाविष्ट करो। ललना एवं रसना को मध्य अवधूती में प्रवेश कराओ। अपने काय एवं अवधूती को झील के रूप में और चित्त को हंस के रूप में मानकर उस झील के अन्दर तैरते हंस की भावना करो। इससे तुम्हारी निद्रा भी कम हो जायेगी और वायु-अवधूती में प्रवेश हो जाने से निर्विकल्प ज्ञान स्वत: उत्पन्न होने लगेगा। इस प्रकार (मैत्रीपा ने) उनको अभिषेक एवं दीक्षा प्रदान की।

वह (चलुकि) भी तदनुसार भावना करते रहे। नौ वर्ष में उनका समस्त चित्त मल (आवरण) विशुद्ध हो गया उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ। उनका अवदान—

'सभी दृश्य जागतिक धर्म अपने ही काय-वाक्-चित्त में समाविष्ट हैं,
वह भी ग्राह्यग्राहक अकल्प तीन नाड़ियों में समाविष्ट हैं।
दोनों को अवधूती में प्रविष्ट कराकर झील के रूप में भावना की, तो
विज्ञान का हंस उसी के रस से जीने लगे हैं।

इस प्रकार अवदान-उक्ति के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु चलुक का वृत्तान्त समाप्त॥

५५. गुरु गोधुरिपा

गुरु गोधुरिपा जाल बिछाकर चिड़िया का शिकार करने की मुद्रा में हैं तथा लता एवं पत्तियों से बने अधोवस्त्र पहने हुए हैं। बाल कटे-बने हुए हैं। अंगुलियाँ उठाकर आकाश के पक्षियों की ओर संकेत कर रहे हैं।

५६. गुरु लुचिकपा

गुरु लुचिकपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में हैं। दुशाला, हलके आभूषण एवं धोती धारण किये हैं। दाढ़ी और सिर के बाल उखाड़ने से कुछ विकृत अवस्था में हैं।

५५. गुरु गोधुरिपा का वृत्तान्त

गुरु गुण्डरिपा गोंडरि या गोधुरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—गोधुर या गोंडर का अर्थ है, चिड़ीमार (व्याध)। वे सदा दोल (चिड़िया मारने का एक औजार) लेकर पक्षी मारने जाते थे। एक समय (वे पक्षी मारने जा रहे थे) उनके पास एक योगी आ पहुँचे। योगी बोले—हे कुलपुत्र! तुम क्या कर रहे हो?

व्याध ने कहा—हे आर्य! पूर्व के अर्जित दुष्कर्मों के कारण मेरा गोंड जाति में जन्म हो गया। जीविका के लिए सदा पक्षियों की हिंसा करनी पड़ती है। इसी से जीना पड़ता है। इससे दु:खी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा—

(कृत) कर्म और कर्मों से इस जन्म में दु:खी,

परलोक इससे भी अधिक दु:खी; तो,

सदा सुखी सद्धर्म, अहो क्यों नहीं साधते?

गोंडरि ने कहा—

हे गुरु! मेरे जैसे पापी व्यक्ति के लिए कृपादृष्टि हो, यदि आप मुझे दीक्षा दें, तो साधना क्यों नहीं कर सकता। इस पर योगी ने उन्हें "प्रभाव-उत्क्रांति" का अभिषेक दिया और उनको उनके (संस्कार में मौजूद) आलम्बनों के अनुरूप "एकालम्बन" की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है—

"लोक में जितना भी शब्द हो, वह सब पक्षी की आवाज के रूप में समझो तथा पक्षी की आवाज और अपने चित्त का आलम्बन दोनों को मिलाकर एक करके भावना करो।"

पुन: आचार्य ने उसे दोहे के रूप में कहा—

पुन: उस शब्द की ओर चित्त भागता हो, तो,

जैसे कोयल की मीठी ध्वनियाँ (एक ही रस में) ध्वनित होती हैं।

(उसी तरह) सभी शब्द शब्दमात्र में एक ही होते हैं;

वैसा ही शब्द और शब्दग्राहक (बुद्धि) में।

व्याप्त धर्मता के स्वरूप की भावना करो॥''

(अर्थात् शब्दगत ग्राह्य-ग्राहक शून्यता की भावना करो)

इस वचन के अनुसार भावना की, तो सभी शब्दों की ध्वनि एवं (उनकी) शून्यता के अभेदत्व का उन्हें ज्ञान होने लगा।

नौ वर्ष में उनके चित्त का सभी मल (आवरण) विशुद्ध हो गया और 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हो गई। अपनी अवदान की उक्तियाँ भी बहुत-सी उन्होंने कह डाली। एक सौ वर्षो तक इसी लोक में बैठे अपरिमित सत्त्वार्थ किये। अन्त में तीन सौ शिष्य-परिवार के साथ इसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु गोधुरि का वृत्तान्त समाप्त॥

५६. गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त

गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'लुचिक' का अर्थ है—खरगोश की तरह नीचे बैठने-उठनेवाला। ये पूर्वी बंगाल के रहनेवाले, जाति के ब्राह्मण थे।

पूर्वी बंगाल के एक ब्राह्मण का अपने परिवार-जनों में से बहुत से आदमी के मर जाने के दु:ख से संसार से लगाव नहीं रहा। एक निर्जन स्थान में जाकर कुछ धर्म-साधना करने को सोचा तो दीक्षा आदि न रहने से वे सोचने लगे कि मुझे एक धर्मोपदेश देनेवाले गुरु कब मिलेंगे, ऐसे गुरु से भेंट हो जाय इत्यादि।

एक दिन एक योगी वहाँ आये, तो वह बड़े प्रसन्न हुए और योगी के चरणों में प्रणाम किया।

योगी ने पूछा कि 'मुझे प्रणाम करके तुम क्या चाहते हो?'

लुचिकपा—मैं संसार (के धर्मों) से मन विरक्त (हो) कर कुछ करने को सोच रहा था, पर दीक्षा (उपदेश) देनेवाले गुरु से अभी भेंट नहीं हो पायी। आज आप जैसे गुरु से मेरी भेंट हो गई—अब दीक्षा ग्रहण करूँगा।

योगी ने (उनकी पात्रता देखी और) उन्हें चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक दिया, उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा भी दी। तदनुसार उन्होंने भी बड़े प्रयत्न के साथ भावना (साधना) की। बारह वर्ष में उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम के युगनद्ध साक्षात्कार से परमसिद्धि की प्राप्ति हुई। इनका नाम 'लुचिक' उसी समय से प्रसिद्ध हुआ।

उनका उदान (दोहा)—

''संसार और निर्वाण दोनों, भिन्न रूप से स्थित नहीं देखता,

यही महासुख और मुक्ति है, क्षुद्रत्वेन ग्रहण से(यहां)पहुँचना दुष्कर है।''

यह कहकर उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये। (जाते समय) आकाश में स्थित होकर अनेक अवदान कहे और वहीं से अन्त में वह अन्तरधान हो गये॥

गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त समाप्त॥

५७. गुरु नगुणपा का वृत्तान्त

गुरु नगुणपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'नगुण' का अर्थ, बिना गुणवाला। ये पूर्वी भारत के रहने वाले थे और जाति के शूद्र।

पूर्वी देश में एक शूद्र परिवार में एक बच्चा पैदा हुआ। जन्म-उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। लालन-पालन के बाद जब वह बड़ा हुआ तो वह बड़ा आलसी और निद्राप्रेमी रहा। लोक-कर्म करने का उसको ख्याल में भी नहीं आता था। सब परिवार के लोग समान रूप से यह कहने लगे कि इस तरह के आलसी व्यक्ति, अच्छा या बुरा कोई भी काम नहीं कर सकते, इस तरह के बेटे की अपेक्षा कोई फल ही पैदा होता, तो कम से कम खाया तो जा सकता था। इस तरह से सब लोग उसकी निन्दा किया करते थे। इससे वह बड़े दु:खी हो गये। एक दिन वह एक निर्जन जगह में जा बैठे, तो उनके पास एक योगी आ गये। योगी ने उनसे कहा—तुम नगर से भिक्षा माँगकर मुझे खिलाओ।

आलसी व्यक्ति ने कहा—'यह मुझसे पूरा नहीं हो पायेगा।' यह कहते हुए वह भूमि से उठ भी नहीं पाया।

योगी को इसे देखकर बड़ी दया आ गयी। स्वयं उसने उस आलसी को खाना खिलाया और कहा—तुम्हारे पास कौन-सा गुण है?

आलसी—'आर्यवर! मेरा नाम ही नगुण है, मेरे पास कोई गुण नहीं है।' यह कहकर उनका दिया हुआ खाना भी भूमि पर लेटकर खाने लगे। यह देखकर योगी ने उनसे कहा—तुम मरने से नहीं डर रहे हो?

आलसी—डर तो लगता है, पर कोई उपाय नहीं है।

योगी—यदि साधना कर सकते हो, तो उपाय मैं देता हूँ।

आलसी—यदि सोकर (लेटकर) कोई काम होता हो, तो कर सकता हूँ।

योगी ने उन्हें अभिषेक प्रदान किया और प्रतीयमानता और शून्यता दोनों के युगनद्ध भावना की दीक्षा इस प्रकार दी—

५७. गुरु नगुणपा

गुरु नगुणपा सामान्य वस्त्र और आभूषण पहने पर्यङ्क के सहारे पीठ लगाकर बैठे हैं और खाना खाने की मुद्रा में हैं। उनके ठीक सामने कुछ उच्च स्थान पर एक योगी बैठे हुए हैं।

५८. गुरु जयानन्द

गुरु जयानन्द एक राजा के मन्त्री के वेश में हैं। वह विविध प्रकार से भोजन अन्न आदि सामग्री जुटाकर और हाथ में विशेष वाद्ययन्त्र लेकर 'बलिदान' (पूजा विशेष) करने की मुद्रा में हैं। सामने एक बुद्ध की प्रतिमा है।

(दोहा)

ग्राह्य-ग्राहक कोई भी सिद्ध नहीं है,
इसे न जानने से सभी जीव।
दुःख से पीड़ित होते हैं बेचारा,
है यह भी अद्यनुत्पन्न ही॥ १॥
प्रतीयमान और शून्य के अभिन्न रूप,
प्रभास्वरता (चित्त) सन्तति में उत्पन्नकर।
पागल के समान चारिका से,
नगरों में दौड़ा करो (सर्वत्र)॥ २॥

इस वचन के अनुसार उसने भी भिक्षा माँगते हुए साधना की। फलतः उसे युगनद्ध प्रभास्वरता का ज्ञान प्राप्त हो गया और सिद्धि का लाभ हुआ। फिर वह सर्वत्र घूमते रहे, लोग उनसे पूछते कि आप कौन हैं? वह बिना कुछ कहे उन्हें देखते रहते थे। लोग उनकी दशा को दयनीय कहते। वह योग्य पात्रों को प्रतीयमान धर्म एवं शून्यता की अभिन्नता का मार्ग दिखलाते रहे।

अन्त में जैसे समुद्र में नाव टूट जाती है, उसी प्रकार उसका भ्रांति-जाल विच्छिन्न हो गया। उन्होंने 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त की और उसी शरीर के द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु नगुणपा का वृत्तान्त समाप्त॥

५८. गुरु जयानन्द का वृत्तान्त

गुरु जयानन्द (जयानन्दि) का वृत्तान्त इस प्रकार है—वह बंगाल के रहनेवाले और जाति के ब्राह्मण थे।

बंगाल के एक राजा के ब्राह्मण मन्त्री थे। एक समय उस ब्राह्मण ने तांत्रिक धर्म ग्रहण किया (दीक्षा ग्रहण की)। गुह्य रूप से वे मंत्र साधना करते रहे। उनको मन्त्र प्रभाव प्राप्त होते किसी ने नहीं जाना। वह सदा (सामान्य अन्ननिर्मित) बहुत-सी बलि दिया करते थे। इस घटना को अन्य मन्त्री सहन नहीं कर सके और वे जाकर राजा से कह आये। राजा ने भी उस (साधक मन्त्री) को पकड़कर लोहे के जंजीर में बाँध कर कारागृह में डाल दिया। मंत्री ने कहा—मैंने महाराज के मुट्ठी-भर द्रव्य का भी नुकसान नहीं किया। अतः मुझको इस जंजीर से मुक्त करो। पर राजा ने उनकी कुछ नहीं सुनी।

उसके बाद वहाँ बलि के समय आने पर उसे खाने के लिए बहुत से कौआ आ गये। पर वहाँ (उस दिन बलि देनेवाले) वह (मन्त्री) नहीं थे और बलि का कोई प्रबन्ध नहीं था। इससे कौआ लोग बड़े क्रुद्ध हुए और अपनी पूरी सेना के साथ राजमहल गये, सभी लोगों के शरीर और सिर नोचने लगे और चोंच मारने लगे। राजा आदि सब लोग आश्चर्य चकित होकर रह गये। उनमें से एक चिड़ियों की भाषा जाननेवाले थे; उन्होंने देखा कि कौवे लोग कह रहे हैं कि हम सबके माता-पिता के समान ब्राह्मण को इस राजा ने बन्दकर दिया है। राजा ने यह वृत्तान्त सुना तो बोला कि यदि ऐसा है, तो वह (मन्त्री) सच्चा है, उस मन्त्री से क्षमा माँगो और उससे कह दो कि पक्षियों को लौटाओ। उन्होंने (मन्त्री ने) पक्षियों से वैसा कहा, तो सब कौवे लौट गए।

इस घटना से राजा के मन में उस मंत्री के प्रति बड़ा विश्वास जम गया और प्रतिदिन पाँच सौ सेर चावल बलि की सामग्री के रूप में उसको दिया जाने लगा। मंत्री का नाम भी सर्वत्र 'जयानन्द' विख्यात हो गया।

उनकी मुखोक्ति उदान (दोहा)—

"इस सहज ज्ञान का,

गुरु कृपा से सम्यगवबोध हुआ।

मन्त्री बनना है, परम महासुख के,

सांसारिक परिवार में (अब) मैं नहीं रहूँगा॥ १॥

स्वतः प्रकाशमान उस (तात्त्विक) राजा ने,

ग्राह्य-ग्राहक के द्वैत अरियों को मार ही दिया है।

(अतः) सांसारिक सुखों से (कोई) आसक्ति नहीं है,

अहो! अज्ञानी जीव।

अहो! जय (मैं) यही कहा हूँगा" ॥ २॥

अन्त में अनेक जगत् कल्याण साधकर सौ वर्ष बाद वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु जयानन्द का वृत्तान्त समाप्त॥

५९. गुरु चपरिपा का वृत्तान्त

गुरु चपरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये जाति के कहार (खुरपा, छोड्वा-पूड़ी बेचनेवाले) चम्पक के रहनेवाले थे।

अत्यन्त दरिद्रता के कारण उनके पास पहनने के लिए कपड़े कटुल (सम्भवत: लङ्गोटी) ही था। एक धनी घराने से पूड़ी की बहँगी (भार) लेकर बेचते थे। उसमें से जो मुनाफा मिलता उसी से जीविका चलाते थे। एक दिन जो बहँगी तेल से पकी पूड़ी की ले आए थे, उसे न बेचकर स्वयं खाना आरम्भ कर दिया। आधा पूड़ी खा ही चुके थे कि तब तक आर्य अवलोकितेश्वर एक भिक्षु का रूप धारण करके उनके पास आये। उनको देखते ही चपरिपा को बड़ी श्रद्धा हुई और प्रणाम कर आधा खाए हुए टुकड़े को उन्हें दे दिया। भिक्षु ने उसको ग्रहण करते हुए कहा— तुमने यह कहाँ से पाया?

उसने (चपरिपा ने) सभी वृत्तान्त सही सुना दिया।

भिक्षु ने कहा—हम दोनों दायक एवं ग्राहक के रूप में हैं। मैं अपने दायक को एक धर्मोपदेश करना चाहूँगा। उस व्यक्ति ने भी (धर्मोपदेश सुनने के हेतु) मण्डल पुष्प आदि अर्पित करके सुनना आरम्भ किया।

निर्माणिक (भिक्षु) ने—त्रिशरण, चित्तोत्पाद आदि से उन्हें अधिष्ठित किया, षड्-अक्षर (मन्त्र ......)की दीक्षा दी। उसने भी बड़ी नम्रता के साथ उसे ग्रहण किया और भिक्षाजीवी होकर साधना आरम्भ कर दी।

एक समय, पहले के पूड़ी दिलानेवाले स्वामी उनके पास आये और कहने लगे—मेरी उस बँहगी या भार का दाम चुकाओ।

उस (चपरिपा) ने कहा—मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। उस पूड़ी के ''भार स्वामी'' ने उसे पकड़ कर मारना आरम्भ किया, तो उसने कहा कि पूड़ी केवल मैंने अकेले नहीं खाई। हम गुरु -शिष्य दोनों ने खाई है। ऐसी दशा में आप मुझ अकेले को क्यों मार रहे हो? फिर भी वे मारते गये और चपरि उक्त शब्द बोलते गये, तो

५९. गुरु पचरिपा

गुरु पचरिपा योगी वेश में किसी वृक्ष की छाया में बैठे हैं। केवल लंगोटी मात्र कपड़ा पहने हुए और सिर के बाल मुंडे हुए हैं। एक बड़ी आकार की कचौड़ी का आधा भाग उठाकर खा रहे हैं। उनके सामने एक भिक्षु खड़े हैं और ये भिक्षु आर्य अवलोकेश्वर का प्रछन्न रूप है।

६०. गुरु चम्पकपा

गुरु चम्पकपा अपने उपवन में राजा के वेश में गद्दी पर बैठे हैं। उनके चारों ओर सुगन्धित पुष्प-युक्त चम्पक वृक्ष लगे हैं।

उस तरह के शब्द दीवार (वृक्ष) आदि से भी निकलने लगे। इससे बहँगी का स्वामी बहुत अचम्भित हुआ और यह कहकर कि मेरी बहँगी तो तुम ही लेकर गये। कहकर उन्हें वहीं छोड़ दिया तो चपरिपा एक विहार में गये और (वहाँ स्थित) अपने इष्टदेव की मूर्ति से बहँगी का दाम माँगा, तो उस मूर्ति ने सौ तोला सोना उनको दे दिया। उस सोने को लेकर उन्होंने उस गृहपति के पास जाकर उसकी बहँगी का दाम चुका दिया। मार खाने से उनके जो पूर्वसंस्कार के कुछ आवरण थे वह भी परिशुद्ध हो गये। वह सोचने लगे कि मेरा गुरु आर्य ही है।

पोतल गिरि (जहाँ आर्य लोकेश्वर निवास करते हैं) जाने की तैयारी करके वह चले। रास्ते-में जहाँ काँटों का वन था, वहीं उनके पैर में एक काँटा चुभ गया। इससे बड़ी पीड़ा होने लगी। उन्होंने आर्य को स्मरण कर विलाप किया। आर्य ने साक्षात् प्रकट होकर उनसे कहा—'तुम्हारा गुरु मैं हूँ। अब तुम स्वतंत्र होकर यहाँ से वापस जाओ। विनेय लोगों को (सम्यक् मार्ग में) आनीत करो।

इससे वह अत्यानन्दित हुए और आकाश में ऊपर उड़ गए तथा चम्पक लौट गये। चम्पक के सब लोगों ने इसे देखा तथा आश्चर्यचकित होकर रह गये। बाद में इनसे उपदेश के लिए प्रार्थना की गई तो इन्होंने सब लोगों को प्रतीयमान धर्म एवं शून्यता की अभिन्नता की दीक्षा दी। इसके बाद सर्वत्र इनका नाम गुरु चपरिपा विख्यात हो गया।

अन्त में इसी शरीर द्वारा वह खेचरभूमि चले गये॥

गुरु चपरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६०. गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त

गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है, यह चम्पक बिहार में भागलपुर के रहनेवाले थे। 'चम्पक' एक फूल का नाम है, यही नाम नगर का भी पड़ गया। जाति के यह क्षत्रिय थे।

चम्पक के एक राजा, जो राज्य-सम्पत्ति से परिपूर्ण थे। वह सुन्दरता के अभिमान एवं राजसुख के बाहुल्य से उन्मद होकर परलोक आदि का विचार तक नहीं करते थे। वे चम्पक-पुष्प के उद्यान में पुष्पनिर्मित महल में बैठते थे और उनके रहने का आसन (गद्दी) एवं तकिया आदि भी अति सुगन्धित पीले रंग के चम्पक-पुष्प से बने हुए होते हैं। राजा के इस तरह के महल में रहते समय एक दिन एक योगी वहाँ आये और उनसे भोजन की याचना की तो राजा ने भी नम्रता से उनका पैर धोया और उन्हें आसन पर बैठाया, जलपान अर्पित किया।

योगी ने कुछ धर्मोपदेश दिया। सभी राजपरिवार ने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ उन्हें वहीं के राजगुरु के रूप में बैठने के लिए प्रार्थना की।

योगी ने भी इसे स्वीकार किया और वहीं बैठे।

एक दिन राजा ने कहा—हे योगी! आप बहुत से देश-देशान्तर घूमे हैं। इस प्रकार के पुष्प एवं हमारे जैसे अन्य राजा देखे हैं?

योगी ने उत्तर दिया—

चम्पक-पुष्प उत्तम गन्ध से, युक्त होने पर भी,

अपने शरीर से वैसे नाना सुगन्ध नहीं निकलते।

राजा का राज्य अन्य राज्य से विशिष्ट होने पर भी,

मृत्यु आते समय वह कुछ न लिए खाली (हाथ ही) जायगा।

इस कथन के अनुसार राज़ा ने अपने शरीर की परीक्षा की, तो स्वत: उसे घृणा उत्पन्न हो गई और वह विरक्त हो गये। पुन: उस (योगी) से उपदेश के लिए प्रार्थना की।

योगी ने उन्हें प्रथमत: कर्म-फल की देशना दी, उसके बाद अभिषेक दिया। उत्पत्तिक्रम एवं सम्पन्नक्रम मार्ग की दीक्षा दी। परन्तु राजा के सभी विकल्प पुष्पादि की ओर चले जाने से उन्हें भावना में अरुचि हुई। तब आचार्य ने विकल्प को मार्ग के रूप में उपनीत (उपयोग) करने का उपदेश इस प्रकार दिया—

आभास होते ही शून्य हो जाने पर,

गुरु के उपदेश (रूपी) पुष्प में।

अपने चित्त का मधुकर बैठ जाता है;

अनास्रव अमृत मधु तीनों की।

एक ही रूप में भावना करने से,

फल (के रूप में) महासुख का उदय होगा।

(यह) छठे वज्रधर की आज्ञा है,

विना सन्देह (इस) की भावना करो ॥२ ॥

इस कथन के बाद उसने भी तदनुसार बारह वर्षों तक भावना की, तो उन्हें (गुरु) उपदेश, स्वचित्त की धर्मता और अनुभव इन तीनों की अभिन्न एकरसता की ज्ञानरूपी सिद्धि प्राप्त हो गयी। उस समय से उनका नाम सर्वत्र 'चम्पक' विख्यात हो गया।

अपनी रानी सहित अपरिमित परिवार को उन्होंने धर्मोपदेश दिये, अन्त में उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६१. गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त

गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'भिक्षन' का अर्थ है, भिक्षा माँगनेवाला। यह सालिपुत्र देश के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

सालिपुत्र नगर में एक शूद्र जाति के व्यक्ति सारे धन-द्रव्य क्षीण होकर गाँवों और नगरों में भिक्षा माँगकर अपनी जीविका चला रहे थे। एक समय भिक्षा न मिलने से वह बड़ी क्षीणता के साथ एक निर्जन जगह में जा बैठे। उस समय एक डाकिनी (साधारण नारी के रूप में) उनके पास आकर कहने लगी— 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

उसने भी अपना सब सत्य वर्णन कर दिया।

डाकिनी ने कहा—मेरे पास इष्ट प्राप्ति का उपाय है।

(सप्रसन्न) शूद्र—वही आप हमें दें।

डाकिनी—तुम्हारे पास दक्षिणा के लिए क्या है?

शूद्र ने (अपने पास कुछ न देखकर) मुँह में एक ऊपर और एक नीचे के दाँत रखकर शेष सब निकालकर डाकिनी को अर्पितकर दिये।

डाकिनी ने उसके अध्याशय एवं निष्कपट पात्रता देखकर अभिषेक प्रदान किया और प्रज्ञोपाय की युगल दीक्षा दी।

भिक्षनपा ने भी तदनुसार भावना की, तो सात वर्ष में उन्हें सत्य का साक्षात्कार हुआ। वे अनेक अनास्रव गुण प्राप्तकर जीव-उद्धार अर्थ घूमते रहे। उनका नाम 'भिक्षनपा' प्रसिद्ध हो गया। अनेक वर्ष बाद इसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये॥

गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६१. गुरु भिखनपा

गुरु भिखनपा हाथ में कमण्डल लिए हुए हैं। उनके सामने एक डाकिनी, जो बिना सँवरे बाल और शान्त स्वभाव की हैं, उपदेश देने की मुद्रा में बैठी हुई हैं। भिखनपा अपने मुँह से अपने दाँत निकालकर उन्हें समर्पित कर रहे हैं। उपदेश सुनने की व्यग्रता के भाव में हैं।

६२. गुरु घिलिपा

गुरु घिलिपा विविध प्रकार के तेलों के पात्र लेकर, तेल बेच रहे हैं। एक पैर चलती मुद्रा में और एक पैर का घुटना जमीन पर रखकर कुछ चञ्चलता दिखा रहे हैं।

६२. गुरु घिलिपा का वृत्तान्त

गुरु घिलिपा का वृत्तान्त- इस प्रकार है— यह सतपुरी के रहनेवाले, जाति के तेली थे।

सतपुरी नामक नगर में एक व्यक्ति तेल बेचकर अपनी जीविका चला रहा था। उसने तेल बेचने का नाटक किया, तो व्यापार बहुत अच्छा हुआ और उसे 'कुबेर' के समान धन-धान्य की प्राप्ति हुई। वे काम-भोगों को भोगते हुए दिन बिता रहे थे। वे चौरासी प्रकार के व्यंजन, बारह प्रकार के खाद्य-पदार्थ, पाँच प्रकार के पेय आदि (जो उस समय इन पदार्थों का सेवन केवल राजा लोग ही किया करते थे) राजा की दृष्टि से बचकर भोग रहे थे।

एक समय 'भहन' नाम के एक पण्डित उनके यहाँ पहुँचे। पण्डित ने उनसे बहुत से सांसारिक धर्मों के दोष और मुक्ति के गुण कहे। व्यापारी ने श्रद्धापूर्वक उनसे धर्मोपदेश की याचना की और पूज्य गुरु के रूप में उन्हें वहीं बैठाया। एक दिन उस पण्डित ने उन्हें तेल निकालने की प्रयोगशाला में देखा तो उसने व्यापारी से कहा— कल्पों से कल्पान्तर तक तेल पेरते रहो, किन्तु मुक्ति नहीं आनेवाली है।

व्यापारी ने उत्तर में कहा—हे गुरुजी! यदि ऐसा है, तो हमें मुक्ति पाने के उपाय बतलायें।

गुरु ने उन्हें अभिषेक दिया और ''स्वतः प्रकाशात्कनिमित्त'' की दीक्षा इस प्रकार दी। (दोहा)—

स्वकाय रूपी तिल-पिण्ड से, विकल्प रूपी तेल पेरा कर;

चित्त रूपी पात्र में डालें, प्रतीति और शून्यता के अभेद बत्ती से।

संवित्ति रूपी अग्नि जलायें, अविद्या अन्धकार के प्रहाण से,

अनुत्तर मुक्ति के सुख में अनास्त्रव सुख स्थिर हो जायगा।

उन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ उक्त वचनों के अनुसार भावना की, तो छः वर्षों की अवधि में उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम के युगनद्ध तत्त्व का अवबोध पाकर उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई। फलतः उनके शरीर से चारों ओर प्रकाश फूटने लगा और यह सब लोगों ने देखा। लोगों ने यह घटना राजा को सुनाई। राजा ने भी इसका पता लगाने के लिए एक दूत भेजा, उस दूत ने भी वैसा ही देखा। राजा भी कहने लगे— 'अनास्रव सुख भोगने वाले राजा के समान अन्य कोई नहीं हो सकता।'

इस प्रकार सब लोगों में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी। घिलिपा ने भी उन लोगों के आशा-अध्याशय के अनुसार उपदेश दिया। अन्त में बहुत से शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु घिलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६३. गुरु कुम्भरिपा

गुरु कुम्भरिपा कुम्भ अथवा कलश आदि मिट्टी के बर्तन बना रहे हैं। कुछ बने हुए बर्तन आस-पास रखे हुए हैं। बहुत प्रसन्न-मुद्रा में बैठे अपनी कृति को योगी की दृष्टि से देख रहे हैं।

६४. गुरु चपरिपा

गुरु चपरिपा मेखली वस्त्र पहने हुए हैं। ये एक वृक्ष के मूल में बैठे हैं। उनके सामने रसायन से भरा एक बड़ा-सा पात्र रखा हुआ है। खुद एक बड़े से वृक्ष की पत्ती लेकर उस रसायन-द्रव्य में डुबोकर लोगों पर छिड़क रहे है। सामने एक स्त्री बच्चे को गोद में लिए हाथ जोड़कर खड़ी है। उनसे कुछ ऊँचे स्थान पर बैठे एक देवता गुफा के अन्दर से दिखाई पड़ रहे हैं। ये रासायनिक प्रयोग में लगे हुए हैं।

६३. गुरु कुम्भरिपा का वृत्तान्त

गुरु कुम्भरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'कुम्भरि' का अर्थ है, कुम्भकार या मिट्टी के बर्तन बनानेवाला। ये 'जोमनश्री' नामक प्रदेश के रहनेवाले थे। जाति के कुम्भकार थे। जोमनश्री नामक जनपद में एक कुम्भकार व्यक्ति सदा कुम्भ बनाकर जीविका चला रहा था। एक समय वह अपने काम से दु:खी होकर बैठा था। उस समय एक योगी उसके पास आ पहुँचे। योगी ने भिक्षा माँगी। कुम्भकार ने भी सादर भोजन प्रदान किया और कहा—

हे गुरु! मैंने इस प्रकार के काम को बड़े लगन से किया, पर इससे कोई लाभ नहीं हुआ। इस काम का अन्त कभी नहीं आया, इससे मैं दु:खी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा— हे दायक! तुमने नहीं समझा कि इस संसार में रहनेवाले जीव दु:खी के अलावा सुखी कभी भी नहीं होते। अनादिकाल से अनन्तकाल यावत् मात्र दु:ख से अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होता। इससे दु:खी कौन नहीं होगा?

कुम्भकार ने निवेदन किया—हे गुरुजी! आप हमें इस (दु:ख) से मुक्ति के उपाय दें।

योगी ने उनको अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्न क्रम की दीक्षा इस प्रकार दी—(दोहा)—

''अविद्या की मिट्टी से,
क्लेश-विकल्पों का पङ्क बनाओ।
तृष्णा-उपादान के चक्र द्वारा षड् योनियों के,
कुम्भ बनाकर ज्ञान अग्नि से जलाया करो।''

ऐसा कहने पर उन्होंने विकल्प-ज्ञापन की (परिचर्या की) दीक्षा का अर्थ समझ लिया। छ: महिने की भावना से ही उसकी सांसारिक भ्रांति का मल (आवरण) विशुद्ध

हो गया और सिद्धि का लाभ मिला। वे समाहित होकर बैठे, तो कुम्भ-चक्र स्वतः घूमने लगा और जैसा चाहे वेसा कुम्भ बनता गया। इस घटना को देखकर नगर के सभी लोग यह जान गये कि उन्होंने विशेष गुण प्राप्त किये हैं। सब लोगों ने उन्हें 'गुरु कुम्भकार' कहना आरम्भ कर दिया। वही नाम प्रसिद्ध हो गया।

अपने अवदान (दोहे) कहकर अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कुम्भरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६४. गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त

गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह मगध देश के एक विशेष स्थान के रहनेवाले थे। जाति के वे चरग या चर्वाक थे।

मगध देश के किनारे निर्जन स्थान में एक चरग (पशुपालक या शिकारी जाति) परिवार का व्यक्ति बहुत सम्पन्न और धन-धान्य से जीवन बिता रहा था। उसके पास एक हजार भैंस, घोड़े और भेड़ आदि अपार सम्पत्ति थी। एक दिन उसके घर वृद्ध पिता मर गये। तदर्थ बहुत से दान-दक्षिणा के साथ संस्कार किया गया। स्थानीय रिवाज के अनुसार किसी भी व्यक्ति की मृत्यु होती, तो उसके लिए बहुत-से लोग इकट्ठे होकर दान किया करते थे। तदनुसार उस अवसर पर एक समय उस जगह के आस-पास के सभी लोगों को बुलाकर बहुत दिनों तक खाना-पीना आदि देना था।

तब वहाँ एकत्र सभी लोग स्नान के लिए गंगा की ओर चले गये। घर में चौकीदारी के लिए घर की स्वामिनी (पुत्रवधू) को रखा गया। उसके साथ एक तीन साल का बच्चा भी था। वह बैठी थी कि गुरु चर्बरिपा कहीं से वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने गृहिणी से भोजन माँगा। लड़की सीधी-सादी थी, योगी से सही बातें बता दी।

चर्बरिपा ने कहा—यदि मुझे भोजन देने से तुम्हारे पति आदि क्रुद्ध हों (कर तुम्हें कुछ कहें) तो मेरे पास आ जाना, मैं उस पार के वन में आग जलाकर रहूँगा। यदि वे लोग कोप न करें तो मुझे खाना-पीना देना पड़ेगा।

लड़की ने गुरु की बात मान ली और भोजन आदि खिला दिया। योगी अपने स्थान लौट गये और लड़की वहीं आराम से बैठ गई।

स्नान करने वाले लोग क्रमशः वहीं लौटकर आये और 'सास' भी आ गई। उसने देखा कि खाने की सामग्री से कुछ निकाला हुआ था। वह अपनी पुत्रवधू को डाँटने लगी। वधू अपने पुत्र को लेकर उस योगी के पास चली गई। जब वह योगी के पास पहुँची तो चर्बरिपा ने साधु कहकर अपने मंत्र फूँके जल उन पर छिड़क दिये। फलतः दोनों माँ बेटा तत्काल 'स्वयंभू वज्रकाय' बन गये। उन्हें खाद्य आदि किसी की आवश्यकता न रह गई।

जब उसके पति अपने घर पहुँचे तो पत्नी को न देखकर पूछा तो लोगों ने कहा कि वह चली गई; पता नहीं कहाँ गई? सब लोगों से पूछते हुए उसकी खोज में वह क्रमशः योगी के पास पहुँचे। वहाँ पूर्व विवरण कहने लगे। उनको भी (पूर्ववत्) मंत्र जल छिड़का गया, तो वह भी पत्नी, बच्चे की तरह (स्वयंभू वज्रकायवाला) हो गये। तीनों एक ही आसन पर बैठ गये। खोए हुए भैंस के समान उनके बहुत से भाई-बन्धु एक के पीछे एक करके वहाँ आने लगे और इनकी संख्या तीन सौ तक पहुँच गई। सब लोगों को अर्थ की सिद्धि हुई।

लड़की-पुत्र को विशेष गुण इस प्रकार प्राप्त हो गये थे—वीर्य (शुक्र) से 'खेचर-सिद्धि', वज्र से (लिङ्ग से) 'सुवर्ण परिणामी औषधि, मल स्थान से रसायन औषधि, आँख से आकाश-गमन आदि आठ सिद्धियाँ। उनका यश चारों ओर फैलने लगा तो चम्पक के राजा महिल (महिपाल) आदि बहुत से जन-समाज उन्हें देखने आये। देखा, तो राजा के मन में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई। उन्होंने उन तीनों पुत्र सहित दम्पति के लिए एक विहार और अन्य तीन सौ लोगों के लिए एक विहार बनवाये और उनका नाम 'दुमपा' प्रसिद्ध हो गया। वहीं पर लोगों को बैठाये। विहार के अन्दर दुर्बुद्धि लोग नहीं जा सकते थे और ऐसे लोगों को वहाँ के पत्थर की मूर्ति मार-पीट भी किया करते थे। वह स्थान बाद में एक (बहुत बड़ा) सिद्ध पीठ बन गया। वहाँ अभयदत्तश्री के काल में बहुत से योगी विद्यमान थे। वहाँ साधना करें तो बहुत शीघ्र सिद्धि पाई जाती है।

यह लौकिक सिद्ध थे। वे लोग मैत्रेय बुद्ध के आने तक वहीं रहेंगे और तत्पश्चात् जीव कल्याण करेंगे।

गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६५. योगिनी मणिभद्रा

योगिनी मणिभद्रा सभी प्रकार के आभूषणों से सजी गृहिणी के वेश में है। वे जमीन से उड़कर आकाश मार्ग में है। बादलों के बीच से नीचे की ओर देख रही है। नीचे जमीन पर पानी का बड़ा-सा घड़ा टूटकर बिखरा हुआ है। यही उनके ज्ञान का प्रमुख निमित्त रहा है।

६६. योगिनी मेखला

योगिनी मेखलीपा पूर्ण योगिनी के वेश में है। सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित, बिना सँवरे बाल, बाहु के अन्दर से त्रिशूल धारण की हुई एक हाथ में नर-कपाल और दूसरे हाथ में अपने मुँह से निकली चमकती तलवार धारण की हुई हैं।

६५. गुरु मणिभद्रापा का वृत्तान्त

गुरु मणिभद्रा अथवा योगिनी भहुरि का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'अगर्च' नामक नगर के एक सेठ की तेरह वर्षीया एक लड़की थी। उसका सवर्ण कुल में विवाह हुआ। पुनः अपने मायके में आई थी कि एक दिन उसके पास गुरु कुकुरिपा ने आकर भोजन माँगा। लड़की ने उनसे कहा—

इतने सुन्दर सुडौल व्यक्ति होते हुए भी आपकी जीविका भिक्षाटन एवं वस्त्र सिले चिथड़े (जो फट-फटकर बिखरा गए हों) क्यों हैं? आप अपने वर्ण की एक साथी लेते, तो अच्छा होता।

(उत्तर के रूप में) योगी ने कहा—(दोहा)

मैं तो संसार से भयभीत होकर,

महासुख संवर मुक्ति की साधना कर रहा हूँ,

वह भी इस पुण्य आश्रय (शरीर) के होते न करे,

तो पश्चात् ऐसा कहाँ मिलेगा।

अतः इस पुण्य—आश्रय मणिरत्न को,

गृहिणी की अशुद्धि में छिपाये तो,

इष्ट प्रयोजन का विनाश नाना प्रकार के दुःखों का उदय होगा,

यही जानकर मैंने गृह साथी का त्याग किया है।

इस कथन से लड़की में बड़ी श्रद्धा आ गयी। उसने उत्तम भोज्य प्रदान किया और कहा—

'मुझे भी मोक्ष प्राप्ति का एक उपाय बतलायें।'

योगी ने कहा—मेरा घर तो श्मशान है। यदि उपदेश चाहती हो, तो वहीं आना।

उस (लड़की) को कोई भी काम समझ में न आता; तो वह रात को भाग कर श्मशान में गई। गुरु ने उस लड़की की पात्रता एवं परिपक्वता देखकर उसे श्रीचक्रसंवर (के मण्डल में) अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी। उसने भी सात दिन तक वहीं भावना की। उसके बाद वह अपने पिता के घर गई; तो लोगों ने बहुत से अपशब्द कहे और उसे मारना प्रारम्भ किया। लड़की ने कहा—तीनों धातुओं में मेरे माँ-बाप न हुए हों, ऐसा कोई जीव नहीं है। जाति-कुल के बड़ा होने पर भी वह संसार के मूल धर्म से अलग नहीं हो सकती। मैं तो गुरु की शरण लेकर मोक्ष की साधना करनेवाली हूँ। तुम लोग जो भी और जैसे भी मारना हो, मारो। मैं इन सबको मार्ग उपाय के रूप में प्रयोग करूँगी। उसके इस कथन से मारनेवाले लोगों को भी कुछ श्रद्धा हो आई। थोड़ी देर के लिए उसे मारना-पीटना छोड़ दिया। लड़की ने भी सभी प्रकार के काम-काज त्यागकर गुरु के उपदेश का अनुसरण कर भावना करते एक साल बिताया, फिर उसके पति आ गये और उसे अपने घर ले गये।

वहाँ वह सभी लौकिक कार्य समान रूप से करती रही और शरीर व वचन की पक्की और पवित्र रही। बहुत मीठी बातें करतो रहती थी। क्रमशः एक पुत्र और पुत्री, दो सन्तानें भी हो गई। वे दोनों भी माँ के समान सुन्दर सुबुद्धि और सदाचारी थे। सब लोग उस कुल-सन्तान की प्रशंसा करते थे।

उस समय तक उनको गुरु से भेंट हुए बारह वर्ष हो गये थे। एक दिन पानी लेने गई थी, लौटते समय लकड़ी के एक खण्ड में पैर फँसकर गिरी और 'घट' टूट गया। वह वहीं बैठी रही, आधा दिन हो गया, लौटकर नहीं आयी। लोग उसको देखने गये, तो वह टूटे हुए 'घट' को बैठे हुए देख रही थी। लोगों ने उसे कुछ कहा, तो उसने किसी की नहीं सुना और उसी टूटे घट अवशेष को देखती रही। सबने कहा कि यह किसी भूत-प्रेत से ग्रस्त है क्या?

ऐसी दशा में जब सूर्य अस्त होने को आ गया तो कहा। (दोहा)—

अनादि काल से जीव शरीर का घट टूट जाने पर,

घर लौटकर कहाँ आते, मेरा घट आज टूट गया।

अब मैं सांसारिक घर में, न लौटकर महासुख के घर जाती हूँ,

अहो गुरु अद्भुत है, इष्ट सुख उन्हीं पर निर्भर है।

यह कहकर वह आकाश में ऊपर उड़ गई। इक्कीस दिन तक 'अगर्च' नगर के लोगों को उपदेश देकर अन्त में (उसी शरीर द्वारा) वह खेचर भूमि चली गई॥

गुरु मणिभद्रापा का वृत्तान्त समाप्त॥

६६. गुरु मेखलापा का वृत्तान्त

गुरु मेखलापा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह देवीकोट की रहने वाली थी। देवीकोट (पूर्वी भारत) के एक नगर में एक गृहस्वामी की दो पुत्रियाँ थीं। एक नौ- वाहक के घर में दो पुत्र थे, उनके साथ उनका सम्बन्ध बना। उन दोनों लड़कियों ने कुछ भी अपकर्म नहीं किये, पर लोग उन दोनों की निन्दा करने लगे। इस घटना से ऊब कर छोटी बहन कहने लगी कि बिना कारण निन्दा सुनते रहने की अपेक्षा अन्यत्र चला जाना ही अच्छा होगा। बड़ी बहन कहने लगी कि नहीं, जहाँ भी जायँ, अभागे लोगों को इससे कोई अन्तर नहीं आयेगा। इससे यहीं रहना अच्छा होगा।

उस समय गुरु कण्हपा वहाँ आ पहुँचे। वे सात सौ योगी और योगिनियों के परिवार के साथ थे। बिना किसी के द्वारा पकड़े छत्र उनके सिर के ऊपर घूम रहा था। बिना बजाये डमरू आदि स्वत: शब्दायमान हो रहे थे। इस प्रकार वे अनेक (चमत्कारी) गुणों से सम्पन्न थे। दोनों लड़कियों ने आपस में परामर्श किया कि नगर के लोग और स्वयं उनके पति भी उन दोनों की कुछ निन्दा करते रहते हैं। अत: वे भी उन गुरु से कुछ उपदेश दीक्षा लेकर साधना क्यों न करें?

यह सोचकर दोनों बहिनें गुरु के पास गई। वहाँ जाकर उन्होंने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया और दीक्षा की प्रार्थना की।

कण्हपा ने अनुमति दे दी और अभिषेक प्रदान करके दर्शन, भावना, चर्या, फल और 'युगनद्ध वज्रवाराही' की दीक्षा प्रदान की। उन दोनों ने भी बड़े उद्यम के साथ उसकी साधना की। बारह वर्ष में सिद्धि प्राप्त हो गई। उन्होंने अपने गुरु के पास जाकर प्रणाम, अभिवादन, प्रदक्षिणा की तथा कृतज्ञता ज्ञापित की।

तब गुरु ने कहा—मुझे पहचान में नहीं आया कि तुम दोनों कौन हो? इस पर दोनों ने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया।

योगी ने कहा—यदि ऐसा है, तो मुझे दक्षिणा देनी होगी।

दोनों लड़की—गुरुजी जो चाहें, वही दक्षिणा होगी।

गुरु—तुम दोनों मुझे अपने सिर दो।

लड़कियाँ—यदि गुरुजी चाहते हैं तो अवश्य सिर देने को हम तैयार हैं। उन दोनों ने अपने-अपने मुख से ज्ञानरूपी तलवारें बड़ी तेज धारवाली निकालीं। परम अंग सिर को काटकर उसे गुरु के चरणों में अर्पित किया और (निम्न दोहा) कहा—

हम दोनों ने गुरु की कृपा से ही—उत्पत्ति-सम्पन्न युगल द्वारा

संसार निर्वाण के प्रपञ्च को काटा।

युगनद्ध दृष्टि एवं चर्या के द्वारा हेयोपादेयता के प्रपञ्च का छेदन किया,

धर्मता एवं संवित्ति की युगलता द्वारा स्व-पर के प्रपञ्च को हमने तोड़ा।

निष्प्रपञ्च के संकेत के रूप में यह (सिर) आपके चरणों में समर्पित करते हैं।

इस प्रकार सिर को दक्षिणा के रूप में रखकर सहजानन्द का नृत्य करने लगी, तो कण्हपा ने कहा—(दोहा)

अहो! महायोगिनियाँ,

परमगुणों की प्राप्ति शुभ है।

(केवल) अपनी ही सुख-शान्ति (की चाह बहुत) तुच्छ है,

जगतार्थ (उद्यम करते) रहना॥

इस कथन के साथ उन दोनों के सिर पुनः पूर्ववत् हो गये। इस घटना से सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। वे सर्वत्र 'छिन्नाबन्धु' नाम से प्रसिद्ध हुई।

वे कण्हपा की सेवा करती और 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ कर अनेक वर्षों तक जगतार्थ करती हुई अवदान उक्तियाँ कहकर खेचर भूमि चली गई।

गुरु मेखलीपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६७. गुरु कनखला का वृत्तान्त

गुरु कनखला (कनखल) का वृत्तान्त इस प्रकार है— कनखल का अर्थ- 'कणक' वाला[१] प्रदेश है। यह सिद्ध कण्हपा अर्थात् कृष्णाचार्य द्वारा अनुगृहीत उपर्युक्त दो कन्या-बन्धु जिनको सिरछिन्ना-बन्धु कहा जाता है, वही हैं। उन दोनों में से यह छोटी बहिन है। इनकी विमुक्ति का इतिवृत्त ऊपर कहे विवरण से ज्ञात हो जाता है। इनका नाम सर्वत्र कनखला ही प्रसिद्ध है।

गुरु कनखला (पा) का वृत्तान्त समाप्त॥

---

१. यहाँ ''कनखला'' अर्थ कणकवाला प्रदेश है, जो उल्लेख है। यह कुछ किंवदन्ती-सा लगता है। यह नाम ''कनखला'' जो है, वह ''कनक मेखला'' है। इसका अपभ्रंश ''कनखला'' हो गया, लगता है।

६७. योगिनी कनखला

योगिनी कनखला (कनकखला) का आकार प्रकार मेखली के सदृश है। एक हाथ में खुँखरी (कटार) और दूसरे हाथ में सजीव नारी का मुंडा हुआ सिर जो वस्तुत: उनका अपना सिर है, ली हुई हैं। ये आकाश प्रदेश में बादलों के बीच नृत्य करते हुए अपने गुरु की पूजा कर रही हैं।

६८. गुरु कल-कलपा

गुरु कल-कलपा श्मशान में बैठे हुए हैं। ये गहरे नील रंग के हैं। सामने मिट्टी की मञ्जूषा जिसके अन्दर कुछ विशेष सामान रखे जाते हैं, भावनासूत्र से दोनों जँघा बाँधे हुए हैं।

६८. गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त

गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— किलि का अर्थ है— चिल्लाने वाला। ये 'भिरिलिङ्ग' नामक जगह के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

भिरिलिङ्ग नगर का शूद्र जाति का एक व्यक्ति अपने पूर्व कर्मवश बहुत जोर से चिल्लानेवाला हो गया। नगर के लोग इससे तंग हो गये और उसको नगर से बाहर कर दिया। इससे वह बड़े दु:खी हो गये और एक श्मशान में जाकर बड़े कष्ट के साथ बैठे थे। वहाँ एक योगी आ पहुँचे। उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा— तुम इस श्मशान में किसलिए बैठे हो?

उस व्यक्ति ने अपना सभी पूर्व वृत्तान्त कह सुनाया।

योगी ने कहा—तुमको इस तरह के व्यवहार से बुरा न लगे और संसार के दु:खों से मुक्त होने का उपाय क्या, तुम नहीं चाहोगे?

व्यक्ति—यदि ऐसा हो, तो अवश्य चाहेंगे।

योगी ने उन्हें प्रणाम-पूजा आदि की व्यवस्था दी और उन्हें गुह्य-समाज मण्डल में अभिषेक प्रदान किया। 'प्रतीयभाण स्वतः विमुक्ति' की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

शब्द मात्रता में स्व-पर के सभी शब्द अभिन्न-

एक ही स्वभाव की भावना करो,

तत्पश्चात् स्वशब्द आकाश धातु के मध्य से,

मेघ गर्जन समान गरजते हुए पुष्प वृष्टि होती भावना करो।

उस (व्यक्ति) ने भी बड़े उद्यम के साथ (गुरु के वचनानुसार) वैसी ही भावना की। फलतः पर व्यक्ति के क्रोध आदि शब्द स्वतः अपने शब्द में खो गये। अपने शब्द भी पुष्टवृष्टि के रूप में समाप्त हो गये। पुष्प की कल्पना आकाश के रस में

(आकाश धातु के रूप में) खो गई। समस्त इष्ट-दर्शन महामुद्रा के रूप में प्रतीत होने लगे और दृष्टिप्रतीति स्वतः विमुक्त होकर परमसिद्धि का लाभ हुआ। सर्वत्र उनका नाम गुरु चिल्लानेवाले (किल-किलापा) प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने बहुत से जगत् कल्याण कार्य किये। बाद में अपने अवदान भी कहे। अन्त में तीन सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६९. गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त

गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'कन्तलि' का अर्थ है सिलाई करने-वाला। मणिधर नामक नगर के एक शूद्र जाति के व्यक्ति धन-सम्पत्ति से अत्यन्त दरिद्र होकर दर्जी का काम करते हुए घूमता रहा। एक समय सिलाई की सुई उसके हाथ में चुभ गई। बहुत-सा खून गिरा और उसकी पीड़ा से बहुत पीड़ित हो गया। इससे असह्य होकर घर के एक किनारे बैठा छटपटा रहा था। उसी समय 'वैताली' नामक डाकिनी एक स्त्री का रूप धारण करके उसके पास आई और उससे पूछा—तुम क्या कर रहे हो?

उस (दर्जी) ने—अपने सभी पूर्व वृत्तान्त कह दिये।

डाकिनी ने कहा—इससे भी अधिक दुःख पूर्व जन्मों में भोग चुके हो, अब भी, अगले जन्म में भी, पुनः-पुनः इससे कई अधिक दुःख भोगना पड़ेगा। क्योंकि (तुम) स्वयं दुःख के स्वभाव से अतीत नहीं हो।

उसने कहा—इन दुःखों से मुक्ति पाने का कोई उपाय आप हमें दें।

डाकिनी—उसकी तुम साधना कर सकोगे?

उस व्यक्ति ने कहा—क्यों नहीं, अवश्य कर सकूँगा।

डाकिनी ने उन्हें—हेवज्र के मण्डल में अभिषेक दिया और अप्रमेय (योग) गुरुयोग, उत्पत्तिक्रम योग आदि की दीक्षा दी। परन्तु उनकी (पूर्व संस्कार के कारण) कल्पना सिलाई की ओर ही जाती रही।

इसके बारे में गुरुजी को कहा, तो गुरुजी ने पुनः ''विकल्प को मार्ग के रूप में उपयोग'' करानेवाला उपदेश इस प्रकार दिया—

(दोहा)—

शून्य आकाश चिथड़े को, स्मृति एवं ज्ञान की,

सुई-सुतली द्वारा।

वस्त्र सिलाते हुए करुणा रूपी सुई को,

त्रिभाविक जीव में व्याप्त रूप में भावना करो॥

ऐसा कहने पर, उसने भी वैसी ही भावना की। फलत: समस्त धर्मों की शून्यता का ज्ञान प्राप्त हो गया और इस तरह के ज्ञान से रहित जीव के प्रति उन्हें अपार करुणा उत्पन्न हुई। परिणाम स्वरूप उन्हें सर्वधर्म शून्यता एवं जीव मात्र के प्रति करुणा इन दोनों की युगल स्थिति— 'महामुद्रा परमसिद्धि' की प्राप्ति हुई। सर्वत्र उनका नाम कन्तलिपा प्रसिद्ध हो गया। उन्होंने अनेक जगत् कल्याण करने के बाद अपने अवदान भी कहे और अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

६९. गुरु कन्तलिपा

गुरु कन्तलिपा हलके वस्त्र पहने हुए और जटा-शिखा बाँधे हैं। वे कपड़ा सिलने की मुद्रा में हैं। उनके ठीक सामने एक डाकिनी उन्हें उपदेश दे रही है।

७०. गुरु धगुलिपा

धगुलिपा साधारण धोती, कुछ कण्ठाभूषण पहने हुए और सिर के बाल सँवारे हुए हैं। उनका प्रमुख व्यवसाय पहले तिनके से रस्सी बनाना था। अत: तिनके लेकर रस्सी बनाने की मुद्रा में बैठे हैं।

७०. गुरु बहुलिपा का वृत्तान्त

गुरु बहुलिपा (धगुलिपा, धहुरिपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये धोकर (थोकर) देश के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

धोकर (थोकर) देश में शूद्र जाति का एक व्यक्ति घास की रस्सी बनाकर जीविका के लिए बेचता था। एक समय बहुत-सी रस्सियाँ बनाने से उसके हाथ में बहुत उग्र छाले पड़ गये। उससे बहुत पीड़ा होने लगी। वह रोते हुए घर के एक किनारे जा बैठा। एक योगी ने उसके पास आकर पूछा—तुम्हारा क्या खराब हो गया?

उन्होंने अपना वृत्तान्त सच-सच बता दिया।

योगी ने कहा— तुम इस समय इतने मात्र दु:ख से असह्य हो जाते हो? परलोक में दुर्गतिमय योनि में पैदा होओगे तो फिर कैसे क्या करोगे?

उन्होंने कहा—हे गुरुजी! हमें इस तरह के दु:ख से मुक्ति पाने का उपाय दें।

योगी ने उन्हें प्रथमत: 'प्रभाव उत्क्रान्ति' का अभिषेक प्रदान किया, तत्पश्चात् विकल्पों को मार्ग के रूप में उपयोग कराने की दीक्षा इस प्रकार दी—(दोहा)—

''संस्कारगत प्रतीतियों का कुश,
और अन्तरिक्ष में स्थित परिकल्पना दोनों के।
आदित: असिद्ध स्वभाव में,
(यथा) शक्ति निरन्तर भावना करो।''

ऐसा करने पर, उन्होंने बड़े उद्यम के साथ बारह वर्ष तक साधना की। फलत: परिकल्पित की निराश्रयता, परतन्त्र का प्रतीत्यसमुत्पन्नत्व और परिनिष्पन्न की धर्मता के अभिन्न स्वरूप का साक्षात् ज्ञान प्राप्त हो गया। परमसिद्धि का लाभ कर सर्वत्र उनका नाम गुरु धगुलिपा (धहुलिपा) प्रसिद्ध हुआ। सात सौ वर्ष तक भारत के कोने-कोने में घूमते जगत् कल्याण का कार्य सम्पादन किये, अन्त में स्व-अवदान कहकर पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ खेचर भूमि चले गये॥

गुरु धगुलिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७१. गुरु ओडिलिपा का वृत्तान्त

गुरु ओडिलिपा (धलिपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है—ओडलि या उडिलि-उडलिपा, का अर्थ 'उड़नेवाला' है। ये देवीकोट नगर के रहने वाले थे और जाति के वैश्य थे।

देवीकोट नामक नगर में वैश्य जाति के एक व्यक्ति पूर्वदान (पुण्य) के परिणाम स्वरूप धन[१]-सम्पत्ति से परिपूर्ण थे। अपने महल के अन्दर बैठे पाँच प्रकार की भोग्य-सामग्री (पञ्च काम-गुणों) का भोग कर रहे थे।

एक समय आकाश में पाँच रंग के मेघ छाये हुए थे और मेघों में नाना प्रकार के जीव (पशु-पक्षियों) के आकार दिखलाई पड़े रहे थे। वे उन्हें देखते रहे, तो उनकी दृष्टि के सामने कुछ 'हंस' (पक्षी) उड़ते जा रहे थे। उनके मन में यह विचार आया कि मैं भी इन (हंस पक्षी) की तरह उड़ सकूँ, तो कितना अच्छा हो। यह सोचते अन्य कोई काम उनको नहीं सूझता था।

उसी समय उनके यहाँ गुरु कर्णरिपा आ पहुँचे। उन्होंने उससे भोजन के लिए भिक्षा माँगी।

उस व्यक्ति ने कहा—हे योगी! आपको भोजन अवश्य दूँगा। यदि आपके पास आकाश में उड़ने का कोई उपाय हो, तो मुझे अवश्य ही प्रदान करें। यह कहकर उन्होंने योगी की सेवा में उत्तम कोटि के पेय-भोज्य आदि की व्यवस्था की और प्रणाम-पूर्वक दक्षिणा भी चढ़ाई। फिर वही प्रार्थना की।

कर्णरिपा ने कहा—यह तो मेरे पास है, कहकर 'चतुरवज्रासन' मण्डल में उन्हें अभिषेक और दीक्षा दी तथा निम्न बातें कहीं—

चौबीस महासिद्ध पीठों में जाकर (वहाँ की पीठ अधिष्ठातृ) डाकिनी मन्त्र का जप दस-दस हजार करो और वहीं से एक-एक औषधि भी लेते आना। यह कहकर उसे भेज दिया।

---

१. पाँच कामगुणों।

७१. गुरु उडलिपा

गुरु उडलिपा सिर पर पगड़ी बाँधे हुए और शरीर पर चोंगा पहने हैं। रत्ननिर्मित हलके आभूषण पहने, सँवरी दाढ़ी और आकाश की तरफ नजर गड़ाये हुए हैं। सामने एक योगी वृक्ष की कुछ पत्ती लिए उडलिपा से कुछ कहने जा रहे हैं।

७२. गुरु कपालिपा

गुरु कपालिपा काले रंग के हैं। श्मशान में पड़े एक स्त्री के शव का कपाल निकालकर एक हाथ में लिए और दूसरा हाथ प्रवचन-मुद्रा में हैं। वे सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित हैं।

उस व्यक्ति ने पूछा—यदि वे सब पूर्ण हो जायँ, तो क्या-क्या करना होगा?

योगी ने उत्तर दिया—उन सब औषधियों को प्रमथत: एक ताँबे के पात्र में डालो। उसके बाद चाँदी के पात्र में और तत्पश्चात् सोने के पात्र में डाल दो। उसके बाद तुम आकाश में उड़कर जा सकोगे। तदनुसार साधना करने पर उन्होंने बारह वर्ष में सब शर्तें पूर्ण कर लीं और सभी औषधि पूर्ण हो गई।

उसने गुरु के निर्देशानुसार औषधियों को ताम्र आदि के पात्र में डाला, तो वे आकाश में उड़ सके। उनका नाम भी सर्वत्र गुरु ओडिलिपा प्रसिद्ध हो गया।

अन्त में स्व-अवदान कहकर इसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु ओडिलिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७२. गुरु कपालपा का वृत्तान्त

गुरु कपालपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'कपालपा' का अर्थ-कपाल धारण करनेवाला है। ये राजपुर जनपद के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

राजपुर नगर में एक शूद्र जाति के व्यक्ति, मजदूरी से अपनी जीविका चला रहे थे। उनके पाँच पुत्र थे। पूर्व कर्मवश एक दिन उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। उसकी लाश श्मशान पर पहुँचाने गये तो वह लाश को छोड़ने में असमर्थ होकर वहीं रोते रहे। क्रमशः उनके सभी पुत्र भी मर गये, लोगों ने उन्हें बुलाया, तो पुत्रों की लाश भी श्मशान में पहुँचाये और सब लाश वहीं रखकर उनके पास वे रोते रहे। तब महायोगी कृष्णाचार्य वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उसने उत्तर दिया—हे योगी! मेरा अपनी गृहस्वामिनी एवं सभी पुत्रों से सदा के लिए वियोग हो गया, शोक में सन्तप्त होकर यहीं बैठा हूँ। इन लाशों को त्यागने में असमर्थ होकर यहीं रह रहा हूँ।

आचार्य कृष्णाचार्य ने कहा—त्रिधातु के सभी प्राणी इसी स्वभाव के ही हैं। यह तुम्हारे अकेले का नहीं है। इसके लिए शोक नहीं करना है। यदि किया भी जाय, तो इससे कोई लाभ नहीं होनेवाला है। अतः धर्म ग्रहण करो। तुम संसार के जन्म-मरण आदि अन्य दुःखों से नहीं डरते हो?

उसने उत्तर दिया— जन्म-मरण से डर रहा हूँ, यदि इससे मुक्त होने का उपाय हो तो मुझे अवश्य प्रदान करें।

आचार्य ने उन्हें हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति और सम्पन्नक्रम की दीक्षा देकर चारिका में लगाया। वह इस प्रकार है—

पुत्र की हड्डियों के छः प्रकार के आभूषण बनवाये और उसे पहनवाये। पत्नी का सिर कटवाकर (कपाल निकलवाये और उसी को) खाने का पात्र बनवाये। साथ ही कपाल को 'उत्पत्तिक्रम' के रूप में तथा कपाल के अन्दर जो खालीपन है, उसको 'सम्पन्नक्रम' के रूप में सङ्केतित किया।

वह (व्यक्ति) भी चारिका के साथ भावना करते रहे। नौ वर्ष में ही (दृष्ट-दर्शन एवं चर्या) युगल की अभिन्नता का ज्ञान होकर उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई।

तत्पश्चात् उन्होंने अपने विनेय लोगों से कहा—

(दोहा)—

मैं तो योगी कपालिका हूँ, सभी धर्मों का स्वभाव मैं,

कपाल के समान जानता हूँ, तत् बलेन प्राप्त चर्या में स्थित हूँ।

यह कहकर उन्होंने आकाश में स्थित होकर नृत्य किया। लोगों में बड़ी श्रद्धा हुई। सर्वत्र उनका नाम गुरु कपालिपा प्रसिद्ध हो गया। पाँच सौ वर्षों तक जगत् का अर्थ साधने के बाद अपना अवदान भी उन्होंने कहा। अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कपालिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७३. गुरु किरपलपा का वृत्तान्त

गुरु किरपलपा (किरपालपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है— किरपालपा या किरपल का अर्थ है 'नाना-मन्त्र'। ये जाति के क्षत्रिय थे और ग्रहर जनपद के रहनेवाले थे।

'ग्रहर' नामक जनपद के एक क्षत्रिय राजा विस्तृत राज्य का उपभोग कर रहे थे और वे कुबेर की तरह धन-धान्य से सम्पन्न थे। परन्तु वे उससे तृप्त नहीं हो पाये। वह अन्यत्र स्थित राजाओं के राज्यों को भी छीन-छीन कर भोगा करते थे। इस सिलसिले में एक राज्य पर उन्होंने एक बार सैनिक आक्रमण किया। वहाँ स्थित सभी पुरुष जो भाग निकलने में समर्थ थे, सब भाग गये। स्त्री आदि जो भाग नहीं सकीं, रोती-पीटती बेहोश हो गई। ऐसे अनेक प्रकार के दृश्य उस राजा ने स्वयं देखे। इस सम्बन्ध में राजा ने अपने एक मन्त्री से पूछा। मन्त्री ने भी सभी वृत्तान्त सही-सही बतलाया। इस घटना से वह राजा बड़े दु:खी हुए और कहने लगे कि यह तो बड़ी दयनीय स्थिति है। इन लोगों के पति, पिता आदि सबको बुलाओ; अपने-अपने राज्य उन्हें सौंप दो। ऐसी आज्ञा देने पर मन्त्री ने भी वैसा ही किया। राजा-मन्त्री सब पुन: अपनी जगह पर लौट गये और वहाँ दान के लिए बहुत बड़ी घण्टी बजाई। सब लोगों को अपरिमित दान देकर वे सोचने लगे कि अब मुझे कुछ धर्म (विहित साधना) करना चाहिए। उसी समय एक योगी उनके यहाँ आ पहुँचे और भोजन की याचना की। उसे (राजा ने) उत्तम भोज्य प्रदान किया। उस (योगी) ने भी बदले में चार अप्रमाण आदि धर्म का उपदेश दिया, तो राजा ने कहा— नहीं हमें इसी जन्म में ही बुद्धत्व प्राप्त हो, ऐसे धर्म दो। योगी ने उन्हें श्रीचक्रसंवर (के मण्डल) में अभिषेक दिया और उत्पत्तिक्रम एवं सम्पन्नक्रम की भावना करने के लिए कहा तो पूर्व संस्कार के वशीभूत होकर राज्य एवं युद्धादि के विकल्प से उनके सारे मार्ग अवरुद्ध हो गये।

इस वृत्तान्त को उसने गुरु से कहा उन्होंने गुरुजी ने भी स्वत: विकल्प-मुक्ति की दीक्षा इस प्रकार दी—

७३. गुरु किरपालपा

गुरु किरपालपा सुन्दर रूप के हैं। पर कुछ क्रोध के भाव चेहरे पर उभरे हुए हैं। रत्ननिर्मित चोटी एवं पञ्चशिखा वाले मुकुट, उसके नीचे की ओर से वीरशिरोबन्धन, जिसके दोनों छोर बाल पर बँधे सोने के जंजीर (रिंग) के अन्दर से निकलकर नीचे लटके हुए हैं। भावनासूत्र धारण किये हुए और हाथ में तलवार एवं ढाल लिये गद्दी पर बैठे हैं। सामने गुह्य-द्रव्यों का पात्र मञ्जुषा रखा हुआ है।

७४. गुरु सागरपा

गुरु सागरपा गोरे रंग के और भिक्षु वेश में हैं। वे समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। उनके सामने आर्य अवलोकेश्वर खड़े होकर उन्हें कुछ कह रहे हैं। वे उन्हें वरदान देने की मुद्रा में हैं।

(दोहा)—

तीनों धातुओं के सभी प्राणी (जगत्),

वीर सेनाओं से व्याप्त समझो (=भावना करो)।

अशेष आकाश धातु अपने ही चित्त से,

निकले अपरिमित वीरों (से व्याप्त समझो) ॥ १ ॥

दोनों (तरह के वीर) अभिन्न होकर (एक साथ मिलकर) सभी

शत्रुओं का प्रहाण करो,

स्वयं महाराजा हो।

राज्य आदि सुख सम्पन्न होकर,

भवाग्र में (पहुँचा हो, ऐसी) भावना करो॥ २॥

ऐसा कहने पर उसने भी तदनुसार बारह वर्षों तक भावना की और अन्त में दर्शन (तत्त्व) का ज्ञान होकर सिद्धि लाभ किया। तब सभी राजमहल प्रकाश से भर गये, तो रानी आदि (राजमहल के) लोगों को पता चल गया कि इनको सिद्धि प्राप्त हो गई। रानी आदि ने उनकी पूजा की। उन्होंने कहा—

(दोहा)—

''चार अप्रमाणों के द्वारा सत्त्वों के प्रति,

आसक्त होकर काम भोगें।

वीर-महाद्वेष के द्वारा,

अशेष अरियों का विनाश करें ॥ ३॥''

वह गुरु 'किरपल' नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। उन्होंने अपने अवदान भी कहे और सात सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना किये। अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु किरपलपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७४. गुरु सागरपा का वृत्तान्त

गुरु सागरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— काँची नगर में इन्द्रभूति नामक एक राजा थे। वह चौदह लाख के नगरादि पर राज करते थे। पर उनकी कोई सन्तान नहीं थी। वे लौकिक एवं अलौकिक सभी देवी-देवताओं से सन्तान के लिए प्रार्थना किया करते थे। एक समय उनकी रानी गर्भवती हो गई। रानी का सहज चिन्तन भी कुछ कुशल की ओर होने लगा। रानी को छ: मास के बाद (एक दिन) ऐसा स्वप्न दिखाई दिया कि उनके दोनों स्कन्धों से सूर्य-चन्द्र उदित हो रहे हैं। इस स्वप्न वृत्तान्त को उन्होंने राजा से कह सुनाया। राजा ने कहा कि मैं क्या जानता हूँ? पुरोहित पण्डित एवं ब्राह्मणों से पूछूँगा। यह कहकर उन्होंने पुरोहितों एवं ब्राह्मणों से भोजन, दक्षिणा आदि देकर उक्त स्वप्न के विषय में पूछा। लोगों के द्वारा परीक्षण करने पर देखा गया कि यह धर्म से राज्य-ग्रहण करनेवाले एक बोधिसत्त्व राजा के होने के ही लक्षण थे। पर इन बातों को लौकिक जन कुछ पसन्द नहीं करते; इसलिए उन लोगों ने (पुरोहित आदि लोगों ने) राजादि को प्रसन्न रखने के लिए कहा कि यह सभी लौकिक सम्पदा के आधार स्रोताकर एक राजकुमार के जन्म का लक्षण है। इस कथन से राजा आदि सब लोग बड़े प्रसन्न हुए।

तत्पश्चात् नौ मास पूरे होकर दसवें मास में पुत्र-जन्म का समय आ गया। तब कर्म एवं पुण्य के बल से सिद्ध एक समीपवर्ती झील के अन्दर बहुत बड़ा कमल निकल आया और उसी के अन्दर आधी रात को एक पुत्र का जन्म हुआ। उस समय उस प्रदेश में इष्ट वस्तुओं की वृष्टि हुई। इस घटना से वहाँ के सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। लोग सन्देह में पड़ गये कि यह किसकी शक्ति थी। आधे दिन के बाद लोगों को पता चला कि ये सब उस नवजात बालक की शक्ति थी। तब उनका नाम भी सरोजकुमार रखा गया। उस बालक के पुण्य-बल पर वहाँ की जनता उत्तम काम गुणों का भोग, भोग ही रही थी, फिर रानी से दूसरे और एक बालक का जन्म हुआ। इस प्रकार वे दो भाई हो गये।

जब राजा का स्वर्गवास हुआ, राज्य बड़े भाई को दिया गया। पर उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया तथा उसे छोटे भाई को सौंपकर वे भिक्षु बन गये और वे वहाँ से श्रीधान (कोष) चले गये। जाते समय आर्य लोकेश्वर ने एक भिक्षु का रूप धारण किया। मार्ग में उनसे भेंट हुई, सरोज ने उन (भिक्षु) को नहीं पहचाना। उसने भिक्षु सागर (सरोज) से अपना वृत्तान्त पूछा। भिक्षु सरोज ने अपना वृत्तान्त सही बतला दिया।

उस (निर्मित भिक्षु) ने पूछा कि आप सम्भोगकाय से मिलना चाहते हैं?

(सरोज) भिक्षु ने कहा—चाहता वही हूँ, पर मेरे पास कोई उपाय नहीं है।

उस (निर्मित) भिक्षु ने कहा—तुम मुझे गुरु के रूप में मानो और भक्ति पूर्वक चाहो, तो वह उपाय मिल सकता है। उस (भिक्षु सरोज) ने वहीं प्रणाम-अभिवादन पूर्व की प्रार्थना की। निर्मित भिक्षु ने हेवज्र के मण्डल को साक्षात् दिखलाकर अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी। आर्य (लोकेश्वर के निर्मित भिक्षु) वहीं अन्तरधान हो गये। वह (सरोज) भिक्षु 'श्रीधान' चले गये। वहाँ वे साधना करते रहे। उस समय वहाँ एक दिन योगी जैसा एक आदमी आया और 'सरोज' से पूछा कि आप यहाँ क्या कर रहे हैं? सरोज ने अपना वृत्तान्त बतला दिया। उस आदमी ने पुन: कहा—यदि ऐसा है तो आपके सभी लाभ-सत्कार सेवा मैं कर दूँगा, परन्तु सिद्धि प्राप्ति के बाद हमें दीक्षा देनी होगी। सरोज ने उसे स्वीकार किया और वे एक खाली गुफा में बैठ गये।

उस आदमी की सेवा के साथ बारह वर्षों तक वे (सरोज) उसी गुफा में साधना करते रहे। उस अवधि में वहाँ के प्रदेश में अकाल पड़ा। बहुत लोग मरे। उस आदमी ने यह सोचकर कि यदि यह वृत्तान्त गुरुजी को सुनायें, तो उन्हें विघ्न पड़ेगा, इस वृत्तान्त को छिपाकर वह उनकी सेवा करता रहा। वह स्वयं गुरुजी के खाए हुए बासी छोड़ा खाना खाकर जीवन चलाता रहा। एक दिन उसे कहीं से भी खाना नहीं मिल पाया। वह एक राजा के महल में चला गया। वहाँ उसको भिक्षापात्र भर भात मिला। उसी को लेकर वह बिना खाये-पीये गुरुजी की गुफा में पहुँचा। वह कमजोरी की वजह से वात रोग से ग्रस्त होकर वहीं गिर पड़ा। भात भूमि पर बिखर गया। उसे देखकर गुरुजी ने कहा— क्या तुमने मदिरा तो नहीं पी ली?

उसने उत्तर दिया— मदिरा कहाँ से मिलती, भूख से कमजोर होकर गिर रहा हूँ।

गुरु—भोजन क्यों नहीं मिलता?

सेवक—गुरुजी को साधना में विघ्न होने के डर से नहीं कह सका। यहाँ बारह वर्ष तक बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। बहुत से प्राणी मर भी गये और बहुत से लोग अब भी भूख से दु:खी और पीड़ित हैं।

आचार्य सरोज—ऐसा था तो उस समय तुमने मुझे क्यों नहीं कहा। ऐसा कोई नियम है? जबकि अकाल रोकने का उपाय मेरे पास था। अब उठो। यह कहकर भूमि पर बिखरा हुआ भात सब उठाया और उन्होंने एक नदी के पास (तट) जाकर, उस भात को बलि के रूप में चढ़ाया। आठ नाग राजाओं को मन्त्र, मुद्रा और समाधि के द्वारा प्रभावित किया। वे लोग (नाग लोग) बड़े भयभीत होकर मस्तिष्क निकल जाने के डर से आचार्य के पास आकर कहने लगे—क्या काम करना है?

आचार्य ने आज्ञा दी—जम्बूद्वीप में अवर्षण के कारण बहुत से प्राणी मर गये, यह तुम लोगों का अपराध है। अब तुम लोग यहाँ के जीवित लोगों के लिए प्रथम दिन खाद्य-वस्तुओं की वर्षा कराओ। उसी प्रकार दूसरे दिन अन्न की वर्षा और तीसरे दिन वस्त्र-शयन (बिस्तर) आदि की वर्षा कराओ। उसके बाद तीन दिन तक रत्न (आदि) की वर्षा करानी होगी। यह सब हो जाने के बाद जल-वृष्टि कराओ।

नाग लोगों ने भी आज्ञा का पालन किया। सभी (तत्कालीन दु:खी) प्राणी दु:ख से मुक्त हो गये। इस घटना का सुयश चारों ओर फैल गया। यह आचार्य सरोज की शक्ति है, यह सब लोगों की चर्चा का विषय हो गया। सभी लोगों में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई।

उसके बाद आचार्य ने अपने सेवक, जिसका नाम 'राम' था और बारह वर्षों तक जिसने उनकी सेवा की थी, को हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया

और हेवज्र की उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी। तत्काल उन्हें लौकिक सिद्धि प्राप्त हुई। उसके बाद दीक्षा देकर उसको यह आज्ञा दी—बिना जगत् कल्याणार्थ किये तुम खेचर भूमि मत जाओ। अब तुम (दक्षिण) श्रीपर्वत जाकर इस प्रकार (उक्त दीक्षा के अनुसार) साधना करो। तुम्हें (परम) सिद्धि का लाभ हो जायगा। यह कहकर गुरु खेचर भूमि चले गये।

'राम' ने श्रीपर्वत पर जाकर तत्समीप एक राजकुमारी को वश में किया। दोनों ने वहाँ साधना करते हुए विहार आदि बनवाये और अन्त में ये दोनों भी खेचर भूमि चले गये॥

गुरु सागरपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७५. गुरु सर्वभक्ष का वृत्तान्त

गुरु सर्वभक्ष का वृत्तान्त इस प्रकार है—सर्वभक्ष का अर्थ सब कुछ खानेवाला है। ये 'अभीर' नामक नगर के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

अभीर नामक नगर में महाराज हरिश्चन्द्र का राज्य था। एक शूद्र जाति के व्यक्ति का पेट बहुत बड़ा होने के कारण वह सब कुछ खाता रहता था। एक समय उसे खाने के लिए कुछ भी नहीं मिल पाया। एक ओर जाकर खाने की कल्पना में मग्न होकर बैठा। सहसा श्री सरहपा वहाँ पहुँचे और उससे पूछ पड़े— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उस आदमी ने उत्तर दिया—हे योगी! मेरी तो पाचन-अग्नि के अत्यन्त प्रबल होने के कारण जो भी खाया, उससे पेट भरता नहीं, विशेष रूप से आज मुझे खाने के लिए कुछ न मिलने के कारण यहाँ दु:खी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा—तुम मात्र आज की क्षुधा नहीं सह सकते हो, तो तुम जब प्रेत योनि में उत्पन्न हो जाओगे तो कैसे क्या करोगे?

उस व्यक्ति ने पूछा—वैसी प्रेत-योनि कहाँ होती है?

योगी—यहीं देख लो, कहकर उनको एक (भयंकर) प्रेत दिखला दिया।

वह बहुत डर गया और कहने लगा कि इस तरह की योनि में पैदा होने का हेतु क्या है? योगी ने सब कारण बतलाया।

फिर उसने प्रार्थना की— हे गुरुजी! हमें इस तरह के दु:ख से मुक्त होने का उपाय दें।

उसकी प्रार्थना पर सरहपा ने उसे सर्वप्रथम अभिषेक दिया।

उसके बाद उन्हें भुसुकु वृत्त इस प्रकार दिया—

(दोहा)—

पेट (रूपी) शून्य आकाश में,

पाचन-अग्नि, काल-अग्नि (की तरह) प्रज्वलित।

७५. गुरु सर्वभक्षपा

गुरु सर्वभक्षपा सामान्य आभूषण पहने जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। भावनासूत्र कन्धे की ओर से सामने लटक रहा है। बहुत-सी खाद्य-सामग्री सामने रखकर भोजन करने की मुद्रा में हैं।

७६. गुरु नागबोधि

गुरु नागबोधि भिक्षु के वेश में हैं। पर्यङ्कबद्ध एवं हाथ धर्मोपदेश-मुद्रा में हैं। अत्यन्त सुन्दर शान्त स्वभाव में देख रहे हैं। उनके सामने गुफा के अन्दर एक भिक्षु बैठे हैं, जिनके सिर पर मृग का सींग निकला हुआ है।

प्रतीति और भव (ये) दो (को) खाद्य और पेय (बनाकर),

खजाने से सब समाप्त हो गये हैं, (ऐसी) भावना करो।

उसने भी तदनुसार भावना की, तो सूर्य-चन्द्र भी भयभीत होकर सुमेरु के मध्य में जा छिपे। फलत: लोग एक साथ चिल्लाये कि अहो! आलोक (सर्वदा के लिए) अस्त हो गया। परिणामस्वरूप डाकिनियों ने ब्राह्मणोत्तम (सरहपा) से जाकर शिकायत की, तो उन्होंने आकर उस (सर्वभक्षक) से कहा— 'अब तुम सब कुछ खा चुके हो। अत: अब इन सबके अभाव की भावना करो।'

उसने भी वैसा ही किया। प्रतीति और शून्यता की युगल स्थिति का उन्हें ज्ञान हो गया। परमसिद्धि का लाभ हुआ और सूर्य-चन्द्र भी निकल आये जिससे सब लोग प्रसन्न हो गये। पन्द्रह वर्ष की अवधि में उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई और उन्होंने स्व-अवदान भी कहे। उसके बाद छ: सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना करने के बाद अन्त में हजारों शिष्य परिवारों के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु सर्वभक्षपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७६. गुरु नागबोधि का[१] वृत्तान्त

गुरु नागबोधि का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये पश्चिमी भारत के रहनेवाले और जाति के ब्राह्मण[२] थे।

आचार्य नागार्जुन एक समय सुवर्ण विहार में रह रहे थे[३]। पश्चिमी भारत का एक ब्राह्मण चोरी करता हुआ क्रमशः वहीं (सुवर्ण विहार) पहुँचा। उसने विहार के द्वार से अन्दर देखा तो अन्दर आचार्य नागार्जुन सुवर्ण पात्र में उत्तम भोजन कर रहे थे। उसने सोचा कि उस पात्र को चुराना चाहिए। आचार्य उसकी चोरी करने की इच्छा जान गये। आचार्य ने उस पात्र को वहीं फेंक दिया (जहाँ वे थे)। इस घटना से उस चोर को बड़ा विचित्र लगा और वह सोचने लगा कि ये ऐसा क्यों करते हैं? उसने आचार्य के कमरे में प्रवेश किया और कहा—मैं इस सोने के पात्र को चुराने के लिए सोच रहा था, पर चुराने से पहले आपने इसको मेरे पास क्यों फेंक दिया?

गुरु ने कहा—मैं तो आर्य नागार्जुन नामक व्यक्ति हूँ। मेरे पास जो धन है, वह सब परार्थ के लिए है। तुमको यह सब चुराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी यह सब खाने-पीने की चीजों को खा-पीकर यहीं बैठो, जाते समय जो धन चाहो, देकर भेजूँगा। गुरु के इस कृत्य से उसको बड़ी श्रद्धा आ गयी। धर्मोपदेश के लिए आचार्य से उसने प्रार्थना की[४]।

---

१. इनके दो नाम नागबोधि, नागबुद्धि। (तारानाथ—भ०ई०, पृ० ८५, अध्याय ७)

२. साक्या सम्प्रदाय की कुछ परम्पराओं में इन्हें पशु चरानेवाली जाति का कहा जाता है। दोङ्, थोग साक्या छो जुङ्०-पृ० २३, दिल्ली संस्करण।

३. सुवर्ण विहार से तात्पर्य- एक जगह जहाँ वे सोना बनाने के कार्य में लगे थे। उस स्थान से है।

४. इस घटना को दूसरी जगह और ढंग से तथा नागबोधि को जहाँ पश्चिम भारत का कहा गया है, तारानाथ के अनुसार ये पूर्व भारत के और जाति के ब्राह्मण वृद्ध दम्पत्ति के सन्तान थे। माँ-बाप तथा बेटा तीनों आचार्य नागार्जुन के शिष्य बने। वाद में लड़के को आचार्य के सेवक के रूप में दे दिया गया। वह भिक्षु बना। प्रथमतः उन्हें रसायन सिद्धि का लाभ हुआ। परमसिद्धि का लाभ उन्हें आचार्य नागार्जुन के देहान्त के बाद बारह वर्ष तक साधना करने पर हुआ। (ता० इ० पृ० ८४)॥

आचार्य ने उसे गुह्य-समाज के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया एवं स्वत: अभिनिवेश विमुक्ति की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

सभी कार्यों को बुद्धि से त्यागकर,

मूर्धन प्रदेश में परम परिकल्पित सिंग।

मगद रत्नमयी (नील),

स्वच्छ प्रकाशमान हो, ऐसी भावना करो॥ १ ॥

यह कहकर उसके निवास के चारों ओर रत्नों से भर दिया। उसी के बीच उसको बैठाया। वे बहुत प्रसन्न हो गये और (आचार्य के कथनानुसार) उपदेश के अनुसार भावना करते रहे। बारह वर्ष होते ही उनके सिर में जो भावना के आलम्बन के रूप में सींग थी, वह बहुत बड़ी होकर प्रत्यक्षत: हिलने-डुलने लगी और उसे गुफा के ऊपरी प्रदेश से टकरा जाने पर दु:ख की वेदना आने लगी[१]।

एक दिन आचार्य ने वहाँ जाकर उससे अपना योगक्षेम पूछा, तो उसने (सींग के कारण) अपने कष्ट के बारे में कुछ कहा। आचार्य ने उसकी भावना करने की क्षमता को जानकर पुन: कहा—

(दोहा)—

परिकल्पित (रूप से) भावना की गई महासींग द्वारा,

जैसे सभी सुखों का विनाश हो गया है।

उसी प्रकार भावाभिनिवेश से,

सभी जीव दु:खी होते हैं॥ २ ॥

---

१. नागबोधि के सिर पर सींग होने का वृत्तान्त अन्यत्र भी मिलता है, पर लामा तारानाथ के अनुसार यह सींगवाला वृत्तान्त नागबोधि से सम्बन्धित नहीं है। इससे सम्बन्ध सिद्ध (श्रृङ्गीपा) से है, जो आ० नागार्जुन के 'उशिर' (उशीनर) में रहते समय उनके शिष्य बने थे। (लामा तारा० इ०पृ० ८५, अध्याय ७, सारनाथ संस्करण)।

धर्मों की तात्त्विक सत्ता नहीं होती,
जैसे आकाश में छाये बादल।
उत्पाद स्थिति भङ्ग (इन) तीन में,
किस को किस के उपकार और बाधा॥ ३॥
उसी तरह विशुद्ध चित्त के लिए,
कौन से उपकार और कौन-सी बाधा।
आदितः असिद्ध ग्राह्य-ग्राहक,
अपने-अपने स्वभाव से शून्य हैं॥ ४॥

यह कहने पर, उनको (चोर को) शून्य धर्मतार्थ का साक्षात् ज्ञान हो गया और उसी में छः मास तक समाहित होकर बैठे, तो संसार-निर्वाण की अभिन्नता का साक्षात्कार होकर उन्हें सिद्धि मिली। उनका नाम भी नागबोधि प्रसिद्ध हो गया।

बाद में आचार्य के शासनकुल के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें नियुक्त किया गया और उन्हें आचार्य ने यह आदेश दिया कि जीव मात्र के कल्याण के लिए आठ लौकिक सिद्धियों में से जिसको जो चाहे दिया करो और तुम इस श्रीपर्वत में ही रहो। अष्ट सिद्धि-भूमि गमन, तलवार, निग्रह, अनुग्रह, लघुता, चक्षु ओपध (काजल), निधि, जङ्घ सिद्धि रसायन ये आठ हैं।

'इस प्रकार से मैत्रेय बुद्ध का शासन आने तक तुम श्रीपर्वत में जगत् कल्याणार्थ रहो' यह कहकर वहीं रख दिया। बीस हजार वर्ष तक उनके वहीं रहने की बात कही जाती है॥

गुरु नागबोधि का वृत्तान्त समाप्त॥

७७. गुरु दारिक[१]पा का वृत्तान्त

गुरु दारिकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये सालिपुत्र[२] नामक नगर के रहने वाले थे और जाति के क्षत्रिय थे।

सालिपुत्र नामक जनपद में इन्द्रपाल[३] नामक एक राजा शिकार खेलने गये और दिन के पूर्वार्ध में लौटकर सभा[४] में आये, तो सभी लोगों ने उनको प्रणाम किया। उस जन-समुदाय के बीच में उन्होंने लूहिपा को देखा। राजा ने उनसे कहा—

आप इस प्रकार के सुन्दर चेहरे, मनोहर व्यक्तित्ववाले, इस तरह से गन्दी मछली की आँत मत खाएँ। आपको कौन-सा खाना चाहिए, सब कुछ मैं दे दूँगा और दूसरा क्या चाहेंगे? सब देय होगा। यदि राज्य चाहते हों, तो वह भी मिलेगा।

लूहिपा ने कहा— अगर अमर होने का क़हीं कोई उपाय हो, तो वह सब मुझे चाहिए।

राजा ने कहा—मेरा राज्य और राजकुमारी ले लें।

लूहिपा—ये सब मुझे नहीं चाहिए।

राजा—क्यों नहीं चाहेंगे ?

---

१. दारिका शब्द का अर्थ भोटदेशीय मूल पाण्डुलिपि में 'पत्नीवाला' लिखा है—(डुब थब्स् कुत् तु— पृ० ६१, बी० एन० १४, साक्य ग्रन्थावली) पर इसकी व्याख्याओं एवं वृत्तान्तों में 'दारिका' शब्द वेश्यावृत्ति स्त्री के लिए है, यह बुरे भाव में प्रयुक्त है। 'दारिकापा का अर्थ 'वेश्यावाला' ही होगा न कि पत्नीवाला।' इसका शाब्दिक अर्थ लड़कीवाला है।

२. कुनख्येन पद्म कर के अनुसार इस नगर का नाम कुमार (कुमारी) क्षेत्र था और यह ओडि विषय (औडिविषयम्) में था। (पद्म कर० ई० पृ० ७५, बी०एन० १५०) हो सकता है, दोनों नाम एक ही जगह के हो।

३. पद्म कर के बौद्धशासन इतिहास में इस राजा का नाम विमलचन्द्र लिखा है। (पृ० ७५)

४. यह वही सभा थी, जिसका उपक्रम वार्षिक कुमुद पुष्प उत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है—पद्० पृ० ७५-७६। पद्० के अनुसार लुईपा एवं राजा की भेंट दूसरी प्रकार से हुई। (वही)

लूहिपा—राज्य बहुत ही अल्प हित एवं बहुत अधिक दोषों से भरा होता है। इसलिए मैंने भी इसको त्याग दिया है।

इस कथन से राजा. इन्द्रपाल को भी राज्य के प्रति कुछ घृणा-सी आ गयी। उनके एक ब्राह्मण जाति के मंत्री थे, उनसे उन्होंने कहा—मैं भी इस लोक में जैसा भी करें, बीत जाता है, खाना और कपड़ा (वस्त्र) किसी तरह से भी (हर जगह) इच्छा की, आधा से भी अधिक पूरे नहीं हो पाते हैं। इसकी अपेक्षा मैं धर्म की ओर जाऊँगा। अतः राज्य, पुत्र को सौंप देना अच्छा नहीं होगा?

मन्त्री—यह, तो उचित ही होगा।

उसके बाद राजकुमार को राजगद्दी पर बैठाकर राज्याभिषेक किया और राज-काज उन्हें सौंपकर राजा और उनके वह मन्त्री दोनों लूहिपा[१] के पास श्मशान गये। श्मशान में जाकर उन दोनों ने लूहिपा की कुटी का दरवाजा खटखटाया। आचार्य ने अन्दर से पूछा कि कौन हो?

उन दोनों ने कहा— हम लोग राजा इन्द्रपाल और उनके मन्त्री हैं। 'अन्दर आओ' कहकर (उन दोनों को दरवाजा खोलकर), अन्दर बुलाए। दोनों को चक्रसंवर में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया। उन दोनों ने दक्षिणा के रूप में खुद को आचार्य के लिए अर्पित कर दिया। उसके बाद तीनों आचार्य अन्य देश औदेश (उड़ीसा?) चले गये। वहाँ तीनों भिक्षाटन से जीविका चलाते रहे। उसके बाद तीनों भीरपुर नामक जनपद चले गये। वहाँ जन्तिपु (सम्भवतः जयन्तिपुर या जौनपुर) नगर जो तीन लाख घराने का नगर था, में पहुँचे। वहाँ एक देवालय की पूजा करने वाली सात सौ नर्तकियाँ रहती थीं। उन लोगों की प्रधान नटी के पास गये, तो उनकी द्वारपाल के रूप में तीन सौ लड़कियाँ तैनात थीं। उन लोगों ने कहा— तुम्हारी स्वामिनी कोई आदमी तो नहीं खरीदेगी? उन लोगों ने अन्दर जाकर स्वामिनी से उस वृत्तान्त को सुनाया।

---

१. पद्म कर के इतिहास के अनुसार लुहिपा ने अभिषेक एवं दीक्षा वहीं दी जहाँ उन्हें सम्मानपूर्वक राजमहल में बैठाया गया।

मालकिन ने कहा—हाँ खरीद लूँगी, पर देखने आती हूँ, कहकर दरवाजे में आकर देखा, तो वहाँ एक मनोहर लड़का उनके सामने मौजूद था। उसने पूछा—दाम क्या लोगे ?

आचार्य ने कहा— एक सौ तोला सोना चाहिए।

राजा को वहीं (सौ तोले सोने में) बेच दिया। आचार्य ने शर्त यह रखी कि इन्हें रात को किसी के साथ मत सोने दो और अकेला ही रखो। जब इनका दाम पूरा हो जाये, तो वापस लौटा दो। यह कहकर आचार्य और ब्राह्मण के पुत्र, जो मन्त्री थे, वहाँ से चले गये। राजा (इन्द्रपाल) दारिका के पास बारह वर्ष तक पैर धोना, तेल मालिश करना, लेप लगाना आदि सेवा करते रहे। सब समय गुरु की दीक्षा को स्मरण में रखते हुए, काम किया[१]। उस दारिका ने सभी प्रकार के कामों से पहले उस (राजपुत्र) को (सबके) मालिश[२] का काम करने दिया, तो वहाँ की श्रमजीवी सभी नौकरानियों के वे हार्दिक प्रिय बन गये। उस समय एक दिन उस दारिका के पास महाराजा धारक या उसे 'कुंचि' भी कहते हैं, नाम के एक अन्य राजा पाँच सौ तोला सोना लेकर आये। वह लोक धर्म के अर्थी थे (स्त्रीभोगी)। आचार्य से राजा इन्द्रपाल ने बीच के संयोजक, अर्थात् उन दोनों को मिलानेवाले का काम लिया। वह राजा (कुंचि) प्रतिदिन सात तोला सोना दिया करते थे। कुछ दिन बाद कुंचि की पाचन-अग्नि कम हो जाने से भारी भोजन के कारण पेट में दर्द होने लगा (दस्त होने

---

१. गुरु की दीक्षा स्मरण में रखने का तात्पर्य—जब ये राजा थे, अपने मन्त्री सहित लुहिपा से दीक्षा ली, उस समय (उपदेश देते समय) आचार्य ने दोनों से प्रश्न किया कि इस तरह तुम्हारे में सबसे अधिक स्पष्ट प्रतीति किस विषय की है? राजा ने उत्तर दिया—दारिका की। आचार्य ने दारिका को ही उपमा बनाकर उपदेश दिया था और तदनुसार उन्हें (राजा को) संसार के प्रति संवेग एवं यथार्थ (महामुद्रा) का अवबोध हुआ था। उस अवबोध को स्मरण में रखते हुए नारी के शरीर को छूना था—

पद्० ई० पृ० ७५-७८।

२. मालिश का काम इनको इसलिए दिया गया कि—यह नारी के शरीर का सर्वांगीण जानकारी पा सकें।

लगे) जब एक दिन आधी रात के समय वह बाहर गए तो उनको दारिका के उद्यान के अन्दर से बहुत सुगन्ध आने लगी और कुछ वहाँ से प्रकाश निकल रहा था। वह, उसने देख लिया। उसने वहाँ जाकर देखा तो वहाँ वही नौकर जो दिन में दारिका के यहाँ काम करते थे, वह पन्द्रह देवकन्याओं से परिवृत थे और उन लोगों द्वारा उनका सत्कार हो रहा था। वे नौकर स्वयं गद्दी पर विराजमान थे।

इस घटना से कुंचि आश्चर्यचकित होकर दौड़कर घर लौट आये, इस वृत्तान्त को उस दारिका से कह सुनाया। पुनः दोनों वहाँ देखने गये, तो दोनों ने पूर्ववत् देखा (वेश्या प्रधान, जिसके पास वे थे), तब उस वेश्या को बड़ी ग्लानि और पश्चात्ताप हुआ उसने प्रदक्षिणा पूर्वक उन (राजा, जो आज तक उनके नौकर थे) के चरणों में गिरकर प्रणाम किया और उनसे कहा कि हम अज्ञान जीव हैं। भ्रांतिवश आपको (इस तरह के) गुणों से युक्त नहीं समझ पाए। इससे हमें बहुत से पाप लगे हैं। मेरे इस अपराध को आप क्षमा करें। प्रार्थना करती हूँ कि बारह वर्ष तक मैं आपकी सेवा करना चाहती हूँ। मेरा पूज्य स्थानत्व आप स्वीकार करें। आचार्य इन्द्रपाल राजा ने इसे स्वीकार नहीं किया।

उस दारिका एवं कुंचि ने पुनः प्रार्थना की कि हमें भी अनुगृहीत करें।

आचार्य आकाश में ऊपर उड़कर वहीं बैठे— 'शून्य नगरावतरण' नामक उपदेश इस प्रकार दिया—

साधारण राजा के ध्वज हाथी गद्दी से

मेरा राज्य अत्युत्तम है, मोक्ष-ध्वज महायान वाहण।

त्रिभव आसन गद्दी का, दारिकापा उपभोग कर रहे हैं।

यह उनका अवदान उपदेश था।

'दारिका' के दास के रूप में रहने के कारण उनका नाम भी 'दारिकापा' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु दारिकपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७७. दारिकपा

गुरु दारिकपा, दाढ़ी धारण किये तथा सिर पर जटा बाँधे हुए हैं। अस्थि-अलङ्कारों से सुसज्जित हैं। कन्धे के सामने की ओर से जाते हुए भावनासूत्र से एक घुटना बाँधे हुए हैं। हाथ में वज्र और घण्टा लिये अनेक स्त्री-परिवारों के साथ आकाश मार्ग से उड़ते हुए बादलों के बीच से जा रहे हैं। नीचे की जमीन पर बड़े शिला-स्तम्भ के ऊपर एक हाथी की मूर्ति बनी हुई है।

७८. गुरु पुतलिपा

गुरु पुतलिपा राजा के वेश में हैं। सामने इष्टदेव 'हेवज्र' का एक चित्र (थङ्का) रखकर उसकी ओर देख रहे हैं और अपनी गद्दी पर बैठकर किसी से कुछ बोल रहे हैं। नीचे जमीन पर एक मन्त्री हाथ जोड़कर खड़ा है।

७८. गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त

गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'पुतली' का अर्थ चित्रवाला है। ये बंगाल के रहने वाले थे। जाति के ये शूद्र थे।

बंगाल जनपद के एक शूद्र जाति के व्यक्ति सवर्ण कुल से विवाह करके दिन बिता रहे थे। उस समय एक दिन एक योगी उनके यहाँ आये। भिक्षा माँगे, उसने भी खाद्य-चाव्य पेय आदि उत्तम भोजन से उनको तृप्त किया। उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी, तो उन्होंने योगी से धर्म-उपदेश के लिए प्रार्थना की। गुरु ने भी उसे स्वीकार किया और उसको हेवज्र के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी। उन्हें हेवज्र का एक थङ्का(पटचित्र) देकर यह आदेश दिया कि इस थङ्का को उठाते हुए नगर से नगर एवं ग्राम से ग्राम सब जगह भिक्षाटन करते-साधना करो।

उस व्यक्ति ने भी वैसा ही किया। निरन्तर बारह वर्ष तक की साधना से उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई। पर इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। एक दिन वे राजमहल में भिक्षाटन के लिए पहुँचे। राजा ने उनके थङ्का को देखा तो उसमें उनका देवता (उस योगी के देवता के पैर के नीचे) आसन के रूप में लिखा हुआ दिखाई दिया। राजा बिगड़ गये और योगी को मारने के लिए तैयार हो गये। योगी ने कहा—यह मैंने नहीं लिखा है, यह तो चित्रकार ने लिखा है। यदि इसके लिए कोई दण्ड देना हो, तो मेरे देवता को आप ही के देवता के नीचे आसन के रूप में हेवज्र को रखकर लिखवाओ। योगी से उस चित्रकार ने पूछा कि इससे क्या होगा? योगी ने कहा— मेरे देवता-देवताओं के भी देवता हैं। चित्रकार ने कहा इसका क्या प्रमाण है? योगी—राजा के देवता को ऊपर लिख भी दिया जाय तो भी दूसरे दिन वह आसन के रूप में नीचे ही आ बैठेगा।

राजा ने कहा यदि ऐसा है, तो मैं भी तुम्हारे शासन में रहूँगा। यह शर्त लगाकर चित्र को रात में वैसा लिखा गया। योगी भावना करते रहे। सुबह देखा, तो राजा के देवता पुनः योगी के देवता के आसन के रूप में नीचे दबे हुए हैं। इस घटना

से राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने योगी के शासन में प्रवेश लेकर, उस योगी को अपना गुरु बनाया। राजा के साथ उनके राज्य के और बहुत सारे लोगों ने उसके धर्म में प्रवेश ले लिया। सब लोगों में उस योगी का नाम गुरु पुतलीपा (अर्थात् गुरु पटचित्र लेकर घूमनेवाला) प्रसिद्ध हो गया।

पाँच सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना के बाद अपने अवदान भी कहे और अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त समाप्त॥

७९. गुरु पनहपा

गुरु पनहपा (अपनहपा) चलते हुए अवस्था में हैं। एक हाथ में विशेष मणि लिए हुए हैं तथा दूसरा हाथ जलदान-मुद्रा में है। पैर में विविध प्रकार के घुँघरु एवं आभूषण से सजे उपानह अर्थात् जूता पहने हुए हैं। इस विशेषता के कारण ही उनका नाम पनहपा पड़ गया है।

८०. कोकिलपा

गुरु कोकिलपा, राजा के वेश में फल-फूलों से लदे वृक्षों के उपवन में बैठे हुए हैं। उपवन के वृक्षों पर बहुत-सी कोयल बैठी गा रही हैं। आस-पास अनेक युवतियाँ संगीत, वाद्य-यन्त्रों के साथ नृत्य में रत हैं। कुछ युवतियाँ स्नान कर रही हैं। सामने एक भिक्षु उनसे बात कर रहा है।

७९. गुरु पनहपा का वृत्तान्त

गुरु पनहपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—'पनहपा' का अर्थ है जूतावाले अर्थात् उपानहवाले। यह 'पनह' शब्द उपानह का अपभ्रंश है। ये सेन्धो नगर के रहने वाले जाति के शूद्र थे।

सेन्धो नगर का एक व्यक्ति (विशेष) जूता पहनकर रह रहा था। एक दिन उसने गुरु शक्तिमान नामक योगी को भिक्षाटन करके क्रमशः विहार में (निर्जन स्थान वन) जाते देखा। इसे देखकर उस (पनह) को बहुत श्रद्धा हो गयी और उस योगी के पास जा पहुँचा।

योगी ने पूछा— तुम यहाँ क्यों आये हो?

पनह ने उत्तर दिया—धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना करने आया हूँ।

योगी ने—उसे संसार के दोष और मोक्ष की अनुशंसा का उपदेश दिया।

इससे उसके (पनह के) मन में संसार के प्रति घृणा पैदा हो गयी। उसने कहा—गुरुजी! मुझे संसार से मुक्ति पानेवाले धर्म का उपदेश दें।

योगी ने उसे प्रभाव उत्क्रांति का अभिषेक प्रदान किया और अभिनिवेश मार्ग के रूप में उपयोग की जानेवाली दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

''आभूषण वाले उपानह पहनकर चलने और,
दौड़ने आदि से मधुर शब्द आने लगता है।
शब्द मात्र (=सभी शब्द) उसी में लीन होने हैं,
तब उसकी ध्वनि एवं शून्य के अभेद रूप की भावना करो॥''

ऐसा कहने पर उसने (पनह ने) इसका अर्थ अवबोध कर लिया। तदनुसार उन्होंने भावना की। नौ वर्ष में ही उनके ''दर्शन-प्रहणीय'' मल विशुद्ध हो गये और सिद्धि प्राप्त हो गयी। उनका नाम गुरु पनहपा सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अपने अवदान भी कहे। आठ सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना के बाद अन्त में आठ सौ शिष्य परिवार के साथ व़े खेचर भूमि चले गये॥

गुरु पनहपा का वृत्तान्त समाप्त॥

८०. गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त

गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— कोकिल का अर्थ है— कोयल की वाणी वाले। ये जाति के क्षत्रिय थे और चम्पार्णव (सम्भवत: चम्पारण) के रहने वाले थे।

चम्पारण नगर में एक राजा रहते थे। ग्रीष्म के दिनों में राजधानी में बहुत जोर की गर्मी पड़ती थी। एक बार उससे असह्य होकर उनकी रहने की व्यवस्था राज-उद्यान आम्रवन में की गयी। वहाँ के आम्र वृक्ष की छाया, शीतल पानी, विभिन्न पुष्प-फल आदि के मधुर सुगन्ध, सुन्दर दृश्य से राजा बहुत प्रसन्न होकर वहीं पर रेशम के बिछौने एवं तकिया में विराजमान थे। राजकुमार आदि के द्वारा उनके लाभ-सत्कार हो रहे थे। अनेक कुमारियों द्वारा सेवा जैसे— किसी के द्वारा मालिश हो रही थी, किसी के द्वारा पंखा चल रहा था, किसी के द्वारा संगीत, किसी के द्वारा नृत्य, किसी के द्वारा पुष्पवर्षण आदि हो रहा था। इस प्रकार वे पूर्ण रूप से राजसुख भोग रहे थे। उनके मनुष्य का (दुर्लभ) जीवन बेकार ही समाप्त हो रहा था। उस समय एक विद्वान् भिक्षु उनकी ओर आ रहे थे, पर राजा के द्वारपाल के रूप में तैनात तीन सौ राजपुरुषों ने उन्हें अन्दर जाने नहीं दिया। इसे राजा ने खुद देखा और क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि उन (भिक्षु) को अन्दर भेजो! जब भिक्षु अन्दर आये, तो उनकी जलपान, भोजन आदि से सेवा की।

राजा ने कहा—आपके धर्म और मेरे धर्म, इनमें से कौन अच्छा है?

भिक्षु— (दोहा)—

''बाल देखे, तो आप का (धर्म) अच्छा है।

पण्डित देखे, यह विषमय है।''

कहने पर—

राजा—विष किसको कहते हैं?

उत्तर में भिक्षु ने तीनों विषों का विस्तृत वर्णन किया। उन विषों से आपका राज-भोग (सर्वथा) मिला हुआ है। परिणाम दुर्गति में जायगा और वहाँ दुःख भोगना पड़ेगा। जैसे विष मिला हुआ उत्तम खाद्य-पेय के सेवन से अन्त में प्राण तक छूट जाता है। वह राजा 'गोत्रभू' (अर्थात् मोक्ष मार्ग के गोत्र से युक्त व्यक्ति) थे। जिसके कारण तत्काल उन्होंने उस भिक्षु को अपना गुरु मान लिया और उनसे धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना की।

भिक्षु ने उसको (राजा को) श्रीचक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और मार्ग दर्शन किया।

राजा ने अपना राज्य, अपने पुत्र को सौंप दिया। मूल रूप से राजकाज त्यागने में समर्थ हो गये। परन्तु उस आम्रवन की कोयल की मीठी आवाज के प्रति मन आसक्त होकर गुरु के द्वारा उपदिष्ट मार्ग की भावना करने में वे असमर्थ हो रहे थे, तो भिक्षु ने पुनः उन्हें 'सर्वविकल्प सकृत् विमुक्ति' की देशना इस प्रकार दी—

जैसे शून्य आकाश में,
मेघ का गर्जन और बादल इकट्ठे होते हैं।
उसी से वर्षा की धारा निकलती है,
वृक्ष औषधियों का फसल विकसित होता है॥ १॥
उसी प्रकार कान की शून्य (जगह) में,
कोयल की मेघ ध्वनियाँ।
और कल्पित विज्ञान का मेघ (इकट्ठे) होते हैं,
क्लेश विषों की वर्षा से ॥ २॥
राग-द्वेष की शाखा-पत्तियाँ विकसित हुआ करती हैं,
अनभिज्ञ बालों का (यही) स्वभाव है।
चित्त के शून्य-भाव में ही,
शून्य से अभेद मेघ ध्वनियों का गर्जन ॥ ३॥

और अनास्त्रव महासुखों के बादल इकट्ठे होकर,
स्वतः प्रकाशमान (=वास्तविक) वर्षा से।
पञ्च-ज्ञानों की फसल विकसित होती है,
अहो! बुद्धिमान महा-अद्भुत है? ॥ ४॥

इस प्रकार देशना देने से उसने भी इसके अनुरूप भावना की, छः मास की अवधि में ही उन्हें सिद्धि लाभ हो गई। उनका नाम भी 'कोकिलपा' प्रसिद्ध हो गया। बहुत से जगत् कल्याण (जनकल्याण) के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त समाप्त॥

८१. गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त

गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— ये गौड़ देश के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

गौड़ (घहुर?) देश का एक शूद्र जाति का व्यक्ति पूर्व जन्मों में क्षान्ति-भावना के कारण अत्यन्त सुन्दर और सुडौल शरीर का था। लोगों को देखकर उसमें कुछ अभिमान आ गया। उस समय उसके पास एक सुविनीत बहुत ही सुन्दर आचरण वाले एक भिक्षु आये। उस भिक्षु ने उससे भिक्षा माँगी, उसने भिक्षु से कहा कि आप अन्दर आयें, मैं आपकी सेवा में एक दिन का सम्पूर्ण भोजन आदि की व्यवस्था करूँगा। यह कहकर उन्हें अन्दर ले गया। पैर धोना, आसन देना आदि सत्कार के बाद उत्तम भोजन कराया।

उस आदमी ने भिक्षु से पूछा—हे आर्य! आप खाने के लिए भिक्षा और साथ ही इस तरह की तपस्या करते हैं तो यह किसके लिये?

भिक्षु—मैं संसार से भयभीत होकर मोक्ष पाने के लिए यह सब करता हूँ।

शूद्र— हे आर्य! हम दोनों के (इस देह) आश्रय में क्या और कितना अन्तर है?

भिक्षु—आपके अभिमान-युक्त (देह) आश्रय में कोई गुण प्राप्त नहीं हो पाएगा और मेरे श्रद्धा से युक्त (देह) आश्रय में अपरिमित गुण आ सकते हैं।

शूद्र—आर्य! गुण से तात्पर्य क्या है, यह किसको कहते हैं?

भिक्षु ने इसके उत्तर में कहा—इस जन्म में धार्मिक व्यक्तियों के ऊपर मनुष्य, अमनुष्य आदि किसी की भी विघ्न-बाधा नहीं आ सकती है।

शूद्र—यदि ऐसा हो, तो हमको भी उस तरह के गुणों को पाने के लिए उपाय दें।

भिक्षु—तुम जमीन खोदना, व्यापार करना आदि कुछ लौकिक काम कर सकते हो?

शूद्र—ऐसा मैं एक भी नहीं कर पाऊँगा।

भिक्षु—एक ही आसन पर बैठकर भावना कर सकोगे?

शूद्र—यह तो अवश्य ही कर पाऊँगा।

उस भिक्षु ने उसको चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और षड्-समुदाय (छः विज्ञान काय की स्वप्रभास्वरता) की दीक्षा इस प्रकार दी—

नाना प्रतीतियाँ चित्त के स्वभाव से,
(भिन्न) कोई भी नहीं है अन्यत्र।
अतः छः विज्ञान कायों के विषयों के प्रति सहजतः स्थित होकर,
अनासक्त अनिरुद्ध उसी रस में (चित्त) समाहित रखो॥

ऐसा कहने पर उन्होंने भी तदनुसार भावना की तो छः मास में ही उन्हें परम-सिद्धि का लाभ हो गया। उनका नाम भी गुरु अनङ्गपा प्रसिद्ध हो गया। अनेक जनकल्याण के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त समाप्त॥

८१. अनङ्गपा

गुरु अनङ्गपा रूप रंग के अत्यन्त सुन्दर और मनोहारी हैं। वे भिक्षु के वेश में एक घास की झोपड़ी में समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। उनके सामने एक अन्य भिक्षु जो बहुत सुन्दर रूपवान है, भिक्षा माँग रहे हैं।

८२. योगिनी लक्ष्मीङ्करा

योगिनी लक्ष्मीङ्करा श्मशान में बैठी हुई हैं। बिना सँवरे बाल हैं, जो आगे पीछे दोनों ओर बिखरे हुए हैं। त्रिशूल के साथ हाथ में नर-कपाल एवं खुँखरी (कटार) ली हुई हैं। शरीर पर कोयले की भस्म का लेप लगाई हुई हैं और योगिनी के योग्य सभी प्रकार के अस्थि-आभूषण पहने हुई पगली के रूप में हैं।

८२. गुरु लक्ष्मी (लक्षिंकर) का वृत्तान्त

गुरु लक्ष्मी का वृत्तान्त इस प्रकार है— यह उज्जैन (ओडियान) देश (उग्यन?) की रहनेवाली और जाति की क्षत्रिय थी। यह उज्जैन के अन्तर्गत सम्भल देश के राजा इन्द्रभूति, जो ढाई लाख संख्या के नगर के राजा थे, की बहिन थी। बचपन से ही वे गोत्र भू-गुणों से परिपूर्ण थी। महासिद्ध कम्बलपा आदि से बहुत धर्म-उपदेश भी सुन चुकी थी। बहुत से तन्त्रों का भी उन्हें ज्ञान था। उनको लङ्का के राज़ा जालन्धर के पुत्र समबोल (सम्भोल) के लिए माँगा, तो उनके भाई इन्द्रभूति ने भी राजपुत्र के लिए दे दिया। जब उनको लेने के लिए वे आये, तो महाराज इन्द्रभूति ने अनेक धर्मविशेषज्ञ लोगों के साथ अपार धन-सम्पत्ति देकर उन्हें भेजा। लङ्कापुरी नगर में पहुँचे, तो मुहूर्त (नक्षत्र) न होने के कारण कुछ दिन उन्हें राजमहल के बाहर रखा गया। उस समय लक्ष्मी ने लोगों को (तैर्थिक) वैधर्मिक होते देखा तो उसे बड़ा दु:ख हुआ। उसी समय उस राजकुमार के बहुत से नौकर, जो शिकार खेलने गये थे, बहुत-सा माँस लेकर उनके (लक्ष्मी के) सामने से लौट रहे थे। उनको उन्होंने देखा। लक्ष्मी ने (अपनी सहेलियों से) पूछा—ये सब कौन हैं? बारात कहाँ से आई? कहाँ के लोग हैं? सहेलियों ने उत्तर दिया— इनको तुम्हारे पति ने शिकार खेलने भेजा है, ये सब शिकारी हैं, और शिकार खेलकर लौट रहे हैं।

जैसे 'उलटी' बीमारी वाले को खाने की बात से ही उलटी आने लगती है, उसी प्रकार शिकारियों की चर्चा से उनको बहुत बुरा लगा। मेरे भाई एक धर्मराज थे, पर मुझे इस तरह के व्यक्ति को सौंपा, यह सोचकर वह वहीं बेहोश हो गयी। उसके बाद जब वह होश में आई, तो उन्होंने (आसपास के) नगर के लोगों को अपनी सारी धन-सम्पत्ति दान कर दी। अपने सभी आभूषण एवं वस्त्र नौकरों के साथ भेज दिये। वे स्वयं अपने शयन-गृह लौट गई। उसके बाद उन्होंने यह कहा कि मुझे बुलाने के लिए यहाँ कोई आदमी नहीं भेजना। उसने एक मकान के अन्दर बैठकर तेल और कोयला मिलाकर शरीर पर लेप लगाया। नग्न होकर बाल बिखराकर बैठी और पागलपन का नाटक करती रही। वास्तव में, वह रहस्यमयी अर्थ की साधना

करती रही। इससे राजा आदि दुःखी हो गये। दवाई की व्यवस्था की और वैद्य आदि वहाँ जिस कमरे में लक्ष्मी रह रही थी, गये तो उन लोगों को उसने मारना-पीटना आरम्भ कर दिया। ससुराल वालों ने उनके भाई (इन्द्रभूति) के पास दूत भेजा कि लक्ष्मी की हालत ऐसी हो गयी है और क्या किया जाय? महाराज इन्द्रभूति इससे विचलित नहीं हुए। सोचने लगे कि उसको संसार के प्रति विरक्ति हो गयी होगी।

बहिन लक्ष्मीकर उसके बाद से लङ्कापुरी में ही सदा परम रहस्य की साधना में लीन रही। उच्छिष्ट भोजन खाती और श्मशान में सोती रही। सात वर्ष में ही उन्होंने परमसिद्धि प्राप्त कर ली। उस राजा (उनके श्वसुर) के एक जमादार ने उनकी सेवा की, तो उसको उन्होंने दीक्षा दी और उसको भी बहुत-से गुण प्राप्त (क्षमता) हो गये। वह जमादार ही उसकी (लक्ष्मीकर की) स्थिति को जानते थे और कोई नहीं।

एक समय महाराज जालन्धर अपने सैनिकों के साथ शिकार खेलने गये हुए थे। समय का बोध न रहने से राजा बहुत देर तक सो गये। जब वह उठे, तो जल्दी चलने लगे। वे सब रास्ता भटक गये (उस दिन वे रात को लौटकर आने में असमर्थ हो गये) कहीं सोने की जगह नहीं मिली। चलते हुए लक्ष्मीकर की गुफा में पहुँचे; अन्दर देखा तो, देखने में यही आया कि वे लक्ष्मी स्वयं अपने शरीर से प्रकाश निकलते हुए देदीप्यमान होकर बैठी हुई हैं और उनके चारों ओर असंख्य देवकन्याएँ उसकी पूजा कर रही हैं। इस घटना से उनमें बड़ी श्रद्धा आ गयी। राजा रात भर वहीं बैठकर दूसरे दिन अपने घर लौटे, पुनः राजा वहाँ (उस गुफा में) आकर अभिवादन-प्रणाम आदि किया, तो लक्ष्मीकर ने कहा—

मेरी जैसी स्त्री को तुम प्रणाम क्यों कर रहे हो?

राजा—आपको अपार गुण प्राप्त हैं, अतः मुझे भी दीक्षा दें, यही मेरी प्रार्थना है।

लक्ष्मीकर ने कहा— (दोहा)

संसार के सभी जीव दुःख के साथ ही हैं,

सुख कहीं भी नहीं होता है।

जन्म-जरा-मरण आदि से,

जगत के प्रमुख देव-मनुष्य भी पीड़ित हैं॥ १॥

तीनों दुर्गतियों में तो मात्र दुःख ही होते हैं,

(वे) एक-दूसरे को खाते और भूख से सदा पीड़ित रहते हैं।

शीतोष्ण आदि अपार पीड़ा से वे सदा पीड़ित हैं,

अतः हे राजन्! आप मोक्ष के सुख की खोज करें॥ २॥

अन्त में उन्होंने कहा—आप मेरे द्वारा विनेय नहीं हैं, आपके जमादारों में से एक, जो मेरा शिष्य था, सिद्धि प्राप्तकर काम कर रहा है, वही आपका गुरु होगा।

राजा ने कहा—वैसे तो जमादार बहुत हैं, उनमें से मैं उसको कैसे पहचानूँगा?

लक्ष्मीकर—वह सफाई करने के बाद प्राप्त भोजन अन्य लोगों को देता रहता है, उसी को निमित्त मानकर देखो।

राजा (अपने घर लौट गये) अपने जमादारों के बीच जाकर गौर से देखा, तो उनमें से एक वैसा ही कर रहा था। राजा ने उसको महल के अन्दर आमन्त्रित करके गद्दी पर आसीन किया और विधिवत् प्रणाम प्रदक्षिणा पूर्वक उनसे दीक्षा के लिए प्रार्थना की।

उस (जमादार योगी) ने राजा के लिए अधिष्ठान उत्क्रान्ति का अभिषेक प्रदान किया और वज्रवाराही की उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी।

अन्त में लक्ष्मीकर एवं उनके शिष्य जमादार दोनों ने लङ्कापुरी नगर में अनेक प्रतिहारी दिखाये और दोनों उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये॥

गुरु लक्ष्मीकर का वृत्तान्त समाप्त॥

८३. गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त

गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये सर्वडी जनपद के रहनेवाले और जाति के सम्भवतः चाण्डाल थे। जवाहरात (रत्न) बेचकर ये जीविका चलाते थे।

सर्वडी नामक जनपद के एक नीच जाति के व्यक्ति समुद्र से रत्न ले आकर बेचा करते थे और इसी से वे अपनी जीविका चलाते थे। एक समय यह (रत्न) न मिलने से उनकी जीविका समाप्त हो गई। इससे दु:खी होकर वे एक श्मशान में जा बैठे। उसी समय अचिन्त योगी उनके पास आये और उनसे पूछा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उस आदमी ने—अपना पूर्व वृत्तान्त सही बतलाया।

योगी—सांसारिक जीव अपरिमित दु:ख में ही रहते हैं।

तुमने आज से पहले (पूर्वजन्म में) भी बहुत उग्र असह्य एवं अधिक दु:ख भोगे हैं। अब भी दु:ख के अलावा सुख आदि और कुछ नहीं आने वाले हैं।

व्यक्ति—हे योगी! आपसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन दु:खों से मुक्त होने का एक उपाय अवश्य दें।

योगी ने उनको अभिषेक प्रदान किया और बाह्य रूप से चार अप्रमाण एवं आन्तरिक रूप से चार आनन्दों की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा) —

मैत्री-करुणा मुदिता और उपेक्षा ये चार अप्रमाणों से,

अष्ट लौकिक धर्मों में समता स्थापित कर,

मध्य (बिन्दु) से आनन्द स्रोत का अवतारण करो।

चार चक्रों में निहित चारानन्द, सुख-शून्यता के अभिन्न आकार वाले हैं।

उनकी सम्यक् रूप से भावना करने पर, मात्र अनास्रव सुख ही होगा।

एक क्षण भी दु:ख सम्भव नहीं होगा।

८३. समुद्रपा

गुरु समुद्रपा, समुद्र और नगर के बीच के रास्ते में बैठे हुए हैं। अर्थात् समुद्र में चलती नाव में बैठे हैं। हलके आभूषण पहने हुए और सिर पर पगड़ी बाँधे हुए हैं। उनके ठीक सामने योगी अचिन्तपा निर्वसन (नग्ना) अवस्था में आकर उन्हें उपदेश दे रहे हैं।

८४. व्यालिपा

गुरु व्यालिपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में हैं। हलके आभूषण एवं सिर में पुष्प-मुकुट पहने हुए हैं। एक हाथ में कलश है और दूसरे हाथ से रसायन के प्रयोग हेतु सामने बड़ा-सा पात्र रखकर उसमें कुछ प्रयोग कर रहे हैं। वे आस-पास स्थित अपनी पत्नी, बाल-बच्चों और एक घोड़ी को देख रहे हैं। दूसरी ओर समुद्र के अन्दर से एक चौकोर पहाड़ निकला हुआ है तथा उस पहाड़ के ऊपर सुन्दर-सी कुटी बनी हुई है। (यह श्रीलङ्का के एक द्वीप का दृश्य है, जहाँ पर व्यालिपा ने अपना अन्तिम समय बिताया था)।

ऐसा कहने पर उन्होंने भी तदनुसार अर्थ अवबोध के साथ भावना की। फलत: तीन वर्षों में ही उनको परमसिद्धि की प्राप्ति हुई। उनका नाम सर्वत्र 'समुद्रपा' प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने अपने अवदान भी कहे। अनेक जगतार्थ के बाद आठ सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये॥

गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त समाप्त॥

८४. गुरु व्यालिपा का वृत्तान्त

गुरु व्यालिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये 'अपत्र' देश के रहनेवाले थे और जाति के ब्राह्मण थे। सिद्धि लौकिक-रसायन की थी।[१]

अपत्र (उवत्र, स्पेत्र भी) नामक जनपद में एक ब्राह्मण जाति के व्यक्ति बहुत धन-धान्य से समृद्ध थे। वह अमृत-साधना में लग गये। बहुत-सा पारा खरीदकर उसे सिद्ध किया करते थे और अन्य औषधियों में उसे मिलाते थे। एक औषधि की जानकारी न रहने से वह (अमृत) सिद्ध नहीं हो पाया जो वे चाहते थे। इस तरह निरन्तर तेरह वर्षों तक साधना करने पर भी उन्हें सफलता न मिली। अपनी पूर्व सम्पत्ति भी उसके खर्च में समाप्त हो गई। उसने क्रुद्ध होकर अपनी साधना-विधिवाली पोथी को गंगा में फेंक दिया। स्वयं नगर में भिक्षा माँगने चले गये।

वे क्रमश: जहाँ राजा राम का मन्दिर था (रामेश्वर सम्भवत:), वहीं चले गये। उस समय एक दारिका गंगा[२] में स्नान कर रही थी। वहाँ पानी से बहती एक पोथी उसको मिली। उसने उसे उठाकर बाहर निकाला। तब तक वह ब्राह्मण भी वहीं पहुँचे। उस पोथी को उसने ब्राह्मण को दिखलाया। ब्राह्मण ने देखा कि यह वही पोथी थी जिसको उसने खुद गंगा में फेंक दिया था। इसे देखकर उसने हँस दिया। दारिका ने कारण पूछा, तो उन्होंने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया। दारिका ने कहा—अब भी इसकी साधना करनी चाहिए, मेरे पास बीस सेर से भी अधिक सोना है।

---

१. व्यालिपा के रसायन विशेषज्ञ होने का वृत्तान्त अन्यत्र भी बहुत जगह मिलता है, वह रसायन शास्त्र के भी विशेषज्ञ थे—

गोविन्दभगवत्पादाचार्यो गोविन्दनायक:,
चर्वटि: कपिलो व्यालि: कपालि: कन्दलायन:।
एतेऽन्ये बहव: सिद्धा जीवन्मुक्ताश्चरन्ति हि।
तनुं रसमयीं प्राप्य तदात्मक काञ्चणा: ॥

(श्लोक—८,९ अध्याय ९, सर्वदर्शन संग्रह माधवाचार्य कृत)

२. यहाँ गंगा से तात्पर्य दक्षिण की कोई नदी है।

ब्राह्मण ने कहा—पहले भी इसे सिद्ध करने से यह दशा हो गयी, क्या अब कुछ होगा? दारिका ने ब्राह्मण को इस काम के लिए विवश किया, बहुत-सा पारा खरीदकर वे एक वर्ष तक साधना (अमृत-साधना) करते रहे। 'रक्त-अम्लक' नामक औषधि के न जानने से फिर उन्हें असफलता ही हो रही थी। एक दिन दारिका स्नान कर रही थी, प्रकृति पुष्प जो उसकी उँगली पर लगे थे, उन्हें गिराया तो कुछ कण-उछल कर उस रसायन औषधि में जा गिरे। तत्काल रसायन औषधि सिद्ध होने के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे। ब्राह्मण ने दारिका से यह कहकर कि तुमने इस रसायन-पात्र में क्या डाल दिया? पूछा, तो उसने उत्तर दिया— यह कुंछ कण प्राकृतिक पुष्प के कण हैं, यही होगा, अन्य मैंने कुछ नहीं गिराया। इससे दोनों प्रसन्न हुए।

उस दारिका ने (उस साधक) ब्राह्मण के भोजन में तीता (औषधि विशेष जिसका रस बहुत तीता होता है) लगाकर दिंया, तो रोज उसको (ब्राह्मण को) उसके तीतापन का अनुभव नहीं होता था। उस दिन (भोजन में तीता पड़ा हुआ, यह) उनको ज्ञात हो गया। दारिका ने उनसे पूछा—क्या सिद्ध हो गया है?

ब्राह्मण—क्यों, आपके पूछने का क्या कारण है?

दारिका—पहले भोजन में तीता लगने पर आपको उसका तीतापन ज्ञात नहीं होता था, पर आज होने लगा है।

ब्राह्मण—हाँ, सिद्ध हो गया है, इसका लक्षण (रसायन औषधि स्वतः) दक्षिणतः चक्र काटना और उसमें अष्ट-मंगल चिह्न परिलक्षित होना आदि होता है।[१] यही

---

१. रसायन जब पूर्ण रूप से सिद्ध होने लगता है, उस समय उस द्रव्य में विशेष प्रकार के लक्षण परिलक्षित होने लगते हैं। वह स्वयं उबलने लगता है और उबलते समय दक्षिण की ओर चक्र काटते हुए घूमता है, उसमें भी श्रीवत्स आदि का आकार उभरता है। रसायन की सिद्धि तीन तरह से होती है। पुण्य आदि सम्भार पूर्ण होने से जैसे सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करने ही वाले थे, उनके पेय क्षीर में उक्त लक्षण दिखलाई पड़ा था। दूसरा मन्त्र शक्ति से सिद्ध शृङ्गीपा ने अपना मूत्र डालकर बहुत से पानी रसायन-द्रव्य बना डाले। तीसरा विभिन्न द्रव्यों के योग से आचार्य नागार्जुन ने बनाया (नागार्जुन रसायन-शास्त्र, तनग्युर संग्रह)।

इसमें दिखलाई पड़ रहे हैं। दारिका ने उस रसायन-द्रव्य को स्वयं ब्राह्मण, दारिका और उनकी एक सेविका, इन तीनों ने खाये। तीनों को 'आयु की अमरत्व सिद्धि का लाभ हो गया।'

ज्ञान के प्रति कंजूसी एवं पर-ईर्ष्या की मात्रा अधिक होने से उसने अपनी उक्त विधि को किसी को नहीं बताया। यह कोई न जाने, इस उद्देश्य से वे तीनों देवलोक चले गये। पर वहाँ किसी भी देवता ने उसका सेवन (उपासना और दीक्षा ग्रहण) नहीं किया, तो वे वहाँ से वापस (मर्त्यलोक) आये और महाराज क्लिम्बर[१] के राज्य में चले गये। वहाँ एक विशेष स्थान पर रहने लगे। वह स्थान, एक विशाल चट्टान, जिसकी ऊँचाई आठ योजन है, चौड़ाई दस कोस है, उस क्षेत्र के चारों ओर पंक (कीचड़) से घिरा हुआ है। उस चट्टान के मध्य में एक वृक्ष था, उसी की छाया में वे लोग रहने लगे।

इस प्रकार उस विधि की दीक्षा-परम्परा विच्छिन्न हो गयी और जम्बूद्वीप में इसकी परम्परा नहीं रही।

बाद में आचार्य नागार्जुन 'खेचर' (आकाश गमन) की सिद्धि प्राप्त करके एक विशेष उपानह (जूता) की सहायता से वहाँ पहुँचे। जाते समय एक उपानह वहाँ पहुँचने से पहले कहीं छिपा दिया और एक लेकर वहाँ पहुँचे। प्रणामपूर्वक उस (ब्राह्मण) से दीक्षा के लिए प्रार्थना की। उस (ब्राह्मण) ने पूछा—तुम यहाँ कैसे आये हो?

नागार्जुन ने कहा—इस उपानह (जूता) की सहायता से आया हूँ।

उस ब्राह्मण ने उन्हें अपने ज्ञान एवं उस रसायन-विधि की दीक्षा दी। अन्त में उसने कहा कि दीक्षा की दक्षिणा के रूप में, तुम अपने इस उपानह, जिसकी सहायता से यहाँ आये हो, मुझे दे दो। नागार्जुन ने उस उपानह को उन्हें अर्पित कर दिया। उन्होंने एक उपानह जो अपने पास रखा था, उसको पहनकर

---

१. कोलम्बर, क्लम्बर, कुलम्बर।

उसकी सहायता से वहाँ से जम्बूद्वीप लौट आये। (दक्षिण) श्रीपर्वत में रहकर उसी की साधना की और उस विधि को जगत्-कल्याणार्थ सबके लिये सुलभकर दिया।

यह कहा जाता है कि मात्सर्य आदि क्लेश से युक्त लोगों के गुण(ज्ञान) प्राप्त करना बहुत कठिन है। साथ ही सम्यक् गुण की प्राप्ति, गुरु की आज्ञा उपदेश के बिना सम्भव नहीं हैं। अत: गुरु का उपदेश और उसकी अनुमति सब विद्या के लिए अत्यावश्यक हो जाती है॥

गुरु व्यालिपा का वृत्तान्त समाप्त॥

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त आचार्य अभयदत्तश्री कृत समाप्त॥

भोट भाषा में अनुवादक-भिक्षु-स्मोन्-ग्रुप-शेस् रब (मोन-ड्रुब शेरब) ने किये हैं।

परिणामना(श्लोक-) जैसे लोक प्रसिद्ध लूईपा आदि चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त, उत्तम कुल और मगध देश में जन्में सम्यग्गुणालङ्कृत अभयश्री के मुख कलश से सम्भूत अन्यत्र (भाषान्तर में) मैंने सम्यक् अनुवाद कार्य किये हैं, जिससे जो पुण्य प्राप्त हैं, उससे विष से पीडित लोग (जगत्) सञ्जीवक गुरु के द्वारा अनुगृहीत होकर विष ही औषधि के रूप में प्रतीत हो।

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त, भारत के चम्पारण देश के महागुरु अभयदत्तश्री के मुख-कमल से जैसे कहा है, वैसा ही भिक्षु-स्मोन्-ग्रुप् शेस् रब् द्वारा सम्यक् रूप से अनूदित किया गया है॥

शुभमस्तु॥

༄༅། རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཙ་ཏུ་རཱཤཱིཏིསིདྡྷ་པྲབྲིཏྟིཧྲཱ།[1]

བོད་སྐད་དུ། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་བཅུ་རྩ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས།

འགྱུར་ཕྱག

བླ་མ་དམ་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

མཆོད་བརྗོད།

དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་རྣམས་[2]དང་བརྒྱུད་པའི་བླ་མ་མཁའ་སྤྱོད་གཤེགས་པ་རྣམས།།

དངོས་ཀྱི་བླ་མ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་བརྙེས་པ་མི་འཇིགས་པའི་[3]དཔལ་ལ།།

ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དྭང་བས་ཞབས་ཀྱི་པདྨོ་དག་ལ་གུས་བཏུད་ནས།།

ལཱུ་ཧི[4]་པ་སོགས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་བཅུ་རྩ་བཞིའི་ཡང་དག་ལོ་རྒྱུས་བྲི།[5]

---

1 བོད་འགྱུར་ཚ་བ་རྣམས་སུ་ ‘རྒྱ་གར་སྐད་དུ་ ཙ་ཏུ་ར་’ཞེས་སོགས་མི་འདུག -ཀུང་པེ་ཅི་ [དཀར་ཆག] ཤོག ༡༡ [78] དག་ཏུ་ལེགས་སྦྱར་དང་། བོད་སྐད་གཉིས་ཀ་བྲིས་འདུག་པས་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན།

2 ཀུན་དང་- སྣྲུབ་ཀུན་ཤོག ༡ 14 .

3 པ་དཔལ་ལ།། པེ་ཅི་ཤོག ༡ འོག 173 173 Vol 87.

4 ལཱུ་ཡི་- པེ་ཅི་ཤོག ༡ གོང་- དེ་ཉིད།

5 དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་། བརྒྱུད་པའི་བླ་མ་མཁའ་སྤྱོད་གཤེགས་པ་རྣམས་དངོས་ཀྱི་བླ་མ་མཆོག་གིས་དངོས་གྲུབ་བརྙེས་པ་མི་འཇིགས་པ་དཔལ་ལ། པེ་ཅི ཤོག་-173, vol 87 - འདིར་མཆོད་བརྗོད་ལ་གཞིག་ན་ལོ་རྒྱུས་འདི་བླ་མ་མི་འཇིགས་སྦྱིན་པའི་དཔལ་གྱིས་སྔོན་དུ་ལེགས་སྦྱར་དུ་བྲིས་ཟིན་པ་ཞིག་ཕྱིས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་ལྟར་མི་སྣང་ཞིང་། དཔའ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་མདོར་བསྡུས་ཞལ་ནས་གསུངས་པ་ལས་བསྒྱུར་བ་ལྟར་སྣང་ངོ་།།

༡) ལཱུ་ཧི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས།

དེ་ལ་གུ་རུ་ལཱུ་ཧི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། (འདིར) ལཱུ་ཧི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉའི་རྒྱུ་ལྒྱོ་གསོལ་བ་ལས་མཚན་དུ་བཏགས (པ) སྟེ[1]། དེ་ཡང་སིངྒ་ལའི་གླིང་གི་[2]རྒྱལ་པོ་གཅིག་ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཀྱང་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ་དང་མཉམ་པ། རྒྱལ་པོའི་ཁང་བཟང་ཐམས་ཅད་ནི་རིན་པོ་ཆེ་དང་། མུ་ཏིག་དང་། གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པ་ཡོད་ལ། སྲས་ཀྱང་གསུམ་མངའ་བ་ལས། ཡབ་རྒྱལ་པོ་གྲོངས་ནས་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཚེ། རྩིས་མཁན་རྣམས་ལ་སྲས་གང་གིས་རྒྱལ་སྲིད་ཟིན་པ་རྩིས་བྱས་པས། དེ་ན་རེ། སྲས་བར་པས་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་ན་ཆབ་སྲིད་བརྟན་པ་དང་། འཁོར་འབངས་སྐྱིད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཡོད་དོ་ཟེར་བ་དང། ཡབ་ཀྱིས་རྒྱལ་སྲིད་དེ་ལ་གཏད[3]། (དེ་ནས་) གཅེན་དང་། གཅུང་དང་། འབངས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་རྒྱལ་ཚབ་ཏུ་དབང་བསྐུར་བ་དང་། དེས་ (རྒྱལ་སྲིད) མ་འདོད་ནས་བྲོས་པར་བརྩམས་པ་ལས། གཅེན་དང་། གཅུང་དང་། འབངས་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཟུང་

---

1 -'ཏེ'- སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༠ 14.

2 པེ་ཅི་-"སིངྒ་ལའི་གླིང་" ཞེས་མི་འདུག–ཤོག ༡ གོང་, དེ་ཉིད།

3 འདིར་-"ཡབ་ཀྱིས་རྒྱལ་སྲིད་དེ་ལ་གཏད"–ཅེས་དང་། -"ཡབ་རྒྱལ་པོ་གྲོངས་ནས་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཚེ" ཞེས་པའི་ཚིག་གཉིས་སྔ་ཕྱི་འགལ་བས་བརྟག་དགོས། དོན་ནི་ -ཡབ་རྒྱལ་པོས་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཚེ། ང་གྲོངས་ནས་སྲས་གང་གིས་རྒྱལ་སྲིད་ཟིན་ཞེས་རྩིས་མཁན་རྣམས་ལ་རྩིས་བྱེད་དུ་བཅུག་པས། དེ་ན་རེ, ཞེས་པར་མངོན་ལ། རྒྱ་སྐད་ཀྱི་དབང་གིས་ཚིག་གོང་འོག་འདྲེས་པར་སྣང་ངོ༎

ནས་གསེར་གྱི་སྒྲོག་གི་ལྕུགས་སུ་བཅུག་པ་དང་། རྒྱལ་བུ་དེས་འཁོར་དང་བཙོན་བསྲུང་[1]ཀུན་ལ་གསེར་དང་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་དགའ་བྱིན་ནས། མཚན་ལ་གོས་ཆེམ་བུ་ཅན་གྱོན་ཏེ། སྐྱེལ་མ་ལ་ཡང་གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་བཏང་པ་བྱིན་ནས། རྒྱལ་པོ་རཱ་མ་ལའི་ཡུལ་རཱ་མེ་ཤྭ་རར་[2]ཕྱིན་པ་དང་། སྔོན་དར་ཟབ་ལས་བྱས་པ་བོར་ནས་ཀྱིཊྚསྣཱརའི་སྣན་ལ་འདུག་[3]གནས་རྒྱལ་ས་སྤངས་ནས་ཐལ་བའི་ནང་དུ་ཉལ་ལོ། །

རྒྱལ་བུ་དེ་གཟུགས་བཟང་ཞིང་བལྟ་ན་སྡུག་པས། ཀུན་གྱི་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་ལ་སོགས་པ་མི་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་[4]སྦྱིན་ནོ། །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་གདན་དུ་བྱོན་པས་ (དེར་) མཁའ་འགྲོ་མས་རྗེས་སུ་གཟུང་[5]སྟེ། གདམས་པ་བསྟན་ཏོ།[6] རྒྱལ་བུ་རང་གི་བཞུགས་ས་སྣཱ་ལི་པུ་ཊྲར་བྱོན་པ་དང་། མི་ཀུན་གྱིས་ཟས་བྱིན་པ་ཟ་ཞིང་[7]། དུར་ཁྲོད་དུ་ཉལ་

---

1 སྲུང་མ་’’ -སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག -༣/ན. 14

2 “རམ་ལའི་ཡུལ་”-སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག -༣/ན.། པེ་ཅི་བསྐྲུན་འགྱུར་དང་། སྒྲུབ་ཐབས་ཀུན་བཏུས་དཔེ་གཉིས་སུ་-རྣམལའི་ཡུལ་-ཞེས་པ་འདུག་ཀྱང་། “རྣམཆའི་གནས” ཞེས་དག་པར་མངོན་ནོ།།

3 “བདེངས་ནས་” སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག་-༣ དེ་ཉིད།

4 ཉིད་དུ་-པེ་ཅི་ལ་མེད། ཤོག ༣, གོང་

5 ‘བཟུང’’ སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣, 14.

6 ‘དེ་ནས’, རྒྱལ་པོ་གཞུགས་ས་པ་ཊ་ལི་པུ་ཏྲར་བྱོན་ནས།’-སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣ ན 14.འདི་དག་གོ།

7) ཟ་བཞིན་ -སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣/ན. 14.

གིན་[1]འདུག་པ་ལས། (ཉིན་གཅིག་) ཚོགས་འདུས་སུ་བྱོན་ནས་ཆང་འཚོང་[2]མའི་གནས་སུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཆང་འཚོང་མའི་གཙོ་མོ་དེ་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞིག་ཡིན་པས། དེས་རྒྱལ་བུ་ལ་[3]བལྟས་ནས་འདིའི་འཁོར་ལོ་བཞིའི་དྲི་མ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་དག་ནས་འདུག་པ་ལ། སྙིང་ག་[4]ན་སྲན་མ་ཙམ་ཞིག་[5]རིགས་ཀྱི་རྟོག་[6]པ་མ་དག་པར་འདུག་གོ་ཞེས་ཟེར་རོ། དེ་ནས་བུད་མེད་[7]དེས་ཇ་མའི་ནང་དུ་ཟས་རུལ་བ་བླུགས་ནས་བྱིན་པ་དང་། རྒྱལ་བུས་དེ་བསྐུར་བས་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་ཁྲོས་[8]ནས། ཁྱོད་ཀྱིས་ཟས་བཟང་ངན་[9]གྱི་རྣམ་རྟོག་[10]མ་སྤངས་ན་ཆོས་ག་ལ་འོང་ཞེས་སྨྲས་པས[11]། རྒྱལ་བུ་དེས་རྣམ་རྟོག་དང་མཚན་མ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་གེགས་[12]སུ་འདུག་སྙམ་ནས།

---

1 ‘ཀྱིན་-སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣ ‘དེ་ནས་,14.

2 ‘ཆང་ཚོང་མའི་’-ཡེ་ཉི་, ཤོག ༣, གོང་ དེ་ཉིད།

3 ‘རྒྱལ་བུ་ལ་ལྟས་ནས་’ ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

4 ‘སྙིང་ཀ་ན་’-ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

5 ‘སྲན་མ་ཙམ་གཅིག་’-ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

6 ‘རྟོག་པ་’-ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

7 ‘དེ་ནས་མོས་’-སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག ༣, པ—14

8 དེ་ནས་འཁྲིས་ནས་-ཡེ་ཉི་, ཤོག ༣,གོང་ དེ་ཉིད།

9 གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ལ་ལྟ་སྤྱོད་ རོ་གཅིག་པ་དགོས་པ་ལས་སྤྱོད་ལམ་གྱི་དམིགས་པ་ལ་མཚན་འཛིན་མ་འགག་ན་གྲུབ་པ་མི་ཐོབ་ཅེས་པའོ།།

10 ‘རྟོག་པ་’-ཡེ་ཉི་ དེ་ཉིད།

11 ‘སྨྲས་པ་’-ཡེ་ཉི་ -དེ་ཉིད།

12 ‘འགེགས་སུ་’-ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

རྣམ་རྟོག་དང་མཚན་མ་སྤངས་ཏེ། ཉ་པས་གནྡྷ་ནས་ཉ་བསད་པའི་རྒྱུ་མ་ས་ལ་བསྐྱུར་[1]བ་རྣམས་བླངས་ནས། དེ་ཟ་ཞིང་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་བསྒྲུབས་སོ།[2]

ཉའི་རྒྱུ་མ་ཟ་བ་ཉ་འཚོང་[3]བའི་བུད་མེད་ཀུན་གྱིས་མཐོང་ནས།

ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ 'ལཱུ་ཧི་'[4]པཱ་ཞེས་སླས་པ་དང་། ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་ 'ལཱུ་ཧི་པ' ཞེས་གྲགས་ཏེ། དེའི་མིང་དང་(ལ)དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ།།

འདིའི་འགྲོས་དྷ་རི་ཀཱ་པཱ་དང་། ཏེངྐི་[5]པཱའི་སྐབས་སུ་ཡང་འབྱུང་[6]ངོ་།།

གྲུབ་ཆེན་ལཱུ་ཧི་པའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་རྫོགས་སོ།།

---

1 'སྐྱུར་བ་རྣམས་'_པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

2 'བསྒྲུབས་ཏེ་'_སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡/བ. 14 པེ་ཅི ཤོག ༣,གོང་དེ་ཉིད།

3 'ཉ་ཚོང་མའི་བུད་མེད་ - པེ་ཅི ༣,གོང་ 175 Vol 87 ཉ་ཚོང་མའི་བུད་མེད་ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣ བ 14.

4 'ལུཡི་_ པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 'ཏེངྐཔ་_པེ་ཅི་, སྒྲུབ་ཀུན་གཉིས་ཀར་,ཤོག དེ་ཉིད།

6 'བྱུང་ངོ་_པེ་ཅི ,དེ་ཉིད།

† དྷ་རྣ་ནྡྷ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང་དུ—རྒྱལ་པོ་འདིའི་ཡུལ་—'ཤིཁ་ར་'ཞེས་པ་ཡིན་གསུངས།—ཤོག ༡༥༥ སྟཱ་ར་ནཱ་ཐའི་དཔར།

༣) ག་རུ་ལཱི་ལཱ་པ།

ག་རུ་ལཱིལཱ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་†གཅིག་སེངྒེའི་ཁྲི་ལ་བཞུགས་པའི་ཚེ། ཡུལ་གཞན་ཞིག་ནས་རྣལ་[1]འབྱོར་པ་ཞིག་[2]དེའི་ཐད་དུ་བྱོན་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། ཁྱོད་རྒྱལ་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་འཁྱམས་[3]པ་ཉོན་རེ་མོངས། གསུངས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པ་ན་རེ་) "བདག་མི་སྡུག་སྟེ། ཁྱོད་རང་[4]ཉོན་མོངས་སོ།། དེ་ཅི་དེ་ན? ཉིད་རྒྱལ་སྲིད་ཕོར་གྱིས་དོགས། འབངས་རྣམས་མ་མགུའི་དོགས་པས་ཉིད་རང་སྡུག་བསྔལ་ལོ།། བདག་ནི་མེའི་ནང་དུ་འཚོང་ས་[5]ཀྱང་མི་ཚིག དུག་ཟོས་ཀྱང་མི་འཆི། གས་པ་དང་། འཆི་བའི་སྡུག་བསྔལ་མེད་དེ། བཅུད་ལེན་གྱི་གདམས་[6]ངག་ཡོད་" གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་དད་ནས་"དངོས་ཀྱིས་[7]ཉིད་བཞིན་དུ་རྒྱལ་

---

1 'རྣལ་འབྱོར་ཞིག'-ཅེས་པ་འདི་ སློབ་དཔོན་འཇམ་དཔལ་བཤེས་གཉེན་'' ཡིན་པར་པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་ལས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལས། འཇམ་དཔལ་བཤེས་གཉེན་གྱིས་འཇམ་དཔལ་གྱི་ཆོས་དེའི་སྣོད་དུ་གྱུར་པ་སུ་འདུག་གཟིགས་པས། ནོར་བུའི་གླིང་ནས (དེ་) རྙེད་དེ། འཇམ་དཔལ་ཞི་ཁྲོའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར་བའི་མཚན་ "སྙིག་པའི་རྡོ་རྗེ།" / ཞེས་སོགས་བྱུང་། པད་ཆོས་ 'ཤོག ༦༧ (ཀ་ཁ་)

2 "ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཅིག"-སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣/བ. 14.

3 'འཁྱམ་པ་ - པེ་ཅི ཤོག -༣, གོང་, 175 Vol 87

4 'ཡུས་རང་ཉོན་མོངས།' -པེ་ཅི ཤོག -༣, དེ་ཉིད།

5 'མཚོངས་ཀྱང'' -སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣ - དེ་ཉིད།

6 'གདམ་ངག་ཡོད' -པེ་ཅི ཤོག - ༣, 14.

7) 'དངོས་ཀྱི་ཉིད་བཞིན'' - པེ་ཅི, ཤོག་དེ་ཉིད།

ཁམས་འཁྲིམ་པར་ནི་མི་ནུས་མོད།། འོན་ཀྱང་རང་གི་རྒྱལ་སར་སྔན་ལ་འདུག་ནས་[2]སྒོམ་པར་ནུས་ན། དངོས་ལ་ཉིད་ཀྱི་གདམས་ངག་ཅིག་ཞུ། ཞུས་ནས་ཕྱག་ཕྱས་པས།† སློབ་དཔོན་གྱིས་གནང་སྟེ། ཀྱཻའི་རྡོ་རྗེའི་དབང་བསྐུར། གདམས་ངག་བྱིན་[3]ནས་དྲན་པ་གཅིག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་བསྒོམ་དུ་བཅུག་གོ །

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་རང་ཉིད་ཀྱི་སེངྒེའི་ཁྲི་ལ་ཟ་འོག་གིས་སྤྲས་[4]པའི་སྔན་ནང་ཚངས་ཅན་དང་། སྚས་[5]ལ་སོགས་པའི་སྟེང་དུ་བཙུན་མོ་དང་བློན་པོའི་ཚོགས་དང་། རོལ་མོའི་བྲེ་བྲག་སྣ་ཚོགས་པས་བསྐོར་ནས་བསྒོམས་པས་མཚན་ཡང་ལོངས་སྤྱོད་པའམ། སྐེག་པ་ལ་སོགས་པས་ལྦི་ལྦ་པ་ཞེས་གྲགས་སོ།།

གདམས་ངག་དངོས་ནི་ཕྱག་གཡས་པའི་སོར་གདུབ་ལ་མ་ཡེངས་པར་[6]བསྒོམ་པའོ། །དེ་མི་འགྱུར་བར་འདུག་བྱས་པས། དེའི་ནང་དུ་དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་ལྷ་ཚོགས་བསྒོམ་པའི་གདམས་ངག་བྱིན་པ་དང་། དེ་ཡང་མི་འགྱུར་བར་འདུག་གོ་ཟེར་ (བ) ན། བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་ཏུ་བསྒོམས་པས་རྟོགས་པ་

1 'མི་ནུས།' - པེ་ཅི - ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 'སྒོམས་པར་ནུས་ན། - པེ་ཅི - ཤོག་ དེ་ཉིད།

† 'གདམ་ངག་ཅིག་ཞུ, ཞུས་ནས་འོངས་པས།' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག་ ༣/བ 14.

3 'བྱིན་ནས - པེ་ཅི ཤོག་ - ༣, འོག, དེ་ཉིད།

4 'ཟ་འོག་ལ་སོགས་པའི་སྔན' - པེ་ཅི་ - ཤོག་ དེ་ཉིད།

5 'ཊས་ལ་སོགས་པ' - པེ་ཅི - ཤོག་དེ་ཉིད།

6 'བར་སྒོམ་པའོ' - པེ་ཅི་ ཤོག་དེ་ཉིད།

རང་ཤུགས་སུ་ཤར་ནས་[1]ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དུ་མ་དང་ལྡན་ནོ།།

དེས་ན་བླ་མའི་གདམས་[2]ངག རང་གི་བརྩོན་པ། སྔ་མའི་ལས་འཕྲོ་དང་གསུམ་འཛོམས་ན་འདོད་ཡོན་མ་སྤངས་ཀྱང་གྲོལ་ལོ།།.

དེས་ཀྱང་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཛད་ལ། མིང་དུ་‘ལཱི་ལ་པཱ’ ཞེས་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ལཱི་ལཱ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

1 ‘ཤར་པས’ -སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣/ན. 14
2 ‘གདམ་ངག’ -པེ་ཅི -ཤོག དེ་ཉིད།

༣) གུ་རུ་ཕྲི་[1]རྟུ་པ།

གུ་རུ་ཕྲི་རྟུ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཤར་ཕྱོགས་རྡ་ཊྚ་དེབ་པ་ལའི་[2]ཡུལ་ཏྲི་པུ་རར་[3]སྐུ་འཁྲུངས[4]། སོམ་པུ་རི་[5]ཞེས་བྱ་བའི་གཙུག་ལག་ཁང་དགེ་འདུན་སྡེ་སྟོང་གི་སྐུ་འཚོ་[6]ཡོད་པའི་ཆོས་འཁོར་ཆེན་པོ་ཅིག་[7]ཡོད་པ་ལ[8]། ཕྲི་རྟུ་པ་རྗེ་ཉེན་དགེ་སློང་ཡིན་ཡང་། དབང་བསྐུར་ཞུས་ནས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་བཟླས་པ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་འབུམ་ཕྲག་བརྒྱ་ལན་གཉིས་བཟླས་པས། རྨི་ལམ་གྱི་རྟགས་ཙམ་ཡང་མ་བྱུང་བས། ཐུགས་མུག་སྐྱེ་འཕྲིང་བ་ཆབ་[9]ཁང་དུ་

---

1 བོད་འགྱུར་སྔ་དཔར་སྔི་དཔར་པེ་ཅིང་དཔར་མ་རྣམས་སུ་ 'བིརུཔ'' ཞེས་བྱུང་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་ 'ཝི' ཞེས་པ་ཡོད་ལ། དེའི་ཚབ་བོད་ཡིག་ 'ཕ' ཡིན་གྱི་ 'བ' མིན་ནོ། །ཕྱིར་བོད་སྐད་ལ་ཚིག་བར་གྱི་ 'བ' ལ་ 'ཕ' སྒྲ་ཐོབ་ཀྱང་། སྐབས་འདིར་ 'ཕ' ནི་ཡིག་དོད་ཡིན་གྱི་ཚིག་དོད་མིན་ནོ།། དེས་ན་ 'ཕ' ཉིད་ལེགས་ཀྱི། 'བ' འཐད་པར་མི་སེམས་སོ།།

2 པེ་ཅི་ཤོག་ ༣ འོག་) སྣྲུབ་ཀུན་ཤོག་ ༣/ན.དཔེ་གཉིས་ཏེ, དཔེ་གསུམ་དུ་མཐུན་པར,- 'རྡཛདེཔཕལ'' ཞེས་འདུག་ཀྱང་། དོན་ནི་ 'རྡཛྙདེཔ་པཱལ'' ཞེས་བྱ་བ་ཉིད་དུ་སྣང་བས་ཡི་གེ་ནོར་བ་ཡིན་ནམ་དཔྱད།།

3 སྣྲུབ་ཀུན་ཤོག་ ༣/ན. 14 པ་ཅི་ཤོག་༣, འོག་175 Vol 87 -གཉིས་ཀར -'ཏྲིའུ་རར'' ཞེས་འདུག་ཀྱང་། ཡིག་ནོར་ཡིན་ལ། དོན་གནས་ 'ཏྲི་པུ་རར'' ཞེས་པའོ།།

4 གོང་སྨོས་དཔེ་གཉིས་ཀར་-'འཁྲུངས་པ', ཞེས་བྱུང་། ཤོག, སོགས་དེ་ཉིད།

5 ''སོ་མ་བཟླ་བའི་གྲོང་, པུརི་ཞེས་བྱ་བའི་'' པེ་ཅི་ཤོག་ ༣ འོག་ དེ་ཉིད།

6 'སྐུ་མཚོ''-པེ་ཅི་, ཤོག་ ༣, འོག་ དེ་ཉིད།

7 'ཆེན་མོ་གཅིག' -པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣ གོང་, དེ་ཉིད།

8 'ཡོད་པ་ལས'' - སྣྲུབ་ཀུན་, ཤོག་ ༣/ན. 15 14 -དོན་ནི་, 'ཡོད་པ་དེར''-ཞེས་པའོ།།

9 'འཆག་ཁང''-པེ་ཅི་, ཤོག་ ༣, འོག་ དེ་ཉིད།

བསྐྱུར་[1]ནས་ཅི་བདེར་བཞུཊ[2]། དགོང་[3]ཁ་མཆོད་པའི་དུས་སུ་འཕྲིང་བ་མེད་པའི་རྟོག་པ་བྱུང་བ་དང་། ཌཱ་ཀཱིམས་[4]འཕྲིང་བ་ལག་པར་བྱིན་ནས་གསུང་གི་སྣང་བ་འདི་ལྟར་བྱིན་ཏོ། †

"རིགས་ཀྱི་བུ་ངས་[5]བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཀྱི་ཁྱོད་ཡི་མ་མུག་པར་རྣམ་རྟོག་དང་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་སྤོངས་ལ་སྒྲུབ་པ་གྱིས་ཤིག།"

སེམས་ཉིད་གཉུག་མར་གནས་པ་དེ།།
རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་ངོ་བོ་ཡིན།།
རང་ལ་ཡོད་ཀྱང་གཞན་ལ་རེ།།
ཤིན་ཏུ་མི་མཁས་བྱིས་པའི་ངང་།།
སེམས་ཉིད་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་དེ།།
རྣམ་པར་རྟོག་པས་མ་གོས་པར།།

1 'སྐྱུར་ནས་'-པེ་ཅི་,-དེ་ཉིད།
2 'བཞུགས་པའི།' -པེ་ཅི་, ཞོལ་ - དེ་ཉིད, སྒྲུབ་ཀུན་, ༣/ན. -14
3 'དགོངས་ཁ' པེ་ཅི་...དེ་ཉིད།
4 'ཌཱ་ཀིམས་'- སྒྲུབ་ཀུན་-ཞོལ་ དེ་ཉིད།
† བྱིན་སྟེ། པེ་ཅི་ ཞོལ་ དེ་ཉིད།
5 ཀ-"རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཡི་མ་མུག་པར། ངས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཀྱིས།" - སྒྲུབ་ཀུན་ཞོལ་, དེ་ཉིད། ཁ-'རིཊ་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཡི་མ་མུག་པ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཀྱི།' - པེ་ཅི་ ཞོལ་, ༥ གོང་། དེ་ཉིད།

ཚོག་ཤེས་སྒྲུབ་[1]པ་དམ་པ་ཡིན།། ༣ ཞེས་ཟེར་རོ།།

དེ་ནས་ཡང་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྒྲུབས་པས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་[2]ནས་གཡོག་པོས་ཤ་དང་ཆང་ཉོས་ཤིང་དྲངས། དེ་ནས་གཙུག་ལག་ཁང་གི་ཕྱག་རོན་ཡོད་པ་བསད་ནས་ཤ་བྱས་ཏེ་ཟོས་པ་[3]དང་། ཕྱག་རོན་རྣམས་ཟད་ནས། དགེ་འདུན་གྱིས་ངེད་ཀྱི་མཆོད་གནས་སུས་ཟོས་བྱས་པས། དེ་ན་ཡོད་པའི་བཙུན་པ་ཀུན་གྱིས་ངེད་ཀྱིས་མ་ཟོས་ཟེར[4]། བྲང་ཁང་ཀུན་བལྟས་[5]པས་[6]ཕྱི་རྦུ་པའི་བྲང་ཁང་བལྟར་[7]བཏང་བ་དང་། སྐར་ཁུང་ནས་བལྟས་པས། དེ་ཆང་འཐུང་ཞིང་ཕྱག་རོན་གྱི་ཤ་ཟ་བ་མཐོང་ནས། དགེ་འདུན་གྱིས་གཉེ་བརྡངས་ཏེ་གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱས་པ་དང་། ཕྱི་རྦུ་པས་ཆོས་གོས་དང་ལྷུང་བཟེད་སྐུ་གཟུགས་ཀྱི་སྤྱན་སྔར་ཕུལ། ཕྱག་བྱས་ཏེ་སློ་ལ་མ་[8]ཕྱིན་པ་དང་། གཙུག་ལག་ཁང་དེའི་རྩ་ན་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ།

---

1 ‘བསྒྲུབ་པ་’ པེ་ཅི་ ཤོག ’དེ་ཉིད།

2 ‘བསྒྲུབས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས།’ - པེ་ཅི་ - ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘བསད་ནས་ཟོས་པ་དང་།’ - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

4 ཀ-དེ་རྣམས་ཀུན་གྱིས་ ངེད་ཀྱིས་མ་ཟོས་ཟེར། -སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣/བ. ཁ- བཙུན་པ་ཀུན་གྱིས་ མ་ཟོས་ཟེར་པ་དང་། པེ་ཅི་, ཤོག ༨, དེ་ཉིད།

5 ‘ལྟས’ པེ་ཅི། དེ་ཉིད།

6 ‘ནས་’-པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

7 ‘ལྟར་བཏང་’ པེ་ཅི།- དེ་ཉིད།

8 ‘ཕྱག་བྱས་ཏེ་ཕྱིན་’ ། པེ་ཅི་ -དེ་ཉིད།

དགེ་སློང་གཅིག་གིས་ཁྱོད་ལམ་གང་ལ་འགྲོ་བྱས་པས[1]། ང་ཁྱེད་ཀྱིས་བསྐྲད་[2]པ་ལ་ལམ་ལ་བཟའ་གཏད་ཅི་ཡོད། གསུངས་ནས་ཆུ་དེའི་ཐོག་ན་ཕར་པདྨའི་འདབ་མ་ལ་ཞབས་བཞག་ནས་པདྨའི་མེ་ཏོག་ཆུར་མ་ནུབ་པར་བཅད་དེ་[3] སངས་རྒྱས་ལ་མཆོད་པ་བྱས་ནས་[4]ཕ་མཐར་སོང་ངོ་།།†

སོམ་པུརིའི་མི་ཀུན་འཁྱོད་པ་སྐྱེད་(སྐྱེས་)དེ།[5] ཞབས་ལ་འདུས་ཏེ་ཕྱག་བྱས་ནས། ཁྱེད་ཀྱིས་ཕྱག་རོན་ཅི་ལ་བསད་བྱས་པས། ངས་མ་བསད་པ་ཡོད་ཟེར། གཡོག་པོས་ཕྱག་རོན་གྱི་གཞོག་པའི་དུམ་བུ་རྣམས་ཁྱེར་འོངས་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་སེ་གོལ་ཅིག་ཏོག་[6]པར་མཛད་པས་ (གཞོག་དུམ་དེ་

---

1 ‘བྱས་པ་ལ་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣/བ. 6 14 པེ་ཅི་ - ཤོག ༩, དེ་ཉིད།

2 ‘བཀྲད་པ་ལ་’ - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘སྤྱད་དེ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད་། པེ་ཅི་ - ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘བྱས་ཏེ’ སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག - དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག, དེ་ཉིད།

† ཚིག་འདི་དག་རྒྱ་སྐད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལ་འགྲིག་ཀྱང་། བོད་སྐད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལ་ལྟོས་པའི་གོ་རིམ་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས –“ཕྱག་བྱས་ཏེ་སློལ་ (མ) ཕྱིན་པ་དང་། དགེ་སློང་གཅིག་གིས་ཁྱོད་ལམ་གང་ལ་འགྲོ་བྱས་པ་ལ། ང་ཁྱེད་ཀྱིས་བསྐྲད་པ་ལ་ལམ་བཟའ་གཏད་ཅི་ཡོད། གསུངས་ནས་གཙུག་ལག་ཁང་དེའི་རྩ་ན་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ་ཆུ་དེའི་ཐོག་ན་ཕར་པདྨའི་འདབ་མ་ལ་ཞབས་བཞག་ནས་ ཆུར་མ་ནུབ་བར་པདྨའི་མེ་ཏོག་བཅད་དེ་ སངས་རྒྱས་ལ་མཆོད་པ་བྱས་ནས་ ཕ་མཐར་སོང་ངོ་།།” ཞེས་འགྱུར་ན་ལེགས།

5 ‘ནས’ སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག - དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

6 ‘སེ་གོལ་ཅིག་མཛད་’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣ བ 6 14.

དག) ཕུག་རོན་ཉིད་དུ་སོང་ནས། དེ་ཡང་སྤྲེར་བས་ཀྱང་ཆེ་བ་དང་བཟང་བར་བྱས་ཏེ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་ནས་སོང་བ་ཀུན་གྱིས་མཐོང་ངོ་།།

དེ་ནས་ཨི་ནྡྲ་པས་དགེ་སློང་གི་རྟགས་བསྒྱུར་ནས་རྣལ་འབྱོར་པའི་སྤྱོད་པ་མཛད་དེ། གཏྭའི་འགྲམ་དུ་ཕྱིན་ནས་གཏྭའི་ལྷ་མོ་ལ་བཟའ་བཏུང་བླངས་[1]པས་མ་སྦྱིར་བས། སློབ་དཔོན་ཁྲིས་ནས་ཆུ་ཡར་མར་དུ་ཐད་ཀྱིས་བཅད་ནས་ཕ་མཐར་གཤེགས་སོ།།

དེ་ནས་ 'ཀནསཏ' འི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་ཆང་འཚོང་མ་ལས་ཆང་ཉོས་པ་དང་། དེས་ཆང་ཕོར་བ་གང་དང་འབྲས་སྡེར་མ་གང་བྱིན་[2]པ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་[3]དོ།། དེ་ནས་ཞག་ཕྱེད་གསུམ་གྱི་བར་དུ་ཉི་མ་འགྲོར་མ་འདོད་པ་དང་[4]།(ཡུལ་)དེའི་རྒྱལ་པོ་ཏ་ལས་ནས། འདི་འདྲ་བ་སུའི་རྫུ་འཕྲུལ་ཡིན་ཞེས་ཡོངས་སུ་བསྒྲགས[5]པར་བྱས་པ་དང་། ཉི་མའི་ལྷ་མོས་རྒྱལ་པོའི་རྨི་ལམ་དུ་–རྣལ་འབྱོར་པ་ཅིག་གིས་བདག་ཆང་འཚོང་མ་ལ་གཏའ་མར་[6]བཅུག་ནས་ཡོད་ཅེས་ལུང་བསྟན་པས། རྒྱལ་པོ་དང་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཀྱིས་ཆང་རིན་བརྩིས་པས་བྱེ་བར་སོང་བ་སོ་སོར་བཅལ་ནས་ཨི་ནྡྲ་པ་དེ་ཉིད་དུ་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ།།

---

1 'བ་སླངས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣ བ

2 'སྦྱིན་པ་ལ' པེ་ཅི་ ཤོང་ ༥, འོག 176 Vol 87.

3 'ལོངས་སྤྱོད་དོ།།' པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

4 'མ་འདོད་པས།' ཤོག ༥/ན 7 14.

5 'སྒྲགས་པ་བྱས་པ་དང་།' - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

6 'གདམ་ར་བཅུག' - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

དེ་ནས་‘ཨིནྡྲ་ཞེས་བྱ་[1]བའི་མུ་སྟེགས་ཀྱི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། དེའི་ཡུལ་ན་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་སྐུ་བརྙན་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ཞིག་འདུག་པ་ (དེ) ལ་ཕྱག་གྱིས་ཟེར་བ་ལ།–ང་ཕོ་བོ་ཡིན་པས་ནུ་བོ་ལ་ཕྱག་བྱེད་[2]པའི་ལུགས་མེད་བྱས་པས། དེའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་གྱིས་འོ་ན་ཁྱོད་གསོད་པ་ཡིན་ཞེས་ཟེར་བ་དང་[3]། སློབ་དཔོན་ན་རེ། ངས་འདི་ལ་ཕྱག་བྱས་ན་སྡིག་པ་འོང་བས་ཕྱག་མི་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་དེའི་སྡིག་པ་ང་ལ་ཤོག་ཅིག་ཟེར་བ་དང་[4]། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱག་ཐལ་མོ་བྱས་པས། མཧཱ་དེཝའི་རྟེན་[5]དེ། ཕྱེད་ཚལ་དུ་གས་པ་དང་། བར་སྣང་ནས་སྒྲ་ཞིག་བྱུང་ནས། སློབ་དཔོན[6]། ང་ནི་དམ་བཅས་པ་བཞིན་ཉན་ནོ་ཟེར། (སློབ་དཔོན་གྱིས་) འོ་ན་མནའ་བོར་བྱས་པས། གནས་བོར་བས་ལྷགས་པ་ཡང་སླར་འགྱུར་རོ[7]།། དེ་ནས་མཧཱ་དེཝའི་རྟེན་[8]གྱི་མཆོད་པའི་ཡོ་བྱད་རྣམས་སློབ་དཔོན་ལ་ཕུལ་ནས།

---

1 ‘ཨིནྡྲ་བྱ་བའི་’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 ‘ཕྱག་འཚལ་བའི་’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད་, པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

3 ‘འོ་ན་ཁྱོད་གསོད་པ་ཡིན་ཞེས་དེའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོཀ་པ་ཀུན་ཟེར་བ་དང་།’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག - ‿/ན པེ་ཅི་, ཤོག་ ‿, འོག་ དེ་ཉིད།

4 ‘ཟེར་ནས’ - པེ་ཅི་, ཤོག་ དེ་ཉིད།

5 ‘རྟེན་དེ’ - སྣྲུབ་ཀུན་ཤོག་ ‿/ན། 7 14

6 ‘སློབ་དཔོན’ ཅེས་པའི་ཚིག་ པེ་ཅི་ན་མེད་ ཤོག་ ‿ འོག་ 176 Vol 87

7 ‘སླར་འགྱུར།’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ‿/ན, དེ་ཉིད།

8 ‘རྟེན’ - སྣྲུབ་ཀུན་ - དེ་ཉིད།

དེ་ནང་པ་སངས་རྒྱས་པ་གཞན་གྱི་འཚོ་བ་བྱས་ནས་ད་དུང་ཡང་[1]ཡོད་ཟེར་རོ།། དེ་ནས་སློབ་དཔོན་[2]རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་དེཝཱི་ཀོ་ཊ་ར་[3]བྱོན[4]། ཡུལ་དེའི་མི་ཐམས་ཅད་ཕྱྭ་མེན་མར་སོང་ནས། ཕྱྭ་མེན་མ་གཅིག (གྲོང་ཁྱེར་གྱི་ཕྱི་རོལ་) ལམ་ཁར་བསྡད་ནས་ (ལམ་དེ་ནས་ཡོང་ཚད་ལ་) ཕྱྭ་མེན་གྱི་སྔགས་ཀྱིས་བཏབ་[5]ཀྱིན་གནོང་བ་ཆོས་ལུགས་ཡིན་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་སྔོན་ལ་བྱོན་ནས་གཙུག་ལག་ཁང་ཞིག་ཏུ་ཉལ་བར་བྱས་ནས་འདུག་པ་དང་། བྲམ་ཟེའི་ཕྲུ་གུ་ཞིག་ཕྱི་ནས་ཡོང་བ་ལ་སྔགས་བཏབ་ནས་བཏང་བས། གྲོང་དེར་ཟས་ནི་རྙེད་ལ་ཉལ་ས་ནི་མ་རྙེད་པ་དང་། དེ་[6]ནང་པ་སངས་རྒྱས་པ་ (ཞིག་) དང་འཕྲད་ནས། དེས་བྲམ་ཟེའི་ཕྲུ་གུ་ལ་སླས་པ། ཡུལ་འདི་ན་ཐམས་ཅད་ཕྱྭ་མེན་མར་སོང་ནས་མི་མེད་ཅིང་། དེ་ཀུན་གྱིས་བར་ཆད་བྱེད་པ་ཡིན་པས་གཙུག་ལག་ཁང་ཕ་གིར་སོང་ལ་འདུག་ཟེར་ནས་དེར་ཕྱིན་པ་དང་། (དེར) སློབ་དཔོན་ཕྱི་རུ[7]པ་དང་མཇལ་ཏེ་དེས་བྲམ་ཟེ་དེ་ལ་སྔགས་དང་བྱིན་རླབས་བྱས་ཏེ་བོར།

---

1 ‘ད་དུང་ཡོད་’ -སྒྲུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད།

2 ‘སློབ་དཔོན་གྱིས །’ སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག་ དེ་ཉིད། ‘སློབ་དཔོན་གྱི། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༨ དེ་ཉིད།

3 ‘དེཝི་ལྷ་མོའི་མཁར་, ཀོ་ཊི་ར’ - པེ་ཅི་ - ཤོག་ དེ་ཉིད།

4 ‘བྱོན་པས།’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༤ གོང་ དེ་ཉིད།

5 ‘སྣབ་ཀྱིན’ - པེ་ཅི་, ཤོག་ ༤ - དེ་ཉིད།

6 ‘དེར་ནང་པ་’ - པེ་ཅི། ཤོག་ དེ་ཉིད།

7 ‘བི་རུ་པས་བྲམ་ཟེ་དེ་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ པེ་ཅི། པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

(མཚན་ལ) ལྷ་མིན་མ་ཀུན་འཚོགས་ནས་མཆོད་པའི་ཡོ་བྱད་ཅི་ཡོད། ཟེར་བ་ལ། (ཐམས་ཅད་ཀྱིས) ཤ་སྣའི་ཚོགས་གཞན་ཀུན་ཡོད་དེ་ཤ་ཆེན་མ་རྙེད་ཟེར་བ་དང་། དེའི་ནང་ནས་གཅིག་ན་རེ། ངས་ཤ་ཆེན་གཉིས་ཁུག་ནས་ཡོད་ཟེར་བ་ལ། (གཙོ་མོས་) ཁྱེར་ལ་ཤོག་ཟེར་ནས་[1] ལེན་པར་བརྩམས་པ་ན། བྲམ་ཟེ་ལྷུ་གུ་ལ་(ལྷི་རྡུ་པས) བྱིན་རླབས་མཛད་(ཡོད་) པས་དེས་འཁོར་མ་ནུས། ལེན་པར་ཡང་ཡང་བཏང་བས་ (མཐར) ལྷི་རྡུ་པ་ཤིང་མཾགལ་[2]ཞིག་གི་སྟེང་ན་ཡོད་པ་ (མཐོང་ནས་) ཤིང་དང་བཅས་པ་འཁྱེར་ནས་འོངས་པ་ལ། ལྷ་མིན་ཀུན་གྱིས་ཕྱག་ཚང་[3]བྱེད་དུ་བྱུང་བ་དང་། ལྷི་རྡུ་པས་ཁོ་པའི་ཆང་ཀུན་འཐུང་། ལྷ་མིན་ཀུན་[4]གྱིས་ལྷི་རྡུ་པ་བསད་པར་བྱ་སྙམ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གད་རྒྱངས་ཀྱི་སྒྲ་བསྒྲགས་[5]པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཁྲོ་བོའི་གད་མོ་བཅུ་གཉིས་བགད་[6]པས་ལྷ་མིན་མ་ཐམས་ཅད་བརྒྱལ་བར་བྱས། ཕྱིས་ལྷ་[7]མིན་ཐམས་ཅད་དམ་ལ་བཏགས་ནས་ཕྱིན་ཆད་སྐྱབས་འགྲོ་བྱེད་པ་དང་། ང་ལ་དད་པའི་སེམས་ཅན་ལ་གནོད་

---

1 ‘ཟེར་པས་ ’ -པེ་ཅི་, | ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 ‘ཤིང་འགལ’ པེ་ཅི།། ཤོག་ ༥, གོང་། 176 Vol 87.

3 ‘ཕྱག་ཚང་’ = ཐབ་གཡོག ཞེས་པ་སྣེ་བརྡ་སྙིང་།

4 ‘ཐམས་ཅད་ཀྱིས་’ སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༨/བ་ 8 14.

5 ‘སྒྲ་སྒྲགས་པ་ |’ -པེ་ཅི་ ཤོག་ ༥ གོང 176 Vol 87.

6 ‘གད་པས་’ -པེ་ཅི་, ཤོག་ དེ་ཉིད།

7 ‘ཕྱིས་མིན་ཐམས་ཅད་’ -སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༨/བ་ 8 14.

འཆི་[1]མ་བྱེད་པར་འདུག་ཅིག སྐྱབས་འགྲོ་དང་། སེམས་བསྐྱེད་མི་བྱེད་པའི་རིགས་ཀྱི་[2]ལུས་ལ་མི་གནོད་པའི་ཁྲག་ཁྱེར་བ་རེ་ཙམ་འཐུངས་ཤིག བརྒྱ་ལ་དམ་ལས་འདས་ན་འཁོར་ལོ་འདིས་ཁེ་ཆོད་ཅིག བྱང་གི་གནོད་སྦྱིན་འདིས་ཁྲག་འཐུངས་ཤིག་[3]གསུངས།

ད་ལྟ་ཡང་[4]གནོད་སྦྱིན་དང་། འཁོར་ལོའི་གཟུགས་ནམ་མཁའ་ལ་ཡོད་དོ།། སྤྱང་[5]མའི་འཁོར་དུ་བྱས་ནས་དམ་ལ་བཏགས་ཏེ་སློབ་དཔོན་གཞན་དུ་གཤེགས་སོ། །

སླར་ཡང་ཕྱིར་ལོག་ནས་དེཝཱི་ཀོ་ཊ་ར་བྱོན་པ་དང་། ལམ་ཁར་མནྟྲེཥ་དང་། ལྷ་མོ་ཨུ་མ་གཉིས་ཀྱིས་སྤྲུལ་པའི་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ཕྱེད་དང་ལྔ་ལེགས་པར་སྤྲུལ་ནས་ཁྲིརྟྭཔ་ལ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལྷའི་གནས་ཐམས་ཅད་ནས་ཞལ་ཟས་བླངས་ཏེ་མཆོད་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་སོ།།

དེ་ནས་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་པ།

སོ་མ་པུ་རིའི་གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་དུ།།
རབ་བྱུང་བསྙེན་རྫོགས་འདུལ་ཁྲིམས་ལེགས་པར་བསྲུངས།།

---

1 ‘གནོད་པ་མ་བྱེད’ -སྣར་ཐང་ ཤོག དེ་ཉིད།
2 ‘སེམས་བསྐྱེད་མི་བྱེད་པའི་ལུས་ལ་’ -པེ་ཅི་ - ཤོག ཕ གོང་ དེ་ཉིད།
3 ‘འཐུངས་ཞིག’ -པེ་ཅི་ - ཤོག ཕ འོག དེ་ཉིད།
4 འདིར་ - ‘ད་ལྟ’ ཞེས་པ་སློ་མ་མི་འཛིགས་སྦྱིན་པའི་དཔལ་གྱི་དུས་དེའི་ཚེ་ཡང་ ཞེས་པའོ།།
5 ‘བསྲུང་མའི་འཁོར ’ པེ་ཅི ཤོག ཕ གོང་ དེ་ཉིད།

སྔ་མའི་ལས་འབྲེལ་དབང་གིས་སྨྲོལ་པ་ཡི།།
དབང་བསྐུར་བྱིན་རླབས་གདམས་པ་ཡང་དག་གནང་[1]།། ༡

རྣམ་པར་རྟོག་པས་ལོ་ནི་བཅུ་གཉིས་སུ།།
བསྒྲུབས་[2]པས་རྨི་ལྟས་ཙམ་ཡང་མ་བྱུང་ནས།།
ངལ་བའི་སེམས་ཀྱིས་[3]གཤེ་ཞིང་ཕྲེང་བ་བསྐུར།།
དེ་ནས་མཁའ་འགྲོས་གསུང་གི་གནང་བ་བྱིན[4]།། ༢

དེ་ཡི་རྐྱེན་གྱིས་ཁམས་ཀྱི་ནུས་པ་བརྟས།།
འཁོར་བའི་མཚན་ཉིད་ཡང་དག་ལེགས་རྟོགས་ཏེ།།
རྟོག་མེད་སྤྱོད་པ་བདག་གིས་སྤྱད་བྱས་ནས།།
ཕལ་ཆེན་སྐྱེ་པའི་དགེ་འདུན་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་།། ༣

འཕྲུལ་བཅས་དག་ཏུ་རྟོགས་ནས་གནས་ནས་ཕྱུང་།།
དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྟོག་[5]པ་འཇོམས་སླད་དུ།།

1 'ཡང་དག་སྣང་'' - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།
2 'སྒྲུབས་པས' - པེ་ཅི་, - ཤོག ༥ འོག དེ་ཉིད།
3 'ཀྱི་གཤེ' 'པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
4 'བྱིན' པེ་ཅི། ཤོག དེ་ཉིད།
5 'འདིར་རྟོག་པ'' ཞེས་པ གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་ལོག་རྟོག་ཅེས་པའོ།།
+ བོད་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པ། ཏཱ་མརྦི་པ་ ཞེས་བྱུང་ཡང་། རྒྱ་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པ་ ཏཱ་ཐེ་པཱ ཞེས་འབྱུང་།

ཆུ་ལ་བྱིང་བ་མེད་པར་བསམ་གཏན་བྱས།།
གཏྭ་བྱིན་ལ་བསྒྱུར་ནས་སྣ་ཚོགས་ཟོས།། ༤

ཉི་མ་གཏེ་བར་བཅུག་ནས་འདོད་ཡོན་སྤྱད།།
ཕྱི་པའི་ལྷ་རྟེན་བཀས་ནས་ང་རྒྱལ་བཅག།
དེ་ལྭི་ཀོ་ཊ་ར་ཕྲ་མེན་ཚོགས་རྣམས་བཏུལ།།
མཏྭ་དེཝས་ཡོན་ཏན་མངོན་ཕྱུང་ནས།། ༥

གྲོང་ཁྱེར་སྤྲུལ་ནས་བདག་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱས།།
དེ་ཙམ་སྤྱོད་པ་བདག་གི་མ་སྤྱད་ན།།
མཚན་བཅས་ཚོས་ལ་མོས་པར་ག་ལ་འགྱུར།། ༦ ཞེས་གསུངས་ཏེ།
ལོ་བདུན་བརྒྱ་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ག་རུ་ལཱིརྡུ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༤) ཏོམ་བྷི་པཱ།†

ག་རུ་ཏོམ་བྷི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་མ་གྷ་དྷ་ (མགྡྷ) རིགས་རྒྱལ་རིགས། དངོས་གྲུབ་དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེ་ལས་བརྙེས་སོ།།

དེ་ཡང་བླ་མ་ནག་པོ་སྤྱོད་པས་[1]དབང་བསྐུར། གདམས་ངག་གནང་ནས་དོན་ཉམས་སུ་བླངས་པ་དང་། འབངས་རྣམས་ལ་བུ་གཅིག་པའི་བསམ་པ་བཞིན་

1 "བླ་མ་ལཱི་རུ་པས་དབང་བསྐུར། གདམ་ངག་གནང་" - པེ་ཅི་ - ཤོག ༦ གོང་176. Vol 87. र० पुरा० नि०- 'लुईपा के शिष्य' - द्र०- पृ० १२०.

དུ་དགོངས་པས། མི་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱལ་པོ་ཆོས་ཀྱི་སྒོར་ཞུགས་པ་ནི་མ་ཆོར། རང་གཞན་གྱིས་འབངས་རྣམས་ལ་བྱམས་པར་འདུག་པས། རྒྱལ་པོ་འདི་ནི་ཆོས་པ་འདྲ་བ་ཞིག་འདུག་གོ་ཞེས་འབངས་རྣམས་[1]མཐུན་པར་སྨྲའོ།།

དེའི་དུས་རྒྱལ་པོས་བློན་པོ་ལ་སྨྲས་པ། འོ་སྐོལ་གྱི་ཡུལ་འདིར་ཀུན་[2]མོ་དང་འཇིགས་པས་མི་ཀུན་ལ་འཕྲོག་འཇོམས་བྱེད་པ་དང་། རང་གི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ལས་འཕྲོས་དབུལ་བ་དང་། ཕོངས་པ་[3]ཤིན་དུ་མང་བས། འདི་ཀུན་འཇིཊ་པ་དང་། ཕོངས་པ་ལས་བསྐྱབས་པའི་ཕྱིར་འཁོར་(མཁར་)[4]བའི་ཙོང་ཆེན་པོ་བརྡུངས་ལ་ཤིང་གི་སྒོང་པོ་ཆེན་པོ་ལ་ཐོཊ་ལ་ཞོག་ཅིག གཏོད་པ་དང་ཕོངས་[5]པ་མཐོང་ན་ཙོང་དེ་རྡུངས་ཤིག དེ་མ་ཡིན་པར་མ་རྡུངས་[6]ཤིག ཅེས་རྒྱལ་པོས་བློན་པོ་ལ་སྨྲས་ན། བློན་པོས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ། མ་གྷར་[7]ཕོངས་པ་དང་འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་རྒྱུན་ཆད་པར་བྱས་སོ།།

དུས་རེ་ཞིག་ན་རྒྱལ་སར་རིཊ་ངན་གྱི་གླུ་མཁན་ཚན་ཅིག་འོངས་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་གླུ་དང་རོལ་མོ་འབུལ་ཅིང་འདུག་པ་དང་། གླུ་མཁན་དེ་ལ་བུ་མོ་

---

1 'ཐམས་ཅད་' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ཡུལ་འདི་ནི་' - སྣུབ་ཀུན་ - ཤོག ༤/བ དེ་ཉིད།

3 'འཕོངས་པ་' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'མཁར་པའི་ལྕོང་ཆེན་པོ་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༦ གོང་, དེ་ཉིད། འདི་དག །

5 'འཕོངས་པ་' པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

6 'མ་རྡུང་ཞིག་' པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

7 བོད་དཔེ་ཀུན་ལས་ - 'མགྷ་' ཞེས་འདུག་ཀྱང་, རྒྱ་དཔེ་ཀུན་ལས་ མགྷ་ - मगध ཞེས་མཐུན་པར་འདུག द्र०- रा० पुरा० नि० पृ० १२० ।

ལོ་བཅུ་གཉིས་ [1]ལོན་པ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་ཀྱིས་མ་གོས་པ་བཞིན་སྡུག་ཅིང་ མདོག་ལེགས་པ་ལྷ་ན་སྡུག་ཅིང་ཡིད་དུ་འོང་བ་པདྨ་ཅན་གྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ ཅད་ཚང་བ་[2]ཞིག་འདུག་པ་ལ། རྒྱལ་པོས་རིགས་ངན་གླུ་མཁན་དེ་ལ་གསུངས་ པ་ _ [3]གྲོད་ཀྱི་བུ་མོ་དེ་ང་ལ་བྱིན་ཅིག དེ་ན་རེ། ཉིད་མ་གཏྣའི་རྒྱལ་པོ་ གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་བརྒྱད་ལ་དབང་བྱེད་ཅིང་། རྒྱལ་པོའི་འཁོར་པས་ཁྲེལ་བ་ མེད་པའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ལགས་ན། དངོས་ཅག་རིགས་དམན་[4]ཞིང་སྐྱེ་བོའི་ ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྨད་ཅིང་སྤྱང་བར་བྱ་བ་ལགས་ན། དེ་འདྲའི་བཀའ་ སྩལ་གྱི་གནས་མ་ལགས་སོ།། ཞེས་ཞུས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་གལ་གྱིས་བཙུན་ ནས་རྒྱལ་པོས་[5]བུ་མོ་དང་མཉམ་པའི་གསེར་བགར་ནས་ཕ་མ་[6]ལ་བྱིན་ཏེ་བུ་མོ་ རྒྱལ་པོས་ཁྱེར་རོ།།

དེ་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་ཕྱུག་རྒྱུར་བསྟེན་པ་མིས་མ་ཚོར་བ་ལ་ལོ་[7] "བཅུ་གཉིས་ནས་ཚོར་ཏེ། རྒྱལ་པོས་རིགས་ངན་མ་བླངས་སོ།།" ཞེས་མ་

---

1 ‘ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོ་རྒྱུས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་ཀྱི་མ་གོས་པ་’’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

2 ‘ཚང་བ་ཅིག’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥/བ 10 14‘ཚང་བ་གཅིག’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༦ གོང་། 176 Vol 87

3 ‘དེ་ལ་སླུས་པ’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥/བ དེ་ཉིད།

4 ‘རིགས་དམན་ཅིང་’’ - སྣྲུབ་ཀུན་, ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘རྒྱལ་པོའི’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག དེ་ཉིད།

6 ‘ཕ་མ་ལ་བྱིན་སྟེ’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༦ འོག དེ་ཉིད།

7 ‘བཅུ་གཉིས་ནས་ཚོར’- པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

གནའི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བསྒྲགས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་སྲས་ལ་སོགས་པ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་གཏད་ནས་རིགས་ངན་མ་དང་གཉིས་ནགས་གསེབ།[1]དུ་བསྒྲུབས་པ་ལ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་དང་། སྲས་དང་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱལ་སྲིད་མ་ཟིན་པར་ཡུལ་ཁམས་སྟོར་བས་[2]བསོད་ནམས་འགྲིབ་པ་ལ། མི་ཀུན་གྱིས་གྲོས་བྱས་ཏེ་སྔར་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཉིད་བཅོལ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་དགོས་ཟེར་ནས། མི་འགའ་བལྟར་[3]བཏང་བས་དེའི་བཞུགས་སར་ཕྱིན་ནས་བལྟས་[4]པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ནི་ཤིང་སྡོང་གཅིག་གི་དྲུང་ན་བཞུགས[5]། བུ་མོ་ཆུ་ལེན་དུ་སོང་བ་ན་མཚོའི་ཁ་ལ་པདྨའི་འདབ་མའི་སྟེང་ན་ཆུ་ལ་མི་ནུབ་པར་ཕྱིན་ནས། ཆུ་འདོམ་བཅོ་ལྔ་ཙམ་གྱི་འོག་ནས་ཆུ་བླངས་ཏེ་རྒྱལ་པོ་ལ་དྲངས་པ་དང་། མི་དེ་ཀུན་ཅོ་མཚར་སྐྱེས་ནས་ཡུལ་དུ་ལོག་སྟེ་དེའི་གཏམ་བྱས་སོ།།[6]

(དེ་ནས་) རྒྱལ་འབངས་ཀུན་གྱིས་ (རྒྱལ་པོ) སྤྱན་འདྲེན་པར་བཏང་ནས་སྤྱན་དྲངས་པས། ནགས་ནས་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་སྟག་མོ་གྲུས་མ་ལ་ཞོན། དག་སྤྲུལ་ལ་ལྷུག་བྱས་ཏེ་འོངས་པས་མི་ཀུན་ཅོ་མཚར་སྐྱེས་ནས་ཉིད་

---

1 'ནགས་བསེབ་དུ་བསྒྲུབས་' - པེ་ཅི, ཤོག་དེ་ཉིད། 'ནགས་གསེབ་དུ་སྒྲུབ་པ' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།

2 'སྟོར་ལས'- སྒྲུབ་ཀུན' ཤོག་ དེ་ཉིད།

3 'མི་འགའ་ལྟར་'བཏང་ནས' - པེ་ཅི, ཤོག་ ༦ འོག་དེ་ཉིད།

4 'ལྟས་པ' - པེ་ཅི, ཤོག་ དེ་ཉིད།

5 'བཞུགས་པ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༨/ན.། པེ་ཅི, ཤོག་ ༦ དེ་ཉིད།

6 'གཏམ་བྱས་པ་དང་།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༦/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི - ཤོག་ ༦ འོག

ཀྱིས་རྒྱལ་སྲིད་གཟུང་[1]ན་ཟིན་པས་གཟུང་འཚལ་ཅེས་ཞུས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། ང་རིགས་ངན་ཡིན་པས་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་དུ་ག་ལ་རུང་། འོན་ཀྱང་ཕི་ཕན་ཆད་རིགས་བཟང་ངན་གྱི་རྟོག་པ་ཆད་པ་ཡིན་པས། མེར་[2]སྒྲིགས་ཤིག་དང་། དེ་ནས་སྐྱེས་པ་དང་གཟོད་བྱ་ཟེར།

(དེ)ནས་ཡུལ་མི་རྣམས་ཀྱིས་ཙནྡན་གོ་ཤཱིརྵའི་ཤིང་གིས་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་བསྲེགས[3]། ཤིང་མངས[4]ནས་ཞག་བདུན་མེ་མ་ཤི་བ་དང་། དེ་ནས་བལྟས་[5] ཙམ་ན། པདྨའི་སྡོང་པོའི་གོང་བུ་ཁ་བྱེ་བའི་ནང་ན་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་རང་བྱུང་གི་སྐུར་གྱུར་ནས་ཟིལ་པ་ཁྲོམ་མེར་དགྱེས་རྟོར་ཡབ་ཡུམ་དུ་གྱུར་པ་མཐོང་བས། མགྲྭའི་མི་ཐམས་ཅད་དད་ནས་མིང་དུ་ཡང་"སློབ་དཔོན་ཏཻ་ཅི་པ" ཞེས་གྲག་སོ།།"

དེ་ནས་རྒྱལ་པོས་བློན་པོ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྨྲས་པ། "ཁྱེད་ཅག་[6]ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ང་བཞིན་བྱེད་ནུས་ན་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད། དེ་ལྟར་[7]མི་ནུས་

1 'བཟུང་ན་ཟིན་པས' - སྣྲབ་ཀུན ཤོག ༦/ན 11 14.

2 'བསྲེག་ཞིག' - པེ་ཅི, ཤོག ༧ གོང 177 .Vol .87.

3 'བསྲེགས་པའི་ཤིང'' - སྣྲབ་ཀུན ༦ པེ་ཅི, དེ་ཉིད། -"བསྲེགས་པའི་" པེ་ཅི - ཤོག དེ་ཉིད།

4 'མང་ནས'' - སྣྲབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

5 "བལྟས་རྗེས་མཆོག་ཙམ་ན་" - པེ་ཅི, ཤོག, ༧ གོང, དེ་ཉིད།

6 'ཁྱེད་ཐམས་ཅད' - པེ་ཅི, དེ་ཉིད།།

7 'དེ་མི་ནུས་ན' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད། སྣྲབ་ཀུན, ཤོག དེ་ཉིད།

ན་མི་བྱེད་གསུངས་པས། ཐམས་ཅད་ཏ་ལས་ནས་འདི་འདྲ་བ་ག་ལ་།ནུས། ཟེར་ནས་འདུག་གོ །

སླར་ཡང་རྒྱལ་པོས་གསུངས་པ། རྒྱལ་སྲིད་ནི་མཚོག་ཆུང་ལ་ཉེས་དམིགས་ཆེ་བར་འདུག་པས་ང་ནི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་པ་ཡིན། གསུངས་ནས་དེ་ཉིད་ནས་མཁའ་སྤྱོད་ཀྱི་གནས་སུ་འགྲོ་བའི་དོན་ལ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཏོཾ་བི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

ཥ) གུ་རུ་ཤཝར་[2]པཱ།

གུ་རུ་ཤཝར་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རི་མཏྲ་ཡི་ཀྲམ་[3] ཞེས་བྱ་བའི་རི་ལ་'དཔལ་[4]ཤཝར་པཱ' ཞེས་པའི་རྔོན་པ་ཞིག་[5]ཡོད་པ་ལ། དེའི་ལས་སུ་སྲོག་ཆགས་མང་པོ་བསད་ཅིང་ཟས་སུ་ཤ་ཟ། དུས་རྟག་ཏུ་འཚོ་བའི་ཕྱིར་སེམས་

---

1 'འདི་འདྲ་བ་གར་ནུས' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༦/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ༧ གོང དེ་ཉིད།

2 [ཀ] གུ་རུ་ཤ་བ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས - སྒྲུབ་ཀུན - ཤོག ༦/ན། [ཁ] གུ་རུ་ཤཝར་འི་ལོ་རྒྱུས པེ་ཅི, ཤོག ༧ གོང 177. vol. 87. འདིར་'ཤབ་རི་པ'དང་'ཤཝརི་པཱ'རྣམས་མ་དག་པར་མངོན་ཏེ། རྒྱ་དཔེ་དང, - ཚིག་མཛོད་ཀུན་ལས་མཐུན་པར་-'ཤཝར་པཱ'-ཞེས་བྱུང་།

3 "རིམཏྲ - ནམ་གཞན་རྒྱུད་དུ - པིཀྲམ - ཞེས་བྱ" - པེ་ཅི, - ཤོག ༧ གོང དེ་ཉིད། བདེ་མཆོག་གི་དོན་དུ་འདིའི་མིང 'སེམས་ཉིད་ངལ་གསོ' = 'མན་ཡི་ཤྲམ' ཞེས་བྱུང་། བདེ་མཆོག་གི་ཤོག ༣༦-༣༧ བུ་སྟོན་གསུང ཆ) B. P. 72. Vol. 6.

4 'དཔལ་ཤབ་རི་པ' - སྒྲུབ་ཀུན - ཤོག ༧/.ན 'ཤཝར་པ' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

5 རྔོན་པ་གཅིག, པེ་ཅི - དེ་ཉིད།

ཅན་མང་པོ་ལ་གནོད་ཅིང་འཚེ་བའི་སྡིག་པ་འབའ་ཞིག་བྱེད་པ་དེ་ལ། འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱིས་གཟིགས་ནས་སྙིང་རྗེ་སྐྱེས་ཏེ། དེ་འདུལ་བའི་དོན་དུ་ཤ[1]ཝ་ར་པཱ་འདྲ་བའི་རྔོན་པ་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས་དེའི་གན་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཤ་ཝ་ར་པཱས་དྲིས་པ་ཁྱོད་སུ་ཡིན། དེས་སྨྲས་པ་ང་ཡང་ཤ་ཝ་ར་པཱ་ཡིན་[2]བྱས་པས། ཁྱོད་ཀྱི་ཡུལ་གང་ནས་ཡིན། ཟེར་བ་ལ། ཐག་རིང་པོ་ན་ཡོད་ཅེས་སྨྲས་སོ[3]།།

ཤ་ཝ་ར་པཱས་སྨྲས་པ། ཁྱོད་ཀྱི་མདའ་གཅིག་གིས་ཤ་ཝ་[4]དུ་སོད་དྲིས་པས། སྤྲུལ་པས་སྨྲས་པ། སུམ་བརྒྱ་གསོད་བྱས་པས། ཤ་ཝ་ར་པཱ་ན་རེ། འོ་ན་མདའ་དེ་འདྲ་བ་ང་ལ་ཡང་སྟོན་ཞིག་ཟེར་བ་ལ། ནངས་[5]པར་སྤྲུལ་པ་དེས་[6] ཤ་ཝ་ར་པཱ་ཁྲིད་དེ་ཐང་ཆེན་པོ་ཞིག་[7]ལ་ཕྱིན་ནས་སྤྲུལ་པའི་ཤ་ཝ་ལྔ་བརྒྱ་ཙམ་བསྟན་ནས། དེ་ཤ་ཝ་ར་པཱས་མཐོང་བ་དང་། སྤྲུལ་པ་ལ་དྲིས་པ། ཁྱོད་ཀྱི་མདས་ཤ་ཝ་དུ་སོད། དེས་སྨྲས་པ། , ལྔ་བརྒྱ་པོ་ཐམས་ཅད་སོད། ཤ་ཝ་ར་པཱ་ན་རེ། བཞི་བརྒྱ་བོར་ལ་བརྒྱ་སོད་བྱས་པས། འཕགས་པའི་[8]སྤྲུལ་པས་ཤ་ཝ་

---

1 ཤ་ཝ་ར་པ་ - པེ་ཅི་, ཤོག་ ༧ འོག་ དེ་ཉིད།

2 'ང་ཡང་ཤ་བ་རི་པ་བྱ་བ་ཡིན་པས'' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༥/བ་ དེ་ཉིད།

3 'ཡོད་བྱས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༧ འོག་ དེ་ཉིད།

4 'ཤ་བ་དུ་སོད' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་དེ་ཉིད།

5 'ནང་པར' - པེ་ཅི་, - དེ་ཉིད།

6 'སྤྲུལ་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད།

7 'གཅིག་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

8 'འཕགས་པའི' - ཞེས་ པེ་ཅི་ ལ་མེད, - ཤོག་ ༧, འོག་ དེ་ཉིད།

བརྒྱ་མདའ་གཅིག་གིས་བསད་ནས། ཤ་ཡུའི་རོ་གཅིག་ཤཡར་པོ་ལ་བསྐུར་བས། དེ་མ་ཐག་པར་ཤཡར་པོ་ང་རྒྱལ་ཆག་སྟེ། ཁྱིམ་དུ་འོང་ནས་སྤྲུལ་པ་ལ་སྨྲས་པ། དེ་འདྲ་བའི་འཕོང་གི་སྟོབས་དེ་བདག་ལ་སློབས་[1]བྱས་པ་དང་[2]། སྤྲུལ་པས་སྨྲས་པ། དེ་སློབ་པ་ལ་ཟླ་བ་གཅིག་[3]ཤ་མི་ཟ་བ་ཞིག་[4]དགོས་བྱས་པས། དེ་ནས་ཤཡར་པོས་སེམས་ཅན་ལ་གནོད་འཚེ་སྤངས་སོ[5]།།

སྤྲུལ་པས་ཞག་བདུན་ནས་[6]དེའི་གམ་དུ་ཕྱིན་ནས་སྨྲས་པ། ཁྱེད་ཅག་གིས་ཅི་ཟོས། དེ་ན་རེ། ཤིང་ཐོག་ཟོས་ཟེར་རོ། །དེ་ནས་སྤྲུལ་པས་སྨྲས་པ། ད་ཁྱེད་ཅག་གིས་སེམས་ཅན་ལ་བྱམས་པ་དང་སྙིང་རྗེ་[7]སྒོམས་ཤིག་བྱས་ནས (སྤྲུལ་པ་ཕྱིན་ནོ)། ཟླ་བ་གཅིག་ལོན་པ་ན་དེ་ར་གཤེགས་པ་དང་། ཤཡར་པོ་ན་རེ། ད་ཤ་བ་གཤོར་བའི་ཆོས་ཤོད་[8]ཟེར་བ་ལ། སྤྲུལ་པས་དེར་མཎྜལ་ཞིག་མཛད་ནས་མེ་ཏོག་བཀྲམ་སྟེ། ཤཡར་པོ་བཟའ་མི་གཉིས་ལ་ལྟོས་ཤིག་དང་(གསུངས)། དེ་གཉིས་ཀྱིས་བལྟས་པ་དང་། སྤྲུལ་པས་དེ་གཉིས་

1 'བདག་ལ་ཡང་སློབས' - པེ་ཅི་¯ཤོག ༧ འོག 177. vol. 87,

2 'བྱས་པ་དང་།' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ - ༦/བ དེ་ཉིད།

3 'ཟླ་བ་གཅིག་ལ་ཤ་མི་ཟ'' - སྒྲུབ་ཀུན་ - དེ་ཉིད།

4 'པ་གཅིག་'' པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

5 'སྤངས་པ་དང་།' - སྒྲུབ་ཀུན་, དེ་ཉིད། - པེ་ཅི།

6 'བདུན་ན་'' - སྒྲུབ་ཀུན་, - དེ་ཉིད།

7 "བྱམས་དང་, སྙིང་རྗེ་བསྒོམས་ཤིག" - པེ་ཅི་, ཤོག་, ༧ འོག་ དེ་ཉིད།

8 'ཆོས་བཤད་དོ་, ཟེར་བ་ལ་' - པེ་ཅི་ - དེ་ཉིད།

ལ་ཅི་མཐོང་དྲིས་པས། (དེ་གཉིས་ཀྱིས་) མཚལ་གྱི་ནང་དུ་དམྱལ་བ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་དང་། ཁོ་རང་གཉིས་ཀྱང་དེར་འཆེད་པ་མཐོང་བས[1]། འཇིགས་ཤིང་སྐྲག་ལ་དངངས་ཤིང་འདར་ནས་སྐད་མ་ཐོན་པ་ན། སློབ་དཔོན་ཡང་དང་ཡང་དུ་དྲིས་པས། སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་འདི་འདྲ་བ་གདའ་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་ཁྱེད་དེར་སྐྱེ་བ་ལ་མི་འཇིགས་སམ་གསུངས་པས། དེ་དག་ན་རེ[2]། འཇིགས་ལགས་ཏེ། དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་མཆིས་ལགས་སམ་ཞུས་པས། དེ་ཡོད་དེ་[3]ཁྱེད་ཀྱིས་སྒྲུབ་ནུས་སམ་གསུངས་པས། ནུས་ཞེར།

(དེ་) ནས་སློབ་དཔོན་པས་ཤཱཀྱ་བཟའ་མི་གཉིས་ལ་ཆོས་བཤད་དེ། སྲོག་བཅད་པའི་རྣམ་པར་སྨིན་པས་ནི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་སྐྱེ་བ་ཡིན་ལ། (དེའི་) བྱེད་པ་རྒྱུ་མཐུན་ནི་སྲོག་གཅོད་སྙིང་འདོད་པ་ཡིན་ཅིང་། དབང་གི་འབྲས་བུ་ནི་ཚེ་ཐུང་བ་ཡིན་ལ། སྐྱེས་བུ་བྱེད་པའི་འབྲས་བུ་ནི་གཞི་བརྗིད་ངན་པ་ཡིན་ནོ།། སྲོག་གཅོད་པའི་ལས་སྤངས་པས་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པ་ཡིན་ལ། བྱེད་པ་རྒྱུ་མཐུན་ནི་སྲོག་གཅོད་སྙིང་མི་འདོད་པ་དང་། དབང་གི་འབྲས་བུ་ཚེ་རིང་བ་ཡིན་ལ། སྐྱེས་བུ་བྱེད་པའི་འབྲས་བུ་ནི་གཞི་བརྗིད་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་སོར་མི་དགེ་བ་བཅུའི་ཉེས་དམིགས་དང། དགེ་བ་བཅུའི་ཕན་ཡོན་བཤད་པས་ཤཱཀྱ་འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་ཆོས་ལ་མི་ཕྱེད་པའི་དད་པ་བརྟན་པོ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།།

---

1 ‘འཆེད་པར་མཐོང་ནས’ - པེ་ཅི, - ཤོག་ ༧ གོང་, དེ་ཉིད།

2 ‘དེ་ན་རེ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ༧/ན དེ་ཉིད།

3 ‘དེ་ཡོད་ན’’ - སྒྲུབ་ཀུན་ - དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག་ ༤ གོང་, དེ་ཉིད།

དེ་ནས་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱིས་[1]གདམས་[2]ངག་གནང་ནས་རི་བོ་དཀྱིར་གཤེགས་པ་དང་། ཤཱ་ཝ་རི་པས་[3]ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྒོམས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོས་[4]ཆོས་ཉིད་ལས་ལངས་ཏེ། འཕགས་པའི་སྤྱན་ལམ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། འཕགས་པས་ཤཱ་ཝ་རཔཱ་ལ་[5]ཡོན་ཏན་གྱི་ཐུགས་པ་དུ་མ་བརྗོད་ནས།

"རིགས་ཀྱི་བུ། རྩའི་མེ་ཤི་བ་དང་འདྲ་བའི་ཕྱོགས་གཅིག་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ནི་མཆོག་མ་ཡིན་ལ། ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་འཁོར་བར་འདུག་ལ་སེམས་ཅན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་དོན་གྱིས་ཤིག" ཅེས་གསུངས་པས་ཤཱ་ཝ་ར་པཱ་རང་གི་ཡུལ་དུ་བྱོན་ནས་བཞུགས་སོ།།

མཚན་དུ — 'དཔལ་ཤཱ་ཝ་ར་པཱ་' ཞེས་པའམ། རྨ་བྱའི་གཤོག་པ་གྱོན་ནས་འདུག་པས—'རྨ་བྱའི་གོས་ཅན་'ཞེས་པའམ། དུས་རྟག་ཏུ་རི་ལ་བཞུགས་པས་'རི་ཁྲོད་མགོན་པོ་' ཞེས་ཀྱང་ཟེར་ཏེ་མཚན་གསུམ་དུ་གྲགས་སོ།། སྐལ་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་[6]ལ་བརྡའ་དང་། མགུར་ལ་སོར་པས་དོན་མཛད་དེ།

---

1 'གཟིགས་དབང་ཕྱུག་གིས་ ' - སྣྲུབ་ཀུན་ - ཤོག ༡/ཀ 14.

2 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི, ཤོག ༨ གོང་། དེ་ཉིད།

3 'ཤཱ་ཝ་རས' - པེ་ཅི - ཤོག དེ་ཉིད། ཤབརིས — སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡/ཀ།

4 'ཆེན་པོའི' - པེ་ཅི, - ཤོག - དེ་ཉིད།

5 'ཤཱ་ཝ་རི་ལ'' - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག - དེ་ཉིད། 'ཤཱ་ཝ་ར་ལ''-པེ་ཅི ཤོག ༨ གོང་, དེ་ཉིད།

6 བུ་སྟོན་བདེ་མཆོག་གྱི་དོན་དུ་-"ཤཱ་ཝ་ར་པཱ་དང་པོར་ལྷ་ལྕམ་ལའི་གི་རི་དགོན་དུ་ཀླུ་སྒྲུབ་ནས་བདེ་མཆོག་དབང་ཞུས། དེའི་རྗེས་བྱང་སེམས་རིན་ཆེན་བློ་གྲོས་མཇལ།"-དེ་ཉིད་ཤོག ༣༦ - ༣༧། ཆ པ།

བྱམས་པའི་བསྟན་པ་མ་ཤར་གྱི་བར་དུ་སྐུ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མཛམ་བུའི་གླིང་འདིར་བཞུགས་སོ།[1]།

གུ་རུ་ཤཱབར་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༦) གུ་རུ་སརཧ་པཱ།

གུ་རུ་སརཧ་པཱ་[2]ཡི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རིགས་བྲམ་ཟེ། ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་རཱཌྷི་ཞེས་བྱ་བའི་བྱེ་བྲག 'སརོལི་[3] ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ། མཁའ་འགྲོ་མའི་སྲས་ཡིན་པས། མཁའ་འགྲོ་ཉིད་ཡིན་ནོ[4]།།

འདི་[5]བྲམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་ལ་དད་ནས་སློབ་དཔོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་ཆོས་མཉན་པས་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཆོས་ལ་ཡིད་ཆེས་ནས།

---

1 ལྷན་པ་ལ། སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༧/བ 14 པེ་ཅི ༨ ཤོག དེ་ཉིད།

2 མཚན་ངོ་མ་ 'སརཧ' དང་ 'པཱ' - 'པཱད' ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་མོད། བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ 'པཱ' ཞེས་པའི་དོན་བདག་སྒྲའི་ 'པ' དོན་དུ་བསམ་ནས། ཐམས་ཅད་དུ་ 'པ' ཉིད་བྲིས་འདུག་ཀྱང་ལེགས་པར་མི་སྣང་།

3 'རོ་ལི' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༧ བ-14 འདིར་དཔེ་ཞལ་ཆེ་བར་ 'རོ་ལི' ཞེས་པ་ཉིད་བྲིས་འདུག་ཅིང་། པེ་ཅི་ བསྟན་འགྱུར་དུ་ཡང་གོང་འོག་མང་པོར་ 'རོ་ལི' བྲིས་འདུག་ཀྱང་། ཤོག ༧ འོག་ཏུ་ 'སརོལི' བྲིས་འདུག་པ་དེ་ཉིད་དག་པར་སྣང་།

4 "མཁའ་འགྲོ་མའི་སྲས་ཡིན་ནོ།" - པེ་ཅི་ ཤོག ༨ འོག་ དེ་ཉིད།

5 "བྲམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་" - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད། "གུ་རུ་འདི་བྲམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་" - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག དེ་ཉིད།

བྲམ་ཟེ་དང་སངས་རྒྱས་པ་གཉིས་ཀའི་སློམ་པ་བསྐྱུང་[1]བ་ལ། ཉིན་བྲམ་ཟེའི་ཆོས་ལུགས་བྱེད། མཚན་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་ལུགས་སུ་[2]བྱེད་ཅིང་། ཆང་ཡང་གསོལ་བས་[3]ན་བྲམ་ཟེ་ཀུན་གྱིས་ཚོར་ནས། དེ་བསྐྲད་པའི་ཕྱིར་བྲམ་ཟེ་ཐམས་ཅད་འདུ་ནས། རྒྱལ་པོ་རཏྣཔཱལ་[4]ལ་ཞུས་པ། "ཁྱེད་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ན་ཡུལ་དུ་ཆོས་ལུགས་འཆོལ་བ་བྱེད་དུ་འཇུག་པ་རིགས་སམ། སརཧ་འདི་ཡུལ་ས་རོ་ལིའི་[5]གྲོང་ཁྱེར་ཁྲི་ཚོ་ཕྱེད་གཉིས་ཀྱི་གཙོ་བོ་ཡིན་པ་ལ། ཆང་འཐུངས་ནས་རིགས་ཉམས་པར་བྱས་པ་ཡིན་པས་[6]སྐྲོད་ཅིག་བྱས་པས།" རྒྱལ་པོས་སྨྲས་པ། "ཁྲི་ཚོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་ལ་དབང་བྱེད་པ་འདི་སྐྲོད་དུ་མི་འདོད་ཟེར་ནས།" རྒྱལ་པོས་སརཧའི་གན་དུ་བྱོན་ནས་སྨྲས་པ།

"ཁྱེད་བྲམ་ཟེ་ཡིན་པ་ལ་ཆང་འཐུང་པ་འདི་མ་ལེགས་སོ་" བྱས་པས། སརཧ་ན་རེ། "ངས་ཆང་འཐུངས་བ་མེད། འོན་ཀྱང་མནའ་འདོར་བ་ཡིན་པས། བྲམ་ཟེ་ཀུན་དང་། མི་ཐམས་ཅད་[7]བསྡུས་ཤིག" ཟེར་ (དེ) ནས་[8]ཐམས་

---

1 'སྐྱུང་བ་ལ་' - པེ་ཅི་ཤོག, དེ་ཉིད།

2 'ཆོས་ལུགས་བྱེད་ཅིང' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༧ བ-14.

3 'གསོལ་བ་ན་' - པེ་ཅི་, - ཤོག་ ༤ འོག་ དེ་ཉིད།

4 'རཏྣཔལ' - སྒྲུབ་ཀུན་, དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

5 'རོལིའི' - སྒྲུབ་ཀུན་, དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

6 'ཉམས་པར་བྱས་པས་' པེ་ཅི་, - ཤོག་ ༦ གོང་། དེ་ཉིད།

7 'སྡུས་ཤིག' - སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག་ ༧ བ་14.

8 'ཟེར་ནས།' - སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག་ དེ་ཉིད།

ཅན་བསྡུས་པ་དང་། "སརཧཔཱས' ངས་ཆང་འཐུངས་ན་ལག་པ་ཆིག་ལ། མ་འཐུངས་ན་མ་ཆིག་[1]ཅེས་ཟེར་ནས་མར་ཁུ་ཁོལ་མའི་ནང་དུ་ལག་པ་བཙུག་པས་མ་ཆིག་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་ཆང་འཐུངས་པ་དེ་བདེན་ནམ་བྱས་པས། བྲམ་ཟེ་ཀུན་ན་རེ། བདེན་ཏེ་འཐུངས་ཟེར། ཡང་སྔར་བཞིན་སླས་ནས་ཟངས་ཞུན་འཐུངས་པས་མ་ཆིག་པ་དང་། ཡང་འཐུངས་ཟེར། འོ་ན་ཆུའི་ནང་དུ་ཞུགས་དང་། གང་ནུབ་ནས་འདུག་པ་དེས་འཐུངས་པ་ཡིན་ལ། མ་ནུབ་པ་དེས་འཐུངས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སླས་ནས། བྲམ་ཟེ་གཞན་[2]ཞིག་དང་གཉིས་ཆུའི་ནང་དུ་ཞུགས་པ་ན་[3]སརཧ་མ་ནུབ། གཅིག་ཤོས་ནུབ་པ་དང་། སརཧཔཱས་ངས་མ་འཐུངས་ཟེར་རོ། །ཡང་སྐྱང་ལ་བསྒོར[4]། གང་ལྷི་བས་མ་འཐུངས་པ་ཡིན་ལ། ཡང་བ་དེས་འཐུང་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་[5]སླས་ནས། དེ་བཞིན་བྱས་པས་སརཧཔཱ་[6]ལྷི་ནས་ངས་མ་འཐུང་ཟེར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་མི་དང་ལྡིད་མཉམ་པའི་ལུགས་ཀྱི་རྡོག་གསུམ་དང་བཀར་ས་ཀྱང་སརཧ་ལྷི་་བ་དང་། དྲུག་ལས་ཀྱང་སརཧ་ལྷི་ན[7]། རྒྱལ་པོས་སླས་པ། ཁོ་འདྲ་བའི་ནུས་པ་ཡོད་ན་ཆང་

---

1 'ཆིག་ཅིག' པེ་ཅི, དེ་ཉིད།

2 'གཞན་གཅིག་དང་'' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༤/ན 14.པེ་ཅི, ཤོག ༧, གོང་ དེ་ཉིད།

3 'ཞུགས་པས་ན'' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༤ 14. པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

4 'སྐྱང་ལ་བསྒོར'' - པེ་ཅི, - ཤོག དེ་ཉིད།

5 'ཡིན་ནོ་སླས་ནས'' - པེ་ཅི, དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་༤/ན་14.

6 'སརཧཔཱས་ལྷི་ལྡི་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན་ - ཤོག དེ་ཉིད། སརཧ་པ་ལྡི་ནས་ - པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

7 'ལྡི་ནས',' .- པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད། 'ལྡི་ན'' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

འཐུང་ན་ཡང་འཐུང་ཤིག་[1]ཅེས་སླས་པས། བྲམ་ཟེ་ཐམས་ཅད་དང་། རྒྱལ་པོས་ཀྱང་ཕྱག་བྱས་གདམས་ངག་ཞུས་པས། རྒྱལ་པོ་དང་བཙུན་མོ་དང་། འབངས་ཐམས་ཅད་ལ་མགུར་གསུངས་པས་དོཧ་སྐོར་གསུམ་དུ་གྲགས་སོ།།

བྲམ་ཟེ་རྣམས་ཀྱིས་རང་གི་ཆོས་ལུགས་སྤངས་ཏེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ཤིང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པས་ཀྱང་གྲུབ་པ་ཐོབ[2]་བོ།།

དེ་ནས་སརཧས་བུད་མེད་ལོ་བཅོ་ལྔ་ལོན་པ་ཞིག་ཡོད་པ་ཁྲིད་ནས་ཡུལ་གཞན་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། དགོན་པ་ཞིག་ཏུ་འདུག་ནས་ཁྲུས་སྒྲུབ་པ་བྱེད། ཆུང་མས་བྱན་སླངས་ཀྱིན་བསྐྱལ་ལོ[3]།།

ཐེངས་གཅིག་ལ་ཕྱག་གི་ཆོད་མ་ཟ་ཟེར་ནས[4]ཆུང་མས་མཧེའི་ཞོ་དང་ལ་ཕྱག་སྦྱར་ནས་འདྲེན་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། (སློབ་དཔོན་) ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་བཞུགས་འདུག་པས་མ་སླངས་པར་ལོག དེ་ནས་ 'སརཧ' པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་མ་བཞེངས། དེ་ནས་བཞེངས་པ་དང་། (ཆུང་མ་ལ) ལ་ཕྱག་གི་ཆོད་བ་ག་རེ། བྱས་པས། བུད་མེད་ན་རེ། ཁྱོད་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་མ་བཞེངས་པས་ད་ལྟ་ག་ན་ཡོད། ད་ནི་དཔྱིད་ཀྱི་

---

1 'འཐུངས་ཤིག' - སྒྲུབ་ཀུན, ཤོག ༤ 14. འཐུང་ཅིག - པེ་ཅི་ ཤོག ༦ གོང་, དེ་ཉིད།

2 'བཅས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ།' - པེ་ཅི་, ཤོག ༦ འོག 178. vol. 87.
'བཅས་པས་ཀྱང་སིདྡྷི་ཐོབ་བོ - སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག ༤/ན 15. 14.

3 'སྐྱལ་བ་དང་། - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག ༦ འོག, དེ་ཉིད།

4 'ཟ་ཟེར་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

དུས་སུ་སོང་ནས་མེད་དོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་།། དེར་ 'སརཧས' ཆུང་མ་ལ། ང་རི་ལ་སྒྲུབ་པ་ལ་འགྲོ་བ་ཡིན་སྨྲས་པས། ཆུང་མ་ན་རེ། "ལུས་དབེན་པ་ནི་དབེན་པ་མ་ལགས། སེམས་མཚན་མ་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པས་དབེན་པ་ནི་དབེན་པའི་མཆོག་ལགས་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་བཞུགས་ཀྱང་། མཚན་མ་ཕྲ་མོ་ལ་ཕུག་གི་རྟོག་པ་མ་ཆོད་ན་རི་ཁར་ཕྱིན་པས་ཅི་ལ་ཕན" སྨྲས་པས། སརཧཔས་དེ་བདེན་དགོངས་ཏེ། མཚན་མ་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས་ཏེ། གཅིག་མའི་དོན་ཉམས་སུ་བླངས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཛད[2]། (མཐར) ཆུང་མ་དང་གཉིས་ཀ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་སརཧཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༧) ཀཾཀརིཔཱ[3]།

གུ་རུ་ཀཾ་ཀ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་མཱགྷདྷཱར[4] རིགས་དམངས་རིགས་སོ། །

---

1 'ཞེས་སྨྲས།' - པེ་ཅི་, ཤོག - ༩ འོག་ དེ་ཉིད།

2 'མཛད་དེ་' - པེ་ཅི་, དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག - ༡/བ 16. 14.

3 'ཀཾགཱལ་པཱ་' - राहुल, पूरा. नि० पृ० १२०,

4 'མགྷདྷུར' - པེ་ཅི་, ཤོག - ༩ འོག་ དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་ཡུལ་སཱལྷཱཧཱརའི་ཁྱིམ་བདག་(ཞིག)གིས་རང་གི་རིགས་དང་མཉམ་པའི་ཆུང་མ་བླངས་ནས། ཁྱིམ་དུ་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་རོ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ལ། ཐར་པའི་ལམ་དགེ་བའི་ཆོས་ལ་ནི་བློ་བག་ཙམ་ཡང་མ་ཞུགས་པར་འཇིག་རྟེན་འདི་འབའ་ཞིག་དོན་དུ་གཉེར་ཞིང་འདུག་པའི་ཚེ། དེའི་ཆུང་མ་ལ་འདུས་བྱས་ཀྱི་ལས་ཀྱིས་སླེབས་ནས་ཤི་བར་གྱུར་པ་དང་། དེས་ཆུང་མའི་རོ་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱལ་ནས་རོ་བློས་གཏོང་[1]མ་ནུས་པར་རོའི་རྩར་དུ་ཡིན་འདུག་གོ[2]།

དེའི་གམ་དུ་ལེགས་པར་རྟོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས། ཁྱིམ་བདག་དེ་ལ། "ཁྱོད་དུར་ཁྲོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག ཅེས་སྨྲས་པ་དང་། ཁྱིམ་བདག་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ། བདག་གི་སྐྱིད་སྡུག་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མ་གཟིགས་སམ། མིག་བརྟན་པའི་ལོང་བ་ཁྱིམ་ཐབ་དང་བྲལ་བའི་དཔལ་ཟད་པ་འཇིག་རྟེན་ན་བདག་ལས་སྡུག་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པ་སུ་མཆིས། ཞེས་ཞུས་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པས་ཁྱིམ་བདག་ལ་སྨྲས་པ།

"སྐྱེས་པའི་མཐའ་འཆི་བ། འདུས་པའི་མཐའ་འབྲལ་བ། འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་ནི[3]མི་རྟག་པ་ཡིན། འཁོར་བར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་སྡུག་བསྔལ་བ་ཡིན་པས། འཁོར་བ་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རང་བཞིན་ལ་ཁྱོད་མི་སྐྱོ་འམ་ཁྱོད་མི་རོ་

1 'བློས་གཏང་མ་ནུས་པར' - སྣྲུབ་ཀུན་ - ཤོག ༤ དེ་ཉིད།

2 'འདུག་པ་ལ།' སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༤/བ དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག ༥ འོག དེ་ཉིད།

3 'ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པ་ཡིན' པེ་ཅི, ཤོག ༡༠ གོང་ དེ་ཉིད།

ས་རྗེ་འདྲ་བ་ཞིག[1]བསྒྲུངས་ནས་ཅི་བྱེད་དེ་བས་ཁྱོད་རང་ཆོས་ཀྱིས་ལ་སྡུག་བསྔལ་སྤྱོངས་བྱས་པས།"

"རྣལ་འབྱོར་པ། འཁོར་བ་སྐྱེ་འཆིའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་སྟོལ[2]ཅིག་ཟེར་བ་ལ།"

(རྣལ་འབྱོར་པས་) – དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་བླ་མའི་མན་ངག་ཡོད་བྱས་པས[3]། (ཁྱིམ་བདག་གིས) – དེ་བདག་ལ་གནང་བར་ཞུས། ཟེར་ནས།

རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་དབང་བསྐུར་ཏེ།[4] བདག་མེད་ཐིག་ལེའི་གདམས་[5]ངག་བྱིན་པ་དང་། ཁྱིམ་བདག་ན་རེ། ཇི་ལྟར་[6]བསྒོམ། ཟེར་བ་ལ། (རྣལ་འབྱོར་པས) – ཤི་བའི་ཆུང་མའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱོངས་་ལ། བདག་མེད་པའི་ཆུང་མ་བདེ་བ་དང་སྟོང་པ་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྒོམས་ཤིག་བྱས་ནས་སྒོམ་དུ་བཙུག་པས། ལོ་དྲུག་ན་ཐ་མལ་པའི་ཆུང་མའི་རྣམ་རྟོག་བདེ་བ་དང་སྟོང་པའི་ངང་དུ་སྟོར་ནས། དེའི་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། བདེ་ཆེན་འོད་གསལ་གྱི་རྟོག་པའི་ཉམས་སྐྱེས་པ་དང་། ཁྱིམ་བདག་དེས་དཔེར་ན་ཡང་

---

1 'འདྲ་བ་གཅིག'-ཡེ་ཉི་,ཤོག ༡༠ གོང་ དེ་ཉིད། འདྲ་བ་ཅིག སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་༡༠/བ དེ་ཉིད།

2 'འཚོལ་ཅིག' - ཡེ་ཉི་, ཤོག ༡༠ གོང་ དེ་ཉིད།

3 'གསུངས་པས' - ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

4 'སྐུར་སྟེ' - ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

5 'གདམ་ངག' ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

6 'ཇི་ལྟར་སྒོམ...' - ཡེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

ཧང་གི་དུག་དྭངས་པས་འཁྲུལ་བ་སངས་པ་ལྟར[1]། མ་རིག་འཁྲུལ་པའི་དུག་དྭངས་པས་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་བདེན་པའི་དོན་མཐོང་སྟེ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[2]། མིང་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཀཾཀ་རི་པཱ་ (ཀཾཀཱལཔཱ) ཞེས་བྱ་བར་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ[3]།།

རང་གི་ཡུལ་མཱགྷདྷཱ་རར་[4]སྐྱི་འགྲོ་དུ་མ་ལ་ཆོས་བསྟན་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཀཾཀ་རི་(ཀཱལ)པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༥) མཱིན་པཱ།

གུརུམཱིནཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས། རིགས་ཉ་པ། བླ་མ་མཏཱ་དེཝ། དངོས་གྲུབ་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པོ[5]།།

---

1 ‘ལྷ་བུར’ - པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད།

2 ‘ཐོབ་ནས་’ - པེ་ཅི་, དེ་ཉིད།

3 ‘གྲགས་ལ།’ - པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད།

4 ‘གྷདྷ་རི་ར’ - པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༠ འོག་ 178. vol. 87.‘मगध’ (पूर्व में राज्ञी नगर) रा० पु० नि० पृ० १२०. མཱགྷདྷ་རི་དང་, ‘གྷདྷ་རི’ ཟེར་བ་གཉིས་ཀ་གོགས་’ ཞེས་པའི་སྦྲ་བོད་སྐད་ཀྱིས་ཟུར་ཆག་པར་སེམས།

5 ‘ཐོབ་པའོ།’ པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༨ 17

དེ་ཡང་ (རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས) ཀཱམརཱུཔའི་ཕ་ཚད་ན་རྒྱ་མཚོ་‘ཨིད་’ (སླིདྣ) བྱ་བ་ན། ཉ་པ་ཀུན་ཉ་གསོར་ནས་[1]དུས་རྟག་ཏུ་ཚོང་འདུས་སུ་འཚོང་[2]བ་ཡིན་ལ། (ཉིན་གཅིག) ཉ་པ་གཅིག་གིས་རས་བལ་གྱི་སྲད་བུ་ལ་ལྕགས་ཀྱི་བདགས་ནས་དེའི་རྩེ་མོར་ཤ་དང་བཅས་ཏེ་ཆུར་བསྐྱུར་པ་དང་། ཉ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཟིན་པས་འཐེན་པ་དང་། ཉས་ཕར་དྲུད[3]དེ་ཉ་པ་རྒྱ་མཚོར་ནུབ[4]། དེར་ཉ་པ་དེ་ཉ་ཆེན་པོ་ཞིག་[5]གིས་མིད་པ་ལ་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་མ་ཤི་བར་ཡོད་པ་ན[6]། དེའི་དུས་སུ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ལ་ལྷ་མོ་ཨུ་མས་ཆོས་ཞུས་པས། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ན་རེ། ངའི་ཆོས་འདི་གང་རུང་རུང་ལ་བཤད་པ་མ་ཡིན་གྱི་[7]ཤིན་ཏུ་གསང་བ་ཡིན་པས། རྒྱ་མཚོའི་ནང་དུ[8]ཁང་པ་བརྩིགས་ཤིག དེར་བཤད[9]དོ་ཟེར་ནས་དེ་བཞིན་བྱས་སོ།[10]

---

1 ‘གསོད་པས་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/ན 17.

2 ‘ཚོང་དུས་སུ་ཉ་འཚོང་བ་ཡིན’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/ན.

3 ‘ཉས་ཕར་གྲུད’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ འོག དེ་ཉིད།

4 ‘ནུབ་ནས།’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ འོག དེ་ཉིད་སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/ན.

5 ‘པོ་ཅིག་གིས་’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ དེ་ཉིད། ‘པོ་གཅིག་གིས’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/ན.

6 ‘ཡོད་པ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ དེ་ཉིད། ‘ཡོད་པ་ལས’ སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/ན.

7 ‘མ་ཡིན་གྱིས་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ

8 ‘ནང་ན་ཁང་པ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ དེ་ཉིད།

9 ‘དེར་ཤོད’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ འོག དེ་ཉིད། ‘དེར་བཤད’ སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ

10 ‘དེ་བཞིན་དུ་བྱས་པ་དང་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ ༡ པེཅི ཤོག ༡༠ འོག.

དེའི་ནང་དུ་ལྷ་མོ་ཨུ་མ་ལ་ཆོས་བཤད་པ་ན[1]། དེའི་དུས་སུ་ཁང་པའི་འོག་ཏུ་ཉ་དེ་འོངས་པ་ལ[2]། ཆོས་ཀྱི་འཕྲོ་ལ་ལྷ་མོ་གཉིད་ལོག་པ་དང[3]དུས་མཚུངས་ནས། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོས་ལྷ་མོ་ཨུ་མ་ལ་གོའམ་བྱས་པས། ཉ་པས་གོ་ལགས་བྱས་ཀྱིན་ཆོས་ཉན་པ་དང་། ཆོས་ཐོན་པ་དང་ལྷ་མོ་གཉིད་སད་དེ། ཆོས་ཤོད་བྱས་པས། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ན་རེ། ངས་ཆོས་བཤད་ཟིན་བྱས་པས། ལྷ་མོ་ན་རེ། དངོས་ཀྱིས[4]ཆོས་འདི་ཙམ་བར་དུ་ཐོས། དེ་ནས་གཉིད་ཀྱིས་མྱོས་ནས་མ་ཐོས་བྱས་པ་ལ། (དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོས) འོ་ན་ཐོས་ལགས་ཟེར་བ་དེ་སུ་ཡིན་ཟེར་བ་ལ[5]། ལྷ་མོས་དེ་སྐད་ཟེར་བ་དེ་བདག་མིན་སྨྲས་པས[6]། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོས་མངོན་ཤེས་ཀྱིས་གཟིགས་པས། ཁང་པའི་འོག་གི་ཉའི་ལྟོ་བ་ན་མི་ཞིག[7]འདུག་པ་དེས་ཆོས་ཉན་པར་མཐོང་ནས། དེའི[8]བསམ་པ་ལ་འདི་ངའི་སློབ་མར་སོང་བས་དམ་ཚིག་གཅིག་པ་ཡིན་སྙམ་དུ་དགོངས་ནས། དེར་ཉ་པ་ལ་དབང་བསྐུར་(ཆོས་བཤད)ནས། ཉ་པ་དེས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཉའི་ལྟོ་བར་

---

1 ‘བཤད་པས’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༠ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ.

2 ‘འོངས་པ་དང་།’ - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

3 ‘གཉིད་ལོག་དང་’ - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘དངོས་ཀྱི་ཆོས་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ.

5 ‘ཟེར་ནས’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༡ གོང་, སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག ༩/བ.

6 ‘ཟེར་བ་བདག་གིས་མ་སྨྲས་ཟེར།’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༡ གོང དེ་ཉིད།

7 ‘མི་གཅིག’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༡ གོང་, མི་ཅིག - སྒྲུབ་ཀུན་, ཤོག ༩/བ.

8 ‘དེར་བསམ་པ་ལ - པེ་ཅི་, ཤོག ༡༡ གོང་ ‘དེ་བསམ་པ་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༩/བ.

སྒྲུབ་པ་བྱས་པ་དང་། དེ་ནས་ཡུལ་‘ཤྲིཧཔུརི’ (སྣཧྣིཔུརི་)ཞེས་བྱ་བའི་ཉ་པ་ཞིག་གིས་ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏོ[1]།།

ཉ་པས་བསམ་པ་ལ[2]ཉ་ཆེན་པོ་འདི་ཟླིད་ལུགས་ལ་བལྟས་ན[3]འདི་ཁོག་པ་ན་གསེར་དང་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་རྫས་འགའ་བྱུང་ཡང་སྲིད་སྙམ་སྟེ། ཉའི་ལྟོ་བ་བཤགས[4]པས་(དེ་ན་)མི་ཞིག་འདུག་པ་ལ[5]། ཁྱོད་སུ་ཡིན། བྱས་པས[6] དེ་ན་རེ། བདག་ཀྱང་ཉ་པ་ཡིན་པ་ལ་རྒྱལ་པོ་འདི་ཞེས་བྱ་བའི་དུས་སུ[7]ཉ་འདིས་ཁྱེར་ཏེ་མིད་པ་ཡིན་ཟེར་བ་ལ[8]། མི་ཀུན་གྱིས་རྩིས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པར་འདུག་པས[9]། མི་ཐམས་ཅད་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། མིང་དུ་ཡང་‘རྣལ་འབྱོར་པ་མཱིནཔཱ’ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་སོ།།

---

1 ‘བཏོན་པ་དང་།’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩/བ སྟོན་པ་དང་ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ གོང་།

2 ‘ཉ་པས་བསལ་པ་’ – པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ གོང་

3 ‘ལུགས་ཀྱིས།’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩/བ པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༡ གོང་ དེ་ཉིད།

4 ‘གཤགས་པས’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩/བ 18. 14.

5 ‘འདུག་ནས’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩/བ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ གོང་ དེ་ཉིད།

6 ‘བྱས་པ་ལ’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡ དེ་ཉིད།

7 ‘དུས་ཉ་འདིས’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩/བ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ གོང་

8 ‘ཟེར་ནས’ – སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༩ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

9 ‘ཉའི་ལྟོ་ནང་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་’ཞེས་པའོ།

དེ་ནས་མི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཆོད་པ་དང་། སློནཔླས་ས་ལ་གར་བྱས་པས་རྐང་པ་ས་ལ་ནུབ[1]། རྗོའི་སྟེང་དུ་གར་བྱས་པས་ཀྱང་དེ་ལ་འདམ་ལྟར་བྱིང་བས་ཀུན་ངོ་མཚར་སྐྱེས་སོ།།

དེ་ནས་སློན་པླའི་ཞལ་ནས –

སྔར་བསགས་ལས་ཀྱི་འབྲེལ་བ་དང་།།
དུས་འདིར་ཆོས་ལ་མོས་པ་ཡིས།།
ཡོན་ཏན་ཕུན་ཚོགས་འདི་ལྟར་བྱུང་།།
ཨེ་མ་རང་སེམས་རིན་པོ་ཆེ།། ༡

ཞེས་གསུངས[2]། (དེ) ནས་ལོ་ལྔ་བརྒྱར་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་དོ།། མཚན་ཡང་སློན་[3]པླ་དང་། རྗོ་རྗེའི་ཞབས། ཨཙིནྟཔླ་སྟེ་ (བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ) གསུམ་དུ་གྲགས་ཤིང་། དང་པོར་འཇིག་རྟེན་གྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་རིམ་གྱིས་ས་ལམ་བགྲོད་དེ། (མཐར)ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུམིནཔླའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

---

1 ‘ནུབ་པ་དང་།’ - སྣར་ཀུན་ ཤོག་ ༧/བ. པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

2 ‘ཅེས་གསུངས།’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ འོག་ དེ་ཉིད།

3 ‘མིན་པླ’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

(༩) གོ་རཀྵ།

ག་རུ་གོ་ར་ཀྵའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་[1] རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ན་རྒྱལ་པོ་ལྷ་སྐྱོང་ཞེས་བྱ་[2]བ་ལ་སྲས་ཤིག་[3]བལྟམས་པ་ལས། དེ་[4]ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་ན་[5] (དེའི་) ཡུམ་སྐྱུང་ནས་འགུམ་པ་ལ་ཐུག་པའི་ཚེ། ཡུམ་གྱིས་སྲས་ལ་ཞལ་ཆེམས་གསུངས་པ། — ‘སེམས་ཅན་གྱི་བདེ་སྡུག་ཐམས་ཅད་ནི་ལས་དགེ་སྡིག་ལས་འབྱུང་བས་ན། (ཁྱོད) སྲོག་ལ་བབ་ཀྱང་སྡིག་པའི་ལས་མ་བྱེད་ཅིག’ ཅེས་གསུངས་ནས་ (ཡུམ) གྲོངས་སོ། །

དེ་ནས་ཡབ་རྒྱལ་པོ་ལ་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་ཞུས་པ། ཡུལ་གཞན་གྱི་བཙུན་མོ་ཞིག་[6]བཞེས་དགོས་ཟེར་ནས། དེས་ཀྱང་བཙུན་མོ་བཞེས་ནས་ཞག་འགའ་ལོན་པ་ན། རྒྱལ་པོ་ནགས་གསེབ་ཅིག་[7]ཏུ་སྐྱོ་གསང་ལ་གཤེགས་པའི་ཤུལ་དུ། རྒྱལ་མོས་ཁང་བཟང་གི་[8]སྟེང་དུ་ཡོངས་[9]ནས་བལྟས་པས། དེ་ན་

---

1 ‘རྒྱ་གར་ཤར’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན. ཡུལ་ ཞེས་པ་འདིར་མེད།

2 ‘ཞེས་པ་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ འོག.

3 ‘སྲས་གཅིག’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡

4 ‘དེས་ལོ་བཅུ’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ འོག་ ན་

5 ‘ལོན་པ་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན.

6 ‘བཙུན་པོ་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན. ‘བཙུན་མོ་གཅིག’ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ འོག

7 ‘ནགས་གསེབ་ཏུ་སྐྱོ’ - ཤོག་ ༡༡ འོག

8 ‘ཁང་བཟངས’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡ དེ་ཉིད།

9 ‘རྡུང་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན.

རྒྱལ་བུ་བཞུགས་པ་མཐོང་ནས་ཆགས་པ་སྐྱེས་ཏེ། དེར་ཕོ་ཉ་བཏང་ནས་འདིར་གཤེགས་པར་ཞུ་བྱས་པས། རྒྱལ་བུས་དེ་མ་འདོད་པ་དང་། རྒྱལ་མོ་སྐྱེངས་ནས་བསམ་པ[1]། འདིས་ང་ལ་བརྙས་པ་འདི་འདྲ་བྱས། འདི་ལས་དགྲ་སྙིང་ན་ཕ་མི་ཡོང་བས། འདི་ཐབས་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསད་པར་བྱ་དགོས་སྙམ་ནས[2]།

རང་གི་འཁོར་ཀུན་ལ་‘འདི་གསོད་ཅིག་’སྨྲས་པས། དེ་རྣམས་ན་རེ། འདི་བསད་པས་མི་ཡོང་སྟེ། རྒྱལ་པོའི་སྲས་ཀྱི་དམ་པ་ཡིན་ཟེར་བས། མོས་སྒྲོ་བྱས་ཏེ། རང་གི་ལུས་ཐམས་ཅད་བྲད་ནས་ཁྲག་ཕྱུང་། གོས་ཐམས་ཅད་བྲལ་ཏེ་མལ་དུ་ཞུགས་ནས་འདུག་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་བྱོན་ནས་བཙུན་མོ་ལ་ཅིས[3]ཉེས་དྲིས་པས།

མོ་ན་རེ། ཉིད་ཀྱི་སྲས་ཀྱིས[4]བདག་གི་ལུས་མ་ལེགས་པ་བྱས་པས་འདི་ལྟར་དུ་གྱུར་ཏོ་ཟེར་ནས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། ཁྱོད་ལ་འདི་འདྲ་བ་བྱས་ན་རྒྱལ་བུ་འདི་གསོད་ཟེར་ཏེ། གཤེད་མ་གཉིས་བསྐོས་ནས་འདི་ནགས་གསེབ་ཏུ་ཁྲིད་ལ་རྐང་ལག་རྣམས་ཆོད་ལ་ཤོག་གསུངས་པས། གཤེད་མ་གཉིས་ཀྱིས་བསམ་པ། འདི་གསོད་པ་ནི་མ་ལེགས་ན་རང་གི་བུ་བསད་

---

1 ‘བསམ་པ་ལ་’ - ཡེ་ཤེ་ ཤོག ༡༡ དེ་ཉིད།

2 ‘སྙམ་སྟེ།’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༡༡ འོག དེ་ཉིད།

3 ‘ཁྱོད་ཅི་ཉེས’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༡༣ གོང་ ‘ཅི་ཉེས’ སྒྲུབ་ཀུན་ ༡༠/བ.

4 ‘མིའི་ལུགས་མ་ལེགས་པ་བྱས་པས’, ཡེ་ཤེ་ དེ་ཉིད།

ནས་[1]འདི་གསོ་དགོས་སྙམ་ནས། རྒྱལ་བུ་ལ་སླས་པ། ཉིད་གསོད་པ་ནི་བདག་གིས་[2]མི་ཕོད་ལ།[3] རང་གི་བུ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དུ་གསོད་[4]དོ་ཞེས་བྱས་པས། (རྒྱལ་བུ) དེ་ན་རེ། དེ་ནི་མི་རུང་སྟེ། བདག་རང་སོད་ཅིག བདག་གི་མ་ཡི་ཞལ་ཆེམས་སུ་“ལུས་དང་སྲོག་གི་ཕྱིར་ཡང་སྡིག་པའི་ལས་མ་བྱེད་” གསུངས་པས། ཡབ་ཀྱི་ཇི་ལྟར་བཀའ་སྩལ་པ་ལྟར་གྱིས་ཤིག་གསུངས་[5]སོ།།

དེ་ནས་ཤིང་ཁང་པ་གཅིག་པའི་ཙར་བསྐུལ་ནས[6]། གཤེད་མས་ཁང་ལག་བཅད་དེ་དེ་དག་རང་གི་ཁྲིམ་དུ་སོང་ངོ་།།

དེ་ནས་ཕྱོགས་དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོ་ ‘ཨཙིནྟ’[7] བྱ་བ་ཞིག་གིས་རྒྱལ་བུ་དེ་ལ་དབང་བསྐུར་གདམས་[8]ངག་བྱིན་ནས། (དེ་ནས) རྒྱང་གྲགས་གཅིག་ཙམ་ན་(ཡོད་པའི)བ་ཛྲི་རྣམས་ཀྱི་ནང་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་བྱོན་ཏེ། དེ་རྣམས་ལ་“ཕ་གིའི་བྱ་རྒོད་ལྡིང་བའི་འོག་ན་ཤིང་ཁང་པ་གཅིག་པའི་རྡུང་ན་

1 ‘བསད་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/བ ‘བསད་པ’ པེ་ཅི ཤོག ༡༣ གོང་

2 ‘བདག་གི་མི་ཕོད་ན’ - པེ་ཅི ཤོག་ ༡༣ གོང་

3 ‘བདག་གི་མི་ཕོད་ལ་’ - པེ་ཅི ཤོག་ ༡༣ གོང་

4 ‘བསད་ལ་’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/བ་ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་ དེ་ཉིད།

5 ‘གསུངས་པ་དང་། - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/བ་ གསུང་བ་དང་, པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་

6 ‘ཙར་རོལ་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༣ གོང་

7 ‘བསམ་མི་ཁྱབ་’ - པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

8 ‘གདམ་ངག་’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

མི་ཡན་ལག་བཅད་པ་ཞིག་[1]ཡོད་པས། དེའི་གན་དུ་སུ་འགྲོ་ནུས།” གསུངས་པས། དེ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་སློས་འཚོང་གི་རིགས་ཀྱི་ཁྱིའུ་[2]ཞིག་ན་རེ། བདག་གིས་ནུས་ཟེར་རོ།། འོན་ཀྱང་བདག་གིས་ཉིད་ཀྱི་བུ་བ་བསྒྲུབ་ཀྱིས་དངོས་ཀྱི་བུ་བ་ཉིད་ཀྱིས་སྐབས་ཤིག་ཟེར་ནས། བ་ལང་རྣམས་རྒྱལ་འབྱོར་པ་ལ་གཏད་དེ། བྱ་རྒོད་ཕྱིང་བ་མཆན་མར་བྱས་ནས་ཕྱིན་པས། ཤིང་ཁང་གཅིག་པའི་དྲུང་ན་དེ་འདུག་པ་མཐོང་ནས་ལོག་ཕྱིན་ཏེ་རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཨཙིནྟ་ལ་དེ་བཞིན་དུ་[3]འདུག་གོ་བྱས་པས། རྒྱལ་འབྱོར་པས་བ་ལང་རྫི་ལ་“ཁོང་ལ་བཟའ་བཏུང་ཅི་ཡོད་བྱས་པས།” “བདག་ལ་[4]བ་ལང་འཚོ་བའི་དེད་དཔོན་ཞིག་[5]གིས་ནང་ནུབ་ཁོལ་གྱི་[6]བཟའ་བཅའ་དུམ་རེ་སྐྱེར་བས་དེའི་ཕྱེད་དེ་ཁོང་ལ་སྐྱེལ་ལོ་”ཞུས་པས། “དེ་རུང་། ཙོ་རཎྜ་སློལ་[7]ཅིག” གསུངས།

ཁོས་ཤིང་(དེ་རང)གི་འཁོར་དུ་ལོ་མའི་ཁང་པ་ཕུབ། ཟས་སྦྱིན་ཞིང་མི་གཙང་བའི་ཕྱིན་ཛབ་ཐམས་ཅད་ལག་གིས་སླང་ཞིང་བསལ་ཏེ། ལོ་བཅུ་

1 ‘གཅད་པ་གཅིག’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/བ.

2 ‘ཁྱིའུ་ཅིག་ན་རེ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། ‘གཅིག་ན་རེ’ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང

3 ‘འདི་བཞིན་དུ……’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༠/བ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ འོག

4 ‘བདག་བ་ལང་འཚོ་བའི’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༠ འོག

5 ‘གཅིག་གིས’’ - སྒྲུབ་ཀུན་’’ཤོག་ ༡༠/བ. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༡ འོག་ དེ་ཉིད།

6 ‘ཁོལ་བཟའ་བཅའ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/བ. ‘ནང་ནུབ་བཟའ་བཅས’ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣

7 ‘ཙོ་ཙུ་རཎྜ་སློལ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ༡༠་ ཤོག དེ་ཉིད། ‘ཙོ་རཎྜ་པ་བསྲིལ་གཅིག’ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

གཉིས་སུ་དེ་ལྟར་བྱས་སོ།། དེ་ནས་ (དེ) དུས་གཅིག་གི་ཚེ་དེར་ཕྱིན་པས། དེ་ལངས་ནས་འདུག་པ་མཐོང་བས། ངོ་མཚར་ནས་དྲིས་པས། དེའི་ཞལ་ནས

ཐབས་མཁས་བླ་མ་དམ་པ་ཡིས། །
དབྱིངས་དང་རིག་པ་ངོ་སྤྲད་པས། །
ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་གཅིག་ཏུ་རྟོགས། །
བདེ་སྡུག་མེད་པ་ངོ་མཚར་ཆེ།། ༡

ཞེས་གསུངས་ནས་“དངོས་འདི་བཞིན་དུ་ཁང་པ་ལག་པ་གསར་དུ་སྐྱེས་སོ”ཞེས་གསུངས་ཏེ་བར་སྣང་ལ་འཕགས་ནས་[1]བ་ལང་རྫི་ལ་“ངས་གདམས་[2]ངག་ སྦྱིན་ནམ།” བྱས་པས། བ་ལང་རྫི་ན་རེ། གདམས་ངག་མི་འདོད། བདག་གི་སློབ་དཔོན་ཞིག་ཡོད་པ་དེས་ཁྱེད་ལ་བསྙེན་བཀུར་གྱིས་གསུངས་ནས་ཉིད་ལ་འདི་ཙུག་བསྙེན་བཀུར་བྱས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱས་ཏེ། བ་ལང་རྫི་དེ་སླར་ལོག་ནས་བ་ལང་སྐྱོང་གིན་འདུག་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་ཨཙིནྟས་བ་ལང་སྐྱོང་གི་གན་དུ་འོངས་པ་དང་། བ་ལང་རྫིས་ སྔར་གྱི་གཏམ་བྱས་པས་ཤིན་ཏུ་དགྱེས་པར་གྱུར་ཏོ།།

ཨཙིནྟས་བ་ལང་རྫི་ལ་དབང་བསྐུར་གདམས་ངག་བྱིན་ནས་ཡུལ་གཞན་དུ་གཤེགས་སོ། །བ་ལང་རྫིས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་

1 ‘འཕགས་ཏེ’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/ན.
2 ‘གདམ་ངག་’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༡༣ འོག

དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པའི་ཚེ། བླ་མ་དེར་བྱོན་ནས[1]"ཁྱོད་སེམས་ཅན་འབུམ་ཕྲག་བརྒྱ་མ་གྲོལ་གྱི་བར་དུ་སངས་མ་རྒྱ་ཞིག[2]" གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་སེམས་ཅན་བྱུང་ཚད་ལ་དབང་བསྐུར་བྱས་པས། མཧཱ་དེ་ཝས། ཁྱོད་སེམས་ཅན་བྱུང་ཚད་ལ་དབང་བསྐུར་མ་བྱེད་པར་གང་གསོལ་བ་འདེབས་པ་དེ་ལ་གྱིས། སེམས་ཅན་མ་དད་པ་དང་། ཤེས་རབ་མེད་པ་ལ་མི་རུང་བ་ཡིན་བྱས་པས[3]། དེ་མན་ཆད་ལུང་བསྟན་པ་ལྟར་མཛད་དོ།།

གདུལ་བྱ་མང་དུ་སྒྲོལ་ཞིང་བ་ལང་སྐྱོང་བར[4]བྱེད་པ་ཡིན་པས་(མཚན་ལ་) 'གོ་ར་ཀྵ' ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། ད་ལྟ[5]ཡང་ལས་འགྲོ་ཡོད་པ་ལ་དབང་བསྐུར་ལ། ལས་དག་པས་དུས་བཟང་ལ་ཊ་མ་རུའི་སྒྲ་ཙམ་ཐོས་ཤིང་། གཞན་གྱིས་ནི་མི་ཐོས་ཤིང་མི་སྣང་བའི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་སོ།།

གུ་རུ་གོ་རཀྵ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༡༠) ཙཽ་རངྒི་པ།

གུ་རུ་ཙཽ་རངྒི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གོང་དུ་བརྗོད་མ་ཐག་པའི་རྒྱལ་བུ་ཡན་ལག་བཅད་ཅིང་ཤིང་ཁང་གཅིག་པའི་ནང་དུ་གནས་པ་དེ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་

1 'དེར་བྱོན་ཁྱོད' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/ན.

2 'མ་རྒྱ་ཅིག' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

3 'མི་རུང་བ་ཡིན་ཟེར་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༡/ན. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང ༡

4 'སྐྱོང་བྱེད་པ་ཡིན་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༡/ན. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང ༣

5 'ད་ལྟ' - ཞེས་པ་ ཨ་ཧྨ་ཡད་དྲ་བྲིའི་དུས་སུའོ།

ཨཙིནྟ་པས[1]དབང་དང་ལྟུང་བུམ་པ་ཅན་ལ་སོགས་པ་གནང། "གྲུབ་པའི་དུས་ན་ལུས་ཀྱང་སྟོན་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ" ཞེས་ལུང་བསྟན་ནས་གཤེགས་སོ།།

དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་ན། རྒྱལ་པོའི་ཚོང་པ་མང་པོས་གསེར་དངུལ་མན་ཤེལ་ལ་[2]སོགས་པ་རིན་པོ་ཆེ་མང་དུ་ཁྱེར་ནས་འོངས་ཏེ[3]། (རྒྱལ་བུ་ཡོད་) ས་དེར་ཆོམ་རྐུན་སོགས་བྱུང་དོགས་ཀྱིས་[4]མཚན་མོ་འོངས་ནས་ཤིང་དེའི་རྩ་ནས་མར་ཕྱིན་པ་ན། རྒྱལ་བུ་དེས་ (ཚོང་པ་རྣམས་ཀྱི) ཁང་པའི་སྒྲ་ཐོས་ནས་སྨྲས་པ། 'དེ་སུ་ཞིག' ཚོང་པ་དེ་དག་གིས་(འདི་) ཆོམ་རྐུན་ཡིན་སྙམ་ནས་ [དེས་ནོར་བཅོམ་ཡོང་བའི་འཇིགས་པས་གཡོ་བྱས་ཏེ] "ངེད་རྣམས་སོལ་བྱེད་མཁན་[5]ཡིན་ནོ" སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་བུ་དེས་ "དེ་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག" ཅེས་སྨྲས་སོ།། དེ་ནས་ཚོང་པ་དེ་རྣམས་རང་གི་གནས་སུ་ཕྱིན་པ་དང་། གསེར་སོགས་དངོས་པོ་རྣམས་སོལ་བར་གྱུར་པ་མཐོང་ནས། ཀུན་ཏ་ལས་ཏེ། འདི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ནི་ཅི་ཡིན། སྙམ་དུ་སེམས་པར་བྱེད་དོ།། དེ་ནས་དེ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་བློ་དང་ལྡན་པ་ཞིག་གིས་སྨྲས་པ། ནུབ་མོ་འོང་དུས་ ལམ་དུ་སུ་ཡིན་འདྲི་མཁན་[6]དེ་བདེན་ཚིག་གྲུབ་

---

1 'ཨཙིནྟས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༡/ན. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང 179. Vol. 87.

2 'མན་ཤེལ་སོགས' - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/བ. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

3 'འོངས་སྨྲ།' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

4 'བྱུང་དོགས་མཚན་མོ'-སྣྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༡༡/བ སོགས་བྱུང་ངོ་། མཚན་ - པེ་ཅི ཤོག་ ༡༣

5 'སོལ་བ་བྱེད་མཁན་ཡིན་ནོ།' - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/བ པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

6) 'འདྲི་བ་དེ' - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༡/བ. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

པ་ཞིག་ཡིན་པ་[1]གོར་མ་ཆག དེ་འདྲ་བ་དེ་[2]སུ་ཞིག་ཡིན་[3]ལྟར་འདེང་ཟེར་ནས། སླར་དེ་རྣམས་ཀྱིས་དེར་ཕྱིན་པ་ན། ཤིང་གཅིག་གི་དྲུང་ན་ཡན་ལག་བཅད་པའི་མི་དེ་འདུག་པ་མཐོང་ནས། དེ་ལ་སྔར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་བྱས་ཏེ་སླར་བདེན་ཚིག་[4]འདོར་དུ་བཅུག་པས།

རྒྱལ་བུ་ན་རེ། ངས་ལན་པ་མིན་ནམ། ཡིན་ན་ཁྱེད་རྣམས་ཀྱི་ནོར་རྣམས་[5]སྔ་མ་ཁོ་ན་ལྟར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བརྗོད་ནས། ཚོང་པ་རྣམས་ལོག་སྔེ་རང་གི་ནོར་རྣམས་སྔ་མ་ཁོ་ན་ལྟར་གྱུར་པར་མཐོང་སྟེ། ཡ་མཚན་སྐྱེས་ནས་རྒྱལ་བུ་དེ་ལ་མཆོད་པའི་ཕྱིར་(དེ་ཡོད་སར་)ཕྱིན་ནས་ལོ་རྒྱུས་བྱས་པས། རྒྱལ་བུ་དེས་སྔར་གྱི་ལྷ་མས་ལུང་བསྟན་པ་དེ་དྲན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་བདག་གི་ལུས་ཀྱང་སྔ་མ་ལྟར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བརྗོད་པས། དེ་ལྟར་གྱུར་ཏོ[6]།།

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་ནས་རྫུ་འཕྲུལ་བསྟན་ལ་[7]། གདམས་ངག་ལ་གནག་པས་འགྲོ་བ་ལ་ (གདམས་ངག) ནི་མ་བསྟན[8]། འོན་ཀྱང་ཤིང་ལ་

---

1 ‘ཡིན་པར’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༢༢/བ. པེ་ཅིན་ ཤོག་ ༡༣ གོང་།

2 ‘དེ་འདྲ་བ་སུ་ཞིག་ལྟར་འདེང’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ.

3 ‘དེ་འདྲ་བ་སུ་ཞིག་ལྟར་འདེང’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ.

4 ‘སླར་བདེན་པའི་ཚིག’ - པེ་ཅིན་ ཤོག་ ༡༣ འོག

5 ‘ནོར་སྔ་མ་ཁོ་ནར’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ.

6 ‘གྱུར་ཏེ།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ.

7 ‘བསྟན་ཏེ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ. པེ་ཅིན་ ཤོག་ ༡༣ འོག

8 ‘མ་བསྟན་ལ།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག་ ༢༢/བ. པེ་ཅིན་ དེ་ཉིད།

བསྟན་པས་ཤིང་འཆི་མེད་དུ་གྱུར་པས་ད་ལྟ་ཡང་།ཡོད་ཟེར་རོ།།
འཆི་མེད་བརྙེས་པའི་ཙཽ་རངྒིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༡༡) ཡཱིནཱཔཱ།

གུ་རུ་ཡཱིནཱཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡཱིནཱཔཱ་ཞེས་བྱ་བ་བསྒྱུར་ན་པི་ཝང་ཞབས་བྱ་བའོ། །འདིའི་ཡུལ་ཀྐཏུར་ (गौड)། རིགས་རྒྱལ་རིགས། བླ་མ་ནི་བུདྡྷཔཱ། དངོས་གྲུབ་ནི་དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེ་ལས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ཡང་ཡུལ་ཀྐཏུར་འི་(ཀཽཊའི་)རྒྱལ་པོ་ལ་སྲས་གཅིག་ཡོད་པ་ལ[2]། ཕ་མ་དང་། འབངས་རྣམས་ཤིན་ཏུ་གཅེས་པར་གྱུར་ནས། མ་མ་བརྒྱད་ལ་སོགས་པ་ལ་གཏད་དེ་སྐྱེད་བསྐྱེད་བསྐྱངས་པ་དང་། རྒྱལ་བུ་དེ་སྐུ་སྐྱེས་འབུལ་བའི་རོལ་མོ་མཁན་དུ་མ་དང་རྟག་ཏུ་ལྷན་ཅིག་ཏུ་བསྡད་པས། ཤེས་པ་གོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས། ཏཾབུརའི་སྒྲ་ལ་བློ་རྩེ་གཅིག་ཏུ་ཞུགས་ཤིང་པི་ཝང་སྒྲེང་བ་ལས། འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་གཞན་ལ་བློ་སྣང་ཡེ་མི་འཇུག་པས། དེའི་ཡབ་ཡུམ་དང་བློན་པོའི་ཚོགས་དང་འབངས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་ལ་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད། རྒྱལ་བུ་འདི་ནི་ཡབ་རྒྱལ་པོའི་རྒྱལ་ཚབ་ཀྱི་ཆེད་དུ་སྐྱེད་བསྐྱངས་པ་ཡིན་ལ། རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་བྱ་བ་མི་བྱེད་པར་པི་ཝང་གི་སྒྲ་ལ་ཆགས་པས་ཅི་བྱེད་ཅེས་གླེང་བ་ན། རྒྱལ་

1 ‘ད་ལྟ་ཡོད……’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད

2 ‘ཡོད་པ་ལས’ - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༣ འོག

བུ་དེའི་གན་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་བུདྡྷ་པཱ་བྱོན་པས་རྒྱལ་བུ་དད་པར་གྱུར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ལ་ཕྱག་དང་བསྐོར་བ་བྱས་ནས་གསོང་པོར་སྨྲ་བའི་གཏམ་སྣ་ཚོགས་ཞུས་སོ།[1]།།

རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་རྒྱལ་བུ་དེའི་ཐད་དུ་ཅུང་ཞིག་གཞུགས་ནས། རྒྱལ་བུ་དེ་འདུལ་བའི་དུས་ལ་བབ་པར་གཟིགས་ནས། རྣལ་འབྱོར་པས་རྒྱལ་བུ་ལ་རྒྱལ་བུ་ཁྱོད་ཆོས་མི་བྱེད་དམ། ཞུས་པ་ལ། རྒྱལ་བུ་དེ་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ་བདག་ཆོས་བྱེད་པ་ལགས་[2]ཏེ། བདག་གིས་རོལ་མོ་ཏཾབུ་ར་འདི་སྤྱོང་བར་མི་ནུས་པར་འདུག་པས། འདི་མ་སྤྱངས་པར་ཆོས་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་མཆིས་ན་བདག་ཆོས་བྱེད་ལགས་སོ།། ཞེས་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་རེ། ཆོས་བྱེད་པའི་དད་པ་དང་བརྩོན་འགྲུས་ཡོད་ན་པི་ཝང་མ་སྤྱངས་པར་ཆོས་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་དང་གདམས་[3]ངག་བདག་ལ་ཡོད། ཞུས་པས།

དེས་དེ་ཞུ་ཟེར་ནས། རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་རྒྱུད་མ་སྨིན་པ་སྨིན་པར་བྱེད་པའི་དབང་བསྐུར། བསྒོམ་པའི་གདམས་[4]ངག་ནི།

རྒྱལ་བུ་ལ་འདི་སྐད་དུ། ཏཾབུ་རའི་སྒྲ་རྣ་བར་ཐོས་[5]པའི་རྣམ་རྟོག་དོར་ལ།

---

1 'ཞུས་ཏེ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/ན. པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༨ གོང 179-vol 87.

2 'ཆོས་བྱེད་པ་ལ་བདག་གི་རོལ་མོ' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༨ གོང་།

3 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༨ གོང་ དེ་ཉིད།

4 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༨ གོང་།

5 'རྣ་བར་གྲགས་པའི་རྣམ་རྟོག' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༨ གོང་ དེ་ཉིད།

སེམས་ཀྱི་དམིགས་པ་དང་སྣྲའི་རྣམ་རྟོག་གཉིས་གཅིག་ཏུ་གྱིས་ལ་སྒོམས་[1]ཤིག་བྱས་ནས། དེས་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པས་ལོ་དགུ་ནས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། མར་མེ་ལྟ་བུའི་འོད་གསལ་གྱི་ཉམས་སྐྱེས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོབ། མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་དུ་མ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེས་ནས། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཨིནྡྲ་(ཀཱ་)པཱ་ཞེས་བྱ་བར་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། ཀྐྟུར[གོཊ]འི་གྲོང་ཁྱེར་གྱི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཆོས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བསྟན།

མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཨིནྡྲ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༡༣) གུ་རུ་ཤཱནྟིཔཱ།

གུ་རུ་ཤཱནྟི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། མགདྷའི་གྲོང་ཁྱེར་ན་རྒྱལ་པོ་དེཝ་པཱ་ལས[2] རྒྱལ་སྲིད་མཛད་པའི་དུས་སུ་ཝི་ཀྲ་མ[3]ཤཱི་ལ་ར་གྲམ་ཟེའི་རིགས་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ར་ཏྣཱ་ཀ་ར[4]ཤཱནྟི་ཞེས་བྱ་བ་རིག་པའི་གནས་ལྔ་

---

1 ‘བསྒོམས་ཤིག’ - པེ་ཅི་ དེ་ཉིད།

2 ‘དེཝ་ཕལ’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༥ འོག་ དེཝ་ཕལ སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣/བ.

3 ‘པིཀྲམལ་ཤིལ’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༥ དེ་ཉིད། བིཀྲམཤིལ སྒྲུབ་ཀུན, ཤོག ༡༣/བ.

4 ‘ར་ཏྣཨཱཀར་ཤཱནྟི’ - སྒྲུབ་ཀུན, ཤོག ༡༣/བ. པེ་ཅི་, ཤོག་ ༡༥ འོག, དེ་ཉིད།

ལ་མཁས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཞིག་བྱུང་སྟེ། དེ་མཁས་ཤིང་བཙུན་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྐྱན་པ་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་པར་གྱུར་པ་དང་། དེའི་དུས་སུ་སིངྒལའི་གླིང་གི་རྒྱལ་པོ་ཀཱཡིན་བྱ་བ་རང་གི་བསོད་ནམས[1]ལས་འདོད་ཡོན་གྱིས་བྲེལ་བ་མེད་པ་ཞིག[2]བཞུཊ་པ་ལས། སིངྒལའི་གླིང་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་སྤྲར་མ་བྱུང་[3]ཞིང་འཛམ་བུའི་གླིང་གི་མི་འོངས་པ་ཀུན་ལས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐོས་ལ། ཆོས་སྟོན་པའི་གང་ཟག་དང་ནི་མ་འཕྲད་པའི་དུས་དེར་མགནྷ་ན་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཤཱུཏྲིཔཱ་བྱ་བ་མཁས་པ་ཆེན་པོ[4]ཞིག་བཞུགས་[5]པ་ཐོས་ནས། རྒྱལ་པོ་ཀཱཡིན་ལ་སོགས་པ་སིངྒལའི་གླིང་གི[6]སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྐུ་སྐྱེས་དང་སྤྱན་འདྲེན་གྱི་ཕོ་ཉ་བཏང་སྟེ། ཕྱིཀྲམ[7]ཤཱིལར་མཐར་གྱིས་

---

1 ‘བསོད་ནམས་འདོད་ཡོན’ - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

2 གཅིག, - པེ་ཅི དེ་ཉིད།

3 འདིར, “གླིང་དེར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་སྤྲར་མ་བྱུང་” - ཞེས་པ, ཅུང་ཟད་མི་ལེགས་ཏེ། གླིང་དེར་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་དང་། གསང་སྔགས་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་བསྟན་པ་སྔ་མོ་ནས་དར་ཡོད་པ་དང་། གནས་བརྟན་སྡེ་པའི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་དགོངས་འགྲེལ་བཅས་པ་སྟོན་པ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ནས་ལོ་བརྒྱ་ཙམ་གྱི་རྗེས་ཆོས་རྒྱལ་ཨཤོཀའི་དུས་ནས་ད་བར་ཉམས་མེད་དུ་ཡོད་པ་དང་། གླིང་དེར་སྟོན་པ་དངོས་སུ་ཕེབས་ཏེ་གསུང་བའི་མདོ་སྡེ་རྣམས་ད་ལྟ་ཡང་བཞུགས་པས་སོ།། དེས་ན་གོང་སྨོས་ཀྱི་ཚིག་དོན་ ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་ཉམས་ནས་མེད་པའི་དོན་ཡིན་པར་སེམས་སོ། །

4 ‘གཅིག’ - པེ་ཅི དེ་ཉིད

5 ཟེར་པ་ཐོས, - པེ་ཅི དེ་ཉིད།

6 ‘གླིང་པའི’ - སྣར་ཀུན, པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣/བ. པེ་ཅི ཤོག ༡༥, འོག

7 ‘བིཀྲམལཤིལ’ - སྣར་ཀུན པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༣/བ. དེ་ཉིད། བིཀྲཱམལཤིལ པེ་ཅི, ཤོག ༡༥ འོག དེ་ཉིད།

ཕྱིན་ནས། ཡོ་ཉ་བས་ནང་པར་སློབ་དཔོན་ལ་ཕྱག་ཕྱས། སིདྡྷལའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པས་བསྐུར་བའི་སྐྱ་སྐྱོས་གསེར་དང་དངུལ་དང་མུ་ཏིག་དར་ཟབ་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་ནས་འདི་སྐད་དུ།

རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པས་ཞུ་[1]བ། "དངོས་ཅག་གླིང་ཕྲན་མཐའ་འཁོབ་ཏུ་ནི་སྐྱེས། མ་རིག་པའི་མུན་པ་ནི་འཐིབས། འདོད་ཆགས་ཀྱི་མེས་ནི་བསྲེགས། ཞེ་སྡང་གི་མཚོན་གྱིས་ནི་གཅེས། ལོག་པའི་རྟོག་པས་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྣང་བ་ནི་གཡོགས། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་ཐར་ལམ་ནི་སྟོར་ན། བདག་ཅག་རྣམས་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་དགོངས་ནས་སིདྡྷལའི་གླིང་འདིར་འགྲོ་དོན་ལ་མི་གཤེགས་སུ་མི་རུང་ཞུ་ཡིན་གདའ།" ཞེས་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་དགོངས་པ་མངོན་དུ་མཛད་ནས་གཤེགས་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ།།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ཤཱནྟི་པས་འཁོར་སློབ་མའི་ཚོགས་ཉིས་སྟོང་ཙམ་དང་། སྡེ་སྣོད་ཀྱི་གླེགས་བམ་རྣམས་རྟ་དང་གླང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་བཀལ་ནས་ཆས་ཏེ། ནཱལནྡཱ་དང་། ཨོདནྟ་[2]པུ་རི་[ཨོཾཏཡནྟཔུ་རི་]དང་། རྒྱལ་པོའི་ཁབ་དང་། རྡོ་རྗེ་གདན་ལ་སོགས་པའི་གྲོང་རྣམས་རིམ་གྱིས་བགྲོད་ནས། སིདྡྷལའི་[3]གླིང་གི་རྒྱ་མཚོའི་འགྲམ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། སྔོན་ལ་ཡོ་ཉ་བཏང་སྟེ། ཕྱི་ནས་སློབ་དཔོན་འཁོར་དང་བཅས་པ་རྣམས་གྲུར་ཞུགས་ནས་བྱོན་པ་དང་། ཡོ་ཉ་བས་

---

1 'སོགས་པའི་ཞུ་བ།' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ཨོདནྟཔུ་རི་དང་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༥ གོང་, དེ་ཉིད།

3 'སིདྡྷ་གླིང་'' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/ན, 25. 14. པེ་ཅི, ཤོག ༡༥ གོང་ དེ་ཉིད།

སློབ་དཔོན་ཞབས་ཀྱི་ཡོད་དོ་བྱ་བའི་གདམ་སླས་པས། རྒྱལ་པོ་ཀ་པི་ན་དང་།[1] བློན་པོ་དང་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་དགའ་བ་སྐྱེས་ཏེ། དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རང་རང་གི་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་བློས་བཏང་སྟེ། རྒྱ་མཚོའི་ཕྱོགས་སུ་ཡིད་གཏད་ནས་ཞག་བདུན་ལོན་པ་དང་། གདུགས་དང་གླང་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཐམས་ཅད་མཐོང་ནས་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་དགའ་སྟེ། རང་གི་ཡུལ་ནས་རྒྱ་མཚོའི་བར་ཐམས་ཅད་དུ་ནི[2]ཕྱུག་དར་བྱས། དར་ལ་སོགས་པས་ས་གཞི་ཐམས་ཅད་གཡོགས་ནས་དེ་ལ་སློབ་དཔོན་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས[3]ཞབས་བཞག་ནས་གཤེགས་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་ཀ་པི་ན་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མེ་ཏོག་དང་། བདུག་སྤོས་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྒྱ་ཆེར་མཆོད་དེ། སློབ་དཔོན་དགྱེས་པའི་གནས་མལ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ཕུལ་ནས་ལོ་གསུམ་གྱི་བར་དུ་སྡེ་སྣོད་ཀྱི་ཆོས་མང་དུ་བཤད་དོ[4]།།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ཤཱནྟིཔཱ་འཁོར་བཅས་ཡུལ་དབུས་སུ་ཆས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ཀ་པི་ན་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྟ་དང་གླང་པོ་དང་གསེར་དངུལ་དང་མུ་ཏིག་ལ་སོགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཕུལ་ནས་ཡུལ་དབུས་སུ་ལོག་པ་ལ་ལམ་གཉིས་ཡོད་པའི་རིང་ཤོས་ནས་ཆས་སོ།།

---

1 'ཀ་པི་ན་བློན་པོ་དང་།' -སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི་-ཤོག ༡༥ གོང་ དེ་ཉིད།

2 'ཐམས་ཅད་ནི་ཕྱུག' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༥ གོང་ དེ་ཉིད།

3 'ཐམས་ཅད་ཀྱི' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/ན.

4 'ཆོས་མང་དུ་བཤད་ནས།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༥ གོང་ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ༡༣ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་ནཱམིཤྲཱར་[1]བྲོ་བ་རྒྱལ་པོ་ནཱམཊས་ལཀྵཔུརིར་ཆུང་མ་འཚོལ་བའི་[འཚོལ་བར་འགྲོ་བའི་]དུས་སུ་ས་དེར་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་རྟེན་ལྷ་ཁང་བྲུས་ནས་ཡོད། དེའི་མིང་(དུ་ཡང་)ནཱམིཤྲཱརའི་ཡུལ་བྲོ་བ་དེར་ཕྱིན་པ་དང་། དེ་ནས་(ཡུལ་དབུས་སུ་འགྲོ་སྐབས་)བར་ན་(མི་གྲོང་)མེད་པའི་ལམ་ཞག་བདུན་(འགྲོ་དགོས་པ་)ཡོད་པ་ལ། འཁོར་རྣམས་ལ་(སློབ་དཔོན་གྱིས་)ཞག་བདུན་གྱི་ཆས་ཁྱེར་ཅིག་གསུངས་ནས། དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ་(ཕྱིན་ནས་)ཞག་བཞིའི་ལམ་དུ་ཕེབས་པ་ན། སྐལ་ལྡན་ཏོག་ཙེ་པ་དང་མཇལ་ཏེ། དེའི་ལོ་རྒྱུས་ནི་[2]ཁོ་རང་གི་སྐབས་སུ་སྟོན་ནོ།། །(དེ་ནས་)སློབ་དཔོན་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཁྲིགྲམཤཱིལར་[3]བྱོན་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ཤིན་ཏུ་བགྲེས་པར་གྱུར་པས་སྤྱན་ལོང་ཞིང་ལུས་པོས་སྒྲུར་མི་བཟོད་ནས། སློབ་མ་རྣམས་ཀྱིས་མཇེའི་ཞོ་ལ་ཁ་ར་བཏབ་ནས་འདྲེན་པ་ལས། གཞན་ཁ་ཟས་རགས་པ་རྣམས་སྤྲངས་ནས་ཕྲ་བ་བསྟེན་ནོ།།

ཡོངས་[གྲཿ]སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་[4]ལོ་བརྒྱ་རྩ་བཞེས་པའི་དུས་སུ། སློབ་དཔོན་ནི་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རྟོག་པའི་ངང་ལ་གནས་ལ། ཏོག་ཙེ་པས་[5]རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་བསྒོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ་གཅིག་མའི་ཆོས་ཉིད་ལ་གནས་སོ།།

---

1 ‘དགའ་བྱེད་དབང་ཕྱུག’ - ཅེས་འདི་ཉིད་ལས་བྱུང་།

2 ‘ལོ་རྒྱུས་ཁོ་རང་གི་སྐབས’-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/བ. 26 14 པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༥ འོག དེ་ཉིད།

3 ‘ཁྲིགྲམཤཱིལ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

4 ‘སློབ་དཔོན་གྱི་ལོ·····’ - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༥ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘ཏོག་ཙེ་པ་རྣམ་པར’’ - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

དེ་ལས་བཞེངས་པ་ལས། སློབ་དཔོན་ཤཱནྟིཔཱ་ལ་ནི་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱིས་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་ལ། ཏོག་ཙེ་པ་ལ་ནི[1]མཁའ་འགྲོ་མ་ཀུན་དང་། ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པས་བདུད་རྩི་སྤྱི་བོ་ཚངས་པའི་བུ་ག་ནས་མར་བླུགས་ནས་ཁྱིམ་པར་བྱས་སོ།། ལྷ་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ན་རེ། འདི་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དངོས་ཡིན་ཟེར་རོ།། ཏོག་ཙེ་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས་ལྷའི་འདོད་ཡོན་ཐམས་ཅད་[2]བྱུང་ངོ་། (ཏོག་ཙེ་པས་)བླ་མའི་གདམས་ངག་མ་ཐོབ་བར་ལ་ཕྱི་རོལ་གྱི་རི་བཀོས་ལ། ཐོབ་ནས་སེམས་ཀྱི་རི་བོ་བཀོས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་གསུངས་སོ།།

དེ་ནས་ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་གནས་སུ་སྤྱན་དྲངས་པ་ལ། ཏོག་ཙེ་པ་གཤེགས་སུ་མ་བཞེད་ནས། (དེའི་ཞལ་ནས།) བདག་ནི་བླ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བ་ཡིན་ཏེ། སངས་རྒྱས་པས་ཀྱང་བླ་མ་བཀའ་དྲིན་ཆེ་ལ། དེ་ཅི་སྙེ་ན[3]།

བླ་མ་སངས་རྒྱས་བླ་མ་ཆོས།།
དེ་བཞིན་བླ་མ་དགེ་འདུན་ཏེ།།
དམ་པ་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི།།
དམ་པའི་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ།།

---

1 'ཏོག་ཙེ་པ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ···' - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད། སྣུབ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 'ཐམས་ཅད་འཕེལ་བྱུང་ངོ་།།' - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

3 'དེ་ཅི་སྙེ་ན' ཞེས་པ་ནས་ 'གསོལ' ཞེས་པའི་བར་ པེ་ཅི་ དཔར་མར་མི་འདུག་སྙེ་ཆད་པར་སྣང་།

ཅེས་གསུངས་ནས།།[1] ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱན་གྱིས་གཟིགས་ན་ཡུལ་གཉིས་ཀྱི་བར་ན་ཟླ་བ་དྲུག་གི་ལམ་ཡོད་ཀྱང་སྐད་ཅིག་ལ་ཕྱིཀྲམཤི་ལར་བྱོན་ནས། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལུས་ཀྱིས་བླ་མ་ལ་ཕྱག་དང་བསྐོར་བས་བསྙེན་བཀུར་མཛད་པ་ལ[2]། བླ་མ་འཁོར་དང་བཅས་པས་མ་མཁྱེན་ནས་(ཡང་)ཏོག་ཙེ་པས་རྣམ་སྨིན་གྱི་ལུས་དངོས་སུ་བསྟན་ནས་ཕྱག་དང་བསྐོར་བ་གྲངས་མེད་པ་མཛད། ཞབས་ལ་མགོ་བོས་གཏུགས་པ་དང་། ཤཱནྟི་པས་སུ་ཡིན་དྲིས་པ་ན། བདག་བླ་མའི་སློབ་མ་ཡིན་ཞེས་ཞུས་པ་ན། བདག་ལ་སློབ་མ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད་པས་ངོས་མ་ཟིན་གསུངས་པས། སྔར་བདག་ཏོག་ཙེ་པ་ལགས་ཞུས་པས། དཔོན་སློབ་གཉིས་[3] བརྡས་མཇལ་ནས། ཡིད་ཕེབས་པའི་གཏམ་མང་དུ་མཛད་ནས་'[4]།

བླ་མས་སློབ་མ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་ཅི་ཐོབ། གསུངས་པས་ཏོག་ཙེ་པས་དངོས་ཀྱིས་བླ་མའི་གདམས་[5]ངག་ཉམས་སུ་བླངས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཐོབ་ནས་མཆི་ཞུས་པས། བླ་མའི་ཞལ་ནས་ངས་ནི་སློ་བ་གཙོ་བོར་བྱས་ཤིང་སྒྲུབ་པ་གཙོ་བོར་མ་བྱས་པས། དོན་དང་མ་ཕྲད་ལ། ཁྱོད་ཀྱིས་ནི་སྒྲུབ་པ་གཙོ་བོར་བྱས་ཤིང་སློ་བ་གཙོ་བོར་མ་བྱས་པས་[6]དོན་དང་མཇལ་

1 'དེ་གསུངས་ནས།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༥ འོག 180 vol. 87.

2 'མཛད་པ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༦ གོང, དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༣/བ.

3 'སློབ་དཔོན་གཉིས་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༦ གོང དེ་ཉིད།

4 'མཛད་དེ' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

6 'མ་བྱས་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།· སྒྲུབ་ཀུན ལོག ༡༩ ན 27. 14.

ནས་འདུག་[1]ཅིང་། ངས་ཁྱོད་ལ་གདམས་ངག་སྦྱིན་པ་ཡང་བརྗེད་ནས་འདུག་[2] ད་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ལ་གདམས་ངག་ཀྱང་སྟོན། ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་ཅི་ཡོད་པའང་སྟོན་ཅིག་གསུངས་པས།

ཏོག་ཙེ་པས། དབེན་པའི་ས་ཕྱོགས་སུ་བླ་མ་ལ་ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་ཡོན་ཏན་དུ་མ་ཡང་བསྟན། ཕྱིར་བླ་མ་རང་གི་གདམས་ངག་ཀྱང་ཡར་ཕུལ། བླ་མས་ཀྱང་དགུང་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་བླངས་པས། བླ་མ་རཏྣཀར་''[3]ཤཱནྟི་པས་ཀྱང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་དེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་རཏྣཀར་ཤཱནྟི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༡༣) གུརུཏནྟི་པཱ།

གུརུཏནྟིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། སིནྡྷོནགར་བྱ་བ་ན། ཐགཱ་མཁན་ཞིག་ལ་བུ་མང་དུ་ཡོད་པ་ལས། དེ་རྣམས་ཀྱི་ཕས་ཡུལ་དེར་ཐགས་ཀྱི་ལས་བྱས་པས་དེ་འབྱོར་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཏོ།།

དེར་བུ་རྣམས་ལ་རིཊ་དང་འཆམས་པའི་མནའ་མ་བླངས་[4]ཏེ་འགྲོགས་

1 ‘འདུག་པ།’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘འདུག་པ།’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘རཏྣཨཱཀར’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘མནའ་མ་བསུས་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག 180. vol 87.

པས།   ཡུལ་དེར་ཐགས་མཁན་གྱི་རིགས་རྒྱུད་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འཕེལ་བར་གྱུར་[1] ཏོ།།   (དུས་ཀྱི་རིམ་པས་) ཐགས་མཁན་དེའི་བུད་མོ་ནི་ཤི།   ཐགས་མཁན་རང་གི་ལོ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་དགུ་ལོན་པ་ན་རྒས་ཤིང་འཁོགས་པས་ལུས་ཀྱིས་སྒྱུར་མི་བཟོད་པ་དང་།   མཐའ་མ་ཀུན་གྱི་གན་དུ་གསོ་རེས་བྱེད་ཅིང་ཡོད་པ་ལས། དེ་རྒས་པའི་སྤྱོད་ལམ་ལ་ཀུན་གྱིས་འཕྱའ་ཞིང་བཞད་གད་དུ་བྱེད་པ་དང་། དེར་མཐའ་མ་ཀུན་གྱིས་གྲོས་བྱས་པ།

འོ་སྐོལ་གྱི་གྱོས་པོ་རྒན་པོ་འདི་[2]མིས་མཐོང་ན་ཞེ་ལྡོག་ལ། རང་རེ་ཀུན་ཀྱང་སྡིག་གསོག་པར་འདུག་པས། སྐྱེད་མོས་ཚལ་དུ་རྩའི་སྤྱིལ་པོ་བྱས་ཏེ་དེར་བཞག་ལ། ཟ་མ་རེས་མོས་ཀྱིས་[3]བསྐྱལ་ལོ་ཟེར་ནས་ཐམས་ཅད་མཐུན་ཏེ་དེ་བཞིན་དུ[4]བྱས་སོ།།

དེ་ནས་ལན་གཅིག་གི་ཚེ་བླ་མ་ཛཱ་ལནྡྷ་རཔཱ་བྱ་བ་མཐར་གྱི་ཡུལ་དེར་བྱོན་པ་དང་། ཐགས་མཁན་གྱི་བུ་ཆེ་ཤོས་ཀྱི་གན་དུ་བྱོན་ནས་[5]བདག་ལ་ཟས་སྦྱིན་ཅིག་བྱས་པ་ལ[6] དེར་བཞུགས་ཤིག་ཟེར་ནས། ནང་དུ་གཡོས་སྣ་ཚོགས་

---

1 ‘གྱུར་ཏེ……’ - ཤོག ༡༨/ན. 27. 14.

2 ‘གིན་པོ་འདིས’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/བ. དེ་ཉིད།

3 ‘ཟས་རེས་ཀྱིས་བསྐྱལ’ - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༦ འོག དེ་ཉིད།

4 ‘དེ་བཞིན་ཏུ་བྱས’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘གམ་དུ་བྱོན’ - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༦ འོག དེ་ཉིད།

6 ‘བྱས་པས’ - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

བྱས་ཟིན་ནས། ཚུང་མ་ན་རེ་ཁྱོ་ལ་ད་ནང་དུ་སྤྱན་དྲོངས་ཤིག་ཟེར་ནས། དེ་བཞིན་[1]བྱས་ཏེ། བླ་མ་ནང་དུ་བྱོན་ནས་ཟས་ཀྱི་བྱ་བ་གྲུབ་སྟེ། བླ་མ་ཛྷ་ལནྡྷར་པ་གཞན་དུ་གཤེགས་པར་ཆས་པ་ལ། ཐགས་མཁན་གྱི་ཚུང་མས་བླ་མ་གཞན་དུ་མ་གཤེགས་པར་གནས་འདིར་གཟིམས་པར་ཞུ་ཞུས་པས། བླ་མས་བདག་མིའི་ནང་[2]དུ་མི་ཉལ་གསུངས་པས། འོ་ན་དངོས་ཅག་གི་སྐྱིད་མོས་ཚལ་དུ་གཟིམས་པར་ཞུ་བྱས་ནས། སྐྱིད་མོ་ཚལ་དུ་སྤྱན་དྲངས་ཏེ། ཐགས་མཁན་གྱིས་མི་མར་ལ་སོགས་པ་བསྐྱལ་ནས་དེར་བཞུགས་པ་ན། ཐགས་མཁན་གོད་པོས་མིའི་སྒྲ་ནི་ཐོས། སུ་ཡིན་ནི་ཆ་མེད་ནས་དྲིས་པ། དེ་ན་སྒྲ་གྲགས་པ་དེ་སུ་ཡིན། སློབ་དཔོན་གྱིས་བདག་མགྲོན་པོ་ཆོས་པ་ཞིག་ཡིན། ཉིད་རང་སུ་ཡིན། སྨྲས་པ་དང་། དེ་ན་རེ། བདག་ཐགས་མཁན་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཕ་ལགས་ཏེ། བདག་གཞོན་པའི་དུས་སུ་གནས་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཀུན་གྱི་བདག་པོ་དངོས་ཡིན་ཀྱང་། ད་ལྟ་བུ་དང་མནའ་མ་ཀུན་གྱིས་བདག་ལ་འཕྱ་སྨོད་ཅིང་། གཞན་གྱིས་མཐོང་གི་[3]དོགས་ནས་སྐྱིད་མོས་ཚལ་འདིར་སྦས་ནས་བཞག་པ་ཡིན་ལགས། འཁོར་བའི་ཆོས་ལ་སྙིང་པོ་མེད་པ་འདི་འདྲ་བ་ལགས་སོ།། ཞེས་སྨྲས་[4]པ་ལ། ཛྷ་ལནྡྷརས་ཐགས་མཁན་ལ་གསུངས་པ —

---

1 'དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ།' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ཁྲིམ་པའི་ནང་དུ་མི་ཉལ' ཞེས་པའོ།

3 'མཐོང་གིས་དོགས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/བ.

4 'སྨྲ་བ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/བ. དེ་ཉིད།

འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་ནི་མི་རྟག་པ། སྲིད་པར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་སྡུག་བསྔལ་བ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་བདག་མེད་པ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ནི་ཞི་ཞིང་བདེ་བ་ཡིན་པས། ཤི་རྒྱུགས་ཀྱི་ཆོས་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། ཐགས་མཁན་གན་པོས་དགོས་ཞུས་ནས། ཛྙལནཀྐ་ར་པས་ཐགས་མཁན་དེ་ལ་[1]དགྱེས་རྡོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་(བཅུག་ནས་)དབང་བསྐུར། གདམས་[2]ངག་བྱིན་ནས་བསྒོམ་[3]དུ་བཅུག་སྟེ། བླ་མ་གཞན་དུ་གཤེགས་སོ།[4]།

ཐགས་མཁན་དེས་ཀྱང་བླ་མའི་གདམས་ངག་ཡིད་ལ་བྱས་ཏེ། སྣང་བཞིན་མཐའ་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ལ་ཁ་མི་ཟེར་བར་[5]ངག་བསླམས་པར་བྱས་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་སྒྲུབ་པ་བྱས་པས་[6]ཡོན་ཏན་(གྱི་རིགས་)མང་པོ་ཐོབ་པ་མིས་མ་ཚོར་བ་ལ། དུས་གཅིག་ན་བུ་ཆེ་བ་དེས་ཟ་འོག་བཟང་པོ་ཞིག་བཏགས་[7]ནས་དགྲིས[8]བྱེད་པའི་བྱ་བ་ལ་གཡེངས་ཏེ་ཕ་ལ་ཟན་སྐྱེལ་བ་བརྗེད་པ་དང་། མཚན་མོ་མཐའ་མས་དྲན་ནས་ཁྲོ་ལ་སོགས་པས་མ་ཚོར་བར་[9]ཟས་སྐྱེལ་དུ་

1 ‘དེ་དགྱེས་རྡོར་’’-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༥/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༡༧ གོང 181. vol. 87

2 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘གོམ་དུ་བཅུག་ཏེ’ - ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘གཤེགས་པ་ནོ།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/ན. 29 14.པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘ཁ་ཡང་མི་ཟེར་ངག་བསླམས’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ གོང དེ་ཉིད།

6 ‘བཅུ་གཉིས་སྒྲུབ་པ་བྱས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ གོང དེ་ཉིད།

7 ‘ཞིག་རྟགས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

8 ‘བཀྲ་ཤིས་བྱེད’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

9 ‘ཁྲོ་ལ་སོགས་པའི་མིས་མ་ཚོར་བར’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ གོང་ དེ་ཉིད།

ཕྱིན་པ་ན། སྤྱིལ་པོའི་ནང་ན་མི་མར་གྱི་སྣང་[1]བ་ཆེན་པོ་དང་། བུ་མོ་བཅོ་ལྔ་ཙམ་གྱིས་བསྐོར། ཁ་ཟས་ཀྱི་རྣམ་པ་གྲུ་ནོམ་པ་མང་པོ་དང་། མི་ཡུལ་དུ་མི་འབྱུང་བའི་གོས་དང་། རྒྱན་མང་པོ་ཐོགས་པར་མཐོང་ནས་རིངས་པར་ལོག་སྟེ། ཁྲོ་ལ་ཉིད་ཀྱི་ཕ་རྒན་བལྟར་འདོངས་[2]བྱས་པས། ཁྲོས་ཕ་ཤི་བ་ཡིན་སྙམ་ནས་ངུས་པ་ན། མི་གཞན་ཡང་འོངས་ནས་སྐྱིད་མོས་ཚལ་དུ་བལྟར་ཕྱིན་པས། སྔ་མ་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐོང་ནས་ཡ་མཚན་སྐྱེས་ཏེ། ནང་དུ་ལོག་ནས་སྔར་གྱི་གཏམ་བརྗོད་པས་བུ་ལ་སོགས་བས་གཉེན་ཀུན་འདི་འདྲ་བ་མི་མ་ཡིན། འདྲེ་གཅིག་འདུག་[3]ཟེར་ནས་བསྡད་དོ།།

ནངས་[4]པར་མི་ཀུན་གྱིས་ཐོས་ནས་སེནྡྷ་ནགརའི་མི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བལྟར་ཕྱིན་ནས། ཕུག་བྱས་པ་དང་། དེ་ཕྱིར་བྱུང་བ་ན་ལུས་བརྗེས་ཏེ། ལོ་མཙུ་དྲུག་ལོན་པའི་ན་ཚོད་དུ་གྱུར་ནས་སྐུ་ལས་འོད་ཟེར་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བྱུང་བས། མི་ཀུན་གྱི་མིག་གིས་[5]བལྟར་མི་བཟོད་པ་དང་། ལུས་མི་ལོང་གཡའ་དག་པ་ལྟར་སོང་བ་སྣང་བ་ཐམས་ཅད་འོད་དུ་ཤར་ཏེ། མིང་ཡང་དཀྱིཔཱ་ཞེས་

1 ‘གནང་བ’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘བལྟར་འདོང’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘འདི་འདྲ་བ་མི་མ་ཡི་འདྲེ་ཅིག་འདུག་ཟེར’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༥/ན. 29. 14.

4 ‘ནང་པར’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘མི་ཀུན་གྱིས་མིག་གིས’ སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༥/ན དེ་ཉིད། ‘མི་ཀུན་གྱིས་མིག་གི་བལྟར’ པེ་ཅི ཤོག ༡༧ འོག དེ་ཉིད།

ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ[1]།།

འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཛད་དེ། མཐར་སེནྡྷནགརའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོཊ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དང་བཅས་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

དེས་ན་རང་གི་དད་གུས་དང་བླ་མའི་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་བླངས་ན[2]། ན་ཚོད་རྒ་ན་ཡང་[3]ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ཏུ་རུང་བ་ཡིན་གསུངས།

གུརུཏནྟིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

༡༤) གུརུཙམརིཔཱ།

གུརུཙམརིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི[4]། ཙམརིཔཱ་ཞེས་བྱ་བ་ལྷམ་མཁན་ཏེ། དེའི་ཡུལ་[5]རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས། ཁྱིཧྣནགར་བྱ་བའི་གྲོང་ཁྱེར་ན། བཟོ་རིགས་མི་

1 ‘གྲགས།’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘བླངས་ནས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ དེ་ཉིད།

3 ‘གིན་པ་ཆེ་འདི་ཉིད’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘གུརུཙམརིཔཱ’ ཞེས་བྱ་བ་ལྷམ་མཁན་དེ། ‘དེའི་ལོ་རྒྱུས’ པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། ‘ལྷམ་མཁན་ཏེ’ སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

5 དེའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ ཞེས་སོགས་བྱུང་སྟེ། འདིར་འགྱུར་མི་ལེགས་པར་འདུག་སྟེ། བསྒྱུར་བཅོས་བྱས་ན - གོང་ལྟར་ལ་མ་བྱས་ན -“གུརུཙམརིཔ་ཞེས་བྱ་བ་ལྷམ་མཁན་ཏེ། འདིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས།” ཞེས་བྱུང་། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༥/བ. པེ་ཅི ཤོག ༡༧ འོག 181,vol.87.

འདྲ་བ་བཅོ་བརྒྱད་ཚང་བར་ཡོད་པ་ལས། རིགས་ལྡམ་མཁན། དེ་ཤྲིཛྷུནགར་[1] ན་ལྡམ་གསར་རྙིང་གི་བཟོའི་ལས་བྱེད་ཅིང་། ལས་དེས་རྟག་ཏུ་འདའ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་པས། དེའི་གམ་[2]དུ་དགེ་སློང་ཞིག་[3]འོངས་པ་ལ། དེས་ལྡམ་གྱི་བཟོ་འཕྲོ་བོར་ནས་དགེ་སློང་དེའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་བྱས་ཏེ་འབེལ་བའི་གཏམ་ལེགས་པར་བྱས་ནས།

བདག་འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་ཆོས་ཤིག་[4]བགྱིད་སྙམ་པ་ལ། དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་མ་འཕྲད་པས་ད་དུང་ཆོས་སྒོར་མ་ཞུགས། ད་འདི་དང་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀ་ལ་ཕན་པའི་ཆོས་ཤིག་ཞུ་ཞེས་ཞུས་པས། ཁྱོད་ཀྱི་ཆོས་སྐྱབ་ནུས་ན་ངས་སྦྱིན་གྱི་[5]གསུངས་པ་ལ། ལྡམ་མཁན་དེས་དགེ་སློང་ལ་[6]བདག་རིགས་ངན་གྱི་ཁྱིམ་དུ་ཉིད་བཤོས་གསོལ་བར་གནང་ངམ་ཞུས་པས། དགེ་སློང་དེས་[7] དོ་ནུབ་མཚན་ལ་འོངས་ནས་[8]ཟའོ་གསུངས་པས། དེས་ཆུང་མ་སོགས་རང་གི་ཁྱིམ་གྱི་མི་ཀུན་ལ་དགེ་སློང་བྱོན་པའི་བརྡ་སྤྲད་དོ།།

---

1 'རང་ཉིད་ཀུང་ཤྲིཧྲུནགར་ན' པེ་ཅི ཤོག ༡༦ འོག དེ་ཉིད། 'ཤྲིཧྲུ' སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

2 'དེའི་གན་དུ' སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/བ. དེ་ཉིད།

3 'རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་འོངས་' པེ་ཅི ཤོག ༡༧ འོག དེ་ཉིད།

4 'ཆོས་གཅིག་བགྱིད' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 'སྦྱིན་གྱིས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༤/བ. དེ་ཉིད།

6 'རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་' - པེ་ཅི ཤོག ༡༧ འོགདེ་ཉིད།

7 'རྣལ་འབྱོར་པ་དེས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

8 'འོང་ལ' - སྣྲུབ་ཀུན། ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

དེའི་མཚན་ལ་དེ་དེར་བྱོན་པས། ལྷམ་མཁན་གྱིས་སྟན་བཏིང་སྙེ་ཞབས་བཀྲུ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་བཞེས་པ་གྱ་ནོམ་པ་དྲངས། ཆུང་མ་དང་བུ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཡོ་བྱད་ཀུན་ཕུལ་ཏེ། [1]བཀུ་མཉེས་ལ་སོགས་པའི་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་དུ་གཞུག་པ་ན། དགེ་སློང་[2]དགྱེས་ནས་ལྷམ་མཁན་ཆུང་མ་དང་བཅས་པ་ལ་དབང་བསྐུར། གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། དེ་ཡང་ (གདམས་ངག་དངོས་ནི་)

ཉོན་མོངས་རྣམ་རྟོག་ཀོ་བ་དེ།།
བྱམས་དང་སྙིང་རྗེའི་སྦྱང་ནང་དུ།།
བླ་མའི་གདམས་པའི་སྙུང་དང་ནི།།
ཆོས་བརྒྱད་སྦྱངས་པའི་རྒྱུས་སྐུད་ཀྱིས།།
ཡང་དག་ཉིད་དུ་བརྩེམས་པ་ན།།
ལྷུན་གྲུབ་འབྲས་བུའི་ལྷམ་འབྱུང་ངོ་།།
ངོ་མཚར་ཆེ་བའི་ཆོས་སྐུའི་ལྷམ།།
ལོག་པར་ལྟ་བས་དེ་མི་ཤེས།།

དགའ་བ་དང་མི་དགའ་བའི་སྦྱང་བླང་མེད་པའི་སྐུད་པ་གྱིས། རྣམ་

1 “སྟི” - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘རྣལ་འབྱོར་པ་དགྱེས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ གོང དེ་ཉིད། འདིར་དཔེ་གཅིག་ཏུ ‘དགེ་སློང’’ ཞེས་པ་དང་། གཅིག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞེས་པ་གཉིས་བྱུང་བས་དོན་ནི། རྣལ་འབྱོར་པ་དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་ཅན་ཞེས་པའོ།།

རྟོག་དང་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་ཀོ་བར་གྱིས། སྙིང་རྗེའི་སྤྲང་ནང་དུ་སྤྱོངས།[1] བླ་མའི་གདམས་ངག་དང་རང་གི་ཉམས་མྱོང་གི་སྟུང་གིས་ཆེམས་ལ། ལྷུན་འགྲུབ་ཆོས་སྐུའི་ལྷམ་བྱེད་པར་སློམས་[2]ཤིག་ཅེས་པའི་གདམས་ངག་ཕོག་པས། ལྷམ་མཁན་དེ་ན་རེ། དེ་ལྟར་བསློམས་པ་ལ་རྟགས་ཅི་འབྱུང་། ཞུས་པས། བླ་མའི་ཞལ་ནས། "དང་པོར་[3]འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བའི་རྟགས་འབྱུང་། དེ་ནས་འབྱུང་བ་རྣམས་རིམ་གྱིས་[4]ཆོས་ཉིད་དུ་ཐིམ་པའི་རྟགས་འབྱུང་བ་ཡིན་" གསུངས་ནས་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ[5]།།

ལྷམ་མཁན་གྱིས་རང་གི་ཁྱིམ་རྟིངས་སྤྲངས་ཏེ། དགོན་པར་གནས་པར་བྱས་ནས་བསློམས་པས། བླ་མས་གདམས་པ་བཞིན་རྟགས་རིམ་པར་འབྱུང་བ་དང་། དེ་ལ་རྟོགས་པ་འདི་ལྟ་བུ་སྐྱེས་ཏེ། རྩ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་དྲུག་གདི་མུག་དང་བཅས་པ་དཔེས་རྟོགས་ནས་བླ་མའི་གདམས་ངག་གི་ལྷམ་གྱོན་ཏེ། མ་རིག་པའི་ས་གཞི་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱས་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྒྲུབས་པས། མ་རིག་པ་སོགས་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དག་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ལ། ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་ཉིན་མཚན་མེད་པར་ལྷམ་བཟོའི་དམིགས་པ་

---

1) "སྙིང་རྗེའི་སྤྲང་ནང་དུ་སྤྱོངས" ཞེས་པ་འདི་ པེ་ཅིའི་ནང་མེད། ཤོག ༡༨ གོང་ 181, vol. 87

2) 'སློམ་ཤིག' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

3) 'དང་པོ་འཁོར་བ་ལ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/ན དེ་ཉིད།

4) 'རིམ་པས' - པེ་ཅི, ཤོག ༡༨ གོང དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧, དེ་ཉིད།

5) 'གྱུར་ཏེ།' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

དང་། བླ་མའི་མན་ངག་གཉིས་མེད་དུ་བྱས་ནས་བསྒོམས་པས། ལྷམ་བཟོའི་ལས་ཐམས་ཅད་ནི་ཡི་ཤྭཀརྨ་ལ་སོགས་པས་བྱས་པས། ཡིཥྞུ་ནཱ་ག་ར་བས་ལྷམ་མཁན་སློམ་སློབ་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཆོར། ཡོན་དན་གྱི་ཆོར་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཤེས་པ་ན། དུས་གཅིག་ཁོ་རང་གི་བཟོ་ལ་མི་གཅིག་བལྟར་འོངས་པས། ལྷམ་མཁན་ནི་མཉམ་པར་བཞག་[1]ནས་འདུག བཟོ་བོ་ཡི་ཤྭཀརྨས་བྱེད་པར་མཐོང་ནས་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་བརྒྱུད་ནས་མཐར་ཀུན་གྱིས་མཐོང་། དེར་ཐམས་ཅད་འདུས་ཏེ་གདམས་པ་ཞུ་བྱས་པས། བླ་མ་བསྙེན་[2]པའི་ཕན་ཡོན་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ལ། ཡིཥྞུ་ནགརའི་སེམས་ཅན་ལ་ཆོས་མང་དུ་བཤད་ནས། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཙམརཔཱ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། འགྲོ་དོན་དཔག་མེད་མཛད་ནས་མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཙམརི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

༡༥) གུརུཁཌྒཔཱ།

གུ་རུ་ཁཌྒཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཁཌྒཔཱ་བྱ་བ་ནི་རལ་གྲི་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་མགྡྷཔ། རིགས་དམངས་རིགས། བླ་མ་ཇོ་ཀི་(ཡོགི་)ཙརྤཊི། དངོས་གྲུབ་ནི་ཐུན་མོང་གི་རལ་གྲིའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའོ། །

---

1 'མཉམ་པ་གཞག་ནས' - པེ་ཅི, ༡༨, འོག དེ་ཉིད།

2 'བརྟེན་པའི' - པེ་ཅི ཤོག་སོགས་དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་ཡུལ་མགྷ་ན་ཞིང་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བའི་ཁྱིམ་པ་ཞིག་གིས་ཕའི་ལས་བོར་ནས་རྐུ་བའི་ལས་དུས་རྟག་ཏུ་བྱེད་པས། ཉིན་མཚན་དུ་རྐུ་བའི་བསམ་པ་རྩེ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་དང་། དུས་གཅིག་ན་ཁྱིམ་བདག་རྐུན་མ་དེས་མགྷའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་རྐུར་ཕྱིན་པས་ཅི་ཡང་མ་ཐོབ་སྟེ་[1]དུར་ཁྲོད་ཅིག་ནས་ཆུར་འོངས་པ་དང་། དུར་ཁྲོད་དེར་ཛོ་ཀི་(ཡོ་གི་)ཙརྤཊི་བྱ་བ་དང་འཕྲད་ནས་ཉིད་འདི་ན་ཅི་མཛད་ཀྱིན་བཞུགས། ཞེས་ཞུས་[2]པས། འཁོར་བའི་སྐྱེ་འཆི་འཇིགས་ནས་འདི་ན་སྒོམ་བྱེད་ཅིང་འདུག་པ་ཡིན་བྱས་པས། རྐུན་མ་ན་རེ། སྒོམ་བྱས་པས་འབྲས་བུ་ཅི་འོང་བ་ཡིན། ཟེར་བས། ཛོ་ཀིའི་ཞལ་ནས "བསྒོམས་པའི་འབྲས་བུ་ནི་མངོན་པར་མཐོ་བ་དང་། ངེས་པར་ལེགས་པའི་འབྲས་བུ་བདེ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་ན་ཁྱོད་ཀྱང་ཆོས་མི་བྱེད་དམ།" གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། ཆོས་ལ་མོས་ལྷ་མོས་ཏེ། དུར་ཁྲོད་དུ་སྒོམ་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་པའི་ལོང་མེད། དུས་རྟག་ཏུ་རྐུ་བའི་ལས་བྱེད་པས་རྒྱལ་པོའམ་བློན་པོའམ་ཁྱིམ་བདག་ལ་སོགས་པའི་[3]རྫས་རེ་ཞིག་བརྐུས་ནས་ཐོབ་སྲིད་ཀྱང་རྫས་ཀྱི་ཕྱི་ནས་དེ་ཀུན་དང་འཐབ་རྩོད་འབྱུང་བས་དེ་ཀུན་གྱིས་མི་ཐུབ་པའི་དངོས་གྲུབ་ཅིག་ཞུས་བྱས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་རྐུན་མ་ལ་དབང་བསྐུར་གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། དེ་ཡང་མགྷའི་གྲོང་ཁྱེར་ན་གོ་རི་[4]ཤམཀ་

---

1 'མ་ཐོབ་ནས་ལོག་སྟེ་དུར་ཁྲོད་ཅིག་ནས - པེ་ཅི, ཤོག ༡༨ འོག དེ་ཉིད།

2 ཞེས་སྨྲས་པས། - དཔེ་ཅི ཤོག་སོགས་དེ་ཉིད།

3 'སོགས་པས་རྫས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༦/ན དེ་ཉིད།

4 'གོ་རསམཀྲ-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༦/བ· 32 14 གོ་རསམ་ཀྲ སྒྲུབ་ཀུན་ ཀླཱ་ནྟཱ་ཀྵི་ ཇོ་དཔར། ཤོག ༥༠ དཔེ་འདི་དག་ལ་བརྟགས་ན། ལྷ་ཁང་དེའི་མིང་གོ་རིཤཾཀར "गौरी शंकर" ཞེས་དག་པར་མངོན།།

[གཽ་རི་ཤཱཾ་ཀ་ར་]ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱི་མཆོད་རྟེན་ནང་ལྷ་ཁང་། ནང་ན་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྐུ་བྱིན་རླབས་ཅན་ཞིག་བཞུགས་ཀྱི། དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཞག་བདུན་གསུམ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གི་བར་ལ་ཉིན་མཚན་ཀུན་ཏུ་ས་ལ་མ་འདུག་པར་བསྐོར་བ་གྱིས། ཟས་ཀྱང་སློང་ལ་ཟོ་ཞིག སྐུའི་ཞབས་ཀྱི་འོག་ནས་སྦྲུལ་ཞིག་འོང་བར་མཐོང་ན་མ་འཇིགས་པར་མགོ་ནས་གཟུང་[1]ཞིག་དང་། ཁྱོད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ།། ཞེས་གདམས་ངག་བྱིན་ནས་སྒྲུབ་ཏུ་བཙུག་གོ[2]།

ཀུན་མ་རིས་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་པས་བྱིན་པའི་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་བླངས་ཏེ་[3]དེ་བཞིན་དུ་[4]སྒྲུབ་པ་བྱས་པས། ཞག་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་ཞབས་འོག་ནས་སྦྲུལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ཞིག་[5]བྱུང་ནས་དེའི་མགོ་ནས་གཟུང་[6]བས། སྦྲུལ་རལ་གྲིར་སོང་བས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རལ་གྲི་འོད་དང་བཅས་པ་ཞིག་ལག་ཏུ་ཐོབ་སྟེ། ཀུན་མའི་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། རལ་གྲིའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པས། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཁཌྒ་པཱ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་ལ། ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་བརྒྱད་ལས་རལ་གྲིའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་ཐོབ་བོ། །

---

1 'མགོ་ནས་ཟུང་ཤིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

2 སྒྲུབ་ཏུ་བཙུག་པས། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

3 'བླངས་དེ་བཞིན་དུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༦ གོང དེ་ཉིད།

4 'དེ་བཞིན་དུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧ དེ་ཉིད།

5 'པོ་གཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་

6 'བཟུང་བས།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧ དེ་ཉིད།

ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གྱི་འཁྲུལ་པའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དག་ནས་མགྡྷབའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཞག་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ཏུ་ཆོས་བསྟན། མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ཡང་གསུངས་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུ་ཁཌྒ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

༡༦) ནཱགཱརྫུན།

གུརུ་ནཱགཱརྫུན་སྟེ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་[1]ཀཱཉྩི་ཞེས་བྱ་བའི་བྱེ་བྲག་ཀཧོར་བྱ་[2]བ་ཡིན་ལ། རིགས་བྲམ་ཟེ། དངོས་གྲུབ་སྒྲོལ་མ་ལས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ཡང་ཀཧོར་ན་གྲོང་ཁྱེར་ཁྲི་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཡོད་པ་ལ་[3]། ཀུན་ལ་འཇོམས་པ་དང་འཕྲོག་པ་བྱས་པས། བྲམ་ཟེ་ཀུན་འདུས་ནས་འདིས་འོ་སྐོལ་

---

1 ‘སྐབས་འདིར་བསྟན་འགྱུར་སྡེ་དཔར་དང་། པེ་ཅིའི་དཔར་མ། སྒྲུབ་ཀུན་སོགས་ལ་མཐུན་པར་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཞེས་བྱུང་ཡང་། ལང་གཤེགས་འཇུག་འགྲེལ་དུ་དྲངས་པར། “ལྷོ་ཕྱོགས་བེ་ཏའི་ཡུལ་དུ་ནི།” ཞེས་དང་། པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་ལས་ཀྱང་། “ལྷོ་ཕྱོགས་བེ་དར་ལྟའི་ཡུལ་དུ་ནི།” ཞེས་བྱུང་བ་དང་། གཞུང་གཞན་ཀུན་ལས་ཀྱང་དེ་ལྟར་མཐུན་པར་བྱུང་བ་ཆེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་ལྟར་ལ། “ཀཱཉྩི”ཞེས་ཡུལ་ད་ལྟ་ཡང་ངོ་འཕྲོད་ཀྱི་ཡོད་ཅིང་། དེ་ནི་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ན་ཡོད་པས། འདིར་ཤར་ཕྱོགས་ཞེས་པ་ཡིག་ནོར་ཡིན་ནམ་དཔྱད་དགོས། པེ་ཅི་ ཤོག ༡༨ གོང་, 182, vol. 87. སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/ན. པད་ཆོས་ཤོག ༣༣ 63. འཇུག་འགྲེལ་ཤོག ༦༣

2 ‘ཀཧོར’ ཞེས་པ་དེང་སྐབས་སོ་ངོ་མི་ཟིན། བེཏའི་ཡུལ་ནི་ཀེརལ་ཡིན་པས། “ཀཧོར ཀེར་ལ་” ཡིན་སྲིད།

3 ‘ཡོད་པ’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན། ཤོག ༡༧/ན དེ་ཉིད།

ཐམས་ཅད་ལ་མི་འཆམས་པ་བྱས་པས། འདི་དང་འཐབ་པ་ལས་[1]ཡུལ་གཞན་དུ་འཁྲུམས་འགྲོ་བ་དྲག་ཅེས་གྲོས་བྱས་པའི་གཏམ་དེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གསན་ནས་བྲམ་ཟེ་ཀུན་ལ་མི་བཏང་ནས་“ཁྱེད་རྣམས་[2]ཡུལ་གཞན་དུ་མ་འགྲོ་ཞིག ཡུལ་གཞན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བར་འོང་བས། ཁྱེད་ཅག་ཀུན་ཁོ་བོའི་རྫས་འདི་རྣམས་ཁྱེར་ཅིག”གསུངས་ནས་ནོར་ཐམས་ཅད་སྦྱིན་པ་བཏང་ནས། སློབ་དཔོན་གཏེར་ནས་བྲོས་ཏེ་བསིལ་བ་ཚལ་གྱི་ཕ་རོལ་ནླཱཧྣར་[3]བྱོན་ནས་རབ་ཏུ་བྱུང་སྟེ། རིག་པའི་གནས་ལྔ་ལ་སྦྱངས་པས། མཁས་པའི་མཐར་ཐུག་པར་གྱུར་ཏོ།།

དེ་ནས་བཤད་པ་ལ་སྐྱོ་ནས་སྒྲུབ་པ་མཛད་པས་སྒྲོལ་མའི་ཞལ་གཟིགས་ཏེ། དཔལ་ནླེནྡྲ་པའི་ཆོས་སྐོར་དགེ་འདུན་བརྒྱ (སྟག་) གཞུགས་པའི་འཚོ་བ་དང་། གནས་སྤྱངས་ཏེ་ཡུལ་གཞན་དུ་བྱོན་ནས་གྲོང་ཁྱེར་གཅིག་ཏུ་བསོད་སྙོམས་མཛད། སླར་རང་གི་གནས་སུ་ལོག་ནས་བདག་གི་བསམ་པ་འདི་འདྲ་བས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མི་འགྲུབ་པས། ཡོན་ཏན་ཐོབ་པར་བྱས་ཏེ་[4]འགྲོ་དོན་བྱ་སྙམ་དུ་དགོངས་ནས། རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཏུ་ཕྱིན་ནས་འབྱུང་པོ་ཁྱུ་མཆོག་གི་འབྱུང་མོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བཟླས་པ་བྱས་པས། ཞག་དང་པོ་ལ་ས་གཡོས།

---

1 ‘འཐབ་པ་བས’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཅིད།

2 ‘ཁྱེད་ཡུལ་གཞན་དུ·····’ - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཅིད།

3 ‘ནླཱནྡ’ - པེ་ཅི ཤོག་ དེ་ཅིད།

4 ‘བྱས་ལ’ - སྣར་ཐང ཤོག་ དེ་ཅིད།

གཉིས་པ་ལ་ཆུ་བརྫོལ[1]། གསུམ་པ་ལ་མེ་འབར། བཞི་པ་ལ་རླུང་ལངས། ལྔ་པ་ལ་མཚོན་གྱི་ཆར། དྲུག་པ་ལ་རྡོ་རྗེའི་ཆར། བདུན་པ་ལ་དངོས་སུ་འབྱུང་མོ་ཀུན་འདུས་ནས་བར་གཅོད་བྱས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱི་ཐུགས་དམ་ལ་གཡོ་བ[2]མེད་པས། བར་གཅོད[3]མ་ཚུགས་པ་དང་། གནོད་སྦྱིན་མོ་ཀུན་འོངས་ནས་ཁྱོད[4]ལ་ཅི་དགོས། ངེད་ཀྱིས་སྦྱིན་ཟེར་བ་ལ། གཞན་མི་དགོས་ངའི་འཚོ་བ་སྦྱོར་ཅིག་གསུངས་པས[5]། དེ་རྣམས་ཀྱིས་འབྲས་ཕུལ་བཞི་དང་ཚོད་མ་ལྔ་རྟག་ཏུ་སྐྱེར་བ་དེ་བཞིས་ཀྱིན་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སྒྲུབ་པ་མཛད་པས་འབྱུང་མོ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་དབང་དུ་འདུས་ནས། འགྲོ་དོན་བྱ་སྙམ་སྟེ[6]། རི་ཀླན་ཧྲ་ཤི་ལར་(ཀླཧྲར་ཤི་ལ་)ཕྱིན་ནས་རི་དེ་གསེར་དུ་བསྒྱུར་ནས་[7]འགྲོ་དོན་བྱ་སྙམ་སྟེ[8]རི་དེ་དང་པོར་ལྷུགས་སུ་བྱས། དེ་ནས་ལྷུགས་ཟངས་སུ་བྱས་ཙ་ན། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་ཞལ་ནས། འདི་ལ་སེམས་ཅན་ཀུན་རྩོད་པ་ཆེན་པོ་

---

1 'གཉིས་པ་ལ་ཆུ་དང་།' - གསུམ་པ་ལ་མེ་དང་, བཞི་པ་ལ་རླུང་དང་། ལྔ་པ་ལ་མཚོན་དང་། དྲུག་པ་ལ་རྡོའི་ཆར། - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད།

2 'གཡོས་པ་མེད་པས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༩ དེ་ཉིད།

3 'བ་ཚོད' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ཁྱིད་ལ' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

5 'གསུངས་པ་ལ།' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

6 'སྙམ་པ་དང་།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༠ གོང དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།

7 'བསྒྱུར་ལ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༠ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།

8 'སྙམ་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

འབྱུང་བས་སྡིག་པ་གསོག་པར་འོང་། གསུངས་ནས་འགྲོ་བཅད་དེ་བོར་བས།[1] ཀླནཛྷཤིལ་དེ་ད་ལྟ་ཡང་ཟངས་མདོག་སླུག་པོར་ཡོད།

དེ་ནས་ལྷོ་ཕྱོགས་དཔལ་གྱི་རི་བོར་བྱོན་པའི་ལམ་བར་དུ་གཙང་པོའི་འགྲམ་ཞིག་ཏུ་[2]ཕྱིན་པ་ན། བ་ལང་རྫི་དུ་མ་དང་འཕྲད་ནས་རྒྱུའི་ལམ་དྲིས་པ་ན། དེ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་ངན་པ་ཆུ་སྲིན་དང་། ངམ་གྲོག་ཅན་གྱི་མི་བདེ་བའི་ལམ་བསྟན་པ་དང་། བ་ལང་[3]རྫི་གཞན་ཞིག་འདུག་པ་དེ་[4]འོངས་ནས་ལམ་འདི་ལེགས་པ་མ་ཡིན། ལམ་འདི་ནས་གཤེགས་ཟེར་ནས་དེས་སློབ་དཔོན་ཁྲིད་ནས་ཕྱིན་པས། ཆུའི་དཀྱིལ་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྤྲུལ་པའི་ཆུ་སྲིན་ལ་སོགས་པའི་འཇིགས་པ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་པས། བ་རྫི་ན་རེ། བདག་མ་ཤིའི་བར་དུ་མ་འཇིགས་ཤིག ཟེར་བས། སློབ་དཔོན་གྱིས་སྤྲུལ་པ་བཏུལ་ཏེ་སྐམ་སར་ཕྱིན་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ང་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱིས་ངོ་ཤེས་སམ། གསུངས་པ་ལ། དེ་ན་རེ། གཏམ་ནི་ཐོས་[5]ངོ་མི་ཤེས་ཞུས་སོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བ་ལང་རྫི་དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ཆུ་ལས་བསྒྲལ་བའི་བརྗན་[6]

1 'འགྲོ་ཆོད་དེ་བོར་གསུངས།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༠ གོང དེ་ཉིད།

2 'འགྲམ་དུ་ཕྱིན་པ་ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།

3 'བ་རྫི་གཞན་ཞིག……' - པེ་ཅི ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།

4 'འདུག་པ་འོངས' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༠ གོང དེ་ཉིད།

5 'ཐོས་ཏེ་ངོ་མི་ཤེས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༠ དེ་ཉིད།

6 'རྗན་པ' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

པ་ཅི་དགོས་པ་སྙེར་[1]བ་ཡིན་གསུངས་[2]པས། བ་ལང་རྫི་ན་རེ། བདག་རྒྱལ་པོ་འོང་བའི་ཐབས་ཤིག་ཞུ་ཟེར་བ་ལ[3]། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་དེ་ན་ཤིང་སྣལའི་ (ཤྣ+ལའི)སྡོང་པོ་གཅིག་ཡོད་[4]པ་ལ་ཆུ་གཏོར་བས[5]། ཤིང་དེ་དེ་[6]མ་ཐག་གླང་པོ་ཆེར་གྱུར་ནས་རྒྱལ་པོའི་ཞོན་པ་བྱས། དམག་ཚོགས་དགོས་ཞུས་པས་[7]གླང་པོ་ཆེ་མཁྱེན་[8]པ་ན་དམག་འོང་བ་ཡིན་གསུངས་པ་དེ་བཞིན་[9]དུ་བྱུང་སྟེ། རྒྱལ་པོའི་མིང་སྣལཱནནྡ(ཤྣལཱནྡན—) ཞེས་བྱ་ལ། བཙུན་མོའི་མིང་སིནྡྷི་ཞེས་བྱ་བར་གྱུར་ཏོ། །གནས་གྲོང་ཁྱེར་ཟླཧིདནཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ་ཁྱད་པར་དུ་[10]འཕགས་པ་ཞིག་[11]གྲུབ་སྟེ། རྒྱལ་པོ་ཁྲལ་[12]འཛལ་བའི་གྲོང་ཁྱེར་

---

1 གཉེར་བ་ཡིན པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་པས།' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ཐབས་ཅིག་ཞུ་ཟེར་ནས'-སྣུབ་ཀུན, ཤོག ༡༨/ན 'ཐབས་གཅིག་ཞུ' པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

† 'སྣལ' ཞེས་པ, 'ཤྣལ' ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་པར་མངོན་ནོ།།

4 'སྡོང་པོ་གཅིག་འདུག་པ་ལ' ཆུ་སྟོར་བས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༠ གོང་ དེ་ཉིད།

5 'སྡོང་པོ་གཅིག་འདུག་པ་ལ' ཆུ་སྟོར་བས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༠ གོང་ དེ་ཉིད།

6 'ཤིང་དེ་མ་ཐག' - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/ན.དེ་ཉིད།

7 'ཞུས་པ་ལ' - སྣུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

8 'འཁྱེན་པ་ན' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

9 'བཞིན་ཏུ' - སྣུབ་ཀུན དེ་ཉིད།

10 'ཁྱད་པར་འཕགས་པ་ཅིག་གྲུབ' - སྣུབ་ཀུན་ཤོག ༡༨/ན.པེཅི ཤོག ༣༠ འོག དེ་ཉིད།

11 'ཁྱད་པར་འཕགས་པ་ཅིག་གྲུབ' - སྣུབ་ཀུན་ཤོག ༡༨/ན.པེཅི ཤོག ༣༠ འོག དེ་ཉིད།

12 'རྒྱལ་པོ་ལ་ཁྲལ·····' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། སྣུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/ན· དེ་ཉིད།

འབུམ་ཚོ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་ལ་དབང་བྱེད་པའི་རྒྱལ་པོར་གྱུར་ནས། སློབ་དཔོན་[1] ལྷོ་ཕྱོགས་དཔལ་གྱི་རི་ལ་བྱོན་ནོ།[2] །

(དེར་སློབ་དཔོན་)སྒོམ་སྒྲུབ་མཛད་ཀྱིན་ཡུན་རིང་དུ་བཞུགས་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་སྣལཝྷཏ་ནས་[3]ཀླུ་མ་དྷན་ཏེ་[4]དཔལ་གྱི་རི་བོར་འོངས་ནས། སློབ་དཔོན་ལ་ཕྱག་དང་བསྐོར་བ་བྱས་ཏེ།[5] རྒྱལ་པོས་སློབ་དཔོན་ལ་ཞུས་པ། རྒྱལ་སྲིད་ནི་མཆོག་ཆུང་ལ་ཉེས་པ་ཆེ་བར་འདུག་པས་བདག་མི་དགོས། བདག་སློབ་དཔོན་གྱི་སྤྱན་སྔར་སྡོད་པ་ལགས་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས། རྒྱལ་སྲིད་མ་བསྐྱུར་བར་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལ་རྒྱལ་སྲིད་སྐྱོངས། དུས་མ་ཡིན་པ་འཆི་བའི་འཇིགས་པ་མེད་པའི་བཅུད་ལེན་སྦྱིན་གྱི་[6]གསུངས་པས།

རྒྱལ་པོ་ན་རེ། སློབ་དཔོན་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འདུག་པའི་སྐབས་ཡོད་ན་རྒྱལ་སྲིད་དང་བཅུད་ལེན་དགོས། དེ་(ལྟར་)མ་ཡིན་ན་མི་དགོས། ཞེས་ཟེར་ནས་[7]འཁོར་མ་འདོད་པར་དེ་ཉིད་དུ་གནས་པར་གྱུར་པ་ན། དེ་ལ་སློབ་

---

1 ‘སློབ་དཔོན་གྱིས’ - པེ་ཅི་, ཤོག ༣༠ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན, དེ་ཉིད།

2 ‘བྱོན་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘སྣལཔྨནཌྜ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད

4 ‘སྟེ་ བྱས་སྟེ’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘སྟེ་ བྱས་སྟེ’ - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

6 ‘སྦྱིན་གྱིས།’ - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༨/ན. པེ་ཅི, ཤོག ༣༠ འོག དེ་ཉིད།

7 ཟེར་ཏེ། - པེ་ཅི ༣༠ འོག དེ་ཉིད།

དཔོན་གྱིས་གདམས་པ་གནང་སྟེ། རང་ཡུལ་དུ་བཙུད་ལེན་བསྒྲུབས།། ལོ་བརྒྱའི་བར་དུ་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་སྟེ་གནས་སོ།།

དེའི་བར་འགྲོ་བ་རྣམས་འབྱོར་པ་དང་ལྡན། རིའི་བྱ་དང་རི་དྭགས་ཀུན་ཀྱང་བདེ་བར་འཚོ་བ་ལས་ལོ་བརྒྱ་ན་སློབ་དཔོན་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་ཞིང་རྒྱས་པར་མཛད་པ་ལ། བདུད་དགའ་རབ་དབང་ཕྱུག་ཕྲག་དོག་སྐྱེས་ནས་བར་ཆད་ཀྱི་ལྟས་བཀྲ་མི་ཤིས་པ་སྣ་ཚོགས་བྱུང་སྟེ། ཉི་ཟླའི་སྣང་བ་མེད་པ་མོག་མོག་པོར་གྱུར་པ་དང་། ཤིང་ཐོག་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་འབྲུལ་བ་དང་། ཆར་ཆུ་དུས་སུ་མ་བབས་པས་སྲོག་ཆགས་རྣམས་མུ་གེས་གཟིར་བ་དང་། ནད་དང་མཚོན་གྱི་བསྐལ་པ་དར་བ་དང་། རྒྱལ་པོ་སྐལ་ལྡན་འདི་ལྟམ་སྟེ། འདི་དག་ནི་གཞན་མ་ཡིན་ཏེ་ངའི་བླ་མ་ལ་གནོད་པའི་ལྟས་ཡིན་སྙམ་རང་གི་སྲས་ཙནྟེཀུམྣར་[2]བྱ་བ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་བྱིན་ཏེ། འཁོར་ཉུང་ཟད་ཅིག་དང་བཅས་ཏེ་དཔལ་གྱི་རི་བོར་སློབ་དཔོན་གྱི་སྤྱན་སྔར་ཕྱིན་པ་དང་།

བླ་མས། བུ་དོན་ཅི་ལ་འོངས་དྲིས་པ་ལ། རྒྱལ་[3]པོ་ན་རེ།

བདག་དང་སེམས་ཅན་སྐལ་བ་ཟད་གྱུར་ཏམ།།
རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ཉམས་པར་གྱུར་ཏམ་ཅི། །

---

1 'བསྒྲུབས' - པེ་ཅི་ཤོག་སོགས་ དེ་ཅིད།

2 'ཙནྡྲི་ཀུམྣར' པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༧ གོང་ 'གཞོན་ནུ་ནུས་ལྡན' - པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་ ཤོག་ ༣༠། འདི་དག་པར་སེམས།

3 'རྒྱལ་བུ་ན་རེ' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༧ གོང་ དེ་ཅིད།

ནག་པོའི་ཕྱོགས་རྣམས་རྒྱལ་བར་[1]གྱུར་པ་འམ།།
ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཟླ་བ་ལྷར་དཀར་ལ།༡།
ཆར་སྤྲིན་དང་འདྲའི་བདུད་ཀྱིས་[2]བསྒྲིབས་སམ་ཅི།།
རྡོ་རྗེ་ལྷ་བུའི་བླ་མ་དམ་པ་ལ།།
འདུས་བྱས་རང་བཞིན་བྱུང་ངམ་སྲིད་ལྷས་རྣམས།།
འབྱུང་བས་བདག་ནི་འདིར་ནི་མཆིས་པ་ལགས།།
ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་དགོངས་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས།༢།

ཞེས་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་གསུངས་པ།

སྐྱེས་པ་ཐམས་ཅད་འཆི་བ་ཡིན། འདུས་པ་ཐམས་ཅད་བྲལ། བསགས་པ་ཐམས་ཅད་འཛད། འདུས་བྱས་ཀྱི་མཐའ་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པ་ཡིན་ན་དེ་ལ་མི་དགའ་བ་ཅི་ཡོད། ཁྱོད་རང་བཙུད་ལེན་ཁྱེར་ལ་སོང་ཞིག་[3]གསུངས་པས། དེ་ནི། བླ་མའི་རྩར་བཅུད་ལེན་ཟ་ཡིན་འདུག་ན་འདུག བླ་མ་མི་བཞུགས་ན་བདག་ལ་བཅུད་ལེན་མི་དགོས་ཟེར་ནས་དེར་འདུག་གོ །དེ་ནས་སློབ་དཔོན་འཕགས་པས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སྦྱིན་པར་བཏང་བ་ལ། ལྷ་ཚངས་པས་བྲམ་ཟེ་ཞིག་[4]ཏུ་

1 ‘འགྱུར་པ་འམ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༡ གོང་ དེ་ཉིད།

2 ‘སྒྲིབས་སམ’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘སོང་གཅིག’ - པེ་ཅ ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘བྲམ་ཟེ་གཅིག’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༨/བ· 36. 14. པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

སྤྲུལ་ནས་དབུ་བསླངས་[1]པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་སྐེར་བར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་དང་[2]། རྒྱལ་པོ་སྣལཱ་ཧྲནས་སློབ་དཔོན་འགྲོངས་པའི་སྡུག་བསྔལ་མ་བཟོད་ནས། སློབ་དཔོན་གྱི་ཞབས་ལ་སྤྱི་བོས་གཏུགས་ཏེ་གྲོངས་སོ། །མི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བྲམ་ཟེ་དེ་ལ་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད་དོ།།

དེའི་དུས་སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་དབུ་བྱིན་པས་གཞན་གང་གིས་ཀྱང་མ་ཚོད་པ་ན་རྩ་ཀུ་ཤ་གཅིག་གིས་རང་གི་དབུ་བཅད་ནས་ཚངས་པ་ལ་བྱིན་ནོ། །དེ་ནས་ཤིང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྐམས། མི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསོད་ནམས་ཀྱང་འགྲིབས་སོ། །

སྔོན་[3]གྱི་གནོད་སྦྱིན་མོ་བརྒྱད་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་བསྲུངས་ནས་ད་ལྟ་ཡང་ཡོད་དོ། །

---

1 'སླངས་པས' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༢ གོང དེ་ཉིད།

2 འདིའི་མ་དཔེ་ཀུན་དུ་བསྒྱུན་པར་ཚངས་པའི་སྤྲུལ་པ་བྲམ་ཟེ་ཞིག་གིས་སློབ་དཔོན་གྱི་དབུ་བསླངས། ཞེས་བྱུང་ལ། པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་སོགས་ཆོས་འབྱུང་གཞན་ཀུན་ལས་མཐུན་པར། རྒྱལ་པོ་བདེ་སྤྱོད་ཀྱི་སྲས 'གཞོན་ནུ་ནུས་ལྡན'' (འདིར་ཅན་ཏི་ཀུམཱར་ཞེས་བཤད་པ་དེས) ལ་མས་གོ་སྲུབ་མེད་པ་ཞིག་སྦྱིན་པ་ན། བུས་དེ་མ་གྱོན་པར་བཞག མས་རྒྱ་མཚན་དྲིས་པའི་ལན་དུ། རྒྱལ་པོའི་ཁྲི་ལ་འདུག་པའི་དུས་སུ་གྱོན་བྱས་པས། མས་བུ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་མི་ཐོབ་པའི་རྒྱུ་མཚན་དུ། དེའི་ཕ་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་སྐུ་ཆེ་མཉམ་ཚུལ་དང་། སློབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡིན་པས། དེའི་དབུ་ལེན་དགོས་ཚུལ་སོགས་སྨྲས་པ་རྒྱུ་མཚན་དུ་བྱས་ཏེ། རྒྱལ་བུ་གཞོན་ནུ་ནུས་ལྡན་ཉིད་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་གྱི་དབུ་བསླངས་པར་བཤད་དོ།། - པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་། ཤོག ༣༦ 67, 68, 14.

3 'སྔར་གྱི་གནོད་སྦྱིན་མོ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ གོང དེ་ཉིད། འདིར་སྔར་གྱི་གནོད་སྦྱིན་མོ་བརྒྱད་ཅེས་བྱུང་ཡང་། དོན་ནི་སྔོན་འབྱུང་པོ་ཁྲུ་མཆོག་གི་འབྱུང་མོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་འཚོ་བ་སྦྱར་ནས་བསྒྲུབས་སྐབས་གྲུབ་པའི་འབྱུང་མོ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་དེ་རྣམས་ཡིན་ནོ།།

བླ་མའི་གདུང་འཚོབ་ཏུ་ཀླུའི་བྱང་ཆུབ་བཞུགས་།པའི་འོད་ནུབ་མོ་འགྲོ་བ་ཀླུ་ཟེར་ཙམ་ད་ལྟ་ཡང་ཡོད་དོ། །སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་དེ་རྒྱལ་བ་བྱམས་པའི་བསྟན་པ་ལ་སླར་བཞེངས་ནས་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་གསུངས་སོ། །

གུ་རུ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

༡༧) གུ་རུ་ཀཎཧཔཱ།

གུ་རུ་ཀཎཧ[2]པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཨཱ་ཙཱརྱ་ཀཎཧཔཱ་བྱ་བ་སློབ་དཔོན་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་བ། ཡུལ་སོམ་པུ་རི། བླ་མ་ཛཱལནྡྷརཔཱ། རིགས་ཡི་གེ་པ།

དེ་རྒྱལ་པོ་ལྷ་སྐྱོང་གིས་བཞེངས་པའི་གཙུག་ལག་ཁང་སོམཔུརིའི་དགེ་སློང་ཞིག་ཡིན་པ་ལ། བླ་མ་ཛཱལནྡྷར་པཱས་དབང་བསྐུར། དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་གདམས་པ་གནང་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྒྲུབས་པས། དུས་རེ་ཞིག་ན་ས་གཡོ་བར་བྱེད་ཅིང་། དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་ལྷ་ཚོགས་ཞལ་གཟིགས་པས་དགའ་བ་སྐྱེས་པ་ན། ཌཱཀི་མས་རིགས་ཀྱི་བུ། འདི་ནི་མཚན་མ་ཁྱད་པར་ཅན་མ་ཡིན་པས་མ་སྙེམས་ཤིག བདེན་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པ་མེད་པས་སོ་ཞེས་ཟེར། ཡང་ཕ་

---

1 བླ་མའི་གདུང་ཚོབ་ཏུ་ཀླུ་བྱང་བཞུགས་པར་བཤད་པ་ནི། གསང་འདུས་འཕགས་ལུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བཞེད་པ་དང་། ཐུགས་ལུགས་སུ་སྣང་གི གཞན་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྟན་པ་འཕགས་པ་ལྷ་ལ་གཏད་པར་བཤད་དོ།།

2 གུ་རུ་ཀཧྣ་པ་ དང་ ‘ཀཎྷཔ’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༡ འོག དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ ༡༩/ན. དེ་ཉིད། ‘कण्हपा’ – राहुल पुरातत्व, नि० पृ० १२१, द्वितीय संस्करण ।

ཕྱང་[1]ཞིག་ཡོད་པ་དེ་ལ་ཞབས་བཞག་པས་[2](ཞབས)རྗོ་ལ་ནུབ་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ང་རྒྱལ་སྐྱེས་ཏེ། ད་ནི་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་སྙམ་པ་དང་། ཡང་ཌཱཀི་མས་བཟློག་གོ །ཡང་ཕྱིར་བྱུང་[3]བ་དང་ཞབས་ཁྲུ་གང་ཙམ་གྱིས་ས་ལ་མི་[4]རེག་པ་དང་། ང་རྒྱལ་སྐྱེས་པས་སྔར་བཞིན་ནོ། །

གཞན་ཡང་ནམ་མཁའ་ལ་གདུར་བདུན་དང་། ཌཱམརུ་བདུན་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་དང་། རང་སྒྲ་འབྱུང་བ་ཐོས་ནས་ད་ནི་བདག་གིས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྙམ་ནས། སློབ་མ་ཀུན་ལ་ངས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པས་འགྲོ་དོན་ལ་སྲིན་ཡུལ་[5]ལངྐ་པུ་རིའི་ཡུལ་དུ་འདེངས་ཤིག་[6]གསུངས་ནས། སློབ་མ་འཁོར་གསུམ་སྟོང་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཆས་ཏེ[7] ཕྱིན་པ་དང་། འཁོར་རྣམས་ཆུ་ཁར་བོར། ཀཎཧ་[8]པུ་རང་རྒྱ་མཚོ་ལ་བྱིང་བ་མེད་པར་ཕྱིན་པ་ན། ཐུགས་ལ་བདག་གི་བླ་མ་ལ་ནུས་པ་མི་མངའ་བ་ལ་བདག་ལ་འདི་ལྟ་བུའི་ནུས་པ་ཡོད་སྙམ་པའི་ང་རྒྱལ་བྱུང་བས་ནུས་པ་ཉམས་ཏེ་དེ་ཉིད་དུ་ཆུར་ནུབ་ནས། ཆུའི་རླབས་ཀྱིས་མཐར་

---

1 'ཕའོང' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག དེ་ཉིད།

2 'བཞག་པ་རྗོ་ལ་ནུབ·····' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག

3 'ཡང་ཕྱིར་ཕྱུང་བ་དང·····' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/ན.

4 'མ་རེག་པ་དང' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

5 'སྲིན་པོ་ལངྐ་པུ་རིའི་ཡུལ་དུ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

6 'འདེངས་ཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག དེ་ཉིད།

7 'ཆས་སྟེ' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

8 'ཀཎྷཔ' - སྣྲུབ་ཀུན ལོག ༡༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༢ དེ་ཉིད།

བཏོན་[1]ནས་ནམ་མཁའ་ལ་བལྟས་[2]པས། ཟླ་མ་ཛཱལནྡྷར་པཱ་ནམ་མཁའ་ལ་བྱོན་པ་མཐོང་ནས་བླ་མའི་ཞལ་ནས་ཀཱནྷཔཱ་གར་ཕྱིན། ཅི་ཉེས་གསུངས་པས། ཀཱནྷཔ་ངོ་ཚ་བཞིན་དུ་བླ་མ་ལ་ཞུས་པ། བདག་སྲིན་ཡུལ་ལངྐཱ་པུ་རིར་[3]འགྲོ་དོན་ལ་ཆས་པ་ན། བླ་མ་པས་བདག་ནུས་མཐུ་ཆེ་སྙམ་པའི་ང་རྒྱལ་སྐྱེས་པས་ནུས་པ་ཉམས་ཏེ་ཆུར་ནུབ་པར་གྱུར་ཏོ། །ཞེས་ཞུས་པས། བླ་མའི་ཞལ་ནས། ད་འདིས་མི་ཕན་པས་ངའི་ཡུལ་སཱལིཔུཏྲ་[4]བྱ་བ་ན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཏྲྀཥཔཱལ་[5]བྱ་བ་བཞུགས། དེ་ན་ངའི་སློབ་མ་ཐགས་མཁན་ཞིག་[6]ཡོད་ཀྱི། དེར་སོང་ལ་དེས་ཅི་སྨྲས་པ་བཞིན་གྱིས་ཤིག གསུངས་པས། ཀཱནྷཔས། དེ་བཞིན་བྱ་སྙམ་པས་དེ་ཉིད་དུ་གདམས་ངག་[7]གང་ཡིན་པ་ཡིད་ལ་བྱས་པས། ཁང་པ་ས་ལ་མི་རེག་པ་དང་། གདུགས་དང་ཌཱ་མ་རུ་ནམ་མཁའ་ལ་འདུག་པ་དང་། ཕ་ལྒང་ལ་ཁང་པ་བྱིང་བ་ལ་སོགས་པ་སྔར་གྱི་ནུས་པ་རྣམས་ཐོབ་ནས་འཁོར་གསུམ་སྟོང་དང་བཅས་པ་ཡུལ་སཱལིཔུཏྲར་[8]བྱོན་པ་དང་། སློབ་མ་རྣམས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བོར་

---

1 ‘སྔོན་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ གོང 183, vol. 87.

2 ‘ལྟས པས’ - པེ་ཅི དེ་ཉིད།

3 ‘སྲིན་པོ་ལངྐ་པུརི་ཡུལ་དུ’ - སྣར་ཐང ཤོག ༡༩ པེ་ཅི ཤོག ༣༡ གོང་ དེ་ཉིད།

4 ‘སལ་པུཏྲ’ - སྣར་ཐང ཤོག ༡༩/བ. པེ་ཅི ༣༣ གོང་ དེ་ཉིད།

5 ‘ཏྲྀཥཕལ’ - སྣར་ཐང ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

6 ‘ཐགས་མཁན་ཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ཤོག ༡༩ དེ་ཉིད།

7 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

8 ‘སལ་པུཏྲར’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༩ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག་སོགས་ དེ་ཉིད།

ཏེ། སློབ་དཔོན་ཐགས་མཁན་འཚོལ་དུ་ཕྱིན་ནོ།།

ལམ་དུ་ཐགས་མཁན་མང་པོ་དང་འཕྲད་པ་ལ་[2]སློབ་དཔོན་གྱིས་གཟིགས་པས། སྐལ་མ་ཆད་པ་ལ་རང་གིས་མཐུད་[3]དགོས་པ་འདི་ཀུན་མ་ཡིན་ངེས་སྙམ་སྟེ། གྲོང་གི་མཐའ་ན་ཐགས་མཁན་ཞིག་འདུག་པའི་སར་ཕྱིན་ནས་བལྟས་[4]པས། སྐལ་མ་ཆད་པ་ཐམས་ཅད་མཐུད་མ་དགོས་པར་རང་འབྱར་ལ་འགྲོ་བ་མཐོང་བས། འདི་ཡིན་པར་ངེས་སྙམ་ནས་ཞབས་ལ་ཕྱག་[5]བཙལ། བསྐོར་བ་བྱས་པ་དང་། ཐགས་མཁན་གྱིས་སྨྲས་པ—

ངས་ཅི་ཞེར་བ་བཞིན་ཉན་ནམ། ཞེར་བ་ལ་ཉན་བྱས་ཏེ། གཉིས་ཀ་དུར་ཁྲོད་དུ་ཕྱིན་ནས་མིའི་རོ་ཞིག་དང་འཕྲད་པ་ན། ཐགས་མཁན་དེ་ན་རེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ཤ་ཟ་ནུས་སམ། ནུས་ན་ཟོ་ཞིག་[6]ཞེར་བ་ལ། ཀཧྨཔླས་གྲི་བཏོན་[7]ནས་གཅོད་པར་བརྩམས་པ་ལ། ཐགས་མཁན་ན་རེ། ད་དུང་སྡོད་ཅིག་ཞེར་ནས། དེས་སྒྲང་ཀིར་སྒྲུལ་ནས་ཤ་ཟོས་སོ། །དེ་ནས་ཐགས་མཁན་ན་རེ། འདི་འདྲ་བར་སྒྲུལ་ནུས་པའི་དུས་སུ་གཟོད་ཤ་ཟ་བ་ཡིན་ཞེར་རོ།།

---

1 'ཕྱིན་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། 'ཕྱོན་པས' པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ཕྲད་པ་དང་།' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

3 'འཐུད་དགོས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ལྟས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 'ཕྱག་འཚལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. 38. 14.

6 'ཟོ་ཅིག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

7 'གྲི་སྟོན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

དེ་ནས་ཐགས་མཁན་གྱིས་དྲི་ཆེན་རིལ་བུ་གསུམ་བཏང་ནས་ཀཎྜ་པ་ལ་གཅིག་བྱིན་ནས་ཟོ་ཞིག་ཟེར་བ་ལ། ང་ལ་མིས་འཕྱ་བར་འོང་ཟེར་ནས་ཟར་མ་འདོད་པ་དང་། གཅིག་ཐགས་མཁན་རང་གིས་ཟོས། གཅིག་ནམ་མཁའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ཁྱེར། གཅིག་ས་འོག་གི་ཀླུ་རྣམས་ཀྱིས་ཁྱེར་རོ།།

དེ་ནས་གཉིས་ཀ་ཡུལ་དུ་ལོག་བྱོན་ནས། ཐགས་མཁན་གྱིས་པ་ཊ་ལྦུས་ཆང་དང་བཟའ་བ་ཉོས་ནས་འདི་སྐད་དུ། ད་ཁྱོད་ཀྱི་[1]འཁོར་ཀུན་སྤྲོན་ལ་ཤོག་ཅིག་རང་ཅག་ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཞིག་[2]བྱ་དགོས་གསུངས་པ་ལ། ཀཎྜཔཱ་འདི་སྐམ་དུ་འདིས་མི་གཅིག་རང་ཡང་འགྲངས་པར་མི་འགྱུར་ན། ངེད་དཔོན་སློབ་སུམ་སྟོང་འདིས་ཇི་ལྟར་བྱ་སྐམ་པ་ནས་དཔོན་སློབ་ཀུན་བྱོན་པ་དང་[3]། རྣལ་འབྱོར་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས་ལ་དུ་དང་འབྲས་ཆན་ལ་སོགས་པའི་འདོད་ཡོན་གྱིས་སྟོང་ཐམས་ཅད་གང་བར་གྱུར་ནས། ཞག་བདུན་གྱི་བར་དུ་ཚོགས་ཀྱི་ཡོ་བྱད་ལ་ལོངས་སྤྱད་ཀྱང་ཟད་པར་མ་གྱུར་པ་དང་། ཀཎྜ་པཱས་[4]ཉིད་ཅག་གི་བཟའ་བཏུང་རྒྱ་མཚོ་དང་འདྲ་བ་དངོས་ཅག་གིས་འཚལ་ཇོ་མི་ཐོབ་ཟེར་ནས། ལྷག་རོལ་དོར་དེ་

1 ‘ཁྱོད་ཀྱིས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།
2 ‘གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ ན དེ་ཉིད།
3 ‘བྱོན་པ་ན།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན. དེ་ཉིད།
4 ‘ཀཎྜཔ’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ཀཧྣ་པཱ་འཁོར་དང་[1]བཅས་པ་[2]ཆས་པ་ན[3]། ཐགས་མཁན་གྱིས་སླས་པ།

ཀྱེ་མ་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས།།
རང་གིས་རང་ཉིད་ཤུང་བར་འགྱུར།།
ཐབས་དང་ཤེས་རབ་བྲལ་བ་ཡི།།
རྣལ་འབྱོར་པ་དག་དེ་བཞིན་ནོ།།༧།

ད་གཞན་དུ་ཕྱིན་ཡང་མི་ཕན། གདུགས་དང་ཌཱ་མ་རུ་[4]སོགས་དངོས་གྲུབ་ཕྲ་མོ་ཡིན། ད་དུང་ཆོས་ཉིད་མ་རྟོགས་པས་སྒྲུབ་པ་གྱིས་བྱས་པས། ཀཧྣ་པཱ་དེ་མ་འདོད་ནས་ཛཀྐོཀར་ཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཤར་ཕྱོགས་སོམཔུརིའི་[5]གཙུག་ལག་ཁང་ནས་དཔག་ཚད་བརྒྱ་ཙམ་གྱི་ཕ་རོལ་ན་[6]ཡོད་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ཞིག་[7]གི་འགྲམ་དུ་བྱོན་པ་ན[8]། དེ་ན་‘ལི་ཁི’ (ལྀཙྪི = लीची) བྱ་བའི་ཤིང་ཐོག་ཡོད་པའི་ཤིང་སྡུང་ན་བུ་མོ་ཞིག་[9]འདུག་པ་ལ། ཀཧྣ་པས་ང་ལ་

---

1 ‘འཁོར་བཅས’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘བཅས་ཆས་པ་ན’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག ༣༠ ན

3 ‘ཆས་པ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད

4 ‘ཌཱ་མ་རུ’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘པུ་རིའི’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

6 ‘ཕ་རོལ་གྲོང་ཁྱེར’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

7 ‘གྲོང་ཁྱེར་ཅིག’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

8 ‘བྱོན་པ་ལས’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

9 ‘བུ་མོ་གཅིག’ - སྣྲ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། ‘ཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ཤིང་ཐོག་ཕྱིན་ཅིག་གསུངས་པས། བུ་མོ་དེས་སྐྱེར་དུ་མ་འདོད་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ལྟ་སྟངས་ཀྱིས་ཤིང་ཏོག་ས་ལ་ཕབ། བུ་མོས་སླར་ལྟ་སྟངས་ཀྱིས་ཤིང་ཏོག་དེ་དག་ཤིང་ལ་སྦྱར་བ་དང་། ཀཎྷཔཱ་ཁྲོས་ནས་བུ་མོ་ལ་ཕཊ་བཟླས་པས་བུ་མོའི་ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ནས་ཁྲག་འཛག་སྟེ་ས་ལ་འགྱེལ་བ་དང་མི་ཀུན་འཚུ་བར་གྱུར་ཏེ།

‘སངས་རྒྱས་པ་བྱ་བ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་བ་ཡིན་པ་ལ། རྣལ་འབྱོར་པས་མི་བསད་’ཟེར་བ་དང་། ཀཎྷཔཱ་སེམས་ཞི་ནས་བུ་མོ་ལ་སྙིང་རྗེའི་སེམས་སྐྱོན་དུ་བཏང་སྟེ་[1]ཐུགས་བརྟུལ། རང་གི་སྲུང་བ་ཡང་བཏང་བ་དང་། བུ་མོས་ཀཎྷཔཱ་ལ་ཐུགས་བཏབ་པས། ཀཎྷ་པཱ་ཡང་སྙིང་འོག་ཏུ་ཁྲག་སྐྱུགས་ནས་ན་བར་གྱུར་པ་དང་། ཀཎྷཔཱལ་ཌཱཀྐི་བྱ་བའི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞིག་[2]ཡོད་པ་ལ་སྨྲས་པ། བདག་གི་སྐྲུགས་པ་འདི་ལ་ཕན་པའི་སྨན་ལྷོ་ཕྱོགས་[3]དཔལ་གྱི་རི་ལ་ཡོད་པས་དེ་ལོང་ལ་ང་ལ་ཕྱིན་ཅིག་སྨྲས་པ་དང་། ཌཱཀྐིས་ལྷོ་ཕྱོགས་དཔལ་གྱི་རི་ལ་ཟླ་བ་དྲུག་གི་ལམ་ཡོད་པ་ཞག་དྲུག་ལ་བཅད་[4]ནས་སྨན་བླངས་ཏེ། ཞག་བདུན་གྱིས་ཊོ་ལ་ཡུལ་དུ་སླེབས་པའི་ལམ་ཁར་ཕར་གྱི་བུ་མོ་དེས་རྒན་མོ་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས་ངུ་ཡིན་

1 ‘བཏང་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༡༣ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘མཁའ་འགྲོས་ཅིག’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༠/བ. དེ་ཉིད། མཁའ་འགྲོ་གཅིག པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘ལྷོ་དཔལ་གྱི་རི’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘སྤྲད་ནས’ - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

བསྟོད་པ་དང་། དེས་(ཛྷཎྜིས་)ཁྱོད་ཅི་ལ་ངུ་བ་ཡིན་བྱས་པས། དེ་ན་རེ། ཅི་ལ་མི་ངུ་། རྣལ་འབྱོར་པ་ཀནྷཔཱ་ཤི་ནས་མེད་པས་ངུ་བ་ཡིན་ཟེར་བ་དང་། མཁའ་འགྲོ་ཛྷཎྜིས། ཁོ་ན་སྨན་གྱིས་དགོས་པ་མེད་སྙམ་ནས་སྨན་ས་ལ་སྐྱུར་བ་དེ་གཏན་མོས་ཁྱེར་རོ།།

མཁའ་འགྲོ་མ་ཁྲིམ་དུ་སླེབས་པ་ན་ཀཎྷཔཱ་མ་ཤི་བར་འདུག་པས།
ཀཎྷཔས་སྨན་ག་རེ་ཟེར་བ་ན་སྔར་གྱི་བདམ་བརྗོད་དེ་མེད་བྱས་སོ།།

དེ་ནས་ཞག་བདུན་དུ་སློབ་མའི་ཚོགས་ལ་ཆོས་བཤད། འཕགས་མོ་དབུ་བཅད་མའི་གདམས་[1]ངག་བྱིན་ནས། སློབ་དཔོན་གྱི་རྣམ་སྨིན་གྱི་ལུས་དེ་ཉིད་དུ་བོར་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།། དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཛྷཎྜི་ཁྲོས་ནས། ད་ཅིའི་བུ་[2]མོ་དེ་བཙལ་ན། སྟེང་ལྷ་ཡུལ་དང་། འོག་ཀླུའི་ཡུལ་དང་། བར་མིའི་ཡུལ་གང་ནས་ཀྱང་མ་རྙེད་པ་ལས། 'ཤམླིལ' བྱ་བའི་ཤིང་ཞིག་[3]གི་ནང་ན་འདུག་པ་[4]མཁའ་འགྲོ་མས་དེ་བཟུང་ནས་སྔགས་བཏབ་སྟེ། ཡང་བསད་པར་གྱུར་ཏོ།།

དེས་ན་ང་རྒྱལ་དང་། ཕྲག་དོག་ནི་བར་ཆད་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ།།
གུ་རུ་ཀཎྷཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

---

1 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

2 'བུ་མེད' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།

3 'ཤིང་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'འདུག་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད། 'འདུག་པས' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

༡༨) གུ་རུ་ཀཎྛ་རི་པཱ།

གུ་རུ་ཀཎྛ་རི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། སྐྱེ་གནས་བཞི་ལས་བརྫུས་སྐྱེས་ཡིན།[1] དཔལ་ནཱལནྡཱའི་གཙུག་ལག་ཁང་ནས་[2]ཕར་གཤེཊ་ཏེ་[3]རབ་ཏུ་བྱུང་བ་ཐམས་ཅན་གྱི་མཁན་པོ་མཛད་ནས་མཁན་བུ་འབུམ་ཡོད་པ་ལས། རང་ཉིད་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་མང་པོ་ལས་གདམས་ངག་ཞུས་ཀྱང་རྟོགས་པ་མ་སྐྱེས་ནས། ཡུལ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་ན་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་བཞུགས་པའི་གཏམ་ཐོས་ནས། དད་པ་དང་མོས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་སྐྱེས་ནས་ལམ་དུ་ཞུགས་ཏེ་ཕྱིན་ཏོ།[4]

རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གི་འགྲམ་དུ་(སླེབས་པ་ན་)འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱིས་ཉ་པ་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས་བཞུགས་པ་ཀཎྛ་རི་པས་མཐོང་སྟེ། དེ་ལ་ཕྱག་དང་མཇལ་ཕུལ་ཏེ། བདག་ཡུལ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་ན་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་བཞུགས་པའི་སར་འགྲོ་བ་ལགས་པས་བདག་ལ་ལམ་སྟོན་པར་ཞུ་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། དེ་ན་རེ། ཕ་གི་ནགས་འཐུགས་པོའི་ནང་ན་བཅུད་ལེན་སྒྲུབ་ཅིང་བཞུགས་སོ་ཞེས་ལུང་བསྟན་ནས་དེར་ཕྱིན་པས། སློབ་དཔོན་བཅུད་ལེན་གྱི་རྫས་བསགས་ནས་[5]དེ་སྦྱོར་ཀྱིན་བཞུགས་པ་མཐོང་ནས་ཕྱག་བྱས། གསོལ་བ་

---

1 ‘མིན’ - པེ་ཅི་ ཤོག ༡༣ འོག དེ་ཉིད།

2 ‘ཁང་ན’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༡/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

3 འདིར་ནཱལནྡཱ་ནས་ཕར་གཤེགས་པའི་ལོ་རྒྱུས་འདུག་ཀྱང་། བཞི་བརྒྱ་པའི་ཟླ་གྲགས་འགྲེལ་པར། སློབ་དཔོན་འདི་སིཧྣལའི་རྒྱལ་པོའི་སྲས་སུ་བཤད་དོ། - བཞི་འགྲེལ་ཤོག ༣༡ ཐེ ཡ།

4 ‘ཕྱིན་པ་དང་།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག

5 ‘རྫས་བསགས་ དེ་སྦྱོར’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།

བཏབ་ནས་རྗེས་སུ་གཟུང་བར་ཞུས་པས། གནང་སྟེ། གསང་བ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར། གདམས་ངག་བྱིན་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་གམ་དུ་སྒོམ་གྱིན་བཞུགས་སོ།།

དེ་ནས་ནགས་དེ་དང་ཧ་ཅང་མི་རིང་བ་ཞིག་ན་གྲོང་ཁྱེར་ཞིག་[1]ཡོད་པ་ལ། དེར་དཔོན་སློབ་གཉིས་ཀ་བསོད་སྙོམས་ལ་བྱོན་པས། ཀཾ་རི་པས་བསོད་སྙོམས་ཤིན་ཏུ་ཞིམ་པ་རྙེད་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཞིམ་པ་མ་རྙེད་ནས། སློབ་དཔོན་གྱིས་གསུངས་པ། ཁྱོད་ཀྱི་འདི་ནི་བུད་མེད་ཆགས་ནས་སྦྱིར་བ་ཡིན་པས་མི་ཞིམ་པ་ཡིན་ནོ། །ཁྱོད་ཀྱིས་ཟས་ཞིམ་པོ་རྙེད་པ་མ་[2]ལེགས། དེ་ཡང་ཤིང་གི་འདབ་མའི་སྟེང་དུ་མ་ལེན་པར་ཁབ་ཀྱི་རྩེ་ལ་ཆགས་པ་དེ་ལོང་གསུངས[3]། དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ་འབྲས་ཆན་ཊོག་མ་གཅིག་བླངས་ཏེ་ཟོས་པས། དེའི་ནང་པར་བུད་མེད་རྣམས་ཀྱིས་བག་ཕྱེ་ལ་ཁུར་བ་བྱས་ནས་དེའི་སྟེང་དུ་བཟའ་བ་ཞིམ་པོ་སྣ་ཚོགས་བཞག་སྟེ། ཁབ་ཀྱི་རྩེ་མོ་ལ་བཀལ་ནས་བླངས་པས། དེ་བླ་མ་ལ་ཡང་བླངས། ང་གིས་ཀྱང་གསོལ་བས་བླ་མས་ཞལ་ནས། ཁྱོད་ཀྱི་འདི་ཅི་ཙུག་བྱས་ནས་བླངས་པ་ཡིན་གསུངས། དེ་ན་རེ། བདག་གིས་བླ་མ་རང་གིས་གསུངས་པ་བཞིན་བྱས་ནས་བླངས་པ་ལགས་ཞུས་པས། འོ་ན་ཁྱོད་གྲོང་ཁྱེར་དུ་མ་འགྲོ་བར་ཁང་པའི་ནང་དུ་སྡོད་ཅིག གསུངས་པས། དེ་བཞིན་བྱས་ཏེ་བསྡད་པ་ན། ཤིང་

1 'ཅིག་ཡོད' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༣

2 'རྙེད་པ་དེ་མ་ལེགས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

3 'གསུངས་པས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

གི་ལྷ་མོས་ཁང་པའི་ནང་དུ་བཟའ་བ་ཞིམ་པོ་མང་པོ་དྲངས་ཏེ་རང་གི་གཟུགས་དངོས་སུ་བསྟན་ཤུག་བཙལ་གདམ་བྱས་སོ།།

དེའི་བསོད་སྙོམས་ཀུང་བླངས་ཏེ་བླ་མ་ལ་དྲངས་པས། ཁྱོད་ཀྱིས་འདི་འདྲ་བ་གང་ནས་རྙེད་གསུངས་པ་ལ། ཤིང་གི་ལྷ་མོས་དྲངས་པ་ཡིན་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་འཕགས་པས་བདེན་ནམ་སད་པའི་ཕྱིར་ཤིང་གི་ལྷ་མོའི་ཅན་དུ་བྱོན་ནས་བལྟས་[1]པས། ལྷ་མོའི་གཟུགས་ནི་དངོས་སུ་མ་མཐོང་། དཔུང་པ་མན་[2]ཆད་ཀྱི་ལག་པ་མཐོང་ནས། དེར་སློབ་དཔོན་གྱིས་ངའི་སློབ་མ་ལ་གཟུགས་དངོས་སུ་སྟོན་ལ། ང་ལ་མི་སྟོན་པ་ཅི་ཡིན་གསུངས་པས། ཤིང་དེ་ལས་སྒྲ་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། "ཁྱོད་ལ་ད་དུང་ཉོན་མོངས་པའི་ཆ་ཤས་མ་སྤྱངས་པར་འདུག་ལ། ཁྱོད་ཀྱི་སློབ་མས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ལུས་པ་[3]སྤྱངས་པས་ང་མཐོང་ངོ་"ཞེས་ཟེར།།

དེར་མཁན་སློབ་གཉིས་བཀའ་བགྲོས་ནས་བཅུད་ལེན་གྱི་སྨན་བཟའ་དགོས་ཟེར་ཏེ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀཙ་རི་པཱ་བྱ་བ་ཨཱཙྪ་དེ་ཕྱ་ལ་བྱིན། རང་ཉིད་ཀྱིས་ཀུང་གསོལ་ཏོ[4]།། དེ་ནས་ཀཙ་རི་པཱས་ཤིང་སྐམ་པོ་ཞིག་ལ་བཅུད་ལེན་གྱི་སྨན་[5]བྱུགས་པས་ལོ་མ་སྐྱེས་པ་དང་། དེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གཟིགས་ནས་[6]ཅུང་ཟད་བཞད་དེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ངའི་བཅུད་ལེན་གྱི་སྨན་ཤིང་ལ་བྱུགས་ན། ད་

1 'བལྟས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང 183. vol 87.

2 'ཡན་ཆད' - སྣུབ་ཀུན ༣༡/བ དེ་ཉིད།

3 'མ་ལུས་པར' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད།

4 'གསོལ་ལོ།' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

5 'བཅུད་ལེན་བྱུགས' - པེ་ཅི་, ཤོག དེ་ཉིད།

6 'གཟིགས་པས' - པེ་ཅི་, ཤོག, ༣༥ གོང དེ་ཉིད།

ངའི་བཅུད་ལེན་ཁྲིར་ལ་ཞོག་གསུངས་པས། ཀཋརིཔཱ་ན་རེ། བཞེད་ན་འབུལ་ཟེར་ནས། ཆུ་ཛ་མ་གང་གི་ནང་དུ་རང་གི་ (གཅི་) ཆུ་བཏང་ནས་ཤིང་བུས་དཀྲུགས་པས། བཅུད་ལེན་གྱི་རྫས་སུ་སོང་བས་དེ་ཁྲིར་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་ཐད་དུ་ཕྱིན་ཏེ་[1]ཕུལ་བ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་འདི་རེ་མང་གསུངས་ནས་ཤིང་སྐམ་པོ་ལ་གཏོར་པས། དེ་ལས་ལོ་མ་སྐྱེས་སོ། །དེ་ཡང་སློབ་དཔོན་གྱིས་སློབ་མ་ལ་རྟོགས་པ་སྐྱེས་སམ་མ་སྐྱེས་[2]བརྟགས་པ་ཡིན་ནོ།།

དེར་རྟོགཿ་པ་སྐྱེས་པར་གོ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ད་ཁྱོད་འཁོར་བར་མ་འདུག་གཅིག་གསུངས་པས། དེ་ཐོས་པའི་མོད་ལ་བར་སྣང་ལ་གཤེགས་པར་ཆས་པ་ལ། ཐུར་ནས་སློབ་དཔོན་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་[3]ཅིང་ཕྱག་ཕྱིར་འབྲངས་པའི་ (ཤིང་ལྷ) བུད་མེད་ཅིག་ཡོད་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཁྱོད་ཅི་འདོད་ནས་བདག་ལ་ཡུན་རིང་[4]དུ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ་ཡིན། ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། བུད་མེད་དེས། བདག་ལ་ཅི་ཡང་མི་དགོས་ཀྱི། ཁྱོད་ཀྱི་སྤྱན་ལ་ཆགས་ནས་འགྲོཿ[5]པ་ཡིན་པས་སྤྱན་དགོས་ཟེར་བ་ལ། སློབ་དཔོན་རང་གི་སྤྱན་གཡས་པ་

1 'ཕྱིན་ཏེ།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད།
2 'སྐྱེས་མ་སྐྱེས' - པེ་ཅི་ ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད།
3 'མཛད་ཅིང་'' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན དེ་ཉིད།
4 'བདག་ལ་བརྙེན་བཀུར' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ འོག 184. vol 87.
5 'འབྲིངས་པ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

བཏོན་ནས་དེ་ལ་བྱིན་པས། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཨཱརྱདེཝ་པ་མིག་གཅིག་པ་ཞེས་གྲགས[1]།།

ཨཱརྱདེཝ་ཀཎ་རིས་དེས་བླ་མ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་གདམས་[2]ངག་ཉམས་སུ་བླངས་པས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། རྒྱུད་ཡོངས་སུ་གྲོལ་ནས་བླ་མའི་གསུང་ཐོས་པ་ཙམ་གྱི་མོད་ལ་བར་སྣང་ལ་ཤིང་ཏྲལ་བདུན་ཙམ་དུ་འཕགས་ནས་འགྲོ་བ་དུ་མ་ལ་ཆོས་བསྟན་པས་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱས་ནས་རང་གི་འོག་ན་བླ་མ་བཞུགས་པ་ལ་ཀང་པ་ནམ་མཁའ་ལ་[3]བསྟན་མགོ་ཐུར་དུ་ཕྱོགས་ནས་ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་བླ་མ་ལ་ཕྱག་བྱས་ནས་མི་ཏོག་གི་ཆར་ཕབ་ནས་དེ་ཉིད་དུ་མི་སྣང་བར་གྱུར་རོ།།

སློབ་དཔོན་ཨཱརྱདེཝའམ་གུ་རུ་ཀཎརིཔཱ་སྙེ་མཚན་གཉིས་ལྡན་དེའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'གྲགས་པ་དང་།' - པེ་ཅི་, ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

2 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

3 'ནམ་མཁའ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༩ འོག དེ་ཉིད།

༡༩) གུ་རུ་ཐ[1]ཀན་པྲ།

གུ་རུ་ཐཀན་པྲ་ཞེས་རྟག་ཏུ་ཛུན་སྨྲ་བ་ཡིན་ལ།[2] དེའི་ལོ་རྒྱུས་ནི་ཡུལ་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས། རིཀ་དམངས་རིཀ། ལས་ཀྱི་མཐས་འཚོ་བ་ཞིག་ཡིན[3]།

དེ་ཡང་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཚེ[4]ན་ཤིང་སྡོང་པོ་ཞིག[5]གི་སྟེང་དུ་འདུག་ནས་གཞན་ལ་ཛུན་ཇི་ལྟར་སྨྲའམ་སྙམ་པའི[6]རྟོག་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། དེའི་གན་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་དགེ་སློང་ཞིག[7]འོངས་ནས། ཁྱོད་དེ་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པ་ལ། དེ་ན་རེ། འཕགས་པ་ཞུ་མ་འཚལ་ལོ། །དགེ་སློང་གི་ཞལ་ནས་"ཁྱོད་ཛུན་མ་བྱེད་པར་སློས་ཤིག[8] ཛུན་སྨྲས་པར་གྱུར་ན་དེའི་རྣམ་པར་སྨིན་པས་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་སྐྱེ་བ་ཡིན་ལ། བྱེད་པ་རྒྱུ་མཐུན་ནི་ཛུན་སྨྲ་སྙིང་འདོད་པ་དང་། གཞན་ཡིད་མི་ཆེས་པ་ཡིན། དབང་གི་འབྲས་བུ་ནི་ཕྱིས་ལྕེ་ལ་ཞིང་རྨོ་བ་ཡིན་ནོ[9]། །མྱོང་བ་རྒྱུ་མཐུན་གྱི་འབྲས་བུ་ནི་ཁ་ནས་དྲི་མི་ཞིམ་པ་བྲོ་བ་དང་། ངག་མི་བཙུན་པ་ཡིན། སྐྱེས་བུ་བྱེད་པའི་འབྲས་བུ་ནི་ཞིང་

---

1 'ཐཀནཔྲ' - ཞེས་པ་ཡིག་ནོར་རམ། ཟུར་ཆག་མིན་པར་མངོན་ཏེ་ ཊཀན་པྲ་ཞེས་པ་ཡིན་ནོ།།

2 'འདིའི་འགྱུར་མི་ལེགས་ཏེ།-"ཊཀནཔྲ་ཞེས་པ་ནི་ ཛུན་སྨྲ་བ' ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ" ཞེས་འོང་དགོས།

3 'ཡིན་ལ།' - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད། སྣར་ཀུན ༣༣ ན་ དེ་ཉིད།

4 'དུས་རེ་ཞིག་ན' - སྣར་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༩ འོག་ དེ་ཉིད།

5 'ཅིག' - སྣར་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

6 'སྙམ་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

7 'སློང་གཅིག' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༩ དེ་ཉིད།

8 'ཤིག་དང་།' - པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༣ ན་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ༣༩ དེ་ཉིད།

9 'ཡིན་ཞིང་' - སྣར་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག་ ་ཉིད།

ཚ་སྒྲོ་ཅན་དང་འབྲས་བུ་མེད་པར་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའོ།།" གསུངས་པས། སྐྱེས་བུ་དེས་ཛུན་གྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་སྔར་མ་ཐོས་པ་དེ་ཐོས་པས་འཇིགས་ནས། དེ་ལ་བདེན་པར་སླས་ཏེ། འཕགས་པ། བདག་ནི། ཐཀན(ཛྙཀན་)པཱ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ཏེ། དུས་རྟག་ཏུ་ཛུན་གཅིག་ཏུ་སྨྲ་ཞིང་། བདེན་པ་སྨྲའི་རྩེ་མོ་བརྒྱར་བཤགས་པའི་ཚ་ཙམ་ཡང་མི་སླ་བ་ལགས་སོ། །ད་ལྟར་ཡང་ཛུན་ཅི་སླ་སེམས་པ་ལགས་ཞེར་བས། དགེ་སློང་གིས་ཁྱོད་ཆོས་ཤིག་མི་བྱེད་དམ། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། འཕགས་པ་ཆོས་ལྟ་བགྱིད་ལགས་ཏེ། དང་པོ་ནས་ཛུན་ལ་གོམས་པས་དེ་སྤོང་བར་བྱེད་མི་ནུས་ལགས་ཞེས་ཞེར་བ་ལ། (དགེ་སློང་)དེས་[1]ཛུན་སྨྲས་ཀྱང་མི་སྨྲ་བའི་[2]གདམས་ངག་ཡོད་དོ་གསུངས་པས། དེ་དགའ་སྟེ་ཆོས་ཞུ་འཚལ། ཞེར་ནས་དགེ་སློང་གིས། དེའི་ཁམས་དང་བསམ་པ་དང་བག་ལ་ཉལ་དང་བསྟུན་ནས་རྣ་བར་ཆུ་ཞུགས་པ་འབྱིན་པའི་གདམས་ངག་བཞིན་དུ་ཛུན་ཉིད་ཛུན་གྱི་གཉེན་པོར་བསྒོམ་པའི་གདམས་[3]ངག་གི་སྟོན་དུ་དབང་བསྐུར་ནས་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱས་ཏེ། གདམས་ངག་[4]དངོས་ནི་འདི་སྐད་དུ།

ཞེས་བྱའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གདོད་མ་ནས་ཛུན་ཡིན་ལ། ཁྱོད་ཀྱིས་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་དྲུག་དབང་པོ་དྲུག་གིས་ཉམས་སུ་མྱོང་

1 'དེར' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང་ དེ་ཉིད།

2 'མི་ཏོ་བའི' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང་ དེ་ཉིད།

3 'གདམ་ངག' པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང་ 184. vol 87.པེ་ཅི་དཔར་མའི་མ་དཔེ་ལ་གདམ་ངག་ཅེས་པ་ས་མེད་པ་ཁོ་ན་བྲིས་འདུག་པས། ཟུར་མཆན་མེད་པ་རྣམས་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཤེས་པར་བྱའོ།

4 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ གོང་ 184. vol 87.

པ་ཐམས་ཅད་ཧྲུན་པ་ཡིན་པས། །ཁྱོད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཧྲུན་གཅིག་པུར་སྒོམས་ཤིག་དེ་ཡང—

སྣང་སྲིད་ཧྲུན་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ།།
ཧྲུན་པར་མ་ཤེས་ཧྲུན་སྒྲ་ཟེར།།
ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཧྲུན།།
དེས་ན་ཚོགས་དྲུག་ཡུལ་དྲུག་ཀྱང་།། ༡

ཧྲུན་ཏེ་བདེན་པ་ག་ལ་ཡོད།།
ཧྲུན་ལ་བདེན་པར་ཞེན་པ་ཡི།།
བདེན་པས་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་སྐྱོང་།།
ཀྱེ་མ་བྱིས་པ་ཧྲུན་ཉིད་ལ།། ༢

ཧྲུན་པར་མ་རྟོགས་བདེན་པར་བཟུང་།།
དེ་ཡིས་ཟོ་ཆུའི་ཁྱུད་མོ་ལྟར།།
ཡང་དང་ཡང་དུ་འཁོར་བར་འཁྱམས།།
དེས་ན་ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཀུན།། ༣

ཧྲུན་པ་ཉིད་དུ་ཡང་དག་སྒོམས[1]།།
སྒྲ་ཉིད་ཧྲུན་པ་ཡིན་པ་ལྟར།།

1 ‘བསྒོམས’ - པེ་ཅི་ ༣༥ འོག དེ་ཉིད། བསྒོམས སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན དེ་ཉིད།

གཟུགས་ལ་སོགས་པའང་དེ་བཞིན་ཏེ།།
དེར་འཛིན་པ་ཡང་ཛྷུན་དུ་སྒོམས།། ༨

ཞིས་གསུངས་པས། (དེས་ཐྒཀན་པས་) ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཛྷུན་དུ་བསྒོམས་པས་ལོ་བདུན་ན་སྣང་སྲིད་ཐམས་ཅད་ཛྷུན་དུ་སྣང་བའི་རྟོགས་པ་སྐྱེས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཛྷུན་པར་རྟོགས་པས་ཡང་དག་གི་ཞེན་པ་ལོག་གོ[1] །

དེ་ནས་ཡང་བླ་མ་དེ་བྱོན་ཏེ། "ཆོས་ཐམས་ཅད་ཛྷུན་པར་ཡང་མ་གྲུབ་སྟེ།" མ་སྐྱེས་མ་འགག་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་གི་ངོ་བོས་སྟོང་པར་སྒོམས། གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་རྟོགས་སོ།།

རྣམ་རྟོག་ལམ་དུ་ལོངས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་[2] བླ་མ་ཐྒཀན་ཞེས་གྲགས་ཤིང་། སྐལ་བ་དང་ལྡན་པ་དག་ལ་རྣ་བར་རྒྱུ་ཞུགས་[3]པ་འབྱིན་པའི་གདམས་པ་བསྟན་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གཏུཐྒཀན་[4]པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

1 'ཞིན་པ་ལོག' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི་, ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད།
2 'ཐམས་ཅད་ན' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།
3 'རྒྱུ་ བྲུག་པ' - པེ་ཅི་, ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད།
4 'ཐགན་པའི' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན པེ་ཅི་, ཤོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད།

༣༠) གུ་རུ་ནཱ་རོ་པཱ།[1]

གུ་རུ་ནཱ་རོ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཚང་འཚོང་བའི་རིགས་ཡིན་[2]ལ། རིཏ་འཚོལ་ནས་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་སྣཱ་ལི་པུཏྲ་[3]བྱ་བར་ཤིང་བཏུས་ནས་འཚོང་བར་བྱེད་པའི་ཚེ། ཤྲཱི་ཛྙཱ་ནགར་བྱ་བ་ན་དེ་ལྷོ་པ་[4]བྱ་བའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་[5]བཞུགས་བྱ་བའི་གདམ་ཐོས་ནས། ཤིང་ཁུར་གཅིག་གྲི་ཛྙཱ་སྣ་རའི་པགས་པ་ལ་བཙོངས་ནས་དེ་གྱོན་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཆ་ལུགས་སུ་བྱས་ཏེ། མཐར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཏེ་[6]ལོ་པ་འཚོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཤྲཱི་ཛྙཱ་ནགར་དུ་ཕྱིན་ནས་དྲིས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་ཐོས་ཏེ་གཤེགས་ནས་མེད་ཟེར་བས། ནཱ་རོ་པས་ཡུལ་ཐམས་ཅད་དུ་བཙལ་ཀྱང་མ་རྙེད་དེ། མཐར་གྱིས་ཡུན་རིང་པོ་ལོན་པ་དང་། ལམ་ཀ་ཞིག་ཏུ་འཕྲད་དོ། །

---

1 'ནཱ་རོ་ཏ་པ' - ནཱ་རོ་པ པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་ ཤོག ༡༣༥/བ དེ་ལྟར་དཔེར།

2 འདིར་ཚང་ཚོང་རིགས་སུ་བཤད་ཀྱང་པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་སོགས་སུ, "ཀཤྨིར - ཁ་ཆེ་སྣེ། ཞེས་པ་ནས་····བྲམ་ཟེའི་རིགས་ལ་དཀར་ནག་བརྒྱད་ཡོད་པའི་བཟང་ཤོས་བྲམ་ཟེ་རྒྱལ་པོ་བྱེད་པའི་མིང་ - 'ནཱ་རོ་ཏ་པ' (ནཱ་རོ་ཏམ) ཞེས་བྱ་བའི་བརྒྱུད། ཡབ་ཁ་ཆེའི་རྒྱལ་པོ་དགེ་བའི་གོ་ཆ། ཡུམ་དཔལ་གྱི་བློ་གྲོས་ཀྱི་སྲས་སུ་འཁྲུངས། མཚན་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ།" ཞེས་བྱུང་ངོ་། པད་ཆོས ཤོག ༡༣༦/ན་ དེ་ཉིད།

3 'ཕྱོགས་སུ་སྣཱ་ལ་པུཏྲ' -སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣ ཕྱོགས་སྣཱལ་པུཏྲ པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད།

4 'ཏི་ལོ་པ' ཏི་ལོ་པ སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད།

5 'པོ་ཅིག' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

6 'རྣལ་འབྱོར་ཏི་ལོ་པ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད།

དེ་ནས་ནཱ་རོ་པ་ཞུག་དང་བསྐོར་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཏེ། བླ་མ་ལ་[1]སྐུ་ཁམས་བདེའམ། ཞེས་སྨྲས་པ་ན། ཏཻལོ་པཱ་ན་རེ། ཁྱོད་ཀྱི་བླ་མ་ང་མ་ཡིན་ལ། ངའི་སློབ་མ་ཡང་ཁྱོད་མ་ཡིན་ཟེར་ནས། ཁྲོ་ཡིན་བརྡེག་ཏུ་བྱུང་[2]ཡང་སྨྲར་དད་པར་གྱུར་ཏེ[3]། རྫ་མའི་ནང་དུ་བསོད་སྙོམས་བླངས་ནས་བླ་མ་ལ་དྲངས་ཤིང་། བསོད་སྙོམས་གསོལ་ཏེ་སླར་ཁྲོ་བ་དང་བརྡེག་པ་ལ་སོགས་བྱེད་ཀྱང་ལྷག་པར་དད་པ་སྐྱེས་ཏེ། ལྷག་མ་ཟོས་ཤིང་ཕྱི་ནས་བསྐོར་བ་བྱེད་དོ།། དགོང་མོ་ས་སྦྲོས་པ་དང་དེ་ར་འོངས་ནས་ཉལ།[4] ཐོ་རངས་བསོད་སྙོམས་ལ་འགྲོ། དེ་ནས་བླ་མ་ལ་དྲངས་ཀྱིན་དེ་ལྟར་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་[5]སྐྱོ་བ་མེད་པར་བསྙེན་བཀུར་བྱས་ཀྱང་ཁྲོ་བ་མ་ཡིན་པ་ཐ་མལ་པའི་ཚིག་གཅིག་ཀྱང་གསུང་བ་མེད་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་ཁྱིམ་བདག་གཅིག་[6]བག་མ་ལེན་པའི་སར་བསོད་སྙོམས་ལ་ཕྱིན་པས། བཟའ་བ་མང་པོ་དང་ཁྱད་པར་ཚོད་མའི་རྣམ་གྲངས་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་ཙམ་གྱི་ནང་ནས་སྔོ་ 'པཏས' (པླཱག) ཞེས་བྱ་བའི་ཚོད་མ་ཤིན་ཏུ་ཞིམ་པ་ཞིག་རྣམས་ཀྱེད་པ་ཁུར་ཏེ་བླ་མ་ལ་དྲངས་པས། ཏཻལོ་པས་[7]བཞེས་ནས་

---

1 'བླ་མ་སྐུ་ཁམས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ འོག 184. vol 87.

2 'གྱུར་ཡང་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད།

3 'སྐྱེ' - ཤོག ༣༦ གོང་ དེ་ཉིད།

4 'ཀོངས་ནམ་སྦྲོས་པ་དང་དེ་ར་འོངས་ནས།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང་ དེ་ཉིད།

5 'གཉིས་སྐྱོ་བ་མེད' - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

6 'བདག་ཞིག' - པེ་ཅི ༣༦ གོང་ དེ་ཉིད།

7 'ཏཻལོ་པ' - ཞེས་གོང་དུ་མང་དུ་བྱུང་།

སྡོའི་ཚོད་མ་ལ་བླ་མ་ཤིན་ཏུ་དགྱེས་ནས། བུ་ཟས་འདི་འདྲ་བ་གང་ནས་རྙེད། སུས་ཕྱིན་པ་ཡིན། གསུངས་པས།

ནཱ་རོ་པ་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་དུ་དགའ་བ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ནས་འདི་སྙམ་དུ་བདག་གི་བླ་མའི་དྲུང་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྡད་པ་ལ། ཁྲིད་སྦུ་ཡིན་ཙམ་ཡང་མ་གསུངས་པ་ལ། དེ་རིང་བུ་ཞེས་གསུངས་སོ་སྙམ་ནས་དགའ་བ་དང་། དེ་ལོ་པས་བུ་ཚོད་མ་ཞིམ་པོ་དེ་ད་དུང་སློངས་ལ་ཤོག གསུངས་པས། ལན་བཞི་སློང་དུ་ཕྱིན་པས་ཁྱིམ་དེའི་མི་ཀུན་གྱིས་དགའ་བཞིན་དུ་[1]ཕྱིན་ནོ། །ལན་ལྔ་པ་ལ་ནཱ་རོ་པས་བསམ་པ། ད་ནི་སློང་བ་ཡང་ངོ་ཚ་ལ། མ་ཕྱིན་ན་ནི་བླ་མ་མི་དགྱེས་སྙམ་ནས། སླར་སློང་དུ་ཕྱིན་པ་ན་ཁྱིམ་གྱི་མི་ཀུན་ལས་ལ་ཡིངས་པའི་བར་ལ་ཚོད་མ་སྣོད་དང་བཅས་པ་བརྐུས་ནས་ཁྱིར་འོངས་ཏེ། བླ་མ་ལ་དྲངས་པས་བླ་མ་དགྱེས་ནས་བུ་བརྩོན་འགྲུས་བཟང་པོ་བྱུ་བར་བཏགས།

ཕྱིན་རླབས་དང་དབང་བསྐུར་ཏེ། རྡོ་རྗེ་འཕགས་མོའི་གདམས་པ་གནང་སྟེ་[2]བསྒོམས་པས། ཟླ་བ་དྲུག་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། མཚན་ཡང་ནཱ་རོ་པ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ལ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ནས་མཆོད་པ་ལ་འོངས་པ་ལ་[3]ཐུགས་ཀ་ནས་འོད་བྱུང་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐོང་ཞིང་། ཐག་རིང་བོ་ཟླ་བ་རེའི་ལམ་ནས་ཀྱང་མཐོང་བར་གྱུར་ཏོ།།

1 ‘བཞིན་དུ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ དེ་ཉིད།

2 ‘གནང་དེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘འོངས་པ་ལས’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་གདུལ་བྱ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་དོན་མཛད་ནས། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ནཱ་རོ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༣༧) གུ་རུ་ཤྲཱ་[1]ལི་པཱ།

གུ་རུ་ཤྲཱ་ལི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཤྲཱ་ལི་པཱ་བྱ་བ་སྤྱང་ཀི་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེའི་ཡུལ་ནི་བི་ཥྞུ་པུ་ར་(ཡིན་ལ) རིགས་ནི་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བའི་དམངས་རིགས་ཡིན།[2]

དེ་ཡང་བི་ཥྞུ་པུ་རིའི་གྲོང་ཁྱེར་དེ་དང་ཉེ་བ་ན་དུར་ཁྲོད་ (ཅིག) ཡོད་ལ། དུར་ཁྲོད་དང་ཉེ་བ་ན་གནས་པའི་སྐྱེས་བུ་ཞིག མཚན་མོ་དུར་ཁྲོད་ན་སྤྱང་ཀི་ཀུན་ཚོགས་ནས་སྐད་འདོན་པ་[3]ལ་ཤིན་ཏུ་འཇིགས་ནས། ཉིན་མཚན་མེད་པར་མི་དེ་སྤྱང་ཀིའི་འཇིགས་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་གོ[4]

ཉིན་གཅིག་དེའི་གམ་དུ་དགེ་སློང་ཞིག་བྱོན་ནས་བསོད་སྙོམས་བྱས་པས།

---

1 'ཤ་ལི་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ འོག དེ་ཉིད། འདིར་ཤྲཱ་ལིཔ, ཤྲུ་ལི་པ, ཤ་ལི་པ, སོགས་བྲིས་འདུག་ཀྱང་ ཐམས་ཅད་ - སྲིགྷཱལ་པཱད ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་པར་མངོན།

2 'ཡིན་ལ' - སྣྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད། པེ་ཅི དེ་ཉིད།

3 'འདོན་པ་ཤིན་ཏུ' - པེ་ཅི དེ་ཉིད།

4 'འདུག་པ་དང་'' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི དེ་ཉིད།

དེས་དགེ་སློང་དེའི་ཁང་པ་ལ་ཕྱག་ཕྱས་[1]ནས། གསོང་པོར་སྨྲ་བའི་གཏམ་ལེགས་པར་བྱས་ཏེ། བཞིས་ཆབ་དྲངས་པ་དང་། དགེ་སློང་གིས་སྦྱིན་པའི་ཕན་ཡོན་གྱི་ཆོས་བཤད་པས། དེ་ན་རེ།

"འཕགས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྦྱིན་པའི་ཕན་ཡོན་གྱི་ཆོས་ཀྱང་ངོ་མཚར་ཆེ་སྟེ། དེ་བས་ཀྱང་[2]མི་འཇིགས་པའི་ཆོས་ཤིག་[3]མངའ་ན་བདག་ལ་དེ་སྦྱིན་པར་མཛོད་ཅིག་ཞུས་པས། དགེ་སློང་གིས་ཁྱོད་[4]འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལམ་[5]དེ་མ་ཡིན་པ་ཅི་ལ་འཇིགས། བྱས་པས། (མི་དེ་ན་རེ) "འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་འཇིགས་པ་ནི་ཐུན་མོང་དུ་ཀུན་ལ་ཡོད་ལ[6] བདག་ནི་མོས་པ་ཆོད་ཆུང་[7]བས་གནས་དུར་ཁྲོད་དང་ཉེ་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་སྲུང་ཀིའི་སྐད་ཀྱིས་ཉིན་མཚན་དུ་འཇིགས་པ་རྒྱུན་མི་ཆད་པས། དེ་ལ་ཕན་པའི་ཆོས་མཆིས་ན་བདག་བཀྲིད་ལགས་སོ།" ཞེས་ཞུས་པས།

---

1 'ཕྱག་འཚལ་ནས'-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན དེ་ཉིད། ཕྱག་བཙལ པེ་ཅི ཤོག ༣༦ འོག དེ་ཉིད།

2 'བདག་ལ་དེ་བས་ཀྱང་མི་འཇིགས་པའི་ཆོས་ཅིག་མངའ་ན་དེ་སྦྱིན་པར་མཛོད་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥ པེ་ཅི ཤོག ༣༦ འོག 184. vol 87.

3 'བདག་ལ་དེ་བས་ཀྱང་མི་འཇིགས་པའི་ཆོས་ཅིག་མངའ་ན་དེ་སྦྱིན་པར་མཛོད་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥ པེ་ཅི ཤོག ༣༦ འོག 184. vol 87.

4 'ཁྱོད་ལ' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན དེ་ཉིད།

5 'སྡུག་བསྔལ་པའམ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ འོག

6 'མཐུན་མོང་པ་ཡིན་པ་ཀུན་ལ་ཡོད་ལ།' - པེ་ཅ ༣༦ འོག དེ་ཉིད།

7 'ཆུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

དགེ་སློང་དེས་འཇིགས་པ་དེ་ལ་ཕན་པའི་ཐུགས་དང་གདམས་[1]ངག་ང་ལ་ཡོད་ཀྱི། ཐོག་མར་དབང་བསྐུར་གྱི་[2]གསུངས་ནས། དེས་དབང་ཡོན་དུ་གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་རྫས་མང་པོ་ཕུལ་ནས་ཞུས་སོ། །གདམས་[3]ངག་ནི་འཇིགས་པས་འཇིགས་པ་སྐྱོང་བའི་གདམས་ངག་སྟེ[4]། འདི་ལྟ་སྟེ།

"ཁྱོད་དགྲ་ལ་སོགས་པ་ལ་མི་འཇིགས། སྐྱུང་ཀའི་སྐད་ལས་འཇིགས་ན། ཁྱོད་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་གྱི་སྒྲ་གྲགས་སོ་ཅོག་ཐམས་ཅད་སྐྱུང་ཀའི་སྐད་དང་དབྱེར་མེད་དུ་ཉིན་མཚན་མེད་པར་སྒོམས་ཤིག །གནས་ཀྱང་དུར་ཁྲོད་དུ་ཁང་བུ་བྱིས་ལ་སྡོད་ཅིག"ཅེས་གདམས་པ་བྱིན་པ་དང་། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ་བསྒོམས་པས། སྒྲ་ཐམས་ཅད་གྲགས་སྟོང་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་པའི་ངང་དུ་སྐྱུང་ཀའི་སྒྲའི་འཇིགས་པ་སྟོར་བ་དང་། འཇིགས་པ་རང་གྲོལ་འཇིགས་མེད་བདེ་ཆེན་གྱི་ཉམས་སྐྱེས་ནས་ལོ་དགུར་བསྒོམས་པས། ལུས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།།

1 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'བསྐུར་བགྱིས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨

3 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'སྐྱངས་པའི་གདགས་ངག་ནི' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་སྤྱང་ཀིའི་རོ་ཞིག་[1]ལྷག་པ་ལ་ཁུར་ཏེ། སྤྱོད་པ་བྱས་པས། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཤྲྀ་ལི་པཱ་བྱ་བར་གྲགས་སོ།།[2]

གདུལ་བྱ་ལ་སྣང་སྟོང་དབྱེར་མེད་ཀྱི་གདམས་པ་མང་པོ་བསྟན་ཏེ། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ཀུ་རུ་ཤྲྀ་ལིཔཱའི[3]ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༣༣) ཀུ་རུ་ཏི་ལླི་པཱ།[4]

ཀུ་རུ་ཏི་ལླི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཀི་ཌྜུ[5]ནགར་བྱ་བ་ན་སློབ་དཔོན་ཏི་ལླི་པཱ་ཞེས་བྱ་བ་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་[6]བཞུགས་སོ། །དེས་རྒྱལ་པོའི་མཆོད་གནས་མཛད་དེ། ཉི་མ་རེ་རེ་ལ་འང་གསེར་ཞོ་ལྔ་བརྒྱའི་སྐུ་འཚོ་མངའ་ཞིང་། འཁོར་སློབ་མ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་ཆོས་འཆད་པ་ལ་སོགས་པས་གཡེང་བའི་ཚེ། དགོངས་པ་ལ—

1 'རོ་གཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང 185. vol. 87. 'རོ་ཅིག' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན

2 'གྲགས་ཤིང་...' - པེ་ཅི ༣༧ དེ་ཉིད།

3 'ཤྲྀ་གཱ་ལི་པཱ' - ཞེས་འོང་དགོས་པར་སྣང་།

4 'ཏི་ལོ་པ' - ཏིལོཔའི པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

5 'ཁིཌྜུ་ཀར' - ཞིགུ་ན་ཀར པེ་ཅི ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

6 'པོ་གཅིག' - པེ་ཅི ༣༧ དེ་ཉིད།

བདག་གི་སྐྱེ་བ་འདི་འདྲ་བའི་དོན་མེད་པས་ཅི་ཞིག་བྱ། སྙམ་ནས་ཡང་ནས་ཡང་དུ་བྲོས་པ་ལ་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་མ་བཏང་སྟེ། (ཉིན་གཅིག་)སློབ་དཔོན་གྱིས་ཆེས་གོས་པོར་ནས་(གོས་)ཆེམ་བུ་(ཅན་)ཞིག་བསྣམས་[1] ཁྲིམ་དུ་ཡི་གེ་བྲིས་ནས་བོར་ཏེ[2]། ང་ད་མི་ལོག་པས་སློག་ཏུ་[3]མ་འོངས་ཤིག་བྱ་བ་བྲིས[4]། ཁོང་གིས་ནུབ་མོ་བྲོས་ནས་གྲོང་ཁྱེར་ཀཉྩར་བྱ་བའི་དུར་ཁྲོད་དུ་[5]་བཞུགས་ནས་ཟས་བསོད་སྙོམས་བླངས་ཤིང་སྒྲུབ་པ་བྱེད་པའི་ཚེ་ནཱ་རོ་པས་བསོད་སྙོམས་བླངས་ཤིང་བསྙེན་བཀུར་བྱས་ལ། དེས་འཚོ་བ་མཛད་དེ་བསྒྲུབས་པས་ལོ་བཅུ་ན་དྲི་མ་མ་ལུས་པ་དག་ནས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། ལྷ་ཡུལ་དུ་བྱོན་ནས་ལྷས་ཞལ་ཟས་ཀྱི་བསྙེན་བཀུར་བྱས་ལ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ (ཏཻལླིཔཱ་) ཏི་ལོ་པ་བྱ་བར་གྲགས།

དེས་གདུལ་བྱ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལམ་ལ་བཀོད་ནས་འགྲོ་དོན་མཛད[6]། མཐར་སྐུ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཏཻལླི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. གཅིག པེ་ཅི ལོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

2 'པོར་སྟེ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

3 'སློག་ཏུ' - པེ་ཅི དེ་ཉིད།

4 'བྱ་བའི་ཡི་གེ་བོར' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

5 'ན་བཞུགས' - སྒྲུབ་ཀུན ༣༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ༣༧ དེ་ཉིད།

6 'མཛད་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད། 48. 14. པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང

༣༣) ག་རུ་ཙཎྜཔཱ།[1]

ག་རུ་ཙཎྜཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཙཎྜཔཱ་བྱ་བ་ནི་ཆོས་ཀྱི་གླིགས་བམ་ཁུར་ནས་སློང་བ་ཞིས་་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ཡུལ་ནི་སེརྫྙནགར་བྱ་བར་སྐྲའི་པོ་ཏི་ལག་པར་ཁུར་ནས། དུས་རྟག་ཏུ་གཞན་ལ་སློང་བ་ཞིག་ཡིན་པ་ལ། དུས་གཅིག་[2]གི་ཚེ་ལིགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[3]དང་འཕྲད་པ་ན།

དེ་ན་རེ་ཁྱོད་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་ཟེར་བས། (སློང་མཁན་)དེ་ན་རེ། བདག་འཚོ་བའི་ཕྱིར་དུ་སློང་ཞིང་གདའ་བྱས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པ་)དེ་ན་རེ། ཁྱོད་ལ་ཕྱི་མའི་ལམ་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། དེས་ལམ་ཇི་ལྟར་ཡིད་ལ་བྱ་ཞུས་པས།

རྣལ་འབྱོར་པས་དགྱེས་རྡོར་(གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་)དུ་དབང་བསྐུར་ནས་གདམས་པ་གསུངས་པ་ནི—

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་མཐོལ་ཞིང་བཤགས།།
ཉིན་མཚན་རྟག་ཏུ་བདེ་བ་སྒོམས།[4]།
སྣ་མ་ཅི་བྱས་རང་ལུས་ལྟོས།།
ཕྱི་མར་ཅི་འགྱུར་སེམས་ལ་རག། ༡

---

1 'ཙཎྜཔ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོང ཚཎྜཔ. རྣཏུལ།
2 'དུས་ཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།
3 'བ་གཅིག' པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད། 'པ་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད།
4 'བསྒོམས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན. དེ་ཉིད། པེ་ཅི ༣༧ འོག 185. vol. 87

དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་བསྒོམས་བྱས་ན།།
ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སངས་རྒྱས་ཐོབ།།
རྟགས་ཀྱང་རིམ་པར་འབྱུང་བར་འགྱུར།། ༣

ཞེས་བསྟན་པས། ཙཏྲཔཱས་དོན་མ་རྟོགས་ནས་བླ་མ་ལ་ཞུས་པས། བླ་མའི་ཞལ་ནས།

"སྡིག་པ་ནི་མ་རིག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལས་[1]འཁྲུལ་པ་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་[2]བ་ཡིན་ནོ། །སྣང་སྲིད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་རྟོགས་པའི་ལྟ་བས་སྡིག་པ་དག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །

ཉིན་མཚན་བདེ་བ་བསྒོམ་པ་ནི་སྙིང་རྗེ་རྒྱུན་དུ་བསྒོམས་ན་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བ་རང་ལ་འཆར་བ་ཡིན་ཏེ། ཚེ་སྔ་ཕྱིའི་ལས་[3]རྣམས་མངོན་ཞེན་གྱིས་མ་བཟུང་ན་ཤུགས་འབྱུང་གི་སྤྱོད་པ་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན།

ཕྱི་མ་ཅིར་འགྱུར་ཞེས་[4]པ་ནི་བདེ་སྡུག་ཐམས་ཅད་སེམས་ལས་འབྱུང་བས། ད་དུང་ཡང་མངོན་ཞེན་ཡོད་དམ་མེད་གསུངས་པའོ།།

---

1 'དེ་ལ་འཁྲུལ་པ' - པེ་ཅི ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

2 'བྱུང་པ' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

3 'སྔ་ཕྱིའི་བར་རྣམས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན དེ་ཉིད།

4 'འགྱུར་ཅེས - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན པེ་ཅི ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་ཞེས་པ་ནི་བརྩོན་འགྲུས་བསྐྱེད་དེ་མ་ཡེངས་པར་སེམས་ལ་བལྟ་[1]བའོ། །དེ་ལྟར་རྒྱུན་དུ་བསྒོམས་ན་སེམས་ཀྱི་འཁྲུལ་པ་ལྡོག་[2]ནས་ཆེ་འདི་ཉིད་[3]ལ་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ།" །ཞེས་བླ་མས་གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། ཙཏྲ་པཱས་ཡུལ་སེཛྙནགར་དུ་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པས་ལོ་དྲུག་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་[4]སྟེ། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཙཏྲཔཱ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། ལོ་བདུན་ནས་འཁོར་ལྔ་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ། མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཙཏྲཔཱའི་[5]ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ।།

---

1 'ལྟའོ།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

2 'ལོག་ནས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ཀྱི་འབྲས' པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ཐོབ་ཏེ།' - པེ་ཅི, ཤོག སོགས དེ་ཉིད།

5 'ཙཏྲཔ' - ཞེས་མ་དཔེར་ 'ཙ' བྲིས་འདུག་ཀྱང་ རྒྱ་དཔེར་ 'ཙ' ཉིད་ཡོད་པར་ངེས་སོ། - འདིའི་རིགས་དམངས་རིགས་ཡིན་པར - ནྣ་ཏུལ་གྱིས་གསུངས། - द्र० पुरातत्त्व० नि० पृ० १२१.

༣༨) ཀ་རུ་སྐྲ[1]དྣ་པྰ

ཀ་རུ་སྐྲ་དྣ་པྰའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། དེའི་ཡུལ་མཚིཀྐ་ར་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཡུལ་དེ་ན་བྲམ་ཟེ་ཞིག་ལ་འཁོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་འབྱོར་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པས་(དེ་) དུས་རྟག་ཏུ་སེམས་གཡེང་བ་དང་བཅས་ཏེ་གནས་[2]སོ།། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་འཁོར་ཀུན་ཕྱིར་ཁྲུས་ལ་སོང་ནས་རང་ཉིད་གནས་ཁང་ན་འདུག་པའི་གམ་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག[3]འོངས་ནས་ཟན་བསླངས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་རེ།

ཁྱོད་མི་གཙང་བས་བདག་གི་གནས་འབགས་འགྲོ་ཞིང་། བདག་ལ་འཁོར་དང་མི་ཀུན་གྱིས་འཕྱ་འོང་བས་ཕྱིར་སོང་ཞིག་ཟེར་བ་ལ[4]། རྣལ་འབྱོར་པས་མི་གཙང་བ་ཅི་ལ་ཟེར་གསུངས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་རེ། ལུས་ཁྲུས་མ་བྱས་པ་གོས་མེད་པ་སྣོད་ཐོད་པ་ཐོགས་པ། ཟས་འབགས་པར་ཟ་བ་རིགས་ངན་པ་ལ་ཟེར་བས་མྱུར་དུ་སོང་ཞིག་ཟེར་བ་ལ།[5]

རྣལ་འབྱོར་པས་མི་གཙང་བ་དེ་མ་ཡིན་། ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་རྣམས་མི་དགེ་བ་དང་བཅས་པ་མི་གཙང་བ་ཡིན་ལ། ལུས་ལ་[6]ཁྲུས་བྱས་པས་སེམས་ཀྱི་

---

1 'སྐྲདྣཔ' - པེ་ཅི་ཤོག ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད

2 'གནས་པ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥/ན· 49. vol. 14 པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥/བ· དེ་ཉིད། གཅིག པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད།

4 'ཟེར་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥/བ· དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།

5 'ཟེར་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥ པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

6 'ལུས་ལ་སོགས་པ་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།

སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་པ་མ་ཡིན། བླ་མའི་གདམས་ངག་[1]གིས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་བཀྲུས་ན་གདོད་དག་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་གསུངས་པ—

ཐེག་ཆེན་རིགས་ལྡན་མཆོག་ཡིན་ལ།།
རྒྱལ་དང་བྲམ་ཟེ་དེ་ལྟ་མིན།།
ལུས་སོགས་དྲི་མ་མི་དག་པ།།
བརྒྱུད་ལྡན་བླ་མའི་གདམས་པ་ཡིས།། ༡
བཀྲུས་ན་གཙང་བ་བླ་ན་མེད།།
ཆུ་ཡིས་བཀྲུས་པ་དེ་ལྟ་མིན།།
ཞེན་མེད་སྟོང་དང་ཁ་ཟས་མཆོག།
དཀར་གསུམ་ལ་སོགས་དེ་ལྟ་མིན།། ༢

ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་དད་པར་གྱུར་ནས། བྲ་ཟེ་ན་རེ། ཁྱོད་ཀྱིས་བདག་ལ་དེའི་གདམས་ངག་ཅིག་བྱིན་ཅིག་ཟེར་བས། (རྣལ་འབྱོར་པས་)འོ་ན་བདག་ལ་ཟན་བྱིན་ཅིག དེ་ལྟར་བྱའོ་སྨྲས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་རེ། འདིར་བདག་ཆོས་ཉན་ན་འཁོར་དང་མི་ཀུན་མི་དད་པས། ཁྱོད་གང་དུ་བཞུགས་པ་དེར་བདག་མཆིས་ན། ཉིད་གང་དུ་བཞུགས། ཟེར་བས། ང་དུར་ཁྲོད་ན་འདུག་གི་དེར་ཆང་དང་། ཕག་ཤ་ཁྱེར་ལ་ཤོག བྱས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་རེ། ངེད་བྲམ་ཟེ་

1 ‘གདམ་ངག’ - ཡེ་ཉི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།

རྣམས་ཆང་དང་ཕག་ཤའི་མིང་ཡང་འདོན་[1]མི་རུང་ན་འཁུར་དུ་ག་ལ་རུང་། ཟེར་བས། རྣལ་འབྱོར་པས་གདམས་[2]ངག་དགོས་ན་ཁྱིར་ལ་ཤོག་གསུངས་པས། བྲམ་ཟེས་སླས་པ། ཉིན་པར་མཆིར་མི་འཚལ་བས་མཚན་ལ་དེ་ལྟར་མཆིའོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ། བྲམ་ཟེ་དེས་རང་རྟགས་བསྒྱུར་ནས་ཆོང་དུས་སུ་ཕྱིན་ཏེ། ཆང་དང་ཕག་ཤ་ཉོས་ནས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཕྱིན་ནས་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་དྲངས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་[3]རང་གིས་ཀྱང་གསོལ། བྲམ་ཟེ་ལ་ཡང་བྱིན་ནས་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་མཛད་དེ། བྲམ་ཟེ་ལ་[4]མཇལ་འབུལ་དུ་བཅུག

བྲམ་ཟེ་དེའི་རིགས་ཀྱི་ང་རྒྱལ་བཅག་པའི་དོན་དུ་ཕྱུག་དར་བྱེད་དུ་བཅུག་ནས་ལྟ་བའི་བརྡ་བསྟན་ལ། གནས་དེར་ཞལ་ཞལ་བྱེད་དུ་བཅུག་ནས་[5] སྤྱོད་པའི་བརྡ་བསྟན། ཞལ་ཞལ་དེའི་ཁ་དོག་ནི་སྒོམ་པའི་བརྡའ་ཡིན། དེ་གསུམ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་ནི་འབྲས་བུའི་བརྡ་ཡིན་ནོ། གསུངས་པས།

གོང་གི་བརྡ་དེ་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཡང་རྟོགས། སྣང་སྲིད་འཁྲུལ་པའི་རྣམ་འཕྲུལ་དུ་ཤེས། རིགས་ཀྱི་རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་དོར་ཏེ[6] རྣལ་འབྱོར་ལ་ཞུགས་

---

1 'གདོན་པར' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། 185. Vol 87.

2 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

3 'འབྱོར་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༥/བ.

4 'བྲམ་ཟེ'' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། བྲམ་ཟེར་ སྒྲུབ་ཀུན ༣༥/བ.

5 'པས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།

6 'ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/ན.

ཏེ་བསྒོམས་པས། ལོ་དྲུག་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཐྣཱ་པཱ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ།། [1]

འགྲོ་དོན་མཛད་དེ་མཐར་འཁོར་ལྔ་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ[2]ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཐྣཱ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༥) གུ་རུ་དོཁན་ཏི།[3]

གུ་རུ་དོཁནྡྷིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི— དོཁནྡྷི་ཞེས་བྱ་བ་བསྒྱུར་ན་གཉིས་གཅིག་ཏུ་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་ལ།[4] དེ་ཡང་ཡུལ་ཐྣཱནྡྷཱ་པུ་ར་(གནྡྷཱ་ར་)བྱ་བར་སྤྱང་པོ་ཕྱག་དར་ཁྲོད་བསྡུད་པའི་རིགས་ཡིན།[5]

དེས་རྟག་ཏུ་གོས་རྙིང་པ་ཀུན་སྡུད[6]ཀྱིན་ལྷན་པར་བཙེམས་ནས་གྱོན་པར་བྱེད་དོ།[7] །དུས་གཅིག[8]གི་ཚེ་ལྷན་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་

1 ‘གྲགས་ལ།’ - སྐྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༦/ན. པེ་ཅི ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

2 ‘བཅས་ལུས་དེ་....’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། སྐྲུབ་ཀུན ༣༦ དེ་ཉིད

3 ‘དྷེཁནྡྷི’ - ཞེས་པ་དུམ་བུ་གཉིས་ཅན་ཞེས་པར་བསྒྱུར་ན་ལེགས།

4 ‘ཞེས་བྱ་བ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག པེ་ཅི དང་སྐྲུབ་ཀུན་གཉིས་ཀར ‘ཧྲུཁནྡྷི’ ཞེས་བྱུང་།

5 ‘ཡིན་ལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

6 ‘བསྡུས་ཀྱིན’ - པེ་ཅི ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

7 . ‘གྱོན་པ་དང’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད། . སྐྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/ན. དེ་ཉིད།

8 ‘དུས་གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག སོགས་དེ་ཉིད།

ནས། དེ་ལ་ཁྱོད་དོན་[1]མེད་པའི་སྡུག་བསྔལ་འདི་འདྲ་བས་ཅི་བྱེད། དེ་བས་ཆོས་མི་བྱེད་དམ། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ་བདག་ལ་ཆོས་སུས་སྟེར་ཟེར་བས།

རྣལ་འབྱོར་པས་ངས་སྦྱིན་གསུངས་ནས་བདེ་མཆོག་གི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར། བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་གི་གདམས་[2]ངག་བྱིན་ནས། (མི་དེས་)དེ་བསྒོམས་པས་གོས་འཆེམ་པའི་རྟོག་པས་(ཡིགས་བྱས་ཏེ་)སྒོམ་དུ་མ་འདོད་པ་དང་། དེ་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ་བདག་རྟོག་པས་གཡེངས་ནས་སྒོམ་དུ་མི་འདོད་པར་འདུག་ཞུས་[3]པ་ལ། (རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་) རྟོག་པ་ལམ་འཁྱེར་གྱི་གདམས་ངག་འདི་ལྟར་གནང་སྟེ—

ཆོས་རྣམས་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ངང་།།
འཆེམ་དང་བཅེམ་[4]པར་བྱ་བ་མེད།།
ལྷ་དང་སྔགས་ཀུང་དེ་བཞིན་ནོ།།
གསུམ་རྣམས་རྟོགས་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས།། ༡

ཞེས་[5]གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པ་ན། གོས་འཆེམ་པའི་རྟོག་པ་དང་། ལྷ་དང་སྔགས་གསུམ་པོ་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་སྟོར་ནས།

---

1 ‘ཁྱོད་མེད་པའི…’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

2 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘ཞུ་བ་ལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཉིད། སྣུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན. དེ་ཉིད།

4 ‘འཆེམ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང 185. vol 87.

5 ‘ཞེས་གསུངས…’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང 185. vol 87.

བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་གི་རྟོགས་པ་སྐྱེས་ཏེ། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ།།

དེ་ནས་འགྲོ་དོན་དཔག་མེད་མཛད་དེ་མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུདོཁནཏི་[1](ཌྷཱཁནྜི) པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ।।

༣༦) གུརུཨཛོགི[2]པཱ།

གུརུཨཛོགིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཨཛོགི་བྱ་བ་ལི་ལོ་ཙན་ནོ། །དེ་ཡང་ཡུལ་པཏལིཔུཏྲ་བྱ་བ་ན།[3] ཁྱིམ་བདག་གཅིག་གི་བུ་ཞིག་ཤ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ནས་སྤྱོད་ལམ་རྣམ་པ་བཞི་གང་བྱེད་ཀྱང་ཉལ་ནས་བྱེད་པ་ཞིག[4]ཡོད་པ་ལ།[5] ཕ་མ་དང་ཉེ་དུ[6]ཀུན་འདི་འདྲ་བའི་བུས་ཅི་བཏུབ་ཅེས་བརྙས་བཅོད་བྱེད་ཅིང་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱལ་[7]ནས། དེས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཉལ་ནས་བསྡད།[8]

1 ‘མ་དཔེ་རྣམས་སུ ‘ཌྷཱཁནྜིཔ’ - ཞེས་འདུག དོན་ཡང་ “གཉིས་གཅིག་ཏུ་བྱེད་པ” ཞེས་བསྒྱུར་འདུག་ཀྱང་། དོན་དངོས་ནི ‘དྭིཁཎྜིཔཱད’ ཞེས་པ་དང་། བོད་སྐད་ལ་‘གཉིས་ཅན་ཞབས་’ ཞེས་པ་ཉིད་ཡིན།

2 ‘ཨཛོཀི་ཞེས་པ་ཟུར་ཆག་སྟེ’ ལེགས་སྦྱར་ལ - ‘ཨཡོགི’ ཞེས་པ་ཉིད་ཡིན།

3 ‘བྱ་བར’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/བ. 52. 14.

4 ‘ཅིག་ཡོད་པ་ལས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

5 ‘ཅིག་ཡོད་པ་ལས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

6 ‘ཉེ་དུང་ཀུན’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

7 ‘སྐྱལ་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

8 ‘བསྡད་པ་དང’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/བ. དེ་ཉིད།

དེ་ར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་དེས་དེ་མཐོང་བ་ན། སྙིང་རྗེ་སྐྱེས་ནས། གྲོང་ཁྱེར་ནས་བཟའ་བཏུང་བླངས་ཏེ་[1]དེ་ལ་བྱིན་པ་དང་། དེས་ཟས་ཟ་བ་ལའང་[2]མི་ལངས་པར་མཐོང་ནས། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཟས་ཟ་བ་ལའང་མི་ལངས་པར་འདུག་ན་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་ཅི་ནུས་བྱས་པས། དེ་ན་རེ། ཅི་ཡང་མ་ནུས་པས་བདག་ཕ་མས་སྤངས་པ་ཡིན་ཟེར། རྣལ་(འབྱོར་པས་དེ་ལ་)འོ་ན་ཉལ་གྱིན་ཆོས་སྒྲུབ་ནུས་སམ། བྱས་པས། དེ་ན་རེ། ནུས་ཏེ་བདག་འདྲ་བ་ལ་ཆོས་སུས་སྟེར། ཟེར་རོ། །

རྣལ་འབྱོར་པས་ངས་སྟེར་གསུངས་ཏེ[3]། དགྱེས་རྡོར་(གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་)དུ་དབང་བསྐུར། མི་ཟབ་པའི་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་གདམས་ངག་ཏུ་བྱིན་ནས་སྙིང་སྒོའི་སྣ་རྩེར་ཐིག་ལེ་ཉུངས་ཀར་[4]གྱི་འབྲུ་ཙམ་གྱི་ནང་དུ་སྟོང་གསུམ་འདུས་པར་སྒོམས་ཤིག་བྱས་པས། དེ་ན་རེ་དེ་ལ་རྟགས་ཅི་ལྟ་བུ་འབྱུང་བ་ལགས། ཟེར་བ་ལ། (རྣལ་འབྱོར་པས་)བསྒོམས་ཙ་ན་ཤེས་ཡོང་གི་གསུངས།[5]

(དེ་)ནས་དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པས། ཡུངས་ཀར་[6]དང་སྟོང་

---

1 'བླངས་ནས་' པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཉིད།

2 'ཟ་བ་ལ་མི་ལངས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 'གསུངས་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/བ. 52.

4 'ཡུངས་ཀར' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ འོག 185. vol 87.

5 'བསྒོམས་རྩ་ན་ཤེས་འོང་གི་གསུངས་པས།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ འོག དེ་ཉིད།

6 'ཉུངས་ཀར' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/བ. དེ་ཉིད།

གསུམ་གྱི་དམིགས་པ་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་སྟོར་ནས་སྟོང་ཉིད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་རྟོགས་པ་རྒྱུད་ལ་འཁྲུངས་སོ།།

དེས་ལོ་དགུར་བསྒོམས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཨཛོ་གིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༧) གུ་རུ་ཀལཔཱ།

གུ་རུ་ཀལཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀལཔཱ་ཞེས་པ་[1]བསྒྱུར་ན་སྨྱོན་པ་ཞེས་བྱའོ[2]།། དེའི་ཡུལ་ནི་རཱཛ་པུ་རི་ཡིན[3]། བླ་མ་ནི་རྒྱུད་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ཡིན།[4]

ཀལཔཱ་ནི་ཚེ་སྔ་མ་བཟོད་པ་བསྒོམས་པའི་འབྲས་བུ་གཟུགས་བྱད་ཤིན་དུ་མཆར་བ་ཞིག་ཡོད་ལ། རཱཛ་པུ་རིའི་སྐྱེ་བོ་ཀུན་དེ་ལ་ལྟ་ཞིང་འབྲངས་པས།[5] དེ་དེས་སྐྱོ་ནས་དུར་ཁྲོད་ཞིག་ཏུ་འདུག་ནས་ཡོད་པ་ལ། ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་

1 'ཀ་ལ་པ་སྙེ' - སྣར་ཀུན ༣༦/བ. དེ་ཉིད།

2 'ཀ་ལ་པ་ཞེས་པ་བསྒྱུར་ན་སྨྱོན་པ་ཞེས་བྱའོ།།' - ཞེས་པའི་ཚིག་འདི་'པེ་ཅི'དཔར་མར་མི་འདུག་ཤོག ༣༩ འོག 186. vol 87.

3 'ཡུལ་ནི་རཛ་པུ་རི་ཡིན།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

4 'ཅིག་ཡིན་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ འོག 185. vol 87.

5 'འབྲིང་བ་ལ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། 'འབྲང་བས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ འོག

རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[1]དེར་བྱོན་ནས་ཁྱོད་དུར་ཁྲོད་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས།

(མི་)དེ་ན་རེ། བདག་མི་ཀུན་གྱིས་འདུག་ཏུ་མ་སྟེར་ནས་འདིར་འདུག་གིན་གདའ་ཞུས་པས།[2] (རྣལ་འབྱོར་) པས་འོ་ན་ཁྱོད་ལ་ཆོས་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། (དེ་ན་རེ།) ཆོས་དགོས་ཏེ་བདག་ལ་སུས་སྟེར་ཞེ་ར། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས། ཁྱོད་ལ་ཆོས་དགོས་ན་ངས་སྦྱིན་གྱིས་[3]གསུངས་ནས། བདེ་མཆོག་(གི་དཀྱིལ་འཁོར་)ཏུ་དབང་བསྐུར། བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་དོན་སྒོམ་དུ་བཅུག་པས། དེས་བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་ཏུ་རྟོགས་པའི་ནང་དུ་བདག་གཞན་གཉིས་སུ་དམིཊ་པ་སྤོར་ནས་ཤུཊ་འབྱུང་ལྷུག་པའི་སྤྱོད་པ་སྤྱད་པས། ཛྙཛཔུརིའི་མི་ཀུན་ན་རེ། སྨྱོན་པ་ཅིག་འདུག་ཟེར་བ་ལ། དེས་གསུངས་པ—

བདག་ཏུ་བཟུང་བས་[4]གཞན་སྣང་སྟེ།།
གཉིས་ཀྱིས་རང་བཞིན་སྡུག་པར་བྱས།།
མཁས་པས་དེ་ལྟར་མཁྱེན་པ་ན།།
རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ལྷ་ཚོགས་དང་།། ༧
ཡི་གེ་ཨ་ཡ་ནང་ཉིད་དུ།།
མཁའ་ལ་འཇའ་ནི་ཡལ་བ་ལྟར།།

---

1 'པ་ཅིག' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།
2 'ཟེར་རོ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
3 'བྱིན་གྱིས' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།
4 'གཟུང་པ' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད། སྣར་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

སྐྱེ་དང་འགག་པ་གནས་པ་གསུམ།།
སྨོན་པ་བདག་གིས་མ་སྤྱད་པས།། ༣

གཉིས་མེད་ཤུགས་འབྱུང་སྤྱོད་པ་བདེ།།
གསལ་ལ་མ་འགགས་རྟོགས་པ་བདེ།།
ཚོགས་དྲུག་མ་འགགས་སྒོམ་པ་བདེ།།
རྩོལ་སྒྲུབ་མེད་པའི་འབྲས་བུ་བདེ།། ༣

ཞེས་གསུངས་ནས་དཔལ་བདུན་ཙམ་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས་ཆོ་འཕྲུལ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་ཏོ།།[1]

དེ་མན་ཆད་བླ་མ་ཀ་ལ་པཱ་ཞེས་གྲགས་ལ། མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀ་ལ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ༎

1 ‘བསྟན་ནས་’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ ཡེ་ཉི, ཤོག ༣༠ གོང དེ་ཉིད།

༣༨) གུ་རུ་ཌོམྦི་ཧི་པཱ།

གུ་རུ་ཌོམྦི་ཧི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རིགས་ཁྲུས་མཁན། ཡུལ་སྤཱལིཔུཏྲནགར། དེ་ན་[1]ཁྲུས་མཁན་ཕ་བུ་གཉིས་དུས་རྟག་ཏུ་ཁྲུས་ཀྱི་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བར་བྱེད་པ་ལས། (དུས་གཅིག་གི་ཚེ་)དེའི་གན་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་དེ་གཉིས་ལ་བཟའ་བ་བསླངས་[2]པས། དེ་གཉིས་ཀྱིས་བསོད་སྙོམས་དྲངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་ན་བཟའ་བཀྲུ་རྒྱུ་མ་མཆིས་སམ། བདག་གིས་བཀྲུ་ཡི་ཟེར་བ་ལ།

རྣལ་འབྱོར་པས་སོལ་བ་ཞིག་[3]ལག་ཏུ་ཐོགས་ནས་འདི་བཀྲུས་ན་དྲི་མ་དག་ནུས་སམ། གསུངས་པས། ཁྲུས་མཁན་གྱི་བུ་དེ་ན་རེ། སོལ་བ་ནག་པོའི་རང་བཞིན་བཀྲུས་ཀྱང་དཀར་པོར་མི་འགྱུར་བ་མཆི་ཞུས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པས་) ཁྱོད་ཀྱིས་ཕྱིའི་ཁྲུས་བྱས་ཀྱང་ནང་གི་དུག་གསུམ་གྱི་དྲི་མ་མ་དག་ན་ཕྱིའི་ཁྲུས་ཀྱིས་དག་པར་ངས་མ་མཐོང་། དེས་ན་ཁྱེད་ཅག་དུས་རྟག་ཏུ་ཁྲུས་(བྱེད)མི་དགོས་པར་ལན་གཅིག་བཀྲུས་པས་ཆོག་པའི་གདམས་པ་ང་ལ་ཡོད་ན། དེ་ཁྱོད་ལ་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། (དེ་ན་རེ་) དགོས་ཟེར།

(དེ་)ནས་དེར་(རྣལ་འབྱོར་པས་ཁྲུས་མཁན་གྱི་བུ་དེ་ལ་)བདེ་མཆོག་(གི་དཀྱིལ་འཁོར་)དུ་དབང་བསྐུར་ཏེ་ཐིགས་དང་། ཕྱག་རྒྱ་དང་། ཏིང་ངེ་

---

1 'ན་གར་བྲུ་བ་ན' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/ན. དེ་ཉིད། ནཱ་གར་བྲུ་བ་ན པེ་ཅི དེ་ཉིད།

2 'བླངས' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

3 'བ་གཅིག' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

འཛིན་གསུམ་[1]གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་གདམས་[2]ངག་བྱིན།

དེས་བསྒོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་ཕྱག་རྒྱས་ལུས་ཀྱི་དྲི་མ་དག སྔགས་ཀྱིས་ངག་གི་དྲི་མ་དག །ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་གོ།[3] གདམས་ངག་ནི།[4]

འབར་བའི་ཕྱག་རྒྱའི་ཆུ་ཡིས་ནི།།
ལུས་ཀྱི་དྲི་མ་འཁྲུད་པ་ཡིན།།
ཨཱལིཀཱལི་ཆུ་ཡིས་ནི།།
ངག་གི་དྲི་མ་འཁྲུད་པ་ཡིན།། ༡

དཔའ་བོ་ཡབ་ཡུམ་སྦྱོར་བ་ཡིས།།
སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དྭུང་འབྱིན་ནོ།། ༢

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་དུ། ལུས་ཕྱག་རྒྱ་ངག་བཟླས་པ་སེམས་བསྐྱེད་རྫོགས་དང་མ་བྲལ་བར་བསྒོམས་པས། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ། (ཆུ་ལ་) གོས་དྲི་མ་

---

1 ‘སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གསུམ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ སྔགས་ཕྱག་ཏིང་ངེ་འཛིན། པེ་ཅི ཤོག ༣༠ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 ‘དག་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ. དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘གདམས་ངག་སྤྱ་བ་ནི།’ - སྒྲུབ་ཀུན ༣༩/བ. གདམ་ངག་ངོ་བོ་ནི པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ཅན་བཏང་བ་བཀྲུ་མི་དགོས་པར་རང་དག་ཏུ་འགྲོ་བ་ཀུན་གྱིས་མཐོང་བས། ཡོན་ཏན་ཐོབ་པར་གཟིད་རྟོགས་ལ། ཀྐོཤིཔཱ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ།[1]།

གུརུཀྐོཤིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༩) གུརུཀཾཀན་པཱ།

གུརུཀཾཀནའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཤྲིཥྞུནགར།[2] (རིགས་རྒྱལ་རིགས།) (ཡུལ་དེ་) ན་རྒྱལ་པོ་གཅིག་ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་ཤིང་། འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་བྲེལ་བ་མེད་པ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་གནས་པའི་ཚེ། དེའི་གམ་[3]དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[4]བྱོན་ནས་བསོད་སྙོམས་བསླངས་[5]པས། རྒྱལ་པོས་བཟའ་བ་དང་། བཅའ་བ་གྱ་ནོམ་པ་བྲངས་ནས། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་གསུངས་པ།

---

1 གྲགས་ཤིང་།' - སྣྲུབ་ཀུན ༣༩/བ. པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'ནགར་བྲ་བ་ན' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. པེ་ཅི ཤོག ༣༠ འོག དེ་ཉིད།

3 'གན་དུ' - སྣྲུབ་ཀུན ༣༧ 54. 14.

4 པ་ཅིག སྣྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།

5 'སླངས་' - པེ་ཅི ཤོག ༣༠ འོག 186. Vol 87

"རྒྱལ་པོ། རྒྱལ་སྲིད་ལ་སྙིང་པོ་མེད་ཅིང་། སྲིད་པར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་བ་ཡིན་ཏེ།[1] སྐྱེ་རྒ་ན་[2]འཆི་ཟོ་ཆུན་ལྟར་འཁོར་བ་ཡིན་ཞིང་[3]། བྱེ་བྲག་གི་སྡུག་བསྔལ་ཟད་པ་མེད་ལ།[4] མཐོ་རིས་ཀྱི་བདེ་བའང་འགྱུར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ཡིན། སྟོང་འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་པའི་[5]རྒྱལ་པོ་ཡང་ངན་སོང་དུ་ལྟུང་[6]བ་ཡོད་ན། འདོད་ཡོན་སླུ་བྱེད་ཟིལ་པ་དང་འདྲ་བ་ལ་མ་ཆགས་པར་རྒྱལ་པོ་ཆོས་མཛོད་ཅིག"གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ།

"འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་མ་སྤངས་པར་ཆོས་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་ཆོས་བགྱིད་ཀྱི། དེ་མ་ཡིན་པར་གོས་ཆེམ་བུ་ཅན་དང་། ཟས་བསོད་སྙོམས་ཀྱིས་བདག་འཚོ་མི་ནུས་སོ།།" ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་སྨྲས་པ "གོས་ཆེམ་བུ་དང་། ཟས་བསོད་སྙོམས་ནི་མཆོག་ཡིན་པས། ཉིད་ཀྱང་དེ་འདྲ་བ་ལ་བསྟེན་[7]དགོས་སོ།།" ཞེས་[8]སྨྲས་པ་ན་རྒྱལ་པོ་ན་རེ།

---

1 'ཡིན་སྟེ།' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'སྐྱེ་གིས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ཅིང' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'མེད་པ་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

5 'འཁོར་བསྒྱུར་བའང·····' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། སྒྱུར་བའི - སྒྲུབ་ཀུན ༣༧ །

6 'ལྷུང་བ' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

7 'རྟེན་དགོས' པེ་ཅི དེ་ཉིད།

8 'ཤེས་སྨྲས་པ་ན།' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

གོས་ཆེམ་བུ་ཅན་སྐྱུག་བྲོ། ཁ་ཕོར་ཐོད་པ་དང་། ཟས་ལྷག་རོལ་སྐྱུག་བྲོ་བས། འདི་བདག་གིས་མི་ནུས་སོ་ཞེས་ཞུས་པ་དང་། ནལ་འབྱོར་པ་དེས་སླས་པ—

"ཁྱོད་ཀྱི་དེ་འདྲ་བའི་ང་རྒྱལ་དང་། རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་པ་ནི་མཐར་ངན་སོང་གི་སྡུག་བསྔལ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་བ་ཡིན་ལ། ངས་གོས་ཆེམ་བུ་(ཅན) དང་། ཟས་ལྷག་རོལ་དང་། སྣོད་ཐོད་པ་ཁུར་ཡང་འབྲས་བུ་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་པས།། འོ་སྐོལ་(གྱི་) རྒྱལ་སྲིད་ཁྱད་པར་ཆེ་བ་ཡིན།" སླས་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ། "འོན་ཀྱང་འདོད་ཡོན་མ་སྤངས་པར་ཆོས་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་(ང་)ལ་ཡོད་ཀྱི་" གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། "འོ་ན་བདག་ཆོས་བསྒྱིད་ལགས་པས་" གནང་དགོས་ཞུས་པ་ལ།

ནལ་འབྱོར་པས་གདམས་པ། "རྒྱལ་པོ་རང་གི་ལག་གི་གདུ་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འབར་བ་ལ་ཞེན་པ་དང་། ང་རྒྱལ་བློས་ཐོང་ལ་རིན་པོ་ཆེའི་འོད་དང་ཞེན་པ་མེད་པའི་སེམས་གཉིས་གཅིག་ཏུ་གྱིས་ལ་སྒོམས་[2]ཤིག"ཅེས་གདམས་ངག་བྱིན་ཏོ།[3]

གདུ་བུ་འོད་ཟེར་ལིགས་འཕྲོ་བ།།
བློས་ཤིག་རང་སེམས་ཉིད་ཀྱང་བདེ།།

---

1 'ཡིན་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥/ན. 55. 14.

2 'བསྒོམས་ཤིག' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༧ གོང་ དེ་ཉིད།

3 'བྱིན་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥/ན. དེ་ཉིད།

ཕྱི་ཡི་རྐྱེན་སོགས་དུ་མ་ཡིས། །
ཁ་དོག་དུ་མ་འབྱུང་འགྱུར་ཡང་།། ༡
དེ་ཡི་རང་བཞིན་འགྱུར་བ་མེད།།
དེ་བཞིན་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་ཡིས།།
རྣམ་རྟོག་དུ་མ་འབྱུང་འགྱུར་ཡང་།།
སེམས་ཉིད་རིན་ཆེན་འབར་བ་བཞིན།། ༣

ཞེས་གསུངས་པ་ན། དེ་བཞིན་དུ་རྒྱལ་པོས་ཕྱག་གཡས་པའི་གདུ་བུ་ལ་སེམས་གཏད་ནས་བསྒོམས་[1]པས་འདོད་ཡོན་གྱི་སྟེང་དུ་སེམས་ཉིད་ངོ་འཕྲོད་[2]ནས་ཟླ་བ་དྲུག་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་[3]སྟེ་ཡོད་པའི་ཚེ། རང་གི་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་སྒོ་གསེང་[4]ནས་བལྟས་པས། ལྷའི་བུ་མོ་དཔག་ཏུ་མེད་པས་བསྐོར་བར་མཐོང་ནས་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། གདམས་པ་[5]ཞུས་པས། དེའི་ཞལ་ནས—

སེམས་ཉིད་རྟོགས་པ་རྒྱལ་པོ་ཡིན།།
བདེ་བ་ཆེན་པོ་རྒྱལ་སྲིད་ཡིན།།
ཟུང་དུ་འཇུག་པ་ལོངས་སྤྱོད་མཆོག།
རྒྱལ་པོ་དགོས་ན་དེ་ལྟར་གྱིས།། ༢

1 'སྒོམས་པས' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།
2 'ངོ་འཕྲད' - སྒྲུབ་ཀུན ༣༨/བ· དེ་ཉིད།
3 'ཐོབ་དེ།' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།
4 'སྒོ་སེང'' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།
5 'གདམ་ངག་ཞུས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ·

ཞེས་[1]གསུངས་ནས་རང་གི་འཁོར་དང་། ཡིཀྵི་[2]ནགརའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་དང་བཅས་ཏེ། ལོ་ལྔ་བརྒྱ་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་ཤིང་། (མཚན་ཡང་)གདུ་བུ་པ་ཞེས་[3]ཡོངས་སུ་གྲགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀཾ་ཀན་པའི་[4]ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༠) གུ་རུ་ཀམྦ་[5]ལ་པ

གུ་རུ་ཀམྦ་ལ་(ཀམྦལ་) པའི་[6]ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཀངྐ་རམ་[7]བྱ་བ་ན། རྒྱལ་པོ་ཞིག་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་ལ་དབང་བྱེད་པ་དེ་ལ་སྲས་གཉིས་ཡོད་པ་ལ། དེའི་ཡབ་གྲོངས་པ་དང་། སྲས་ཆེ་བ་རང་བཞིན་བཟང་བས་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་དེ་རྒྱལ་ཚབ་ཏུ་དབང་བསྐུར་བ་དང་། དེའི་བསོད་ནམས་ཀྱིས་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་འབྱོར་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ནས། གསེར་ལ་སོགས་པའི་སྣོད་དུ་བཟའ་བ་ལོངས་སྤྱོད་པར་བྱེད་དོ།།[8]

---

1 ‘ཤེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘བིཀྵུནགར’ - སྣྲབཀུན ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད།

3 ‘གདུ་བུ་པ་ཞེས་སུ་ཡང་གྲགས་སོ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

4 ‘ཀཾཀ་པའི’ - སྣྲབཀུན ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད།

5 ‘ཀམརིཔ’ - (कमरिपा) कम्बलपा, = ཀམྦལཔ - राहुल. पुरातत्व नि० पृ० १२२, प्रथम संस्करण ।

6 ‘ཀམྦལའི’ - སྣྲབས་ཀུན, ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད།

7 ‘ཀཀྐརམ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

8 ‘བྱེད་པ་དང་།’ - སྣྲབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

རྒྱལ་བུ་དེས་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་[1]ནས་ཟླ་བ་དྲུག་[2]གི་བར་དུ་ཡུམ་དང་མ་འཕྲད་ན།[3] དེ་རང་ངའི་མ་གར་སོང་། འདི་ར་མི་འོང་བ་ཅི། ཞེས་སྨྲས་པས། [འཁོར་གཞན་རྣམས་ཀྱིས་] ཡབ་ཀྱི་མྱ་ངན་བྱེད་པས་འདིར་མ་གཤེགས་སོ་ཟེར་རོ། །དེ་ནས་ལོ་གཅིག་ལོན་པ་དང་། མ་དེ་ར་འོངས་[4]ནས་ངུས་པས། དེར་[བུས]ཡུམ་ཅི་ལ་བཤུམ། བྱས་པས། (མས) ང་ཁྱོད་རིན་པོ་ཆེའི་ཁྲི་ལ་འདུག་ཅིང་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་པ་ལ་མ་དགའ་ནས་ངུས་པ་ཡིན་ཟེར་བས། རྒྱལ་བུས་མ་ལ་ཞུས་པ—

"ཡུམ་མི་དགྱེས་ན་ནུ་བོ་ལ་[5]རྒྱལ་སྲིད་འཛིན་དུ་བཅུག་ནས། བདག་རབ་ཏུ་བྱུང་[6]བ་བགྱིད་ལགས་སམ། ཞུས་པས།" (མས)དེ་རུང་ཟེར། དེ་ནས་གཅུང་[7]ལ་རྒྱལ་སྲིད་གཏད་དེ་རབ་ཏུ་བྱུང་།[8] འཁོར་དགེ་སློང་སུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ་གཙུག་ལག་ཁང་ཞིག་ཏུ་བཞུགས་པ་ན། དེར་མ་འོངས་ནས་ཡང་ངུས་པ་དང་། སྲས་ཀྱིས་དེ་ལ་ཕྱག་བྱས་ཏེ། ཡུམ་ཅི་ལ་བཤུམ། བྱས་པས།

---

1 'གཟུང་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག
2 'ཟླ་ལྔ་དྲུག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག
3 'མ་འཕྲད་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ དེ་ཉིད།
4 'འོང་ནས' - སྣར་ཐང ཤོག ༣༨/བ. དེ་ཉིད།
5 'ནུ་བོ་རྒྱལ་སྲིད' - སྣར་ཐང ཤོག ༣༨/བ. 56. 14.
6 'རབ་ཏུ་འབྱུང་བར' - དཔེ ཤོག ༣༢ འོག 186 . 87.
7 'ཅུང་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ འོག དེ་ཉིད།
8 'རབ་ཏུ་བྱུང་བྱས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༢ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ༣༨ དེ་ཉིད།

མས་ཁྱོད་རབ་ཏུ་བྱུང་ཡང་རྒྱལ་པོའི་ཚུལ་ལྟར་འཁོར་དང་འདུ་འཛིའི་ནང་དུ་བཞུགས་པ་འདིས་[1] མ་དགའ་བ་ཡིན་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། སྤྲས་ཀྱིས་འོ་ན་ཅི་ཙུག་བགྱི། ཞེས་ཞུས་པས།

མས་དགོན་པར་འདུ་འཛི་སྤྱོངས་ལ་འདུག་ཅིག་ཟེར་བས། དེས་གཙུག་ལག་ཁང་སྤྱངས་ནས་དགོན་པར་ཤིང་དྲུང་ཞིག་[2]གི་རྩར་འདུག་པ་དང་། དེར་ཡང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ལས་འཕྲོས་བྲེལ་བ་མེད་པར་གྱུར་པ་དང་། ཡང་(དེར)ཡུམ་བྱོན་ནས་ངུས་པས། སྤྲས་ཀྱིས་ཡུམ་ལ་ཕྱག་བྱས་དེ[3]། ཅི་ཙུག་བགྱི། ཞུས་པས། མ་ན་རེ—

'རབ་ཏུ་བྱུང་བ་ལ་འཚོ་བའི་ཡོ་བྱད་དོན་མེད་པ་བཅངས་ནས་ཅི་བྱེད།' ཟེར་རོ། དེ་ནས་དེས་ཆོས་གོས་དང་ལྷུང་བཟེད་ལ་སོགས་པ་ཀུན་བོར་ནས། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཆ་ལུགས་སུ་བྱས་ཏེ་ཡུལ་ཁམས་གཞན་དུ་ཕྱིན་པ་ན། དེའི་མ་[4]མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིན་པས་ལམ་བར་དུ་སྤྲས་ལ་བདེ་མཆོག་(གི་དཀྱིལ་འཁོར)དུ་དབང་བསྐུར་ནས་ཆོས་བཤད་པས། སྤྲས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཐལ་བའི་ནང་དུ་ཉལ་ཕྱིན་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྒྲུབས་པས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ་

---

1 'འདིའི་མ་དགའ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།

2 'ཅིག་གི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན. 57 .དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།

3 'བྱས་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།

4 'དེའི་ཡུམ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ནམ་མཁའ་ལ་ཕྱིན་པ་དང་། ཡུམ་ཌཱ་ཀི་མ་མང་པོ་དང་ལྷན་ཅིག་ནམ་མཁའ་ལ་འོངས་ནས་སྲས་ལ་སླས་པ—

"ཁྱོད་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མི་བྱེད་པར་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་ལ་ངོ་མཚར་ཆེ་རྒྱུ་ཅི་ཡོད། དེ་འདྲ་བྱ་དང་འདྲ་བ་ཡིན་པས་ད་འགྲོ་དོན་གྱི་ཞིག་གསུངས།[1]"

སྲས་ཀྱི་ནུབ་ཕྱོགས་ཨོ་རྒྱན་གྱི་[2]ཡུལ་སྣལ་པུར་བྱ་བ་ན་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ཕྱེད་དང་གསུམ་ཡོད་པར་ཕྱིན་པ་དང་། དེ་ན་[3]ཡུལ་ཀརྞིར[4]ཞེས་བྱ་བ་ན་བྲག་[5]ཕན་ལྷ་ཞེས་བྱ་བའི་དགོན་པ་ན་ཏལ་རྩེ་[6]ཕུག་བྱ་བའི་ཕུག་པ་ཡོད་པར་བཞུགས་ནས་སྒྲུབ་པ་བྱས་པས་ཕྲ་མེན་མ་ཀུན་གྱིས་ཆོར་ནས། ཕྲ་མེན་མ་གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་སྨྲན་པ་དང་། ཕྲ་མེན་གྱི་གཙོ་མོ་པདྨ་དེ་ཝི་བྱ་བ་འཁོར་དང་བཅས་ཏེ་བར་ཆད་ལ་འོངས་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ལྭ་བ་ནག་པོ་ཞིག་[7]ཀྱུན་ནས་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བསོད་སྙོམས་ལ་བྱོན་པའི་ལམ་དུ་ཕྲ་མེན་མའི་བུ་མོ་ཚན་[8]

1 'གསུངས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན. 57 ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣ གོང དེ་ཉིད།

2 'ཨོ་རྒྱན་གྱི་སྣལ་པུར' - ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

3 'དེ་ལ་ཡུལ་ཀརྞིར' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩ ན དེ་ཉིད།

4 'ཀར་བིར' - ཡེ་ཉི, ༣༣ གོང

5 'པན་ལྷ' - ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣ གོང་། 'བྲག' ཞེས་པ་འདིར་མི་སྣང་།

6 'ཏལ་ཙ' - ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣ གོང་ དེ་ཉིད།

7 'ནག་པོ་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན. དེ་ཉིད། ནག་པོ་གཅིག ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣

8 'མཚན་གཅིག' - ཡེ་ཉི ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

གཅིག་དང་སྦྲད་ནས། (དེ་རྣམས་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་ལ) ཁྱེད་ལ་བདག་ཅག་བཞེས་པ་འདྲེན་པས། ངེད་ཀྱི་ཁྱིམ་དུ་གཤེགས་པར་ཞུ་ཟེར་བ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་བདག་ཁྱིམ་གཅིག་ནས་མི་ཟ་བསོད་སྙོམས་བྱེད་པ་ཡིན་གསུངས་ནས། པདྨ་དེཝི་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྦྷ་བཙོལ་ནས་བྱོན་ནོ།།[1]

སྦྲ་མེན་མ་ཚན་པ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་གྲོས་[2]བྱས་ཏེ། ཛས་ལ་ནུས་པ་ཡོད་པ་ཡིན་པས་འདིའི་ལྦ་བ་བཟའ་དགོས་ཟེར་ནས་ཟོས། ལྷག་མ་མི་ལ་བསྒྲིགས་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ལོག་ནས་འོངས་ཏེ། སྦྲ་མེན་མ་ཀུན་ལ་ངའི་ལྦ་བ་བཙོལ་བ་བྱིན་ཅིག གསུངས་ནས། སྦྲ་མེན་མས་ལྦ་བ་གཞན་ཞིག་བྱིན་པ་དང་[3]། ང་རང་གི་ལྦ་བ་དགོས་གསུངས་ནས།[4] སྦྲ་མེན་མས་གསེར་ལ་སོགས་པའི་བསླུས་མ་གཏད་ཀྱང་མ་བཞེས།

སློབ་དཔོན་གྱིས་རྒྱལ་པོའི་གམ་དུ་བྱོན་ནས་འདི་སྐད་དུ། "ཁྱོད་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ན་ཆོམ་རྐུན་ལ་སོགས་པ་མི་སྲུང་བ་ཅི་ཡིན།" གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། ཆོམ་རྐུན་གྱིས་སུ་བཅོམ། ཟེར་བ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཁྱོད་ཀྱི་སྦྲ་མེན་

1 'བྱོན་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ. པེ་ཅི ཤོག ༣༡ གོང་།

2 'གྲོས་བྱས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ དེ་ཅིད།

3 'བྱིན་པ་ན' པེ་ཅི ཤོག དེ་ཅིད།

4 'གསུངས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩ དེ་ཅིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༡ དེ་ཅིད།

མ་ཀུན་གྱིས་ངའི་ལྦ་བ་ཁྱེར་ཟེར་བ་ལ། རྒྱལ་པོས་ཤྲ་མེན་མ་ཀུན་བཀུག་ནས་རྩལ་འགྱུར་བའི་ལྦ་བ་བྱིན་ཅིག་བྱས་ཀྱང་། བདག་ལ་མེད་ཟེར་ནས་མ་བྱིན།[1]

སློབ་དཔོན་དལ་རྩེ་ཤུག་ཏུ་བྱོན་ནས་སྒྲུབ་པ་བྱས། ཁྲི་བོ་བཙུ་ལ་གཏོར་མ་བཏང་བ་དང་[2]། ཤྲ་མེན་མ་དམ་གཅིག་གིས་ཤུག་གི་ཆུ་སྐམས་པར་བྱས་པ་ན།[3] སློབ་དཔོན་གྱིས་སའི་ལྷ་མོ་ལ་ཆུ་[4]ཐོན་ཅིག་གསུངས་པས་ཆུ་བྱུང་ངོ་།།

དེ་ནས་ཤྲ་མེན་མ་ཀུན་འདུས་ཏེ་གླིང་བཞི་རི་རབ་དང་བཅས་པ་ན་གནས་པའི་ཤྲ་མེན་མ་ཀུན་(ལ)སླས་པས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་འོངས་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཐམས་ཅད་ལུག་ཏུ་བྱས་ཏེ་བོར་བས། རྒྱལ་མོ་ལ་[5]སོགས་པ་ཀུན་(ཀྱང་)ལུག་ཏུ་སོང་བས། ཧ་ལས་ཏེ། སློབ་དཔོན་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ལུག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མགོའི་སྤྱི་བྲིགས་ནས་བཏང་བས། བུད་མེད་ཐམས་ཅད་སྐྲ་བྲིགས་པ་ཤ་སྟག་ཏུ་སོང་ནས་ཏུ་ཡིན་འདུག་གོ །

ཡང་དེ་ཉིད་དུ་བཞུགས་པ་ལ་འདོད་ཁམས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བྲག་བཅད་དེ་བཀྲོང་བར་བྱས་པ་ལ། ཡར་ལ་སྡིགས་མཛུབ་མཛད་པས་བྲག་ནམ་མཁའ་ལ་ཡི་རེ་ཆགས་པ་ད་དུང་ཡང་ཡོད་དོ།།

---

1 'མ་བྱིན་པ་དང་།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ 58 པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག

2 'མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་གཏོར་མ་བཏང་བ་དང་།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག 186. Vol 87

3 'ཆུ་སྐམས་པ་ན།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

4 'ལྷ་མོ་ཆུ་ཐོན་ཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག

5 'རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ.

དེ་ར་རྒྱལ་པོས་ཀྱང་ཕྲ་མེན་མ་འདི་ཙམ་གྱིས་མི་གཅིག་མ་ཐུབ་པ་ཅི་ཉེས། ད་བཟོད་པ་ཡུལ་ལ་དམ་ལ་གནས་པར་གྱིས་བྱས་ཀྱང་མ་ཉན་པ་ན། བླ་མས་ ཕྲ་མེན་མ་རྣམས་སྐར་ལ་བརྒྱུས་།དེ་གཤིན་རྗེ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་གཏོད་[2] པའམ། ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་མི་བྱེད་ན། རྟ་རྡུ་བྱས་དེ་ཁྲིར་བ་ཡིན་ཞེས་གསུངས་པས[3]། ཕྲ་མེན་མ་ཀུན་སློབ་དཔོན་གྱི་ནུས་པ་ལ་འཇིགས་ནས། སྐྱབས་སུ་སོང་ཞིང་དམ་ལ་གནས་པར་མཛད་དོ།།

དེ་ནས་ཕྲ་མེན་མ་དག་གིས་ཟོས་པའི་ལྦ་བ་ཀུན་སྐྱུགས་དེ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ལྦ་བའི་དུམ་བུ་ཀུན་བསྡུས་ནས་བསྒྲིགས་པས་སྔ་མ་ལས་བག་ཙམ་ཐུང་བ་ཞིག་བྱུང་བ་བསྒྲུམས་ནས་གཤེགས་པས། མཚན་ཡང་ཀམྦལཔཱ་ཞེས་པའམ་ལྦ་

1 'སྐར་ལ་བརྒྱུས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

2 'གཏད་པ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༠/ན.

3 "ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་བྱེད་གསུངས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག "རྟ་རྡུ་བྱས་དེ་ཁྲིར་བ་ཡིན" ཞེས་པ་པེ་ཅི་དཔར་ལ་མི་འདུག ཤོག དེ་ཉིད། ཚིག་འདི་ཅུང་མི་བདེ་བས་བཅོས་ན "ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་མི་བྱེད་ན། སྐར་ལ་བརྒྱུས་དེ། གཤིན་རྗེ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་གཏོད་པའམ། རྟ་རྡུ་བྱས་ནས་ཁྲིར་བ་ཡིན། ཞེས་གསུངས་པས" ཞེས་བྱས་ན་ལེགས།

བ་པ་[1]ཞེས་གྲགས་[2]། ཤྲཱིཔྲཱབྷཱད་ཞེས་ཀྱང་བྱ་སྟེ། ལོ་དཔག་ཏུ་མེད་པར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀམྦླ[3]ལ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༡) གུ་རུ་ཊེངྐིཔཱ།[4]

གུ་རུ་ཊེངྐིཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རིགས་བྲམ་ཟེ། ཡུལ་སཱལིཔུཏྲའི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲཔཱལ་བྱ་བའི་བློན་པོ་ཡིན་ལ། རྒྱལ་པོ་དེ་འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས། བློན་པོ་དེ་དང་གཉིས་ཀ་དུར་ཁྲོད་ན་ལཱུཧིཔཱ་བཞུགས་པའི་གནས་སུ་ཕྱིན་ནས་སྒོ་བརྡུངས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ སུ་ཡིན། གསུངས་པ་དང་། (དེ་གཉིས་ཀྱིས)བདག་རྒྱལ་པོ་དང་། བློན་པོ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། འོ་ན་ནང་དུ་ཤོག་གསུངས།[5]

(དེ་གཉིས་ནང་དུ་ཕྱིན་པ་དང་) དེ་གཉིས་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར།[6] དབང་ཡོན་དུ་ཁོ་རང་གཉིས་ཀྱི་

1 'ལྭ་བ་ཞེས་གྲགས།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

2 'གྲགས་ཏེ་ལོ་དཔག་ཏུ་མེད་པར' - པེ་ཅི ༣༣ དེ་ཉིད། 'གྲགས་ལ།' སྒྲུབ་ཀུན ༣༠ 'ཤྲཱིཔྲཱབྷད' ཞེས་ཀྱང་བྱ་སྟེ་ ཞེས་པ་པེ་ཅི་དཔར་མར་མི་སྣང་ ཤོག ༣༣ འོག

3 'ཀམལའི' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད། 'ཀཾབླའི' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན.

4 'ཏེངྐཔའི' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད། 'ཊེངྐཔ' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན.།

5 'གསུང་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ༣༠ པེ་ཅི ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

6 'བསྐུར་ཏེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠ དེ་ཉིད། 'བསྐུར་སྟེ' པེ་ཅི ཤོག ༣༣ གོང་།

ལུས་ཞུ་ལ་ནས། གཞན་གྱི་ཡུལ་ཨོཾ་དི་ཤར་(ཨོཾ་ཊི་སར་) ཕྱིན་པ་དང་། དེར་དཔོན་སློབ་གསུམ་གྱིས་[1]བསོད་སྙོམས་བྱེད་ཅིང་བསྡད།

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་བཙོང་ས་པའི་ལོ་རྒྱུས་སོ་ཌ་རི་ཀ་[2]པའི་རྣམ་ཐར་དུ་གསལ་ལོ། སློབ་དཔོན་ལུ་ཧི་པ་དང་བྲམ་ཟེའི་བློན་པོ་གཉིས་ཀྱིས་ཛ་ཡིན་[3]ཏ་པུ་རར་ནང་པའི་རྣ་ཌའི་རྩར་ཞག་བདུན་ནས་བཏོལ་ཏེ། དེར་ཚང་འཚོང་མ་ཡོད་པའི་གནད་དུ་ཕྱིན་ནས། ཚང་འཚོང་གཙོ་མོའི་སློ་བཙལ་ནས།[4] ཁྱེད་ཀྱི་[5]གཙོ་མོ་མི་མི་ཉོའམ། ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། དེས་ནང་དུ་སླས་པ་ན་ཉོ་ཟེར་ཞིང་། རིན་ཅི་དགོས་ཟེར་བ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གསེར་ཏོ་[6] སུམ་བརྒྱ་དགོས་གསུངས་པས། དེར[illegible] བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ་བྲམ་ཟེའི་བུ་ཁྲིར་རོ། །(སློབ་དཔོན་གྱིས་དེ་ལ) བཅིགས་[7]སུ་ཁོ་རང་གཅིག་པུར་ཉལ་དུ་ཆུག་ལ་རིན་འཁོར་བ་དང་ཐོང་ཞིག་གསུངས་ནས་སློབ་དཔོན་གཤེགས་སོ།།

---

1 'གསུམ་བསོད་སྙོམ…' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན.།

2 'ཌ་རིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན. པེ་ཅི, ཤོག ༣ གོང དེ་ཉིད།

3 'ཛཡིནཏ' - ཞེས་བོད་དཔར་ཀུན་ལ་འདུག་ཀྱང་ དོན་ནི 'ཌྜཡན' ཞེས་པ་ཡིན་ནོ།།

4 'བཙལ་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན.།

5 'ཁྱོད་ཀྱིས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ གོང དེ་ཉིད།

6 'ཏོ་ལོ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/ན. དེ་ཉིད། 'པེ་ཅི' ཤོག ༣༣ གོང་

7 'རྩིགས་སུ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ གོང་།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་བྲམ་ཟེ་དེས་ཆང་འཚོང་མའི་ལས་ཁྱད་པར་ཅན་བྱས་པས་དགའ་ནས་གཙོ་འཁོར་ཀུན་ཇོ་བོ་ཟེར་རོ། །དེ་ནས་ཞག་གཅིག་གི་ཚེ་ཉིན་པར་ལས་བྱས་ནས་ཟས་ལ་མ་བསྒུགས་[1]པར་མཚན་མོ་སྐྱིད་མོས་ཚལ་དུ་ཉལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཆང་འཚོང་མས་ཟས་མ་བྱིན་པ་དེ་མཚན་མོ་དྲན་ནས་སྐྱིལ་དུ་བཏང་བ་ན། བྲམ་ཟེ་ལ་བུ་མོ་བཅོ་ལྔ་ཙམ་གྱིས་བསྙེན་བཀུར་ནི་བྱེད། རང་ཉིད་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་སྣང་བ་ལ་འདུག་པ་མཐོང་པས། དེ་ཆང་འཚོང་མ་ལ་བསྙད་པས། དེ་འགྱོད་པ་སྐྱེས་ཏེ། (དེས་) སློབ་དཔོན་ལ་ཁྱེད་བདག་ཅག་གིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བཀོལ་བའི་སྡིག་པ་བདག་ལ་ཡོད་པས། དེའི་དོན་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བདག་གི་མཆོད་གནས་མཛོད་ཅིག བདག་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ་ལགས་ཞེས་ཞུས་པས། དེ་མ་བཞིད་དེ། ཆང་འཚོང་མ་ལ་སོགས་པ་ཛཡིནཏ(ཛྙཡནཏ)པུ་རིའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཆོས་བཤད་ནས་གདམས་[2]ངག་ཕོག་སྟེ། འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

མཚན་ནི་འབྲས་ཐུང་བའི་ལས་བྱེད་པས་ ‘ཊེངྐི་པཱ’ ཞེས་གྲགས་ལ། དེས་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་པ—

---

1 ‘དགུག་པར’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི ༣༣ དེ་ཉིད།

རིག་བྱེད་འདོན་པའི་ཏྲེཾ་ཀྲི་[1]པྣ།།
འབྲས་བརྡུང་བ་ཡི་བསམ་གཏན་ཅན།།
གཏུན་[2]དུ་འབྲས་ནི་ལེགས་པར་བརྡུངས།[3]།
ཕྱུགས་མས་འཁོར་[4]བ་སྤྱད་པར་བྱེད།། ༡

བླ་མའི་གདམས་པས་འབྲས་དག་བརྡུངས།།
ལས་གཞན་དག་ནི་མི་བྱེད་པར།།
ནག་པོ་ཡི་ནི་འབྲས་དག་བརྡུངས།།
དང་པོ་དགེ་བས་སྡིག་པ་བརྡུངས།། ༢

རྡོ་རྗེ་རིག་[5]པའི་གྲོ་བ་ཡིས།།
ཟེར་ནི་ཉི་མ་ཟླ་[6]བ་ཡིན།།
གཏུན་ཁུང་ཆོས་ཉིད་སྟོང་པ་རུ།།
སྣང་སྟོང་གཉིས་སུ་མེད་པར་བརྡུངས།། ༣

ཧཱུྃ་སྒྲས་རྣམ་རྟོག་ཞི་དཀྲུགས་པས།།

---

1 མ་དཔེ་ཀུན་ལ‘ཏྲེ་ཀྲི’ - དང ཏྲེ་ཀི’ གཉིས་ཀར་ངེས་མེད་དུ་བྲིས་འདུག

2 ‘རྡུན་དུ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག 187. Vol 87.

3 ‘རྡུང’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/བ. 60.

4 ‘མཐོར་བ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘རིགས་པའི’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

6 ‘ཟེར་ནི་ཟླ་བ་ཉི་མ་ཡིན།’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།

བདེ་བ་ཆེན་པོའི་མར་དག་འབྱུང་།།
རོ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྐྱོང་།། ༩

ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཊེཀྐིཔ་ཆང་འཚོང་མ་ལ་ཚོང་བའི་དགོས་པ་ནི་བྲམ་ཟེ་རྟོག་པ་ཆེ་བ་དེ་ཆང་འཚོང་གིས་ཉམས་འགྲོ་བས་རིགས་ཀྱི་ང་རྒྱལ་བཅག་པའི་ཕྱིར་དེར་བཙོངས་།པ་ཡིན་ནོ།།[2] ཞེས་གསུངས།།

གུརུཊེཀྐིཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༣) གུརུཛྙན་ཀྲེ་པ།[3]

གུརུཛྙནཀྲེཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཛྙནཀྲེ་ནི་ནོར་ལྷ་འཛིན་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེའི་ཡུལ་ནི་མཐུན་ཡོད། རིགས་ནི་ལྷ་རིགས།[4] བླ་མ་ནི་སློབ་དཔོན་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་ཡིན་ནོ།།

---

1 ‘གཙོངས’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 ‘པ་ཡིན།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༡/ན· 61.

3 ‘’ - ‘ཛྙནྡྲ’ པའི་སྒྲ་དོན་བོད་སྐད་དུ ‘ནོར་ལྷ་འཛིན’ ཞེས་བསྒྱུར་འདུག་པར་དཔྱད་ན ‘ཛྙནྡྲ’ ཞེས་པ་མ་དག་གམ་སྙམ། དོན་ནི ‘ཛྙནདྷཔ’ཝོ།

4 ‘རིགས་ནི་ལྷ་བྲིས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།

པཎ་ཌི་པ་ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ་ལ།[1] དུས་གཅིག་གི་ཆེ་[2]འཕགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཞིག་ཆོས་གོས་དང་། ལྷུང་བཟེད་དང་[3]འཁར་གསིལ་དང་བཅས་པ་འོད་དང་གཟི་བརྗིད་དང་ལྡན་པ་ཞིག་ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པར་མཐོང་ནས། ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ་ལྷའི་བཟོ་བོ་[4]ཕྱི་ཤྭཀརྨ་ལ་དྲིས་པ།

རྗེའི་སྲས། འདི་འདྲ་བའི་ངོ་མཚར་ཅན་མཁའ་ལ་རྒྱུ་བ་འདི་ཅི་ལགས། སྨྲས་པས། ཕྱིཤྭཀརྨ་ན་རེ། འདི་ནི་ཉོན་མོངས་པ་སྤངས་པའི་འཕགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡིན་ཟེར་བས། པཎྜི་པས་ཀྱང་དེ་འདྲ་བ་ཐོབ་པར་འདོད་ནས་འཛམ་བུའི་གླིང་དུ་སླར་འོངས་ནས། སློབ་དཔོན་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་ལ་ཆོས་ཞུས།[5]

ནག་པོ་སྤྱོད་[6]པས་གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐུར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་སྤྱང་བའི་ཐབས་ཚད་མེད་པ་བཞིའི་གདམས་ངག་བྱིན་ནས། སྙིང་རྗེ་ལྔ་བ། དགའ་བ་སྒོམ་པ། བྱམས་པ་སྤྱོད་པ། བཏང་སྙོམས་འབྲས་བུར་བསྒོམས་པས།

---

1 'གནས་པ་ན།' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།

2 'གཅིག་ལ'_པེ་ཅི་ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད། 61. 'དུས་གཅིག་འཕགས་པ' པེ་ཅི་ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ལྷུང་བཟེད་འཁར་གསིལ' - པེ་ཅི་ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༡ 61.

4 'སྐྱེས་ཏེ་ཕྱིཤྭཀརྨ' - པེ་ཅི་ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད། 'ལྷའི་ཕྱིཤྭཀརྨ' སྒྲུབ་ཀུན ༣༡/ན.

5 'ཞུས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༡/ན· 61. པེ་ཅི་ཤོག ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད།

6 'ནག་པོ་པས' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༡/ན.

ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་འཁྲུལ་པའི་དུག་ཐམས་ཅད་དག་ནས། མནྟྲ་སུནྡྷའི་ །འབྲས་བུ་ཐོབ་སྟེ། ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཀྣནྟྷེ་པྰ་ཞེས་གྲགས།[2]

དེ་ལ་ཕྱི་བྷཀྟས་ཅི་བྱས་དྲིས་པས། དེའི་ཞལ་ནས —

དམིགས་པ་མེད་པའི་ལྟ་བ་དང་།།
རྒྱུན་ཆད་མེད་པའི་སྒོམ་པ་དང་།།
ཕ་མ་ལྟ་བུའི་སྤྱོད་པ་དང་།།
ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའི་འབྲས་བུ་བཞི།། ༡

ཐ་དད་མེད་པར་མངོན་དུ་མཐོང་།།
མངོན་པར་ཞེན་པ་ག་ལ་གྲུབ།།
ཨེ་མ་རླུ་མ་ངོ་མཚར་ཆེ།།
མཁས་པས་རྟག་ཏུ་བསྟེན་པར་[3]གྱིས།། ༢

ཞེས་གསུངས[4]། མཉན་ཡོད་ལ་སོགས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོ་དྲུག་ཏུ་ལོ་བཞི་བརྒྱའི་བར་དུ་འགྲོ་དོན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་མཛད་དེ། མཐར་མཁོར་བཞི་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ཀཱ་རུ་ཀྣནྟྷེ་པྰའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།
2 'གྲགས་ལ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༡/ན. གྲགས་དེ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང་།
3 'པར་བགྱི' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང 187. Vol 87.
4 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

༣༣) གུརུཏནཏྲེཔཱ།[1]

གུརུཏནཏྲེཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཏན་ཏྲེ་པཱ་བྱ་བ་ཆོ་ལོ་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་ཀཽ་ཤམྦྷི་བྱ་བར་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་རྟག་ཏུ་ཆོ་ལོ་རྩེ་བས་ཟས་ནོར་ཐམས་ཅད་ཟད་ནས་མེད་ཀྱང་། གོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཡང་ཆོ་ལོ་བརྩེས་[2]པས་བཅལ་རྒྱུ་ཅི་ཡང་མེད་པས་མི་ཀུན་གྱིས་དེ་བརྡུངས་པ་ན། སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ཏེ་དུར་ཁྲོད་དུ་ཕྱིན་ནས་འདུག་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས། ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག[3] གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བདག་ཆོ་ལོ་ལ་དགའ་བས་ནོར་རྫས་ཐམས་ཅད་ཤོར་ཏེ།[4] ལུས་སེམས་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གདུངས་ཏེ་འདི་ན་གདའ། ཞེས་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་ཁྱོད་ཆོས་མི་བྱེད་དམ། གསུངས་པས།

དེ་ན་རེ། ཆོ་ལོ་སྤོང་བར་མི་ནུས་པས། དེ་མ་སྤངས་པར་ཆོས་བྱུར་ཡོད་ན་བདག་བྱེད་ལགས་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ཡོད་གསུངས་ནས། དེ་ལ་དབང་བསྐུར། གདམས་[5]ངག་ཏུ་ཆོ་ལོས་ནོར་རྫས་ཟད་ནས་སྟོང་བར་

1 'ཏཏྲེཔ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. དེ་ཉིད།
2 'རྩེས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. དེ་ཉིད།
3 'ཅི་བྱེད་' - པེ་ཅི ༣༨ དེ་ཉིད།
4 'ཤོར་སྟེ།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།
5 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།

སོང་བ་བཞིན་དུ་[1]ཁམས་གསུམ་ཐམས་ཅད་སྟོང་བར་བསྒོམས་ལ། ཁམས་གསུམ་སྟོང་པ་བཞིན་སེམས་ཉིད་ཀྱང་སྟོང་པར་སྒོམས་ཤིག་ཅེས་པ་སྨྲ[2]།

ཚོ་ལོས་ནོར་རྣམས་ཟད་པ་ལྟར།།
རིག་པའི་ཚོ་ལོས་ཁམས་གསུམ་གྱི།།
རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་གྱིས།།
དེ་ཡིས་[3]བདག་ཉིད་གདུངས་[4]པ་ལྟར།། ༧

རྣམ་རྟོག་ཆོས་སྐུར་གདུང་[5]བར་བྱ།།
དུར་ཁྲོད་དཔེན་པར་ཉལ་བ་ལྟར།།
བདེ་ཆེན་གློང་དུ་ཉལ་བར་བྱ།། ༣

ཞེས་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་[6]བསྒོམས་པས། ཁམས་གསུམ་གྱི་རྟོག་པ་ཆོས་ཉིད་དུ་ནུབ། དེ་ལྟར་རྟོགས་པའི་རིག་པ་དེ་ཡང་རང་བཞིན་མེད་པར་གྱུར་ཏེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། དེས་གསུངས་པ —

1 ‘བཞིན་ཏུ།’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. དེ་ཉིད།
2 ‘ཅེས་དང་།’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། .ཉི, ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།
3 ‘དེ་ཡི་’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༤ དེ་ཉིད།
4 ‘གདུང་བ་ལྟར’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།
5 ‘བདུང་བར་བྱ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།
6 ‘བཞིན་སྒོམས’ - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

དང་པོ་སྐྱོ་བ་མ་སྐྱེས་ན།།
ཐར་པའི་ལམ་དུ་ག་ལ་འཇུག།
དད་པའི་བླ་མ་མ་བསྟེན་ན།།
དངོས་གྲུབ་དམ་པ་ག་ལ་འཇུག། ༣

ཅེས་གསུངས་ཏེ། ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་ཀྱི་གནས་སུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུདནྡིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༨) གུརུཀུཀྐུརིཔཱ།

གུརུཀུཀྐུརིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཀཔིལཝསྟུ་[1]ན་བྲམ་ཟེ་ཞིག་སྡིགས་ལ་དད་པ་སྐྱེས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྤྱོད་པ་མཛད་ཅིང་། མཐར་གྱིས་ལྗོམ་[2]བུ་ལ་བྱོན་ནས་ལུམ་བྲིནྡྲའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བྱོན་པའི་ལམ་ཁ་ན། ཁྲི་ག་[3]མོ་ལྷ་མ་ཐེག་པ་ཞིག་འདུག་པས་དེ་ལ་བྱམས་པ་སྐྱེས་ནས་དེ་ཁྱེར་ཏེ་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བྱོན་ནས་ཕྱོགས་བཞིར་གཟིགས་པས། ཕྱོགས་གཅིག་ན་བྲག་ཕུག་སྟོང་པ་ཞིག་འདུག

---

1 ‘ཀཔིསཀུ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན. པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།
कपिल० राहुल० पुरा० नि० पृ० १२२, पृ० संस्करण।

2 ‘ལྗོམ་བུ་ནི་སྣོད་མོ་དང་བསོད་སྙོམས’ - མ་ཆོར་ལམ་བཟང་ ཤོག 250.

3 ‘ཁྲི་ཁ་མོ་ལྷ་ཐེག་པ་ཞིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག 188. Vol 87.

པ་[1]དེར་ཁྲི་ག་བོར་ཏེ་བསོད་སྙོམས་བླངས་ཀྱིན་དེར་བསྐྱབས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་མངོན་ཤེས་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པས། སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་ལ་སོར་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་སྤྱན་དྲངས་ཏེ་(དེར་)བྱོན་པའི་[2] རྗེས་སུ་ཁྲི་ག་ཞུག་པ་ཉིད་དུ་ལུས།[3]

མི་མེད་པར་ཁྲི་གུས་ས་བྲུས་པས་ཆུ་དང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱུང་བ་ཟ་ཞིང་དེར་བསྡད་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ལ་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་མཆོད་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པས་སྔར་གྱི་ཁྲི་ག་དྲན་ཏེ་ལོག་པར་བརྩམས་པ་ལས། ལྷ་རྣམས་ན་རེ། ཡོན་ཏན་འདི་ཙམ་ཐོབ་ཀྱང་། ཁྲི་ག་འདྲ་བའི་རྟོག་པ་མ་ཆོད་པ་འདི་མ་ལེགས་པས། འདི་ཉིད་དུ་བཞུགས་པར་ཞུ་ཟེར་[4]ཡང་ཡང་བཀག་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་མ་གསན་པར་བྲག་ཞུག་ཏུ་ལོག་ནས་བྱོན་ཏེ། ཁྲི་ག་ལ་བྱིལ་བྱིལ་མཛད་པས། དེ་མཁའ་འགྲོ་མར་སོང་སྟེ་དེའི་ཞལ་ནས —

ལེགས་སོ་ལེགས་སོ་རིགས་ཅན་ཁྱོད།།
བར་ཆད་དབང་དུ་མ་སོང་སྟེ།།
དངོས་གྲུབ་དམ་པ་ལེན་དུ་འོངས།།
སྔ་མའི་དངོས་གྲུབ་རྫུན་པ་སྟེ།། ༡

1 'འདུག་པས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན. པེ་ཅི, ཤོག ༣༨ འོག དེ་ཉིད།
2 'བྱོན་པས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད།
3 'ལུས་པས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༤ གོང 188.
4 'ཞེས་ཡང་ཡང' - པེ་ཅི ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད།

ལོག་པར་ལྟ་བ་དག་ལ་ཡོད།།
ངོ་མཚར་མིན་ཏེ་འགྱུར་བ་ཅན།།
ཟག་མེད་བདེ་ཆེན་མཆོག་ཉིད་ཀྱི།།
དངོས་གྲུབ་དམ་པ་མ་ཡིས་སྟེར།། ༣

ཞེས་གསུངས་ཤིང་། ཐབས་ཤེས་ཟུང་འཇུག་གི་བརྡའ་བསྟན་ནས། འགྱུར་མེད་ལྟ་བ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེས་ཤིང་། དངོས་གྲུབ་མཆོག་ཐོབ་པས། དེ་མན་ཆད་ལུམབཱིནཱི་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་ཀུཀྐུརིཔཱ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས།[1]

འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད[2]། གྲོང་ཁྱེར་ཀཔིལཝསྟུའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་དང་བཅས་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུཀུཀྐུརིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

1 'གྲགས་ཤིང་' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. 64. པེ་ཅི ༣༥ གོང
2 'མཛད་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. 64. པེ་ཅི དེ་ཉིད

༣༥) ཀུརུཀུཙེཔཱ།

ཀུརུཀུཙེཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀུཙེཔཱ་བྱ་བ་ལྷག་ལྦ་ཅན་ཏེ། ཡུལ་ཀརྣ་རི་[1]བྱ་བར་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་ཞིང་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བར་བྱེད་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་དེ་ལ་སྔོན་ལས་ཀྱིས་ལྷག་པར་ལྦ་བ་ཞིག་སྐྱེས་ནས། དེ་རྗེས་ཆེར་སོང་ནས་[2]འགྲོ་བ་ལ་སོགས་པའང་མི་ཤེས་པར་གྱུར་པས་དེ་སྡུག་བསྔལ་ནས་ཕྱོགས་དབེན་པ་ཞིག་ཏུ་ཉལ་ནས་བསྡད་[3]པའི་ཚེ། དེར་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་བྱོན་པས། དེ་ལ་དད་པ་སྐྱེས་ནས་ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ།[4]

ཨེ་མ་འཕགས་པ་གང་ནས་བྱོན།།
བདག་ནི་ལས་ངན་གྱིས་མནར་བས།།
སྡུག་བསྔལ་བཟོད་དཀའ་འདི་འདྲ་ན།།
ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག་[5]བདག་ལ་སྟོལ།།[6]

---

1 ‘ཀརི’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད། ཕལ་ཆེར “ཀརྞཱ” ཡིན་པར་འདྲ།
2 ‘གྱུར་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. དེ་ཉིད། ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༥ གོང་།
3 ‘སྡད་པའི’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༥ གོང དེ་ཉིད།
4 ‘སྒྱུར་ནས’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
5 ‘ཐབས་ཞིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།
6 ‘རྟོལ’ - ཡེ་ཤེ ཤོག ༣༥ འོག

ཞེས་ཞུས་པས། འཕགས་པས་དེ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཡོད་དེ་[1]།བཙོན་པས་སྒྲུབ་ནུས་སམ ནུས་ན་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་དྲུང་ནས་འབྱིན་ཅིང་བདེ་བར་འགྲོ་བའི་ཐབས་ཡོད་དེ་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། འཕགས་པ་བཙོན་པར་སྒྲུབ་ཅེས་ཏེ་མི་ནུས་ནུས་ལགས་[2]ཟེར་བས། (འཕགས་པས) དེ་(ལ) གསང་བ་འདུས་[པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་བཅུག་ནས་ལིགས་]པར་དབང་བསྐུར་ནས། སྡུག་བསྔལ་ལམ་ཁྲིར་གྱི་ཆོས་ 'བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་[3]པ་'འདི་ལྟར་གནང་སྟེ།

དེ་ཡང་བསྐྱེད་རིམ་གྱི་དམིགས་པ་ལྟག་པའི་ལྡ་བ་དེ་ཇེ་[4]ཆེར་སྒོམས་[5]ཤིག་གསུངས་ནས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པས། ལྡ་བ་དེ་ཐེར་བས་ཇེ་[6]ཆེར་སོང་ནས་སྡུག་བསྔལ་བ་ན། སླར་འཕགས་པ་བྱོན་ནས་བདེ་འམ་གསུངས་པས། ཤིན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བར་གདའ་ཞུས་པས། (དེ་ལ་འཕགས་པས་སླར) རྫོགས་རིམ་གྱི་དམིགས་པ་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེར་འདུས་པར་བསྒོམས་ཤིག གསུངས་པས། (དེས་ཀྱང་)དེ་ལྟར་བསྒོམས་པ་ན། ལྡ་བ་མེད་པར་སོང་ནས་བདེ་བ་ན། ཡང་འཕགས་པ་བྱོན་ནས་བདེ་འམ། གསུངས་པས། བདེ་ལགས་ཞུས་པས་དེ་ལ་གདམས་པ —

1 'ཡོད་ཀྱིས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ· 64.
2 'ཅེས་ཏེ་མི་ནུས་ལགས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ· 64.
3 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༥ འོག 188. Vol 87.
4 'ཇེ་ཆེར' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ· དེ་ཉིད།
5 'བསྒོམས་ཤིག' - པེ་ཅི ཤོག ༣༣ འོག དེ་ཉིད།
6 'རྗེ་ཆེར' - པེ་ཅི ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།

ཡོད་དང་མེད་ལས་བདེ་སྡུག་འབྱུང་།།
མཐའ་གཉིས་རྟོགས་པ་དང་བྲལ་ན།།
བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་ག་ལ་ཡོད།།
ཆོས་རྣམས་རང་རང་ངོ་བོས་སྟོང་།། ༡

ཞེས་[1]གསུངས་པས་(དེའི་དོན་)དེས་[2]ལེགས་པར་རྟོགས་ཏེ། དམིཊ་མེད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། དེས་ཀཎ་རི་(ཀཎི་ནྣ)ལ་སོགས་པར་ལོ་བདུན་བརྒྱའི་བར་དུ་འགྲོ་དོན་མཛད་དེ། (ཐམས་ཅད་)དུ་ཀུ་ཙིཔྣ་ཞེས་གྲགས་ལ། (མཐར་)འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ། །

གུ་རུ་ཀུཙིཔྣའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ༎

1 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
2 ‘དེ་ལེགས་པར་རྟོགས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན.།

༣༦) ཀུརུཧྣམཔཱ།

ཀུརུཧྣམཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཧྣམ་པ་སྐྱེ་ཐོས་པའི་ཤེས་རབ་བྱ་[1]བ་ཡིན་ལ། ཤྲི་ཀྲམསུར་ན[2]། བྲམ་ཟེ་ཞིག་རྟག་ཏུ་ཐོས་པ་ལ་བརྩོན་པར་གནས་ཀྱང་། བསམ་པ་དང་། སྒོམ་[3]པའི་ཤེས་རབ་མེད་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[4]བྱོན་ནས། ཐོས་པ་མང་དུ་བྱས་པའི་[5]བློ་ལ་ཆོས་མང་དུ་ཡོད་དམ། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། འཕགས་[6]པ་བདག་གིས་ཆོས་མང་དུ་ཐོས་ཀྱང་ཐོས་མ་ཐག་ཏུ་བརྗེད་པས[7]། མི་བརྗེད་པའི་གདམས་པ་ཞིག་[8]ཞུ་འཚལ་ཞུ་བ་ལ། (རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་) རུང་གསུངས་ཏེ། བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་ནས་དུ་མ་རོ་གཅིག་པའི་[9]གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་། །

རིན་ཆེན་ཕྱེ་མ་དུ་མ་རྣམས།།
མགར་གྱིས་ལིགས་པར་གཅིག་ཏུ་བསྒྱུར།[10]

---

1 'ཧྣམ་པ'་ཞེས་པའི་སྒྲ་དོན་'ཆོས་པ' ཞེས་པ་ཡིན་ཀྱང་། 'ཐོས་པའི་ཤེས་རབ'་དོན་འགྱུར་རོ།།

2 'ཤྲིཀྲམསུར' ཞེས་པ་མ་དག་པར་མངོན། དོན་ཤྲིཀྲམཤིལཱ་བྱ་བ་ཡིན། ཡང་ན "ཤྲི་ཀྲམཔུར།"

3 'བསྒོམས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད།

4 'ཅིག་བྱོན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན· 65.

5 'བྱས་པས་བློ་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད།

6 'རྣལ་འབྱོར་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད།

7 'བརྗེད་པ་དང་།' - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

8 'ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན. པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང

9 'དུ་མ་རོ་གཅིག་གི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/ན. པེ་ཅི ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

10 'གྱུར' - སྒྲུབ་ཀུན ༣༣/ན. 'འགྱུར' པེ་ཅི ཤོག ༣༦ །

དེ་བཞིན་ཐོས་པ་སྣ་ཚོགས་ཀུང་།།
སེམས་ཉིད་དབྱིངས་སུ་བཞུ་བར་གྱིས།། [1]

ཞེས་གསུངས་པའི་དོན་(དེས་)གོ་ནས། ཐོས་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་[2] སེམས་ཉིད་(དེ་)དུ་མ་རོ་གཅིག་ཏུ་རྟོགས་ཏེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། ཧྨ་པཱ་ཞེས་གྲགས།

གདུལ་བྱ་མང་པོ་ཐར་ལམ་ལ་བཀོད་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཧྨ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༣༧) གུརུམཧི[3]པཱ།

གུརུམཧིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། མཧིཔཱ་སྙེ་ང་རྒྱལ་ཅན་ནོ།། དེ་ཡང་ཡུལ་མགྷ་[4]ན། དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ལུས་སྟོབས་ཤེད་ཆེ་བ་ཞིག་གནས་པ་དེ། ངས་མི་ཐུབ་པའི་མིའམ་སྲོག་ཆགས་གང་ཡང་མེད་སྙམ་པའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་དུས་རྟག་ཏུ་ནོན་ནས་འདུག་པའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་དེ་ལ་བལྟས་ཏེ། ཁྱོད་ཅི་སེམས་ཤིང་འདུག གསུངས་པས། ཅི་ཡང་སེམས་པ་མེད།

---

1 'བགྱི' - པེ་ཅི་ཤོག་༣༦ དེ་ཉིད།

2 'ཆོས་རྣམས' - པེ་ཅི་ཤོག་༣༦ དེ་ཉིད།

3 'གུརུམཧིལཔ' - སྣུབ་ཀུན་ཤོག་༣༣/ན· 65. 14.

4 'མགྷཱ' - སྣུབ་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།། མགྷ་པེ་ཅི་ཤོག་༣༦་གོང་ 188. Vol 87.

ཟེར་བས། ‘འོ་ན་ངས་མི་ཐུབ་པ་ཅི་ཡང་མེད་སྙམ་པ་དེ་ཅི་ཡིན།’ གསུངས་པས། དེ་དད་ནས་‘ན་མོ་’ཞེས་ཕྱག་བྱ་བའི་ཚེ། ང་རྒྱལ་གྱི་དྲི་མ་དག་པར་གྱུར་ཅིག་ གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བདག་ལ་ཆོས་ཤིག་[1]ཞུ་ཟེར་བས། རྣལ་འབྱོར་པས་རུང་གསུངས་ཏེ། བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་མཛད། (དེ་ནས)—

སྣང་བ་སེམས་སུ་ཤེས་བྱས་ན།།
སེམས་ཉིད་སྟོང་པ་སྐྱེ་འགག་མེད།།
དེ་ལ་མ་ཡེངས་སྒོམ་[2]པ་ཡིན།།
ཀློང་དུ་གྱུར་ན་[3]འབྲས་བུའོ།། ༡

གསུངས་པ། དེས་[4]མ་གོ་ལགས་ཞུས་པས། ཡང —

ཁྱོད་ནི་སྟོབས་ཅན་ཉིད་ཡིན་པས།།
ཁྱོད་ཀྱིས་མི་ཐུབ་གང་ཡང་མེད།།
སྣང་བ་ལྷུང་དང་ཤེས་པ་གསུམ།།
ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་གཟུང་བར་བྱའོ།། ༢

---

1 ‘ཆོས་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘བསྒོམས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༦ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘གྱུར་པ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. དེ་ཉིད།

4 ‘ད་མ་གོ་ལགས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. 66.

ཞེས་འགལ་བ་ལམ་ཁྱེར་གྱི་གདམས་པ་བསྟན་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ཅི་དཀའ་སྙམ་ན་བཟུང་བས། གཟུང་བའི་ཡུལ་མ་རྙེད་ཅིང་། འཛིན་པའི་ཤེས་པ་སྟོར་ནས་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ལྟར་རྟོགས་[1]པས་གྲུབ་པ་ཐོབ[2]།

ཡུལ་མགདྷལ་[3]སོགས་པར་ལོ་སུམ་བརྒྱའི་བར་དུ་གདུལ་བྱ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་གནས་ལུགས་དངོས་མེད་སྟོབས་ལྡན་གྱི་གདམས་པ་གནང་ནས། མཐར་འཁོར་ཉིས་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་དང་བཅས་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུམཧི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ༎

༣༨) གུརུཨཙིནྟ།

གུརུཨཙིནྟ་ནི། དྲན་པ་མེད་[4]པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། འདིའི་ཡུལ་ནི་དྷནི་རུཔ་(པུར)ཡིན་[5]ཞིང་། རིགས་ནི་ཤིང་འཚོང་པའི་རིགས་ཡིན་ནོ།།

---

1 'སྟོང་བས' - པེ་ཅི་ཤོག ༣༦ འོག

2 'ཐོབ་སྟེ།' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༣/བ. པེ་ཅི་ཤོག ༣༦ འོག

3 'མགྷདྷ' - པེ་ཅི་ཤོག ༣༦ འོག 188. Vol 87. 'མགདྷ' སྒྲུབ་ཀུན ༣༣/ན.

4 'དྲན་པ་མེད་པ་ཞེས་པ་དཔེ་གཉིས་ཀར་འདུག་ཀྱང་། 'ཨཙིནྟ' ཞེས་པའི་སྒྲ་དོན་ནི་བསམ་མེད།།

5 'ཡིན་ཅིང་' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༣༣/བ. 66. 14

དེ་ཡང་ཤིན་ཏུ་དབུལ་ཞིང་ཕོངས་པ་ཡིན་པས་[1]ཉིན་མཚན་དུ་ནོར་རྫས་ལ་སྲིད་པས། འཇིག་རྟེན་གྱི་རྣམ་རྟོག་གཞན་གང་ཡང་དྲན་པ་མེད་པར་ནོར་རྫས་འབའ་ཞིག་འདོད་པས་གདུངས་ཏེ། དབེན་པ་ཞིག་ན་འདུག་པ་དང་། དེའི་གམ་[2]དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཀམྦལ་[3]སྙེ་ལྭ་ཤྭ་པླ་བྱོན་ནས། ཁྱོད་དབེན་པ་ན་ལུས་ངག་དབེན་པར་འདུག་སྙེ་ཅི་སེམས་ཀྱིན་འདུག གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ་བདག་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ནོར་རྫས་སེམས་པ་ལས་གཞན་ཅི་ཡང་མི་དྲན་ལ། ནོར་སེམས་ཀྱང་ཁག་པ་ནི་ཅི་ཡང་མིཾ་འདུག་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ང་ལ་ནོར་རྫས་ཁག་[4]པའི་གདམས་པ་ཡོད་དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་སྒྲུབ་ནུས་སམ་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཐབས་མེད་པས་ཅིས་ཀྱང་ཞུ་ཟེར།

(དེ་)ནས་(སློབ་དཔོན་གྱིས་)དེ་(ལ་)བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར།
མི་ཟབ་པ་[5]རྫོགས་པའི་རིམ་པ་འདི་གནང་སྟེ།
འདོད་པས་རྣྗིད་པ་ག་ལ་ཡོད།།

1 'ཡིན་ལ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༦ འོག དེ་ཉིད།

2 'གན་དུ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༦ འོག དེ་ཉིད།

3 'ཀམྦལ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༦ འོག དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ དེ་ཉིད།

4 'ཁག་པ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༣/བ. དེ་ཉིད།

5 'མི་ཟབ་པ' - ཞེས་འདུག་ཀྱང་། འདི་རྒྱ་དཔེར - 'ཨུགམླཀྵིར' ཞེས་ཡོད་པར་སྣང་ལ། དེ་ནི "ཟབ་མོའི་མཐར་ཐུག" ཅེས་པ་ཡིན།།

ཀོ་[1]ག་ཤམ་བུ་ནི་ཇི་བཞིན་ནོ[2]།།
དེས་ན་འདོད་པའི་སེམས་སྐྱོངས་[3]ལ།།
རང་ལུས་ནམ་མཁའི་ངང་ཉིད་དུ།། ༡
རང་སེམས་སྐར་མར་གསལ་བར་སྒོམས[4]།།
དེ་ཡང་ནོར་ལྷ་ཉིད་ཡིན་པས།།
མངོན་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ།།
འདོད་དགུ་མ་ལུས་འབྱུང་བར་འགྱུར།། ༢

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པས། ནོར་རྫས་ཀྱི་རྟོག་པ་དེ་སྐར་མའི་ངང་དུ་སོང་། སྐར་མ་དེ་ཡང་ནམ་མཁའི་ངང་དུ་ནུབ་ནས་རྟོག་མེད་ཀྱི་ངང་[5]དུ་སོང་བ་ན་སླར་(སླ་མས་)དེ་ལ།

ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ཇི་[6]ལྟ་བུ།།
ཁྱོད་ཀྱིས་ཡུལ་དུ་བྱུས་སམ་ཅི།།

1 'ཀོ་ཤམ་བུ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ གོང 189. Vol 87.

2 'བཞིན་དུ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

3 'སྐྱངས་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན.།

4 'བསྒོམས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང དེ་ཉིད།

5 'རྟོག་མེད་དུ་སོང་བ་ན།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན 67.

6 'ཅི་ལྟ་བུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན དེ་ཉིད།

ཁ་དོག་དབྱིབས་སོགས་བྲལ་བ་ལ།།[1]

ཅི་ལྟར་ཞེན་ཅིང་ཇི་ལྟར་བསྒོམས།།[2] ༣

གསུངས་པས། (དེས་)དེའི་དོན་རྟོགས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ།[3] བླ་མ་ཨཙིནྟར་[4]གྲགས།

གནས་ལུགས་ཀྱི་གདམས་པས་ལོ་སུམ་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས། འཁོར་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དང་བཅས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཨཙིནྟའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

༣༩) གུ་རུ་བཏྐཧི།[5]

གུ་རུ་བཏྐཧིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། བཏྐཧིའི་དོན་ནི་ཆུ་ལས་[6]འོ་མ་ལེན་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་ཧྣཛྫུར་བྱ་བ་ན་རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་རྒྱལ་པོའི་

---

1 'བ་ནི།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ གོང་ དེ་ཉིད།

2 'སྒོམ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ གོང་ དེ་ཉིད།

3 'ཐོབ་ནས།' - པེ་ཅི་ ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ཨཙིནྟེའི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/ན.

5 'བཏྐཧི' - ཞེས་པ་མ་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་། ཡིག་ནོར་མིན་ན་མ་དཔྱད། སྭཊཁ སྟྲངང་པ་འམ་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་ཞེས་པ་ཡིན།

6 'ཆུ་ལ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༣༧ གོང་ སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༤/ན.

འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་མྱོས་ནས་འདུག་པ་ལ། དེའི་གམ་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་ཟས་ཀྱི་བསོད་སྙོམས་བྱས་[1]པས། བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་གྱ་ནོམ་པ་བྲངས་ཏེ། རྒྱལ་པོ་དེ་[2]དད་ནས་ཆོས་ཤིག་[3]ཞུ་ཟེར་བ་ལ། དེས་ཀྱང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་དམ་ཚིག་[4]ཡིན་པ་དང་། དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་བླ་མ་ཡིན་ནོ།། ཞེས་གསུངས་ཏེ། བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་ནས། རྩ་རླུང་ཐིག་ལེའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་སྟེ།

གཞན་ལུས་ཐབས་ལྡན་ཁྲུད་པར་ཅན།།
རླུགའི་རྣམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ།།
རཀྟའི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ལ།།
བྱང་སེམས་འོ་མ་བསྲེས་ཤིང་ལེན།། ༡

གནས་སུ་འཁྱིལ་ནས་ཁོང་དུ་དྲངས།།[5]
བདེ་བ་རྒྱུན་ཆད་[6]དེ་ལྟ་མིན།།
བདེ་བས་བདེ་བ་འཇོམས་པ་ན།།

1 ‘མཛད་པ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧
2 ‘རྒྱལ་པོ་དད་ནས’ - པེ་ཅི ༣༧ གོང དེ་ཉིད།
3 ‘ཆོས་གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ གོང
4 ‘རྩ་བ་དད་པ་ཡིན’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།
5 ‘ཁོང་དུ་གྲམ།’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག
6 ‘རྒྱུན་ཆགས་དེ་ལྟ་མིན’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་སྟོང་དང་དབྱེར་མེད་སྒོམས།།[1] ༣

ཞེས་[2]གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་(དེ་ལྟར་)ཉམས་སུ་བླངས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་མཐོང་སྣང་[3]གི་དྲི་མ་དག་ནས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། གདུལ་བྱའི་དོན་ཡང་མང་དུ་མཛད་དེ[4]། [5]ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུབསྟནྤའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༩༠) གུ་རུནལིན་པཱ།

གུ་རུནལིན་[6]པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ནལིན་སྟེ་པདྨའི་རྩ་བ་བྲུ་བའོ།། (དེ་ཡང་) ཡུལ་ས་ལིཔུཏྲ་ན་རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་ཤིན་ཏུ་ཕོངས་ནས་པདྨའི་རྩ་བ་མཚོ་ནས་བཏུས་[7]ཏེ་འཚོ་བ་བྱེད་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་དང་འཕྲད་ནས། (དེ་ལ་པདྨའི་རྩ་བ་) དེ་ཕྲངས་པས། དེས་

1 ‘སྒོམ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

2 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག

3 ‘མཐོང་གི་དྲི་མ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན. དེ་ཉིད།

4 ‘བྱས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག

5 ““དཔེར་ན་ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡིས།། ཆུ་ལས་འོ་མ་འབྱེད་པ་བཞིན།། བླ་མ་དམ་པའི་གདམས་ངག་གིས།། བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་བདུད་རྩི་བླངས།།” ཞེས་གསུངས་ནས། པེ་ཅི་ ཤོག ༣༧ འོག 189. Vol 87.

6 ‘ནལིནའི’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག 189. Vol 87.

7 ‘བསྟུས་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

ཀུང་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཡོན་ཏན་བཤད་པས། དེ་འཁོར་བ་ལས་ལྡོ་ལྡོག་[1]སྙེ། ལྡོ་མ། ཐར་པ་ཐོབ་པའི་ཐབས་ཤིག་ཞུ་ལགས་ཞེར་བ་ལ།[2] (རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་) རུང་གསུངས་ནས། གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐུར་ཏེ།[3] རང་ལུས་ཐབས་ལྡན་ལ་བརྟེན་[4]པའི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།།

སྤྱི་བོར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་[5]ནི།།
ཧཱུྃ་ནི་དཀར་པོ་ཡང་དག་བསམ།།
ལྟེ་བར་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་ཕྲིཾ[6]།།
འོད་འབར་བས་ནི་ཧཱུྃ་འཛག་སྙེ།། ༡

དགའ་དང་དགའ་བྲལ་མཆོག་དགའ་དང་།།
ལྷན་སྐྱེས་དག་ནི་རིམ་པ་བཞིན།།
འབྱུང་བས་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་།།
ཐར་པའི་བདེ་ཆེན་འདོར་ཞིང་ལེན།། ༢

1 'ལྡོ་ལོགས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

2 'ཞེར་བས' - སྣར་ཐང་ཤོག ༣༨/བ· 68.

3 'བསྐུར་སྙེ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧

4 'ལ་བརྟེན་པའི' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

5 'ཆེན་པོར་ནི' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

6 མ་དཔེ་ཐམས་ཅད་ལ 'ཕཾ' ཞེས་འདུག པེ་ཅི, དཔར་ལས འམ ཞེས་འབྱུང་། ཤོག ༣༧ ཡིན་ཀྱང་རྒྱུད་དོན་དང་མཐུན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ན, 'ཧཾ' ཞེས་འོང་ས་དགོས་བསམ།

ཅེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པ་ན། པདྨ་འདམ་ནས་སྐྱེས་ཀྱང་འདམ་གྱིས་མ་གོས་པ་བཞིན། སྒོམ་[1]པ་དགའ་བཞིའི་འཁོར་ལོ་བཞི་ལ་བརྟེན་[2]ནས་བསྒོམས་[3]ཀྱང་། དམིགས་པ་དང་འཁོར་བའི་ཉེས་པས་མ་གོས་པར་ལོ་དགུ་ན་དོན་རྟོགས་ཤིང་འཁྲུལ་པའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དག་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།[4]

དེ་ནས་སླུ་ལི་[5]པུཏྲ་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས། ལོ་བཞི་བརྒྱ་ན་འཁོར་ཕྱེད་དང་ལྔ་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ། །

གུ་རུ་ནལིན་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༡) གུ་རུ་བྷུ་སུ་ཀུ་པ།

གུ་རུ་བྷུ་སུ་ཀུའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་†ནཱ་ལེནྡྲ་ན་[6]རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་རང་བཞིན་བཟང་ཞིང་རབ་ཏུ་བྱུང་ནས་དགེ་སློང་དུ་མཛད་ལ། དེ་

1 'བསྒོམ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/བ.

2 'བསྟེན' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

3 'སྒོམས་ཀྱང' - པེ་ཅི ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

4 'ཐོབ་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༠/བ. དེ་ཉིད།

5 'སལིཔུཏྲ' - སྒྲུབ་ཀུན ༣༠/བ. སལུ་པུཏྲ པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང་།

† 'ཡུལ་ནཱལན' ཞེས་འདུག་ཀྱང་། ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐའི་ཆོས་འབྱུང ཤོག ༡༣༥ པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང ཤོག ༨༩ སོགས་ཀུན་ལས་དེའི་ཡུལ 'སོ་རཱཥྚྲ' ཞེས་བྱུང་།

6 'ནཱལེནྡ - ནཱལེནྡྲ' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན. པེ་ཅི ༣༨

ཡང་ནཱ་ལེནྡྲའི་རྒྱལ་པོ་དེཝཱ་པཱ་ལ་[1]བཞུགས་པའི་ཚེ། དེའི་ཆོས་སྐོར་ལ་དགེ་འདུན་བདུན་བརྒྱའི་སྐུ་འཚོ་བཟང་པོ་བཟའ་བཏུང་སོགས་ཅི་བཞིན་འབུལ་ཞིང་། སྡེ་པ་བཞི་ཡོད་པའི་ཕལ་ཆེན་སྡེ་པའི་མཁན་པོ་ལ་མཁན་བུ་སུམ་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་ལ་[2]། གཞན་ཀུན་བརྩོན་པས་རིགས་པའི་གནས་ལྔ་ལ་སྦྱང་བར་ཡོད་པ་ལ། རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་དགེ་སློང་དེ་ནི་རྟག་ཏུ་གཉིད་ལོག་པར་བྱེད་པ་ལ། ཕོ་བའི་མེ་དྲོད་ཀྱང་ཆེ་ནས། འབྲས་བྲེ་ལྔ་ལྔ་ནངས་རེ་བཞིན་ཟ་ཡིན་འདུག་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་དེཝཱ་པཱ་ལ་ན་རེ་འདི་ནི་བྷུ་སུ་ཀུ་ཞིག་འདུག་གོ །ཟེར་བས མིང་ཡང་བྷུ་སུ་ཀུ་ཞེས་གྲགས།[3] དེ་ནི་ཟ་ཉལ་འཆག་གསུམ་པ་[4]ཞེས་བྱའོ།།

ནཱ་ལེནྡྲའི་ཆོས་སྐོར་དེ་ན་དུས་རྟག་ཏུ་མདོ་རེས་མོས་སུ་འདོན་པའི་ལུགས་ཡོད་པ་ལས། དེ་ན་གནས་པ་ཀུན་གྱིས་བྷུ་སུ་ཀུ་པཱ་ལ་ཁ་ཟེར་ཞིང་མཁན་པོས་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱིས་མདོ་འདོན་པ་ལ་སོགས་པ་མི་འོང་བས་གཞན་དུ་སོང་ཞིག་ཟེར་བ་ན། དེ་ན་རེ། ང་ཚུལ་ཁྲིམས་མ་ཉམས་པས་གནས་ནས་དབྱུང་བར་མི་རིགས་ཤིང་། རིག་པ་སློབ་པའི་སྐལ་བ་མེད་ཟེར་ནས་འདུག་པ་ལ།

དུས་གཅིག་གི་ཚེ་མདོ་འདོན་པའི་རེས་བབ་པས། དགེ་འདུན་གྱིས་དེ་ལ་སང་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་མདོ་(འདོན་པའི་)རེས་མོས་ཡིན་པས་ཐོན་ཅིག ཅེས་

---

1 ‘དེཝཱཔཱལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང སྒྲུབ་ཀུན ༣༩/ན.

2 ‘ཡོད་པ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥ པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།

3 ‘གྲགས་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན ༣༥ དེ་ཉིད།

4 ‘བྷུསུཀུ’ - ཟ་ཉལ་འཆག་གསུམ་པ= བྷུཀ + སུཔ + ཀུཀ = བྷུསུཀུ

སྨྲས་པས། དེས་ཀྱང་འདོན་པར་ཁས་སྤངས་[1]པ་དང་། ནཱ་ལེནྡྲའི་[2]དགེ་འདུན་ཀུན་ནངས་པར་[3]བྷུསུཀུ་མདོ་འདོན་པ་ལ་བལྟ་བ་ཡིན་ཟེར་བཞད་[4]གད་བྱེད་པ་ལ། དེའི་མཁན་པོ་ན་རེ། ཁྱོད་ཀྱིས་རིག་པ་སློབ་པའི་ཆེ་ཟ་ཡིན་གཉིད་གཅིག་པུ་ལོག་ན། ད་ནཱ་ལེནྡྲའི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནང་མདོ་མི་ཐོན་བྱས་པས།[5]

བྷུསུཀུ་ན་རེ་བདག་མདོ་འདོན་ཟེར་ཉན་མ་འདོད་པ་ལ། མཁན་པོས་སྨྲས་པ་— ཁྱོད་ཀྱིས་མདོ་མ་ཐོན་ན་གནས་ནས་སྐྲོད་པས། དེ་བས་འདུག་ན་རུང་ཞེས་སྨྲས་པ་ལ།[6] ང་རང་ཤེས་ཟེར་ནས་མ་ཉན་པ་དང་།[7] མཁན་པོས་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་སྔགས་ཨརཔཙན་བསླབས་ནས།[8] 'སྔགས་འདི་མཚན་གཉིད་མ་ལོག་པར་ཟློས་ཤིག' བྱས་ནས་སྔགས་ཀྱི་གདམས་པ་བྱིན།[9] དེས་ཀྱང་མཚན་གཉིད་མ་ལོག་པར་ཁ་ལ་ཐག་པ་བཏགས་[10]ནས། སྔགས་

---

1 'སྤྲངས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།

2 'ནཱ་ལེནྡཔའི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན· 69.

3 'ནངས་པ་བྱོན་ནས'-པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང རྒྱ་དཔེར = 'གཏཱཔཏྲཱུམི' ཡོད་པར་སྣང་།

4 'བཞད་གད་དུ་བྱེད' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན· 69.

5 'བྱས་པ་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།

6 'སྨྲས་པ་ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན· 69. པེ་ཅི ཤོག ༣༨ གོང དེ་ཉིད།

7 'མ་ཉན་བ་ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད།

8 'བསླབས་ཏེ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ ཤོག དེ་ཉིད།

9 'བྱིན་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག

10 'བརྟགས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག, དེ་ཉིད།

བཟླས་པས། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་དེ་ར་དངོས་སུ་བྱོན་ནས། 'ཀླསུཀཔུ་ཁྱོད་ཅི་བྱེད་'གསུངས་པ་ལ།[1] [ཀླསུཀས་]བདག་ནངས་པར་མདོ་འདོན་པའི་རེས་མོས་བབ་ལགས་པས་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས་པ་ཡིན་ཞུས་པས། འཕགས་པའི་ཞལ་ནས་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ངོ་ཤེས་སམ། གསུངས་པས། 'བདག་གིས་མ་འཚལ་ལགས་' ཞུས་པ་ལ།[2] (ང་) འཇམ་དཔལ་ཡིན་གསུངས་པས། འོ་ན་བདག་ལ་ཤེས་རབ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཞུ་ཟེར་བས། འཕགས་པའི་ཞལ་ནས "ཁྱོད་ལ་ངས་རིག་པ་སྦྱིན་[3]གྱི། ནངས་པར་མདོ་ཐོན་ཅིག"གསུངས་ནས་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ།།

དེ་ནས་ནངས་པར་མདོ་འདོན་པའི་དུས་སུ། དགེ་འདུན་གྱི་ཀུན་དགའ་ར་བར་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀླསུཀ་མདོ་འདོན་པ་ལ་བལྟའོ་[4]ཞེས་གཅིག་ལ་གཅིག་སྨྲན་པ་དང་། མི་ཏོག་ལ་སོགས་པ་མཆོད་པའི་ཡོ་བྱད་ཀུན་ཁྱེར་ནས་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་བཞད་གད་ཀྱི་ཆེད་དུ་དེར་ཕྱིན་པ་དང་། ཀླུསུཀ་པས་[5]དགེ་འདུན་གྱི་གདུགས་ཚོད་གསོལ་ནས་ཞུམ་པ་མེད་པར་

---

1 'པས' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ༣༥/བ. དེ་ཉིད།

2 'ཞུས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག

3 'སྦྱིན་གྱི' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག 189

4 'ལ་བལྟའོ' - པེ་ཅི, ཤོག ༣༨ འོག

5 'ཀླུསུཀ་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༣༨ འོག

གཙུག་ལག་ཁང་གི་ཁྲིའི་སྟེང་དུ་བྱོན་ནས་བཞུགས་པའི་ཚེ།། གཟི་བྱིན་ཁྱད་པར་འཕགས་པར་[2]འདུག་པས་[3]ཐམས་ཅད་ཧོག་པ་སྐྱེས་པ་ལ། མདུན་ཡོལ་བས་བཅད་དེ། བདག་གིས་མདོ་སྔར་བྱུང་བ་ཞིག་[4]བཤད་དམ། མ་བྱུང་བ་ཞིག་[5]བཤད། གསུངས་པས། པཎྜིཏ་ཀུན་གཅིག་ལ་གཅིག་ལྟ་ཞིང་། སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཀུན་དང་རྒྱལ་པོ་བཞད་གད་བྱེད་ལ། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ཟ་ལུགས་ཀྱང་སྔར་མ་བྱུང་བ་ཞིག་[6]ཡིན་ལ། ཉལ་བ་དང་འཆགས་པའི་སྤྱོད་ལམ་ཡང་སྔར་མ་བྱུང་བ་ཁོ་ན་བྱེད་པས། ཆོས་ཀྱང་སྔར་མ་བྱུང་བ་ཞིག་[7]ཤོད་ཟེར་བ་ལ། དེས་སྤྱོད་འཇུག་ལེའུ་བཅུའི་བདག་ཉིད་བཤད་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་[8]འཕུར་བས། ནཱལེནྡྲའི་པཎྜིཏ་ལྔ་བརྒྱ་དང་། རྒྱལ་པོ་དེཝཔཱལ་[9]ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་དད་ནས། མི་རྟོག་གཏོར་ནས་པུས་[10]ནུབ་ཙམ་དུ་ཆགས་ལ། འདི་ནི་བྷུ་སུ་ཀུ་མ་ཡིན་ཏེ་མཁས་པར་འདུག་གོ། ཟེར་ནས་རྒྱལ་པོ་དང་། པཎྜིཏ་ཀུན་

---

1 ‘བཞུགས་པས་གཟི་བྱིན་…’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. ཉིད།

2 ‘འཕགས་ནས’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ.

3 ‘འདུག་ནས’ - པེ་ཅི, ཤོག ༣༩ གོང, དེ་ཉིད།

4 ‘བྱུང་བ་ཅིག - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. དེ་ཉིད། ‘བྱུང་གཅིག’ པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང

5 ‘མ་བྱུང་བ་ཅིག’

6 ‘མ་བྱུང་བ་ཅིག’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. ‘གཅིག’ པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང;

7 ‘བ་ཅིག’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. ‘གཅིག’ པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང

8 ‘མཁར་འཕུར’ - སྣར་ཀུན ༣༥/བ.

9 ‘དེ་བ་ཕལ’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. པེ་ཅི ༣༩ གོང

10 ‘དཔུས་ནུབ་ཙམ…’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཉིད།

གྱིས་ཤཱནྟདེཝ་ [1]བྱ་བར་བཏགས། རྒྱལ་པོ་དང་པཎྜིད་ཀུན་ང་རྒྱལ་ཞི་བར་གྱུར་པས་ཞི་བ་ལྷ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ནས་པཎྜིད་སོགས་དེར་འདུས་པ་ཀུན་གྱིས་དེའི་འགྲེལ་པ་ཞིག་མཛད་པར་ཞུས་པས། ཕྱི་ནས་མཛད།[2] དེ་དག་གིས་མཁན་པོར་ཞུས་པས་མ་གནང་བར། ཆོས་གོས་དང་ལྷུང་བཟེད་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་ཡོ་བྱད་དཀོན་མཆོག་དང་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་ཕུལ་ནས། མཁན་པོ་དང་དགེ་འདུན་གྱིས་མ་ཆོར་བར་བྲོས་ཕྱིན་ཏེ།[3] རིམ་གྱིས་རྡོ་[4]གི་རིབྱ་བའི་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ཕྱེད་དང་གསུམ་[5]ཡོད་པར་ཤིང་གི་རལ་གྲི་ཡུ་བ་གསེར་གྱིས་བསྐུས་[6]པ་ཞིག

---

1 ‘ཤནྟིཝ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཅིད། འདིར ‘ཤཱནྟིཝ’ ཞེས་པ་རྒྱལ་པོ་དང་པཎྜིདའི་ང་རྒྱལ་ཞི་བར་གྱུར་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས། དུས་དེའི་ཚེ་དེ་དག་གིས་བཏགས་པར་བཤད་ཀྱང་། བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་ཤོག ༨༡ ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང་ཤོག ༡༥༩ རྣམས་སུ་ནཱ་ལེནྡྲར་མཁན་པོ་རྒྱལ་བའི་ལྷ་ལས་རབ་བྱུང་ཞུས་ཏེ། མཁན་པོས་དེ་ལྟར་བཏགས་པར་བཤད། འདིའི་གཞོན་ནུའི་མཚན་ཞི་བའི་གོ་ཆ་ཡིན་ཞེས་ཀུན་ལས་མཐུན་པར་བྱུང་།

2 པད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་དུ་སློབ་དཔོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་སྤྱོད་འཇུག་ལ་སློབ་བཤད་མཛད་པའི་ཚིག་འདུག་ཀྱང་། དེ་ལ་འགྲེལ་པ་མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཆོས་འབྱུང་གང་ནས་ཀྱང་མི་གསལ།

3 ‘འདིར་ནཱལནྡྲ་ནས་བྲོས་ཕྱིན་པར་བཤད་ཀྱང་། གྲོང་ཁྱེར་དྷི་མིཀྵའི་ནང་ཚན་ཀ་ལིཀྵའི་ཡུལ་གྱི་ནགས་ཚལ་གྱི་གཙུག་ལག་ཁང་ནས་རབ་བྱུང་གི་ཆས་གོས་བོར་ནས་གཤེགས་པར་ཏཱ་རཱ་ནཱ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཆོས་འབྱུང་ལས་གསུངས། ཤོག ༡༥༦ །

4 ‘ཧེ་ཀི་རི’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཅིད།

5 ‘འབུམ་ཚེ་ཕྱེད་ཡོད་པ’ - པེ་ཅི དེ་ཅིད།

6 ‘བཀུས་པ’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང

བསྒོམས་ནས་གྲོན་ཏེ། དེའི་རྒྱལ་[1]པོ་ལ་བདག་ཁྱེད་ཀྱི་རང་གྲི་པ་བགྱི་བྱས་པས་རུང་གསུངས་ཏེ། ཉི་མ་རེ་ལ་གསེར་ཏོ་ལ་[2]བཅུ་བཅུ་སྦྱིན་པ་དེས་འཚོ་བ་མཛད་ལ། ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རལ་གྲི་པ་བྱེད་ཀྱིན་སྙིང་པོའི་དོན་དང་མ་བྲལ་བར་མཛད་དོ།།

དུས་གཅིག་སྟོན་ཀའི་ཚེ་རལ་གྲི་པ་ཀུན་ལྷ་མོ་ཨུ་མའི་རྟེན་ལ་མཆོད་པ་བྱེད་པས། ཁོང་གིས་ཀྱང་དེ་ཁོ་ན་ལྟར་མཛད། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རལ་གྲི་འཁྲུད་པ་ཡིན་པ་ལ། ཀུན་གྱིས་འཁྲུད་པའི་ཚེ་ཁོང་གི་རལ་གྲི་ཤིང་དུ་འདུག་པ་དེ་གྲོགས་གཅིག་གིས་མཐོང་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་རེ་ཁྱོད་ཀྱི་རལ་གྲི་ང་ལ་སྟོན་ཅིག་ཟེར་བ་ལ། (དེ་ན་རེ་)བསྟན་ན་ཁྱེད་ཅག་ལ་གནོད་པར་འགྱུར་བས་མི་རུང་གསུངས་པས། གནོད་ཀྱང་སླའི་ངེས་པར་སྟོན་ཅིག་ཟེར་བས། འོ་ན་མིག་ལ་རེ་[3]ཁེབ་ཅིག་གསུངས་ནས། རལ་གྲི་ཤུབས་ནས་ཕྱུང་པས་འོད་མ་མཛོད་པར་མ་བཀབ་པའི་མི་རྣམས་ཞར་[4]བ་དང་། བཟོད་པར་གསོལ་ཞིང་གསོལ་བ་བཏབ་པས། དེ་དག་ལ་ཞལ་ཆབ་བྱུགས་པས་མིག་ཅན་དུ་སོང་ནས་

---

1 ‘རྒྱལ་པོ་སིཛྫི་ཡཱ་པ’ - ཏཱརཱ་ཆོས་ ཤོག ༡༥༨།

2 ‘ཏོ་ལོ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/ན· པེ་ཅི ཤོག ༣༩ གོང དེ་ཉིད། = འདིར་རྒྱལ་པོའི་བློན་པོ་བྱེད་པའི་སྐོར་ཏཱ་ལི་ཀྵ་ནས་ཕྱིར་བྲོན་རྗེས་སུ་བཤད་ཀྱང་ཏཱ་ར་ནཱ་ཐའི་ཆོས་འབྱུང་དུ་དེ་ཏཱ་ལི་ཀྵ་ར་མ་བྲོན་གོང་གི་གནས་ཚུལ་ཡིན་པར་གསལ་བར་གསུང་འདུག ཤོག ༡༥༨།

3 ‘ཡ་རེ་བ་ཁེབ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/ན· ‘ཡ་བ་རེ་ཁེབ’ - པེ་ཅི ༣༩ འོག

4 ‘ཞར་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/ན· དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། མཆོད་གནས་སུ་ཞུས་པས་མ་བཞེད་དེ། དེ་རི་བྲག་ཅིག་[1]ཏུ་བྱོན་ནས་སྤྲུལ་པའི་རི་དྭགས་བསད་ཅིང་། དེ་དག་གི་ཤ་ཟ་བ་མི་ཀུན་གྱིས་མཐོང་ནས་(དེ་)རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་བཅས་དེར་བྱོན།[2]

རྒྱལ་པོས་སླས་པ་ཁྲིད་ཕྱུར་ནཱལེནྡྲཱའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་བརྟུལ་[3]ནས་ཆོས་ལ་བཀོད། འདིར་ཡང་མིག་ཞར་བ་གསོས་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན། དེ་འདྲའི་ནུས་པ་མངའ་བཞིན་དུ་སྲོག་ཆགས་ལ་གནོད་པ་མཛད་པའི་ལུགས་ཡོད་དམ། ཞུས་པས། ཞི་བ་ལྷས་བདག་གིས་བསད་པ་མ་ཡིན། གསོས་པ་ལགས། གསུངས་ནས། སྤྱིལ་པོའི་སྒོ་ཕྱི་ནས་བལྟས་པ་ན། རི་དྭགས་རྣམས་གཉིས་འགྱུར་གྱིས་ཆེ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཕྱིར་དོན་ནས་རི་དང་ལུང་པ་ཁྱབ་པར་གྱུར་པས། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་དད་པ་ན། མཐར་རི་དྭགས་དེ་དག་གར་སོང་ཆ་མེད་དུ་གྱུར་པས། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་སྐལ་བ་ཡོད་པ་དག་གིས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྨི་ལམ་སྒྱུ་མ་ཙམ་དང་། གདོད་ནས་མ་གྲུབ་པར་རྟོགས་པ་ཡང་སྐྱེས་ནས་ལམ་ལ་གནས་པར་གྱུར་ཏེ། དེའི་ཞལ་ནས—

དག་གི་བསད་པའི་རི་དྭགས་རྣམས།།
དང་པོ་གང་ནས་ཀྱང་མ་འོངས།།
བར་དུ་གང་ལ་ཡང་མི་གནས།།

---

1 'བྲག་ཞིག་ཏུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/ན. པེ་ཅི, ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

2 'དེར་བྱོན་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།

3 'བཏུལ་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦ དེ་ཉིད།

ཐ་མ་གང་དུའང་འགག་མི་འགྱུར།། ༡

གདོད་ནས་མ་གྲུབ་ཆོས་རྣམས་ལ།།

བཤད་དང་བཤད་[1]བྱ་ག་ལ་གྲུབ།།

ཀྱེ་མ་སེམས་ཅན་སྙིང་རེ་རྗེ།།

ཛྷ་སུ་ཀུ་ནི་སྨྲ་བར་བྱེད།། ༣ ཅེས་གསུངས་ནས།

ཡུལ་དེའི་ནཱ་ལནྡྲ་ལ་སོར་པ་ཀུན་བརྟུལ་[2]ནས་ཆོས་ལ་བཀོད་དོ། །

དེ་བས་ན་དད་གུས་ཆོས་བསྒྲུབས་[3]ན། ཛྷ་སུ་ཀུ་པས་མཚན་གཅིག་བསྒྲུབས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གཅིག་ཏུ་རྟོགས་ཏེ། ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་སྐད་ཅིག་མ་ལ་བྱུང་ནས་མཐར་ལོ་བརྒྱ་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཛྷ་སུ་ཀུ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༣) གུརུཨིནྡྲབྷཱུཏི།

གུརུཨིནྡྲབྷཱུཏིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཨུ་རྒྱན་ན་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ལྔ་ཡོད་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་གཉིས་ཀྱིས་དབང་བྱེད། སམྦྷོལ་[4]གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་

---

1 ‘བཤད་དང་སོད་བྱེད’ - པེ་ཅི ཤོག ༣༩ འོག

2 ‘བརྟུལ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦/བ· 72.

3 ‘སྒྲུབས་ན’ - པེ་ཅི, ཤོག ༣/བ· གོང 190. Vol 87

4 सम्भवत: ‘शम्वल’

ཚོ་ཕྱེད་དང་གསུམ་ལ་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏིས་དབང་བྱེད། ལངྐཱ་པུ་རིའི་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ཕྱེད་དང་གསུམ་ལ་རྒྱལ་པོ་ཛཱ་ལེནྡྲ་རས་།དབང་དུ་བྱེད་པ་ན། སམ་བྷོ་ལའི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་ལ་སྲིང་མོ་ལཀྵྨཱིཀཱ་ར་བྱ་བ་ལོ་བདུན་ལོན་པ་ཞིག་ཡོད་དེ། ལངྐ་པུ་རིའི་རྒྱལ་པོ་ཛཱ་ལེནྡྲའི་བུ་ལ་སློང་དུ་བཏང་བ་ལས། རྒྱལ་བུ་ཨིནྡྲབྷཱུཏིས་བློན་པོ་ཀུན་བསྡུས་ནས་གྲོས་བྱས་པ་ལ། ཛ་ལེནྡྲའི་རྒྱལ་པོ་ཆོས་མི་བྱེད་པ་ཅམ་མ་གཏོགས་གཞན་མཉམ་པ་ཡིན་[2]ཟེར་ནས་བཏང་བར་ཆད་ནས། ཕོ་ཉ་ལ་ཆོས་བྱེད་པ་དང་། མི་བྱེད་པའི་ཁྱད་པར་ཡོད་དེ། གཉེན་བྱ་ཡིས་གསུངས་ནས་བཟློག།[3]

དེའི་ཕྱི་ལོ་དེའི་སྲས་སམ་བྷོ་ལར་འོངས་ནས། ལཀྵྨཱཀཱ་ར་དང་འཕྲད་ནས་རྒྱལ་བུ་རང་གི་ཡུལ་དུ་ཆས་པ་ལ། ཨིནྡྲབྷཱུཏིས་རྟ་དང་གླང་པོ་དང་གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེས་མང་པོ་བསྐུར་ནས་བཏང་ངོ་།།

དེ་རང་གི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཕས་ཆུང་མ་ག་རེ། ཟེར་བ་ལ། བུ་མོ་ཆུང་བས་མ་བསྐུར་བྱས་པས། དེ་ལེ་ཟེར[4]། དེ་ཙ་ན་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་ལ་བཙུན་མོ་མང་པོ་ཡོད་དེ་ཐམས་ཅད་ཆོས་ལ་དད་པ་ཤ་སྟག་ཡོད་པས། ལྕམ་དྲལ་

---

1 'ཛལནྡྲ' - པེ་ཅི. ཤོག ༩༠ གོང དེ་ཉིད། 'ཛལེནྡྲ' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༦

2 'མཉམ་པ་ཟེར་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༩༠ གོང

3 'བཟློག་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/ན· 73.

4 'ཟེར་ཏེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

བཙུན་མོ་དང་བཅས་པས་བླ་མ་ལྭ་ཝ་པཱ་ལ་དབང་དང་གདམས་[1]པ་ཞུས་ནས་སྒྲུབ་པ་ལ་བརྩོན་པར་གནས་པ་ལ། ལྷམ་གྱིས་ལོ་བཅུ་དྲུག་ལོན་ནས། ཛཱ་ལེནྡྲ་ཞེས་པའི་རྒྱལ་པོས་ཕོ་ཉ་བཏང་(དེ་)ནས་ལྷམ་བྱིན་ཚུལ་དང་། ལྷམ་གྱིས་འཁོར་བ་ལ་ཡིད་འབྱུང་ནས་སྒྲུབ་པ་མཛད་དེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་[2]ནས་ཕྱག་དར་པ་[3]རྗེས་སུ་གཟུང་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་པ་སོགས་[4]ལྷམ་རང་གི་རྣམ་ཐར་དུ་གསལ།

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ཛཱ་ལེནྡྲས་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏི་ལ་ལྷམ་གྱིས་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་གྱི་ཕྲིན་དང་ཕོ་ཉ་བཏང་[5]། [ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏིས] “ངའི་ལྷམ་མོས་གྲུབ་པའི་ས་བརྙེས་པ་ནི་ལེགས་ཏེ། རང་ཉིད་[6]ཞི་བདེ་མཛད་པ་ནི་མ་ལེགས།” གསུང་ངོ་། །དེ་ནས་ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏིའི་བསམ་པ་ལ་ངའི་སྲིང་མོ་དེ་སྐྱེ་བ་དོན་ཡོད་པར་སོང་འདུག་ང་ཡང་རྒྱལ་སྲིད་དོན་ཆུང་ལ། ཉེས་དམིགས་ཆེ་བ་འདི་སྤངས་ལ་ཆོས་བྱེད་དགོས་སྙམ་ནས། རང་གི་སྲས་ལ་རྒྱལ་སྲིད་གཏད་དེ་ཁང་བཟང་ཞིག་[7]ཏུ་

---

1 ‘གདམས་ངག’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག ཤོག 190. Vol 87

2 ‘གྲུབ་ཐོབ་པས་མ་བརྙེས་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/ན· 75.

3 ‘ཕྱག་དར་བ་སོགས་རྗེས་སུ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

4 ‘གཤེགས་པ་རྣམས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

5 ‘བཏང་པས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།

6 ‘རང་ཞི་བདེ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/ན· དེ་ཉིད།

7 ‘ཁང་བཟང་གཅིག་ཏུ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།

སྒྲུབ་པ་མཛད།[1] ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ལ། འཁོར་རྣམས་ཀྱི་མ་ཤེས་ནས། སྲས་དང་འཁོར་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་བལྟར་ཕྱིན་པ་ནས་དེའི་སྒོ་དབྱེ་བར་བརྩམས་པ་དང་། ནམ་མཁའ་ནས་སྒོ་མ་དབྱེ། ང་འདི་ན་ཡོད་ཟེར་བ་ཐོས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་བལྟས་པས། དེ་རྣམས་ཀྱིས་(རྒྱལ་པོ་)ནམ་མཁའ་ལ་བཞུགས་པར་མཐོང་ནས་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་དགའ་བ་སྐྱེས་ཏེ། དད་བཞིན་དུ་ཕྱག་བྱས་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་འདུག[2]།

ཡབ་རྒྱལ་པོ་ནམ་མཁའ་ལ་ཞག་བདུན་དུ་བཞུགས་ནས་སྲས་དང་འཁོར་འབངས་རྣམས་ལ་ཟབ་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཆོས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་གསུངས་ནས་འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་[3]ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཨིནྡྲབྷཱུཏིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༣) གུརུམིཀོཔཱ།

གུརུམིཀོཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་སྦྃགལར་(བྃགྭལ་)ཁ་ཟས་འཚོང་པའི་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་གིས་དུས་རྟག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ལ་འཚོ་བ་སྣངས་པས། ལན་ཅིག་རྣལ་འབྱོར་པ་ན་རེ། ཁྱོད་ང་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ་ཅི་

1 ‘མཛད་པས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༩༠ དེ་ཉིད།

2 ‘འདུག་པ་དང་།’ - པ་ཅི, ཤོག ༩༠ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།

3 ‘བཅས་ལུས་དེ་ཉིད’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༠ འོག དེ་ཉིད།

ཡིན། གསུངས་པས། (མི་)དེས་ཕྱི་མའི་ལམ་རྒྱུགས་དགོས་པ་ལགས་ཞུས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པས་)འོ་ན་ཕྱི་མའི་ལམ་རྒྱུགས་སྒྲུབ་ནུས་སམ། གསུངས་པས། ནུས་ལགས་ཟེར།[1] (དེ་)ནས་དེས་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་མཛད་དེ། སེམས་ཉིད་ངོ་སྤྲོད་པའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ་།།

རང་སེམས་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ལས[2]།།
འཁོར་འདས་བྱེ་བྲག་རྣམ་པར་འཆར།།
རྟོགས་དང་མ་རྟོགས་གཉིས་ཡིན་པས།།
འགྱུར་མེད་སེམས་ཉིད་ངང་ལ་ལྷོས།། ༡

གཉིས་འཛིན་རྣམ་རྟོག་ག་ལ་འབྱུང་།།
རང་བཞིན་མེད་ཕྱིར་དེ་ཡི་ངང་།།
ཆོས་རྣམས་གང་ཡང་གྲུབ་པ་མེད།།
མ་རྟོགས་འཁྲུལ་པའི་འདོད་པས་བཅིངས།། ༢

ཞེས་གསུངས་[3]པས། དེས་ཀྱང་སྣང་བ་རང་གི་སེམས་སུ་གོ སེམས་དེས་འགྲོ་འོང་མེད་པ་གནས་ལུགས་ཀྱི་ངང་དུ་གོ་ནས། རང་སེམས་འགྱུར་བ་

1 ‘ནུས་ལགས་ཟེར་ནས།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ. པེ་ཅི ཤོག ༥༡/གོང་།
2 ‘ནོར་བུ་ལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ གོང དེ་ཉིད།
3 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ གོང དེ་ཉིད།

མེད་པའི་དོན་ལ་གནས་པས། ཟླ་བ་དྲུག་ནས་འཁྲུལ་པའི་རྟོག་པ་འགགས་ནས་རང་སེམས་གཉུག་མའི་དོན་རྟོགས།

(དེ་ནས་དེ་)གཅན་གཟན་ལྟར་དུར་ཁྲོད་།འཁྱིམ་པར་བྱེད་ཅིང་། རེས་སྨྱོན་པའི་སྤྱོད་པས་གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འོངས་ནས། མིག་བགྲད་ནས་འཇིགས་འཇིགས་སུ་བལྟས་པས། སྐྱེ་བོ་དག་ཟླ་མ་འཇིགས་འཇིགས་སུ་ལྟ་བ་ཟེར། (དེ་ནས་) ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་'མེ་ཀོ་པཱ་'ཞེས་གྲགས་སོ།།

དེས་ཟབ་མོའི་ཆོས་ཀྱིས་གདུལ་བྱ་མང་དུ་བཏུལ་[2]ནས། མཐར་རྟོགས་པ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་དེ[3]། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་མེ་ཀོ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༨) གུ་རུ་ཀོད[4]ལི་པཱ།

གུ་རུ་ཀོད་ལི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རཱ་མེ་ཤྭར་བྱ་བ་[5]ནས་ཞག་བཞིར་ཕྱིན་པའི་ས་ན། གནས་དང་ཡུལ་གྱི་ཆེད་དུ། ཀོད་ལི་པཱ་སྐྱེ་དོག་ཅེ་པཱ། རི་བོ་

1 'དུར་ཁྲོད་དུ་འཁྱིམ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༧/བ· 74.

2 'བཏུལ་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༧ གོང 190. Vol 87

3 'བརྗོད་དེས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༧ གོང དེ་ཉིད།

4 'ཀོཊ་ལི་པ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན· 75. 14. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད།

5 'རཱ་མེ་ཤྭ་རའི་ཡུལ་བྱ་བ་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན 75. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད།

ཞིག་བཀོ་ཞིང་ཡོད་པའི་ཚེ། སློབ་དཔོན་ཤཱནྟི་པ་སིཾཧ་ལའི་རྒྱལ་པོས་གདན་དྲངས་དེ་སླར་ཡུལ་དབུས་སུ་ལོག་བྱོན་པ་དང་མཇལ།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཁྱོད་ཅི་བྱེད། སྨྲས་པ་དང་། དེས་ཀྱང་སྐུ་ཁམས་ལ་སོགས་པ་ཞུས་ནས། དངོས་རི་བཀོ་ཡིན་གདའ་[1]ཞུས་པ་དང་། རི་བཀོ་ནས་ཅི་བྱེད་གསུངས་པ་ན། རྒྱལ་པོ་ངན་པ་ཀུན་གྱིས་ཡུལ་བཤིག་ནས་མི་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་ཞིང་ཡིད་མི་བདེ་བས། ཡུལ་ཡང་མེད་པས་ས་འདིར་བདག་རི་འདི་བཤིག་ནས་འདིར་གནས་དང་ཡུལ་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་ཞུས་པས། ཤཱནྟི་པས་སྨྲས་པ་[2]རི་བོ་བཀོ་བའི་སྟོབས་དང་གདམས་[3]ངག་ང་ལ་ཡོད་ན་དེ་ཁྱོད་ལ་མི་དགོས་སམ། [4]གསུངས་པ་དང་། དགོས་ཞེས་ཞུས་པས། དེའི་ཞལ་ནས—

ཁྱོད་ཀྱི་ལས་ནི་འདི་ལྟ་བུས།།
ལུས་ནི་ངལ་བར་གྱུར་པས་[5]ན།།
ལས་ནི་ཤིན་ཏུ་ངན་པ་སྟེ།།
ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ལས་དྲུག་ཡིན།། ༡

ས་བཀོ་བ་ནི་སྡིག་པ་དང་།།

---

1 'ཞེས་ཞུས་པས།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ འོག དེ་ཉིད།

2 'ཤཱནྟི་པས་གསུངས་པ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ འོག དེ་ཉིད།

3 'གདམས་ངག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ཞེས་སྨྲས་པས།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༤/ན 75. 14.

5 'གྱུར་པ་ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༤/ན

གཞན་ལ་མི་གནོད་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་།།
སྡུག་བསྔལ་བཟོད་པའི་བཟོད་པ་དང་།།
དེ་ལ་བརྩོན་པའི་བརྩོན་འགྲུས་དང་།། ༢
དེ་ལ་མ་ཡེངས་བསམ་གཏན་དང་།།
དེ་ཤེས་པ་ཡི་ཤེས་རབ་སྟེ།།
ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ལས་དྲུག་པོ།།
[1]སོལ་ལ་ཡང་དག་ལས་དྲུག་གྱིས།། ༣

བླ་མ་ལ་གུས་སྦྱིན་པ་དང་།།
རང་རྒྱུད་བསྲུང་[2]བའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་།།
སེམས་ཉིད་བཟོད་པའི་བཟོད་པ་དང་།།
དེ་བསྒོམས་[3]པ་ཡི་བརྩོན་འགྲུས་དང་།། ༤
དེ་ལ་མ་གཡེངས་བསམ་གཏན་དང་།།
དེ་ཉིད་ཤེས་པའི་ཤེས་རབ་སྟེ།།
དུས་རྣམས་རྟག་ཏུ་གོམས་པར་གྱིས།། ༥

---

1 'སྐྱོངས་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༤༧ འོག དེ་ཉིད།

2 'རང་རྒྱུད་སྲུང་' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༥/ན· 75.

3 'དེ་སྒོམ་པ' - སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད།

ཞེས་[1]གསུངས། ཀོད་ལིས་[2]ཡང་དེའི་དོན་བསྡུས་པ་ཞིག་ཞུ་ལཊ་ཟེར་[3]བ་ལ། (ཤཱནྟིཔས) —

དེ་ཡང་བླ་མ་ལ་གུས་པར་གྱིས། བདེ་སྡུག་ཐམས་ཅད་རང་གི་སེམས་ལས་བྱུང་བས་རང་སེམས་གཉུག་མའི་དོན་ལ་གོམས་པར་གྱིས། དེ་ཡང་རང་སེམས་གཉུག་མ་འགྱུར་བ་མེད་པ་ནི་རི་དང་འདྲ་ལ། རིག་པ་གསལ་ལ་མ་འགག་པ་དེ་རྟོག་ཅེ་དང་འདྲ་བས་ཀོས་ཤིག བརྩོན་འགྲུས་གཉིས་པོ་ལག་པ་གཡས་གཡོན་དང་འདྲ་བས་མ་བྲལ་བར་བཀོ་དགོས་པ་ཡིན་གསུངས་ནས། དེ་ཡང་[4]ཚིགས་སུ་བཅད་ནས་གསུངས་པ —

བདེ་སྡུག་ཐམས་ཅད་སེམས་ལས་བྱུང་།།
གདམས་པས་སེམས་ཀྱི་རི་བོ་བཀོས།།
ས་ཡི་རི་བོ་བཀོས་གྱུར་ཀྱང་།།
གཉུག་མའི་བདེ་ཆེན་རྟོགས་མི་འགྱུར།། ༦

---

1 ‘ཤེས་གསུངས་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༡ འོག དེ་ཉིད།

2 ‘ཀོཊ་ལིས། དེ་འི་དོན’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༡ འོག དེ་ཉིད།

3 ‘ཟེར་བས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༡ འོག དེ་ཉིད།

4 ‘དེ་ལྟར་ཚིགས་སུ་གཅད…’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ གོང 191. Vol 87

ཞེས་[1]གསུངས་པ་བཞིན་དུ་དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།[2]

དེ་ནས་འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ།[3] ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཀོདལིཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1) ‘ཅེས་གསུངས་པ’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

2) ‘ཐོབ་སྟེ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨/བ. 76 དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག ༥༣ གོང དེ་ཉིད།

3) ‘མཛད་ནས’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

༨༥) ག་རུ་ཀཾ་པ་རི་པཱ།[1]

ག་རུ་ཀཾ་པ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀཾ་པ་རི་པཱ་སྟེ་མགར་བ། དེའི་ཡུལ་ནི་སཱ་ལི་པུ་ཏྲ[2]། རིགས་མགར་བ།

'དེ་'རིགས་རྒྱུད་ཀྱི་འཚོ་བ་དུས་རྟག་ཏུ་མགར་བ་བྱེད་ཅིང་འདུག་པ་དང་། དེ་ཡང་དུས་གཅིག་ན་དེ་མགར་བྱེད་པའི་སར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[3]བྱོན་ནས། ཁྱོད་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག། ཅེས་སྨྲས་པ་[4]དང་། དེ་ན་རེ། བདག་རིགས་རྒྱུད་ཀྱི་ལས་མགར་བ་བྱེད་ཀྱིན་གདའ། ཟེར་རོ། (དེས་) ཁྱོད་ཀྱི་ལས་འདི་བདེ་འམ། བྱས་པས། བདེ་བ་དག་ལྟ་ག་ལ་མཆི། མེ་མདག་དང་ཚ་ཚན་ལུས་རྟག་ཏུ་ཆིག་ཀྱང་། འཚོ་བའི་ཆེད་[5]དུ་སྡུག་བསྔལ་དང་དུ་ལེན་ཅིང་གདའ་ཞུས་སོ།།

རྣལ་འབྱོར་པས་(དེ་ལས་)ཟས་བླངས་པས། མགར་བ་བཟའ་མི་གཉིས་བདག་ཅག་བསོད་ནམས་ཆུང་བ་རིགས་དམན་པའི་ལག་ནས་ཟས་གསོལ་བ་ངོ་མཚར་ཆེ་སྙམ་ནས། དེ་གཉིས་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པས་ཁྱེད་ཅག་ཆོས་མི་བྱེད་དམ། བྱས་པས། བདག་ཅག་རིགས་ངན་ལ་གདམས་པ་སུས་སྟེར། ཟེར་བ་ལ། ཆོས་ལ་དད་ཅིང་སྒྲུབ་ནུས་ན་གདམས་པ་ངས་སྦྱིན་[6]གྱིས་

---

1 'कमरिपा, (कंपरिपा) – राहुल, पुरा० त० नि० पृ० १२३ ।

2 'སལིཔུཏྲ' - སྣར་ཐང་ཀུན་ ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ ཤོག ༨༣ དེ་ཉིད། 'सालिपुत्र' राहुल० वही ।

3 'བ་ཅིག' - སྣར་ཐང་ཀུན་ ཤོག ༣༨ དེ་ཉིད། 'པ་གཅིག' པེ་ཅི་ ཤོག ༨༣ དེ་ཉིད།

4 'ཞེས་གསུངས་པ་དང་།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༨༣ གོང་ དེ་ཉིད།

5 'ཕྱིར་དུ' - སྣར་ཐང་ཀུན་ ཤོག ༣༨/བ དེ་ཉིད།

6 'བྱིན་གྱིས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༨༣ གོང་ 191. Vol 87.

གསུངས་པས། དེ་དག་དགའ་ནས་ཕྱག་དང་མཆོད་པས་མཉེས་པར་བྱས་ནས་གདམས་པ་ཞུས་པས། བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་ནས་དམིགས་པ་རྩ་གསུམ་གྱི་གདམས་པ་(འདི་ལྟར་) གནང་ངོ།

ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱིའི་སྣོད་པ་དང་། སོལ་བ་དང་། མེ་དང་། ལྦུགས་བཞུ་བའི་དམིགས་པ་འདི་ནང་དུ་སྒོམས་ཤིག རྩ་རོ་མ་དང་རྐྱང་མ་གཉིས་སྣོད་པར་གྱིས།། རྩ་ཨལྦ་[2]ཧྲུ་ཏི་སོལ་མལ་དུ་གྱིས། རྣམ་ཤེས་མགར་བར་གྱིས། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་སྦོར[3]། རྣམ་རྟོག་སོལ་བར་གྱིས། དུག་གསུམ་ལྕགས་སུ་གྱིས་ལ་ཞུང་[4]དང་། ཆོས་སྐུ་གཉིས་མེད་བདེ་ཆེན་གྱི་བཟོའི་འབྲས་བུ་སྨིན་ནས་འོང་བ་ཡིན་གསུངས་ཏེ[5]། [དེའི་དོན་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དེ་གསུངས་པ]

ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱིའི་ལས་དག་ལ།།
གོམས་པ་བཞིན་དུ་ནང་དུ་ཡང་།།
ལལནྣ་དང་རསནྣའི།།
གཡས་གཡོན་སྣོད་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ།། ༡

1 ‘གྱིས་ཤིག’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘ཨབཧྲུཏི’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན 77.
3 ‘ཡེ་ཤེས་མེར་གྱིས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ ན
4 ‘བཏུངས་དང་།’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘གསུངས་ནས’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

ཨཱརྱདེའི་སོལ་[1]མལ་དུ།།
རྣམ་པར་ཤེས་པའི་མགར་བ་ཡིས།།
རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སོལ་བ་ལ།།
རིག་པ་ཡེ་ཤེས་མེ་སྦར་ནས།། ༣
དུག་གསུམ་ཉོན་མོངས་ལྕགས་བཞུ་[2]སྟེ།།
ཆོས་སྐུ་ཟག་མེད་འབྲས་བུ་གྱིས།། ༢

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་རང་གི་ལས་དང་བསྟུན་ནས་བསྒོམས་པས། ལོ་དྲུག་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ལ[3]། གཞན་གྱིས་མ་ཚོར་བ་ན། སོལ་མལ་དུ་འབད་པ་མེད་པར་བཟོ་སྣ་ཚོགས་གྲུབ་པ་དང་། སཱལིཔུཏྲའི་སྐྱེ་བོ་ཀུན་[4]འོ་སྐོལ་གྱི་མགར་བ་འདིས་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོབ་ནས་འདུག་ཟེར་ནས། ངོ་མཚར་ཏེ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་ཀཾ་པ་རི་པཱ་ཞེས་གྲགས[5]།

དེས་ཀྱང་འགྲོ་དོན་མང་དུ་བསྒྲུབས་ནས་[མཐར་རང་གི་] རྟོགས་པ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཀཾཔ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘སོ་མལ་དུ།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ དེ་ཉིད།
2 ‘གཞུ་སྟེ’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ དེ་ཉིད།
3 ‘ཐོབ་པ་གཞན…’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།
4 ‘སལིཔུཏྲའི་སྐྱེ་བོ་ཀུན་ཡང་’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘གྲགས་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/ན 77

༨༦) ཀུརུཛཱལནྡྷར།

ཀུརུཛཱལནྡྷརའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཛཱལནྡྷར་སྟེ་དྲྭ་བ་འཛིན་བྱ་བ་ཡིན། ཡུལ་ནགརཐོདཔ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ[1]། རིགས་བྲམ་ཟེ་ཡིན་པ་ལས། འཁོར་བའི་ཆོས་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཕྱིན་ཏེ། ཤིང་གཅིག་གི་རྩ་ར་བསྡད་པས་ཤེས་པ་བདེ་བ་སྙམ་བྱེད་པ་ན། ནམ་མཁའ་ནས་ཌཱ་ཀི་མ་གཅིག་གིས་རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཡང་དག་པའི་དོན་ཡོད་ལ་གྱི་ཤིག ཟེར་བའི་སྒྲ་བྱུང་བ་དང་། དེ་དགའ་ནས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་པས། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཌཱ་ཀི་མས་ཞལ་དངོས་སུ་བསྟན་ནས་དགྱེས་རྡོར་དུ་དབང་བསྐུར་ཏེ། རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་མན་ངག་འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ།

"ཕྱི་ནང་ཁམས་གསུམ་སྣོད་བཅུད་ཐམས་ཅད་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དུ་འདུས། དེ་གསུམ་གྱི་རྣམ་རྟོག་རྩ་གསུམ་དུ་འདུས། རྩ་གཉིས་དྷཱུ་ཏིར་འདུས་པ་ལ། དེ་རུ་དྷན་རིག་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྟོག་པ་སྤྱི་བོ་ཚངས་པའི་བུ་ག་ནས་ཡར་ཐོན་ལ་སྣང་སྟོང་དབྱེར་མེད་དུ་སྒོམས་ཤིགས་"པའི་གདམས་པ་བྱིན་ནས།

ཕྱི་ནང་ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་པ།།
ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དག་ཏུ་འདུས།།
གཡས་གཡོན་ཨཝདྷཱུཏིར་འདུས།།
དེ་ཡང་ཚངས་པའི་བུ་ག་སྣེ།། ༡།།

སྟོང་པ་ཉིད་དེ་བདེ་ཆེན་མཆོག།

1 'ཞེས་བྱ་བ་ཡིན།' - པེ་ཅི་ཤོག ༨༣ ངོས་ དེ་ཉིད།

རྣལ་འབྱོར་དག་པའི་ངང་ལས་འབྱུང་།།
བདེ་སྟོང་ཟུང་འཇུག་བསྐྱིལ་བར་འཚལ།། ༣

ཞེས་གསུངས་[1]། དེ་ལྟར་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་གནང་བ་ན[2]། དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ལོ་བདུན་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[3]། དེ་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། འགྲོ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་དོན་མཛད་ནས་འཁོར་གསུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཛླལནྡྷར་[4]པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༧) གུ་རུ་ཙླཏུལ།

གུ་རུ་ཙླཏུ་ལའི་[5]ལོ་རྒྱུས་ནི། ཙླཏུལ་སྔེ་སྒྲ་གཅན་འཛིན་བུའོ། དེ་ཡང་ཡུལ་ཀཱམརུཔ། རིགས་དམངས་རིགས་སོ།།

དེ་རྒས་ནས་ལུས་པོ་སྦྱོར་མི་བཟོད་པ་དང་། གཉེན་དང་བུ་ཀུན་ཡང་གཤེ། བརྙས་པ་བྱེད་ནས་དེ་མ་དགའ་སྟེ། སྐྱེ་བ་ཕྱི་མ་དྲན་ནས་དུར་ཁྲོད་

1 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི, ཤོག ༨༣ གོང ཤོག 191. Vol 87.
2) 'གནང་ནས' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༩/བ 78. པེ་ཅི, ཤོག ༨༣ གོང དེ་ཉིད།
3) 'ཐོབ་སྟེ།' - སྣར་ཀུན ཤོག ༣༩/ བ དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག ༨༣ ཤོག དེ་ཉིད།
4) 'ཛླལེནྡྷར' - སྣར་ཀུན ༣༩ དེ་ཉིད། ཛླལནྡྷར པེ་ཅི, ཤོག ༨༣ དེ་ཉིད།
5) 'ཙླལའི་ལོ་རྒྱུས་' - པེ་ཅི, ༨༣ གོང་།

ད་ཕྱིན་པ་དང་། དེའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས། ཁྱོད་དུར་ཁྲོད་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་བྱས་པས། དེ་ན་རེ—

བདག་གི་ལང་ཚོའི་ཟླ་བ་དེ[1]།།
རྒས་པའི་སྒྲ་གཅན་གྱིས་བཅོམ་ནས།།
བུ་ཚ་ལ་སོགས་གཞི་བར་བྱེད།།
ཞེན་དགའ་བས་གནས་ན་ཡོད[2]།། ༡

ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་དེ་ལ་སྨྲར—

ཁྱོད་ཀྱི་རྣམ་སྨིན་འབྱུང་བ་ལ།།
ཆུ་བོ་གསུམ་གྱིས་གཡེངས་ཟིན་ནས།།
ད་ནི་འཆི་བའི་ཆུ་བོ་འབྱུང་།།
འཆི་རྒྱུགས་ཆོས་ཤིག[3]མི་བྱེད་དམ།། ༣

གསུངས་པས། བླ་མ་(ལགས་) ཆོས་བྱེད་ལགས་ཏེ། གདག་རྒས་ཤིང་ནོར་དང་བྲལ་བ་ལ་ཆོས་སུས་སྟེར། ཞེར་བ་ལ། ཡང་དེའི་ཞལ་ནས —

གཉུག་མའི་སེམས་ལ་རྒས་པ་མེད།།
དད་སོགས་ནོར་ལ་འགྲིབ་པ་མེད།།
གུས་པས་དམ་ཆོས་སྒྲུབ་ནུས་ན།།

---

1 'ཟླ་བ་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ གོང་། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ 78.
2 'གནས་པའོ།' - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག དེ་ཉིད།
3 'ཆོས་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༣༩/བ 78. པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག

ཁྱོད་ནི་བདག་གིས་རྗེས་གཟུང་[1]བྱ།། ༣

ཞེས་གསུངས་[2]ཏེ། བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་བྱས་ནས་ཐིག་ལེའི་གདམས་པ་[3]འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ[4]།

"ཁྱོད་ཀྱི་སྤྱི་བོའི་སྙིང་དུ་ཨ་ལས་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒོམས་ལ། དེའི་ནང་དུ་སྣང་སྲིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟོག་པ་ཞུགས་པར་སྒོམས་ཤིག" ཅེས་དང་། ཡང —

"གཉིས་མེད་རྟོགས་[5]པའི་སྒྲ་གཅན་གྱིས།།
གཟུང་འཛིན་རྟོག་པ་བཅོམ་ནས་ནི།།
སྤྱི་བོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་རུ།།
ཟབ་པའི་ཐིག་ལེའི་ངང་ཉིད་ལས[6]།། ༨

བདེ་སྟོང་ཟུང་འཇུག་རྒྱུན་དག་གིས།།
ཕུང་པོ་ལ་སོགས་དགྲ་བཅོམ་ནས།།
སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་འབྱུང་།།
ཨེ་མ་འགག་མེད་ངོ་མཚར་ཆེ།། ༥

---

1 'བཟུང་བྱ།' - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག དེ་ཉིད།
2 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག
3 'གདམས་ངག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/ ན 79.
4 'ཕྱིན་ཏེ' - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག དེ་ཉིད།
5 'རྟོག་པའི…' - པེ་ཅི ༨༣ འོག དེ་ཉིད།
6 'ངང་ལས་ནི' - པེ་ཅི ༨༣ འོག དེ་ཉིད།

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པས། ཇི་ཞིག་ཙམ་ན་གཉིས་འཛིན་གྱི་བློ་བ་ཐམས་ཅད་གཉིས་མེད་སྒྲ་གཅན་གྱིས་ཟོས་ནས། གཉིས་མེད་ཀྱི་བདུད་རྩི་སྤྱི་བོའི་ཚངས་པའི་བུ་ག་ནས་མར་ཞུགས་པས། ལུས་ཐམས་ཅད་བདུད་རྩིས་གང་ཞིང་རྒྱས་ནས། ལོ་བཅུ་དྲུག་ལོན་པའི་ན་ཚོད་དུ་གྱུར་ནས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། ཀཱམརཱུཔ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་བོ་མང་པོ་བཏུལ་ནས་མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

དྷརུཧཱཧུལ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༤) དྷརྨཔཱ།

དྷརྨ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། དྷརྨ་པཱ་སྟེ་ཆོས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་བོ་དྷི་ན་གར་བྱ་བ་ན། དེ་པཎྜིཏ་ཡིན་པ་ལ། སློབ་མ་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་སྒྲུབ་པ་གཙོ་བོར་མ་བྱས་པས། ཕྱིས་བགྲེས་ནས་སྐྱུན་ལོང་བ་དང་། དེ་ལ་འདི་ལྟ་བུའི་སེམས་པ་སྐྱེས་ཏེ། བདག་བླ་མ་ཞིག་[1]དང་འཕྲད་ན་ཅི་མ་རུང་སྙམ་པ་དང་། མི་ལམ་དུ་ཌཱ་ཀི་མས་ལུང་བསྟན་པ་ནི། "ཁྱོད་ཀྱི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ང་ཡིན་ནོ" ཞེས་ཟེར་བ་ལ། དེས་གསོལ་བ་བཏབ་པས། ཌཱ་ཀི་མས་དེ་ལ་དངོས་སུ་ཞལ་བསྟན་ཏེ་དབང་བསྐུར་ནས། གདམས་ངག་[2](གནང་བ་)ནི། ཆོས་ཐམས་ཅད་སྡོང་དུ་སྒོམས། རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་མར་དུ་སྒོམས། རང་གི་རྣམ་ཤེས་སྡོང་བུར་སྒོམས། དེ་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་འབར་བར་སྒོམས་ཤིག་གསུངས་ཏེ། དེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པར་གསུངས་པ།

---

1 'བླ་མ་ཅིག་དང་'-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༠ ན 79. དེ་ཉིད པེ་ཅི ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།

2 'གདམས་པ་ནི' - པེ་ཅི ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།

ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་སྣོད་ནང་དུ།།
རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མར་བླུགས་[1]ནས།།
རིག་པའི་སྡོང་བུར་[2]མི་སྦྲར་བས[3]།།
སེམས་ཉིད་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་མཐོང་།། ༢

ཞེས་[4]གསུངས་པས། རྟོག་པ་ཡེ་ཤེས་སུ་སློང་བའི་མན་ངག་དེ་བསྒྲུབས་པས། ལོ་ལྔ་ནས་དུག་ལ་སྦྱར་ཀྱིས་བཏབ་པ་ལྟར་རྟོག་པ་ཡེ་ཤེས་སུ་གྱུར་ནས། ལུས་བྱིས་པ་ལོ་བརྒྱད་པ་ལྟར་སོང་སྔེ་སྐྱེ་བོ་དག་ངོ་མཚར་བར་གྱུར་ཏོ། །དེའི་ཞལ་ནས

ཛེ་ལྟར་རྒྱུ་རྐྱེན་ཚོགས་པ་ན།།
འབྲས་བུ་སྟོང་པར་ག་ལ་འགྱུར།།
དེས་ན་བློ་གྲོས་གསལ་ལྡན་པས།།
དེ་ལ་རབ་ཏུ་འབད་པ་བྱ།། ༣

ཞེས་[5]གསུངས་ཏེ། གླིག་མཁན་གྱི་རྒྱལ་གྱིས་[6]འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་ནས། མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུཀྐམ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

---

1 'བླུག་ནས' པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

2 'རིགས་པའི་སྡོང་བུ་མི་སྦྲར་བར' པེ་ཅི ཤོག ༤༤ གོང དེ་ཉིད།

3 ''རིགས་པའི་སྡོང་བུ་མི་སྦྲར་བར' པེ་ཅི ཤོག ༤༤ གོང དེ་ཉིད།

4 'ཅེས་གསུངས' པེ་ཅི, ཤོག ༤༤ གོང དེ་ཉིད། 'ཞེས' དང 'ཅེས་དེ' ཚིག 'ཅེས' ཕྲད་འདི་ལ་ནོར་བ་མང་བས་སྐབས་ཐོབ་ཤེས་དགོས།

5 'ཅེས་གསུངས' པེ་ཅི ཤོག ༤༤ དེ་ཉིད།

6 'གླིག་མཁན་གྱི་རྒྱལ་གྱིས' ཞེས་པ་པེ་ཅི དཔར་ལ་མི་འདུག པེ་ཅི ཤོག ༤༤ གོང ལྟོས།

༨༩) གུརུཌོཀྐརིཔ།།

གུརུཌོཀྐའི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཌོཀྐ་རི་ཎི་[1]སྟོད་ཁ་ར་པ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། དེ་ཡང་ཡུལ་སྣ་ལི་པུ་ཏྲ་བྱ་བ་ན་དམངས་རིགས་ཞིག་[2]དུས་རྟག་ཏུ་སྟོད་ཁ་ར་ནས་སློང་གིན་ཅི་རྙེད་སྟོད་དུ་འཇུག་པ་ལ། དུས་གཅིག་ན་འཇུག་རྒྱུའི་རྫས་ཅང་མ་ཁུག་ནས་ཞིང་དྲུང་གཅིག་གི་ཚར་འདུག་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[3]བྱོན་ནས་དེ་ལ་བསླངས་[4]པས། (དེ་ས་)བདག་ལ་དེ་རིང་ཁྱོད་ལ་དྲང་རྒྱུའི་རྫས་ཅང་མ་མཆིས་ཟེར་བ་ལ། འོ་ན་ཁྱོད་ལ་ཆོས་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ་དགོས་ལགས་ཏེ་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་མ་ཕྲད་པ་ལགས། ཟེར་བ་ལ[5]། དེས་སྒྲུབ་ནུས་སམ་གསུངས་པས། ནུས་ལགས་ཞུས་པ་དང་། དེས་དཀྱིལ་ཇོར་དུ་དབང་བསྐུར་ནས་བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ། —

“ཀྱི་ཧོཌོཀྐ་རི་པ་ཁྱོད།།
ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྣོད་ནང་དུ།།
རིག་པའི་རྫས་རྣམས་བཅུག་ནས་ནི།།
དེ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྒོམས།། ༡

---

1 ‘ཌོཀྐརིཎི’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘རིགས་ཞིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/ བ པེ་ཅི ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘པ་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/བ 80. པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག དེ་ཉིད།

4 ‘བླངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘ཟེར་བས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/ བ 80. པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག དེ་ཉིད།

ཞེས་[1]གསུངས་ཏེ། དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་དོན་རྟོགས་ཏེ། ལོ་གསུམ་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[2]། དེ་ཡང་སྟོད་ཁུར་གྱིན་བསླང་[3]པས། སྐྱེ་བོ་དག་བླ་མས་ཁུར་བ་འདི་ཅི་ཡིན། ཟེར་བ་ལ།

སྟོང་ཉིད་ཆེན་པའི་སྟོད་ཁུར་ནས།།
བདེ་ཆེན་འབྲས་བུ་སློང་བ་ལགས།།
འདོད་པ་དང་བཅས་རྟོག་རི།།
སྐལ་ལྡན་ཀུན་གྱིས་མ་ཤེས་སམ།། ༣

ཞེས་གསུངས་ནས། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ། རྟོགས་པ་བརྗོད་ [པ་སོགས་མཛད་] ནས་མཚན་རྟོག་རི་ཞེས་གྲགས[4]།།

མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་རྟོག་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

---

1 'ཞེས་གསུངས' ‐ པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག དེ་ཉིད།
2 'ཐོབ་དེ' ‐ པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག ཐོབ་སྟེ། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/བ
3 'བླངས་པས' ‐ པེ་ཅི ཤོག ༨༨ དེ་ཉིད།
4 'གྲགས་ལ' ‐ པེ་ཅི ཤོག ༨༨ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༠/ བ 80.

༥༠) གུརུམེདྷིནི།

གུརུམེདྷིནིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། མེདྷི་ནི་སྤྲེ་ཞིང་པ་ཞེས་བྱ་ལ། དེ་རིགས་(ཀྱི་) དམངས་རིགས་དང་། ཡུལ་སྣཱལིཔུཏྲ་བྱ་བ་ན་ཡིན།

དེ་ཡང་དུས་ལན་གཅིག་[1]ཞིང་ལས་བྱས་[2]པས་ཐང་ཆད་ནས་འདུག་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་འོངས་ནས་ཁྱོད་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་[3]འདུག ཅེས་སྨྲས་པས། དེ་ན་རེ། བདག་ཞིང་ལས་ཀྱིས་ཆད་ནས་འདུག་གིན་གདའ་[4]བྱས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པ་) དེ་ན་རེ། སྡུག་བསྔལ་འདི་འདྲ་བ་ལ་མི་སྐྱོ་འམ། ཆོས་གྱིས། བྱས་པས། དེ་ན་རེ—

བདག་ལ་ཆོས་སུས་སྟེར་ཟེར་རོ།། སྒྲུབ་ནུས་ན་(ཆོས་)ངས་སྦྱིན་གྱིས། གསུངས་པས། ནུས་ལགས་ཟེར་ནས། དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས་དབང་བསྐུར། བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་ངག་བྱིན་ནས་སྒོམ་དུ་བཅུག་པ་ལ། སྔར་གོམས་པའི་དབང་གིས་ཞིང་ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་གཡེངས་ནས་སྒོམ་[5]དུ་མ་འདོད་པ་ལ། དེ་བླ་མ་ལ་བསྙད་[6]པས།

---

1 'གཅིག་ན་ཞིང་ལས' - པེ་ཅི ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།

2 'བྱེད་པས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

3 'བྱེད་ཅིང·····' - པེ་ཅི ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།

4 'ཏ' - པེ་ཅི ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།

5 'གོམ་དུ' - པེ་ཅི ཤོག ༩༥ གོང་ དེ་ཤིག 192. Vol 87.

6 'སྙད་པས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

དེས་དེ་ལ་[1]རང་གི་རྣམ་རྟོག་གི་དམིཊ་པ་དང་མཐུན་པའི་གདམས་[2]ངག་ཕྱོག་སྟེ[3]། 'ཁྱོད་རང་གི་ཤེས་པ་གཡོལ་དུ་གྱིས། ཚོར་བ་བདེ་སྡུག་སྐྱོང་བ་དེ་གླང་དུ་གྱིས། ལུས་ཞིང་དུ་བསྒོམས། ཉིན་མཚན་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བའི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བར་སྒོམས་ཤིག' ཅེས་དང་། འདི་ཉིད་ཆེཊ་སུ་བཅད་དེ་གསུངས་པ་ནི—

རང་གི་རྟོག་པ་ཐོང་གཡོལ་དང་།།
ཚོར་བ་བདེ་སྡུག་གླང་དོར་[4]གྱིས།།
རྣམ་སྨིན་ཕུང་པོའི་ས་གཞི་ལ།།
ཁམས་ཀྱི་ས་བོན་ལེགས་བཏབ་པས།། ༡

བདེ་ཆེན་འབྲས་བུ་རྒྱུན་མི་ཆད།།
ཞིང་ལས་དེ་ལ་བརྩོན་པར་གྱིས།། ༣

གསུངས། (དེ་)བཞིན་[5]དུ་བསྒོམས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་འཁོར་བའི་རྣམ་རྟོག་སྣ་ཚོགས་པ་འགཊ་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་དང་། ཤིང་རྟ་བདུན་ཅམ་གྱི་[6]

---

1 'དེས་རང་གི་' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
2 'གདམ་ངག་སོག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
3 'ཕྱོག་ཏུ།' - པེ་ཅི ཤོག སོགས དེ་ཉིད།
4 "དོར་" ཞེས་པ་ཟུང་ངམ་ཆ་སྐེ་གཉིས་ཀྱི་མིང་ངོ་།།
5 'བཞིན་བསྒོམས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༥ གོང དེ་ཉིད།
6 'བདུན་ཅམ་ནམ་མཁའ' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས། རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། སཱ་ལི་[1]པུཏྲའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཛད་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུམིཧྣིཎིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༡) གུརུཔཾཀཛ།

གུརུཔཾཀཛའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རིགས་བྲམ་ཟེ། དངོས་གྲུབ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ལས་སོ།།

དེ་ཡང་པཾ་ཀ་ཛ་[2]ཞེས་པ་བྲམ་ཟེའི་བུ་ཞིག་[3]ས་ཕྱོགས་དབེན་པར་པདྨའི་འདབ་མའི་ཚལ་[4]དུ་པདྨ་ལས་སྐྱེས་ཏེ[5]། དེ་དང་[6]མི་རིང་བ་ཞིག་ན་པདྨའི་རྫིང་བུའི་འགྲམ་ན་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྐུ་ཞིག་བཞུགས་པ་ལ། པཾ་ཀ་ཛ་དེ་རང་ཉིད་མཧཱདེཝ་ལ་མོས་པས་སྐུ་དེ་མཧཱདེཝ་ཡིན་པར་བསམ་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་མཆོད་པ་བྱས། མི་རྟོག་ཕུལ། ཡུལ་དེའི་ཆོས་ལུགས་ཀྱིས་སྐུ་དེ་ལ་དུས་གསུམ་དུ་མཆོད་པ་བྱས་ནས། མི་རྟོག་དེ་རང་གི་སྤྱི་བོར་ལེན་པ་ཡིན་པས། བར་དེར་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་བྱོན་ནས་(སྐུ་དེ་ལ་)མི་རྟོག་ཕུལ་བས། སྐུ་རང་གི་ལྷངས་ནས་སྤྱི་བོར་བཞག་པས།

1 'སལིཔུཏྲ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༡/ན དེ་ཉིད།

2 'སཾཀཛྙ' - པེ་ཅི ཤོག ༢༥ གོང དེ་ཉིད།

3 'བུ་གཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༢༥ གོང དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༡/ན 81.

4 'ཚུལ་དུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༡/ན ༧ དེ་ཉིད།

5 'སྐྱེས་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༢༥ གོང དེ་ཉིད།

6 'དེར་མི་རིང་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༢༥ དེ་ཉིད།

པཾཀཛཁྲིས་ནས་ངས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་མཆོད་པ་བྱས་པ་ལས་མི་ལེན། འདིས་ལན་གཅིག་བྱས་པ་ལས་ལེན་སྙམ་པ་དང་།

སྐུ་གཟུགས་དེའི་ཞལ་ནས། ཁྱོད་རང་གི་བསམ་པ་མ་དག་པ་ཡིན། ངས་ཅི་ཡང་མ་ཉེས་ཞེས་[1]པའི་སྒྲ་བྱུང་བ་དང་། དེར་དེ་[2]འགྱོད་པ་སྐྱེས་ཏེ། སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་བོར་བླངས་ནས། བདག་རྗེས་སུ་གཟུང་དུ་གསོལ་ཟེར་བས། དེས་ཀྱང་དབང་བསྐུར་ནས་ལྷ་སྤྱོད་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་[གདམས་པ་] འདི་ལྟར་གནང་སྟེ —

“ཐུགས་རྗེས་ཆགས་པའི་བདེ་བ་དང་།།
གདོད་ནས་མ་གྲུབ་གཅིག་ཡིན་ཏེ།།
ཐ་དད་མེད་པར་ཡང་དག་ལྟ།།
འཕགས་པ་ཉིད་ཀྱི་དགོངས་པའོ”།། ༡

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་གོ་ནས་བསྒྲུབས་པས་ཞག་བདུན་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ[3]། འགྲོ་བ་ལ་ཐུགས་རྗེས་གཟིགས་ནས་སྤྱོད་པའི་གདམས་པས་ཕན་མང་དུ་བཏགས་ཏེ། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་པཾཀཛའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘མ་ཉེས་པའི་སྒྲ་བྱུང…’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘དེར་འགྱོད་པ…’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ དེ་ཉིད།

3 ‘ཐོབ་སྟེ།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༥/བ 82.

༥༣) གུརུཀྐཛྙཔཱ།

གུརུཀྐཛྙཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཝྲིནྡྲལཛྲའི་སྡེ་པ[1]། དགེ་སློང་གི་སྡོམ་པ་ཐོབ་པ་ཉམས་པ། རིག་པའི་གནས་ལྔ་ལ་མཁས་པར་གྱུར་པས་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་སྙན་པའི་གྲགས་པས་ཁྱབ་པར་གྱུར་པ་དང་། སློབ་དཔོན་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ལ་འགྲོ་དོན་ལ་གཤེགས་པར་གྱུར་པ་ན། རྒྱལ་པོ་དེཝཔཱལ་[2]བྱ་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་མཐུ་ལས་གྲུབ་པའི་རྒྱལ་[3]སྲིད་ཀྱི་འབྱོར་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མངའ་སྟེ། རང་གི་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་བཅོ་བརྒྱད་དང་། ཀཱམ་རཱུ་པའི་གྲོང་ཁྱེར[4]འབུམ་ཚོ་དགུ་དང་། བཀླ་ལའི་[5]གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་བཞི་སྟེ་བསྡོམ་པས་འབུམ་ཚོ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་ལ་དབང་བྱེད་པའི་རྒྱལ་པོ་དེཝཔཱལའི་ཡུལ་སུལིཔུཏྲའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་སློབ་དཔོན་གཤེགས་ནས་བསོད་སྙོམས་མཛད་ཅིང་། ཤིང་དྲུང་གི་རྩར་གནས་བཅས་ནས་བཞུགས་པ་དང་།

རྒྱལ་པོ་དེཝཔཱལ་ལ་མཆོད་གནས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མངའ་བ་ལ། རྒྱལ་པོས་བཙུན་མོ་ལ་མཚན་མོ་གྲོས་དྲིས་པ། འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་ནི་མི་རྟག་པ། སྲིད་པར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་སྡུག་བསྔལ་བ། འཁོར་བའི་ཆོས་ལ་སྙིང་པོ་མེད་

---

1 'འདིར་ཡུལ་ཝྲིནྡྲལནྡྲའི་སྡེ་པ' - ཞེས་ཅུང་མི་ལེགས་ राहुल० पुरा० नि० 'वारेन्द्र'

2 'དེཝཔཱལ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༨༣/ན པེ་ཅི ཤོག ༨༥ འོག འདིར་གོང་ཀུན་དུ 'དེཝ་པཱལ' ཞེས་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་, राहुल० पुरा० नि० पृ० १२४ ཞེས་པར देवपाल པ་ཞེས་ཉིད་དག་པར་སེམས།

3 'གྲུབ་པ་རྒྱལ་སྲིད' - པེ་ཅི ཤོག ༨༥ འོག དེ་ཉིད།

4 'ཀམ་རིའི་གྲོང' - པེ་ཅི, ཤོག ༨༥ དེ་ཉིད། "ཀཱམ་རཱུ་པ" ཨསྨཱམ་གྱི་མིང་རྙིང་པའོ།།

5 'བཀླགལའི' - སྣར་ཀུན ཤོག ༨༡/བ པེ་ཅི, ཤོག ༨༥ འོག

པར་འདུག་པས། ང་ནི་འདི་དང་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀའི་རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་པ་ཡིན་པས[1]། འོ་སྐོལ་བཟའ་མི་གཉིས་ཆེ་ཕྱི་མའི་ཆེད་དུ་ལམ་རྒྱགས་མཆོད་གནས་དམ་གཅིག་ལ་ཚོར་གསོག[2]བྱས་ན་མི་རུང་ངམ། ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། བཙུན་མོ་ན་རེ། ཉིད་ལ་སྔར་ཡང་མཆོད་གནས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཆིས་ལ། ད་ཡང་མཆོད་གནས་གཞན་པས་ཁྱད་པར་འཕགས་པ་འདུལ་བ་འཛིན་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་གྲོང་མཐའ་ཕ་གིའི་ཤིང་དྲུང་གི་རྩ་ན་ཟས་བསོད་སྙོམས་པ་ཆོས་གོས་དང་ཡོ་བྱད་ངན་ངོན་གྱིས་འཆོས་པ་ཞིག་ཡོད་པས། དེ་ལ་ཉིད་ཀྱིས[3]བཞེས་ཐང་ཆོད་སྣ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་དང་། མུར་བའི་བཅའ་བ་བཅུ་བཞི་དང་། གུན་ཆང་ལ་སོགས་པའི་བཏུང་བ་ལྔ་དང་། མི་མར་གྱི་སྣང་བ་མ་ཡིན་པ་རིན་པོ་ཆེའི་སྣང་བ་དང་། རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་ཀྱང་རུང་གསུངས[4]།

(དེ་)ནས་ནང་པར་འཁོར་དམ་ཅིག་སློབ་དཔོན་སྤྱན་འདྲེན་དུ་བཏང་པས་མ་ཁུག་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་མང་པོ་དང་། བཅས་ཏེ་བྱོན་ནས་ཕྱག་བྱས་ཞབས་དགོས་པའི་གཏམ་མང་པོ་སྨྲས་པས། (སློབ་དཔོན་གྱིས་)ཅི་ལ་འདིར་

1 ‘བྱེད་པ་ཡི།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༨༦ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘བསོགས’ - པེ་ཅི, ཤོག ༨༦ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘ཉིད་ཀྱི’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༣/ན

4 ‘གསུངས་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༦ གོང གསུངས་ནས སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༣/ན 85.

གཤེགས་གསུངས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་ལ་བདག་དད་ནས་མཆོད་གནས་སུ་སྤྱན་འདྲེན་དུ་འོངས་པ་ལགས་ཞེས་[1]ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་ན་རེ —

རྒྱལ་པོའི་རྒྱལ་སྲིད་ནི་སྡིག་(པ་)དང་བཅས་པ་ཡིན་པས་བདག་དེར་མི་འོངས་གསུངས་པས། འོ་ན་གདན་དུ་མི་བཞུགས་ཀྱང་ལོ་གཅིག་ཙམ་བཞུགས་པར་ཞུས་པས་མ་བཞེད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཟླ་བ་དྲུག་དང་། གསུམ་དང་གཅིག་དང་ཕྱེད་དང་ཞག་གཅིག་གཤེགས་པར་ཞུས་པ་ལ་ཡང་། ཁྱོད་སྡིག་ཅན་སྤྱོད་ལམ་བཞི་ལ་[2]སོགས་པ་གང་བྱེད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་སྡིག་པའི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་མི་འོངས་གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ཞག་བཅུ་བཞིའི་བར་དུ་ཡང་ནས་ཡང་དུ་གལ་གྱིས་ཞུས་ཀྱང་མ་བཞེད་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཁྲིས་ཏེ་སྙིང་ལ་ཞེ་སྡང་གི་མེ་འབར་ཏེ། [ཕྱིར་ལོག་སྟེ་]རྒྱལ་པོས་སྨྲས་པ —

"དགེ་སློང་འདིའི་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་[3]སུས་ལེན་ནུས་ན་རྒྱལ་སྲིད་ཕྱེད་དང་། གསེར་ཁལ་གཅིག་སྦྱིར་རོ"།། ཞེས་ཡོངས་སུ་སྒྲོགས་མཁན་བཏང་བ་དང་། ཡུལ་དེ་ན་སྨད་འཚོང་མ་གཡོ་ཅན་མ་[4]ཀུན་གྱི་གཙོ་མོ་ཞིག་ཡོད་པ་(དེ་)ན་རེ། ངས་ནུས་ཞེས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་འོ་ན་ཁྱོད་ཀྱིས་བརྩོན་འགྲུས་དང་འབད་པས་སྒྲུབས་ཤིག་ཅེས་སྨྲས་སོ།།

---

1 'ཤེས་ཞུས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༦ གོང དེ་ཉིད།

2 'བཞི་སོགས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༣

3 'སྤྱོད་པ་དང་སུམ' - པེ་ཅི ཤོག ༨༦ འོག དེ་ཉིད།

4 'གཡོ་ཅན་ཀུན་གྱི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༣/བ 2. 86.

སླད་འཚོང་མ་དེ་ལ་བུ་མོ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་འཛིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་ཀྱིས་མ་གོས་པ་བུད་བཞིན་མཛེས་པ་འགྲོ་ན་སྟབས་སྡུག་པ་སླས་ན་སྐད་སྙན་པ་ལུས་ཤ་རྒྱས་ཤིང་ན་འབུར་མཁྲིཊ་པ་ཉི་མས་མཐོང་ཡང་ཉི་མ་འགྱུལ་མི་འདོད་པ་[1]ཞིག་ཡོད་པ། བདག་གིས་དེ་བཏང་ན་[2]འཁོར་བར་ལྡོག་སྙེ་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དང་འབྲལ་ནུས་སོ་སྙམ་ནས། བུ་མོ་དེའི་མ་དེས་སློབ་དཔོན་གྱི་དྲུང་དུ་[3]ཕྱིན་ནས་ཕྱག་དང་བསྐོར་བ་བྱེད་ཀྱིན་ལོག་སྙེ[4]། དེ་ལྟར་ཞག་བཅུའི་བར་དུ་བྱས་ནས་སྨྲས་པ། བདག་དབྱར་ཟླ་བ་གསུམ་དབྱར་གནས་པའི་[5]འཚོ་བ་སྦྱོར་བའི་ཡོན་བདག་བགྱིད་དོ་སྨྲས་པས། དེ་མ་འདོད་པ་དང་། ཟླ་བ་གཅིག་གི་བར་དུ་ཡང་སྨྲས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་དང་། དྷ་རི་ཀཱ་[6]དགའ་ནས་བཀྲ་ཤིས་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས། ཚིག་ཏུ་ཡང་འདི་ལྟར་སྨྲས་ཏེ།

བུད་མེད་གཡོ་ནི་བརྒྱད་ཅུ་གཅིག།
འདོད་པ་ཡང་ནི་བརྒྱ་[7]འགྱུར་རོ།།

---

1 ‘འགྱུལ་དུ་མི་སྦྱུབ་ཞིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༦ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘བཏང་ལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༦ འོག དེ་ཉིད།
3 ‘བུ་མོ་དེའི་མ་དེས་བྱོན་ནས་ཕྱག’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༦ འོག དེ་ཉིད།
4 ‘ལོག་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༦ དེ་ཉིད།
5 ‘བདག་དབྱར་ཟླ་གསུམ་འཚོ་བ་སྦྱོར་བའི’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༦ འོག 192. Vol 87.
6 ‘དྷ་རིབ་དགའ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༩༣/བ
7 ‘རྒྱན་འགྱུར་རོ’ - པེ་ཅི ཤོག ༩༧ གོང དེ་ཉིད།

ཞེས་སྨྲས་ཤིང་ངས་གསོལ་ན་གླིང་བཞི་ཡང་གསོ་ཞིང་བསྐྱུ་བར་ནུས་ན་དགེ་སློང་འདི་ཅི་སློས་སྐམ་དུ་སེམས་ཤིང་། ངག་ཏུ་ཡང་འདོན་པར་བྱེད་དོ། །

དེའི་སྐབས་སུ་སློབ་དཔོན་ན་རེ་ང་ལ་ཟས་སྐྱོལ་བ་ཀུན་སྐྱེས་པ་ཐོང་། བུད་མེད་མ་གཏོང་[1]ཞིག་བྱས་པས། དེ་བཞིན་དུ་བགྱིའོ་ཞེས་སྨྲས་ནས། ཀ་རའི་ཆུ་དང་འབྲས་ཆན་ཟླ་བ་ཕྱེད་གཉིས་ཀྱི་[2]བར་དུ་སྐྱེས་པ་ཀུན་གྱིས་བསྐྱལ་ནས། དེ་ནས་སྨད་འཚོང་མ་གསོ་ཅན་མ་དེས་བུ་མོ་རྒྱན་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་ནས་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ནོམ་པ་མང་པོ་བསྐུར་ནས་གསོལ་ལྷ་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ་[3]བཏང་ནས། ནགས་ཀྱི་ཚ་ནས་འཁོར་ཀུན་ཕྱིར་ལོག་ཅིག་བྱས་ནས་བཏང་ངོ༌།།

དེ་ནས་བུ་མོས་མས་བསྐྱབས་པའི་གསོ་རྣམས་དྲན་བཞིན་དུ་ནང་དུ་ཞུར་པ་དང་། དགེ་སློང་ཐུར་གྱི་ཟན་སྐྱོལ་མི་[4]ཡིན་སེམས་ནས་ནང་དུ་འོངས་པ་དང་། བུ་མོ་གཞོན་ནུ་མ་རྒྱན་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་ཞིག་[5]མཐོང་ནས། སྐྱེས་པ་ཀུན་གར་སོང་། སྨྲས་པས། བུ་མོས་སྨྲས་པ། དེ་ཀུན་ལ་ལོང་མེད་ན་ངོས་ཅག་མཆིས་སོ་བྱས་ཏེ། དེ་ནས་བུ་མོ་ཡུན་རིང་དུ་འདུག་པ་དང་། ད་སོང་སྨྲས་པས། ད་རུང་

1 ‘མ་བཏང་ཞིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༤༧ དེ་ཉིད།
2 ‘ཟླ་བ་ཕྱེད་ཀྱི་བར་’ སྣར་ཐང་ ཤོག ༤༣/བ ༧ དེ་ཉིད། གོང་གི་ཚིག་དང་བསྡུན་ན་འདི་ཉིད་དག
3 ‘བཅས་ནས’ - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།
4 ‘ཟས་སྐྱོལ་ཡིན་སེམས’ - སྣར་ཐང་ ཤོག ༤༣/ ན 87.
5 ‘བ་ཅིག’ - སྣར་ཐང་ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༤༧ གོང་ དེ་ཉིད།

ནམ་མཁའ་ལ་སྤྲིན་ཁ་དོག་རྣམ་[1]པ་ལྔ་འདུས་ནས་ཆར་འོང་བར་གདའ་བས། དེ་ཆད་པ་དང་མཆིས་སྨྲས་ནས་ཡུན་རིང་དུ་བསྡད་པ་དང་། ཉི་མ་ནུབ་པར་གྱུར་ནས་བུ་མོས་སྨྲས་པ —

དངོས་ལ་ལམ་གྲོགས་མ་མཆིས་པས་གོས་དང་རྒྱན་ལ་བལྟས་ནས་སྲོག་དང་འབྲལ་བར་མཆི་ཞུས་པས། བདེན་ནམ་སྙམ་ནས་དེར་ཉལ་བ་དང་། བུ་མོས་མཚན་ལ་འཛེགས་པ་སྐད་སྨྲས་པས། དེར་བུ་མོ་རྩར་བསྙལ་[2]བ་དང་། ཡུལ་དང་ཉེ་བའི་སློབས་ཀྱིས་དེ་གཉིས་ལུས་འདྲིས་པར་གྱུར་ནས། དེར་སྦྱོར་བ་བྱས་པས་དགའ་བཞི་སྐྱེས་ཏེ་ལམ་བསྒྲོད་པར་གྱུར་ཏོ།།

ནངས་པར་གྱི་དུས་སུ་ཡང་མའི་གམ་དུ་མ་ཕྱིན་པར་དེར་བསྡད་པས། དགེ་སློང་དང་གཉིས་ཀ་ལ་བཟའ་བཅའ་སྐྱེལ་གྱིན་བོར་རོ། །དེ་ལྟར་ལོ་གཅིག་ལོན་པ་དང་། བུ་ཕྲུའུ་ཞིག་[3]བཙས་པར་གྱུར་ལ[4]། (འདིར་)རྒྱལ་པོས་དུས་རྟག་ཏུ་སྐད་འཚོང་མ་ལ་དྲིས་པས། མོས་གསལ་པོ་མ་སྨྲས་ལ། དེ་ནས་ལོ་གསུམ་ལོན་པ་དང་སྐད་འཚོང་མས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨྲས་པ། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ། ཉིད་ཀྱིས་བཀའ་གདམས་པའི་དོན་བསྒྲུབས་ཏེ་མཆིས། ཐུཿ་དགྱེས་པར་མཛོད་ཅིག་ཞུས་པ་དང་། དེ་ལ་རྒྱལ་པོས་བཀའ་སྩལ་པ།

---

1 'ཁ་དོག་ལྔ་འདུས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
2 'གཉལ་བ་དང་།' - སྣྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
3 'ཅིག་རྩས' - སྣྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག ༥༧ འོག དེ་ཉིད།
4 'གྱུར་བ་དང་།' - སྣྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད། ཤོག ༥༧ འོག དེ་ཉིད།

འོ་ན་ཞག་གསུམ་གྱི་དུས་སུ་དགེ་སློང་ངའི་གམ་དུ་འོང་བ་གྱིས། ཞེས་[1]ཁྱོད་ཀྱི་བུ་མོ་ལ་སློས་ཤིག་ཟེར་རོ། །དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ སྭ་ལི་པུ་ཏྲའི་མི་ཀུན་དང་བཅས་དགེ་སློང་གི་གམ་[2]དུ་ཆས་སོ།།

དེར་[3](དེའི་ཚེ་)དགེ་སློང་གིས་བུ་མོ་ལ་ད་འོ་སྐོལ་གནས་འདིར་འདུག་གམ་གཞན་ཞིག་ཏུ་འགྲོ་སྨྲས་པ་ལ། བུ་མོས་སྨྲས་པ། འོ་སྐོལ་གྱི་ལས་ངན་པ་འདི་ལ་མི་ཀུན་འཕྱ་ཡིན་འདུག་པས། མིའི་ཡུལ་དུ་འཁྱམས་ན་ཡང་དགའ་ཟེར་ནས། བུ་མོས་བུ་ཆུང་དང་ཆང་གི་ཀུ་བ་ཁུར་ནས། བཟའ་ཚོ་གཉིས་ཀྱིས་ཕྱིན་པ་དང་། ལམ་བར་དུ་རྒྱལ་པོ་དང་འཕྲད་ནས། (དེ་)གླང་པོ་ཆེའི་སྟེང་ནས་བབས་ཏེ་སྨྲས་པ།

དགེ་སློང་གི་[4]ཚོས་གོས་ནང་ན་ཅི་ཡོད། བུ་མོ་འདི་ཁྱོད་ཀྱི་ཅི་ཡིན། སྨྲས་པས། དགེ་སློང་ན་རེ། གོས་ཀྱི་ནང་བུ་ཆུང་དང་ཀུ་བ་ཡོད། བུ་མོ་འདི་ངའི་ཆུང་མ་ཡིན་སྨྲས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ་ངས་སྤྱན་དྲངས་པའི་དུས་སུ་ཁྱོད་སྡིག་ཅན་གྱི་གམ་དུ་མི་འོང་ཟེར་བ་ལ། ད་ལྟ་ཁྱོད་རང་བུ་དང་ཆུང་མས་ཅི་བྱེད།[5] སྡིག་ཅན་ཅིག་ཁྱོད་རང་འདུག་ཅེས་སྨྲས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ང་ལ་ཉེས་པ་མེད་པས་སྐུར་བ་མ་འདེབས་ཤིག་གསུངས་པས། སླར་ཡང་སྔར་བཞིན་བགྲངས་པས། སློབ་

1 ‘འོ་ན་ཞག་གསུམ་གྱི་དུས་སུ (ང) དགེ་སློང་གི་གམ་དུ་འོང་བ་ཡིན་པས་ཁྱོད་ཀྱིས་བུ་མོ་ལ་སློས་ཤིག་ཟེར་རོ།།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༩༣/ན .

2 ‘དགེ་སློང་ཅན་དུ་ཆས་སོ།།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༩༣ འོག དེ་ཉིད།

3 ‘དེར’ ཞེས་སྒྲུབ་ཀུན་ལ་མེད - སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད། པེ་ཅི, ཤོག ༩༧ གོང དེ་ཉིད།

4 ‘དགེ་སློང་གི་གོས་ཀྱི་ནང’’ - པེ་ཅི, ཤོག ༩༧ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘ཅི་བྱ།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༩༧ འོག དེ་ཉིད།

དཔོན་གྱིས་བུ་ཆུང་དང་ཀུ་བ་ས་ལ་བརྡབས་[1]པས། སའི་ལྷ་མོ་འཇིགས་ཏེ[2]། ས་གས་ནས་ཆུ་[3]བརྡོལ་བ་དང་། ཆུའི་ནང་དུ་བུ་ཆུང་དང་ཀུ་བ་རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུར་སོང་། ཁོང་རང་བདེ་མཆོག་དང་། བུ་མོ་ཡུམ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོར་སོང་ནས། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པའི་ནམ་མཁའི་སྟེང་དུ་བདེ་མཆོག་ཡབ་ཡུམ་དེ་རྗེ་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་པར་གྱུར་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པས་མགྲིན་གཅིག་ཏུ་ནམ་མཁའ་ལ་བལྟས་ནས། སློབ་དཔོན་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ་ཞིས་གསོལ་བ་འདེབས་ཀྱང་། རྡོ་རྗེ་ཁྲོས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་མ་བཞེངས་པ་དང་། སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ས་གས་པའི་ཆུར་ནུབ་ནས་འཆི་བ་ལ་ཐུག་པ་ན་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་སྐད་ཅིག་ལ་དེར་གཤེགས་ནས། ས་གས་པའི་ཆུ་ཞབས་ཀྱིས་བཀག་ནས་རྒྱལ་པོ་དེཨྱཔཱལ་འཁོར་དང་བཅས་པ་དབུགས་དབྱུང་བར་མཛད་དོ། །

དེ་ནས་སླར་ཡང་བླ་མ་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པས། དེས་ཧཱུྃ་སྒྲ་གཅིག་བསྒྲགས་པས་ཆུ་ཐམས་ཅད་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ། །དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པས་བཟོད་པར་གསོལ་བས། འཕགས་པའི་སྐུ་ཡང་དེ་ཉིད་དུ་རྡོའི་རང་བྱུང་དུ་སོང་སྟེ། ད་དུང་ཡང་ཞབས་འོག་ནས་ཆུ་ཁྲུ་རེ་རེ་ཙམ་འབྱུབ་[4]ཟེར་རོ།། དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་དེས་གདམས་པ་གསུངས་པ་ནི —

---

1 'སྟབས་པས' - པེ་ཅི, ཤོག ༦༧ དེ་ཉིད།

2 'འཇིགས་ནས།' - པེ་ཅི, ཤོག ༦༧ དེ་ཉིད།

3 'ཆུ་རྡོལ།' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད།

4 'འདུག་ཟེར' - པེ་ཅི ཤོག ༦༨ གོང 193. Vol 87.

ཇི་སྲིད་སྣང་དང་དག་ཉིད་ཀྱང་།།
རང་གི་ངོ་བོ་གཅིག་ཉིད་ལས[1]།།
འབྲས་བུ་ཡང་ནི་གཉིས་སུ་འབྱུང་།།
དེ་བཞིན་སྤྱང་བྱ་གཉེན་པོ་གཉིས།། ༢

ངོ་བོ་གཅིག་སྟེ་ཐ་དད་མིན།།
མཁས་པས་རྟོགས་ནས་སྤྱོང་མི་བྱེད།།
བྱིས་པ་མི་མཁས་པ་དག་གིས།།
མ་རྟོགས་དག་ལུས་འཁོར་བར་འཁྱམས།། ༣

ཞེས་[2]གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་མི་མོས་པའི་སྒྲོ་བསྐུར་[3]འགགས་ནས་གཅིག་ཏུ་མཐུན་པར་དད་པར་གྱུར་ནས། འགྲོ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལམ་ལ་གནས་པར་གྱུར་ཏེ[4]། ཚིག་ཏུ་ཡང་ཐྲིལ་བུ་པ་ཞེས་བརྗོད་པས་[5]དེ་[6]ཕན་ཆད་སློབ་དཔོན་ཐྲིལ་བུ་པ་ཞེས་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ།།

---

1 'ཉིད་ལ' - སྣྲ་ཀུན ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།
2 'ཤེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༤ གོང དེ་ཉིད།
3 'སྐུར་འགགས' - སྣྲ་ཀུན ཤོག ༨༨/ན 87.
4 'གྱུར་སྟེ' - པེ་ཅི ཤོག ༨༤ གོང དེ་ཉིད།
5 'བརྗོད་ནས' - སྣྲ་ཀུན ཤོག ༨༨/ .ན དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༨༤ གོང དེ་ཉིད།
6 'དེང་ཕན' - པེ་ཅི ཤོག ༨༤ གོང དེ་ཉིད།

བུ་མོ་དེས་སློབ་དཔོན་ལ་སྐྱེ་བ་སུ་མ་ལ་ལན་དྲུག་གི་བར་དུ་ཚུལ་ཁྲིལས་ལ་བར་ཆད་བྱས་པ་ཡིན་ལ། ང་རེས་ཀྱང་[1]ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་བར་ཆད་བྱས་པ་ལ་[2]སློབ་དཔོན་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་གཉིས་འཛིན་གྱི་རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤོར་ནས་རྒྱུད་སྨིན་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ལམ་དུ་སོང་བ་ཡིན་ནོ།།

སྲས་ནི་ཕྱུག་རྫོར་རོ[3]། །བུ་མོ་དེས་ཀྱང་ཐུར་ནས་བསྙེན་བཀུར་བྱས་པའི་ཕན་ཡོན་གྱིས་ད་རེས་དྲི་མ་དག་པ་ཡིན་གསུངས[4]།

དེ་ལྟ་བུའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་སློབ་དཔོན་དྲིལ་བུ་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་གཉིས་ཀ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྷཎྚཔཱ་སྟེ་དྲིལ་བུ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ང་རེས་ཀྱང་བར་ཆད་བྱས་པ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༨/ན.

2 'བྱས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༥།

3 'སྲས་ནི་ཕྱུག་རྫོར་བུ་མོ…' - པེ་ཅི ཤོག ༨༥ འོག དེ་ཉིད།

4 'དག་པ་ཡིན་གསུངས། ཞེས་པའི་ཚིག་གི་གོ་དོན་ལ་དཔྱད་ན། གོང་གསལ་བུ་མོའི་སྐོར་ཀྱི་ཚིག་དེ་བླ་མ་མི་འཇིགས་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དོན་ལོ་ཙཱ་བས་རང་སྐད་དུ་ཕྲིས་པར་སྣང་།

༥༣) གུ་རུ་ཛོ་གི་པཱ།

གུ་རུ་ཛོ་ཀི་པ (ཡོ་གི་པ) འི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཨོཾ་ཏྣྟ[1]་པུ་རི། རིགས་གདོལ་པ། བླ་མ་ཤཝ[2]རི་པཱ། དེ་ཡང་བརྩོན་འགྲུས་ཆེ་ལ་ཤེས་རབ་ཆུང་བར་གྱུར་པ་དང་། དུས་གཅིག་ན་བླ་མ་ཤཝ་རི་པ་དེའི་གམ་དུ་གཤེགས་ནས། དགྱེས་རྡོར་དུ་དབང་བསྐུར་ཏེ[3]། བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་ངག་[4]གནང་ནས་སྒོམ་དུ་བཅུག་པས། དེའི་དོན་མ་ཤེས་ནས་བླ་མ་ལ་དངོས་ཀྱིས་[5]བསྒོམས་པའི་རྗེ་མི་ཐོགས་པས་ལུས་ངག་གི་དགེ་སྦྱོར་བགྱིད་པར་ཞུ་ཞུས་པས། བླ་མས་རྡོ་རྗེ་ཧེ་རུ་ཀའི་བཟླས་པ་བསླབས་ནས་གནས་ཆེན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིར་སོང་ལ་སྐྱབས་ཤིག གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བྱས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་དྲི་མ་དག་སྟེ། མཧཱ་མུདྲའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ[6]། དེས་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། ལོ་ལྔའི་བར་དུ་འགྲོ་དོན་སྣ་ཚོགས་མཛད་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཛོ་གི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ཨོཏྟནྟ་པུ་རི' - སྣབ་ཀུན ཤོག ༡༡ ན 87. པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག དེ་ཉིད། = 'ཨོཏྟ་པུ་རི' ལ་གོ་བ་མི་འགྲིག འདི་ནི 'उडान्तपुरी' ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་བུ་རྒྱན་སྒྱུར་པའི་ཚིག་ཏུ་བྱས་པ = 'ཨོཏྣྟ་པུ་རི' ཞེས་པ་ཡིན་ནོ།།

2 'ཤརཝ' - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག དེ་ཉིད།

3 'དབང་བསྐུར་སྟེ' - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག

4 'གདམས་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག དེ་ཉིད།

5 'སྒོམས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ འོག

6 'ཐོབ་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༡༨ དེ་ཉིད།

༥༨) གུ་རུ་ཙེ[1]ལུ་ཀ་པཱ།

གུ་རུ་ཙེ་ལུ་ཀ་འི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་[2]ཟླ་རྒྱལ་པུ་ར། རིགས་དམངས་རིགས། བླ་མ་མི་ཏྲ་པཱ། དེ་ཡང་གཉིད་ཆེ་བས་དུས་རྟག་ཏུ་གཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་སོང་ནས་བརྩོན་འགྲུས་རྩོམ་མི་ནུས་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་འཁོར་བའི་ཉེས་དམིགས་ལ་སྐྱོ་ནས་ཤིང་རྩ་[3]ཞིག་ཏུ་གནས་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[4]འོངས་ནས་ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ཅེས་གསུངས་པས། ཙེ་ལུ་ཀ་ན་རེ —

བདག་འཁོར་བ་ལས་ཐར་བའི་(ཐབས་)ཆོས་སྒྲུབ་སྙམ་པ་ལ་ཆོས་སྟོན་པའི་སློབ་དཔོན་དང་མ་འཕྲད་ཅིང་། སྒྲིབ་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་གཉིད་ཆེ་བས་བརྩོན་འགྲུས་རྩོམ་མི་ནུས་པས། ཉིད་ཀྱི་བདག་ལ་ཆོས་ཀྱང་སྦྱིན་དགོས་ཤིང་། གཉིད་ཆུང་བའི་ཐབས་ཤིག་[5]མ་བྱིན་ན་ཕན་པ་[6]མེད་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་མི་ཏྲི་པཱ་ན་རེ—

ཁྱོད་ལ་དབང་བསྐུར་ན་གཉིད་ཆུང་ལ་འཁོར་བ་ལས་ཀྱང་ཐར་བ་ཡིན་

---

1 ‘མ་དཔེ་ཀུན་ལས ཙ་ལུས’ - ཞེས་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་། རྒྱ་སྐད་མ་དག་པར་མངོན་ནེ། དོན - ཙེ་ལུ་ཀ ཞེས་པ་ཡིན། ‘चेलुकपा’ राहुल० पुरा० नि० पृ० १२४ ।

2 ‘མཛྲལ་པུར’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༤ འོག སྣར་ཐང ཤོག ༨༨/བ.

3 ‘ཤིང་རྩ་གཅིག’-སྣར་ཐང་ཤོག ༨༨/ བ ༣ 88. ‘ཤིང་རྩ་ཅིག’ པེ་ཅི ཤོག ༨༤ འོག

4 ‘པ་གཅིག་སོང་ནས’-པེ་ཅི ༨༩ གོང ‘པ་ཅིག’ སྣར་ཐང ཤོག ༨༨/བ་ ༣ དེ་ཉིད།

5 ‘ཐབས་ཅིག’ - སྣར་ཐང ཤོག ༨༨/བ ༨ 88. པེ་ཅི, ཤོག ༨༩ གོང

6 ‘ཕན་མེད’ - པེ་ཅི, ཤོག ༨༨ གོང དེ་ཉིད།

གསུངས་ནས། བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར་ཏེ། མི་ཟབ་[1]པའི་རྫོགས་རིམ་རྩ་རླུང་གི་གདམས་[2]ངག་འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ།

སྣང་སྲིད་ཐམས་ཅད་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དུ་བསྡུས་ལ། ལལནཱ་དང་རསནཱ་དབུ་མ་ཨཝདྷཱུཏཱིར[3]ཆུག་ལ། ལུས་དང་དྷཱུ་ཏཱི་མཆོར་བསྒོམས[4]། ཤེས་པ་ངང་པར་བསྒོམས་ལ་མཆོ་ནང་དུ་ངང་པ་འཕྱོ་བར་སྒོམས་ཤིག[5]གཉིད་ཀྱང་ཆུང་ལ་རླུང་དྷཱུ་ཏཱིར་ཚུད་པས་མི་རྟོག་པ་ངང་གི་སྐྱེས་པ་ཡིན། གསུངས་ནས་གདམས་ངག་བྱིན[6]།

དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ལོ་དགུ་ན་དྲི་མ་དག་སྟེ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[7]།

སྣང་སྲིད་ཆོས་རྣམས་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་ལ་འདུས།།
དེ་ཡང་གཟུང་འཛིན་མི་རྟོག[8]རྩ་ནི་གསུམ་དུ་འདུས།།

1 ‘གོང་འོག་ཀུན་དུ “མི་ཟབ་པའི” ཞེས་འདུག་ཀྱང, རྒྱ་དཔེར་ ཨཱགམྦྷཱིར་། ‘आगम्भीर’ ཞེས་ཡོད་སྣང་བས་འདི ‘ཨཱ’ དགག་སྒྲ་མིན་ཞིང་། ‘ཤིན་ཏུ’ དང ‘ཀུན་ཏུ’ ཞེས་པའི་དོན་ཡིན་པས་འགྱུར་མ་དག་པར་སེམས་སོ།། ༥༨ འོག

2 ‘གདམ་ངག’ - པེ་ཅི, ༥༩ །

3 ‘དྷཱུ་ཏིར’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༩ གོང དེ་ཉིད།

4 ‘སྒོམ།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༩ གོང

5 ‘སྒོམས་ན་གཉིད…’ - ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།

6 ‘བྱིན་ཏེ།’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༥༥/བ པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།

7 ‘ཐོབ་སྟེ།’ - སྣར་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། ‘ཐོབ་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།

8 ‘གཟུང་འཛིན་མི་རྟོག’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ གོང དེ་ཉིད།

གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུས་ནས་རྒྱ་མཚོར་བསྒོམས་བྱས་ལ[1]།།

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངང་པ་དེ་ཡི་བཙུད་ཀྱིས་འཆོས[2]།།

ཞེས་གསུངས་ནས། དེས་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གརུཙེལུཀའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༥) གརུགུཊརི་པཱ།[3]

གརུགུཊརིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཊེསུནགར[4]། རིགས་བྲ་པ། དེ་ཡང་རྟག་ཏུ་དོལ་ཁུར་ནས་བྲ་ཛོན་བྱེད་པ་ལ[5]། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་དེའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[6]བྱོན་ནས་རིགས་ཀྱི་བུ། ཁྱོད་ཅི་བྱེད། སླས་པས། བྲ་པ་ན་རེ། འཕགས་

1 ‘གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུག་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངང་པ་དེའི་བཙུད་ཀྱིས་མཚོ་དེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས། དེས་རྟོགས་བརྗོད་དེ་་་། པེ་ཅི ཤོག ༨༩ གོང 193. Vol 87. འདི་མ་དག་པར་མངོན།

2 ‘གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུག་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངང་པ་དེའི་བཙུད་ཀྱིས་མཚོ་དེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས། དེས་རྟོགས་བརྗོད་དེ་་་། པེ་ཅི ཤོག ༨༩ གོང 193. Vol 87. འདི་མ་དག་པར་མངོན།

3 ‘གོཧྣུར’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༥/ན གོདུར པེ་ཅི ཤོག ༨༩། གོརུར - སཱ་སྐྲྀ བཀའ་འབུམ གུཾཊརཝྣ गुण्डरिया, राहुल० पुरा० जि० पृ० १२४ ।

4 ‘ཊེསུནགར’ སྣྲུབ་ཀུན ༨༥ ཊསུནགར པེ་ཅི ༨༩ གོང དེ་ཉིད།

5 ‘པ་ལས’ - པེ་ཅི, ཤོག ༨༩ དེ་ཉིད།

6 ‘ཅིག’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༥/ན ༧ ‘པ་གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༩ དེ་ཉིད།

པ་བདག་ནི་སྔོན་ལས་ངན་པ་བསགས་པས་བྱ་པའི་རིགས་སུ་སྐྱེས་ནས། འཚོ་བའི་ཆེད་དུ་སྲོག་ཆགས་ལ་དུས་རྟག་ཏུ་རྣམ་པར་འཚེ་བར་བགྱིད་པས་སྐྱོ་ཡིན་གདའ་འོ་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་རེ—

"ལས་དང་ལས་ཀྱིས་ཆེ་འདིར་སྡུག།
འདི་བས་ཕྱི་མར[1]ཆེར་སྡུག་ན།།
རྟག་ཏུ་བདེ་བ་དམ་པའི་ཆོས།།
སྒྲུབ་པར་མི་བྱེད་ཅིས[2]ཏེ་ཨང་།།" ༡

ཞེས[3]གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བླ་མ་ལགས་བདག་འདྲ་བའི་སེམས་ཅན་སྡིག་ཅན་ལ་ཐུགས་རྗེ་འཁྲུངས་ནས་གདམས་པ་སྩོལ[4]ན། ཅིས་ཏེ་མི་སྒྲུབ་ཞེར་བས། [རྣལ་འབྱོར་པས་] དེ་ལ་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་མཛད་ནས། དམིགས་པ་གཅིག་པའི་གདམས་ངག་རང་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་པ་དང་མཐུན་པ་བྱིན་ཏེ།

འཇིག་རྟེན་གྱི་སྒྲ་ཐམས་ཅད་བྱའི་སྒྲར་སྒོམས། བྱའི་སྒྲ་དང་རང་གི་ཤེས་པའི་དམིགས་པ་གཉིས་གཅིག་ཏུ་གྱིས་ལ་སྒོམས་ཤིག གསུངས་ལ[5]། [དེ་ཉིད་ཚིགས་སུ་བཅད་དེ་གསུངས་པ་]—

---

1 'ཕྱི་མ་ཆེར' - པེ་ཅི་ཤོག ༧༩ འོག 194. དེ་ཉིད།

2 'ཅི་སྟེ་ཡང' - པེ་ཅི་ཤོག ༧༩ འོག དེ་ཉིད།

3 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི་ཤོག ༧༩ དེ་ཉིད།

4 'པ་རྩོལ་ན' - པེ་ཅི་ཤོག ༧༩ འོག དེ་ཉིད།

5 'གསུངས་པ་ན།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༧༥/ན 89.

དེ་སྒྲ་ལ་སེམས་ཤོར་ནས་སླར།།
ཁ་ཅུག་སྒྲ་སྙན་སྒྲ་གྲགས་དེ།།
སྒྲ་རྣམས་སྒྲ་ཙམ་ཉིད་དུ་གཅིག།
དེ་བཞིན་སྒྲ་དང་སྒྲར་འཛིན་པ།།
ཁྱབ་བྱེད་ཆོས་ཉིད་ངོ་བོ་སྒོམས།། ༣

ཞེས་[1]གསུངས་པས། དེ་ལྟར་བསྒོམས་པ་ན་སྒྲ་གྲགས་སྟོང་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་ཏེ། ལོ་དགུ་ན་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[2]། རང་གི་རྟོགས་པ་བརྗོད་ནས་ལོ་བརྒྱའི་བར་དུ་འཇིག་རྟེན་དུ་བཞུགས[3]། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཛད་དེ[4]། འཁོར་སུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གརུགུཾཊརའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༦) གརུལུཙིཀཔ།

གརུལུཙིཀའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ལུཙིཀ་ནི་[5]ཙོག་འདུག་ཀོག་ལངས་མཁན་ནོ།། ཡུལ་ཤར་ཕྱོཊ་ཀྐིཾགཱལ་ན་བྲམ་ཟེ་ཞིག མི་མང་པོ་ཤི་བས་ཤེས་པ་སྐྱོ་སྟེ། འཁོར་བ་

---

1 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘ཐོབ་སྟེ།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ཤོག ༥༥/ན 89.
3 ‘བཞུགས་ཏེ།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ༥༥ དེ་ཉིད།
4 ‘མཛད་ནས།’ - པེ་ཅི ཤག ༥༩ དེ་ཉིད།
5 ‘ལུཅིཀསྟེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།

ལས་བློ་ལོག་ནས་གནས་དབེན་པ་ཞིག་ཏུ་ཕྱིན་ཏེ་ཆོས་བྱེད་སྙམ་ནའང་གདམས་པ་མེད་པས། ང་ལ་ཆོས་གསུང་བའི་བླ་མ་[1]ཞིག་ནམ་འཕྲད་སྙམ་པ་ན།

དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[2]དེར་བྱོན་པ་ན་[3]དེ་དགའ་སྟེ་ཕྱག་འཚལ་བ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་རེ། ང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས་ཅི་དགོས། གསུངས་པ་ལ། དེ་ན་རེ། བདག་འཁོར་བ་ལས་བློ་ལོག་ནས་ཆོས་ཤིག་[4]བྱེད་སྙམ་པ་ལ། གདམས་ངག་སྟོན་པའི་བླ་མ་མ་རྙེད་ནས། དེ་རིང་བླ་མ་དང་འཕྲད་པས་གདམས་པ་ཞུའོ་ཟེར་བས།

[རྣལ་འབྱོར་པ་]དེས་[དེ་ལ་]བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར་ཏེ། བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་པ་གནང་བས། དེས་འབད་ནས་བསྒོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་[5]བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་དུ་ཆུག་[6]སྟེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས། ལུཙིཀར་གྲགས་ཤིང་། ཞལ་ནས —

“འཁོར་བ་མྱ་ངན་འདས་པ་གཉིས།།
ཐ་དད་ཡོད་པར་མ་མཐོང་སྟེ།།
དེ་ཉིད་ཐར་པ་བདེ་ཆེན་པོ།།

---

1 ‘བླ་མ་གཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/བ ༡ པེ་ཅི ཤོག ༤༩ དེ་ཉིད།
2 ‘པ་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༥/བ ༡ ‘པ་གཅིག’ པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང་།
3 ‘བྱོན་ནས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༥/བ ༡ པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང་།
4 ‘ཆོས་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༥/བ ༣ 90 པེ་ཅི ཤོག ༤༠ འོག
5 ‘བཅུ་གཉིས་ལ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༥ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༤༩ དེ་ཉིད།
6 ‘ཕྱུག་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང 194. Vol 87.

དམན་པར་བཟུང་[1]བས་བསྒྲོད་པར་དཀའ།།" ༡

ཞེས་[2]གསུངས་སོ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་པ་སྟེ[3]། ནམ་མཁའ་ན་ཧོགས་པ་རྣམས་བརྗོད་དེ་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ།།

གུ་རུ་ལུ་ཙི་ཀའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༧) གུ་རུ་ནི་གུ་ཎ།[4]

གུ་རུ་ནི་གུ་ཎའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ནི་གུ་ཎ་སྟེ་ཡོན་ཏན་མེད་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་པཱུ་ར་བ་དེ་ཤ་བྱ་བའི་དམངས་རིགས་ཤིག་[5]གི་ཁྱིམ་ཐབ་ལས་བུ་[6]བཙས་སོ། བཙས་སྟོན་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་ནས་སྐྱིད་བསྲིངས་པ་ན། དེ་གཉིད་དང་ལེ་ལོ་ཆེ་བས་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་གང་ཡང་མ་དྲན་པས། འདི་འདྲ་བའི་ལེ་ལོ་ཅན་གྱི་མི་བྱ་བ་བཟང་ངན་གང་ཡང་མི་འོང་བ་འདི་སྐྱེས་པ་བས་ཤིང་ཐོག་ཅིག་ཡིན་ན་བཟའ་རུ་ཡོད་པ་ལ་ཟེར་ནས་མཐུན་པར་དམོད་པའི་ཚེ། དེ་ཡིད་བྱུང་[7]ནས་ཕྱོགས་དབེན་པ་ཞིག་ཏུ་སོང་ནས་བསྡད་ཡོད་པ་ལ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[8]བྱོན་ནས་(དེ་ལ་)གྲོང་ཁྱེར་

---

1 'གཟུང་བས་' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང དེ་ཉིད།

2 'ཅེས་གསུངས་' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང དེ་ཉིད།

3 'གཤེགས་སོ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ཤོག ༤༥/ཁ

4 'निर्गुणपा' – राहुल० पुरा० नि० पृ० १२४ ।

5 'རིགས་ཞིག' - སྣར་ཐང ཤོག ༤༥ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།

6 'ཐབ་ལ་བུ་བཙས' - སྣར་ཐང ཤོག ༤༥/ཁ 90

7 'ཡིད་ཕྱུངས་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང དེ་ཉིད།

8 'བ་གཅིག' - སྣར་ཐང ཤོག ༤༥/ཁ པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང་།

ནས་བསོད་སྙོམས་ལོངས་ལ་དྲོངས་ཤིག གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བདག་གིས་མི་ལོངས་པར་འདུག་ན་[1]ཟེར་ནས་ས་ལ་འགོག་ཀྱང་མ་ནུས་པ་ལ། དེའི་ཐུགས་རྗེས་བཟའ་བ་བྱིན་ནས་ཁྱོད་ལ་ཡོན་ཏན་ཅི་ཡོད། གསུངས་པས། འཕར་པ་[2] བདག་ནི་ནགུཆ་ཞེས་བཏགས་པ་ལགས་ན་ཡོན་ཏན་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །ཞེས་ཟེར་ནས། ཁ་ཟས་[སོགས་] ཉལ་གྱིན་[3]བཟའ་བཏུང་བྱེད་པ་ན། དེ་ལ་[རྣལ་འབྱོར་པ་] དེས་ཤི་བས་མི་འཇིགས་སམ། བྱས་པས། འཇིགས་ཏེ་[4]ཐབས་མེད་ཟེར། སྒྲུབ་པར་ནུས་ན་ཐབས་སྦྱིན་གྱི་གསུངས་པས། ཉལ་གྱིན་བྱུར་ཡོད་ན་ནུས་ལགས་ཟེར་བས། དེས་དབང་བསྐུར་ནས་སྣང་སྟོང་ཟུང་འཇུག་གི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་སྟེ།

གཟུང་འཛིན་གང་ཡང་མ་གྲུབ་པར།།
མ་རྟོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི།།
སྡུག་བསྔལ་གྱིས་མནར་སྙིང་རེ་རྗེ།།
དེ་ཡང་གདོད་ནས་མ་གྲུབ་སྟེ།། ༡

སྣང་དང་སྟོང་པ་དབྱེར་མེད་པའི།།
འོད་གསལ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེས་ནས་ཀྱང་།

---

1 'བདག་མི་ལོང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༥ /བ
2) 'རྣལ་འབྱོར་པ' - པོ་ཏི ཤོག ༥༠ གོང་།
3 'ཤུལ་གྱིན་བཟའ་བཏུང་བྱེད' - པེ་ཏི ཤོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།
4 'འཇིགས་སྣེ' - པེ་ཏི ཤོག ༥༠ འོག

སྒྲོན་པ་ལྷ་བུའི་སྤྱོད་པ་ཡིས།།
གྲོང་ཁྱེར་དག་ཏུ་རྒྱུག་པར་བྱ།། ༢

ཞེས་[1]གསུངས་པ་ལྟར་དེས་ཀུང་བསོད་སྙོམས་བྱེད་ཅིང་བསྒྲུབས་[2]པས། འོད་གསལ་ཟུང་འཇུག་གི་རྟོག་པ་སྐྱེས་ནས། གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཕྱིན་ནས་མི་རྣམས་སུ་ཡིན་ཟེར་བ་ལ། དེས་མི་ཀུན་[3]ལ་བལྟས་ཀྱིན་ངུས་པས། མི་རྣམས་ཀུང་འདི་འདྲ་བ་སྙིང་རེ་རྗེ་ཟེར་ནས་ངུ་བར་བྱེད།

གདུལ་བྱ་སྣོད་དང་ལྡན་པ་ལ་སྣང་སྟོང་དབྱེར་མེད་ཀྱི་ལམ་སྟོན་པར་བྱེད་དོ།། དེ་ནས་རྒྱ་མཚོར་གྲུ་ཞིག་པ་བཞིན་འཁྲུལ་པའི་རྒྱ་ཐམས་ཅད་ཞིག་ནས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ཅིང་། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུནགུཎཔའི་[4]ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༨) གུརུཛཡཱནཛྷ།[5]

གུརུཛཡཱནཛྷའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཀླིཾ་(པཾ)ག་ལར་རྒྱལ་པོ་ཞིག་ལ་བྲམ་

1 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།
2 ‘སྒྲུབས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།
3 ‘མི་དག’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག
4 ‘ནགུཎ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང སྣྲུབ་ཀུན ༨༥/ བ ‘निर्गुणपा’ - राहुल० पुरा० नि० पृ० १२४ ।
5 ‘ཛྲཡཱནཛྷ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ གོང ‘ཛཡཱནཛྷ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༥ དེ་ཉིད།

ཟེའི་བློན་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ།། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་བྲམ་ཟེ་(དེ་)ཆོས་སྒོར་ཞུགས་ནས། བཀའ་གསང་སྔགས་[2]ཀྱི་ཆོས་གསང་གིན་བསྒྲུབས་པས། བྱིན་རླབས་བྱུང་བ་སུས་ཀྱང་མ་ཚོར་བ་དང་། དུས་རྒྱུན་དུ་གཏོར་མ་མང་དུ་བཏང་བས། བློན་པོ་གཞན་གྱིས་མ་ཐེག་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་པས། རྒྱལ་པོས་ཀྱང་དེ་བཙོན་དུ་བཟུང་སྟེ། ལྕུགས་སུ་བཅུག་པ་ན། དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་

ལྷའི་རྫས་ཞལ་[3]ཟིད་ལོངས་པ་ཆུད་ཟོས་སུ་བཅུག་པ་མེད་པས་[བདག]ལྷར་ལས་ཐོང་ཞིག་[4]བྱས་ཀྱང་རྒྱལ་པོས་མ་ཉན་པ་ན། དེའི་ཕྱི་དེར་གཏོར་མའི་དུས་སུ་བྱ་དག་[5]འོངས་པས། དེ་མེད་པར་རྒྱལ་པོའི་ཁང་པར་བྱ་རོག་[6]དག་འདུས་ནས་དམག་བྲངས་ཏེ། མི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མགོ་བཏོགས་[7]འཚོགས་པར་བྱེད་པས། དེ་ན་བྱ་སྐད་ཉན་ཤེས་པ་ཞིག་[8]གིས་ཉན་པས།

ངེད་ཀྱི་ཕ་མར་གྱུར་པའི་བྲམ་ཟེ་རྒྱལ་པོས་བརླམས་པ་ཡིན་ནོ་ཟེར་ནས། དེ་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། དེ་ལྟ་ན་ཁོ་བདེན་ཟེར་ནས། བཟོད་

---

1 'ཡོད་པས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/ན 91 པེ་ཉི ཤོག ༥༧ གོང་།
2 'གསང་སྔགས་གསང་གིན་བསྒྲུབས།' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/ན .
3 'ཚིད་ལོངས་ཆུད་ཟོས་སུ' - པེ་ཉི ཤོག ༥༧ གོང
4 'ཐོང་ཅིག' - པེ་ཉི ཤོག ༥༧ གོང
5 'བྱ་རོག་དག' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦ དེ་ཉིད།
6 'བྱ་དག་འོངས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦ ན.
7 'ཐམས་ཅད་མགོ་ལ་རྟོག་པ་དང་།' - པེ་ཉི ཤོག ༥༧ གོང དེ་ཉིད།
8 'ཤེས་པ་ཅིག་གིས' - པེ་ཉི ཤོག ༥༧ གོང དེ་ཉིད།

པར་ཕུལ་ཏེ། །བྱ་དག་ལོག་ཏུ་རྒྱུག་ཅིག་ཟེར་བས། དེས་བྱ་དག་ལ་བསླུས་ནས་བྱ་ལོག་པས་རྒྱལ་པོ་ཆེར་དད་དེ། ཉི་མ་རེ་ལ་འབྲས་ཁལ་ཉི་ཤུ་གཏོར་རྒྱན་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་ལོ།།

དེ་མན་ཆད་བླ་མ་ཛཡཱནནྡ་[2]ཞེས་གྲགས་ལ། དེའི་ཞལ་ནས—

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ།།
བླ་མའི་དྲིན་གྱིས་ཡང་དག་རྟོགས།།
བདེ་ཆེན་མཆོག་གི་ཞོན་པོ་བྱེད།།
འཁོར་བའི་འཁོར་དུ་ང་མི་གནས།། ༡

གནས་ལུགས་རང་གསལ་རྒྱལ་པོ་དེས།།
གཟུང་འཛིན་གཉིས་ཀྱི་དགྲ་ཡང་བཅོམ།།
འཁོར་བའི་བདེ་ལ་ཆགས་པ་མེད།།
ཀྱེ་ཧོ་མ་རྟོགས་སེམས་ཅན་རྣམས།། ༣
ཀྱེ་མ་ཞེས་ནི་ཛ[3]ཡཱནནྡ།།

ཞེས་གསུངས་ཏེ། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ། ལོ་བདུན་བརྒྱ་ན་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཛཡཱནནྡའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘བཟོད་པར་ཕུལ་ནས’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༨༦/ བ དེ་ཉིད།
2 ‘ཛྙཡཱནྟི’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ གོང
3 ‘ཛྙཡཱནྣྡ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ གོང ‘ཛཡནྣྡ’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༨༦/བ.

༥༩) གུརྩཙཔཪིཔཱ།

གུརྩཙཔཪི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཙམཔཱ་ཀ་ཡིན། རིགས་ཁུར་བ་འཚོང་པའོ། །དེ་ཕོངས་ནས་གོས་ཀུང་ཀཏུལ་ལས་གོན་རྒྱུ་མེད་པ་ཞིག་ཁྱིམ་བདག་ཕྱུག་པོ་ཞིག་[2]ནས་[3]ཁུར་བ་བླངས་ཤིང་། བཙོངས་ནས་དེའི་ཁེས་འཚོ་བར་བྱེད་པའི་ཚེ། དེས་ཁུར་བ་མར་ཁུར་ཚོས་(བཙོས་)པ་མ་གཙོངས་པར་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཟོས་པས། ཕྱེད་ཙམ་ཟོས་ཟིན་པ་ན། འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་དགེ་སློང་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས་དེའི་གམ་དུ་བྱོན་པ་ན། དེ་དད་པ་སྐྱེས་ནས་ཕྱུག་བྱས་ཏེ་ཁུར་བ་ཕྱེད་པོ་དེ་དགེ་སློང་དེ་ལ་དྲངས་པས། དེ་ན་རེ།

ཁྱོད་ཀྱིས་འདི་གང་ནས་ཁུགས་པ་[4]ཡིན་གསུངས་པས།[5] དེས་ཀུང་བདེན་པར་སྨྲས་པ་དང་། [འཕགས་པས་] འོ་ན་འོ་སྐོལ་གཉིས་ཡོན་མཆོད་དུ་འདུག་པས་[6]ངས་ཡོན་བདག་ལ་ཆོས་ཤིག་[7]བྱ་གསུངས་པས། དེས་ཀུང་མཆྱལ་བྱས་ཏེ་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་བས། སྤྲུལ་པས་ཀུང་སྐྱབས་འགྲོ་སེམས་བསྐྱེད་

---

1 'མཙརིཔ' - པེ་ཅི ༥༧ གོང 'སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/བ. 'पर्चरीपा' - रा० नि० पृ० १२८ ।

2 'ཕྱུག་པོ་གཅིག་ནས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/བ

3 'ཕྱུག་པོ་ཅིག་ནས་འཁུར་བ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ གོང

4 'ཁུག་པ་ཡིན' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/བ ༦།

5 'གསུངས་ནས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/ བ དེ་ཉིད།

6 'འདུག་པ' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༧ འོག 914

7 'ཅིག་བྱ' - པེ་ཅི. ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦/ བ.

བྱིན་རླབས་བྱས་ནས། ཡི་གེ་དྲུག་མའི་གདམས་པ་གནང་བས། དེས་ཀྱང་བཟླས་པས་བསོད་སྙོམས་ཀྱིས་འཚོ་བ་[1]བྱས་ཏེ་སྒྲུབ་[2]པའི་དུས་སུ། ཐར་ཀྱི་ཁ་རུ་བའི་བདག་པོ་དེ་འོངས་ནས། དེའི་རིན་བྱིན་ཟེར་བ་ལ[3]། དེས་ང་ལ་ཅང་མེད་ན་བྱས་པས[4]། དེ་བཟུང་ནས་བརྡུངས་པས། དེའི་ཁ་[5]ནས་ང་གཅིག་པུས་མ་ཟོས་སློབ་དཔོན་དང་ངེད་གཉིས་ཀས་ཟོས་ནས་ང་གཅིག་པོ་བརྡུང་ངམ། བྱས་པས། དེ་བཞིན་དུ་སྒྲ་དེ་རྩིག་པ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཀྱང་བྱུང་བས་ངོ་མཚར་ནས། བདག་གི་ཁར་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཁྱེར་ཏེ་སོང་ཟེར་ནས་བཏང་ངོ་།།

དེས་ཀྱང་ལྷ་ཁང་ཞིག་ཏུ་ཕྱིན་ནས་རང་གི་ཡི་དམ་གྱི་རྟེན་ཞིག་ཡོད་པ་ལས་ཁར་བའི་རིན་བླངས་པས། [དེས་དེ་ལ་] གསེར་ཏོ་ལ་[6]བརྒྱ་བཏད་པ་ན། དེ་ཁར་ནས་ཐར་ཀྱི་ཁྲིམ་བདག་ལ་ཁར་བའི་རིན་དུ་གཏད།

ཐར་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་བག་ཅིག་ཡོད་པ་དེས་དག་ནས། ངའི་བླ་མ་འཕགས་པ་ཡིན་པར་འདུག་སྙེ[7]། རི་པོ་ཏལར་འགྲོ་བར་ཆས་ཏེ་ཕྱིན་པ་ན། བར་དུ་ཆེར་

1 'འཚོ་བ་དང་བྱས་ཏེ།' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༧ འོག

2 'བསྒྲུབས་པའི'-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༦ དེ་ཉིད། 'སྒྲུབས་པའི' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

3 'ཟེར་པས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ༨༦/བ

4 'བྱ་བ་ལ' - པེ་ཅི་ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ༨༦ དེ་ཉིད།

5 'ཞལ་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

6 'ཏོ་ལི' - པེ་ཅི་ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད།

7 'སྙམ་ཏེ།' - པེ་ཅི, དེ་ཉིད།

མའི་ནགས་[1]ཤིག་ནས་ཀང་པ་ལ་ཆེར་མ་ཟུག་ནས་སྡུག་བསྔལ་ཆེན་པོ་བྱུང་སྟེ། འཕགས་པ་ལ་སྨྲེ་སྔགས་ཆེན་པོ་ཡང་[ཡང་]བཏང་བས། འཕགས་པས་ཀྱང་ཞལ་དངོས་སུ་བསྟན་ཏེ།

ཁྱོད་ཀྱི་བླ་མ་ང་ཡིན་པས། ད་ཁྱོད་རང་དོན་གཉེར་བར་མ་བྱེད་པར་ཕྱིར་ལོག་ལ་གདུལ་བྱ་རྣམས་དྲང་བར་གྱིས་ཤིག གསུངས་པས། དེ་དགའ་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ཏེ་ཙམཔྰཀར་ཡང་[2]བྱོན་ནས[3]། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐོང་བས་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། གདམས་པ་ཞུས་པས། སྣང་སྟོང་དབྱེར་མེད་ཀྱི་གདམས་པ་ཡང་གསུངས[4]།

དེ་མན་ཆད་བླ་མ་ཙཔྰ[5]རིཔ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་ཏེ། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྱུརྩཔརིཔྰའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘གཅིག་ནས’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༧/ན

2 ‘ཙམཔཀཡེ་རེ་བྱོན་པས’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༧ འོག 194. Vol 87

3 ‘ཙམཔཀཡེ་དེ་བྱོན་པས’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༧ འོག 194. Vol 87

4 ‘གསུངས་ཏེ’ སྣྲུབ་ཀུན ༤༦/ན པེ་ཅི ༥༧ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘བཙརི་པྰ་ཞེས་ཡིག་ནོར་ཏེ’ - དོན ‘ཙཔཊིཔྰ’ ཡིན་ལ དེའི་ཟུར་ཆག ‘ཙཔརིཔྰ’ ཡིན་པར་སྣང་།

༨༠) གརུཙམྤ[1]ཀ།

གརུཙམྤཀའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཙམྤཀ་[2]ཡིན་ཞིང་།མི་དོག་གི་མིང་ལ་བཏགས་པ་ཡིན་ནོ། དེ་ར་[3]རྒྱལ་པོ་ཞིག་[4]ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་འབྱོར་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་ཤིང་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱིས་ཕྱུལ་བ་མེད་པ་ཞིག་[5]ཡོད་ལ། དེ་ལང་ཆོས་དྲིགས་རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་བདེ་བས་མྱོས་ནས་ཕྱི་མ་མི་དྲན་པར་གནས[6]།

དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྒྱལ་པོ་དེ་མི་དོག་ཙམྤཀའི་སྐྱེད་མོས་ཚལ་གྱི་ནང་དུ་མི་དོག་གི་ཁང་པ་ལིགས་པར་བྱས[7]། འདུག་པའི་སྟན་དང་། ཐོས་ཀྱང་མི་དོག་ཙམྤཀ་ཁ་དོག་སེར་པོ་དྲི་ཞིམ་པོ་ལས་བྱས་ཏེ[8]། དེ་ལྟ་བུའི་ནང་ན་གནས་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[9]གིས་དེ་ལ་བསོད་སྙོམས་བསླངས་པས། རྒྱལ་པོས་ཀྱང་ཞབས་བཀྲུས་སྟན་བསྟབ་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས། བཞིས་ཆབ་དྲངས[10]། དེས་ཆོས་གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དེ་མཆོད་གནས་སུ་ཞུས་ཏེ་བཞུགས་པ་ན། རྒྱལ་པོ་ན་རེ།

---

1 'ཙམཔཀ' - པེ་ཅི་ཤོག ༥༣ གོང སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༦/ན 'चम्पकपा' - रा० पु० नि० पृ० १२४ ।

2 'ཙམཔཀཔ' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༦/ན

3 'དེ་ལ་རྒྱལ་བུ་གཅིག་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧/ན པེ་ཅི་ཤོག ༥༣ གོང་།

4 'དེ་ལ་རྒྱལ་བུ་གཅིག་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༦/ན པེ་ཅི་ཤོག ༥༣ གོང་།

5 'པ་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ཤོག དེ་ཉིད།

6 'མི་དྲན་པ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན ༨༦ དེ་ཉིད། མི་དྲན་ལ། པེ་ཅི་ཤོག ༥༣ གོང

7 'བྱས་ཏེ' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་དེ་ཉིད།

8 'བྱས་པ།' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ཤོག དེ་ཉིད།

9 'གཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི་ཤོག དེ་ཉིད།

10 'ཆབ་དྲངས་ཏེ་དེས…' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༨༧ དེ་ཉིད།

རྣལ་འབྱོར་པ་ཡུལ་མང་པོར་བྱོན་ན། མི་ཏོག་འདི་འདྲ་བ་དང་བདག་འདྲ་བའི་རྒྱལ་པོ་གཞན་ན་གཟིགས་སམ། ཞུས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པ་) དེ་ན་རེ—

མི་ཏོག་ཙམ་པ་ཀ་ནི་དྲི་མཆོག་ལྡན་གྱུར་ཀྱང་།།
རང་གི་ལུས་ལས་དྲི་མ་སྣ་ཚོགས་དེ་མ་ཡིན།།
རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་སྲིད་གཞན་ལས་ཁྱད་པར་འཕགས་གྱུར་ཀྱང་།།
འཆི་བར་གྱུར་བའི་ཚེ་ན་གང་ཡང་མེད་པར་འགྲོ། ༡

ཞེས་[1]གསུངས་པས། རྒྱལ་པོས་བརྟགས་པས་ལུས་ལ་ཞེན་པ་རང་ལོག་ཏུ་སོང་ནས། སླར་དེ་ལ་གདམས་པ་ཞུས་པས། (རྣལ་འབྱོར་པ་) དེས་དང་པོར་ལས་རྒྱུ་འབྲས་བསྟན། དེ་ནས་དབང་བསྐུར་ཏེ་གདམས་པ་ལམ་བསྐྱེད་རྫོགས་གནང་བས། དེའི་རྣམ་རྟོག་མི་ཏོག་ལ་སོགས་པ་ལ་སོང་[2]ནས་སྒོམ་དུ་མ་འདོད་པ་ལ། དེས་རྟོག་པ་ལམ་ཁྱེར་གྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ་། །

སྣང་ཙམ་ཉིད་ནས་སྟོང་པ་ན།།
བླ་མའི་མན་ངག་མི་ཏོག་ལ།།
རང་སེམས་བུང་བ་[3]གནས་པར་བྱེད།།
ཟག་མེད་འདུད་རྩིའི་སྙིང་རྩི་གསུམ།། ༢

1 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
2 'མི་ཏོག་ལ་སོང་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ གོང དེ་ཉིད།
3 'རང་སེམས་ཕུང་པོ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།

ཏོ་བོ་གཅིག་ཏུ་བསྒོམ་པ་ན།།
འབྲས་བུ་བདེ་ཆེན་འབྱུང་བར་འགྱུར།།
དྲུག་པ་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་གྱི།།
བཀའ་ཡིན་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་སྒོམས།། ༣

ཞེས་གསུངས་པ། དེས་ཀུང་ལོ་གཅུ་གཉིས་སུ་[1]བསྒོམས་པས[2]། གདམས་ངག་དང་རང་སེམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་ཉམས་མྱོང་གསུམ་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་པས་[3]གྲུབ་པ་ཐོབ[4]། དེ་མན་ཆད་མཚན་ལ་ཙམྤཀཔྤ་བྱ་བར་གྲགས[5]། བཙུན་མོ་ལ་སོགས་པ་འཁོར་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་ཆོས་བཤད་ནས། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུཙམྤཀའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༦༧) གུ་རུ་ཀྵི་ཀཱ་ན་པཱ།

གུ་རུ་ཀྵི་ཀཱ་ན་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀྵི་ཀཱ་ན་པཱ་[6]སྐྱེ་བསོད་སྙོམས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་སྣ་ལི་པུ་ཏྲ་ར་ན་དམངས་རིཏ་ཞིག་[7]ནོར་རྫས་དང་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད

---

1 ‘བཅུ་གཉིས་བསྒོམ’ - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༤༧/བ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘བསྒོམས་པ་ན།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག སྣུབ་ཀུན ༤༧/བ 94.
3 ‘རྟོགས་པའི་’ - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༤༧/བ ‘རྟོགས་ནས’ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
4 གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ་ - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༤༧/བ ‘རྟོགས་ནས’ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
5 ‘གྲགས་ལ’ - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༤༧/བ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
6 ‘ཀྵི་ཀན་སྟེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
7 ‘རིགས་ཞིག’ - སྣུབ་ཀུན ༤༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག

ཉམས་ནས་གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བསོད་སྙོམས་བྱེད་པ་ལས། དུས་གཅིག་ནས་བསོད་སྙོམས་མ་རྙེད་ནས། སེམས་ཁོང་དུ་ཆུད་ཅིང་། དབེན་པ་ཞིག་དུ་དབྱུད་པའི་དུས་སུ་ཊཀྐི་མ་ཞིག་བྱོན་ནས། ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་བདེན་པར་སྨྲས་པ་ན།

དེས་ང་ལ་འདོད་པ་རྙེད་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བདག་ལ་ཞུ་ཟེར། འོ་ན་ཡོན་ཅི་ཡོད། གསུངས་པས། (དེས་)སྙིང་འོག་གི་སོ་རེ་རེ་བཞག་ནས་གཞན་རྣམས་བརྟན་དེ་ཕུལ་བས། ལྷག་པའི་བསམ་པ་གཡོ་སྒྱུ་མེད་པར་མཁྱེན་ནས་(དེ་ཉིད་དུ་)དབང་བསྐུར[1]། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཟུང་འཇུག་གི་གདམས་པ་གནང་། (དེ་)ནས་དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ལོ་བདུན་ན་བདེན་པ་མཐོང་།[2] ཟག་མེད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་རྒྱུད་ལ་སྐྱེས་ནས་[3]རང་གི་རྟོགས་པ་བརྗོད[4]།

གདུལ་བྱའི་དོན་དུ་[5]གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བྱོན་ནས་ཚིཀྐནཔཱ་[6]ཞེས་བྱ་བར་གྲགས[7]། ལོ་མང་པོ་ན་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཚིཀྐན་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'བསྐུར་དེ' - སྒྲུབ་ཀུན ༨༨/ན པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
2 'མཐོང་ངོ།' - སྒྲུབ་ཀུན ༨༤ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
3 'སྐྱེས་ནས་འདུལ་བྱའི་དོན…' - སྒྲུབ་ཀུན ༨༨/ན
4 'བརྗོད་དེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
5 'དོན་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༡ འོག
6 'ཚཀྐན་ཞེས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
7 'གྲགས་དེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༤/ན པེ་ཅི ཤོག ༡༣ འོག དེ་ཉིད།

༨༣) གུརྡྷི་ལི་པཱ།

གུརྡྷི་ལི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་སདཔུ་རི་ན་མར་ནག་འཚོང་བས་འཚོ་བ་ཞིག་[1]ཡོད་པ་ལ[2]། དེར་མར་ནག་[3]བཙོང་བས་གར་བྱ་བར་འཚོང་ལེགས་ཏེ། འབྱོར་པ་རྒྱས་ནས་[4]རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ་དང་མཉམ་པའི་འབྱོར་པ་ཐོབ་ནས་[5]འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་ལོངས་སྤྱོད་པར་བྱེད། དེ་ཡང་ཚོད་སྔ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞི་དང་། བཟའ་བ་བཅུ་གཉིས་དང་། བཏུང་བ་ལྔ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་རྒྱལ་པོས་མ་ཚོར་བར་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་འདུག་པའི་དུས་གཅིག་ན། བཙིད་ཧྐཏན་བྱ་བ་དེར་བྱོན་ནས་དེ་ལ་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་། ཐར་པའི་སྟགས་པ་བརྗོད་པས[6] (དེ་)དད་པ་སྐྱེས་ཏེ། ཆོས་ཞུས་ནས་མཆོད་གནས་སུ་བྱས་པ་ན།

དུས་གཅིག་(དེ་)མར་ཁའི་སྦྱོར་བ་བྱེད་པ་(པཙིད་)དེས་[7]གཟིགས་པས། དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྐལ་བ་ནས་བསྐལ་བར་དེ་བཅིར་བས་ཐར་པ་མི་འབྱུང་གསུངས་

---

1 'འཚོ་བ་ཅིག་' - སྣར་ཐང་ཤོག ༤༨/ན། པ་གཅིག པེ་ཅི ༥༣ གོང་།
2 'ཡོད་ན་ལས' - སྣར་ཐང་ཤོག ༤༨/ན། པ་གཅིག པེ་ཅི ༥༣ གོང་།
3 'འཚོང་བས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ གོང 195. Vol 87
4 'བ་རྒྱས་ཏེ' - སྣར་ཐང་ཤོག ༤༨/ ན པེ་ཅ ཤོག ༥༣ གོང་།
5 'དེ་འདོད་པའི' - སྣར་ཐང་ཤོག ༤༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
6 'བརྗོད་ནས' - སྣར་ཐང་ཤོག ༤༨ དེ་ཉིད།
7 'དེ་གཟིགས' - སྣར་ཐང་ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

པས། (དེ་ན་རེ་)ལྷ་མ་(ལགས་)དེ་ལྟར་ན་ཐར་པ་འབྱུང་བའི་ཐབས་ཞུ་ཟེར་བས། དེས་དབང་བསྐུར་ནས་མཆན་མ་རང་གསལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་སྟེ།

"རང་ལུས་དྲིལ་གྱི་གོང་ཉིད་ལས།།
རྣམ་རྟོག་མར་ཁ་བཅིར་ནས་ཀྱང་།།
སེམས་ཉིད་སྣོད་དུ་བླུགས་བྱས་ཏེ།།
སྣང་སྟོང་དབྱེར་མེད་སྦྱོང་བུ་ལ།། ༡

རིག་པ་ཡེ་ཤེས་མེ་སྦར་ནས།།
མ་རིག་མུན་པ་སྤངས་གྱུར་ཏེ།།
ཐར་པའི་བདེ་བ་བླ་ན་མེད།།
ཟག་མེད་བདེ་ལ་གནས་པར་འགྱུར་"།། ༢

ཞེས་གསུངས་ནས། དེས་ཀྱང་གུས་པར་བསྒོམས་པས། ལོ་དྲུག་ན་བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་དུ་ཆུད་དེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་རང་ལུས་ལས་འོད་འཕྲོས་པས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གང་བར་བྱས་པ་ན།། དེ་གཞན་གྱིས་མཐོང་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་བསྙད་པ་ན། རྒྱལ་པོས་བལྟར་བཏང་བས་དེ་ལྟར་འདུག་པ་དང་། དེས་ཀྱང་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་པའི་རྒྱལ་པོ་ང་དང་མཉམ་པ་འགའ་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་[2]ཤིང་། ཐམས་ཅད་དད་པ་ལ། དེ་དག་གི་

1 'བྱས་པ་དེ'-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༨/ཁ 90 'ཐམས་ཅད་གང་བར་བྱས་པ་དེ པེ་ཅི ཤོག ༤༣ གོང
2 'གསུང་ཞིང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༨/ ཁ པེ་ཅི ཤོག ༤༣ གོང དེ་ཉིད།

ཁམས་དང་བག་ལ་ཉལ་དང་མཐུན་པའི་གདམས་[1]ངག་གསུངས་ནས ལོ་དུ་མ་ནས་འཁོར་མང་པོ་དང་བཅས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

†གུ་རུ་ཀྲི་ལི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༦༣) གུ་རུ་ཀུམྦྷ་རི་པཱ།[2]

གུ་རུ་ཀུམྦྷ་རི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀུམྦྷཀཱ་རི་བྱ་བ་བོད་སྐད་ལ་རྫ་མཁན་བྱ་བ་ཡིན[3]། ཡུལ་ཛོམན་ཊྲཱི་བྱ་བ་ན་གང་ཟག་རྫ་མཁན་ཞིག་དུས་རྟག་པར་རྫའི་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བའི་ཚེ། དེ་ལ་དེ་སེམས་སྐྱོ་ནས་ཡོད་པ་ལ། དེའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[4]འོང་ནས་བསོད་སྙོམས་བསླངས་པས། དེས་ཀྱང་བསོད་སྙོམས་བྲངས་ནས།

བླ་མ་ལགས། བདག་གིས་འདི་འདྲ་བའི་ལས་རིམ་གཅིག་བྱས་པ་ལས་ཕན་པ་ཆེན་པོ་མ་བྱུང་ཞིང་། ལས་འདི་ཟད་པའམ་ཟིན་པའི་མཐའ་ལར་མ་བྱུང་

1 'གདམ་ངག' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ གོང

† 'ཀྲི་ལི་པ' - ཞེས་སྣར་ཀུན དཔེ་གཉིས་དང་། པེ་ཅི - དཔར་མའི་མ་དཔེ་རྣམས་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་ राहुल० पुरा० नि० पृ० १२४ ནང་ मलिपा ཞེས་འདུག། སྣ་སྒྱུ་བཀའ་འབུམ་ན་ཡང་དེ་ལྟར་ཡོད་པར་སྣང་།

2 'ཀུམ་རིའི' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག 195. Vol 87

3 'ཡིན་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

4 'པ་ཅིག' - སྣར་ཀུན ཤོག ༨༨/བ 'པ་གཅིག' པེ་ཅི ཤོག ༥༣ །

པས། སྐྱོ་བ་སྐྱེས་པར་གདའོ།། ཞེས་ཟེར་བ་ལ[1]། དེས་[2]སྦྱིན་གདག་ཁྱོད་ཀྱིས་མ་གོ་འམ། འཁོར་བའི་སེམས་ཅན་འདི་[3]རྣམས་སྡུག་བསྔལ་བ་ལས་བདེ་བ་ནི་འགའ་ཙམ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དུས་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཐ་མ་མེད་པར་སྡུག་བསྔལ་གཅིག་པུ་[4]ལས་མེད་དེ། སྐྱོ་བ་མ་སྐྱེས་[5]པར་གདའ་ན་གསུངས་པས།

དེ་དད་ནས་བླ་མ་དེ་ལས་[6]ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག་[7]ཞུ་ལགས་ཟེར་བས། དེས་དབང་བསྐུར་ནས་བསྐྱེད་རྫོགས་གཉིས་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་སྟེ[8]།

“མ་རིག་པ་ཡི་རྫ་ས་ལས།།
ཉོན་མོངས་རྣམ་རྟོག་འདམ་[9]བྱུང་སྟེ།།
སྲིད་ལེན་འཁོར་ལོས་རིགས་དྲུག་གི།
རྫ་བྱས་ཡི་ཤེས་མི་ཡིས་སྲེགས”།། ༡

---

1 ‘ཟེར་བས’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༢༨ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག
2 ‘དེ་སྦྱིན…’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༢༨ པེ་ཅི ཤོག ༥༣ གོང
3 ‘འདི་སྡུག་བསྔལ…’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
4 ‘གཅིག་པོ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘མ་སྐྱེས་གདའ་ན’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༢༨/ བ 96.
6 ‘དེ་ལ་ཐར་བའི’ - སྣར་ཀུན ཤོག ༢༨ དེ་ཉིད།
7 ‘ཐབས་ཅིག’ - སྣར་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
8 ‘གནང་བ་ནི’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
9 ‘འདམ་ཕྱུང’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ འོག

ཞེས་[1]གསུངས་པས། དེས་རྣམ་རྟོག་ངོ་སྤྲོད་ཀྱི་གདམས་པ་དེ་གོ་ནས། ཟླ་བ་དྲུག་བསྒོམས་པས་འཁོར་བ་འབྲུལ་པའི་དྲི་མ་དག་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། མཉམ་པར་བཞག་པས། རྫ་མའི་འཁོར་ལོ་རང་འཁོར་ནས་རྫ་མ་ཡིད་ལ་འཐད་པ་ལྟར་བྱུང་བས། དེའི་གྲོང་ཁྱེར་པས་རིགས་ཀྱི་ཡོན་དན་དང་ལྡན་པར་གོ་ནས་ཀླ་མ་ཀུམྦྷ་རི་པཱ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས[2]།

དེས་རྟོགས་པ་བརྗོད་ནས་ལུས་དེ་ཉི་ . ེས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ། །

གུ་རུ་ཀུམྦྷ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

༨༩) གུ་རུ་ཛ[3]ཨཱ་རི་པཱ།

གུ་རུ་ཛཱ་རི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གྲོང་ཁྱེར་མ་གྷཱའི་བྱེ་བྲག་ཅིག་ན་འབྲོག་པའི་རིགས་ཤིག་[4]ལ་འབྱོར་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད་ལ། མནེ་སྣོང་ལ་སོགས་པ་དང་། རྟ་དང་ལུག་ལ་སོགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད་པ་ཞིག་གིས་(རང་གི་)ཕ་ཤི་ནས་འདུ་བ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་པ། གཞན་དུ་ནའང་[5]ཤི་བའི་དུས་འདུ་བ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱེད་པའི་ཚེ་ཡུལ་དེའི་མི་རྣམས་བོས་ནས་ཤག་མང་དུ་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་

1 ‘ཅེས་གསུངས’ - ཡེ་ཤེ་ ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
2 ‘གྲགས་ལ’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༨༦/ བ ༨༧/ན
3 ‘ཙཔ་རི་པ’ - ཡེ་ཤེ་ ཤོག ༥༣ འོག ‘ཙཔ་རཔ’ སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༨༧ ‘ཙཔ་རི’ སྣྲུབ་ཀུན་ ཕྱིཅདཔར། ཤོག ༡༧༡ चवरि (जबरि-अजपालि) पा - रा० पुरा० नि० पृ० १२४ ।
4 ‘རིགས་གཅིག’ - སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༨༧/ ན ཡེ་ཤེ་ ཤོག ༥༣ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘གཞན་དུ་ན་ཡང’’ - ཡེ་ཤེ་ ཤོག ༥༨ གོང སྣྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༨༧/ན 195. Vol 87

མང་པོ་སྣེར་སྦྲིན་བགོས[1]དེ། མི་རྣམས་ཆུ་བོ་གཌྒའི་[2]འགྲམ་དུ་ཁྲུས་ལ་ཕྱིན་ནས། དེའི་ཆུང་མ་ཁྱིམ་སོ་སྲུང་[3]བར་བཞག་པའི་ཚེ། དེ་ལ་བུ་ལོ་[4]གསུམ་པ་ཞིག་ཀྱང་ཡོད་ལ། མ་སྨད་གཉིས་ཀྱི་བསྡད་པ་ན། དེའི་ཚེ་བླ་མ་ཛཱ་རིཔ[5](ཙཎྜ་རིཔ)གང་ནས་བྱོན་ཆ་མེད་པར་དེར་བྱོན་ནས། དེ་ལ་བཟའ་བ་བསླངས་[6]པས། བུ་མོ་དེས་གཡོ་ཆུང་བས་གདམ་ངང་པོར་སླས་པ་ན། ཛཱ་རི་པས་[7]ཁྱོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ཁྲོ་ན་ང་ཅན་དུ་ཤོག་ཅིག་[8]ང་ནགས་ཡ་གིར་མི་གཏོང་གིན་འདུག་པ་ཡིན་ནོ། །མི་ཁྲོ་ན་ལོགས་པར་སྡོད་ལ་ང་ལ་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་སྦྱིན་དགོས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་བླ་མའི་གདམ་ལ་ཉན་[9]། དེ་གནས་སུ་ལོག། བུ་མོ་སེམས་བདེ་བར་བསྡད[10]།

དེར་མི་འགའ་འོངས་པ་ན་སྒྲུག་མོ་འོངས་ནས། ཟ་མ་ལུས་འཕྲོ་ཅན་དུ་བྱས་པ་མཐོང་ནས། དེ་ལ་འབར་བས་དེ་བུ་ཁྱུར་ནས་རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་བྲོས་ནས་ཕྱིན་

1 'སྦྱིན་དགོས་དེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང སྣར་ཐང ཤོག ༩༧/ན །
2 'གཌྒགའི' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།
3 'བསྲུང་བར' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང
4 'བུ་མོ་ལོ་གསུམ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།
5 'ཛཱ' - ཞེས་དག་པར་སེམས
6 'བླངས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།
7 'ཙཎྜི་པ' - པེ་ཅི, ཤོག དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ཤོག དེ་ཉིད།
8 'ཤོག་ཤིག' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།
9 'ཉན་ནས' - སྣར་ཐང ཤོག ༩༧/ན པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང་།
10 'བསྡད་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ གོང སྣར་ཐང ཤོག ༩༧/ན 97.

ཏེ་(དེ་)དེར་སླེབས་པ་ན། ཛལནྡྷ་རི་(ཙཎྜ་རི་)པས། ཞིགས་སོ་གསུངས་ནས་སྟུགས་ཆུ་གཏོར་བས་མ་སྨད་གཉིས་རང་འབྱུང་རྡོ་རྗེའི་སྐུར་སོང་སྟེ། ཟས་ལ་སོགས་པ་གང་ཡང་མི་དགོས་པར་གྱུར་ཏོ།།

(དུས་) དེར་ཁྲིམ་དུ་དེའི་ཁྲོ་ཡོང་[1]ནས་དྲིས་པས་གར་སོང་ཆ་མེད་པར་སོང་ངོ་(ཟེར་རོ)། །དེས་ཀུན་ལ་དྲིས་པས་ཐོས་ཏེ་བསྒུགས་ནས་འོངས་པས། སྟར་གྱི་གདམ་བཤད་དོ། །[2]དེ་ལ་ཡང་སྟུགས་ཆུ་བཏབ་པས་སྟར་བཞིན་སོང་སྟེ། དེ་གསུམ་སྣན་གཅིག་ལ་གནས་པར་བྱེད་དོ།།[3]

ཡང་དེའི་ཕྱི་ནས་གཉེན་འདུན་གཅིག་ནས་གཉིས་སུ་འོངས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ། སུམ་བརྒྱ་ཙམ་དེར་མཆེ་བའུ་སྐོར་བ་ལྟར་འོངས་པས་ཐམས་ཅད་དོན་དང་འཕྲད་དོ[4]།།

བུ་མོའི་པུ་ལ་ནི་ཡོན་ཏན་འདི་ལྟ་བུ་ཡོད་དེ། འབྲས་བུ་ནས་ནི་མཁའ་སྤྱོད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་འོངས་ལ། རྡོ་རྗེ་ནས་གསེར་འགྱུར་གྱི་[5]རྩི་འོང་ཞིང་། འོག་སྒོ་ནས་བཅུད་ལེན་དང་[6]། མིག་ནས་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་སོགས་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་འབྱུང་ངོ་[7]།།

---

1 'འོངས་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།
2 'བཤད་དེ་དེ་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༥།
3 'གནས་པར་བྱེད་པ་ཡོད་པར་གསུངས་ངོ་' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/ན འི་ཅི དེ་ཉིད།
4 'འཕྲད་དེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/བ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག
5 'འགྱུར་རྩི་འོང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/བ
6 'བཅུད་ལེན' - སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད།
7 'འབྱུང་བའོ' - སྒྲུབ་ཀུན དེ་ཉིད།

(རྒྱལ་)དེ་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་པས། ཙམྤཀའི་རྒྱལ་པོ་མཉི་ལ་[1]སོགས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་བལྟར་འོངས་པས། རྒྱལ་པོ་དང་ནས་ཡབ་ཡུམ་གསུམ་ལ་ལྷ་ཁང་གཅིག་དང་། དེའི་ཕྱིར་གཞན་སུམ་བརྒྱ་ལ་ལྷ་ཁང་གཅིག་བྱས་ལ། མིང་'དྲམཔ'[2]ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་སོ། །

དེའི་ནང་དུ་རྣམ་རྟོག་ངན་པ་ཡོད་པ་འགྲོར་མི་འདོད་དེ་རྗོ་སྐུ་དེས་རྡུང་བ་ལ་སོགས་པ་བྱེད་དོ། །དེར་སྒྲུབ་གནས་ཆར་ནས་དུ་ད་ལྟ་ཡང་ [ཨལྤཡད་རྦའི་དུས་]རྣལ་འབྱོར་པ་མང་དུ་ཡོད་དོ་གསུང་ངོ་། །དེ་སྒྲུབ་[3]ཐག་ཤིན་ཏུ་ཉེ་སྟེ། འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཡིན་ལ། རྒྱལ་བ་བྱམས་པའི་བསྟན་པའི་བར་དུ་འདུག་ཅིང་དེ་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་དོ།།

གུ་རུ་ཙནྡྲི་(ཛཕྲི་)པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'མཉི་ལ་སོགས་' - ཞེས་ཀུན་ལ་འདུག་ཀྱང་ ཡི་གེ་ཆད་པར་མངོན་སྟེ་, 'མཉིཔྟལ' ཞེས་ཡོད་སྣང་།

2 'དྲམཔ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ འོག

3 སྒྲུབ་པ་ཐག་ཤིན་ཏུ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ འོག

༦༥) གུརུམཎིབྷདྲ།

གུརུམཎིབྷདྲའམ་[1]རྣལ་འབྱོར་མ་[2]བྷཧུ་རི་ཞེས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གྲོང་ཁྱེར་ཨགྲྟེ་བྱ་བ་ན་ཁྱིམ་བདག་འབྱོར་པ་ཅན་ཞིག་ལ། བུ་མོ་ལོ་བཅུ་གསུམ་མ་གཅིག་ཡོད་པ་དེ་རང་གི་རིཊ་དང་འཚམས་པའི་བག་མར་བཏང་ནས། སླར་ཕ་མའི་གམ་དུ་འོངས་ནས་དེ་ན་ཡོད་པ་ན། བླ་མ་ཀུ་ཀུ་རི་པཱ་བྱོན་ནས་བུ་མོ་ལ་བཟའ་བ་བསླངས་[3]པས། བུ་མོ་ན་རེ། ཉིད་གཟུགས་བྱད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་འདི་འདྲ་བ་ཟས་བསོད་སྙོམས་ཀྱིས་འཚོ་ཞིང་། གོས་ཆེམ་བུ་[4]ཅན་གྱིས་ཅི་བྱེད། རང་གི་རིཊ་དང་འཚམས་པའི་ཁྱིམ་ཐབ་ཅིག་ལེན་མོད་ཟེར་བས། དེའི་ཞལ་ནས—

"བདག་གི་འཁོར་བས་འཇིགས་ཤིང་སྐྲག་པས་[5]ན།།
ཐར་པ་བདེ་ཆེན་མཆོག་ནི་སྒྲུབ་པར་བྱེད།།
དེ་ཡང་རྗེན་བཟང་འདི་ལ་མ་བསྒྲུབས་ན།།
ཕྱི་ནས་འདི་འདྲ་རྙེད་པར་ག་ལ་འགྱུར།། ?

དེས་ན་རྗེན་བཟང་ནོར་བུ་རིན་ཆེན་འདི།།
ཁྱིམ་ཐབ་མི་གཙང་ནང་དུ་སྦྲས་པ་[6]ན།།

---

1 གུ་རུ་མཎིབྷདྲའི་ལོ་རྒྱུས་ནི།' - རྣལ་འབྱོར་མ་བྷཧུ་རི་ཞེས་པའི་ སྒྲུབ་ཀུན ༤༩ །

2 'བཧུ་རི' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག

3 'བླངས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག 196. Vol 87

4 'ཆེམ་བུས་ཅི་བྱེད' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག

5 'སྐྲ་པ་ན།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༠ འོག

6 'ཐས་པས་ན།' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༥ གོང་།

དགོས་འདོད་རེ་འཛོམས་སྡུག་བསྔལ་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་།།
དེ་ལྟར་རྟོགས་ནས་བདག་གིས་ཁྱིམ་ཐབ་སྤངས"།། ༣

ཞེས་[1]གསུངས་པས། དེ་དད་ནས་བསོད་སྙོམས་ཀྱི་ནོམ་པ་དྲངས་[2]ནས། ང་ལ་ཐར་པ་ཐོབ་པའི་ཐབས་ཤིག་ཞུ་ཟེར་བ་ལ།

དེས་ངའི་ཁྱིམ་དུ་ཁྲིད་ཡིན་པས་དགོས་ན་དེར་ཤོག་གསུངས་པས། དེ་བྱ་[3]བ་གང་ཡང་མ་དྲན་ཏེ་དགོངས་ཀ་གྲོས་ནས་དེར་སོང་བ་ལ། བླ་མས་བུ་མོ་དེའི་རྒྱུད་སྨིན་པར་མཐོང་ནས་བདེ་མཆོག་དུ་དབང་བསྐུར། བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་གི་གདམས་པ་གནང་ནས[4]། ཞག་བདུན་དུ་དགོན་པ་དེ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་བྱས། དེ་ནས་ཕ་མ་ཅན་དུ་ཕྱིན་པས། དེ་དག་བརྡེག་པ་དང་། ངན་སྨྲས་ལ་སོགས་པ་བྱེད་པས། བུ་མོས་ཁམས་གསུམ་པོ་དག་ན་ཕ་མར་མ་གྱུར་པ་ནི་མེད་ལ། རིགས་དང་རུས་ཆེ་བས་ཀྱང་འཁོར་བའི་གཉེན་ལས་[5]བཟློག་པ་མེད་པས་ན། བདག་ནི་བླ་མ་བསྟེན་ནས་ཐར་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པས་རྒྱོབ་ཅིག་ངས་ལམ་དུ་ཁྲིར་[6]རོ་ཟེར་བས།དེ་རྣམས་བག་ཅིག་དད་ནས་ཅང་མི་ཟེར་བ་ན། དེས་ཀྱང་བླ་མའི་གདམས་[7]

---

1 'ཤེས་གསུངས' _ པེ་ཅི ཤོག ཡཡ གོང དེ་ཉིད།
2 'བསོད་སྙོམས་དྲངས' _ པེ་ཅི ཤོག ཡཡ གོང དེ་ཉིད།
3 བུ་མོ་དེ་བླ་མའི་གསུ་གིས་ཡིད་གཡོས་ནས་བྱ་བ་གཞན་གང་ཡང་མ་དྲན་པའོ།།
4 'གནང་བས' _ པེ་ཅི ཤོག ཡཡ གོང དེ་ཉིད།
5 'གཉེངས་ལ' _ པེ་ཅི ཤོག ཡཡ གོང་ དེ་ཉིད
6 'འཁྲིར་རོ' _ པེ་ཅི ཤོག ཡཡ གོང་ དེ་ཉིད།
7 'གདམས་པ་སློམ' _ པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

ངག་བསྒོམ་ཞིང་། ལས་དང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་བློས་བཏང་ནས་ལོ་གཅིག་ཏུ་བསྡད་པ་ན། ཤར་གྱི་ཁྱི་(དེ་)འོངས་ནས་ཁྱེར་བས།

དེའི་ཁྱིམ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལས་དང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟ་བར་[1]བྱེད་ཅིང་ཁ་དང་ལུས་ཀུང་ཐུབ། ངག་སྐན་པ་ལ་སོགས་པ་ཟེར་[2]ཞིང་ཡོད་པ་ན། བུ་ཆ་ཡང་རིམ་པར་བུ་དང་བུ་མོ་གཉིས་སྐྱེས་སོ།[3] །དེ་(ཚོ་)ཡང་དེ་ཁོ་ན་འདྲ་བར་ཡོད་པས་རིགས་ཀྱི་བུ་ཆ་འདི་འདྲ་ཟེར་ནས་(ཀུན་གྱིས་)སྨོན་པར་བྱེད་པའི་ཚེ། བླ་མ་དང་འཕྲད་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན། (དེ་ནས་ཉིན་གཅིག་)ཆུ་འཆུར་ཕྱིན་ནས་ཁྱིམ་དུ་འོངས་པའི་ལམ་[4]དུ་ཤིང་ཞིག་ལ་རྐང་པ་འཐོགས་ནས་རྫ་མ་ཆག་པས། དེ་གར་འདུག་ནས་ཁྱིམ་དུ་ཉི་མ་ཕྱེད་ཀྱི་བར་དུ་མ་འོངས་པ་དང་[5]། ལྟར་ཕྱིན་པ་ན་རྫ་མ་ཆག་པོ་ལ་ལྟས་ནས་འདུག་པས། དེ་ལ་གདམ་ཅི་སྨྲས་ཀུང་མི་ཉན་པ་ལྟ་བ་ལ[6]། ཐམས་ཅད་(འདི་)འདྲིས་གཟུང་[7] ངམ་ཅི། ཟེར་ཞིང་ཉི་མ་གྲུས་ལ་ཁད་པ་ན—

ཐོག་མ་མེད་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས།།

---

1 ‘ལས་དང་བྱ་བ་ཇི་ལྟར་བྱེད་ཅིང་’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘ཟེར་ཅིང་’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/ན. དེ་ཉིད།

3 ‘སྐྱེས་པ།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/ན .

4 ‘ཁྱིམ་དུ་འོངས་པས་ཤིང་ཞིག་ལ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།

5 ‘མ་འོངས་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/ན.

6 ‘ལྟ་བ་ན’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།

7 ‘བཟུང་ངམ་ཅི’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།

ལུས་ཀྱི་ཛྷ་མ་ཆག་པ་ལ།།
ཁྱིམ་དུ་ལོག་པ་ག་ལ་ཡོད།།
བདག་གི་ཛྷ་མ་དེ་རིང་ཆག། ༡

ད་ནི་འཁོར་བའི་ཁྱིམ་དུ་ནི།།
མི་ལྡོག་བདེ་བ་ཆེན་པོར་འགྲོ།
ཨེ་མ་བླ་མ་ངོ་མཚར་ཆེ།།
བདེ་བ་ཐོབ་འདོད་དེ་ལ་བསྟེན།། ༣

ཅེས་གསུངས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ཏེ། ཞག་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ན་ཨག་རྩེ་[1](ཞིས་པ་རང་གི་ཡུལ་)པ་(རྣམས་)ལ་གདམས་པ་གསུངས་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གརྷུམཆིཔླདྣའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༦༦) གརྷུམིཁལྦཱ།

གརྷུམིཁལྦའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་དེཝཱི་ཀོ་ཊ་ན་ཁྱིམ་བདག་ཅིག་ལ་བུ་མོ་གཉིས་ཡོད་པ་ལ[2] དེད་དཔོན་ཞིག་ལ་ཡང་བུ་གཉིས་ཡོད་པ་གཉེན་དུ་བྱས་པ་དང་། བུ་མོ་དེ་གཉིས་ལ་ཐམས་ཅད་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད་པ་ལ། དེ་གཉིས་ཀྱིས་ངན་པ་[3]བྱས་པ་ནི་ཅི་ཡང་མེད་དོ།།

---

1 ‘ཨག་ཙོར’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༥ ངོས

2 ‘གཉིས་ཡོད་པ།’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༥ ངོས དེ་ཉིད། 196

3 ‘ངན་པ་ཅི་ཡང་བྱས་པ་མེད་དོ།།’ - ཕེ་ཅི ཤོག ༥༥ ངོས དེ་ཉིད།

དེའི་ཚེ་ནུ་མོ་ན་རེ། རྒྱུ་མཚན་མེད་པ་ལ་ཁ་ཟེར་བ་འདི་འདྲ་ལས་[1] གཞན་དུ་འཁྲུམས་དགོས་ཟེར། ཕུ་མོ་ན་རེ། གང་དུ་ཕྱིན་ཀྱང་ཚོགས་མ་བསགས་པས་འདི་དང་ཁྲུད་མི་འོང་བས་འདི་རང་དུ་བསྡད་དགོས་ཟེར་བའི་ཚེ་བླ་མ་ཀཙྪཔ་[2]བྱ་བ་དེར་བྱོན[3]། དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཕོ་མོ་བདུན་བརྒྱས་བསྐོར་བ། མ་རིག་པའི་གདུགས་དབུ་ལ་འཕོར་བ། ཌམརུའི་སྒྲ་མ་དཀྲོལ་བར་འཁྲོལ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་གྲགས་པས[4]། སྤུན་གཉིས་ཀྱིས་འོ་སྐོལ་གཉིས་ལ་ཡུལ་མི་དང་ཁྲོས་[5]ཀྱང་ཁ་ཟེར་བས། བླ་མ་འདི་ལ་གདམས་པ་ཞུས་ནས་སྒྲུབ་པ་བྱེད་དགོས་བྱས་ནས་དེའི་ཅན་དུ་ཕྱིན་ནས། སྔར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་[6]བསྙད་ཅིང་གདམས་པ་ཞུས་པས། དེས་ཀྱང་གནང་སྟེ། དབང་བསྐུར་ནས་ལྷ་བ་སྒོམ་པ་སྤྱོད་པ་འབྲས་བུ་ཟུང་འཇུག་ཕག་མོའི་གདམས་པ་གནང་ངོ་།།

དེ་གཉིས་ཀྱིས་(ཀྱང་)བརྩོན་པས་བསྒྲུབས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། བླ་མ་ཅན་དུ་ཕྱིན་ནས་ཕྱག་དང་མཆོད་པ་བྱས། བཀའ་དྲིན་གྱིས་ཁྲབ་

---

1 'འདི་འདྲ་ལ'. - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག དེ་ཉིད།

2 'བོད་དཔེ་ཀུན་ལ་ཕལ་ཆེར་མཐུན་པ' - ཀཙྪཔ ཞེས་འདུག་ཀྱང་ ཀཙྪཔ ཡིན།

3 'བྱོན་ཏེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/བ. དེ་ཉིད།

4 'མེད་པ་སྒྲོགས་པས་དཔུན་གཉིས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག 'བསྒྲགས་པས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/བ.

5 'ཁྲོ་ཡང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག

6 'ལོ་རྒྱུས་ཀྱང་བསྙད' - པེ་ཅི ཤོག ༥༥ འོག

པའི་གདམ་བདང་བས། (བླ་མས་) ཁྲིད་གང་པ་ [1]ཡིན། ངས་མ་ཤེས་གསུངས་པས། སྔར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་བསྙད་དོ། །འོ་ན་ང་ལ་ཡོན་འབུལ་དགོས་གསུངས་པས། [དེ་གཉིས་ཀྱིས་]བླ་མ་ཅི་བཞེད་པ་འབུལ་ཞུས་པས། འོ་ན་ང་ལ་ཁྲིད་གཉིས་ཀྱི་མགོ་བོ་བྱིན་ཅིག གསུངས་པས་དེས་ཀྱང་བླ་མ་བཞེད་ན་འབུལ་ཟེར་ནས། དེ་གཉིས་ཀྱིས་རང་རང་གི་ཁ་ནས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རལ་གྲི་རྣོ་ངར་དང་ལྡན་པ་རེ་ཕྱུང་ནས་[2]ཡན་ལག་གི་དམ་པ་མགོ་བཅད་ནས་ཕུལ་ཏེ།

བདག་ཅག་[3]གཉིས་པོ་བླ་མའི་བཀའ་དྲིན་གྱིས།།
བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་འཇུག་འཁོར་འདས་སྦྲེལ་པ་བཅད།།
ལྟ་སྤྱོད་ཟུང་འཇུག་སྤང་བླང་སྦྲེལ་པ་བཅད།།
དབྱིངས་རིག་[4]ཟུང་འཇུག་བདག་གཞན་སྦྲེལ་པ་བཅད།།
སྦྲེལ་མེད་བདེ་ཡི་རྩལ་དུ་འདི་འབུལ་ལོ།། ༡

ཞེས་[5]གསུངས་གཞིན་དབུ་བཅད་དེ་གར་མཛད་པས། ཀཱནྷ་(ཀཱཧྣ) པའི་ཞལ་ནས—

ཨེ་མ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོ་གཉིས།།

---

1 'ཁྲིད་གང་ཡིན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༠/བ. དེ་ཉིད།
2 'རང་རང་གི་ཡན་ལག་གི་དང་པོ་མགོ་བོ…' - པེ་ཅི ཤོག ༤༦ གོང དེ་ཉིད།
3 'བདག་གཉིས་པོ་བླ་མའི་བཀའ་དྲིན་གྱི།' - པེ་ཅི ཤོག ༤༦ གོང
4 'དབྱིངས་རིགས' - པེ་ཅི ཤོག ༤༦ དེ་ཉིད།
5 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༤༦ དེ་ཉིད།

ཡོན་ཏན་མཆོག་ཐོབ་དགེ་བ་སྟེ།།
རང་ཉིད་ཞི་བདེ་དམན་པས་ན།།
འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་གནས་པར་མཛོད།། ༣

ཅེས་གསུངས་པས།། མགོ་བོ་སླར་གསོས[2]དེ་རྨ་མེད་པར་གྱུར་པས། ཐམས་ཅད་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ནས་དཔུ་བཅད་མ་སྤུན་གཉིས་སུ་གྲགས།

ཀཎྷ་པཱའི་ཞབས་འབྲིང་བྱས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ[3]། ལོ་མང་དུ་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་མཛད། དེ་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ཕུ་མོ་སྣེ་གུ་རུམེཁལཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༦༧) གུ་རུཀནཁལཱ།

གུ་རུཀནཁལཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གྲུབ་ཆེན་ཀཎྷ་པཱ་སྟེ་ནག་པོ་སྤྱོད་པའི་ཞབས་ཀྱིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བ་བརྗོད་མ་ཐག་པའི་དཔུ་བཅད་མ་སྤུན[4]གཉིས་ཀྱི་ནུ་མོ་དེ་

---

1 'གསུངས་ནས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན
2 'སླར་སོས་དེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང དེ་ཉིད།
3 'ཐོབ་སྟེ།' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན. དེ་ཉིད།
4 'དཔུན་གཉིས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང 196 Vol 87.

ཡིན་ལ། རྣམ་ཐར་གོང་གིས་རྟོགས་ཤིང་། མཚན་རྣལ་འབྱོར་མ་ཀནཁལ་ཞེས་གྲགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀནཁལའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

༦༨) གུ་རུ་ཀལ[1]ཀལ།

གུ་རུ་ཀལཀལའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། དེ་ཡང་ཀ་ཙོ་ཙན་དེ། གྲོང་ཁྱེར་བྷི་རལི་ར་[2] ན་གང་ཟག་དམངས་རིགས་ཤིག[3]སྔོན་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་ཤིན་ཏུ་ཡང་ཀ་ཙོ་ཆེ་ནས་གྲོང་ཁྱེར་གྱི་མི་ཀུན་སུན་[4]ཏེ། བསྐྱོད་ནས་བཏང་བ་དང་། དེ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་མཐར་གྱིས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཕྱིན་ནས་སེམས་ཁོང་དུ་ཆུད་ཅིང་འདུག་པའི་ཚེ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་དེར་བྱོན་ནས། ཁྱོད་དུར་ཁྲོད་དུ་ཅིའི་ཆེད་དུ་འདུག ཅེས་དྲིས་པས། དེས་སྔར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་བདེན་པར་སྨྲས་པ་དང་།[5] (རྣལ་འབྱོར་པས་)དེ་ལ་ཁྱོད་མི་སྐྱོ་བ་དང་། འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་མི་དགོས་སམ། བྱས་པས། དེས་ཅིས་ཀྱང་དགོས་ཞུས་པས། དེ་ལ་ཕྱག་དང་མཆོད་པ་བྱེད་དུ་

1 'ཀིལིཀིའི' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན . 101. 14 'वलकलपा' – रा० पु० नि० पृ० १२४ ।

2 'བྷིརལིང་ན' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག དེ་ཉིད། 'भिरलिर नगर' – रा० पु० नि० पृ० १२४ ।

3 'རིགས་ཞིག' - སྒྲུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན.

4 'བསུན་ཏེ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང་།

5 'སྨྲས་པས' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༦ འོག

བཅུག་ནས། གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐུར་ཏེ་[1]སྣང་བ་རང་གྲོལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་[2]ངོ་།།

སྒྲ་ཙམ་ཉིད་དུ་རང་དང་གཞན་གྱི་སྒྲ།།
ངོ་བོ་གཅིག་ལ་ཐ་དད་[3]མེད་པར་སྒོམས།།[4]
དེ་ནས་རང་སྒྲ་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ནས་ནི།།
འབྲུག་སྒྲ་ལྟར་གྲགས་མི་རྟོག་ཆར་འབབ་སྒོམས།། ༧

ཞེས་[5]གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་འབད་ནས་བསྒོམས་པས། གཞན་ཁྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲ་[6]སྒྲ་རང་གིས་(=རང་སྒྲའི་ནང་དུ་)སྟོར་ལ། རང་སྒྲ་དེ་ཡང་མི་རྟོག་ཆར་འབབ་པའི་ནང་དུ་སྟོར། མི་རྟོག་གི་རྟོག་པ་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་སྟོར་ནས། སྣང་བ་ཐམས་ཅད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་ཤར་ཏེ[7]། སྣང་བ་རང་གྲོལ་དུ་སོང་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ།[8] ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་ཀུ་ཅོ་ཅན་བྱ་བར་གྲགས།[9]

---

1 ‘དབང་བསྐུར་ནས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘གནང་སྟེ’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
3 ‘འབད་མེད་དུ་སྒོམས།’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧/བ.
4 ‘འབད་མེད་དུ་སྒོམས།’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧/བ.
5 ‘ཞེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ འོག དེ་ཉིད།
6 ‘སོགས་པའི་སྒྲ་རང་གིས་སྟོང’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧/བ.
7 ‘ཤར་སྟེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།
8 ‘ཐོབ་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།
9 ‘གྲགས་ཤིང’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།

[མཐར་]གདུལ་བྱའི་དོན་མང་དུ་བྱས་ནས་རྫོགས་པ་བརྗོད་པ་[ལ་སོགས་པ་]གསུངས་ཏེ། འཁོར་སུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་[1]མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀ་ལ་ཀ་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༦༩) གུ་རུ་ཀཎྜ་ལི།

གུ་རུ་ཀཎྜ་ལིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀཎྜ་ལི་སྟེ་ཚེམ་བུ་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་མཚོ་སྣར་ཞེས་[2]བྱ་བར་ཕྱུག་དར་བའི་གང་ཟག་ཅིག་[3]འགྱུར་པ་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱིས་ཕོངས་ནས་གོས་ཚེམ་བུ་བྱེད་ཅིང་སྡུང་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་ཚེམ་བུ་བྱེད་པའི་ཁབ་ལག་པ་ལ་ཟུག་སྟེ་[4]ཁྲག་བྱུང་ནས་ཟུག་ཀུང་ཆེ་བས་མ་བཟོད་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་འདྲེ་ལྡོག་བྱེད་པ་ན། མཁའ་འགྲོ་མ་བེཏ་ལི་བུད་མེད་ཅིག་[5]ཏུ་སྤྲུལ་ཏེ་[6]དེའི་གམ་དུ་བྱོན་ནས། ཁྱོད་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེས་སྔར་གྱི་གཏམ་ལེགས་པར་བཤད་པས། དེས་གསུངས་པས།

"འདི་བས་སྐྱེ་བ་སྔ་མར་ཡང་སྡུག་བསྔལ་བ་[ཆེན་པོ]མྱོང་ལ། ད་དུང་སྐྱེ་བ་ཕྱི་མར་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདི་བས་ལྷག་པའི་སྡུག་བསྔལ་ཉམས་སུ་མྱོང་བས་

---

1 'བཅས་ཏེ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༥༧/བ. དེ་ཉིད།

2 'ཅེས་བྱ་བར' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ འོག 196 Vol 87.

3 'གང་ཟག་གཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད། སྣར་ཀུན ༥༧/བ . དེ་ཉིད།

4 'ཟུག་ཏེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།

5 'བུད་མེད་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ འོག དེ་ཉིད།

6 'བུད་མེད་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ འོག དེ་ཉིད།

[འཁོར་བ་འདི་]སྡུག་བསྔལ་གྱི་རང་བཞིན་ལས་མ་འདས་པ་ཡིན་ནོ།།" ཞེས་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག[1]ཞུ་ཟེར་བ་ལ།[2] མཁའ་འགྲོ་མ་དེས་ཀྱང་ཁྱོད་ཀྱིས་སྒྲུབ་ནུས་སམ། གསུངས་པས། དེས་ཅིས་ཏེ་མི་ནུས་ཟེར། (དེ་)ནས་དེར་དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེ་ར་དབང་བསྐུར།[3] ཚད་མེད་པ་དང་། ལྡོ་མའི་རྣལ་འབྱོར་དང་། བསྐྱེད་རིམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གནང་སྟེ། བསྒོམས[4]པས། དེ་ཆེམ་བུ་ལ་རྟོག་པ་སོང་བ་ན་རྟོག་པ་ལམ་ཁྱེར་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།།[5]

སྣོང་ཉིད་བར་སྣང་ཕྱུག་དར་ཁྲིད།།
དྲན་དང་རིག་པའི་ཁབ་སྐུད་ཀྱིས།།
གོས་དག་བཅེམས[6]པ་སྙིང་རྗེའི་ཁབ།།
སྲིད་གསུམ་སེམས་ཅན་ཁྱབ་པར་སྒོམས།། ༡

---

1 'ཐབས་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༡/བ. 'ཐབས་གཅིག' པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང
2 'ཟེར་བས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༡/བ. པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང་།
3 'བསྐུར་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༡ པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།
4 'སྒོམས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང་།
5 'དེས་ཆེམ་བུ་མ་ཤེས་པར་སོང་བ་ན། སྣར་རྟོག་པ་ལམ་བྱེད་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།། པེ་ཅི ཤོག ༥༦ གོང་།
6 'འཆེམ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།

ཞེས་[1]གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པར་རྟོགས་ནས་དེ་ལྟར་མ་རྟོགས་པའི་སེམས་ཅན་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་སྐྱེས་ནས། དེ་གཉིས་ཟུང་[2]དུ་འཇུག་པའི་མཧཱམུདྲཱའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།

ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་ཀཎྷལིཔཱ་ཞེས་[3]གྲགས། འགྲོ་བའི་དོན་མང་དུ་མཛད[4], རྟོགས་[5]པ་བརྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ནས་[6]མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཀཎྷལིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༠) གུརུཌྷཏུ[7]ལི།

གུརུཌྷཏུལིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཌྷོཀར་བྱ་བར་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་རྩྭའི་ཐག་པ་བྱས་ནས་འཚོ་བའི་ཆེད་དུ་བཙོངས་[8]པ་ན། དུས་གཅིག་གི་

---

1 'ཤེས་གསུངས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

2 'ཟུང་འཇུག་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ གོང་།

3 'ཞེས་གྲགས་ཤིང་།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/ན. པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

4 'མཛད་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད། 'མཛད་དེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

5 'མཐར་རྟོག་པ་བརྗོད་པ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

6 ནས, ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

7 'ཌྷགུལི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/ན. (धहुरिपा) – रा० पु० नि० पृ० १२५ ।

8 'འཚོང་པ་ན' - པེ་ཅི ཤོག ༥༣ གོང་ དེ་ཉིད།

ཆེ་དེས་ཐག་པ་བསྒྲིལ་དྲག་པས་ལག་པ་ལ་ཆུ་འབུར་དྲག་པོ་བྱུང་སྟེ། ཟུག་རྔུ་ཆེན་པོ་བྱུང་བས། དེ་ངུ་ཡིན་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བསྡད་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་དེ་ལ་ཅི་ཉེས། གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་གནམ་དྲང་པོར་བཤད་པས། (སླར་རྣལ་འབྱོར་པ་)དེས་གསུངས་པ—

"ཁྱོད་ད་ལྟ་སྡུག་བསྔལ་འདི་ཙམ་ཡང་མི་བཟོད་པར་འདུག་ན། ཕྱི་མ་ངན་སོང་དུ་སྐྱེས་ཙ་ན་ཅི་ཙུག་བྱེད་པ་ཡིན" གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། བླ་མ་དེ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག་[1]ཞུ་ཞེར་བས། (རྣལ་འབྱོར་པས་)དེ་ལ་དང་པོ་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་བྱས་ནས། རྟོག་པ་ལམ་ཁྱེར་གྱི་གདམས་པ་འདི་གསུངས་སོ—

སྣང་བ་གོམས་པའི་ཀུ་ཤ་དང་།།
ཀུན་བཏགས་ཕར་སྣང་ཉིད་[2]གནས་གཉིས།།
གདོད་ནས་མ་གྲུབ་ཅོ་བོར་ནི།།
ནུས་པ་རྒྱུན་མི་ཆད་པར་སྒོམས།།

ཞེས་གསུངས། (དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་གསུངས་) པའི་དོན་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྒོམས་པས། ཀུན་བཏགས་[བརྟགས་]གཞི་མེད། གཞན་

1 'ཐབས་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ . དེ་ཉིད།

2 'ཕར་སྣང་ན་གནས་གཉིས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ. 'བར་སྣང་ཉིད་གནས' པེ་ཅི ཤོག ༥༧ འོག

དབང་ཆེན་འབྲིལ། ཡོངས་གྲུབ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངོ་བོར་[1](རོ་)གཅིག་ཏུ་རྟོགས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ[2]། ཕྱི་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཀྲྀཥྞ་པཱ་ཞེས་[3]གྲགས་ཤིང་། ལོ་བདུན་བརྒྱའི་བར་དུ་རྒྱ་གར་མཐའ་དབུས་རྣམས་སུ་འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ཡང་གསུངས་ཏེ། འཁོར་ལྔ་བརྒྱ་དང་བཅས་[4]པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ཀྲྀཥྞ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༡) ཀྲྀཨུཏྲི་ལི་པ།

ཀྲྀཨུཏྲི་ལི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཨུཏྲི་ལི་སྤྲེ་འཕུར་བ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་[5]ཡུལ་དེཝཱི་ཀོཊ་བྱ་བ་ན་[6]རྗེའུ་[7]རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་ཕྱུར་གྱི་སྦྱིན་པའི་འབྲས་བུས་འབྱོར་པ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་། རང་ཉིད་ཁང་བཟང་གི་ནང་ན་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་གནས་པའི་ཚེ། ནམ་མཁའ་ལ་སྤྲིན་ཁ་དོག་ལྔ་འདུས་ཏེ་སྤྲིན་ལས་སྒྲོག་ཆགས་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་གཟུགས་འདྲ་བ་མཐོང་ནས་དེ་ལ་བལྟས་པས། བྱ་ངང་པ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བ་མཐོང་ནས། དེའི་བསམ་པ་ལ་ང་ཡང་འཕུར་

1 'ངོ་བོ་གཅིག་ཏུ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༥༧ འོག
2 'ཐོབ་སྟེ།' - པེ་ཅི ༥༧ འོག སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/ན .
3 'ཞེས་བྱ་བར་གྲགས' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/ན .
4 'བཅས་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ འོག དེ་ཉིད།
5 'དེས་ཀྱང་' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ ན
6 'བྱ་བར' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད། སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ
7 'རྗེ་རིགས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

ནུས་ན་ རེ་དགའ་སླམ་ནས་བྱ་བ་གང་ཡང་མ་དྲན་པའི་དུས་སུ་བླ་མ་ཀཙ་རི་པཱ་
དེ་ར་བྱོན་ནས་བསོད་སྙོམས་མཛད་པས། དེ་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ་[1]བསོད་སྙོམས་
འདྲེན་ལགས་ཀྱི་ཉིད་ལ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བའི་ཐབས་མངའ་ན་ཞུ་ཟེར་ནས།
བཞིས་ཆབ་གྲུ་ནོམ་པ་དྲངས་ནས་ཕྱག་བཙལ་[2]ཡོན་ཕུལ་བས། དེས་ (དེ་)ང་ལ་
ཡོད་ཀྱི་གསུངས་ནས། རྡོ་རྗེ་གདན་བཞིར་དབང་བསྐུར་ནས། གདམས་ངག་ཏུ་
"གནས་ཆེན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ར་སྨིན་ཉེ་ཤུ་རྩ་བཞི་ཡོད་པ་དེ་ར་སོང་ལ་ཏཱཀི་མ་རེ་
རེའི་བཟླས་པ་ཁྲི་ཚོ་རེ་ཟློ་ཡིན་ [3]སྨིན་རེ་ཁྲིར་ཤོག" གསུངས་ནས་བཏང་བས།

དེ་ན་རེ། དེ་དག་ཚང་བ་དང་ཇི་ལྟར་བྱེད་པ་ཡིན། ཟེར་བ་ལ[4]། "དེ་
དང་པོ་ཟངས་ཀྱི་སྣོད་དུ་ཆུག དེ་ནས་དངུལ། དེ་ནས་གསེར་གྱི་སྣོད་དུ་ཆུག་ཅིག
ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བར་ནུས་སོ་"གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་
སྨིན་ཚང་བ་དང་། དེ་ལྟར་བྱས་པས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བས་མིང་ཡང་
ཨུཏྤལི་ཞེས་བྱ་བར་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། རྟོགས་པ་བརྗོད་ནས་
ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།། ||

གུརུཨཏི་ལིའི་ [ཨུཏྤལིའི]ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ||

---

1 'རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་བསོད་སྙོམས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ འོག

2 'ཕྱག་འཚལ' - སྣར་ཀུན ཤོག ༥༣/བ. དེ་ཉིད།

3 'བཟླས་ཀྱིན' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང་།

4 'ཟེར་བས' - སྣར་ཀུན ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

༧༣) གུརྟཀཔཱལ།

གུརྟཀཔཱལའི་ལོ་རྒྱུས་ནི— ཀཔཱལ་སྣེ་ཐོད་པ་ཅན་ནོ།། །དེ་ཡང་ཡུལ་རྣྀཇཔུརི་བྱ་བར་དམངས་རིགས་[2]ལས་ཀྱི་འཚོ་བ་[3]ཞིག་ལ་བུ་ཆ་ལྔ་ཡོད་པ་ལ། སྔོན་ལས་ཀྱི་དེའི་ཆུང་མ་ཤི་ནས་རོ་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱལ་བས། དེས་དེ་ཉིད་དུ་ངུ་ཡིན་བསྡད་པ་ན། ཡང་བུ་ཆ་ཀུན་ཀྱང་ཤི་ནས་མིས་དེ་ལ་སྐད་བཏང་བས། དེ་ཀུན་གྱི་རོ་དེར་བསྐྱེལ་ནས་ཡང་ངུ་ཡིན་བསྡད་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་དེར་བྱོན་ནས།

ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ་“རྣལ་འབྱོར་པ། བདག་ཁྱིམ་ཐབ་དང་བུ་ཆ་ཀུན་བྲལ་བའི་མྱ་ངན་གྱིས་ཡིད་གདུངས་ནས་རོ་འདི་རྣམས་བློས་གཏོང་མ་ནུས་ཏེ་འདིར་འདུག་གིན་གདའ།” ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་ནག་པོ་སྤྱོད་པས་གསུངས་པ—

“ཁམས་གསུམ་གྱི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འདིའི་རང་བཞིན་ཡིན་ཞིང་[4]། ཁྱོད་གཅིག་པུའི་མ་ཡིན། དེ་ལ་མྱ་ངན་བྱར་མེད་ཅིང་བྱས་ཀྱང་མི་ཕན་པས (དེ་བས་)ཆོས་གྱིས། ཁྱོད་འཁོར་བའི་སྐྱེ་འཆི་ལ་མི་འཇིགས་སམ།” གསུངས་པས།

---

1 ‘ཐོད་པ་ཅན།’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང དེ་ཉིད།

2 ‘དམངས་རིགས་ཞིག་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བ་གཅིག་ལ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ. ཤིག་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བ་གཅིག” - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང་།

3 ‘དམངས་རིགས་ཞིག་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བ་གཅིག་ལ’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ. ཤིག་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བ་གཅིག” - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང་།

4 ‘ཡིན་ཅིང’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང སྣྲུབ་ཀུན ༥༣/ན. དེ་ཉིད།

དེ་ན་རེ། སྐྱེ་འཆི་ལ་འཇིགས་ཏེ། དེ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་མངའ་ན་བདག་ལ་རྩོལ་ཅིག་ཞུས་པས།

དེས་ [དེ་རྗེ་]དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར་ནས། བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་པ་བྱིན་ཏེ་[1]སྤྱོད་པ་བྱེད་དུ་བཅུག[2] བུ་ཆའི་རུས་པས་རྒྱན་དྲུག་བྱེད་དུ་བཅུག་ནས་གྱོན[3]།། ཆུང་མའི་མགོ་བོ་བཅད་ནས་ཁ་ཕོར་བྱས་ཏེ། ཐོད་པ་ནི་བསྐྱེད་རིམ། ཐོད་པའི་ནང་སྟོང་པར་ཡོད་པ་ནི་རྫོགས་རིམ་ཡིན་པར་བསྟན་པས། དེས་ཀྱང་སྤྱོད་པ་བྱེད་ཅིང་བསྒོམས་པས། ལོ་དགུ་ན་[4]ཟུང་འཇུག་ཏུ་སོང་སྟེ་གྲུབ་པ་ཐོབ[5]།། [དེ་ནས་] གདུལ་བྱ་རྣམས་[6]ལ—

ང་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཐོད་པ་ཅན།།
ཆོས་རྣམས་རང་བཞིན་བདག་གིས་ནི།།
ཐོད་པ་ལྷ་བུར་རྟོགས་པ་ན།།
ཤུགས་ལས་བྱུང་བའི་སྤྱོད་པར་གནས།། ༡

---

1 'བྱིན་སྟེ' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ འོག 197 Vol 87.

2 'བཅུག་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

3 'གྱོན་ནོ།' - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ དེ་ཉིད།

4 'དགུ་ནས' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༨ དེ་ཉིད།

5 'ཐོབ་ནས' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༨ འོག སྣར་ཐང ཤོག ༥༣/ན . དེ་ཉིད།

6 'གདུལ་བྱ་དག་ལ' - པེ་ཅི, ཤོག ༥༨ འོག སྣར་ཐང ཤོག ༥༣/ན.

ཞེས་[1]གསུངས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་གར་བྱས་པས།[2] མི་ཐམས་ཅད་དད་ནས་བླ་མ་ཀཔཱལ་པཱ་ཞེས་གྲགས[3]། [རང་]གི་རྟོགས་པ་(ཡང་)བརྗོད། (དེ་)ནས་ལོ་ལྔ་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད[4]། (མཐར་)འཁོར་དྲུག་བརྒྱ་དང་བཅས་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཀཔཱལའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༣) གུརུཀིར[5]པཱལ།

གུརུཀིརཔཱལའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀིརཔཱལསྟེ་སྐྱ་ཚོགས་སྤྲངས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།[6] གྲོང་ཁྱེར་'གྲཏར་'ཞེས་བྱ་བར[7]རྒྱལ་པོའི་གང་ཟག་ཅིག་རྒྱལ་སྲིད་རྒྱས་པ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་སྲས་ལྟ་བུར་ཡོད་པ་ལ། དེས་ཀྱང་མ་ངོམས་ཏེ། ཕྱོགས་གཞན་ན་ཡོད་པའི་རྒྱལ་པོའི་སྲིད་ཀུན་ཀྱང་ཕྲོགས་ནས་ལོངས་སྤྱོད་པར་

---

1 'ཞེས་གསུངས་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༦ འོག

2 'ཐམས་ཅད་' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣ །

3 'གྲགས་ཏེ་' - པེ་ཅི་ ༥༦ འོག སྒྲུབ་ཀུན་ ༥༣ དེ་ཉིད།

4 'མཛད་དེ་' - པེ་ཅི་ ཤོག ༥༦ འོག སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

5 'ཀིརཔལ' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣/ན. པེ་ཅི་ ཤོག ༥༦ འོག དེ་ཉིད། 'किलपा' - रा० पुरा० नि० पृ० १२५ 'ཀིརཔལ' སྒྲུབ་ཀུན་ ལྷཚདཔར་ཤོག ༡༧༨ 'ཀིརཔཱལཔ' རྟོགས་བརྗོད་གོ་རིམ་ ཤོག ༧༣/ན

6 'ཀཱིརཔལ་སྟེ་སྐྱ་ཚོགས་སྤྲངས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་' ཞེས་པ་པེ་ཅི་པར་ལ་མེད། ཤོག ༥༦ འོག ཀིརཔཱལཔ - 'གཡེངས་བྱེད་ཞབས་' - རྟོགས་བརྗོད་གོ་རིམ་ ཤོག ༧༣/ན. 123

7 'བྱ་བ་རྒྱལ་པོ་' - སྒྲུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣/ན. དེ་ཉིད།

བྱེད་པ་ན། ཡང་ཡུལ་ཁམས་གཞན་དུ་དམག་དྲངས་པས། དེ་ན་ཡོད་པའི་སྐྱེས་པ་འབྲོས་ནུས་པ་རྣམས་བྲོས་ནས་མེད་པ་ལ། བུད་མེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་བྲོས་མ་ནུས་པས་བཀྲུལ་བ་དང་། ང་བ་ལ་སོགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྒྱལ་པོས་མཐོང་ནས། དེས་བློན་པོ་ཞིག་ལ་དྲིས་པས་དེས་གཏམ་དྲང་པོར་སྨྲས་པ་ན།

རྒྱལ་པོ་སྐྱོ་བ་ཆེན་པོ་སྐྱེས་ཏེ། འདི་འདྲ་བ་སྙིང་རྗེ་བར་འདུག་པས་འདི་རྣམས་ཀྱི་ཕ་ལ་སོར་པ་ཁུག་ལ་རང་རང་གི་སྲིད་ལ་གནས་པར་གྱིས་ཤིག་གསུངས་པས། བློན་པོས་ཀྱང་དེ་བཞིན་བྱས་ཏེ། སླར་རང་གི་གནས་སུ་བྱོན་ནས། སྦྱིན་གཏོང་གི་དྲིལ་ཆེན་པོ་བསྒྲགས་ཏེ། ཟད་པ་མེད་པའི་སྦྱིན་པ་ཆེན་པོ་བཏང་ནས། ད་ནི་ཆོས་ཤིག་[1]བྱ་དགོས་དགོངས་ནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་དེར་བྱོན་ནས་བཟའ་བཅའ་བསྟངས་པས་དེས་ཀྱང་གྱ་ནོམ་པ་དྲངས་[2]། དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་ཚད་མེད་པ་བཞི་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་བཤད་པས། [རྒྱལ་] པོ་དེ་ན་རེ།

ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་འཚང་རྒྱ་[3]བའི་ཆོས་ཤིག་[4]ཞུ་ཟེར་བས། དེས་བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར། བསྐྱེད་རྫོགས་གཉིས་ཀྱི་རིམ་པ་བསྒོམ་དུ་བཅུག་པས། སྔར་གྱི་བག་ཆགས་ཀྱི་དབང་དུ་སོང་སྟེ། རྒྱལ་སྲིད་དང་དམག་གི་རྟོག་པས་ལམ་བསྒྲིབས་པ་ན། དེས་རྟོག་པ་རང་གྲོལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་—

---

1 ‘ཆོས་གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང དེ་ཉིད། ཆོས་ཅིག - སྐྱབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ.

2 ‘དྲངས་ཏེ’ - སྐྱབ་ཀུན ཤོག ༥༣/བ . པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་ཅིག་ཞུ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང 197 Vol 8,.

4 ‘སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་ཅིག་ཞུ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༨ གོང 197 Vol 87.

ཁམས་གསུམ་པ་ཡི་སེམས་ཅན་རྣམས།།
དམག་ཚོགས་དཔའ་བོས་ཁྱིང་ས་པར་སློམས།།
མཁའ་དབྱིངས་མ་ལུས་རང་སེམས་ལས།།
བྱུང་བའི་དཔའ་བོ་དཔག་མེད་གཉིས།། ༡

དབྱེར་མེད་གྱུར་ནས་དགྲ་རྣམས་བཅོམ།།
རང་ཉིད་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཉིད་[1]།།
རྒྱལ་ལ་སོགས་པའི་བདེ་ཐོབ་ནས།།
སྲིད་པའི་རྩེ་མོར་བསྒོམ་པར་བྱ།། ༢

ཞེས་[2]གསུངས། (དེ་)ནས་དེས་ཀྱང་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྒོམས་པས་ལྷ་བ་རྟོགས་ཏེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་རྒྱལ་པོ་རང་གི་ཕོ་བྲང་འོད་ཀྱིས་ཁྱབ་པས། བཙུན་མོ་ལ་སོགས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པར་གོ་ནས་མཆོད་པ་བྱེད་པ་ན། དེས–

ཚད་མེད་བཞི་ཡི་སེམས་ཅན་ལ།།
ཆགས་པས་འདོད་པ་སྤྱད་པར་བྱ།།
དཔའ་བོ་ཞི་སྡང་ཆེན་པོ་ཡིས།།
དགྲ་རྣམས་མ་ལུས་བརླག་པར་བྱ།། ༣

1 ‘ཆེན་པོ་ནི།’ - པེ་ཅི, ཤོག ༥༧ གོང་།
2 ‘ཅེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༧ གོང དེ་ཉིད།

ཞེས་གསུངས་པས། བླ་མ་ཀིརཔ་ལ་བྱ་བར་གྲགས་ཤིང་། རྟོགས་པ་བརྗོད།[1] [དེ་]ནས་ལོ་བདུན་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་དེ། འཁོར་དྲུག་བརྒྱ་དང་བཅས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ། །

གུ་རུ་ཀིར[2]པ་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༨) གུ་རུ་སཱ་ག་ར།[3]

གུ་རུ་སཱ་ག་རའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཀཱཉྩི་ན་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲ་བྷཱུ་ཏི་ཞེས་[4]བྱ་བ་ཡོད་ལ། དེ་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་བཅུ་[5]བཞི་ལ་དབང་བྱེད་པ་སྟེ། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཡིན་པ་ལ་སྲས་མེད་ནས་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལྷ་རྣམས་[6]ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པས། དུས་གཅིག་[7]ན་དེའི་ཆུང་མའི་མངལ་དུ་སེམས་ཅན་ཞུགས་པས། བསམ་པ་ཡང་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱུང་ལ། ཟླ་བ་དྲུག་ན་ཉི་ཟླ་ཕྲུག་པར་[8]འཆར་བ་དང་། རྒྱ་མཚོ་འཕྲུང་བ་དང་། རི་རབ་ཐེམས་པ་དང་།

1 ‘རྟོགས་པ་བརྗོད་ནས་ལོ…’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། སྣར་ཐང་ཀུན ཤོག ༥༣/བ.

2 ‘ཀིལཔལ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ གོང་།

3 ‘སཀར’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ གོང སྣར་ཐང་ཀུན ཤོག ༥༣/བ. ‘सगरपा’ – रा० पुरा० नि० पृ० १२५ ‘སཀར = སཪ་རྡུ’ - རྟོགས་བརྗོད་གོ་རིམ ཤོག ༦༣.།

4 ‘ཅེས་བྱ་བ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ གོང་།

5 ‘རྩ་བཞི’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག

6 ‘ལྷ་དག་ལ’ - སྣར་ཐང་ཀུན ཤོག ༥༨/ན . དེ་ཉིད།

7 ‘དུས་ཅིག་ན’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག

8 ‘འཕྲུར་བ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག

ཁམས་གསུམ་ཀང་མཐིལ་དུ་མནན་པའི་རྨི་ལམ་བྱུང་བས། དེ་རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་པས། ངས་མི་ཤེས་པས་མཆོད་གནས་པཎྜི་ཏ་དང་བྲམ་ཟེ་ལ་དྲི་བར་བྱ་གསུངས་ནས། དེ་དག་ལ་ཆོས་སྟོན་ཡོན་དང་བཅས་པ་ཕུལ་ནས་ཞུས་པས། དེ་དག་གིས་བརྟགས་པ་ན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་འཛིན་པའི་རྒྱལ་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞིག་བལྟམ་པར་འདུག་པ་ལ། དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་པ་མི་དགའ་བས། དེ་དགའ་བའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་འབྱུང་གནས་ཤིག[1]འཁྲུང་ངོ་[2]བྱས་པས། ཐམས་ཅད་དགའ་བར་གྱུར་ཏོ།།

དེ་ནས་ཟླ་དགུ་ངོ་བཅུ་ཚང་བ་དང་། བལྟམས་པ་ཡང་མཚན་ཕྱེད་ན་བསོད་ནམས་དང་ལས་ལས་གྲུབ་པའི་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གི་པདྨའི་སྟེང་དུ་བཙས་ཏེ[3]། ཡུལ་ཕྱོགས་དེར་འདོད་པའི་ཡོ་བྱད་ཀྱི་ཆར་བབས་པས། སྐྱེ་བོ་དགེ་ངོ་མཚར་ནས་སུའི་མཐུ་སྙམ་པ་དང་། ཉིན་ཕྱེད་ཙམ་ནས་དེའི་མཐུ་ཡིན་པར་ཤེས་ནས། མཚན་ཡང་མཚོ་སྐྱེས་གཞོན་ནུ་ཞེས་བཏགས[4]།

དེའི་མཐུས་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལོངས་སྤྱོད་ལ་སྤྱོད་པ་ན། ཡང་སྲས་གཅིག་བལྟམས་ནས་མཆེད་གཉིས་སུ་སོང་བ་དང་། ཡབ་ཡུམ་[5]གྲོངས་ནས་རྒྱལ་སྲིད་གཅེན་ལ་ཕུལ་བས། ཁོང་གིས་གཅུང་ལ་གཏད་དེ།

---

1 ‘འབྱུང་གནས་ཞིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/ན.

2 ‘འཁྲུངས་སོ།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/ན .

3 ‘བཙས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག

4 ‘ཞེས་བཏགས་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། བཏགས་ཏེ སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/ན .

5 ‘ཡབ་ཡུམ་རྣམས’ - པེ་ཅི ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།

དགེ་སློང་མཛོད་ནས། ཤྲཱི[1]ཎྜ་ནར་བྱོན་པའི་ཚེ། ལམ་ཁར་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱིས་དགེ་སློང་ཞིག་ཏུ་སྤྲུལ་ཏེ་མཇལ་བས་ངོ་མ་ཤེས་པ་ལ། སྤྲུལ་པ་དེས་དགེ་སློང་(མཆོ་སྐྱེས་)ལ་གཏམ་དྲིས་པར་བདེན་པར་གསུངས་པས[2]། (སྲིར་)དེ་ལ་ལོངས་སྐུ་དང་འཕྲད་པར་འདོད་དམ། གསུངས་པས། དགེ་སློང་གིས་(མཆོ་སྐྱེས་)ང་ལ་ཐབས་མེད་ན་འདོད་པ་དེ་ཀ་འདོད་དེ་གསུངས་པས། (དེས་)འོ་ན་ང་ལ་བླ་མར་འཛིན་ཅིང་གུས་ན་ཐབས་ཡོད་དོ།། གསུངས་པས[3]། དེས་ཕྱག་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཏེ་ཞུས་པས། དེས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས་སུ་དངོས་[4]སུ་སྤྲུལ་ནས་ཞལ་བསྟན་ཏེ་དབང་བསྐུར་གདམས་པ་གནང་ནས་འཕར་པ་དེ་ཉིད་དུ་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ[5]།།

དེས་ཀྱང་ཤྲཱིཎྜནར་བྱོན་ནས་སྒྲུབ་པ་བྱེད་པའི་ཚེ། རྣལ་འབྱོར་པ་འདྲ་བ་ཞིག་[6]བྱོན་ནས་དེ་ལ་ཁྱོད་འདིར་ཅི་བྱེད་པ་ཡིན། ཟེར་བས། དེས་ཀྱང་སྔར་པོར་གསུངས་པ་དང་། འོ་ན་ང་ཡིས་བསྙེན་བཀུར་བྱ་ཡི། གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་དུས་སུ་བདག་ལ་གདམས་པ་གནང་དགོས་ཟེར་བས། སྔར་གསུངས་ནས་ཕྱག་པ་སྐོང་པ་

---

1 ‘ཤྲཱིཎྜནར’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨ པེ་ཅི ཤོག ༥༩ འོག

2 ‘གསུངས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང་།

3 ‘ཐབས་ཡོད་དོ་གསུངས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ དེ་ཉིད།

4 ‘ལྷ་ཚོགས་དངོས་སུ’ - སྒྲུབ་ཀུན ༥༨/བ.

5 ‘གྱུར་པ་དང་།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/བ.

6 ‘འོངས་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང་།

ཞིག་[1]ཏུ་བཞུགས་པ་ན[2]། མི་དེས་གཡོག་བྱས་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྒྲུབས[3]། དེའི་བར་དུ་མུ་གེ་ཆེན་པོ་བྱུང་ནས་མི་མང་དུ་ཤི་བ་ལ། དེ་བླ་མའི་བར་ཆད་དུ་སོང་དོགས་ནས་གསང་གིན་[4]བླ་མའི་ཟས་ཀྱི་ལྷག་རོ་ཉུང་ངན་[5]གྱིས་འཚོ་བ་ན། ཞག་གཅིག་ཟས་བསླངས་[6]པས་མ་ཁུགས་[7]ནས་རྒྱལ་པོ་ཞིག་གི་ཁང་པར་ཕྱིན་པས་འབྲས་ཆན་[8]ལྷུང་བཟེད་གང་རྙེད་ནས་དེ་ཁྱེར་ཏེ་འོངས་པ་ན། བཟའ་བ་མ་ཟོས་པས་ཞུག་དེར་འོངས་པས་ལྷུང་ལངས་ཏེ་[9]ས་ལ་འགྲིལ་ནས་[10] འབྲས་ཆན་ཡང་པོ་ནས་སོང་བས། དགེ་སློང་དེས་དེ་ལ་ཆང་འཐུངས་སམ་ཅི། གསུངས་པས། ཆང་གང་ན་འཐུང་། ལྟོགས་ནས་ཤེད་ཆུང་སྟེ་འགྲིལ་བ་ཡིན་སྨྲས་པས། ཟས་མི་ཁུག་པ་ཅི་ཡིན། གསུངས་པ་ལ། བདག་གིས་བླ་མ་ལ་བར་ཆད་དུ་སོང་དོགས་མ་ཞུས་ཏེ། ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་མུ་གེ་ཆེན་པོ་བྱུང་ནས་ལྟོག་ཆགས་མང་པོ་ཡང་ཤི། སེམས་ཅན་རྣམས་སྡུག་བསྔལ་བར་གདའ་ཞུས་པས།

---

1 'སྣང་བ་ཅིག་ཏུ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༨ དེ་ཉིད།

2 'བཞུགས་པ་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང་།

3 'བསྒྲུབས་པ་དང་།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང སྒྲུབ་ཀུན ༢༨/བ

4 'གསངས་ཀྱིན' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང་།

5 'ཉུང་དུན་གྱིས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ གོང་ དེ་ཉིད།

6 'བླངས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ དེ་ཉིད།

7 'ཁུག་ནས' - སྒྲུབ་ཀུན ༢༨/བ.

8 'འབྲས་ཆེན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༨ དེ་ཉིད།

9 'ལྷུང་ལངས་ཏེ' ཞེས་པ - པེ་ཅི དཔར་མར་མེད, ཤོག ༦༠ གོང་།

10 'འགྲུལ་ཏེ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༢༨/བ.

སློབ་དཔོན་མཚོ་སྐྱེས་ཀྱིས་གསུངས་ནས་དེ་ཙ་ན་ང་ལ་མི་སླ་བར་གསང་བའི་ལུཊ་ཡོད་དམ། མུ་གེ་མི་འོང་[1]བའི་ཐབས་ང་ལ་ཡོད་པ་ལ་ད་འདོངས་[2]ཞིག་གསུངས་ནས། འབྲས་ཆན་[3]རྣམས་བསྡུས་ཏེ་རྒྱ་ཁར་བྱོན་ནས་གཏོར་མ་བཏང་། ཀླུ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དང་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་གཟིར་བས། དེ་རྣམས་ཀླད་པ་འགེམས་པ་སྐམ་བྱེད་ནས། དེར་འོངས་ཏེ་ལས་ཅི་བགྱི། ཟེར་བ་ལ[4]།

འཛམ་བུའི་གླིང་དུ་ཆར་མེད་ནས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཤི་བ་ཁྱེད་[5]ཀྱིས་ཉེས་པས། ད་ཡང་ཞག་དང་པོ་ལ་བཟའ་བའི་ཆར་ཕོབ་ཅིག དེ་བཞིན་དུ་གཉིས་པ་ལ་འབྲུ་དང་། གསུམ་པ་ལ་གནས་མལ་དང་། དེ་ནས་ཞག་གསུམ་དུ་རིན་པོ་ཆེའི་ཆར་ཕོབ་ཅིག དེ་ལྟར་བྱས་པ་དང་ཆུའི་ཆར་ཕོབ་ཅིག གསུངས་པས། (ཀླུ་རྣམས་ཀྱིས་)དེ་བཞིན་དུ་བཀའ་བསྒྲུབས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་སྡུག་བསྔལ་ལས་ཐར་བ་དང་། དེའི་སྙན་པ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་པར་གྱུར་ཅིང་། འདི་ནི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་མཚོ་སྐྱེས་ཀྱི་མཐུ་ཡིན་ནོ།། ཟེར་ཞིང་ཐམས་ཅད་དད་པར་གྱུར་ཏོ།།

---

1 'མི་ཡོང་བའི' - པེ་ཅི ༨༠ འོང ༧ དེ་ཉིད།

2 'ད་འདིང་ཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༨༠ དེ་ཉིད།

3 'འབྲས་ཆེན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/བ. དེ་ཉིད།

4 'ཟེར་བས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨ དེ་ཉིད། པེ་ཅི ཤོག ༨༠ འོག དེ་ཉིད།

5 'ཁྱོད་ཀྱིས'' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་སྔར་གྱི་གཡོག་ར་མ་(རྣམ་)ཞེས་པ་ལ་དབང་བསྐུར་ཏེ་གདམས་པ་གནང་བས་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།། གདམས་པ་ནི་དགྱེས་རྡོར་གྱི་བསྐྱེད་རྫོགས་ཀྱི་གདམས་པ་གནང་ནས་འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མ་བྱས་པར་མཁའ་སྤྱོད་ལ་མ་འགྲོ་ཞིག ད་དཔལ་གྱི་རི་ལ་སོང་ལ་འདི་ལྟར་གྱིས། འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ་གསུངས་ནས། བླ་མ་མཁའ་སྤྱོད་[2]ལ་གཤེགས་སོ།།

ར་མས་(རྣམས་) ཀྱང་དཔལ་གྱི་རི་ལ་ཉི་བ་ན་རྒྱལ་པོའི་བུ་མོ་དབང་དུ་བསྡུས་ནས་གཉིས་ཀས་ར་མར་(རྣམར་)གཙུག་ལག་ཁང་བཞེངས་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཏེ། མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུསྣགརའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༥) གུརུསཙཛྙཱ།

གུརུསཙཛྙཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། སཙཛྙཱསྐེ་ཐམས་ཅད་ཟ་བ་བྱ་བ་[3] ཡིན་ལ། དེ་ཡང་གྲོང་ཁྱེར་ཨཧྨིར་[4]བྱ་བ་རྒྱལ་པོ་སིདྡྷི་ཟླ་བའི་མངའ་རིས་ཡིན་ལ། དེ་ན་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་ཤིན་ཏུ་གྲོད་པ་ཆེ་ནས་ཟས་ཅི་ཐོབ་ཟ་བ་ན།

---

1 'ཐོབ་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༥ པེ་ཅི ཤོག ༦༠ དེ་ཉིད།

2 'མཁའ་ལ་གཤེགས་སོ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༥/ན . 109.

3 'ཐམས་ཅད་ཟ་བ་ཡིན་ལ།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༠ འོག

4 महर (सहर) - रा० पुरा० नि० पृ० १२५ ।

དུས་གཅིག་གི་ཆེ་བཟའ་བ་ཅི་ཡང་མ་རྙེད་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་ལྐོ་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང་གནས་པ་ན། དཔལ་[1]སརཧཔཱ་དེར་བྱོན་ནས་ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ—

'བདག་ཕོ་བའི་མེ་དྲོད་ཆེ་བས་བཟའ་བ་ཅི་ཟོས་ཀྱང་འགྲང་བ་མི་འོང་ལ[2]། ཁྱད་པར་དེ་རིང་བཟའ་བ་ཅི་ཡང་མ་རྙེད་ནས་སྡུག་བསྔལ་བར་གདའ་ 'ཟེར་བས། སརཧས་ཁྱོད་དེ་རིང་གི་ལྐོགས་པ་ཙམ་ཡང་མི་བཟོད་ན་ཡི་དྭགས་སུ་སྐྱེས་ན་ཅི་ཙུག་བྱེད། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། དེ་འདྲ་བ་གང་ན་ཡོད། ཟེར་བས། དེར་ལྟོས་དང་། གསུངས་ནས་ཡི་དྭགས་བསྟན་པས། འདི་འདྲ་བར་སྐྱེ་བའི་རྒྱུ་གང་ལགས། དེའི་རྒྱུ་བསྟན་པས་བླ་མ་འདི་འདྲ་བ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག་[3]ཞུ་ཟེར་བས།

[རྣལ་འབྱོར་པས་]དེ་ལ་དང་པོར་དབང་བསྐུར་ནས་ཧཱུྃསུཀའི་འཇུག་པ་བསྟན་པ་ནི—

གྲོད་པ་ནམ་མཁའ་སྟོང་པ་ལ།།
ཕོ་བའི་མེ་དྲོད་དུས་མེ་འབར།།
སྣང་སྲིད་བཟའ་བཏུང་གཉིས་ཡིན་ཏེ།།

---

1 'དཔལ་' ཞེས་- པེ་ཅི་ དཔར་ལ་མེད། ཤོག ༦༧ གོང་།

2 'མི་ཡོང་ལ' - པེ་ཅི་ ཤོག ༦༧ གོང 198. Vol 87.

3 'ཐབས་ཅིག' - སྣར་ཀུན ཤོག ༥༥/ན.

ཟོས་པས་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་[1]སྒོམས།།

ཞེས་[2]གསུངས་ཏེ། དེས་ཀྱང་གུས་པས་བསྒོམས་པས། ཉི་ཟླ་གཉིས་ཀྱང་འཛིགས་ནས་རི་རབ་ཀྱི་ཁོང་སེང་དུ་ཡིབ་པས། མི་རྣམས་མཁྲིན་གཅིག་ཏུ། སྣང་བ་ནུབ་པར་གྱུར་[3]ཀྱི་མ་ཟེར་བས། བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོ་ལ་[4]ཊྣཀིམྣ་ཀུན་གྱིས་བསྐུལ་བས་དེ་དེར་བྱོན་ཏེ། (དེ་ལ་) ད་ཐམས་ཅད་ཟོས་ཟིན་པས་མེད་པར་སྒོམས་ཤིག་གསུངས་པས། དེ་བཞིན་དུ་བྱས་པས་སྣང་སྟོང་ཟུང་འཇུག་ཏུ་རྟོགས་ཏེ། གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་ཉི་ཟླ་ཡང་བྱུང་བས་ཐམས་ཅད་དགའ་བར་གྱུར་ཏོ།།

དེར་ལོ་བཅོ་ལྔ་ནས་གྲུབ་པ་བརྙེས་ཤིང་། རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ་འགྲོ་དོན་ལོ་དྲུག་བརྒྱར་[5]མཛད། མཐར་འཁོར་སྟོང་དང་བཅས་ཏེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུསཏྭཀཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༧༦) གུ་རུ་ནཱགབོདྷི།

གུརུནཱགབོདྷིའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་སྲུལྤཏའི་[6]དགོན་པ་ན་བཞུགས་པའི་ཚེ། རྒྱ་གར་ནུབ་ཕྱོགས་ནས་བྲམ་ཟེ་ཞིག་རྐུ་ཡིན་མཐར་གྱིས་ཡོང་སྟེ། བླ་མ་དེའི་སྒོ་ནས་བལྟས་པས། གསེར་གྱི་སྣོད་ཀྱི་ནང་དུ་བཟའ་བ་གྱུ་ནོམ་པ

1 ‘བསྒོམས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

2 ‘ཤེས་གསུངས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང དེ་ཉིད།

3 ‘བར་གྱུར་ནས་ཀྱི་མ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༥/བ · དེ་ཉིད།

4 ‘བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོ་ཊྣཀིམ…’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

5 ‘དྲུག་བརྒྱ་མཛད’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༥ པེ་ཅི ཤོག ༦༧ འོག

6 ‘པུལྤཏ’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ འོག

གསོལ་བ་མཐོང་སྟེ། དེ་ལ་བརྐུ་བའི་བསམ་པ་ཤར་བ་བླ་མས་ཐུགས་ཀྱིས་མཁྱེན་ཏེ། གསེར་གྱི་སྣོད་དེ་ཐང་ལ་བསྒྱུར་བས་འདི་ལྟར་མཛད་པ་ཅི་སྙམ་པ་ན། དེས་དེའི་ནང་དུ་ཕྱིན་ནས་བདག་བརྐུ་སྙམ་པ་ལ། བརྐུ་མི་དགོས་པར་བདག་ཅན་དུ་བསྒྱུར་[1]བ་འདི་ཅི་ལགས། ཞུས་པས།

"བླ་མས་ང་ནི་འཕགས་[2]པ་ཀླུ་སྒྲུབ་བྱ་བ་ཡིན། ངའི་ནོར་ལ་སོགས་པ་ནི་གཞན་དོན་ཡིན་པས། ཁྱོད་རྐུ་མི་དགོས་ཀྱི་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་འདི་དག་ཟོ་ལ་སྡོད་ཅིག འགྲོ་བའི་དུས་སུ་ནོར་ཅི་དགོས་པ་བསྒྱུར་ལ་བཏང་གི" གསུངས་པས། དེས་ (དེའི་) མཛད་སྤྱོད་ལ་དད་དེ་ཆོས་ཞུས་པས།

དེ་[3]གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐུར་ནས་མངོན་ཞེན་རང་གྲོལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ༎ —

བྱ་བ་ཐམས་ཅད་གློས་ཐོང་ལ།།
སྤྱི་བོར་ཀུན་བརྟགས་རྣ་མཆོག་ནི།།
རིན་ཆེན་མ་[4]གད་རང་བཞིན་ཅན།།
གསལ་[5]འོད་འཕྲོ་བ་བསྒོམ་པར་བྱ།། ༡

1 'བསྒྱུར་བས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༡ འོག
2 'འཕགས་པ' ཞེས་པ་པེ་ཅི་དཔར་ལ་མེད - ཤོག ༦༡ འོག
3 'དེར་གསང…' - པེ་ཅི ཤོག ༦༡ དེ་ཉིད།
4 'མར་གད' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༥/བ .
5 'གསལ་ལ་འོད་འཕྲོ་སྒོམ…' - པེ་ཅི ཤོག ༦༡ འོག

ཞེས་[1]གསུངས། (དེ་)ནས་གནས་ཁང་གི་མཐའ་མར་རིན་པོ་ཆེས་གང་བར་བྱས་ནས་བཞག་པས་དེ་དགའ་སྟེ་གདམས་པ་དེ་བསྒོམས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་རྡོ་རྗེ་ཆེར་སོང་ནས་གཡོ་འགྱུལ་བྱེད་པའི་ཚེ་དེ་ཐུག་ནས་ཕྱག་བཙལ་བ་ན། བླ་མ་དེ་(དེར་)བྱོན་ནས། ཁམས་བདེའམ། གསུངས་པས། དེས་མ་བདེ་བའི་གཏམ་ཞུས་པས་དེ་མཁྱེན་ནས་ཡང་གདམས་པ་གསུངས་པ་ནི

ཀུན་བརྟགས་[2]བསྒོམས་པའི་རྡོ་ཆེན་[3]གྱིས།།
བདེ་བ་ཐམས་ཅད་འཇོམས་པ་ལྟར།།
དེ་བཞིན་[4]དངོས་པོར་མངོན་ཞེན་པས།།
སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་ལོ།། ༣
ཆོས་རྣམས་ཡང་དག་ཡོད་མིན་ཏེ།།
མཁའ་ལ་སྤྲིན་ནི་འཁྲིག་[5]པ་བཞིན།།
སྐྱེ་བ་གནས་པ་འགག་པ་གསུམ།།
གང་ལ་གང་གི་ཕན་གནོད་འབྱུང་།། ༣
དེ་བཞིན་སེམས་ཉིད་དག་པ་ལ།།
ཅི་ཞིག་ཕན་ཞིང་ཅི་ཞིག་གནོད།།

---

1 'ཅེས་གསུངས' - པེ་ཅི པོད ༨༧ འགྲེལ 198. Vol 87.
2 'ཀུན་བརྟགས་གོམས་པའི' - སྣར་ཐང ཀུན ༥༦/ན.
3 'རྡོ་ཅན' - པེ་ཅི པོད ༨༧ འགྲེལ
4 'དེ་ཕྱིར' - སྣར་ཐང ཀུན ༥༦/ན . པེ་ཅི པོད ༨༧ འགྲེལ
5 'མཁའ་ལ་སྤྲིན་བཞིན་འབྱུང་བ་བཞིན།' - པེ་ཅི པོད ༨༧ འགྲེལ དེ་ཉིད།

གདོད་ནས་མ་གྲུབ་གཟུང་འཛིན་དེ[1]།།
རང་རང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་།། ༡

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་གནས་ལུགས་སྟོང་པ་ཉིད་རྟོགས་ཏེ། དེ་ལ་ཟླ་དྲུག་མཉམ་པར་བཞག་པས་འཁོར་འདས་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། མཚན་ཡང་ནཱ་ག་བོ་དྷི་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས། བླ་མའི་གདུང་འཚོབ་ཏུ་བསྐོས་ནས་སེམས་ཅན་ལ་གྲུབ་པ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་དེ —

ས་འོག་[2]འགྲོ་དང་རལ་གྲི་དང་།།
ཚར་བཅད་ཕན་འདོགས་གཉིས་ཀ་དང་།།
རིལ་བུ་མིག་སྨན་གཏེར་རྣམས་དང་།།
ཀང་མགྱོགས་དག་[3]དང་བཅུད་ཀྱིས་ལེན།།
བརྒྱད་པོ་གང་འདོད་བྱིན་ཅིག་གསུངས།། ༡ །།

དེ་ལྟར་བྱམས་པའི་བསྟན་པའི་བར་དཔལ་གྱི་རི་དེ་ཉིད་དུ་གནས་ནས་[4] འགྲོ་དོན་གྱིས་ཤིག་གསུངས་ནས་བཞག་པ་ཡིན་ནོ། །ལོ་ཉི་ཁྲི་བཞུགས་སྐད་དོ།།

གུརུནཱགབོདྷིའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘འཛིན་སྟེ།’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་ དེ་ཉིད།

2 ‘འོག་བསྒྲོད’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

3 ‘དག་ཀྱང་’’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

4 ‘དེ་ཉིད་གནས་པས’ - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན. ༡ དེ་ཉིད།

༧༧) གུརུདཱརིཀཱཔཱ།[1]

གུརུདཱརིཀཱཔཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་སཱལིཔུཏྲ[2]བྱ་བ་ན་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲཔཱལ[3]བྱ་བ་གནས་པ་ལ། དེ་ལིངས་ལ་སོང་ནས་ཉི་མ་དྲོས་པ་ན་ཚོང་འདུས་སུ་འོངས་པ་ལ་མི་ཀུན་(གྱིས་)ཕྱག་བྱེད་པའི་ཆེ་ལཱུ་ཧི་[4]པཱ་དེ་ན་འདུག་པ་རྒྱལ་པོས་མཐོང་བ་དང་རྒྱལ་པོས་སྨྲས་པ—

"ཁྱོད་འདྲ་བའི་སྐྱེས་བུ་བྱད་བཞིན་བཟང་ཞིང་ལྷ་ན་སྡུག་པ་ལ། འདི་འདྲ་བའི་ཉའི་རྒྱུ་སྣོ་མི་གཙང་བ་མ་ཟ་ལྷོ་[5]ཞིག །ཁྱོད་ལ་བཟའ་བ་ཅི་དགོས་བདག་གིས་སྟེར་ཞིང་[6]། གཞན་གང་དགོས་པ་ཡང་སྟེར། རྒྱལ་སྲིད་དགོས་ཀྱང་སྟེར་རོ།།" ཟེར་བས། དེས་སྨྲས་པ་"མི་འཆི་མི་རྒས་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་དེ་ཀུན་བདག་ལ་དགོས་སུ་[7]རུང་"ཟེར་རོ།།

རྒྱལ་པོས་འོ་ན་བདག་གིས་རྒྱལ་སྲིད་དང་སྲས་མོ་སྦྱིན་བྱས་པས། [ལཱུ་ཧི་པས་]བདག་མི་དགོས་ཟེར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་མི་དགོས་བྱས་པས།(དེ་ན་རེ་)

---

1 'དཱརིཀཔ'-སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན. དེ་ཉིད། 'ཏྟརིཀཔ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

2 'སལཔུཏྲ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན. 'སཱལཔུཏྲ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང उड़ीसा (सालिपुत्र) – रा० पु० नि० पृ० १२५ । प्रथम संस्करण–१९५८ .

3 'ཨིནྡྲཕལ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང དེ་ཉིད།

4 'ལུཨི་པ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན. པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང དེ་ཉིད། 'लुईपा'–रा० वही

5 'མ་ཟ་ཤིག' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

6 'བདག་གིས་སྟེར།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན.

7 'དགོས་ཟེར་རོ།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

རྒྱལ་སྲིད་ནི་མཚོགས་ཆུང་ལ་ཉེས་དམིཌ་ཆེ་བར་འདུག་པས[1]ངས་ཀྱང་སྤྲངས་པ་ཡིན་ཞེས་སྨྲས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲཔཱུལ་ཡང་རྒྱལ་སྲིད་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཀྱི་བློན་པོ་ལ་སྨྲས་པ།

ང་ཡང་འཇིག་རྟེན་འདི་གཙུག་བྱས་ཀྱང་ཆེ་ཕྱིད་པས། ཟོས་པ་དང་གྱོན་པ་ནི་བྱེད་མ་ཡོགས་[2]པར་འདུག་པས་ཆོས་ལ་འགྲོ །རྒྱལ་སྲིད་བུ་ལ་གཏད་པ་མི་ལེགས་སམ། སྨྲས་པས། བློན་པོས་རུང་ཞུས་ནས་སྲས་ལ་རྒྱལ་སྲིད་གཏད་དེ། རྒྱལ་བློན་གཉིས་ཀྱིས་དུས་ཁྲིད་དུ་ལཱུཧི་པཱའི་གམ་དུ་ཕྱིན་ནས་སྒོ་བརྡུངས་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་སུ་ཡིན་སྨྲས་པས། བདག་ཅག་རྒྱལ་བློན་ལགས་སོ་སྨྲས་པ་ན། འོ་ན་ནང་དུ་ཤོག གསུངས་ནས། དེ་གཉིས་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར་ནས། དེ་གཉིས་ཀྱིས་ཡོན་དུ་ཁོ་རང་གཉིས་ཕུལ་[3]ལོ།།

[དེ་ནས་དཔོན་སློབ་གསུམ་ག] གཞན་གྱི་ཡུལ་ཨོ་དེ་ཤར་[4]ཕྱིན་པ་དང་། དེར་དཔོན་སློབ་གསུམ་བསོད་སྙོམས་མཛད་ཅིང་བཞུགས་ལ། དེ་ནས་ཡུལ་ཐྲིར་[5]པུར་བྱོན་ནས་ཛཱནྟཔུར་གྱི་[6]གྲོང་ཞེས་ཀྱང་ཟེར་ལ། དེ་ན་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་

1 'ཉེས་དམིགས་ཆེ་བས།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

2 'ཕྱིད་མ་ཡོག་པར' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།

3 'འཕུལ་ལོ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/བ· 112.

4 'ཨོ་དེ་ཤར' 'ཨོ་དེ་ཤ' 'ཨོ་ཊི་ཤ' ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་པར་སེམས། ལེཌ་སྦྱར་དུ 'ओडिविष्टापम' ཞེས་བྱ་བ་ཡོད།

5 'ཐྲིརཔུར་ཞེས་པ' - ཨིལོ་རའི་བརྡ་སྤྲིང་མིན་ནམ། དཔྱད། དེང་སང་ས་ཆ་དེ་ལ་ཡུལ་དེ་གཞིའི་མི་དམངས་རྣམས་ཝི་རུལ विरुल དང་ विरूर ལ་སོགས་པ་བརྗོད་བཞིན་འདུག །

6 'ཛཱནྟཔར' - ཞེས་པ་ཡང་། དེ་སང་གི 'ཨཛནྟ' ཞེས་པའི་གནས་ཆེན་དེ་མིན་ནམ་དཔྱད།

གསུམ་ཡོད་དེ། དེ་ན་ལྷ་ཁང་ཞིག་ཡོད་ལ་དེའི་མཆོད་པ་བྱེད་པའི་གར་མཁན་མོ་བདུན་བརྒྱ་ཡོད་པའི་གཙོ་མོའི་གམ་དུ་ཕྱིན་ནས། དེའི་སྒོ་རྩ་པ་སུམ་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་ལ་སླེབས་པ།

ཁྱེད་ཅག་གི་ཛེ་མོ་མི་མི་ཉོ་འམ། དེ་དག་གི་ནང་དུ་སླེབས་པས་[1]བཙུན་པོ་ན་རེ། ཉོ་ལྷར་འདོང་ཟེར་ནས་སྒོར་བྱུང་སྐྱེ་བལྷས་[2]པས། ཁྱེའུ་ལྷ་ན་སྡུག་པ་ཞིག་མཐོང་ནས། རིན་ཅི་དགོས། ཟེར་རོ། །གསེར་ཧོ་ལ་བརྒྱ་[3]དགོས་བྱས་ཏེ། རྒྱལ་བུ་དེ་ལ་བཙོངས། [དེ་]ནས་གཙིགས་[4]སུ་མཚན་ལ་མི་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཉལ་དུ་མ་གཞུག་པར་གཅིག་པོར་གཞོག་[5]ལ། ཁོའི་[6]རིན་འཁོར་བ་དང་ཐོང་ཞིག་ཞེས་ཟེར་ནས་སློབ་དཔོན་དང་བྲམ་ཟེའི་བུ་གཉིས་སོང་ངོ་།།

དེ་ནས་རྒྱལ་བུ་དེས་[7]དྲ་རི་མོའི་ཁྱིམ་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་ཀང་པ་བཀུས་པ་དང་། བསྐུ་བྱུག་ལ་སོགས་པ་བྱས། [དེ་ཀུན་ཏུ་]ལྷ་མའི་མནའ་ངག་མ་བརྗེད་པར་བྱས། [དེས་]ལས་[8]ཀུན་གྱི་ཐོག་མར་འདྲིལ་བའི་ལས་བྱེད་དུ་བཙུག་

---

1 དེ་དག་གི་ནང་དུ་སླ་མཁན་གཙོ་མོ་ན་རེ། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/བ.

2 'ལྷས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།

3 'ལྷ་བརྒྱ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག

4 'རྩིགས་སུ' - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།

5 'ཞོག་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/བ . ༦ དེ་ཉིད།

6 'ཁོས་རིན' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག ༧ དེ་ཉིད། 'ཁའི་ཁོས' གཉིས་ཀ་སྒྲུབ་ཀུན་ལ་མེད། ཤོག དེ་ཉིད།

7 'ཏྲ་རི་མོའི' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག

8 'བྱས་ཏེ།' ཐམས་ཅད་ཀྱི - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ དེ་ཉིད། སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/བ. དེ་ཉིད།

པས། ལས་ཀྱིས་འཚོས་པའི་གཡོག་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྟིང་དུ་སྡུག་པ་དང་། དེའི་དུས་སུ་དྷ་རི་ཀོའི་གམ་དུ་རྒྱལ་པོ་ཛིན་པ་ཞེས་ཀྱང་། བྱ་ཀུཊྚིཞེས་ཀྱང་བྱ་[1]སྟེ། རྒྱལ་པོ་གཞན་ཞིག་གསེར་རྡོ་ལ་ལྔ་བརྒྱ་ཙམ་ཁུར་ནས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་དོན་དུ་གཉེར་ནས་འོངས་སོ[2]།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བར་བྱས་ནས་གསེར་རྡོ་ལ་བདུན་[3]བདུན་འཇལ་གྱིན་འདུག་པ་དང་། དེ་ནས་ཞག་འགའ་ཙམ་ནས་ཀུཊྚི་ཕོ་བའི་མི་དྲོད་ཤོར་བ་དང་། ཁ་ཟས་ཟྭཀ་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ཕོ་བ་ན་བས། དེས་[4]མཚན་ཕྱེད་ན་ཕྱི་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ན། ལྡུམ་རའི་ནང་ནས་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་པ་དང་འོད་ཅིག་འོང་བ་དེས་མཐོང་ནས་དེར་ཕྱིན་པས་[དྷ་རི་ཀོའི་]ཁོལ་དེ་བུ་མོ་བཅོ་ལྔ་ཙམ་གྱིས་ནི་བསྙེན་བཀུར་བྱེད། ཁོ་རང་ཁྲིའི་སྟེང་ན་འདུག་པ་མཐོང་ནས་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། རིངས་པར་ཁྱིམ་དུ་ཕྱིན་ནས་སྨད་འཚོང་མ་ལ་སྨྲས་པ་དང་། [སྨར་]དེ་ལྟར་གཉིས་ཀ་ཕྱིན་པས། སྔ་མ་བཞིན་མཐོང་ནས་སྨད་འཚོང་མ་འགྱོད་པ་སྐྱེས་ཏེ། དེའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་བྱས། བསྐོར་བ་བྱེད་ཅིང་བདག་ཅག་སེམས་ཅན་ལན་པས། འཁྲུལ་ཏེ་ཡོན་ཏན་ཅན་དུ་མ་ཤེས་ནས་ཉིད་བཀོལ་བས། བདག་ལ་སྡིག་པ་བྱུང་བ་བཟོད་པར་གསོལ[5]།

---

1 'བྱ་བའི་རྒྱལ་པོ' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/བ. ༧ པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང དེ་ཉིད།

2 'འོངས་པ་དང' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན.

3 'བདུན་འཇལ་གྱིན' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།

4 'དེའི་མཚན་ཕྱེད' - པེ་ཅི ༦༣ སྣྲུབ་ཀུན ༥༧ །

5 'གསོལ་ཤིང་།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང སྣྲུབ་ཀུན ལོག ༥༧/ན .

ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་མཆོད་གནས་མཛད་པར་ཞུ་ཞུས་པས། དེས་མ་བཞེད[1]།

དེ་ནས་སྨད་འཚོང་མ་དང་ཇོ་ཇོ[2]པས་ "བདག་ཅག་[3]ཀུང་རྗེས་སུ་གཟུང་དུ་གསོལ་"ཞུས་པས། བར་སྣང་ནས་གྲོང་ཁྱེར་སྟོང་བར་འབེབས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མན་ངག་གསུངས་པ་[4] —

འཇིག་རྟེན་ཕལ་བའི་རྒྱལ་པོ་ཡི།།
གདུགས་དང་གླང་པོ་ཁྲི་དག་ལས།།
ང་ཡི་རྒྱལ་སྲིད་ཁྱད་པར་འཕགས།།
ཐར་པའི་གདུགས་དང་ཐེག་ཆེན་ཞོན།། ༢
སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་གདན་ཁྲི་ལ།།
དཱརིཀཔཱ་ལོངས་སྤྱོད་བྱེད།། ༣

ཅེས་གསུངས[5]། སློབ་དཔོན་འདི་དཱ་[6]རི་མོའི་ཁོལ་པོ་བྱས་པས་མཚན་[7]དཱརིཀཔཱ་བྱ་བར་གྲགས[8]། མཐར་འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུདཱརིཀཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ཞུས་པས་མ་བཞེད་དེ' . པེ་ཅི་ཤོག ༦༣ གོང ༦ སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
2 'ཇོ་ནམས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན .
3 'བདག་ཀུང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག དེ་ཉིད།
4 'མན་ངག་བྱེད་ནས་བསྒོམ་པར་བྱས་ཏེ། དེས་གསུངས་པ།' སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
5 'ཅེས་གསུངས་པ་ལ།' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན . 113 པེ་ཅི ཤོག ༦༣
6 'འདི་ནི་དཱ་རི…' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན . 'འདི་ཌཱརིམོའི' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང་།
7 'མཚན་ཞེས་པ་སྒྲུབ་ཀུན་ལ་མེད།' - ཤོག ༥༧/ན .
8 'ཌཱརིཀ་པར་གྲགས་ཤིང་' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ གོང སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན

༧༨) ཀུརྟུཔུཏལི་པཱ།[1]

ཀུརྟུཔུཏལི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀླཾགཱལ་ན་[2]དམངས་རིཀ་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་གིས་ཁྲིམ་ཐབ་ལྷངས་ནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ། ལྷ་མ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་[3] དེར་བྱོན་ནས་བསོད་སྙོམས་མཛད་པས། (དེས་)བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་གྱ་ནོམ་པ་ཕྲངས་[4]ཤིང་། ཡང་དག་པར་དད་དེ་ལྷ་མར་བཟུང་བ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་(དེ་ལ་)དགྱེས་རྡོར་གྱི་དབང་དང་གདམས་པ་གནང་། དགྱེས་རྡོར་གྱི་ཐང་ཀ་ཞིག་ཀྱང་གནང་ནས། འདི་ཐོགས་[5]ལ་གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དུ་བསོད་སྙོམས་གྱིས་སྒྲུབས་ཤིག གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྒྲུབས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པ་སུས་ཀྱང་མ་རྟོགས་པ་ན།

ཞག་གཅིག་རྒྱལ་པོའི་ཁང་པར་སློང་དུ་ཕྱིན་པས[6] དེའི་ཐང་སྐུ་ལ་ཁོའི་ལྷ་གདན་དུ་བྲུས་ནས་འདུག་པ་མཐོང་བས། རྒྱལ་པོས་དེ་ལ་གཤེ་རུ་བྱུང་བས། དེ་ན་རེ། འདི་བདག་གིས་བྲིས་པ་མ་ཡིན། ལྷ་བཟོ་བས་བྲིས་པ་ལགས་པས།

---

1 'སུཏལིཔ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༦/ན. 'पुतुलिपा' – रा० पु० नि० पृ० १२५ ।

2 'ཀླགཱལར' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

3 'བ་ཅིག' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན. 'པ་གཅིག' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག

4 'ཕྲངས་ཤིང' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/ན.

5 'འདི་ཁྱེར་ལ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༣ འོག དེ་ཉིད།

6 'ཕྱིན་པ་ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༧/བ. དེ་ཉིད།

ཉིས་[1]པ་ཡང་བདག་གི་ལྷ་ཁྱེད་རང་གི་ལྷའི་གདན་དུ་བྱས་པ་བྲིས་པས་ཆོག་མོད་བྱས་པས། དེ་བདེན་སྙམ་སྟེ[2]། དེས་ལྷ་བཟོ་བ་བཀུག་ནས་བྲིས་པས།

(རྣལ་འབྱོར་པ་)དེ་ན་རེ། ངའི་ལྷའི་གདན་དུ་ཁྱོད་ཀྱི་ལྷ་འོང་བ་ལ་འདི་ལྟར་བྲིས་ཀྱང་ཅི་བདུག། བྱས་པས། (རྒྱལ་པོས་)དེ་ཅིས་དེ་ཟེར་བས། (རྣལ་འབྱོར་པས་)ངའི་ལྷ་ནི་ལྷའི་ལྷར་གྱུར་བས་སོ་བྱས་པས། (རྒྱལ་པོས་) དེའི་ཏཱ་ཅི་ཡོད་ཟེར། (རྣལ་འབྱོར་པས་)རྒྱལ་པོའི་ལྷ་སྟེང་དུ་བྲིས་ཀྱང་ནངས་པར་འོག་དུ་བབས་[3]ནས་སྡོད་པ་ཡིན་ནོ་བྱས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ། དེ་ལྟར་བྱུང་ན་ང་ཡང་ཁྱེད་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་པ་ལཱ་ཟེར་ཆད་བྱས། དེའི་དགོངས་ཀ་[4]རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པས་ཕྱི་དེ་བལྟས་པ་ན། རྒྱལ་པོའི་ལྷ་གདན་དུ་སོང་ནས་འདུག་པ་དང་[5]། རྒྱལ་པོ་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ་བླ་མར་བཟུང་[6]ནས་ཆོས་ཞུས་སོ།།

དེའི་རྒྱལ་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཆོས་ལ་ཞུགས་པས། བླ་མ་པུཏལིཔ་བྱ་བར་གྲགས་ཤིང་། ལོ་ལྔ་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། མཐར་འཁོར་ལྔ་བརྒྱ་དང་བཅས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུཔུཏལིཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 ‘ཉིད་རང་ཡང་བདག་གི་ལྷ’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག

2 ‘དེ་བདེན་སྙམས་ཏེ་ལྷ་བཟོ་བ’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག

3 ‘བབ་ནས’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧ /བ. དེ་ཉིད།

4 ‘དགོངས་ཁ’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག དེ་ཉིད།

5 ‘འདུག་པས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༨༣ འོག

6 ‘བཟུང་ནས’ - སྣར་ཐང ཤོག ༥༧/བ.

༧༩) གུཪུཔནཧཔཱ།

གུཪུ[1]པནཧཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། པནཧཔཱེ་མཆིལ་ལྷམ་ཅན་ནོ། །དེ་ནི་ཡུལ་སིནྡྷོནགར་བྱ་བ་ན་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་མཆིལ་ལྷམ་ལ་བརྟེན་[2]ནས་ཡོད་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་'མཐུ་སྟོབས་ཅན་'ཅེས་པ་བསོད་སྙོམས་བསླངས་[3]ནས། མཐར་གྱིས་དུར་ཁྲོད་[4]དགོན་པར་བྱོན་པ་མཐོང་པས། དེ་ལ་དད་པ་སྐམ་སེམས་ནས་དེས་དེར་ཕྱིན་པས། (རྣལ་འབྱོར་པས་) ཁྱོད་ཅི་ལ་འོངས། གསུངས་པས[5]། (དེས་) ཆོས་ཞུ་(རུ་འོངས་) ཟེར། (དེ་) ནས་(རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་) འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་། ཐར་པའི་ཕན་ཡོན་གསུངས་པས། དེ་འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ཏེ། བླ་མ་འཁོར་བ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག་[6]ཞུ། ཟེར་བས། རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་ནས་མངོན་ཞེན་ལམ་ཁྲིར་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།།

མཆིལ་ལྷམ་རྒྱུན་ཅན་གྲོན་ནས་འགྲོ་བ་སོགས།།
རྒྱུགས་པའི་སྣྲ་ནི་སྣན་པ་བྱུང་བ་དེར།།

---

1 'ཨུཔནཧ' - སྣར་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ. 'पनहपा' - रा० पु० नि० पृ० १२५ ।
2 'རྟེན་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༩༨ གོང་ དེ་ཉིད།
3 'བླངས་ནས' - པེ་ཅི་ ཤོག ༦༨ གོང་ དེ་ཉིད།
4 'མཐར་གྱིས་དགོན་པར་བྱོན་པ' - སྣར་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ. དེ་ཉིད།
5 'གསུངས་པ་ན།' - སྣར་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ.
6 'ཐབས་ཅིག' - སྣར་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ.

སྙིང་ཙམ་དག་ཀྱང་དེ་རུ་འདུས་[1]པ་ན།།
དེ་ཡང་གྲགས་སྟོང་དབྱེར་མེད་[2]བསྒོམ་པར་བྱ།། ༧

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེའི་དོན་གོ་ནས་བསྒོམས་པས། ལོ་དགུ་ན་མཐོང་སྣང་གི་དྲི་མ་དག་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། བླ་མ་པནྟ[3]བྱ་བར་གྲགས་ཤིང་། རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ་ལོ་བརྒྱད་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས། འཁོར་བརྒྱད་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་པནྟ་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༠) གུ་རུ་ཀོ་ཀི་ལ་པཱ།[4]

གུ་རུ་ཀོ་ཀི་ལ་[5]པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གྲོང་ཁྱེར་ཙམ་པཱ་ཀ་(ཙམ་པ་ཀ་བ་) ན་རྒྱལ་པོ་ཞིག་[6]ཡོད་པ་ལ། སོས་ཀའི་དུས་སུ་རྒྱལ་སར་ཚ་བས་མ་ཆུགས་ནས།[7] ཤིང་ཨ་མྲའི་སྐྱེད་མོས་ཚལ་གྱི་གྲིབ་མ་དང་། ཆུ་གྲང་མོ་དང་མེ་ཏོག་ཤིང་ཐོག་སྣ་

1 'འདུག་པ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༤ གོང་།

2 'སྒོམ་པར་བྱ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༤ གོང་།

3 'ཨུ་པནྟ་བྱ་བར' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/ན. །

4 'པཱ' ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་རྣམས་སུ་གྲུབ་ཐོབ་ཀུན་གྱི་མཚན་མཐའ་ལ་འདུག་ཀྱང་བོད་དཔེར་རེ་འགའ་ལ་འདུག་རེ་འགའ་ལ་མི་འདུག

5 'ཀོ་ཀི་ལི་པ' - སྣྲུབ་ཀུན ༥༨ །

6 'ཅིག་ཡོད་པ་ན' - སྣྲུབ་ཀུན ༥༨།

7 'ཚད་པས་མ་ཐུབ་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༤ གོང་།

ཚོགས་པ་དྲི་ཞིམ་པ་ཁ་དོག་ལེགས་པ་ལ་སོགས་པས་དཀྲིས་ནས། ཨཀྵའི་སྐྲོད་མོས་ཚལ་དུ་དར་ཟབ་ལ་སོགས་པའི་སྣན་དང་སྤོས་ལ་ནི་འདུག རྒྱལ་བུ་ལ་སོགས་པས་[1]བསྙེན་བཀུར་བ་དང་། བུ་མོ་གཞོན་ནུ་མ་མང་པོ་ལ་ལས་དྲིལ་ཕྱིས་བྱེད། ལ་ལས་གླུང་གཡབ་གཡོབ། ལ་ལས་གླུ་དང་ལ་ལས་གར་བྱེད། ལ་ལས་མེ་ཏོག་འཐོར་ཞིང་། རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་འདོད་ཡོན་ལ་ཆ༷་པས། མི་ལུས་ཆུད་ཟོས་པའི་ཚེ། ཡང་དག་པའི་དགེ་སློང་ཞིག་དེར་བྱོན་པ་ན[2]། སློ་རྩ་པ་[3]སུམ་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་དེས་དེ་དག་གིས་ནང་དུ་མ་བཏང་བ་ན། རྒྱལ་པོས་དེ་ཐོས་ཏེ་དེ་ནང་དུ་ཐོང་ཞིག་གསུངས་ནས་ནང་དུ་བྱོན་པས། (རྒྱལ་པོས་)དེ་ལ་བཟའ་བ་ལ་སོ༷་པ་བྲངས་ནས།

(རྒྱལ་པོས་དགེ་སློང་ལ་)ཁྱོད་ཀྱི་ཚོས་དང་ངའི་ཚོས་གང་དགའ། བྲུས་པས། དགེ་སློང་གིས་སླས་པ། ཁྲིས་པས་བལྟས་ན་ཁྱོད་ཀྱི་བཟང་། །མཁས་པས་བལྟས་ན་དུག་དང་བཅས། །གསུངས་པས། རྒྱལ་པོས་དུག་ཅེས་བྲུ་བ་ཅི་ལ་ཟེར་བ་ལགས། བྲུས་པས། དེས་དུག་གསུམ་རྒྱས་པར་གསུངས་ཏེ[4]། "དུག་དེ་དང་རྒྱལ་སྲིད་བསྲེས་ན་ཐ་མ་ངན་སོང་དུ་འགྲོ་ཞིང་སྡུག་བསྔལ་ཏེ། དཔེར་ན་དུག་དང་

1 ‘སོགས་པའི···’ - སྐྱབ་ཀུན ༤༨ པེ་ཅི ༦༩ འོག

2 ‘བྱོན་པས་སློ་བ་སུང་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༩ འོག བྱོན་ནས་སློ་བ་སུམ་རྒྱ། སྐྱབ་ཀུན ཤོག ༤༨/ན .

3 ‘བྱོན་པས་སློ་བ་སུང་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་’ - པེ་ཅི, ཤོག ༦༩ འོག བྱོན་ནས་སློ་བ་སུམ་རྒྱ···སྐྱབ་ཀུན ཤོག ༤༨/ན .

4 ‘གསུངས་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༩ སྐྱབ་ཀུན ༤༨ །

འདྲིས་པའི་བཟའ་བཏུང་བཟང་པོ་ཟོས་པ་དང་འདྲའོ།" ཞུས་པས། རྒྱལ་པོ་དེ་རིགས་སད་ཀྱི་གང་ཟག་ཡིན་པས་དེ་བླ་མར་བཟུང་། གདམས་ངག་ཞུས་པས་(དགེ་སློང་དེས་)དེ་ལ་བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར་ནས་ལམ་བསྟན་ནོ།།

དེས་རྒྱལ་སྲིད་བུ་ལ་གཏད་དེ་རྩ་བ་ནས་སྤང་ནས་ཀྱང་། ཨམྲའི་ཚལ་གྱི་ཀོ་ཀི་ལའི་སྒྲ་ལ་ཡིད་ཆར་ནས་ལམ་སྒོམ་དུ་མ་བཏུབ[2]པ་ལ། (དགེ་སློང་) དེས་(དེ་ལ་)རྟོག་པ་གང་སྐྱེས་གཅིག་ཅར་གྲོལ་བའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ།།

དཔེར་ན་ནམ་མཁའ་སྟོང་པ་ལ[3]།།
འབྲུག་སྒྲ་སྤྲིན་རྣམས་འདུ་བར་བྱེད།།
དེ་ལས་ཆར་རྒྱུན་འབྱུང་བ་ཡིས།།
རྩི་ཤིང་ལོ་ཏོག་རྒྱས་པ་ལྟར།། ༡
དེ་བཞིན་རྣ་བ་སྟོང་བར་ནི།།
ཀོ་ཀི་[4]ལ་ཡི་འབྲུག་སྒྲ་ཡིས།།
ཉོན་མོངས་དག་གི་ཆར་རྒྱུན་གྱིས།། ༢
ཆགས་སྡང་ལོ་འདབ་རྒྱས་པར་བྱེད།།
མི་མཁས་བྱིས་པའི་རང་བཞིན་ཅན།།

---

1 'གཟུང་ནས།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༩ འོག
2 'སྡུབ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༩ །
3 'ལས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༩ འོག
4 'ཀོཀིལའི' - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༥༨/བ.

སེམས་ཉིད་སྟོང་པའི་ངང་ལས་ནི།།
གྲགས་སྟོང་དབྱེར་མེད་འབྲུག་སྒྲ་ཡིས།། ༣
བདེ་ཆེན་ཟག་མེད་སྤྲིན་བཞིན་བསྡུད[1]།།
གནས་ལུགས་རང་གསལ་ཆར་རྒྱུན་གྱིས[2]།།
ཡེ་ཤེས་ལྷ་ཡི་ལོ་ཏོག་རྒྱས།།
ཨེ་མ་ཀློ་ལྷན་ངོ་མཚར་ཆེ།། ༨

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་བསྒོམས་པས་ཟླ་བ་དྲུག་ན་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། མཚན་ཡང་ཀོ་ཀི་ལཔྤ་ཞེས་གྲགས་ནས། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀོ་ཀི་ལཔྤའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༤༡) གུ་རུ་ཨ་ནཾ་ག་པ།

གུ་རུ་ཨ་[3]ནཾ་གའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཊཱ་ཀ་ར་(གཽ་ཌ)བྲ་བ་ན་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་སྐྱེ་བ་སྔ་མ་ལ་བཟོད་པ་བསྒོམས་པས་གཟུགས་བྱད་ཤིན་ཏུ་མཛེས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེས་གཞན་ལ་བལྟས་པས་ང་རྒྱལ་སྐྱེས་པ་ན། དེའི་གམ་དུ་དགེ་སློང་ཞི་བ་དུལ་བ་སྤྱོད་ལམ་མཛེས་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་བསོད་སྙོམས་མཛད་པས། དེ་

1 ‘བསྡུས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང་།
2 ‘རྒྱུན་ལས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང་།
3 ‘ཨནི་གོའི་ལོ་རྒྱུས’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང 200. Vol 87. ‘अनंगपा’ – रा० पु० नि० पृ० १२५

ན་རེ། ནང་དུ་གཤེགས། བདག་གིས་ཉིན་ཞག་(གཅིག་)གི་འཚོ་བ་འདྲེན་པ་ཡིན། ཟེར་ནས་སྤྱན་དྲངས་ཏེ། ཞབས་བཀྲུས་སྟན་བསྟབ་[1]པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་བཞེས་ཆབ་ཀྱི་ནོམ་པ་དྲངས[2]།

(དེ་ནས་)དེ་ན་རེ་འཕགས་པ་ཉིད་[3]ཟས་བསོད་སྙོམས་དང་དཀའ་ཐུབ་འདི་ལྟར་མཛད་པའི་ཆེད་དུ་བྱ་བ་ཅི་ལགས[4]། ཟེར་བ་ལ་[5]། དགེ་སློང་གིས་དེ་ལ་བདག་འཁོར་བ་ལ་འཇིགས་ནས་ཐར་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པས་དེའི་ཕྱིར་ཡིན[6]། གསུངས[7]།

ཡང་དེས་འཕགས་པ་འོ་སྐོལ་གཉིས་ཀྱི་རྟེན་ལ་ཁྱད་པར་ཅི་ཙམ་བདོག བྱས་པས། དེས། ཁྱད་ཆེ་སྟེ། ཁྱོད་ཀྱི་རྟེན་ང་རྒྱལ་ལ་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་མི་འབྱུང་ལ། བདག་གི་དད་པའི་རྟེན་ལ་ཡོན་ཏན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འབྱུང་ངོ་།། གསུངས་པས། ཡང་དེས། འཕགས་པ། ཡོན་ཏན་བྱ་བ་ཅི་ལ་ཟེར། ཞུས་པས། དེས། ཚེ་འདིར་ཆོས་བྱེད་པའི་རྟེན་ལ་མི་དང་མི་མ་ཡིན་གྱི་[8]བར་ཆད་མི་འབྱུང་ཞིང་།

---

1 ‘ལྷབ་པ’ - ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ གོང་།

2 ‘དྲངས་ཏེ’ - ཕེ་ཉི, ཤོག ༦༥ གོང་།

3 ‘ཉིད་འཕགས་པ’ - སྐྱུབ་ཀུན ༥༤/ བ. ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༩ གོང་།

4 ‘མཛད་པ་ཅིའི་ཆེད་དུ་བྱ་བ་ཅི་ལགས’ - ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ གོང་།

5 ‘ཟེར་བའི་’ - ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ གོང སྐྱུབ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ བ.

6 ‘ཐར་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཡིན’-སྐྱུབ་ཀུན་ཤོག ༥༤/བ. ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ དེ་ཉིད།

7 ‘གསུངས་ནས’ - སྐྱུབ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ བ. ‘གསུངས་པས’ ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ གོང་།

8 ‘མ་ཡིན་པའི’ - ཕེ་ཉི་ཤོག ༦༥ གོང་ དེ་ཉིད།

མཐར་ཐུག་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་ཐོབ་པ་ལ་སོགས་པ་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡོན་ཏན་བཤད་པས། དེས་དེ་འདྲ་བ་ཐོབ་པའི་ཐབས་[1]ཤིག་ཞུ། ཟེར་བ་ལ[2]།

དེས་དེ་ལ་ས་[3]བཀོ་བ་དང་འཚོང་པ་(=ལས་)ལ་སོགས་པའི་འཇིག་རྟེན་པའི་ལས་ནུས་སམ། གསུངས་པས། དེ་འདྲ་བ་གང་ཡང་མི་ནུས་ཟེར་བ[4]། འོ་ན་སྣན་ཐོག་གཅིག་ཏུ་བསྡད་ནས་སྒོམས་ནུས་སམ་གསུངས་པས། ནུས་ཟེར་ནས། (དེས་)དེ་བདེ་མཆོག་ཏུ་དབང་བསྐུར་ནས། ཚོགས་དྲུག་རང་གསལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།།

སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ལས།།
འགའ་ཡང་གུད་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པས།།
ཚོགས་དྲུག་ཡུལ་ལ་རང་སར་བཞག་པར་བྱ།།
མ་ཞེན་མི་འགོགས་[5]དེ་ཡི་ངང་ལ་[6]གཞོག།

1 ‘ཐབས་གཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང ‘ཐབས་ཅིག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན.
2 ‘ཟེར་བས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན. པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང་།
3 ‘ས་རྐོ’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན . པེ་ཅི ཤོག ༦༥ གོང་།
4 ‘ཟེར་བས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩ པེ་ཅི ཤོག ༦༥ འོག
5 ‘མི་འགག’ - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ འོག
6 ‘ངང་ལ་ཞོག’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན

ཅེས་གསུངས་པས། དེས་(ཀུང་དེ་ལྟར་)བསྒོམས་པས་ཟླ་བ་དྲུག་ན་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། ཟླ་མ་ཨཙིནྟ་པར་གྲགས་ཤིང་། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་[1]ནས། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

ག་རུ་ཨཙིནྟ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༤༣) ག་རུ་ལཱིཀཱ་ར།

ག་རུ་ལཱིཀཱ་རའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཨུརྒྱན་གྱི་སམབྷོལནགར་ཞེས་པ་གྲོང་ཁྱེར་འབུམ་ཚོ་ཕྱེད་དང་གསུམ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུ་ཏིའི་ལྕམ་སྲིང་མོ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་གཞོན་ནུ་ནས་རིགས་སད་པའི་ཡོན་ཏན་དུ་མ་མངའ་ཞིང་། གྲུབ་ཆེན་ལྭ་ཝ་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་[2]ཆོས་ཀུང་མང་དུ་གསན་ཞིང་[3]རྒྱུད་སྡེ་མང་པོ་ཡང་མཁྱེན་པ་ལ། དེ་ལངྐའི་རྒྱལ་པོ་ཛ་ལེནྡྲའི་བུ་'སམ་བོལ་'བྱ་བའི་ཆུང་མར་བླངས་པས། རང་གི་མིང་པོ་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུ་ཏིས་ཀུང་བྱིན་པར་བྱས་ཏེ། ལེན་པའི་ཕོ་ཉ་པ་བྱུང་བ་ན། འཁོར་ཆོས་ཤེས་པ་མང་པོ་དང་བཅས་ཏེ། ནོར་རྫས་ཟད་པ་མེད་པར་བསྐུར་ནས་གྲོང་ཁྱེར་ལངྐ་པུ་རིར་བྱོན[4]།

---

1 'བྱས་ནས' - སྐྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩།

2 'ལྭ་ཝ་པ་སོགས་ལ་ཆོས…' - སྐྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན .

3 'གསན་ཅིང'' - སྐྲུབ་ཀུན ༥༩/ན.

4 'བྱོན་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༥ འོག སྐྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༩/ན.

‘གཟའ་སྐར་ངན་’ཟེར་ནས་རྒྱལ་སར་སྤྱན་མ་དྲངས་པའི་དུས་སུ། ལྷམ་གྱིས་སྐྱེ་བོ་དག་གཟིགས་པས། ཐམས་ཅད་ཕྱི་པར་འདུག་ནས་[1]ཐུགས་སྐྱོ་བའི་ཚེ། རྒྱལ་བུ་དེའི་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་ཞ་མང་པོ་ཁྱེར་ཏེ་ལིངས་ལས་[2]ལོག་ནས་དེའི་མདུན་ནས་མར་འོངས་[3]པས། ལྷམ་ན་རེ། འདི་ཀུན་སུ་ཡིན། ཅི་བསད། གང་ནས་འོང་། གང་པ་[4]ཡིན། གསུངས་པས། འཁོར་རྣམས་ཀྱིས།[5] ཁྱོད་ཀྱི་ཁྱོ་རྒྱལ་པོས་རི་དྭགས་གསོད་དུ་བཏང་པ་ཡིན། བྱས་པས། (གཏམ་དེ་) ལྷ་འགྲངས་པ་ལ་ཁ་ཟས་ཀྱི་གཏམ་བཏང་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་ཡང་ཐུགས་ལོག་སྟེ། ངའི་མིང་པོ་དེ་ཆོས་སྐྱོང་བའི་རྒྱལ་པོ་ཡིན་པ་ལ། མུ་སྟེགས་འདི་འདྲ་བ་ལ་ང་བཏང་སྙམ་ནས་དེ་ཉིད་དུ་བརྒྱལ་ལོ། །དེ་ནས་བརྒྱལ་བ་སངས་པ་དང་། གྲོང་ཁྱེར་བ་དེ་རྣམས་ལ་ནོར་རྣམས་བྱིན། འཁོར་ཀུན་ལ་རྒྱན་ཆ་བསྐུར་ནས་ཡུལ་དུ་བཏྲོག །དེ་ནས་དེ་མན་ཆད་ཞག་བཅུ་རུ་སུ་ཡང་མ་[6]གཏང་ཞིག་ཟེར་ནས། ཁང་པ་གཅིག་ཏུ་བཞུགས་[7]ཏེ། ལུས་ལ་མར་ནག་དང་སོལ་བ་བྱུགས། སྐྲ་བཤིག[8] གཅེར་བུར་

---

1 ‘འདུག་པས’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༥ འོག

2 ‘ལིངས་པ་ལོག་ནས’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༥ འོག

3 ‘མར་སོང་བས།’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༥ འོག

4 ‘གང་ཡིན’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༥ འོག

5 ‘ལིངས་ལ་ཕྱིན་པ་ཡིན།’ - ཁྱོད་ཀྱི་ - པེ་ཅི ཤོག ༧༥ ‘ལིངས་ལ་ཕྱིན་པ་ཡིན་’ ཞེས་པ་སྒྲུབ་ཀུན་ལ་མེད། ཤོག ༥༩/བ.

6 ‘མ་བཏང་ཅིག’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༦ གོང་།

7 ‘ཞུགས་ཏེ’ - པེ་ཅི ཤོག ༧༦ གོང་།

8 ‘བཤིགས།’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༥༠/བ .

ཕྱུང་ནས་སྒྲོ་རྫུན་བྱེད་ཅིང་། སྙིང་པོའི་དོན་ལས་མ་གཡོས་པར་བཞུགས་པས། དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་མྱ་ངན་གྱིས་ནོན་ནས་སྨན་པ་ལ་སོར་པས་སྨན་གྱི་སྦྱོར་བ་བྱེད་པར་བྱས་པས། དེར་སུ་འོངས་པ་ལ་རྡེག་འཚོགས་ཁྲི་ཕྱུང་འཕག་པ་ན། དེ་རྣམས་ཀྱིས་མིང་པོ་ཅན་དུ་ཕོ་ཉ་བཏང་བས། དེ་ཐུགས་བདེ་བར་གནས་ཏེ། འཁོར་བ་ལ་ཐུགས་ལོག་པ་ཡིན་ཏེ་འོང་སྙམ་དུ་དགོངས་སོ།།

ལུམ་གྱིས་དེ་མན་ཆད་སློན་མའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཀྱིས་གནས་ནས། ལཀྵཔུརིར་ཟས་ཀྱི་ལྷག་མ་ཟ་ཞིང་། དུར་ཁྲོད་དུ་ཉལ་ནས་སྙིང་པོའི་ཆོས་ཉམས་སུ་བླངས་པས། ལོ་བདུན་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ།། རྒྱལ་པོ་དེའི་ཕྱུག་དར་བ་ཞིག་གིས་ལུམ་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱས་པས། དེ་ལ་ཡང་གདམས་པ་གནང་ནས་ཡོན་ཏན་ཐོབ་པས། དེས་ཡོན་ཏན་རྟོགས་པ་གཞན་གྱིས་མ་ཚོར་བའི་དུས་སུ་རྒྱལ་པོ་ཊླལིན ཙྪ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ལིངས་ལ་བྱོན་པ་ན་ནམ་ཚོད་མ་རིག་སྟེ། དེ་ཉིད་ལ་རྒྱལ་པོ་གཉིད་དུ་སོང་[2]། དེ་ནས་ཕྱིན་པས་ལམ་ལོག་པར་འཁྱམས་ཏེ། དེ་དགོངས་[3] ཡུལ་དུ་ལོག་མ་ནུས་པས་ཉལ་ས་མེད་དེ་ལཀྵཀཱར་ཉལ་བའི་ཕུག་ཏུ་ཕྱིན་ནས། སློན་མ་འདི་ཅི་རང་བྱེད་དམ་སྙམ་བལྟས་པས། དེ་ནི་རང་ལུས་ལས་འོད་འཕྲོ་བས་གནས་པ་ལ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ནས་[4]ལྷའི་བུ་མོ་དཔག་ཏུ་མེད་

1 'ཐོབ་ཅིང་'' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/བ. པེ་ཅིན ཤོག ༧༧ གོང་།
2 'སོང་བས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩/བ. 'སོང་ནས' - པེ་ཅིན ཤོག ༧༧ གོང་།
3 'དེ་ཚོངས' - པེ་ཅིན ཤོག ༧༧ གོང་།
4 'ན' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༤༩ 'ནི' - པེ་ཅིན ཤོག ༧༧

པས་བསྐོར་ནས་མཆོད་པ་བྱེད་པར་མཐོང་བས། དད་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱེས་ཏེ། དགོངས་[1]ཀ་དེར་བསྡད་ནས་ཕྱི་དེ་ཡུལ་དུ་ཕྱིན།

སླར་ལོག་སྐེ་ཕྱག་བྱས་པས། ང་འདྲ་བའི་བུད་མེད་ལ་ཕྱག་བྱེད་པ་ཅི་སྐེ།[2] བྱས་པས། ཡོན་ཏན་ཡོད་པས་[3]ན་གདམས་པ་ཞུ་བྱས་པས། དེས་དེ་ལ།—

འཁོར་བའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་བཅས[4]།།
བདེ་བ་འགའ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ།།
དེ་ཡང་སྐྱེ་རྒ་ན་འཆི་ལ་སོགས་པས།།
འགྲོ་བའི་གཙོ་བོ་ལྷ་མི་དག་ཀྱང་གདུངས།། ༡

ངན་སོང་གསུམ་ནི་སྡུག་བསྔལ་ཉིད་ཡིན་ཏེ།།
ཕན་ཚུན་ཟ་ཞིང་བཀྲེས་པས་རྟག་ཏུ་ཉེན།།
ཚ་ཞིང་གྲངས་པས་ཉེན་པ་དཔག་ཏུ་མེད།།
དེས་ན་རྒྱལ་པོ་ཐར་པའི་བདེ་ཆེན་ཚོལ།། ༣

1 'ཚོངས་ཁ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༦ གོང་།

2 'ཅི་ཡིན' - པེ་ཅི ཤོག ༦༦ གོང་།

3 'ཡོན་ཏན་ཡོད་པས་ན' - ཞེས་པ པེ་ཅི དཔར་ལ་མེད ཤོག ༦༦ གོང སྒྲུབ་ཀུན ༦༠/ན.

4 'འཁོར་བར་གནས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་དང་བཅས་པ།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༦ འོག

ཞེས་གསུངས་པའི་མཐར། ཁྱོད་ངའི་[1]གདུལ་བྱ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་རང་གི་ཕྱུག་དར་བ་ངའི་སློབ་མ་ཞིག་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པས། དེ་ཁྱོད་ཀྱི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཡིན་ནོ།། གསུངས་པས། (རྒྱལ་པོ་ན་རེ་) དེ་མང་དུ་ཡོད་པས་ཇི་ལྟར་ཤེས་པ་ཡིན། ཟེར་བས། དེ་ནི་ཕྱུག་དར་བྱས་ནས་བཟའ་བ་སེམས་ཅན་ལ་སྟེར་བ་ཡིན་པས་དེ་ལ་མཚན་མར་གཟུང་[2]ཞིག་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་ལེགས་པར་ཕྱུག་དར་བ་ལ་བལྟས་པས་གཅིག་དེ་ལྟར་བྱེད་པས[3]། དེ་སྐྱུན་དྲངས་ཏེ་ཁྲི་ལ་བཞག་ནས་ཕྱག་བྱས་གདམས་པ་ཞུས་པས།

(དེས་དེ་ལ་)བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐུར་ཏེ། རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་བསྐྱེད་རྫོགས་གཉིས་བསྟན་ནས། (མཐར་) ཕྱག་དར་པ་དང་ལྷམ་གཉིས་ཀྱིས[4] ལཀྵཔུརིར་རྫུ་འཕྲུལ་བསྟན་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུལཱིཀཱ་རའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'ཁྱོད་ང་ཡི' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/ན.

2 'གཟུང་ཞིག' - སྣྲུབ་ཀུན ཤོག ༨༠/ཁ.

3 'བྱེད་པ་དེ་སྐྱུན་དྲངས' - པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག

4 'གཉིས་ཀྱི' - པེ་ཅི ཤོག ༨༨ འོག

༨༣) ཀུརུསམུདྲ།

ཀུརུསམུདྲའི་[1]ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་སཏྟེར་བྷ་ལ་ན་རིགས་ངན་ཞིག་རྒྱ་མཚོ་ནས་ནོར་བུ་བླངས་ཀྱིན་བཙོངས་ནས་འཚོ་བ་ལ། དུས་གཅིག་ན་དེ་ཡང་མ་རྙེད་ནས་འཚོ་བ་ཆད་པས་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ཏེ་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྡད་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་ཨཙིནྟ་(དེར་)བྱོན་ནས་དེ་ལ་དྲིས་པ[2]། ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག གསུངས་པས། དེས་སྔར་གྱི་གཏམ་དེ་བདེན་པར་སྨྲས་པ་ལ[3]། དེས་འཁོར་བའི་སེམས་ཅན་ལ་སྡུག་བསྔལ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད་ཅིང་། ཁྱོད་ཀྱིས་སྔ་མ་ཡན་ཆད་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་མི་བཟོད་པ་དྲག་པོ་དག་མྱོང་ལ། ད་དུང་སྡུག་བསྔལ་མ་ཡིན་པ་བདེ་བ་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འོང་། གསུངས་པས། (དེ་ན་རེ་) རྣལ་འབྱོར་པ་སྡུག་བསྔལ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག[4]ཅིས་ཀྱང་ཞུ་ཟེར་བས།

(རྣལ་འབྱོར་པ་)དེས་ཀྱང་ (དེ་ལ་)དབང་བསྐུར་ཏེ[5]། ཕྱི་ཚད་མེད་བཞི་ནང་དགའ་བཞིའི་གདམས་པ་གནང་སྟེ། —

བྱམས་དང་སྙིང་རྗེ་[6]དགའ་བ་དང་།།
བཏང་སྙོམས་ཚད་མེད་བཞི་པོ་ཡིས།།

---

1 'སམུདའི' - པེ་ཅི ཤོག ༦༦ དེ་ཉིད།

2 'དྲིས་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༦ འོག དེ་ཉིད།

3 'སྨྲས་པས' - པེ་ཅི ཤོག དེ་ཉིད།

4 'ཐབས་གཅིག' - སྣུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ.

5 'བསྐུར་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

6 'རྗེའི་དགའ་བ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

འཇིག་རྟེན་ཆོས་བརྒྱད་ཆ་སྙོམས་ནས།།
དབུས་ནས་བདེ་རྒྱུན་དབབ་བྱས་ཏེ།། ༢
འཁོར་ལོ་བཞི་ལ་དགའ་བ་བཞི།།
བདེ་སྟོང་དབྱེར་མེད་རྣམ་པ་ཅན།།
ཡང་དག་པར་ནི་སྒོམ་[1]བྱས་ན།།
བདེ་བ་ཟག་མེད་འབབ་ཞིག་ལས།། ༣
སྡུག་བསྔལ་སྐད་ཅིག་ཙམ་མི་སྲིད།།

ཅེས་གསུངས་པ་པོ་ནས་བསྒོམས་པས། ལོ་གསུམ་ན་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཟླ་མ་སམུདྲ་བྱ་བར་གྲགས་ཤིང་། དེས་རྟོག་པ་བརྗོད་ཅིང་འགྲོ་དོན་བྱས་ནས། འཁོར་བརྒྱད་བརྒྱ་དང་བཅས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུརུསམུདྲའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

༨༤) གུརུབྱཱ[2]ལིཔཱ།

གུརུབྱཱལི་པཱའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཨ་པ་ཏྲ་ཞེས་[3]པར་བྱཱ་ལི་བྱ་བའི་བྲམ་ཟེ་ཞིག་ལ་ནོར་མང་དུ་ཡོད་ལ། བདུད་རྩིའི་ཉམས་ལེན་བྱེད་ཅིང་། དངུལ་ཆུ་མང་དུ་ཉོས་ནས་བཏུལ་ནས་[4]སྨན་རྣམས་འཛུག་པ་ཡིན་(པ་)ལ། སྨན་གཅིག་མ་

1 ‘བསྒོམ་བྱས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ .
2 मलि-(व्यालि)पा - रा० पु० नि० पृ० १२५ ।
3 ‘ཅེས་པར་’ - པེ་ཅི ༦༧ གོང དེ་ཉིད།
4 ‘བཏུལ་པས’ - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ.

ཤེས་ནས་གྲུབ་རྟགས་འབྱུང་དུ་མ་འདོད་པ་དང་། དེ་ཁྲོས་ནས་བེ་[1]བུམ་དེ་གངྒཱ་ལ་བསྐྱུར་ནས་བཏང་ངོ༎

དེའི་[2]ནོར་ཡང་ལོ་བཅུ་གསུམ་དུ་བསྒྲུབས་པས་ཟད་དེ། གྲོང་ཁྱེར་ནས་མར་[3]བསོད་སྙོམས་ལ་བྱོན་ནས། རྒྱལ་པོ་[4]རྣམའི་གཙུག་ལག་ཁང་ཡོད་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ལ་ཕྱིན་པས། དེ་ན་དཱ་རི་[5]མོ་ཞིག་གིས་གངྒཱའི་འགྲམ་དུ་ཁྲུས་ལ་ཕྱིན་པས་དེས་[6]བེ་བུམ་དེ་རྙེད་ནས། བྲམ་ཟེ་དེ་ལ་བསྟན་པས། ཁོའི་ཐེར་གྱི་སྣན་ཡིག་ཏུ་འདུག་ནས་བཀོད་[7]པས། ཅི་ཟེར་བ་ལ[8] ཐེར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་བསྙད་པས། (དཱ་རི་མོ་ན་རེ་)ད་དུང་ང་ལ་གསེར་ཁལ་གཅིག་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་དགོས་ཟེར། དེས་ཐེར་ཡང་འདེས་བསྡུས་ནས་འདི་ལ་ཕྲུག་པ་ཡིན། (ད་) ཅང་ཡོད་དེ། བྱས་པས།

བྲམ་ཟེ་ལ་རང་དབང་མེད་པར་གྱིས་ཟེར་ནས་དངུལ་ཆུ་མང་དུ་ཉོས་ཏེ། ལོ་གཅིག་ཏུ་བསྒྲུབས་པས། སྐྱུ་རུ་ར་དམར་པོ་བྱ་བ་མ་ཤེས་ནས་རྟགས་འབྱུང་དུ་

---

1 'དཔེ་བུམ་དེ' - སྒྲུབ་ཀུན ༦༠/བ .

2 'ཁོའི་ནོར་ཡང་' - སྒྲུབ་ཀུན ༦༠/བ .

3 'གྲོང་ཁྱེར་ལ་མར་…' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ.

4 'རམའི' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ . པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

5 'དྷརིམོ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

6 'ཕྱིན་པས་བེ་བུམ་དེ་རྙེད་ནས།' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

7 'བཀོད་པས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ གོང་།

8 'ཟེར་བས' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༠/བ . པེ་ཅི ཤོག ༦༧ འོག

མ་འདོད་པ་ན། (ཉིན་གཅིག་)ཌྷེ་རི་མོ་དེས་ཁྲུས་བྱས་པས་རང་བྱུང་གི་མེ་ཏོག་སེན་མོ་[1]ལ་འབྱར་བ་དང་། དེས་སྦྲུར་པ་ན། དེའི་ཟེར་མ་སྣན་ནང་དུ་ལྷུངས་པས་དེ་མ་ཐག་ཏར་རྣམས་བྱུང་བ་དང་། བྲམ་ཟེས་མོ་ལ་དྲིས་པས་འདི་འདྲ་བའི་ཟེར་མ་སོང་བ་ཡིན་ནམ། གཞན་བཅུག་པ་མེད། བྱས་པས་དགའ།

ཌྷེ་རི་མོ་དེས་བྲམ་ཟེའི་བཟའ་བཏུང་ལ་རིག་ཏ་བཏབ་ནས་བྱིན་པས། སྔར་གྱི་དུས་སུ་མ་ཚོར་བ་ལ། དེའི་ཞག་གཅིག་ཚོར་བས། ཌྷེ་རི་མོས་གྲུབ་བམ། བྱས་པས། རྒྱུ་མཚན་ཅི། ཟེར་རོ། སྔར་བཟའ་བཏུང་ལ་རིག་ཏ་བཏབ་པ་མི་ཚོར་བ་ལ་དེ་རིང་ཚོར་བས་སོ་བྱས་པས། དེ་ན་རེ།

དེ་ཡང་གྲུབ་པའི་རྟགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། གཡས་སུ་འཁོར་བ་དང་། བཀྲ་ཤིས་[2]པའི་རྟགས་བརྒྱད་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བའོ་བྱས་པས། དེས་བཀྲ་ཤིས་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་ཏེ། བྲམ་ཟེ་ཌྷེ་རི་མོ་རྟ་གོད་མ་ཞིག་[3]དང་གསུམ་གྱིས་ཟོས་པས་དེ་གསུམ་གྱིས་འཆི་བ་མེད་པའི་ཚེའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ[4]།།

གདམས་པ་ལ་ཕྲག་དོག་བྱས་ནས་སུ་ལ་ཡང་མི་སྟེར་བའི་ཕྱིར་ལྷ་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་པས། ལྷ་རྣམས་[5]ཀྱིས་མ་བསྙེན་ནས། དེས་རྒྱལ་པོ་ཀིཁམ་བར་[6]བྱ་བའི་

1 'སོར་མོར'. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ འོག

2 'བཀྲ་ཤིས་ལ་བརྟགས་བརྒྱད།'. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ འོག

3 'རྟ་དང་གསུམ་གྱིས'. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ འོག

4 'ཐོབ་སྙེ།'. པེ་ཅི ཤོག ༦༧ འོག སྣུབ་ཀུན ཤོག ༦༡/ན.

5 'ལྷ་ཀུན་གྱིས་མ་བསྙེན་ནས'. པེ་ཅི ཤོག ༨༧ འོག

6 'ཤི་ཁེམ་པར ཀིཁམ་པར' ཞེས་ པེ་ཅི བསྟན་དཔར་དང, སྣུབ་ཀུན་བོད་དཔར་དེལླིའི་གློག་དཔར་རྣམས་ལ་འདྲ་བར་འདུག་ཀྱང་། དེ་ནི་ 'ཀོཁམ་བོ' ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་པར་མངོན་ནོ། གནས་ནི་སིཀླལོ།།

ཡུལ་དུ་ཕྱིན་ནས་གནས་ཏེ། དེ་ན་བྲག་དཔངས་སུ་དཔག་ཚད་[1]དང་། རྒྱ་རྒྱང་གྲགས་བཅུ་ཡོད་ལ། མཐའ་འདམ་གྱིས་བསྐོར་བ་དེའི་སྟེང་ན་ཤིང་དྲུང་གཅིག་ཡོད་པས་དེའི་གྲིབ་མ་ལ་གནས་པར་བྱེད་དོ།།

དེ་ནས་སྐབས་དེའི་མན་ངག་རྒྱུན་ཆད་ནས་མེད་པ་ན། འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་བསྒྲུབས་[2]ནས་དེར་བྱོན་ཏེ། ལྷམ་ཡ་གཅིག་སྦས་ཡ་གཅིག་བསྣམས་ནས་ཕྱག་བྱས་ཏེ་གདམས་པ་ཞུས་པས། འདིར་ག་ཙུག་བྱས་ནས་འོངས་ཟེར། མཆིལ་ལྷམ་འདིའི་མཐུ་ལ་བརྟེན་ནས་འདིར་འོངས་པ་ལགས། གསུངས་པས། དེས་གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། ང་ལ་ཡོན་དུ་ལྷམ་འདི་ཕུལ་ཅིག ཟེར་བས། དེ་ཕུལ་ནས་ཡ་གཅིག་སྦས་པ་དེ་བསྣམས་ནས་སླར་འཛམ་བུའི་གླིང་དུ་བྱོན་ནས། དཔལ་གྱི་རི་ར་སྒྲུབ་པ་མཛད་དེ། འགྲོ་བ་ལ་ཕན་བཏགས་[3]སོ།།

དེས་ན་[4]"སེར་སྣ་ལ་སོགས་པ་ཉོན་མོངས་པ་གང་གི་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལས་[5]ཡོན་ཏན་སླང་ཉེ་ནུས་ཤིང་། ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་རྒྱུད་ལ་མི་སྐྱེ་བས་ན། བླ་མའི་མན་ངག་དང་ལྡན་པ་གལ་ཆེ་བ་ཡིན།" གསུང་ངོ་།།

གུཊུཐུལིཔའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །།

---

1 'དཔག་ཚད་བརྒྱ་དང་' - སྒྲུབ་ཀུན ༦༡/ན. འདི་ཡིག་ནོར་ཡིན་པར་སྣང་།

2 'སྒྲུབས་ནས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༧ འོག

3 'ཕན་བཏགས་སོ' - པེ་ཅི ཤོག ༦༨ གོང་།

4 'གསེར་ལ་སོགས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༨ གོང་།

5 'གང་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ' - སྒྲུབ་ཀུན ཤོག ༦༡/ན. པེ་ཅི ཤོག ༦༨ གོང་།

ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་གྲགས་པ་ལཱུཧིཔ་སོགས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་བཅུ་རྩ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་གང་། །རིགས་མཆོག་སྨད་བྱུང་མག་ཧྲར་འཕྲུངས་ཡང་དག་ཡོན་ཏན་གྱིས་བརྒྱན་མི་འཇིགས་པ་དཔལ་གྱི། །མགུར་གྱི་བུམ་པ་ལས་བྱུང་བཞིན་དུ་བདག་གིས་དེ་རྣམས་ལེགས་བསྒྱུར་།བསོད་ནམས་གང་།[2] །དུག་གིས་མནར་རྣམས་འཚོ་བྱེད་སླ་མས་ཟིན་ནས་དུག་ཉིད་སྨན་གྱི་ངོ་བོར་རྟོགས་པར་ཤོག།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་རྒྱ་གར་ཙམྤུ་ནའི་བླ་མ་མི་འཇིགས་པ་སྦྱིན་པ་དཔལ་གྱི་ཞལ་ནས་གསུངས་པ་ལྟར། དགེ་སློང་སྨོན་གྲུབ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལེགས་པར་བསྒྱུར་བའོ།། དགེའོ།། །།

---

1 'བརྒྱུས' - སྣར་ཀུན ཤོག ༦༧/བ. 'རྒྱུས' - པེ་ཅི ཤོག ༦༨ གོང དེ་ཉིད།
2 'བསོད་ནམས་དེས།' - པེ་ཅི, ཤོག ༦༣ གོང་།

ཟུར་བཀོལ།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིའི་བྲིས་ཡིག་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ[1]། །

༄༅། །ན་མོ་གུ་རུ་བེ[2]། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་[3]ཅུ་རྩ་བཞིའི་འབྲི་[4]ཚུལ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་བྱ་སྟེ།

ཨོཾ་ རབ་ཏུ་དགེ་བའི་དཔལ་གྱུར་རྨད་བྱུང་ཀུན།།
རབ་སྨིན་བླ་མེད་ཡང་དག་རྫོགས་སངས་རྒྱས།།
རབ་མཆོག་ལྷ་ཡི་ལྷར་[5]གྱུར་ཐུབ་དབང་ལ།།
རབ་གུས་དྭངས་བས་རྟག་པར་ཕྱག་འཚལ་འདུད།། ༡

གང་གི་བསྟན་ལ་ཐེག་ཆེན་སྔགས་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས།།
གཉིས་མེད་འཕ་མཆོག་ཡོངས་བརྙེས་གྲུབ་པའི་དབང་པོ་ནི།།

---

1 ‘མ་དཔེ་རང་གི་བཞུགས་བྱང’ - གྲུབ་ཐོབ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་བཅུ་རྩ་བཞིའི་བྲི་ཡིག་ཤིན་ཏུ་དག་ཅིང་གསལ་བ་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།། ཨོཾ། - ཞིས་པ་འདུག ཤོག ༡/བ དེ་ལི་གློག དཔར་ཤོག 395.

2 ‘ན་མོ་གུ་རུ’ - ཤོག ༡/བ· 396.བྲི་ཡིག་[ལེགས་སྦྱར་དུ་ཕྱག་འཚལ་བ་ལ་རྣལ་དབྱེ་བཞི་པ་དགོས་པས་སོ།།]

3 ‘བརྒྱད་བཅུ’ - ཤོག དེ་ཉིད།

4 ‘འབྲི་ཚུལ’ - ཤོག དེ་ཉིད།

5 ‘ལྷ་གྱུར་’’ - ཤོག དེ་ཉིད།

དཀྱིལ་འཁོར་གཙོར་གྱུར་འཕགས་པའི་འཕགས་པ་དེ་རྣམ།
རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་ཆེ་མཆོག་རྣམས་ལ་གུས་ཕྱག་འཚལ།། ༢
ཡེ་ཤེས་གྲུབ་པའི་སྐུ་ནི་ཕྱོགས་རེ་མ་ཡིན་ཏེ།།
རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཉིད་གྱུར་སྒྱུ་འཕྲུལ་དྲྭ་བར་རོལ།།
བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་བྱིས་པའི་བློ་རྣལ་ལས་འདས་པར།།
བདག་གིས་[1]ཐན་མོད་དེ་ལྟ་ན་ཡང་གདུལ་བྱའི་ངོར།། ༣
གནས་སྐབས་ཉིད་དུ་གདུལ་བྱའི་སྣང་ངོར་དང་པོ་ཡི།།
རྣམ་ཐར་ཅི་འདྲའི་རྒྱལ་ལ་མ་འཁྲུལ་ཚད་མ་ཉིད།།
ཡོངས་གཟིཊ་ཀུན་དགའ་སྙིང་པོས་[2]འཕཊ་ཡུལ་གྲུབ་པའི་གདམ།།
ཇི་བཞིན་གདན་ལ་[3]ཞིཊ་ཕབ་བཀོད་གང་འདིར་བཤད་ཀྱི།། ༤
བལ་བོད་གནའ་པའི་རྣ་གདམ་ཙམ་ཞིན་འཁྱོག་པའི་ཡིད།།
སྐྱོ་མ་སྤྲ་བཙན་དབང་གྱུར་འཁྲུལ་པའི་རབ་རིབ་མིག།
གསལ་འདོད་དགེ་བ་ཅན་ཀུན་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་འདི།།
ཡིད་གཉིས་མེད་ཟུངས་གྲུབ་སྐུ་ཚད་ལྡན་ལ་ལྟོས་ཤིག། ༥
མཁས་ཀྱང་ཐ་སྙད་ཚིག་གི་རོལ་རྩེད་ཉིད།།
བཙུན་ཡང་བཟང་ཏོག་མདུད་པས་དཀྲིས་པ་ཉིད།།

---

1 ‘བདག་གི’ ཤོག ༣/ན. 397. དེ་ཉིད།
2 ‘པོའི’ - ཤོག ༣/ན.དེ་ཉིད།
3 ‘གཞན་ལ’ - ཤོག ༣/ན. དེ་ཉིད།

སྐྱོན་མེད་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་གྲུབ་པ་སྙེ།།
ཚུལ་དེར་སློན་ལམ་འདེབས་ལ་འབད་པར་[1]རིགས།། ༦

ཞེས་ཆེད་དུ་བརྗོད་ནས་གྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་ཡི་སྣང་བརྙན་[2]ཛེ་ལྟར་བཀོད་པའི་ཚུལ་ནི་[3]།

གཙོ་བོ་རྡོ་རྗེ་འཆང་། ཡིད་དམ་མཆོན་བྱེད་ཁྲི་བོ་མི་གཡོ་བ་སྔོན་པོ་པུས་བཙུགས། ཆོས་སྐྱོང་མཆོན་བྱེད་མགོན་པོ་ཕྱག་བཞི་པ། བེ་དོའི་འབྲས་བུ་འཛིན་པ། དེ་རིགས་མ་ཡིན་པར་ཕྱག་གཡས་དང་པོ་གྲི་གུག་གམ་མཆོག་སྦྱིན་གང་རིགས། གཞན་རྣམས་སྔྲི་དང་འདྲ་བར་[4]བྱ[5]།

༡) ལཱུ་ཧི་པཱ།

གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དང་པོ་སློབ་དཔོན་ལཱུ་ཧི་པཱ་ཅུང་ཟད་སྐུ་ཤ་སྐམ་[6]པ་

---

1 ‘བ་རིགས་…’ - ཤོག ༣/བ. 318. དེ་ཉིད།

2 ‘‘སྣང་བརྙེན་ཅི་ལྟར་བཀོད་ཞེ་ན’’ - ཤོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།

3 ‘‘སྣ་བརྙེན་ཅི་ལྟར་བཀོད་ཞེ་ན’’ - ཤོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།

4 ‘འདྲ་བ’ - ཤོག དེ་ཉིད།

5 འདིར་རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་མི་གཡོ་བ་དང་། མགོན་པོ་ཕྱག་བཞི་སོགས་གཙོ་བོ་དང་། འཁོར་གྱི་ཚུལ་དུ་འབྲི་དགོས་ཚུལ་དང་། གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་དེའི་མཐའ་སྐོར་དུ་འབྲི་དགོས་ཚུལ་སོགས་ནི་ཆོ་ག་དང་། རྗེས་གནང་སོགས་ཀྱི་སྐབས་ཁྱད་པར་བ་རྣམས་སུ་བྲིས་སྐུ་བཀོད་ཚུལ་ཙམ་ཡིན་འདུག་པས་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་བྲི་ཐབས་ཀུན་ལ་དེ་ལྟར་མ་ངེས།

6 ‘ཀེམ་པ’ - ཤོག དེ་ཉིད།

མདོག་སྔོ་བསང་ས།[1] མདུན་དུ་ཀྱ་ཡི་རྒྱ་ལྕོ་སྤྱངས་ནས་(དེ་ནས་གཅིག་)ཞལ་དུ་གསོལ་བ། རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་[2]ཅུང་ཟད་ཡོད་པ་བྲང་སྐྱ་དང་བཅས་པ་(འི་རྣམ་པ་འབྲི་དགོས།)

༣) ལྀལྀཔྣ།[3]

ལྀལྀཔྣ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་[4]ཁྲི་ལ་བཞུགས་པ། འཁོར་བློན་པོ་དང་བཙུན་མོ་ལ་སོགས་པས་བསྐོར་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཅུང་ཟད་གསལ་བ་ཡོད་པ་དགོས།།

༣) ཕྲིཏྲྀཔྣ།

ཕྲིཏྲྀཔྣ་ནི་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་བཞིན་ཆང་འཚོང་མའི་ཁང་པ་ན་འདུག་

1 ‘སྔོ་སངས’ - ཞོག དེ་ཉིད།

2 ‘ཐོར་གཙུགས’ - ཞོག དེ་ཉིད།

3 ‘ལི་ལ་པ’ - ཞོག དེ་ཉིད།

4 ‘རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་’ ཞེས་པའི་ཚིག་གི་རྗེས་སུ་འབྱུང་ས་ཧེ་དེང་སང་གླུ་ཐོབ་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་ཐམས་ཅད་བོད་ཆས་དང་སོག་ཆས་གྱོན་པ་བོད་སོག་གི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་འབྲི་སྲོལ་འདུག་པ་འདི་ཤིན་ཏུ་མ་དག་ཅིང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་ཏ་ཅང་མི་མཐུན་པ། སྐུའི་བྲི་ཡིག་དང་བྲི་ཐབས་སོགས་ཀྱི་གོ་བ་མ་ལོན་པ་ཁོ་ནར་སྣང་ཞིང་། དགོས་པ་གཞན་ཡང་མ་མཐོང་བས། དེས་ན་རབ་བྱུང་ན་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་ལྟར་ཡུལ་དུས་དེ་དང་དེའི་རྒྱལ་པོ་སོགས་ཀྱི་ཆ་ལུགས་འབྲི་དགོས། དེ་མ་བྱུང་ན་མ་ཐ་དེ་དང་གོ་དོན་མཚུངས་པ་རྒྱ་གར་བའི་རྒྱལ་ཆས་ཤིག་བྲིན་ཡང་མི་རུང་བ་མེད་ཙམ་ཡོང་སྙམ།

པ། གོས་འདོམས་དཀྲིས་ཙམ་ལས་མེད་པ། རི་དྭགས་ཀྱི་པགས་པ་གདན་དུ་བྱས་པ། མདུན་ནས་ཆང་འཚོང་མས་ཆང་འབུལ་བཞིན་པ། ཞབས་ཕྱེད་དཀྱིལ་དུ་བཞུགས་པ། ཁང་པའི་སྟེང་གི་ནམ་མཁའ་ལ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཡོད་པ་ལ། མི་འདྲ་བའི་ཁྱད་ཆོས་དབུ་སྐྲ་ཅོ་[1]བྲགས་ལ་མི་རྟོག་གི་འཕྲེང་བ་ཙམ་མ་གཏོགས་[2]རྒྱན་མེད་པ། ཕྱག་གཡས་པ་ཐྲིག་མཛུབ་གཡོན་པས་མེན་(གཉན་)གྱི་རྭ་ཞལ་ཆང་གིས་གང་བ་འཛིན་པ་(དགོས།)

༨) ཪོསྨྲིཏེརུཀ།

ཪོསྨྲིཏེརུཀ་ནི་སྐུ་ལ་རུས་རྒྱན་ཆ་ཚང་ཡོད་པ། ཕྱག་གཡས་ན་དུག་སྦྲུལ་གྱི་ལྷུག་འཛིན་པ། སྦྲུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཅན། སྐུའི་གཡོན་ནས་ཡུམ་གྱིས་[3]འཁྱུད་ཅིང་། སྟག་ལ་ཆིབས་པའོ།།

༩) ཤཀྵརིཔཱུ།

ཤཀྵརིཔཱུ་ནི་སྐུ་ཤ་ནག་པོ། ཕྱག་གཡས་ན་མདའ་དང་། གཡོན་ན་འོད་མའི་(སྨྱུག་མའི་)གཞུ་བསྣམས་པ། གཞུ་མཆོག་[གི་སྟོད་སྨད་དམ་མགོ་མཇུག་

1 ‘ཅོ་བྲག’ - ཤོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།
2 ‘བརྒྱན’ - ཤོག ༣/ན. 399. དེ་ཉིད།
3 ‘གཡོན་ལས་ཡུམ་གྱི་འཁྱུད’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

གཉིས་]ལ་ཕག་པའི་ཁོག་སྟོད་ཁོག་སྨད་[1]བཀལ་བ་[2]། རྨ་བྱའི་སྒྲོ་མདོངས་གཤིབས་[3]པའི་སྨད་གཡོག་ཅན། མི་རྟོག་དང་འབྲས་བུའི་རྒྱན་ཡོད་པ། རིག་མ་གཉིས་ཀྱང་རྒྱན་གོས་དེ་དང་འདྲ་བ་ལ་མདའ་དོང་ཕྲག་པར་ཐོགས་པ་[4]བྱའོ།།

༦) སརཧཱ།

སརཧཱ་ནི་སྐུ་ཤ་དཀར་བ། ཚངས་སྐུད་ཐོགས་པ[5]། མདའ་སྦྱོང་པའི་རྣམ་པ་ཅན[6]། གཞོན་ཤ་ཐོན་པ། འགྲམ་ན་ཆུང་མ་ཡོད་པ། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཆ་ལུགས་ཅན་ནགས་དབེན་པ་ན་འདུག་པ་བྱའོ།།

༧) ཀཾཀལིཔཱ།

ཀཾཀལིཔཱ་ནི་དུར་ཁྲོད་དུ་བཞུགས་ཤིང་། མདུན་དུ་ཀེང་རུས་མང་[7]པོ་བཀྲམ་པ། རྒྱན་མེད་པ། སྐྲ་ཅོ་བྲག[8]། མདོག་སྔོ་བསང་ས[9]། ཕྱག་[10]མཉམ་བཞག་མཛད་པ་བྱའོ།།

---

1 ‘ཁོག་མེད’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

2 ‘བཀལ།’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

3 ‘གཤིབ་པའི’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

4 ‘ཐོགས་པའོ’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

5 ‘སྐུད་ཅན’ - ཤོག ༣/ན./ན. 311. དེ་ཉིད།

6 ‘མདའ་སྦྱོང་བ་གྲུབ་པའི་སློབ་དཔོན་ཏ་བ་མེད་པ་ཡིན་པས་ཏས་འཁོག་པའི་རྣམ་པ་མི་བྱའོ།།’ ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

7 ‘མདུན་དུ་ཀེང་རུས་ཉལ་པ’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

8 ‘སྐྲ་ཅོ་བྲག’ - ཤོག་སོགས དེ་ཉིད།

9 ‘སྔོ་སངས’ - ཤོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

10 ‘ཕྱག’ ཞེས་པ་མེད - ཤོག དེ་ཉིད།

༥) ཀླིནཔླ།

ཀླིནཔླ་ནི་ཉ་ཆེན་པོའི་ཁོག་པ་གཤཱཀ་[1]པའི་དབུས་ནས་ཐོན་པའི་ཚུལ་དུ་སྣེ། ཞབས་གཉིས་[2]ཀའམ་གཅིག་ཉ་ཡི་ཁོག་ནང་དུ་ཚུད་ཙམ་བྱ་ལ[3]། ཕྱག་གཉིས་གར་མཛད་པའི་ཚུལ་དང་། སྐུ་ཤ་སྔོ་བསང་[4]རྒྱན་མེད་ཅིང་སྐྲ་འཛིངས་པའོ[5]།།

༦) གོརཀླཱ།

གོརཀླཱ་ནི་སྐྲ་བྲགས་པ་[6]ཕྱག་མཉམ་བཞག་སྐུ་ཤ་དཀར་བ། སྟན་ལ་མཉྫ་ནག་པོ་དང་། མགུལ་ལ་ར་དུང་བཏགས་པ། སྐུ་ལུས་གཅེར་བུའམ་ཙཀྲཀྵ་ཞེས་བྱ་བ་འཁོར་ལོ་ལྷ་བུའི་བེམ་པོ་གསོལ་བ། མདུན་དུ་བ་གླང་གི་ཁྲུ་མཆོན་བྱེད་པ་གླང་འགའ་བཅས་འབྲི་དགོས[7]།

---

1 'གཤེགས་པའི' - ཤོག ༣/ན. 399.

2 'གཉིས་སམ་གཅིག' - ཤོག དེ་ཉིད།

3 'ཚུད་ཙམ།' - ཤོག ༣/ན. བ དེ་ཉིད།

4 'སྔོ་སངས' - ཤོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།

5 'འཛིང་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

6 'སྐྲ་བྲིགས་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

7 'བ་གླང་འགའ་བཅས་འབྲི་དགོས'_ཞེས་པ་འདི་བྲི་ཡིག་རྩ་བར་མེད། ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

༡༠) ཙཽ་རངྒི་པཱ།།

ཙཽ་རངྒི་པཱ་ནི་སྤྲ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་[2]ཆུང་ངུ་ཡོད་པ[3]། ཤིང་དྲུང་ན་གནས་ཤིང་[4]མཉམ་བཞག་གི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་པ། ལོགས་[5]གཅིག་ནས་ཕར་འགྲོ་བའི་[6]ཚོང་པ་འགའ་ཞིག་གི་ཟེང་སོལ་བར་[7]སོང་བའི་ཚུལ་བྱེད་དགོས།

༡༡) བཱིཎཱ་པཱ།

བཱིཎཱ་པཱ་ནི་ཛན་ལྷར་[8]དུ་གྲགས་པ་སྐྱུད་[9]པ་གསུམ་ཡོད་པའི་རྒྱུད་ཅན་འཆང་སྙེ་དེ་རྡུང་བཞིན་པ། མགོ་ལ་ཐོད་བཅིང་བ་སོར་རྒྱལ་བུའི་རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ[10]།།

---

1 'ཙཽརམ་གི་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

2 'ཐོར་ཆུག' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

3 'ཆུ་ངུ་ཡོད།' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

4 'མཉམ་བཞག་བྱས་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

5 'ལོག་གཅིག' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

6 'ཕར་ཚོང་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

7 'སོལ་བར་སོང་བ་བྲིས' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

8 འདིར་ "ཛན་ལྷར་དུ་གྲགས་པ" ཞེས་པ་ལ་གོ་དོན་མི་སྣང་བས། དོན་ནི "ཛཱལནྡྷརདུ་གྲགས་པ" ཞེས་པ་པའམ་ཡང་ན་ཛཏྲ = ཡཏྲཞེས་པ་ཡིན་སྙམ་དཔྱད་དགོས།

9 'སྐྱུ་བ' - ཤོག དེ་ཉིད།

10 'བྱ།' - ཤོག ༣ /བ. དེ་ཉིད།

༡༢) ཤཱནྟིཔཱ།[1]

ཤཱནྟིཔཱའནི་དགེ་སློང་པཎྜིཏའི་རྣམ་པ་ཅན་ཅུང་ཟད་བགྲེས་པའི་རྣམ་པ་ཡོད་པ་དབུ་ལ་པཎ་ཞྭ་གསོལ་བ་བྱའོ།།

༡༣) ཏནྟིཔཱ།[2]

ཏནྟིཔཱ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྒན་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་ཁྲི་འཐག་པ་[3] [ཐགས་ཤིང་ལ་སོགས་པའི་ཡོ་བྱད་གཤམས་ཏེ་ཐགས་འཐག་པ] འི་རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༡༤) ཙམརིཔཱ།

ཙམརིཔཱ་ནི་ལྷམ་བཟོ་བྱེད་པའི་བྱ་བ་ལ་གནས་བཞིན་པ་བྱའོ་[4]།།

༡༥) ཁཌྒཔཱ།[5]

ཁཌྒཔཱ་ནི་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན་[6]ཕྱག་ན་རལ་གྲི་ཐོཊ་[7]ནས་ནམ་

---

1 ‘ཤེནྟཔ’ - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

2 ‘ཤནྟི་པ’ - ཤོག ༣/བ. 400. བྲི་ཡིག་སློག་དཔར།

3 ‘ཁྲི་འཐག་པ’ ཞེས་པ་ཐགས་འཐག - ཞེས་པའི་བརྡ་རྙིང་ཡིན་སྙམ།

4 ‘ལྷམ་བཟོ་བའི་བྱ་བ་མཛད་པ།’ - ཤོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།

5 ‘ཁ་དག་པ’ - ཤོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།

6 ‘ཐོར་བཅུགས་ཅན’ - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

7 ‘རང་གྲི་ཐོག་ནས’ - ཤོག ༣ དེ་ཉིད།

མཁའ་ལ་འཕུར་བ། དེའི་ཚེ་འཁོར་ཞིག་ན་མཆོད་རྟེན་ཞིག་གི་སྒོ་ནས་སྦྲུལ་ཆེན་པོ་ཞིག་ལུས་ཕྱེད་ཙམ་ཐོན་པ་བྲིས། མཆོད་རྟེན་གྱི་ནང་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྐུ་ཅུང་ཟད་ཐོན་པ་ཙམ་[1]བྲིས་ནའང་ལེགས།།

༡༦) ཀླུ་སྒྲུབ།

འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ནི་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་བཞིན་ནམ། ཡང་ན་[2]སྐུ་ཤ་སྔོ་བསངས་[3]ཤིན་ཏུ་མཚར་བ་ལྟ་བུ་ལ་དབུ་ལ་གཙུག་གཏོར་ [ཅུང་ཟད་ཐོན་] ཡོད་པ། དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་ཅན་[4] [དབུའི་རྒྱབ་ཕྱོགས་ནས་སྙིང་དུ་ཐོན་པ་] སྦྲུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཅན་བྱས་ན་དོན་དང་མཐུན་ཞིང་[5]། ཡང་[6]མཚན་དཔེ་ཅན་གྱི་སྐུ་ལ་མོས་ན་ནི་དེ་འཇའ་ལུས་ཀྱི་སྐུ་ཡིན་པས་འཁོར་ལོ་བསྒྱུར་བའི་ཆ་བྱད་དུ་བྱས་ཀྱང་རུང་[7]བར་མངོན་ནོ།།

༡༧) ནག་པོ་སྤྱོད་པ།

ནག་པོ་སྤྱོད་པ་ནི་སྐུ་ཤ་སྔོ་བསངས་[8]ཕྱག་ན་ཌཱ་མ་རུ་དང་ཐོད་པ་དང་

---

1 'རིབ་ཙམ་མངོན་པ་བྲིས་ནའང' - ཤོག ༤/ན. 40. དེ་ཉིད།

2 'ཡང་ན་འདི་ལྟའང' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

3 'སྔོ་སངས' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

4 'དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་སྦྲུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཅན' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

5 'བྱེད་པ་དོན་དང་མཐུན་ཅིང་།' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

6 'ཅི་སྟེ་མཚན་དཔེ' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

7 'ལེགས་པར' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

8 'སྔོ་སངས' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

ཁ་ཊྭཾག་བསྣམ་པ། མཁའ་ལ་གདུགས་བདུན་རང་འཁོར། ཀམ་རུ་བདུན་རང་འཁྲོལ། སྲིན་མོའམ་རོ་ལང་མ་ལ་ཆིབས་པ། རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་[1]དང་རུས་པའི་རྒྱན་དྲུག་གིས་བརྒྱན་[2]པ། སྣག་ཕྱགས་ཀྱིས་སྣད་དཀྲིས་པ་[3]སོགས་ཛེ་ལྷར་རིགས་པ་ལྷར་བྲིས[4]།

༡༨) ཨཱཙྭདེཝ།[5]

ཨཱཙྭདེཝ་ནི་དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་ཅན། ཤིང་ཀྟརའི་ལོ་མ་སྐེ་ཤིང་ལོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཕྱག་ན་བསྣམས་པ་[6]བྲིའོ།།

༡༩) ཐཀནཔཱ།[7]

ཐཀནཔཱ་ནི་གཡས་གཡོན་ཕན་ཚུན་དུ་གྲོང་ཁྱེར་རེ་འབྲི་ཞིང་། ཤིང་སྟོང་ཞིག་ལ་ཕྱེད་བསྙིས་སུ་བཞུགས་པ། དེའི་མདུན་ན་དགེ་སློང་ཞིག་འགྲེངས་ནས་དེ་ལ་གདམ་སྣ་བཞིན་པའི་ཚུལ་དུ་འབྲི་དགོས་[8]།

---

1 'ཐོར་ཙུགས' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

2 'རུས་པའི་རྒྱན་དྲུག' - ཤོག ༥/ན དེ་ཉིད།

3 "སྣག་ཕྱགས་ཀྱི་སྣད་ཀྲིས་སོགས་ཅི་ལྷར་རིགས་པར་འབྲིའོ།།" - ཤོག ༥/ན དེ་ཉིད།

4 "སྣག་ཕྱགས་ཀྱི་སྣད་ཀྲིས་སོགས་ཅི་ལྷར་རིགས་པར་འབྲིའོ།།" - ཤོག ༥/ན དེ་ཉིད།

5 'ཨཙྭདེབ' - ཤོག ༥/ན དེ་ཉིད།

6 "དགེ་སློང་ཤིང་ཀྟརའི་ལོ་མ་སྐེ་ཤིང་ལོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཕྱག་ན་བསྣམས་པ།"-ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

7 ཐ་ག་པ' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

8 'འགྲེངས་ནས་གདམ་སྣ་བ།' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

༣༠) ནརོཔཱ།

ནརོཔཱ་ནི་སྐུ་ཤ་སྨུག་པོ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་དང་རུས་[1]རྒྱན་ཅན། སྐུ་ལ་[2]མི་ལྤགས་གསོལ་བ་མི་ལྤགས་ཀྱི་རྐང་ལག་གཉིས་ནས་ཕྱག་གིས་[3]གཟུངས་ནས་ཞབས་བརྐྱང་བསྐུམ་གྱི་ཚུལ་[4]གྱིས་བཞུགས་པའམ་གར་སྟབས་མཛད་པ་བྱའོ[5]།།

༣༡) ཤཱལིཔཱ།

ཤཱལིཔཱ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ལྕེ་སྤྱང་གི་རོ་ཕྲག་པར་བཀལ་བ་ཞིག་འབྲིའོ་[6]།།

༣༣) ཏིལིཔཱ།

ཏིལིཔ་[ཏིལླི་པཱ་]ནི་སྐུ་ཤ་སྔོ་ནག་ཏིལ་བརྡུངས་པའི་རྣམ་པ་ཅན། མདུན་ན་[7]རིག་མས་སྣོད་གཅིག་ནས་ཏིལ་བསྒྱུས་པའི་ཁང་བུར་ཏིལ་བླུག་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་ཡོད་པ་བྱའོ[8]།།

---

1 'རུས་བརྒྱན་ཅན' - ཤོག ང/ན. དེ་ཉིད།
2 'མི་ལྤགས་གསོལ་བའི' - ཤོག དེ་ཉིད།
3 'ཕྱག་གི་གཟུངས་ནས' - ཤོག ང/ན. དེ་ཉིད།
4 'བསྐུམ་གྱིས་ཚུལ་གྱིས' - ཤོག དེ་ཉིད།
5 'མཛད་པ།' - ཤོག དེ་ཉིད།
6 'བཀལ་པ།' - ཤོག དེ་ཉིད།
7 'མདུན་དུ' - ཤོག དེ་ཉིད།
8 'རྣམ་པ་ཅན།' - ཤོག··· ·དེ་ཉིད།

༣༣) ཙདྣཔྣ།

ཙདྣཔྣ་ནི་པྣཏི་[པོདྨི་]རྒྱབ་ཏུ་འཁྱུར་ཞིང་པོད་ཆུང་ཞིག་ལག་ཏུ་ཐོགས་པ་རབ་བྱུང་གི་ཆ་བྱད་ཅན་དུ་བྱ[1]འོ།།

༣༨) ཀྣདྣཔྣ།

ཀྣདྣཔྣ་ནི་ཕག་ཤ་དང་ཆང་བུམ་མདུན་དུ་[2]བཞག་པ། ཚང་སྐྱུད་ཅན། སྐྲ་ཤད་པ་བཅིངས་པའི་ཐོར་ཅོག་ཅན། ན་རྒྱན་སོགས་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱན་ཆུང་ཟད་ཡོད་པ། དེའི་གཡས་ཕྱོགས་སུ་[3]བྲག་སྟེང་ལྷ་བུ་མཐོ་བ་ན་བླ་མ་རྣལ་འབྱོར་པ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན་ཞིག་[4]བཞུགས་པའོ།།

༣༥) ཧྲུཁནདིཔྣ།[5]

ཧྲུཁནདིཔྣ་ནི་ཕྱུག་ན་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་གོས་ལྷན་སྤྱུལ་མང་པོ་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བསྡུས་ནས་ཆེམ་བུར་[6]འཆེམ་པའོ།།

---

1 ‘ཙན་ནོ།’ - ཤོག ༩/བ· 402. དེ་ཉིད།

2 ‘མདུན་དུ་བཞག་པ’ - ཤོག ༩/བ· དེ་ཉིད།

3 ‘ཕྱོགས་བྲག་སྟེང་’’ - ཤོག ༩/བ· དེ་ཉིད།

4 ‘ཅན་གཅིག’ - ཤོག ༩/བ· དེ་ཉིད།

5 ‘ཀྲུ་ཁན་རི་པ’ - ཤོག ༩/བ· དེ་ཉིད།

6 ‘ཆོམ་པ།’ - ཤོག ༩/བ· དེ་ཉིད།

༣༦) ཨཛོཀིཔཱ།

ཨཛོཀིཔཱའ་ནི་ [ཨཡོགིཔཱ་ནི་]དུར་ཁྲོད་གཅིག་ཏུ་འཕྲེད་ཉལ་མཛད་པ། རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅུང་ཟད་ཡོད་པའོ།།

༣༧) ཀལཀལཔཱ།

ཀལཀལཔཱ་ནི་ རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅུང་ཟད་ཙམ་ཡོད་པ་[1]གཟུགས་མཛེས་པ། ཕྱག་མཉམ་བཞག་མཛད་ཅིང་དུར་ཁྲོད་ན་གནས་པའོ། །

༣༨) ཀྵོཥྲིཔཱ།[2]

ཀྵོཥིཔཱ་ནི་གཞོང་པ་རྣམས་སུ་[3]གོས་རྙིང་པ་འཁྲུད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་ནོ།།

༣༩) ཀཾཀནཔཱ

ཀཾཀནཔཱ་ནི་ རང་གི་ལག་གདུབ་ལ་ལྟ་བཞིན་དུ་[4]འདུག་པ། ནམ་མཁའ་ནས་ལྷ་དང་ལྷ་མོས་མཆོད་པ་འབུལ་བ།

---

1 'ཅུང་ཟད་ཙམ་གཟུགས་མཛེས' - ཤོག ཡ/ན. དེ་ཉིད།

2 'རྒྱུ་བི་པ' - ཤོག ཡ/ན. དེ་ཉིད།

3 'འདིར་གཞོང་པ' ཞེས་བོད་ཤན་ཞུགས་པ་ཡིན་ནམ་དཔྱད། - ཤོག ཡ/ན. དེ་ཉིད།

4 'བཞིན་འདུག་པ' - ཤོག ཡ/ན. དེ་ཉིད།

༣༠) ཀམྦལཔཱ།[1]

ཀམྦལཔཱའམ་ལྭ་ཝ་པཱ་ནི་ས་ལ་རང་ཤོང་བ་ཙམ་ཞིག་[2]བྲུས་པའི་ཁ་མཆམས་མི་མགོ་སྐམ་[3]པོས་བསྐོར་བའི་དབུས་ན་གཟིམ་པ། ཡང་ན་བྲག་ཕུག་ན་ཟིམ་མི་མཉམ་བཞག་མཛད་པ་བྱས་ཀྱང་རུང་། འདི་[4]དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་ཅན་ནོ།།

༣༡) ཏེངྐིཔཱ།

ཏེངྐིཔཱ་ནི་སྣོད་གཅིག་ཏུ་འབྲས་སླུགས་[5]ནས་གདུན་ཤིང་[6]གིས་འབྲས་བགྲུ་[7]ཞིང་ཆུ་ལ་འཕྲུད་པའི་རྣམ་པ་ཅན། ཕྱོགས་གཅིག་ན་ཆང་འཚོང་མ་ཞིག་ཡོད་པ་འབྲི་དགོས།[8]།

༣༣) ཀྐཆེཔཱ།

ཀྐཆེཔཱ་ནི་རྒྱལ་པོའི་བུའི་རྣམ་པ་ཅན་[9]། ནམ་མཁའ་ལ་དགེ་སློང་ལྡུང་

---

1 ‘ཀཾ་པ་ལ་པ’ - ཤོག ཕ/ན. 403. དེ་ཉིད།

2 ‘རང་ཤོག་བཞིན་དུ་བྲུས་’’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

3 ‘ཀམ་པོས’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

4 ‘དགེ་སློང’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

5 ‘སླུག་ནས’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

6 ‘གདུན་ཞིང་’’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

7 ‘གྲུ་ཞིང’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

8 ‘འབྲི།’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

9 ‘རྣམ་པ་ཞིག’ - ཤོག ཕ/ན. དེ་ཉིད།

བཟེད་གྲོགས་པ་ཞིག་[1]འགྲོ་བ་ལ་བཀླ་ཞིང་། མདུན་ནས་[2]ཀླུ་ཡི་བཙོ་བོས་གདམ་སྒྲ་བའི་ཚུལ་དུ་འདུག་པ་འབྲིའོ[3]།།

༣༣) དྷེཔཱ།

དྷེ་པཱ་ནི་ཤོ་རྩེ་བ་ཞིག་འབྲིས[4]། ཤོ་རྒྱ་གར་ལུགས་སུ་བྱེད།

༣༤) ཀུཀུརིཔཱ།

ཀུཀུརིཔཱ་ནི་རུས་པའི་རྒྱན་[5]དང་ཐོར་ཚུགས་ཡོད་པ་[6]ཡང་དུ་ཁྱི་མོ་ཡོད་པ་འབྲིས[7]།

༣༥) ཀུཙིཔཱ་[8]

ཀུཙིཔཱནི་ལྐོག་པར་ལྦ་བ་སྐྱེས་ཡོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་མདུན་ན་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་བཞུགས་ཡོད་པ་ཞིག་འབྲིས[9]། །

---

1 'གྲོགས་པ་འགྲོ་བ' - ཡ/ན. དེ་ཉིད།

2 'མདུན་ན'' - ཤོག ཡ/བ· 404. དེ་ཉིད།

3 'གདམ་སྒྲ་ག།' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

4 'ཞིག་འབྲི།' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

5 'བརྒྱན་དང' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

6 'ཚུགས་ཅན' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

7 'ཡོད་པ་འབྲི…' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

8 'ཀུ་ཛི་པ' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད།

9 'གཅིག་འབྲི།' - ཤོག ཡ/བ· དེ་ཉིད། འདི་མ་དཔེར་ཚིག་གོང་འོག་ལྡོག་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད།

༣༦) ཧྣམ་པྣ།[1]

ཧྣམ་པྣ་ནི་བྲམ་ཟེའི་[2]ཆ་བྱད་ཅན་སློབ་སྟོན་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་བཞུགས་ཡོད་པ། དེའི་གཡས་གཡོན་དུ་པོ་ཐྲི་མང་པོ་[3]ཡོད་པ་བཅས་བྲིས།

༣༧) མཧེ་པྣ།[4]

མཧེ་པྣ་ནི་ཡན་ལག་སྒྲོམ་ཞིང་[5]ལྷ་སྲུལ་ཅན་གཞན་ལ་ལུས་སྟོབས་འགྲན་[6]པའི་ཚུལ་ཅན་ནོ། །གྲུད་མིའི་རྣམ་པ་ཅན་བྱས་ཀྱང་རུང་[7]།

༣༨) ཨཙིཀྣ་པ།[8]

ཨཙིཀྣ་པྣ་ནི་ནགས་ནས་ཤིང་གཅོད་ཅིང་། [9]ཤིང་ཁུར་ཁུར་ནས་འགྲོ་

1 'ཧྣ་ཡ་པ' - ཤོག ཕ 404. དེ་ཉིད།

2 'བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱད་པོ་ཏི་མང་པོ་དང་བཅས་པ།' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད། འདིར་'པོ་ཏི' - ཞེས་པ་བོད་དཔེ་ཤལ་ཆེ་བ་ལས་བྱུང་ཡང་འདི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་མིང་ཡིན་པས 'པོ་ཐྲི' ཡིན་གྱི - 'པེ་ཏི' ཟེར་བ་མ་དག་པར་མངོན་ནོ།

3 'བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱད་པོ་ཏི་མང་པོ་དང་བཅས་པ།' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

4 'མ་ཧེ་ལ' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

5 'སྒྲོམ་ཞིང་ལྷ་སྲུལ' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

6 'འདྲེན་པའི' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

7 'གྲུད་མི་སོགས་མ་དཔེར་མེད།' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

8 'ཨཙིཀྣ་པ' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

9 'གཅོད་ཤིང་ཤིང་ཁུར་ཁུར་ནས' - ཤོག ཕ/བ. དེ་ཉིད།

པ་[1]འམ། ཡང་ན་ནགས་ན་ཕྱེད་ཉལ་གྱི་ཚུལ་གྱིས་བཞུགས་པ་སྒོམ་ལ་གནས་པ་བཞིན་པའོ།།

༣༩) ཀླཡཧིཔཱ།[2]

ཀླཡཧིཔཱ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་[3]ཅན་ཕྱུག་ན་ཐོད་པ་ཡོད་པ་[4]། གཡོན་ཕྱོགས་ནས་བཙུན་མོས་འཁྱུད་པ་[5]བཅས་འབྲི་དགོས།

༤༠) ནལིཔཱ།

ནལིཔཱ་ནི་པདྨའི་མཚོ་ནས་མེ་ཏོག་པདྨ་རྩ་བ་དང་བཅས་པ་གཙོད་པའི་[6]རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༤༡) ཀླུསུཀཔཱ།

ཀླསུཀཔཱ་ནི་ཞི་བ་ལྷ་སྟེ། མཐའ་དགེ་བདུན་གྱིས་[7]བསྐོར་བའི་ཁྲི་

---

1 'འམ་ཞེས་པ་མཐའ་ཆད་མ་དཔེར་མེད།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

2 'འདི་ལ་' - ཀླ་ཡཀ དང་ཀླཀྲུཔ་ཟེར་བ་འདུག་ཀྱང་འདིར་མ་དཔེ་ལྟར་བྲིས་པ་ཡིན་ལ། འདིའི་རྣམ་ཐར་དུ 'བཀྲཏི' ཞེས་བྲིས་འདུག་ལ། དེའི་དོན་ཡང་ 'ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན' ཞེས་བྲིས་འདུག ཤོག ༨༩/ན. རྣམ་གློག་དཔར་དེ་ལི།

3 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

4 'ཕྱུག་ན' ཞེས་སོགས་མེད - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

5 'འཁྱུད་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

6 'གཙོད་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

7 'གྱི་བསྐོར' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

སྙིང་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་ཅུང་ཟད་འཕགས་པ། དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱད་ཅན། ཕྱག་ཆོས་འཆད་མཛད་པ། མདོག་དཀར་ལ་དམར་བ་ཤ་ཉམས་རྒྱས་པའི་[1]རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༤༢) ཨིནྡྲཱབྷུ་ཏི།

ཨིནྡྲཱབྷུ་ཏི་ནི་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་ལ། ཕྱག་ཆོས་སྟོན་དང་ཆུ་སྦྱིན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་མཛད་པ། བུད་མེད་སྒྲ་དང་རོལ་མོ་དང་བྲོ་གར་བྱེད་པ་མང་པོས་[.]སྐོར་བའི་[2]རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༤༣) མེ་ཀོ་པ།

མེ་ཀོ་པ་ནི་ཁྲུ་བ་འཚོང་ཞིང་འཚོང་བའི་དོན་དུ་ཟས་སྣ་ཚོགས་[མདུན་དུ་] བཀྲམ་པའི་[3]རྣམ་པ་ཅན་འབྲི་དགོས།།

༤༤) ཏོག་རྩེ་པ།

ཏོག་རྩེ་པ་ནི་དབུ་ལ་ཐོད་བཅིང་[4]ཞིང་ཏོག་རྩེས་ཞིང་ཐ་རོང་བརྐོ་བ་[འམ་རི་འགྲམ་ཞིག་གི་ཡུལ་ན་གནས་བཅའ་སྐེ་རི་བརྐོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་བྱས་ན་རྣམ་ཐར་དང་མཐུན།]

---

1 ‘པའོ།’ - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

2 ‘བསྐོར་བའོ།’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

3 ‘བཀྲམ་པའོ།’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

4 ‘ཅིང་ཞིང’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

༨༥) ཀམརིཔཱ།

ཀམརིཔཱ་ནི་(=ཀམཔརིཔཱ་)ལྷུགས་མགར་[2]གྱི་ལས་བྱེད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་བྲིའོ།།

༨༦) ཛཱལནྡྷརཔཱ།

ཛཱལནྡྷརཔཱ་ནིརྣལ་འབྱོར་པ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་དང་རུས་རྒྱན་ཅན། ཞབས་[3]གཅིག་རྐྱབ་ནས་བཀུག་སྟེ་དཔུང་པར་བཀལ་བ། ཡ་[4]གཅིག་བསྐུམ་པའི་ཚུལ་གྱིས་པུས་མོ་ས་ལ་བཙུགས་པ། ཕྱག་གི་[5]མཛུབ་མོ་གཉིས་རྩེ་སྦྲད་པ་སོར་མོ་གཞན་རྣམས་བསྐོལ་བའི་ཕྱག་རྒྱ་མཛད་ནས་ཕྱག་རྒྱ་དེ་མགོ་[6]མཛུག་བཟློག་ནས་སྤྱི་བོར་བཅིངས་[7]པ། ཕྱོགས་གཅིག་ནས་རིག་མས་བརྟེན་པའི་[ལུས་ཀུན་ས་ལ་ཕབས་པའི་]ཕྱག་འཚལ་བ་[8]བཅས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་འབྲི་དགོས།

---

1 'ཀཱླ་རི་པ' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

2 'མགར་གྱིས་ལས' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

3 'ཞབས་ཕྱོགས་གཅིག' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

4 'ཕྱོགས་གཅིག་བཞད་པའི་པུས་བཙུགས།' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

5 'ཕྱག་སོར་མཛུམ་མོ་གཉིས' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

6 'མགོ་གཞུགས་བཟློག' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

7 'འཆིང་བ' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

8 'འཚལ་ག།' - ཤོག དེ་ཉིད།

༥༧) རཏྣཱལཔཱ།

རཏྣལཔཱ་ནི་དུར་ཁྲོད་ན་འདུག་ཅིང་སྐུ་ཤ་སྤོ་[1]བསངས་ཡོད་ཙམ་བགྲིས་པ་། དཔུ་སྐྲ་བྲགས་[2]པ། ཕྱག་མཉམ་བཞག་བྱས་ཤིང་། དུར་ཁྲོད་ཀྱི་མི་རོ་ལ་བལྟ་བ་ཞིག་བྲིས[3]།།

༥༨) ཏྲམཱ་པཱ།

ཏྲམཱ་པཱ་ནི་དགེ་སློང་བགྲེས་པོ་ཕྱག་ན་པོ་ཏྲི་བསྣམས་པའི་[4]རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

༥༩) ཏྲོཀ་རི་པཱ།

ཏྲོཀ་རི་པཱ་ནི་ཏྲོ་ལྦཱ་[5]ཞིག་གི་ནང་དུ་སྣོད་ཆེན་པོ་ཞིག་བཙུག་ནས་སློང་མོ་སློང་བའི་ཚུལ་དུ་བཞེངས་པའི་[6]རྣམ་པ་ཅན་དུ་བྲི།

---

1 ‘སྤོ་སངས’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

2 . ‘སྐྲ་བྲིག་པ’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

3 ‘འབྲི།’ - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད། འདིར ‘མི་རོ’ ཞེས་འདུག་ཀྱང་དངོས་འབྲེལ་དེ་བུད་མེད་ཀྱི་རོ་མགོ་མེད་མཚན་མ་སོར་བྱིན་དུ་འབུར་བ་མི་སྡུག་པའི་རྣམ་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་ཞིག་གོ །

4 ‘པོ་ཏི་བསྣམས་པ།’ - ཤོག ༦/ན. 405. དེ་ཉིད།

5 ‘འཇོ་ལའི་ནང་དུ’ - ཤོག ༦/ན. 406. དེ་ཉིད།

6 ‘བཞིང་པ།’ - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

༥༠) མིཏྲིནཔཱ།[1]

མིཏྲིནཔཱ་ནི་གླང་གཉིས་ལ་གཉའ་ཤིང་བཙུག་ནས་ཞིང་རྨོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་[2]དུ་འབྲི་དགོས།

༥༡) པངྐཛཔཱ།

པངྐཛཔཱ་ནི་བྲམ་ཟེའི་གཞོན་ནུའི་རྣམ་པ་ཅན་[3]པདྨའི་རྫིང་བུའི་འགྲམ་ན་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་ལྷ་ཁང་ཞིག་[4]ཡོད་པ་ལ་དེའི་ནང་གི་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྐུ་དེ་ལ་དགེ་སློང་ཞིག་[5]གིས་མཆོད་པ་འབུལ་བ་[6]ལ་བལྟ་བའོ།།

འདིའི་ལོ་རྒྱུས་ན་སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་དབང་ཕྱུག་ནོར་བའི་ལོ་རྒྱུས་ཡོད་པས[7]། སྤྱན་རས་གཟིགས་[འདི་སྐུ་མདོག་]དམར་པོ་ཕྱག་གཡོན་ན་པདྨ་

---

1 'མི་ཏྲི་ནི་པ' - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

2 'རྣམ་པ་ཅན།' - ཤོག ༦/ན. བ དེ་ཉིད།

3 "ཁོང་རང་བྲམ་ཟེ་གཞོན་ནུའི་ཆ་བྱད་ཅན" ཞེས་པ་འདི་གཤམ་ན - 'མཆོད་པ་འབུལ་བ' ཞེས་པའི་རྗེས་སུ་འདུག་ཀྱང་འབྲེལ་ཆགས་པའི་དབང་གིས་འདིར་བཞག་པ་ཡིན།

4 'ལྷ་ཁང་ཅིག' - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

5 'གཅིག་གི་མཆོད་པ' - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

6 'འབུལ་བ།' - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

7 'ཡོད་པ།' - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

དང་[1]། གཡས་དེ་ཁ་འབྱེད་པ། ཡུམ་གྱིས་[2]གཡོན་ནས་འཁྱུད་པ། སྐུའི་གཡས་གཡོན་དུ་རྩེ་གསུམ་དང་ཐོད་པ་བཞག་པའོ[3]།།

ཕ༣) དྲིལ་བུ་པ།

དྲིལ་བུ་པ་ནི་རྣལ་[4]འབྱོར་པའི་ཆ་ལུགས་ཅན། སྐུ་ལ་རུས་རྒྱན་དང་སྣག་ཕྱགས་ཀྱི་ཤཾ་ཐབས་དང་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་སོགས་ཡོད་པ་སྐུ་མདོག་སྔོ་བསང་ས[5]། རྡོ་རྗེ་དང་དྲིལ་བུ་འཛིན་པ་[6]། ཡུམ་ལ་འཁྱུད་པ་[7]། ཡུམ་ནི་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་དངོས་སྐུ་མདོག་དམར་མོ་གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པ། དེ་ཡང་གཉིས་ཀ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་ཐབས་སམ་ཡང་ན་བདེ་མཆོག་ལྷན་སྐྱེས་བཞིན་གཡས་བརྐྱང་གཡོན་བསྐུམ་གང་བྱས་ཀྱང་རུང་སྟེ། ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པ་མཚོན་བྱེད་སྤྲིན་གསེབ་དུ་བཞུགས་པ་བྲིས།

1 ‘དང’ ཞེས་པ་མ་དཔེར་མེད། - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

2 ‘ཡུམ་གྱི་གཡོན་ནས’ - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

3 ‘འདིར་སྤྱན་རས་གཟིགས་སྐུ་མདོག་དམར་པོ་རྡོ་རྗེ་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་བྱས་ཀྱང་རུང་མོད། སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་འབྲེལ་གཞི་ལ་ཐོད་པ་དང་རྩེ་གསུམ་དགོས་པའི་ཁྱད་པར་གང་ཡང་མེད་དོ།།

4 ‘རྙིང་དཔོན་ཉིད་རྣལ་འབྱོར’ - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

5 ‘སྐུ་ལུས་མི་ཤ་ཁ་ཧྲི་སངས་པ།’ - ཤོག ༦/བ. 406. དེ་ཉིད།

6 ‘འཛིན་པས’ - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

7 ‘འཁྱུད་པ་ལ’ - ཤོག ༦/བ. དེ་ཉིད།

(དེའི་)འོག་ཕྱོགས་ཀྱི་ས་ནས་[1]མཚོ་ལུད་པས་[2]གྲོང་ཁྱེར་གྱི་ཕྱེད་ཙམ་བླིབས་པ་[3](ཕྱེད་ཙམ་ནུབ་པ་)མཚོ་དཀྱིལ་ནས་[4] (སྤྱན་རས་གཟིགས) ཁསརྤཎིའི་སྐུ་ཕྱེད་ཙམ་ཐོན་པ་བྲིས[5]།

༥༤) ཛོ་གི་པཱ།

ཛོ་གི་པཱ་[6][ཡོ་གི་པཱ་] ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་[ལུས་]གཅེར་བུ། འཁར་བ་ཐོགས་པ་[7]། ཡོ་བྱད་རྣམས་ཕྱག་དབྱུག་(འཁར་བའི་)རྩེ་ལ་བསྐོན་ནས་ཕྲག་པར་[8]ཐོགས་པའི་ཚུལ་[9]དུ་འབྲི་དགོས།

༥༥) ཙ་ལུ་ཀི་པཱ།

ཙ་ལུ་ཀི་པཱ་ (=ཙ་ལུ་ཀི་པཱ་) ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཆ་བྱད་ཅན་རི་དྭགས་ཀྱི་

---

1 ‘འོག་ཕྱོགས་ན་མཚོ་ལུད་པས’ - ཤོག ༧/ན. 407. དེ་ཉིད།

2 ‘འོག་ཕྱོགས་ན་མཚེ་ལུད་པས’ - ཤོག ༧/ན. 407. དེ་ཉིད།

3 ‘བསླིབ་པ་དང་།’ - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

4 ‘མཚོ་དཀྱིལ་ན་ཁ་སར་པཎི’ - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

5 ‘འབྲི།’ - ཤོག དེ་ཉིད།

6 བོད་དཔེ་མང་ཆེ་བར་ ‘ཛ [illegible] ’ [illegible] ཡང་། རྒྱ་ནག་ [illegible] ཅིག ‘ཡོ་གི’ ལ་ཁ་ནས་བརྗོད་ཚེ་ ‘ཛོ་གི་’ ཟེར་ [illegible] མཐོང་ཞིང་། རྒྱ་གར་བའི་བྲི་སྲོལ་ལ་ ‘ཡོ་གི’ ལ་ ‘ཛོ་གི’ བྲི་སྲོལ་ཡོད་ [illegible]།།

7 ‘ཐོགས་ཤིང་…’ - ཤོག [illegible] དེ་ཉིད།

8 ‘སྐྱོན་ཅིང་ཕྲག་རྒྱུས’ - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

9 ‘ཐོགས་པ་ཞིག་འབྲི།’ - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

པགས་པའི་གདན་བཏིང་ཞིང་། ལ་ཊ་སྤྲས་སུ་བཅུག་ནས་ཉལ་བ། མདུན་དུ་སྒྲོམ་ཤིང་བཅུགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་བྲིས་[1]།

༥༥) གོརྷུརིཔཱ།[2]

གོརྷུརིཔཱ་[གུྃཏརིཔཱ་]ནི་སྐད་ལ་ཤིང་ལོའི་སྐད་གཡོགས་[3]ཅན། དབུ་སྐྲ་བཅོས་[4]བྲགས། སྙི་བཅུགས་[5]ཏེ། བྱ་གཤོར་བའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིའོ༎

༥༦) ལུཙིཀཔཱ།

ལུཙིཀཔཱ་ནི་བྲམ་ཟེའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ་[6]སྐྲ་དང་ཁ་སྤུ་རྣམས་འཇབ་རྒྱས་བརྟགས་པས་[7]ཟེད་ཟེད་པ་ཞིག་[8]བྲིས༎

---

1 'མདུན་དུ་བསྒྲོམ་ཤིང་བསྒྲུར་བའོ༎'

2 'ཀུ་རུ་ཊ་པ' - ཤོག ༦/ན. དེ་ཉིད།

3 'ཤིང་ལོའི་གོས་ཅན།' - ཤོག ༢/ན./ན. དེ་ཉིད།

4 'དབུ་སྐྲ་ཅོ་བྲིག' - ཤོག ༢/ན. 407. དེ་ཉིད།

5 'སྙིང་རྩུག་ཏེ' - ཤོག ༢/ན. དེ་ཉིད།

6 'ཅན་ལས' - ཤོག ༢/ན. དེ་ཉིད།

7 'བརྟགས་པའི' - ཤོག ༢/ན. དེ་ཉིད།

8 'པ་ཅིག' - ཤོག དེ་ཉིད།

༥༧) ནགུཎ་པཱ།

ནགུཎཔཱ་ནི་མལ་ཁྲི་ལ་རྒྱབ་བརྟེན་[2]པའམ་བསྙེས་ནས་ཟས་ཟ་བ། མདུན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ཡོད་[3]པའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

༥༨) ཛཡནྡྲཔཱ།

ཛཡནྡྲཔཱ་ནི་ཕྱག་ན་དྲིང་[4]ཤགས་བ་སྣམས་པ་གཏོར་མ་སྣ་ཚོགས་པ་གཏོང་[5]བའི་རྣམ་པ་ཅན། འཁོར་སློབ་མ་ཛ་ཛ་བཏུང་བ་དང་། གླིང་བུ་འབུད་པ་དང་། བསིལ་སྙན་འཁྲོལ་[6]བ་དང་། པི་ཝང་བདུང་བ་སོགས་འབྲི་དགོས།།

༥༩) པཙརིཔཱ།[7]

པཙརིཔཱ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཤིང་སྡོང་ཞིག་ན་འདུག་པ། དབུ་སྐྲ་བྲཊ་པ་[8]

1 'ནིརྒུཎཔ' - ཤོག ༧/བ. 408. དེ་ཉིད།

2 'མལ་ཁྲི་ལ་རྒྱབ་རྟེན་བསྙེས་ནས' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

3 'པ་ཅིག་ཡོད་པ།' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

4 'དྲིང་ཐག' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

5 'བདང་བའི' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

6 'ཁྲོལ་པ' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

7 'བཙརི་པཱ' ཞེས་བོད་དཔེ་མང་པོར་འདུག་མོད། དེ་ནི་ཡུལ་སྐད་ཀྱི་དབང་གིས 'ཀ' 'བ' རུ་སོང་བར་མངོན་ལ། 'པཙརི' ཞེས་པའི་དོན་ནི 'ཀཙོརི' ཡིན་པར་སྣང་ཞིང་སྣུམ་འཁྱེར་བྱེ་བྲག་པ་ཞིག་གོ །

8 'སྐྲ་བྲིགས་པ' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

ན་བཟའ་ཀ་ཏུལ་།བྱ་བ་འདོམས་དཀྲིས་ཙམ་ལས་མེད་[2]པ། (ཀཙོ་རི་ཞེས་པའི་སླུམ་)འཁུར་ཕྱེད་ཙམ་ཟ་བ། (དེའི་)མདུན་དུ་སྤྱན་རས་གཟིགས་སམ་དེའི་སྤྲུལ་པ་དགེ་སློང་[3]ཞིག་བྲིས།།

༦༠) ཙམཔཀཔྣ

ཙམཔཀཔྣ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་སྐྱེད་མོས་ཚལ་གྱི་དབུས་ན་བཞུར་པ། མཐའ་རྣམས་ཤིང་ཙམ་པ་[4]ཀ་སྟེ་ཡལ་ག་རྣམས་ལྷུམ་པོར་སྐྱེས་པ། ལོ་མ་ལྗང་ནག་མེ་ཏོག་སེར་སྐྱ་ཡོད་[5]པས་བསྐོར་བའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

༦༡) སྐྲིཁནཔྣ།[6]

སྐྲིཁནཔྣ་(སྐྲཁཉྫཔྣ་)ནི་ཕྱག་ན་ཀུ་བའི་སྣོད་བསྣམས་པ། དེའི་མདུན་ན་ཊཱཀི་མ་[7]ཞིག་ཞི་བའི་རྣམ་པ་ཅན་སྐྲ་བཀྲོལ་བ་རུས་རྒྱན་[8]ཡོད་ཙམ་ཆོས་སྟོན་

---

1 'གོས་ཀྱང་ཀ་ཏུ་ལ་ལས་གོན་རྒྱུ་མེད་པ།' སྒྲུབ་རྣམ་ཤོག ༡༡༨ - 232 དེ་ལི་གློག།

2 'མ་དཔེར་'_ནམ་ཟ་ཀཙོ་རི་བྱ་བ་འདོམ་ཀྲིས་སྒྲུ་གསུམ་པ་གཅིག་ལས་མེད་པ། ཞེས་ཀ་ཙོ་རི་ཞེས་པ་དེ་ན་བཟའི་ཁྲུད་ཆོས་སུ་བྲིས་འདུག་ཀྱང་། དེ་ནི་འཁོར་བའི་མིང་ངམ་ཁྲུད་ཆོས་ཡིན་པར་སྣང་ངོ་།།

3 "དགེ་སློང་ཡོད་པ་ཅིག་འབྲི" - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

4 'ཙམྤཀ' - ཤོག ༧/བ. 408. དེ་ཉིད།

5 'པས་བསྐོར་པའི་རྣམ་ཅན་བྲིས་' ཞེས་པ་མ་དཔེར་མེད། ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

6 'སྐྲིཀྐན་པ' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད། འདིར་སྐྲི་ཁན་པ་ཞེས་པ་ཡུལ་སྐད་ཐེ་བྲག་པ་ཡིན་རུང་། དོན་ནི - དྲྀདཾཏ སོ་གཉིས་པ་བྱ་བ་ཡིན།

7 'ཌཱཀིམ' - ཤོག ༡༣༣ 242. རྣམ་དེ — ལྡི་ལྒོག

8 'རུས་བརྒྱན' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

པའི་རྣམ་པ་ཅན། གྲུབ་ཐོབ་དེས་རང་གི་སོ་བརྡོན་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་འབུལ་བའི་[1]རྣམ་པ་ཅན་དུ་འབྲིའོ།།

༦༢) ཉི་ལི་པཱ།[2]

ཉི་ལི་པཱ་ནི་མར་ནག་(སྨྲུམ་ནག་)གི་སྣོད་མང་པོ་བཤམ་ནས་འཚོང་བའི་ཚུལ་ཅན[3]། མདུན་དུ་པཏྲི་ཞིག་[4]གིས་ཆོས་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

༦༣) ཀུམ[5]ཏྲ་རི་པཱ།

ཀུམཏྲ་རི་པཱ་ནི་རྫ་[6]མཁན་གྱི་རྣམ་པ་ཅན[7]། རྫ་བཟོ་བ་བུད་མེད་དང་བཅས་པ་བྲིས།

༦༤) ཙཔ་རི་པཱ།[8]

ཙཔ་རི་པཱ་ནི་ན་བཟའ་མེ་ཁལ་གསོལ་པ་ (མེ་ཁལ་ནི་ཧྭལ་[9]གཟན་འདྲ་

---

1 'འབུལ་བ།' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
2 'ཉི་ལི་པ' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
3 'ཚུལ་དང་།' - ཤོག ༨/ན. 499. དེ་ཉིད།
4 'མཏྲི་ད་ཅིག་གི' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།
5 'ཀུཾ་པ་རི་པ' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།
6 'སྭ་མཁན' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།
7 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།
8 'ཙཏ་ཊི་པ' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།
9 'དུལ་གཟན' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།

བ་[1]ཞིག་གི་དཀྱིལ་ནས་མགོ་འདོན་ས་ཡོད་པ་[2]ཕྱིད་ཕྱིད་མདུན་རྒྱབ་ཀྱི་གོས་ཡིན་པ་ལ་སྣ་[3]རཊ་འཆིང་རྒྱུ་ཡོད་པ་ཞིག་གོ)ཤིང་དྲུང་ཞིག་[4]ཏུ་ཕྱོཊ་གཅིག་ན་མི་བཏང་ཞིང་དུད་པ་འཐུལ་[5]བ། ཕྱོགས་གཅིག་ན་བཙུད་ལིན་གྱི་[6] སྣོད་ཡོད་པ། མི་རྣམས་ལ་བཙུད་ལིན་དེ་ནས་ཤིང་ལོ་གཅིག་གིས་འཁོར་ཚུལ་བྱེད་པ། མདུན་དུ་བུད་མེད་ཞིག་དང་བྱིས་པ་ཞིག་[7]ཐལ་མོ་སྦྱར་ནས་[8]འདུག་པ། དེའི་རྗེས་སུ་མི་མང་པོ་ར་མདའ་[9]བའི་ཚུལ་གྱིས་ཡོང་བཞིན་པ། དེའི་ལྷག་[10] ཙམ་ན་བྲག་ཕུག་ཅིག་ན་དབུས་སུ་ལྷ་གཅིག་[11]གཡས་སུ་ལྷ་ཆུང་བ་གཅིག་གཡོན་དུ་ལྷ་མོ་གཅིག་བཅས་གསུམ་ཀ་གདན་གཅིག་ལ་བཞུཊ་པ་བཅས་བྲིས་[12]།།

---

1 'འདྲ་བའི' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

2 'པ་ལ' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

3 'སྐྱི་རགས་བཅིངས་པའོ།' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

4 'གཅིག་ཏུ' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

5 'ཐུལ་བ' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

6 'ལིན་ཀྱི' - ཤོག ༧/ན. 409. དེ་ཉིད།

7 'མདུན་དུ་བུད་མེད་དང་བྱིས་པ་གཅིག་ཐལ་མོ་སྦྱོར་བ།' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

8 'མདུན་དུ་བུད་མེད་དང་བྱིས་པ་གཅིག་ཐལ་མོ་སྦྱོར་བ།' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

9 'རམ་འདའ་བའི་ཚུལ་གྱི་ཡོང་བ།' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

10 'སྣག་ཙམ' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

11 'དབུས་དང་ལྷན་གཅིག་དང་།' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

12 'ལྷ་མོ་གཅིག་རྣམས་གདན་གཅིག་ལ་སུམ་སྒྲིགས་སུ་བཞུགས་པ་འབྲི།'-ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

༦༥) རྣལ་འབྱོར་མ་མཎིབྷདྲཱ།

རྣལ་འབྱོར་མ་མཎིབྷདྲཱ་ནི་བུད་མེད་རྒྱན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་།བརྒྱན་པ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བའི་རྣམ་པ་[2]ཅན། འོག་གི་ས་གཞི་ལ་ཆུ་བུམ་ཆག་པ་གཅིག་འབྲིའོ[3]།།

༦༦) རྣལ་འབྱོར་མ་མེཁལཱ།[4]

རྣལ་འབྱོར་མ་མེཁལཱ་ནི་གཅེར་བུ་རུས་པའི་རྒྱན་ཅན་མཚན་ཁང་དུ་ཁཊྭཾག་བཅུག་པ། སྐྲ་[5]བཀྲོལ་བ་ཞལ་ནས་རལ་གྲི་ཕྱུངས་པ་ཕྱག་གཡས་པས་འཛིན་པའི་ཚུལ་ཅན[6]། ཕྱག་གཡོན་པས་ཐོད་པ་བསྣམས་པ་བཅས་བྲིས།

༦༧) རྣལ་འབྱོར་མ་ཀནཁལཱ།

རྣལ་འབྱོར་མ་ཀནཁལཱ་(ཀནཀཁལཱ་)ནི་[7]སྔར་རྣལ་འབྱོར་མ་མེཁལཱ་དང་འདྲ་བ་ལ་[8]ཕྱག་གཡས་ན་གྲི་གུག་[9]གཡོན་པས་རང་གི་དབུ་བཅད་དེ་

---

1 'ཀྱི་བརྒྱན་པ' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

2 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

3 'འབྲི།' - ཤོག ༨/ན. དེ་ཉིད།

4 'མི་ཁ་ལ་པ' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

5 'སྐྲ་གྲོལ་བ' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

6 'ཞལ་ལས་རལ་གྲི་ཕྱུང་བ་ཕྱག་གཡས་པས་འཛིན་ཚུལ།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

7) 'ཀན་ཁ་ལ་ཡང' དེ་ཡང་འདྲ་བ་ལ།- ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

8) 'ཀན་ཁ་ལ་ཡང' དེ་ཡང་འདྲ་བ་ལ།- ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

9) 'རལ་གྲིའམ་གྲི་གུག' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

བསླམས་[1]པ་འབྲི་བ་ཡིན་པ་ལ། རེ་ཞིག་[2]ཕལ་པའི་རྣམ་རྟོག་གིས་དེ་འདྲ་འབྲི་བར་[3]མི་སྲྀ་ན། ཕག་མོ་དགུ་བཅད་མའི་བྲིས་ཐང་རྙིང་པ་འགའ་རེ་ལས་བྱུང་[4]བ་བཞིན། སྐུ་གཟུགས་ལ་ཡང་དགུ་ཡོད་ཅིང་ཕྱག་ན་ཡང་དགུ་ཞིག་[5]བསླམས་པ་བྲིས་ཀྱང་མི་འགལ་[6]ལོ། །འདི་གཉིས་ཅར་ནམ་མཁའ་ལ་གར་སྟབས་སམ་(ཞབས་)བརྐྱང་བསྐུམ་(གྱི་)ཚུལ་དུ་(བཞུགས་པ་)འབྲི་དགོས།

སྦྱོར་རྣལ་འབྱོར་མ་འདི་གཉིས་མཛད་པ་འདྲ་རུང་། རབ་བྱུང་བས་བཀོད་པའང་[7]འདྲ་རུང་བས་ཆོག་[8]གོ།

༦༨) ཀལཀལཔླ།

ཀལཀལཔླནི་ཁ་དོག་སྔོ་ནག་དུར་ཁྲོད་ན་གནས་པ། དེའི་མདུན་(ཅུང་ཟད་)མཐོ་བ་ནས་རྣལ་འབྱོར་པ་རུས་རྒྱན་ཅན་ཞིག་ཆོས་གསུང་བའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

---

1 'བསླམ་པ་འབྲི་བ་ཡིན་པ་ལས།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

2 'འགའ་ཞིག་ཕལ་པའི་རྣམ་རྟོག' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

3 'དེ་འདྲ་འབྲི་བ་མི་སྲྀ་ན' - ཤོག ༨/བ. 410. དེ་ཉིད།

4 'ལ་འབྱུང་བ' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

5 'དགུ་གཅིག'' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

6 'མི་འགལ།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

7 'རབ་བྱུང་བས་བཀོད་པ'_ཞེས་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྐུའི་བཀོད་པ_ཞེས་པའི་དོན་ཡིན་ནམ་དཔྱད།

8 'མཆོག་གོ།' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

༦༩) ཀཎྷལིཔཱ།

ཀཎྷལིཔཱ་ནི་[1]གོས་འཚེམ་པའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ་མདུན་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞིག་[2]གྲིས་ཆོས་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་འབྲིའོ།།

༧༠) ཏྲགུལིཔཱ།[3]

ཏྲགུལིཔཱ་ནི་རྩ་ཐག་འཚོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་བྲིའོ།།

༧༡) ཨུཏལིཔཱ།

ཨུཏལིཔཱ་ནི་མགོ་ལ་ཐོད་བཅིངས་[4]པ་ལུས་ལ་ཅོ་ལ་སྐེ་གོས་ཤུ་ཐུང་[5] ཅན་གྱོན་པ། རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱན་ཐོར་ཡོད་པ། ཁ་སྤུ་བཟང་པོ་ཅན་ཞིག་ནམ་མཁའ་ལ་བལྟ་བ། ནམ་མཁའ་ལ་སྤྲིན་ཁ་དོག་སྣ་ལྔ་པ་ལ་གླང་པོ་དང་། བྱ་དང་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོག་ཆགས་ཚོགས་པ་འདྲ་བའི་དབྱིབས་[6]ཅན་ཡོད་པ། དེ་དང་ཉེ་བར་ངང་པ་དངོས་གཉིས་འཕུར་བ། དེའི་མདུན་ན་རྩལ་འགྱུར་པ་ཤིང་ལོ་ཐོགས་[7]པ་ཞིག་ཡོད་པའོ།།

---

1 'ཀཎྷ་ལི་ཡང་གོས་ཚེམ་བྱེད་པ' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

2 'གཅིག་གིས' - ཤོག ༩/ན. ་དེ་ཉིད།

3 'ཏྲ་ཏུ་ལི་པ' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

4 'རྩ་ཐམས་ ཤོག' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

5 'བཅིང་ཤིང་' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

6 'ཕུད་ཐུང་' - ༩/ན. དེ་ཉིད།

7 'འདྲ་རུང་གི་དབྱིབ་ཅན' - ཤོག ༩ ན དེ་ཉིད། 'ཐོག་པ' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

༧༢) ཀཔྭལིཔྭ།

ཀཔྭལིཔྭ་ནི་སྐུ་མདོག་ནག་པོ་དུར་ཁྲོད་ན་བུད་མེད་ཀྱི་རོ་ཞིག་ཡོད་པའི་ཐོད་པ་བཀོག་[1]སྐེ་ཞུག་ན་བསྣམས་པ། ལུས་ལ་རུས་རྒྱན་ཆ་ཚང་བ་ཡོད་པའི་[2] རྣམ་པ་ཅན་དུ་འབྲིའོ།།

༧༣) ཀིརཔྭལཔྭ།[3]

ཀིརཔྭལཔྭ་ནི་ཁ་དོག་བཟང་པོ་[4]ཁྲོ་ཉམས་ཅན། མགོ་ལ་ཅོད་པཎ[5] ཞེས་བྱ་བ་དབུས་དང་ཕྱོགས་བཞི་སྐེ་རྩེ་མོ་ལྔ་ཡོད་པ། རིན་པོ་ཆེའི་ཏོག་ཅན་སྐྲ་མཚམས་ལ་དཔའ་བོའི་དར་དཔྱངས་ཞེས་བྱ་བ་གསེར་གྱི་འཁྱུད་མོ་ལས་རྣ་བའི་ལྷག་གཡས་གཡོན་ནས་མར་[6]འཕྱང་བ། རལ་གྲི་དང་ཕུབ་འཆང་[7]བ་ཁྲི་ལ་བཞུགས་[8]པའི་རྣམ་པ་ཅན་བྲིས།

---

1 'བྲིགས་ཏེ།' - ཤོག ༩/ན. 401. དེ་ཉིད།

2 'ཡོད་པ།' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

3 'ཀི་ར་བ་ལ་བ' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

4 'བཟང་བ' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

5 'ཅོད་པན' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

6 'ནས་མར་དར་དཔྱངས་ཕྱང་བ' - ཤོག ༩/བ./བ. 412. དེ་ཉིད།

7 'འཕྱང་བ' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

8 'གནས་པ' - ཤོག ༨/བ. དེ་ཉིད།

༡༤) སྣགརཔྣ།[1]

སྣགརཔྣ་ནི་དགེ་སློང་གི་རྣམ་པ་ཅན་མདུན་ན་འཕར་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་བཞེངས་པའི་[2]ཚུལ་དུ་བཞུགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་བཅས་བྲིས།

༡༥) སབྷཀྐཔྣ།

སབྷཀྐཔྣ་ནི་སྣོད་ཆེན་པོ་ཞིག་ཏུ་ཁ་ཟས་བཟང་ངན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་བླུགས་ཏེ་མདུན་དུ་བཞག་ནས་ཟ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་བྲིས[3]།

༡༦) ནཱགབོདྷི།[4]

ནགབོདྷི་ནི་དགེ་སློང་གི་རྣམ་པ་ཅན་[ཕྱག་གཉིས་]མཉམ་བཞག་མཛད་པ། དེའི་ཕྱོགས་གཅིག་ན་བྲག་ཕུག་ཅིག་གི་ནང་ན་དགེ་སློང་མགོ་ལ་རི་དྭགས་ཀྱི་རྭ་སྐྱེས་ཡོད་པའི་[5]རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་[6]བྲིས།

1 'ས་ཀ་ར་པ' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

2 'བཞེངས་པ་གཅིག' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

3 'མདུན་ལ་སྣོད་ཆེན་པོ་གཅིག་ན་ཁ་ཟས་བཟང་ངན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བླུག་ཏེ་ཟ་བ།' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

4 'ན་ག་བོདྷི' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

5 'སྐྱེས་པའི' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

6 'ཅན་གཅིག་འབྲི' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

༧༧) དཱརིཀཱཔཱ།[1]

དཱ་རི་ཀཱ་པཱ་ནི་(ལུས་ལ་)རུས་རྒྱན་(ཆ་ཚངས་པ། ཕྱག་ན་)རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་བཟུང་ས་[2]ནས་ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པ། འཁོར་བུད་མེད་མང་པོ་ཡང་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་དེ་འགྲོ་བ། (དེའི་)འོག་ཕྱོགས་ཀྱི་ས་གཞི་ལ་གྲོང་ཁྱེར་(དང་དེ) ནས་མི་རྣམས་སློབ་དཔོན་ལ་བལྟ་བ་དང་། རྡོ་རི་ཞིག་གི་རྩེ་ན་རྡོ་ཡི་གླང་པོ་ཆེ་ཡོད་པ་[3]བཅས་འབྲི་དགོས།

༧༨) པུཏལིཔཱ།[4]

པུཏལིཔཱ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་དགྱེས་རྡོར་གྱི་ཐང་ཀ་ཐོགས་པ་ཞིག་སྟེ། དེའི་མདུན་ན་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་གྱི་མི་ཞིག་དེ་ལ་གཏམ་སྣ་བའི་ཚུལ་དུ་འདུག་པ་བཅས་འབྲི་དགོས[5]།

༧༩) པནཏཔཱ།[6]

པནཏཔཱ་ནི་ལྷམ་ཡུ་བ་ཅན་[7]གཡེར་ཀ་སོགས་རྒྱན་མང་པོ་བཏགས་པ་གྱོན་ནས་རྒྱགས་པའི་རྣམ་པ་[8]ཅན་ཞིག་བྲིས། །

---

1 'ཛཱ་རི་ཀ་པ' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

2 'བཟུང་ནས' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

3 'ཡོ་པ་འབྲི' - ཤོག ༡༠/ན. 413. དེ་ཉིད།

4 'པུ་ར་ལི་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

5 དགྱེས་རྡོར་གྱི་ཐང་ཀ་དཀྲི་པ། དེའི་མདུན་གྱི་ཕྱོགས་ན་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་གྱི་གཏམ་སྣ་བ་འབྲི། ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

6 'པ་ཏ་ན་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

7 'ལྷམ་ཡུ་བཅད་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

8 'རྣམ་པ་འབྲི' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

༨༠) ཀོཀིལཔཱ།[1]

ཀོཀིལཔཱ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་[2]སྐྱིད་མོས་ཚལ་འབྲས་བུ་ཅན་གྱི་ཤིང་གིས་[3]གང་བའི་དབུས་སུ་བཞུགས་པ[4]། གཞོན་ནུ་མ་མང་[5]པོས་གླུ་དང་གར་དང་ཁྲུས་གསོལ་བའི་རྣམ་པ་ཅན། ཤིང་རྣམས་ལ་བྱ་ཀོཀིལ་[6]སྐྱེ་ཁ་བྱུག་ནག་པོ་མང་པོ་ཡོད་པ། མདུན་དུ་དགེ་སློང་ཞིག་གཏམ་[7]སྨྲ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་བཅས་བྲིས།

༨༡) ཨནྟཾག[8]པཱ།

ཨནྟཾགཔཱ་ནི་རྩ་ཁྱིམ་ཞིག་ན་གནས་པ་གཟུགས་མཛེས་པ། མདུན་དུ་དགེ་སློང་ཤིན་ཏུ་མཚར་བ་ཞིག་བསོད་སྙོམས་མཛད་པའི་ཚུལ་དུ་བྲིས་[9]།།

---

1 'ཀོལོལི་ལ་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

2 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

3 'གི་གང་བ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

4 'སུ་ཡོད་པ།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

5 'གཞོན་ནུ་མང་པོ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

6 'ཀོཡིལ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

7 'དགེ་སློང་གཅིག་དང་གཏམ་སྨྲ་བ་འདྲི།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

8 'ཨནྟཾགོ་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

9 གཟུགས་མཛེས་པ་གཅིག་གི་མདུན་དུ་དགེ་སློང་ཤིན་ཏུ་ཚར་བ་བསོད་སྙོམས་མཛད་པ་འདྲི། ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

༤༣) རྣལ་འབྱོར་མ་ལཀྵིཀཱ་ར།[1]

རྣལ་འབྱོར་མ་ལཀྵིཀཱ་ར་(ལཀྵམིཀཱ་ར་)ནི་དུར་ཁྲོད་ན་[2]བཞུགས་པ་སྐྲ་བཀྲོལ་བ་[3] གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་དང་། ཁཊྭཱཾ་བསྣམས་ཤིང་རུས་རྒྱན་[4]གྱིས་བརྒྱན་པ། ཡང་ན་སྐྱོན་ཐབས་སུ་[5]བྲིས་པའང་ཡོད།

༤༤) སམུདྲཔཱ།

སམུདྲཔཱ་ནི་(རྣལ་འབྱོར་པ་)རྒྱ་མཚོ་དང་ཀློང་གི་བར་[6]ནས་[གླུ་ལ་ཞུགས་ནས་]འགྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན[7]། རས་ཀྱི་ཐོད་བཅིངས་པ[8]། མདུན་ན་གྲུབ་ཐོབ་ཨཙིནྟཔཱ་གཅེར་བུ་རལ་པ་དང་བཅས་པས་ཆོས་སྟོན་པའི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་པ་བཅས་བྲིས[9]།

---

1 'ལཀིཀ་ར'' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད། ལཀྵིཀཱར - བྲི་ཚུལ་འདི་མ་ལིགས་ ལཀྵམིཀཱར ཡིན།

2 'ཁྲོད་བཞུགས་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

3 'སྐྲ་གྲོལ་པ' - ཤོག དེ་ཉིད།

4 'རུས་རྒྱན་ཅན་མ།' - ཤོག ༡༠/ན. 413. དེ་ཉིད།

5 'སྐྱོན་ཐབས་འབྲི་པའང'' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

6 'རྒྱ་མཚོ་ཀློང་བར་སྣང་ནས་འགྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ།' - ཤོག ༡༠/བ. 414. དེ་ཉིད།

7 'རྒྱ་མཚོ་ཀློང་བར་སྣང་ནས་འགྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ།' - ཤོག ༡༠/བ. 414. དེ་ཉིད།

8 'ཁོ་རང་རས་ཀྱི་ཐོད་ཅན།' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

9 'རལ་པ་ཅན་གཅིག་གིས་ཆོས་སྟོན་པ།' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

༨༤) བྷཱ་ལི་པཱ།

བྷཱ་ལི་པཱ་ནི་གྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱད་ཅན་[1]མདུན་དུ་གཞོང་པ་དང་བུམ་པ་དངུལ་ཆུ་གྲུབ་པའི་བཅུད་ལེན་གྱིས་གང་བ། ལྟུགས་མང་པོ་གསེར་དུ་བསྒྱུར་བའི་ཚུལ་ཅན། ཁོང་རང་[2]གི་གཡོན་ཕྱོགས་སུ་ཆུང་མ་བུ་དང་བུ་མོ་དང་མནའ་མ་དང་རྟ་(རྒོད་མ་)གཅིག་བཅས་[3]འབྲི་དགོས།

དེའི་ཕྱོགས་གང་རུང་ཞིག་ཏུ་མཚོའི་དཀྱིལ་ན་གྲག་རི་གྲུ་བཞི་པ་རྩེ་ན་ཁང་བཟང་དང་[4]བཅས་པ་འབྲིའོ།།

དེ་ལྟར་ན་གྲུབ་ཐོབ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་[5]བཞིའི་བྲི་ཡིག་སོ་སོའི་རྣམ་ཐར་དང་མཐུན་[6]པར་སྦྱར་བ་འདི་ནི། རྗེ་བཙུན་ཆེན་པོ་སྒྲོལ་བའི་མགོན་པོའི་བཞེད་པ་ཇི་ལྟ་བ་ལ་རང་རྟོག་[7]གིས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་བསླད་[8]པར་བཀོད་པའོ།།

འབྲི་ཡིག་རྫོགས་སོ[9]།། །།

---

1 'ཁོ་རང་དང་གྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱད་དུ་འབྲི' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

2 'ཁོ་རང་གྲམ་ཟེའི་'ཞེས་སོགས་འདིར་འདུག་ཀྱང་། ཚིག་སྦྱོར་མི་ལེགས་པས་དང་པོར་བྲིས་པའོ།།

3 'རྟ་གཅིག་རྣམས་འབྲི།' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

4 'ཞིག་ཏུ' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

5 'བརྒྱད་བཅུ' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

6 'འཐུན་པར' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

7 'རང་རྟོགས་གི' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

8 'ལ་བསླད་པ' - ཤོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

9 'འབྲི་ཡིག' སོགས་མ་དཔེར་མེད།

སྨོན་ཚིག

ཨེ་མ་རྒྱལ་བའི་ཞལ་སྐྱིན་རྨད་བྱུང་བ།།
འཕགས་མཆོག་ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཆེ་བའི་མཆོག།
སྐུ་ཡི་གར་[1]གང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་རྒྱལ།།
གདུལ་བྱའི་དཔལ་མགོན་དེ་དག་ངོ་མཚར་ཆེ།། ༡ །།
གང་གི་སྐུ་བརྙན་[2]འབྲི་ཚུལ་ནོར་འཁྲུལ་ལྷག་ཆད་སྐྱོན།།
སྤྱངས་[3]པ་འདི་ཉིད་འཕགས་ཡུལ་གནམ་ལ་རྟོག་གོམས་[4]གྱུར།།
མཁས་པའི་མཁས་མཆོག་དེ་ཡི་གསུང་གི་མཐུ་དཔལ་ལས།།
སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་བཞིན་གང་འདིར་གསལ་བྱས།། ༢ །།
གང་ཞིག་གྲུབ་མཆོག་སློབ་དཔོན་ཆེ་འདི་རྣམས་ཀྱི་སྐུ།།
འབྲི་སེམས་བྲིས་[5]པ་དེ་མཐོང་དགའ་སེམས་སྐྱེ་བ་ཀུན།།
བྱང་ཆེན་ཉེ་ལམ་མཆོག་བརྙེས་སློབ་དཔོན་དེ་དག་བཞིན།།
རྡོ་རྗེ་སེམས་པའི་གོ་འཕང་ཡོངས་སུ་ཐོབ་པར་[6]ངེས།། ༣ །།

---

1 'སྐུ་ཡི་གོར་གང' - ཤོག ༡༠/བ. - ༡༡/ན. 414 - 415. དེ་ཉིད།
2 'སྐུ་བརྙེན' - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
3 'སྤྱང་པ' - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
4 'རྟོག་གོམ་གྱུར' - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
5 'འབྲི་སེམས་འབྲི་བ' - ཤོག ༡/ན. དེ་ཉིད།
6) 'ཡོངས་སུ་སྐྱིད་པར་ངེས།' - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།

གཞན་ཡང་མཚམས་[1]མེད་སྤྱོད་དང་ཉི་མ་རེ་རེ་བཞིན།།
བྲམ་ཟེ་གསོད་ཀྱང་སྟོབས་བཞི་ཡོངས་སུ་ཚང་གྱུར་པས།།
གཉེན་པོ་ཀུན་སྤྱོད་ཐུགས་ལྡན་འདི་ལ་འབད་པ་ན།།
སྒྲིབ་པའི་ཕུང་པོ་མ་ལུས་འདག་ལ་སོམ་ཉི་ཅི།། ༤ །།

ལས་བཞི་ལྷ་སྣངས་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ཀྱང་འདིས་ཐོབ་ལ།།
ཕྱག་རྒྱ་ཆེ་མཆོག་གཉེར་ཡང་དེར་བཀོད་གྲུབ་ཆེན་དེ་[2]།།
དེས་ན་ཡེ་ཤེས་གྲུབ་པའི་མཆོག་གྱུར་འདི་དག་རྣམས།།
རང་གི་རྩ་བའི་བླ་མའི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཡོངས་ཤེས་པས།། ༥ །།

རྣ་བར་[3]ཉན་དང་བྲི་མཆོད་ལས་ལ་བརྩོན་པ་ཡི།།
བག་ཆར་ཁྲིར་ལ་བཞག་པས་རྣམ་ཀུན་དགེ་བའི་འབྲས།།
སྐུར་སྙེར་དེ་ཕྱིར་འདི་ལ་བདག་བློ་དགའ་བ་སྐྱེས།།
བློ་ལྡན་རྣམས་ཀྱང་འདི་ལ་སྤྱོད་པར་གྱིས་ཤིག་ཀྭ།། ༦ །།

རབ་དཀར་ལྷག་བསམ་དག་པས་འབད་པ་ཡིས།།
རབ་གྲུབ་མཆོག་སྐུའི་སྣང་བརྙན་[4]འབྲི་བའི་ཐབས།།

---

1 'འཚམས་མེད་' - ཤོག ༧༧/ན. དེ་ཉིད།

2 'ཆེན་སྙེ' - ཤོག ༧༧/ན. དེ་ཉིད།

3 'རྣམས་པར་ཉན' - ཤོག ༧༧/བ· 416. དེ་ཉིད།

4 'སྣང་བརྙེན' - ཤོག ༧༧/བ· 416. དེ་ཉིད།

རབ་ཏུ་གསལ་དག་འདི་བགྱིས་མཐུས་བདག་སོགས།།
རབ་མཆོག་རྡོ་རྗེ་སེམས་པ་མྱུར་ཐོབ་ཤོག། ༧ ||

ཅེས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་[1]ཅུ་རྩ་བཞི་ཡི་ངོས་འཛིན་འཁྲུལ་པ་ཅན་སྐྱོ་མ་[2]སྤྱི་བཙན་གྱི་རྗེས་སུ་མ་འབྲང་བར་གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་སྒྲུབ་[3]ཐབས་དང་། དབང་ཆོག་[4]དོན་རྫོགས་རིམ་དང་བཅས་པའི་གཞུང་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་རྡོ་རྗེའི་མན་ངག་[5]མི་ཉག་ལོ་ཙྪ་བས་བསྒྱུར་བའི་ཚད་ལྡན་དེའི་[6]རྗེས་སུ་འབྲངས། མཁས་པའི་མཁས་པ་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་ཇོ་ནང་སྤྲུལ་སྐུ་རྗེ་བཙུན་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཀུན་དགའ་[7]སྙིང་པོའི་བཞེད་པ་ཇི་བཞིན་རྟག་བརྟན་ཐེག་མཆོག་ནེ་རུཀའི་[8]ལྷ་ཁང་དུ་ལོགས་བྲིས་སུ་བཞུགས་པ་དང་། དེ་བཞིན་རས་བྲིས་ཀྱང་གཉིས་གསུམ་ཙམ་མཐོང་ཞིང་། ལྷག་ཏུ་རྗེ་བཙུན་དམ་པས་མཛད་པའི་བྲིས་ཡིག་དངོས་མ་ཞིག་ཇོ་ནང་གི་ཕྱུག་དར་ཉལ་ཉིལ་ཁྲིད་ནས་སྣེ་ཆུད་ཟེར་ཙང་ཟད་བྱུང་བ་ཞིག་ཀྱང་རྙེད་པས་

---

1 'བརྒྱད་བཅུ - ཤོག ༢༢/བ· 416. དེ་ཉིད།

2 'སྤྱི་བཙུན' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

3 'བསྒྲུབ་ཐབས' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

4 'དབང་མཆོག' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

5 'མི་ཉག' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

6 'དེ་ཡི' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

7 'ཀུན་སྙིང་པོའི' - ཤོག ༢༢/བ· དེ་ཉིད།

8 'རྩ་བར་ནེ་རུ་ཀ' - ཞེས་བྲིས་པ་འདུག་པས་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན་ལ། དོན་ནི 'ཧེ་རུ་ཀ' - ཞེས་བྱ་བར་སྣང་ངོ་།། ཤོག ༢༣/ན. དེ་ཉིད།

དེ་ཉིད་དཔང་པོར་བྱས། རང་བཟོས་མ་བསླད་པར་གྲུབ་བརྒྱའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་དག་ཅིང་གསལ་བ་འདི་ནི། མདོ་ཁམས་དབུས་འགྱུར་འབྲི་རྒྱུད་རེ་ཁའི་ལྗོངས་སུ་སྐྱེས་པའི་ "རིག་འཛིན་ཆེ་དབང་ནོར་བུས" བྲིས་ཡུལ་འབྲས་མོ་ལྗོངས་[1]ཀྱི་བྱང་སྒོ་འབྲི་མཚམས་གསང་སྔགས་རི་བོའི་དབེན་གནས་སུ་ཤིང་ཡོས་ནག་ཟླའི་དམར་ཕྱོགས་མཁའ་འགྲོ་འདུ་བའི་དུས་(ཚེ་)ཆེན་ཉེར་ལྔའི་སྔ་ཆར་གྲུབ་པར་བྱས་པའི་ཡི་གེ་པ་ནི་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེའོ།། །།

ཆེད་བརྗོད།

མཁས་རློམ་བྱིས་པའི་ངན་གཡོས་ཅི་ཞིག་བྱ།།
བཙུན་ཚུག་མདུད་འཛིན་དམ་པོས་དོན་རལ་ཡང་།།
འཇིག་རྟེན་འཇིག་རྟེན་འདས་པའི་ཕྱོགས་མཐའ་དག།
མྱུར་རྟོགས་གྲུབ་པ་ཉིད་ལས་སུ་ཞིག་གུ།
དེས་ན་བདག་ནི་ཆེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ།།
གྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་རྣམས་ཀྱི་[2]རྗེས་འབྲངས་ནས།།
མ་ནོར་སྔགས་ཀྱི་སྤྱོད་པས་བདག་གཞན་དོན།།
རྒྱ་ཆེན་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཉིད་འགྲུབ་ཤོག།
ཞེས་པའང་ཆེད་[3]དུ་བརྗོད་པའོ།།

དགེའོ།། མངྒ་ལཾ།

1 'ལྡང་གི' . ཤོག ༢༣/ན. དེ་ཉིད།
2 'རྣམས་ཀྱིས་རྗེས' . ཤོག 12./བ· 418. དེ་ཉིད།
3 'མཆེད་དུ་བརྗོད' . ཤོག ༢༣/བ· དེ་ཉིད།
4 'འདིའི་གཤམ་དུ་ཨོཾསྭསྟི་ཞེས་སོགས་ཚིག་འགའ་འདུག་པ་དེ་མ་དཔེའི་ཡན་ལག་ཏུ་མི་སྣང་བས་མ་བྲིས།།

परिशिष्ट

चौरासी सिद्धों की नामावली

आचार्य वीरप्रभा (वीरप्रकाश) द्वारा संगृहीत चौरासी सिद्धों के अवदान के क्रमानुसार सिद्धों की नामावली—

	नाम	जाति	देश	समकालीन राजादि
१)	लुईपा (मछली की आँत के आहारवाले) ཉ་ལྟོ་ཞབས།	कायस्थ	सिंहल	राजा धर्मपाल
२)	लीलापा (ललित कलाप्रिय) སྒེག་པའི་ཞབས།	क्षत्रिय	दक्षिण भारत	सरहपा[1]
३)	विरूपा (कुरूपवाले) (ཟུས་) ངན་པ་ཞབས།	क्षत्रिय	पूर्वी भारत त्रिपुरा	राजा देवपाल
४)	डोम्बिपा (डोम की लड़कीवाले) གཡང་མོ་ཞབས།	क्षत्रिय	मगध	लुईपा का शिष्य
५)	शबरपा (शबर जातिवाले) རི་ཁྲོད་ཞབས།	जंगलीजाति शबरप	मन्त्रविक्रम (विक्रमशिला)[2]	लुई, सरह
६)	सरहपा (वाण मारनेवाले) མདའ་བསྣུན་ཞབས།	ब्राह्मण	राज्ञी के अन्तर्गत रोलि	राजा रत्नपाल[3]

---

१. इसे सरहपा को प्रथम मानकर तीसरी पीढ़ी कहा जाता है, पुरातत्त्व नि० पृष्ठ १४८ द्र०।

२. यद्यपि यहाँ 'मन्त्रविक्रम पर्वत' शब्द है, विक्रमशिला-राहुल, पुरातत्त्व, पृष्ठ, १४८ द्र०।

३. राहुल पुरातत्त्व, पृ० १४८ में जगह का नाम 'नालन्दा' समकालीन राजा का नाम धर्मपाल लिखा है।

७)	कङ्करिपा[१] (कङ्कालवाले) ཀེང་རུས་ཞབས།	शूद्र (गृहपति[२])	माघहुर (पूर्वी भारत)	
८)	मीनपा (मछली के पेट में रहनेवाले) ཉ་པའི་ཞབས།	मछुआ	कामरूप	जालन्धरपा का शिष्य गोरक्ष के गुरु, मत्स्येन्द्र का पिता।
९)	गोरक्षपा (गायें चरानेवाले) བ་གླང་སྲུང་, བ་གླང་སྐྱོང་།	गन्धिक (धूप बेचनेवाला)	पूर्वी भारत	राजा देवपाल
१०)	चौरङ्गीपा (चोरों के जाने से प्रकट होनेवाला) ཀུན་མོ་ཅན།	क्षत्रिय	पूर्वी भारत	राजा देवपाल का पुत्र
११)	वीणापा वीणा बजानेवाले པི་ཝང་ཞབས།	क्षत्रिय	गौड़ (विहार)	कण्हपा का शिष्य (भद्रपा का शिष्य)
१२)	शान्तिपा (रत्नाकरशान्ति) ཞི་བའི་ཞབས།	ब्राह्मण	विक्रमशिला (मगध)	देवपाल[३]
१३)	तन्तिपा (तन्तुपा) (कपड़ा बुननेवाले) ཐག་མཁན་ཞབས།	जुलाहा	सेन्धो नगर	जालन्धर का शिष्य

---

१. केकालिपा, कोकंलिपा, कङ्कलिपा, पुरातत्त्व, पृष्ठ १४८ द्र०।

२. वृत्तान्त में 'गृहपति' ही शब्द है।

३. (क) राहुल 'महिपाल' लिखते हैं। पुरातत्त्व निबन्धावली, पृष्ठ १४९ II

(ख) यह सिंहल-द्वीप के राजा 'कविन' (कपिना) के समकालीन थे। द्र० चौ० वृ० तनग्युर संग्रह जापान Vol. ८७ पृष्ठ १८०

१४) चमरिपा (चर्मकार) ལྷམ་མཁན་ཞབས།	चर्मकार	विष्णुनगर (पूर्वदेश)	
१५) खड्गपा (तलवार धारण करनेवाला) རལ་གྲི་ཞབས།	शूद्र	मगध	गुरु योगी चर्परी (चर्पत्री) का शिष्य
१६) नागार्जुन ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས།	ब्राह्मण	काञ्ची	सरह का शिष्य (राजा सातवाहन प्रथम)
१७) कण्हपा (कृष्ण चर्यपाद) ནག་པོ་ཞབས།	कायस्थ	सोमपुरी	गुरु जालन्धरपा (राजा देवपाल)
१८) कर्णरिपा (कनापा या आर्यदेव, कणरिपा) ཞུར་བ་པ། འཕགས་པ་ལྷ།	क्षत्रिय	सिंहल[१]	गुरु नागार्जुन
१९) थाकणपा ཐུན་སྣ་ཞབས་ (མགོ་སྐོར་མཁན་)	शूद्र	पूर्वी भारत	शान्तिपा का गुरु
२०) नरोपा (नरोत्तम या नडजातिवाले) མི་མཆོག་ཞབས།	मदीरा बेचनेवाला[२]	शालिपुत्र मगध[३]	महिपाल

---

१. यहाँ मूल वृत्तान्त में आर्यदेव के सम्बन्ध में केवल नालन्दा के उपाध्याय होने की बात लिखी है।

२. राहुल, पुरातत्त्व पृष्ठ, १४९ द्र०।

३. इनकी जाति और स्थान दोनों अन्यत्र भिन्न पाये जाते हैं।

२१) श्यालिपा (सियार के आवाज से डरनेवाले) སྲུང་ཀི་ཞབས།	शूद्र	विधपुर (विल्हपुर)	
२२) तिल्लिपा (तिलं पिरोकर तेल निकालनेवाले) ཏིལ་རྡུང་ཞབས།	ब्राह्मण	विष्णुनगर	नरोपा (नडपा) का गुरु
२३) चत्रपा; चत्तपा (पुस्तक लेकर भिक्षा माँगनेवाले) སློང་མཁན་ཞབས།	शूद्र	सेन्धोनगर	
२४) भद्रपा; भद्रिपा བཟང་པོའི་ཞབས།	ब्राह्मण	मणिधर	सरहज[1]
२५) धुखन्तिपा द्वयान्तिपा (द्वैत के अन्त करनेवाला या द्विखण्डी) གཉིས་གཅོད་ཞབས།	जमादार	घन्धपुर	गन्धपुर
२६) अजोगी (अयोगी) (अयोग्यवाले,आलसी) ལེ་ལོ་ཅན།	गृहपति (वैश्य)		पाटलिपुत्र[2]
२७) कलपा (पागल योगी) སྨྱོན་པའི་ཞབས།	राजपुर		अवधुतिपा

---

१. राहुल, पुरातत्त्व, पृष्ठ १५०-३०१।

२. (क) राहुल, पुरातत्त्व, पृष्ठ १५०-३०,
(ख) 'शालिपुत्र;' राहुल पुरातत्त्व, पृ० १५०-३०।

२८) धोबीपा གོས་ཁྲུད་ཞབས།	धोबी		सालिपुत्र
२९) कङ्कनपा (कङ्कनि) ཀང་གདུབ་ཞབས། (ཀྱུང་རྡུག་པ། ལུང་བརྡུགས་པ)	क्षत्रिय	विष्णुनगर	
३०) कम्बलपा (मन्त्राधिषिटत कम्बलवाला) ལྭ་བ་པ།	क्षत्रिय (राजकुमार)	कङ्करम (उड़ीसा)	घण्टापा का शिष्य
३१) डेङ्गिपा (धान कूटनेवाला) འབྲས་བརྡུང་ཞབས།	ब्राह्मण	सालिपुत्र उड़ीसा	लूहिपा का शिष्य
३२) भन्थेपा (पिण्ड ग्राहक अर्थात भिक्षा ग्रहण करनेवाला या धनदेव ग्रहण करनेवाला) བསོད་སྙོམས་ཞབས། (ནོར་འཛིན་ཞབས་)	देव (?)	श्रावस्ति	गुरु कण्हपा
३३) तन्तिपा (जुआ खेलनेवाला) ཚོ་ལོ་མཁན་ཞབས།	शूद्र	कौशाम्बी	
३४) कुकुरिपा कुतियावाला ཁྱི་མོ་ཞབས།	ब्राह्मण	कपिल क्रुन (कपिलवस्तु)	मीनपा का गुरु
३५) कुचिपा; (कुसुलिपा भी) (कुबड़ी या कुबड़वाला) སྒུར་པོ་ཞབས། (ལྷག་ལྷ་ཅན་ཞབས་)	शूद्र		कहरि

३६) धर्मपा (बहुश्रुत[१]) སྒྲ་སྦྱོར་ཞབས། (ཐོས་པ་ཅན་)	ब्राह्मण	विक्रमपुर (विक्रमासुर?)	कण्हपा, जालन्धरपा का शिष्य
३७) महिलपा (महीपा) (अभिमानी) ཆེན་པོ་ཞབས།	शूद्र	मगध	कण्हपा का शिष्य
३८) अचिन्त (अचिन्त्यवाला) བསམ་དུ་མེད་པ།	लकड़हारा	धनिरूप (भनिरूप)	
३९) भधह; बधहि अथवा भवह[२] (अर्थात् भवका हान, नष्ट करनेवाला) ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན། ཡང་ན་ སྲིད་བསྣུན་ཞབས།	क्षत्रिय	धञ्जुर	
४०) नलिपा (पद्म का मूल खाकर जीनेवाला) པདྨའི་སྡོང་བུ་སྤྱོད་པའི་ཞབས་ (པད་རྩ་ཅན་)	क्षत्रिय	सालिपुत्र	
४१) भुसुकुपा (शान्तिदेव) འདུ་ཤེས་གསུམ་པའི་ཞབས། (ཞི་བ་ལྷ་)	क्षत्रिय (राजकुमार)	नालन्दा[३]	राजा देवपाल

१. पाण्डुलिपि में यद्यपि धर्मपा का अर्थ शब्द प्रयोगवाला था; परन्तु वृत्तान्त में इसका अर्थ बहुश्रुत या श्रतधर था।

२. मूल पाण्डुलिपि में बधह और बधहि दो पाठ मिलते हैं; साथ 'भवह' भी लिखा है पर अर्थ बताते समय 'बतख' का ही अर्थ है। अर्थात् पानी से दूध लेनेवाला।

३. नालन्दा उनका अध्ययन का स्थान था वास्तव में ये दक्षिण के राजाञ्जु वर्मा के पुत्र थे।

४२) इन्द्रभूति (इन्द्र के समान ऐश्वर्यवाला) དབང་པོའི་འཁོར་པ།	क्षत्रिय	सम्भोल देश (उडीयन के अन्तर्गत)	अनङ्गवज्र के शिष्य
४३) मेकोपा (भयंकर देखनेवाला) འཇིགས་འཇིགས་པ།	वणिक	भङ्गल देश (बंगाल)	
४४) कोदपिला (कोडलिपा) ཏོག་ཙེ་པ།	केनेत (?)	रामेश्वर	शान्तिपा का शिष्य
४५) कमरिपा (कम्परिपा भी) རིགས་འཛིན་ཞབས།	लोहार	सालिपुत्र	अवधुतिपा का शिष्य
४६) जालन्धरपा ཆུ་འཛིན་ཞབས།	ब्राह्मण	नगरभो (नगर दृष्ट कुट?)	कन्हण और मत्स्येन्द्र का गुरु
४७) राहुल སྒྲ་གཅན་འཛིན།	शूद्र	कामरूपा	सरह तीसरा
४८) धर्मपा (धर्म उपदेशक) ཆོས་ཀྱི་ཞབས་ (ཆོས་པ་ཞབས་)	ब्राह्मण (?)	बोधिनगर	विरुपा से चौथे पीढ़ी
४९) धोकरिपा (मिट्टी के पात्रवाला) རྫ་སྦྱོད་ཞབས།	शूद्र	सालिपुत्र	
५०) मेधिनि (खेती करनेवाला) ཞིང་ལས་ཅན།	शूद्र	सालिपुत्र (लाखपुम?)	लीलापा से चौथे पीढ़ी

५१) पङ्कजपा འདམ་སྐྱེས་ཞབས།	ब्राह्मण		नागार्जुन के शिष्य
५२) घण्टपा དྲིལ་བུའི་ཞབས།	क्षत्रिय	वारेन्द्र नालन्दा (तन्ग्युर में ८६/१)	राजा देवपाल
५३) जोकिपा[1] (जोगीपा, योगीपा) ཛལ་འགྱུར་པ།	डोम	ओदन्तपुरी	शबरपा का शिष्य
५४) चलुकिपा (गहरी नींदवाला) གཉིད་ཆེན་ཞབས།	शूद्र	मङ्गलपुर (भङ्गलपुर)	मैत्रिपा का शिष्य
५५) गोधुरिपा (गुण्डरिपा) (पक्षी मारनेवाला ब्याध) བྱ་རྫོན་ཞབས།	ब्याध (चिड़ियामार)	डिसु नगर	लीलापा का शिष्य
५६) लुचिकपा ཀོག་ལང་མཁན་གྱི་ཞབས།	ब्राह्मण	भङ्गल देश (बंगाल देश)	
५७) नगुणपा (बिना गुणवाला) ཡོན་ཏན་མེད་ཞབས།	शूद्र	पूर्वदेश	
५८) जयानन्द རྒྱལ་བ་ཀུན་དགའ།	ब्राह्मण	भङ्गलपुर	

---

१. मिथिलादि स्थान के लोग 'य' को 'ज' का उच्चारण करते हैं, उनके उच्चारण के आधार पर यहाँ भी 'योगी' शब्द की जगह 'जोगी' हो गया है। 'जोकि' यहाँ 'क' तिब्बत के लोगों ने 'ग' के जगह अपभ्रंश कर दिया है।

५९) पचरिपा འཚོང་མཁན་ཞབས།	कहार	चम्पक	मीनपा का गुरु
६०) चम्पकपा ཙམ་པ་ཀ་པའི་ཞབས།	क्षत्रिय	चम्पक	
६१) भिक्षनपा (भिखनपा, भिक्षावाला) བསོད་སྙོམས་པའི་ཞབས།	शूद्र	सालिपुत्र	
६२) धिलिपा[1] (तिल्लीपा; तेल बेचनेवाला) མར་ནག་འཚོང་མཁན་ཞབས།	तेल वणिक	सतपुरी	
६३) कुम्भरिपा (कुम्भकार) རྫ་མཁན་ཞབས།	कुम्भकार (कुम्बकार)	जोमनश्री (?)	
६४) चरिपा སྤྱོད་གོས་པ།	चरवक[2] (चर्बरिपा)	मगध (पशुपालक)	कण्हपा की तीसरी पीढ़ी
६५) योगिनी मणिभद्रा རྣལ་འབྱོར མ་ནོར་བུ་བཟང་མོ།	गृहपति कन्या (वैश्य)	अगचे नगर	कुकुरिपा की शिष्या
६६) योगिनी मेखली རྣལ་འབྱོར་མ་སྐེ་རགས་ཅན་མ།	गृहपति कन्या	देवीकोट	कण्हपा की शिष्या

---

१. 'भलिपा' द्र० राहुल पुरातत्त्व पृष्ठ १५३

२. जंगलों में पशु चराकर अपनी जीविका चलानेवाले एक जाति। पशु-पालक, 'चारवक' यह शब्द नगरों से दूर रहने या सभ्यता से दूर रहनेवालों के नाम हैं। द्रष्टव्य आर्यदेव के ज्ञान सार-समुच्चय नामक ग्रन्थ की बोधिभद्र कृत वृत्ति में ति० तन्युर में।

६७) योगिनी कनखलापा (कनखल) རྣལ་འབྱོར་མ་ཟེགས་ མའི་གཡུལ་ཞབས།	गृहपति कन्या	देवीकोट	कण्हपा की शिष्या
६८) किलपा, किलिकिलि ཀུ་ཅོ་ཅན་ཞབས།	शूद्र	भिरिलिङ नगर	
६९) कन्तलिपा, कनालिपा གོས་ཧྲུལ་ཅན་གྱི་ཞབས།	जमादार	मणिभद्र (नगर)	
७०) धहुलिपा धगुलिपा རྩྭ་ཐགས་མཁན་ཞབས།	शूद्र	धोकर देश (थोकर)	
७१) उडिलिपा उधलिपा भी, (उड़नेवाले) འཕུར་བའི་ཞབས། (འཕུར་མཁན་ཞབས)	वैश्य	देवीकोट	कर्णरिपा का शिष्य
७२) कपालिपा ཐོད་པ་ཅན་ཞབས།	शूद्र	राजपुरी (नगर)	
७३) किरपालपा (किलपा) གཡེངས་བྱེད་ཞབས།	क्षत्रिय	ग्रहर (प्रहार, सहर)	
७४) सागरपा (सरोरूह) མཚོ་སྐྱེས་ཞབས།	क्षत्रिय	काञ्ची	राजा इन्द्रभूति (छोटा इन्द्रभूति)
७५) सर्वभक्ष ཐམས་ཅད་ཟ།	शूद्र	अभिर नगर (महर, सहर)	राजा हरिश्चन्द्र गुरु सरह (छोटे)
७६) नागबोधि ཀླུའི་བྱང་ཆུབ།	ब्राह्मण	पश्चिमी भारत	नागार्जुन के शिष्य

७७) दारिकपा ཚུང་མ་ཅན་ཞབས།	क्षत्रिय (राजा इन्द्रपाल)	सालिपुत्र (उड़ीसा)	समकालीन लुईपा
७८) पुतलिपा སྒྱུ་བརྙན་ཞབས།	शूद्र	भंगाल (बंगाल)	
७९) पनहपा, उपनहपा ལྷམ་མཁན་ཞབས།	चर्मकार	सेन्धो नगर	
८०) कोकिलपा (कोयलवाला) ཁུ་བྱུག་ཞབས།	क्षत्रिय	चम्पार्ण (चम्पारण)	
८१) अनङ्गपा ལུས་མེད་ཞབས། (ཡན་ལག་མེད་པའི་ཞབས)	शूद्र	घहुर (गौड़)	
८२) योगिनी, लक्ष्मीकर དཔལ་མཛོད་མ།	राजकुमारी	सम्भल नगर	राजा इन्द्रभूति
८३) समुद्रपा རྒྱ་མཚོའི་ཞབས།	शूद्र	सर्बडि (ह?) सर्वार, गोरखपुर, बस्ती जिला[1]	
८४) व्यालिपा (भालि, सर्प या व्याघ्रवाला) སྟག་ཅན་ཞབས། ཡང་ན་སྦྲུལ་ཅན་ཞབས།	ब्राह्मण	अपत्र देश (एपत्र)	नागार्जुन (वृत्तान्त के अनुसार)

---

१. राहुल, सं० पृ० १५४।

चौरासी सिद्धों से सम्बद्ध प्रतिमा निर्माण विधि[१]

१. लुहिपा

सिद्धों मे प्रथम लुईपा आते हैं[२]। लुईपा या आचार्य लुहिपा का शरीर दुबला-पतला एवं वर्ण साँवला है। उनके सामने मछली के आँत का ढेर लगा होना चाहिए। उनमें से एक मछली की आँत निकालकर अपने मुँह में डालकर खाते हुए, वे गम्भीर और प्रसन्न-मुद्रा में दिखाई देते हैं। छाती में हलके बाल और सिर पर हलकी-सी बँधी हुई जटा होनी चाहिए।

२. लीलापा

लीलापा राजा के रूप में सिंहासन पर बैठे हुए दिखाई देते हैं। वे चारों ओर से अपने मन्त्रियों एवं रानियों से परिवृत दिखाई देते हैं।

३. विरूपा

सामान्यत: प्रसिद्ध है कि विरूपा का स्वरूप एक मदिरा बेचनेवाली व्यवसायी की दूकान में बैठकर मदिरा पीते हुए दिखाई देता है। वस्त्र के रूप में मात्र एक छोटी-सी लंगोटी उनके शरीर पर होना चाहिए। मृगचर्म के बिछौने पर बैठे हों तथा सामने मदिरा बेचनेवाली एक स्त्री उन्हें मदिरा दे रही हो। वे अर्धासन-मुद्रा (एक पैर समेटा हुआ तथा दूसरा पैर कुछ फैला हुआ) में बैठे हों। मकान के ठीक सामने ऊपर आकाश में सूर्य-मण्डल चमकता हुआ दिखाई देना चाहिए। अन्य विशेषताएँ ये हैं—

सिर मुड़ा हुआ, पुष्प-मालाओं के अतिरिक्त अन्य आभूषणों का अभाव; उन्हें दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली से सूर्य की ओर इंगित करते हुए तथा बायें हाथ में रुरू: (जंगली मृग[१]) का सींग धारण किये हुए हों आदि।

---

१. मूल ग्रन्थ में यह शीर्षक बहुत लम्बा है। द्रष्टव्य तिब्बती पाठ में पृष्ठ ....।

२. यद्यपि यहाँ सिद्धों में से लूहिपा को प्रथम माना गया है, पर यह क्रम न तो कालिक है और न उपदेश-परम्परा अथवा ज्ञान-परम्परा का है, यह केवल एक गणचक्र विशेष में उपस्थिति का क्रम मात्र है। द्रष्टव्य डुब थबस् कुनतु० पृष्ठ....।

४. डोम्बिपा

डोम्बिपा (या डोम्बि हेरुक) को अस्थि-निर्मित षड्अलङ्कारों से अलंकृत होना चाहिए। उनके दाहिने हाथ में विषैले सर्प का चाबुक तथा सिर के पीछे सर्प का फन लहराता हुआ होना चाहिए। उनकी पत्नी उन्हें बायीं ओर से आलिङ्गन करती हुई दिखलाई देती हो। दोनों एक व्याघ्री पर सवार रहते है। व्याघ्री बच्चों को जन्म देकर, उसे दूध पिलाती हुई अवस्था में है।

५. शबरपा

शबरपा (या शबरिपा) का वर्ण साँवला है। उनके दाहिने हाथ में वाण और बायें हाथ में (विशेष) बाँस से निर्मित धनुष है। धनुष के एक छोर में मृत सुअर का ऊपरी आधा भाग तथा दूसरे छोर में उसका अधोभाग टँगा हुआ होना चाहिए। उन्हें फल और फूलों से निर्मित आभूषण तथा मोर की पिच्छों से बने अधोवस्त्र धारण किये हुए होना चाहिए। उनके दोनों ओर दोनों पत्नियाँ वाण एवं तरकश धारण किये खड़ी हों।

६. सरहपा

सरह या सरहपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में ब्रह्मसूत्र (जनेऊ) धारण किये हुए, गौरवर्ण एवं युवावस्था में दिखलाई पड़ना चाहिए। अर्धासन में बैठकर एक वाण को दोनों हाथों से सीधा करते हुए मुद्रा में होना चाहिए।

७ कङ्कारिपा

कङ्कारिपा या कङ्कालिपा योगी के वेष में श्मशान में आसीन, रंग से साँवले मुण्डित सिर तथा अलङ्कार रहित हों, उनके सामने बहुत बड़ी मात्रा में नरकङ्कालों का ढेर दिखलाई पड़ना चाहिए।

---

१. यहाँ रुरु: नामक मृग के सिंग का उल्लेख आया है। मूल पाण्डुलिपि में इस जानवर का नाम 'ग्ञन्' लिखा है। यह भोट देशीय नाम है। भिक्षु येशे दोन डुब तन पई ग्यलछन कृत चिकित्साशास्त्र 'जेछरमिगग्यन' में 'ग्ञन्' (ञन्) नामक जानवर को अमरकोष में उल्लिखित कृष्णसार:; रुरू; न्यङ्कु:; एण: आदि का पर्याय बताया गया है। द्रष्टव्य पृ० १६। फोटो संस्करण नं० २३२, दिल्ली सं० १९१७। परन्तु अमरकोष की व्याख्या-सुधा में कृष्णसार:; रुरू:; न्यङ्कु: आदि मृग के भेद माने गये हैं। द्र० अ० १०, सिंह व०।

८. मीनपा[१]

मीनपा मछली का पेट फाड़कर उसमें से निकलते हुए, जिनके दोनों पैर अभी मछली के पेट में ही घुसे हुए हों ऐसा दिखलाई पड़ना चाहिए। शरीर का वर्ण साँवला और अलङ्कार रहित तथा उनके दोनों हाथ नृत्य-मुद्रा में होना चाहिए।

९. गोरक्ष

गोरक्ष का वर्ण गौर तथा सिर मुण्डित होना चाहिए। वे समाहित-मुद्रा में हों। उनके कानों में कृष्णमृग[२] सींगों से निर्मित सिक्के के आकार के कुण्डल तथा कण्ठ में शंख और सींग से निर्मित आभूषण हों। वे निर्वसन या 'चक्रकन्त' नामक (विशेष) वस्त्र पहने हों। गो समुदाय को लक्षित करने के लिए सामने कुछ गाय की प्रतिमा भी हो।

१०. चौरङ्गीपा

चौरङ्गीपा राजकुमार के रूप में एक वृक्ष के मूल में समाहित मुद्रा में बैठे हुए और हलकी-सी जटा बाँधे हुए हों। उनके बगल से कुछ व्यापारी प्रभूत धन-सम्पत्ति लेकर जाते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

११. वीणापा

वीणापा सिर पर पगड़ी बाँधे हुए पूर्ण राजकुमार के रूप में हों। वे तीन तारों वाली वीणा नामक वाद्ययन्त्र को बजाते हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

१२. शान्तिपा

शान्तिपा भिक्षु के रूप में सिर पर पण्डितोचित टोपी पहने हों। उनका दाहिना हाथ धर्मोपदेश की मुद्रा में हो तथा बायें हाथ में पोथी रखी हुई हो। पद्मासन लगाकर वे शान्त-मुद्रा में स्थित हों। शरीर में कुछ-कुछ वृद्धावस्था का रूप झलकना चाहिए।

---

१. मीनपा या मत्स्येन्द्र या मत्स्येन्द्रनाथ के एक ही व्यक्ति होने के कुछ प्रमाण मिलते हैं। द्र० डुब थब० कु० पृ०....।

२. कृष्ण-मुद्रा, मूल०...।

१३. तन्तिपा

तन्तिपा योगी के वेश में तथा अत्यन्त वृद्ध के रूप में दिखलाई पड़ें। उनको कपड़ा बुनने के औजार लेकर तन्तुओं से कपड़ा बुनते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

१४. चमरिपा

चमरिपा चर्मकार एवं योगी के वेश में जूता बनाते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

१५. खड्गपा

खड्गपा- जटा बाँधे हुए योगी के वेश में तलवार लेकर आकाश में उड़ते हुए दिखलाई दें। समीप में नीचे जमीन पर एक स्तूप हो, जिसके अन्दर विराजमान आर्यलोकेश्वर की मूर्ति के कुछ भाग बाहर से भी दिखलाई पड़ रहे हों। स्तूप के नीचे से एक बहुत बड़े सर्प का आधा शरीर बाहर निकलता हुआ दिखलाई पड़ना चाहिए।

१६. नागार्जुन

नागार्जुन भिक्षु रूप में, अत्यन्त सुन्दर एवं श्याम वर्ण के हों। उनका सिर का मध्य भाग हलका-सा उष्णीय उभरा हुआ हो। उनके सिर के पीछे से ऊपर की ओर सात नाग अपने सात फनों को फैलाये हुए स्थित हों। कहीं-कहीं फनों की संख्या आठ भी दिखलाई पड़ती है। यदि महापुरुष लक्षणों एवं अनुव्यञ्जनों से युक्त प्रतिमा के प्रति अधिक अभिरुचि हो तो ऐसे लोगों के लिए इनका दिव्य-काय चक्रवर्ती राजा के रूप में भी बनाया जा सकता है।

१७. कृष्णपा

कृष्णपा या कृष्ण चर्मपा पूर्ण योगी, जटाशिखा बाँधे हुए; छः प्रकार के अस्थि आभूषणों से भूषित, व्याघ्र-चर्म का अधोवस्त्र पहने, रंग के साँवले, हाथ में डमरू और कपाल धारण किये, बाहुहों में त्रिशूल धारण किये हुए, बैताली या राक्षसी पर सवार हों। उनके ऊपर आकाश में स्वतः घूमते हुए सात छत्र और स्वतः बजते हुए सात डमरू विद्यमान हों।

१८. आर्यदेव

आर्यदेव या कर्णरिपा भिक्षु के रूप में, करन नामक वृक्ष की बड़ी-सी पत्ती हाथ में लिए हों।

१९. थकनपा

थकनपा योगी के रूप में एक वृक्ष के मूल में आधे लेटे हुए (कोई कलाकार वृक्ष के मूल में खड़े भी बना देते हैं) हों। आसपास दोनों ओर नगर का चिह्न तथा उनके सामने एक भिक्षु आकर उनसे कुछ बातें करते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

२०. नरोपा

नरोपा या नड़पा का वर्ण गहरा नीला या नील और रक्त का मिश्रण है। वे जटा, शिखा एवं मुकुट धारण किये हुए हों। शरीर पर नर-चर्म धारण किये हुए तथा उस नर-चर्म के हाथ और पैर अपने हाथों से पकड़े हुए हों। दोनों पैर नृत्य-मुद्रा में हों अथवा एक पैर सिमटा हुआ और दूसरा पैर फैला हुआ हो।

२१. श्यालिपा

श्यालिपा एक योगी के वेश में हों तथा एक भेड़िये का शव अपने कन्धों पर उठाये हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

२२. तिल्लिपा

तिल्लिपा या तिलोपा के शरीर का रंग गहरा नील है। वे तिल कूटते हुए मुद्रा में दिखाई पड़ते हों। सामने उनकी पत्नी एक पात्र लेकर उनके ओखली में तिल डालती हुई दिखाई पड़ती हो।

२३. चत्रपा

चत्रपा एक भिक्षु के रूप में बहुत से पोथियाँ पीठ पर उठाये हुए तथा एक छोटी-सी पोथी या पुस्तक हाथ में लिए खड़े हों या उन्हें बैठे हुए अध्ययन-अध्यापन की मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

२४. भद्रपा

भद्रपा जनेऊ धारण किये हुए, सुलझे हुए बाल संवारकर, शिखा बाँधे हुए, कर्णाभूषण आदि हलके रत्नाभूषण पहने हों, सामने मदिरा से भरा कलश और सुअर का माँस (पूरा शव) रखे हुए दिखलाई पड़ना चाहिए। उनके दाहिनी ओर एक उच्च शिला पर (उनके) गुरु एक योगी के रूप में बँधी हुई जटा-शिखा वाले विराजमान हों, ऐसा बनाना चाहिए।

२५. धुखन्तिपा

धुखन्तिपा श्मशान के बहुत से चिथड़े इकट्ठे करके अपने हाथ से सिलते हुए मुद्रा में बनाये जायें।

२६. अयोगीपा

अयोगीपा या अजोकिपा एक योगी के रूप में श्मशान में लम्बा होकर सोये हुए मुद्रा में बँधी हुई जटा वाले बनाये जायें।

२७. कल-कलपा

कलकलपा सुन्दर रूपवान, हलकी जटा-शिखा बाँधे हों। श्मशान में समाहित-मुद्रा में विराजमान हों।

२८. धोबीपा

धबीपा किसी पात्र या नदी में पुराने कपड़े धोते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

२९. कङ्कनपा

कङ्कनपा एक योगी के वेश में अपने हाथ के कंकण की ओर देखते हुए समाधि लगाकर बैठे हों और उनके ऊपरी ओर आकाश में बहुत से देवी-देवता उनकी पूजा कर रहे हों ऐसा दिखलाना चाहिए।

३०. कम्बलपा

कम्बलपा, भिक्षु रूप में हों, अपने शरीर के बराबर जमीन खोदकर, उस गड्ढे के अन्दर बैठकर, गड्ढे के मुख पर चारों ओर सूखे नर-मुण्डों के घेरे को देखते हुए भावना की मुद्रा में, अथवा किसी पर्वत की गुफा के अन्दर समाहित-मुद्रा में बैठे हुए दिखलाई पड़ते हों।

३१. डिङ्गिपा

डिङ्गिपा या डिङ्गिरिपा एक पात्र में या ओखली में धान को मूसल से कूटते हुए तथा उससे निकालकर धोते हुए अवस्था में दिखलाये जायें। उनके एक ओर मदिरा बेचनेवाली एक स्त्री अवश्य बैठी हो।

३२. भद्‌देपा

भद्देपा (भन्देपा) एक राजकुमार के रूप में बैठे हों। उन्हें एक भिक्षु भिक्षा-पात्र को जो हाथ में लेकर आकाश मार्ग से उड़रहा हो, ऐसे आकाशीय दृश्य को देखते हुए सामने खड़े देवशिल्पज्ञ विश्वकर्मा से बातें करते हुए दिखाया जाय।

३३. तन्देपा

तन्देपा या तन्तेपा एक योगी के रूप में जूआ खेलते हुए अवस्था में दिखलाये जाय।

३४. कुकुरिपा

कुकुरिपा या कुकुराजा योगी के रूप में अस्थि-आभूषण पहने जटाधारी, बड़ी प्रसन्न-मुद्रा में अपनी गोद में एक कुतिया बैठाये हुए दिखलाये जायें।

३५. कुचिपा

कुचिपा एक योगी के रूप में हों, गले के पीछे एक गाँठ उभरी हुई हो, कुछ अप्रसन्न-मुद्रा में बैठे हों। उनके सामने आचार्य नागार्जुन विराजमान हों, इस रूप में दिखलाये जायें।

३६. धर्मपा

धर्मपा ब्राह्मण पुरोहित के रूप में विराजमान हों और उनके आस-पास बहुत-सी पोथियाँ रखी हों।

३७. महिपा

महिपा स्थूल अंगों से युक्त हों, गले में उभरे हुए माँस पर हलकी-सी झुर्रियाँ पड़ी हुई हों। अन्य लोगों को शारीरिक बल प्रतियोगिता की मुद्रा में दिखाया जाय।

३८. अचिन्तपा

अचिन्तपा एक लकड़हारे योगी के रूप में जंगल में लकड़ी काटते हुए या लकड़ी काटकर उसे उठाकर चलते हुए अवस्था में या वन में एक वृक्ष के मूल में आधा लेटे हुए कुछ गम्भीर सोच-विचार की मुद्रा में हों।

३९. भवहिपा

भवहिपा (भवह, भातख, बतखपा आदि) राजा के रूप में, हाथ में अमृत भरे कपाल को धारण किये दिखलाई पड़ते हों। उनके बायीं ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन करती हुई दिखलाई पड़ती हों।

४०. नलिपा

नलिपा योगी के रूप में किसी झील के तट पर बैठे हुए पद्म-युक्त सरोवर से पुष्प सहित पद्ममूल तोड़ते हुए दिखलाये जायें।

४१. भुसुकुपा

भुसुकुपा (शान्तिदेव) भिक्षु के रूप में चारों ओर भिक्षु संघ से परिवृत्त लालिमायुक्त गौरवर्ण, एक ऊँची गद्दी पर बैठे हुए, दिखलाई पड़ना चाहिए। शारीरिक स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो। हाथ प्रवचन-मुद्रा में गद्दी से आकाश की ओर कुछ उठे हुए हों।

४२. इन्द्रभूति

इन्द्रभूति राजा के रूप में विराजमान दिखलाई पड़ना चाहिए। वे चारों ओर से अनेक प्रकार के नृत्य, संगीत और वाद्य-यन्त्र बजानेवाली स्त्रियों से परिवृत हों।

४३. मेकोपा

मेकोपा पूड़ी बेचते हुए एक योगी के रूप में, सामने नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ फैलाकर, उसे बेचने के लिए उद्यत दिखलाई पड़ते हों।

४४. कुदालिपा

कुदालिपा (कोदलिपा) सिर पर पगड़ी बाँधकर, कुदाल लेकर जमीन खोदते हुए दिखलाई पड़ते हों।

४५. कमरिपा

कमरिपा (कम्परिपा) योगी के रूप में लोहार का काम करते हुए हों। अर्थात् तपते हुए लोहे को पीटते हुए आस-पास निहाई, सँड़सी, हथौड़े, भाथी, अंगार आदि लोहार के औजारों से घिरे हुए दिखलाई पड़ते हों।

४६. जालन्धरपा

जालन्धरपा एक योगी के रूप में जटा-शिखा, अस्थि-आभूषणों से विभूषित हों। उनका एक पैर पीछे से मोड़कर कन्धे पर चढ़ा हुआ तथा दूसरा पैर फैला हुआ हों। वे धरती पर घुटने के बल पर बैठे हुए हों। दोनों हाथों की तर्जनियों के अग्रभाग मिले हुए और शेष उँगलियाँ परस्पर आलिङ्गित मुद्रा में सिर के ऊपर उलटकर रखी हुई हों। सामने उनकी कर्म-मुद्रा (अर्थात् पत्नी) उन्हें दण्डवत प्रणाम करती हुई दिखलाई पड़ती हों।

४७. राहुलपा

राहुलपा श्मशान में बैठे हुए हों। शरीर का रंग नीला तथा उसमें हलका बुढ़ापा झलक रहा हो। सिर के बाल मुंडे हुए हों और वे श्मशान में आवरण रहित नग्नावस्था में पड़े हुए स्त्री के विकृत शव को देखते हुए समाहित मुद्रा में बैठे हुए हों।

४८. धर्मपा

धर्मपा एक वृद्ध भिक्षु के रूप में हाथ में पोथी लिए हुए हों।

४९. धोकरिपा

धोकरिपा एक बड़े-से झोले के अन्दर एक बड़ा पात्र डालकर भिक्षा माँगते हुए खड़े हों।

५०. मेधिनपा

मेधिनपा योगी के रूप में दो बैलों के कन्धों पर जुआ रखकर, हल लेकर खेत जोतते हुए दिखलाई पड़ते हों।

५१. पङ्कजपा

पङ्कजपा ब्राह्मणकुमार के रूप में एक कमलयुक्त सरोवर के तट पर स्थित आर्य-अवलोकेश्वर के मन्दिर के अन्दर स्थित आर्यलोकेश्वर की मूर्ति की पूजा करते हुए, भिक्षु का तथा पूजा के दृश्य का अवलोकन करते हुए, खड़े दिखलाई पड़ते हों।

नोट— इनके वृत्तान्त में लोकेश्वर को ईश्वर (महेश्वर) के रूप में समझने का भ्रम होने की बात कही गई है। अतः इस लोकेश्वर को लाल वर्ण, बायें हाथ में पद्म और दाहिने हाथ से उस की पंखुड़ियाँ खोलते हुए, पत्नी के द्वारा बायीं ओर से आलिङ्गन करते हुए तथा दोनों ओर त्रिशूल और कपाल रखे हुए होना चाहिए[१]।

५२. घण्टपा

घण्टपा (गण्टापा) योगी के रूप में शरीर पर अस्थि के आभूषण, व्याघ्र-चर्म का अधोवस्त्र, जटा-शिखा आदि से सुसज्जित हों। रंग के साँवले, वज्र और घण्टा हाथ में धारण किये हुए कर्म-मुद्रा से आलिङ्गत हों।

कर्ममुद्रा-साक्षात् वज्र-योगिनी, लाल रंग हाथ में कुब्जखङ्ग (शस्त्रविशेष) और कपाल धारण किये हों, (दोनों) आकाशमार्ग से चलते हुए दृष्टिगोचर हों। अथवा सहज चक्रसंवर की प्रतिमा की तरह दाहिना पैर आगे फैला हुआ एवं बायाँ पैर किञ्चित् समेटा हुआ हो। आकाश मार्ग से गमन को परिलक्षित करने के लिए (दोनों मूर्तियों को) बादल के बीच में बैठे हुए दिखलाना चाहिए।

नीचे की धरती से पाताल को फोड़कर पानी निकलता हुआ दिखलाई दे, जिसमें नगर का आधा भाग डूबा हुआ हो। उस झील-सदृश पानी के बीच से आर्य-लोकेश्वर-ख-सर-पाणि की एक मूर्ति का आधा भाग निकला हुआ दिखलाई पड़ना चाहिए।

---

१. यह नोट मूल पाण्डुलिपि में एक साथ लिखी हुई है। अतः यहाँ अनुवाद एक साथ कर दिया है।

५३. जोकिपा

जोकिपा या योगीपा एक योगी के रूप में, निर्वसन, हाथ में दण्ड लिए हुए, अपनी सभी सामग्री एक कपड़े में बाँधकर उसे डण्डे के एक ओर लटकाकर कन्धे पर रखे हुए चलने की मुद्रा में दिखलाई दें।

५४. चालुकिपा

चालुकिपा योगी का वेश धारण किए हुये मृगचर्म का बिछौना बिछाकर एक बहुत बड़े से मसलन को तकिये के रूप में रखकर सोये हुए हों। सामने बड़ा-सा भावना-स्तम्भ गड़ा हुआ हो, ऐसा बनाना चाहिए।

५५. गोधुरिपा

गोधुरिपा या गुण्डरिपा-योगी के वेश में हों। अधोवस्त्र के नाम पर पत्तियों से बना गमछा पहने हों। सिर मुंडा हुआ हो। जाल बिछाकर चिड़िया का शिकार करने की मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

५६. लुचिकपा

लुचिकपा-ब्राह्मण के वेश में हों। बाल और दाढ़ी चिमटी से उखाड़ने के कारण ऊबड़-खाबड़ अवस्था में दिखलाई पड़ना चाहिए।

५७. नगुणपा

नगुणपा एक योगी के रूप में हों। पलंग के सहारे पीठ टिकाकर भोजन करती हुई मुद्रा में हों। उनके सामने एक योगी बैठे हुए दिखलाई पड़ें।

५८. जयानन्द

जयानन्द एक राजमन्त्री के रूप में हाथ में झांझड़ी नामक वाद्ययन्त्र लेकर नाना प्रकार अन्न के बलि का दान करते हुए दिखलाई दें। उनका शिष्य-परिवार मृदंग, बाँसुरी, झांझर, वीणा आदि बजाते हुए चारों ओर से घेरकर बैठा हो।

५९. पचरिपा

पचरिपा योगी के रूप में वृक्ष के मूल में बैठे हों। उनका सिर मुंडा हुआ, केवल एक त्रिकोनी लंगोटी मात्र धारण किये हुए हों। कचौड़ी का आधा भाग लेकर उसे

खाते हुए दिखलाई दें। उनके सामने आर्य लोकेश्वर या उनके निर्माणकाय के रूप में एक भिक्षु विराजमान हो।

६०. चम्पकपा

चम्पकपा, राजा के रूप में अपने उपवन में गद्दी पर विराजमान हों। उनके चारों ओर चम्पक नामक वृक्ष सुशोभित हों। उन वृक्षों की शाखाएँ गोल आकार की, पत्तियाँ गहरे हरे रंग की और उनके फूल सफेदी लिए हुए पीले रंग के हों।

६१. भिखनपा

भिखनपा तुम्बी-पात्र धारण किये हुए हों। उनके सामने उपस्थित धर्म-उपदेश देने की मुद्रा में बैठी एक डाकिनी हो, जो स्वभाव से अत्यन्त शान्त, बिना सँवरे लम्बे बाल, थोड़े अस्थि-आभूषण से सजी हुई हो, वे उसे अपने दाँत निकालकर समर्पित करते हुए दिखलाई पड़ें।

६२. घिलिपा

घिलिपा विविध प्रकार के तेल के पात्र इकट्ठे करके तेल बेचने की मुद्रा में हों। उनके समीप नाना प्रकार की भोजन-सामग्रियों से सजे मंच के सामने एक पण्डित धर्म-उपदेश की मुद्रा में विराजमान दिखलाई देना चाहिए।

६३. कुम्भरिपा

कुम्भरिपा, कुम्भ या मिट्टी के बर्तन बनाने के कार्य में लगे हुए हों। उनके आस-पास अपनी स्त्री तथा बाल-बच्चे बैठे हों।

६४. चपरिपा

चपरिपा एक योगी के वेश में मेखली[१] (अर्थात अलफी नामक) वस्त्र पहने हुए हों। वे एक वृक्ष के नीचे बैठे हों। उनके एक ओर जलती हुई आग और उसमें

---

१. मेखली वस्त्र उस वस्त्र को कहते हैं, जिसमें एक लम्बी पट्टी के बीच से सिर निकालने की जगह हो, उसका एक छोर सामने से और दूसरा छोर पीछे पीठ के ऊपर से नीचे की ओर लटकता हुआ फैल जाता है। उसे कमरबन्ध या मेखले के द्वारा बाँध देने पर वह पूरे शरीर को ढकनेवाला वस्त्र बन जाता है।

नोट— इस अंश को पाण्डुलिपि में मूल पाठ के साथ ही रखा है। द्र० पृ० ८,९, दिल्ली फो० ४१९७३

से धुआँ निकलता हुआ दिखाई दे तथा दूसरी ओर रसायन भरा बड़ा-सा बर्तन रखा हुआ हो। योगी स्वयं एक वृक्ष की बड़ी-सी पत्ती लेकर उस रसायन द्रव्य में डुबो-डुबोकर आस-पास के लोगों पर छिड़क रहे हों। उनके सामने एक स्त्री अपने बच्चे के साथ हाथ जोड़कर बैठी हुई हो। उस स्त्री के पीछे नगर के अनेक लोग आते हुए दिखलाई दें।

उस मूल वृक्ष वाले स्थान से कुछ दूरी पर एक गुफा हो। जिसके अन्दर एक ही आसन पर बीच में एक देवता, उसके दाहिने ओर उससे कुछ छोटे आकार के एक देवता तथा बाँयीं ओर एक देवी, तीनों एक साथ विराजमान हों।

६५. योगिनी मणिभद्रा

योगिनी मणिभद्रा सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित, एक गृहिणी स्त्री के रूप में उड़कर आकाश प्रदेश में विराजमान हो। उनके नीचे की धरती पर एक बड़े से पानी के गड्ढे के टूटने से चारों ओर बिखरे हुए उसकी टुकड़ियों का दृश्य दिखलाई दे।

६६. योगिनी मेखली

मेखली निर्वसन अर्थात् वस्त्र रहित और योगिनी के अनुरूप अस्थि आभूषणों से विभूषित हो। बायें बाहु में त्रिशूल धारण किये हुए, बिना सँवरे बाल, अपने मुँह से एक तलवार निकालकर दाहिने हाथ में लेती हुई तथा बायें हाथ में नर-कपाल धारण किये हुए हों।

६७. योगिनी कनखला

योगिनी कनकखला उपर्युक्त मेखला के आकार की ही हों। इनकी विशेषताएँ ये हैं कि दाहिने हाथ में कुब्जखड्ग नामक शस्त्र, बायें हाथ में अपना सिर काटकर लिए हुए दिखलाया जाता है। परन्तु साधारण लोगों की कल्पना में यह दृश्य अच्छा नहीं लगता। लोग ऐसा बनाना नहीं चाहेंगे, अत: वे आर्य छिन्नमस्तका योगिनी के प्राचीन चित्रों के अनुसार अपना सिर काटकर हाथ में रखी हुई तो बनाते हैं पर शरीर के साथ भी एक सिर बना देते हैं। तदनुसार यहाँ भी शरीर के साथ सिर बनावें तो अनुचित नहीं होगा।

ये दोनों योगिनी मेखला और कनखला आकाश में बैठी, दोनों पैर नृत्य-मुद्रा में अर्थात् दाहिना पैर फैलाये हुए और बायाँ पैर समेटते हुए तथा एड़ी उठाकर अंगुलियों के अग्रभाग से धरती पर स्पर्श करते हुए[१] दिखलाई जाती हो।

६८. कलकलपा

कलकलपा एक योगी के वेश में गहरे नीले रंग के और श्मशान में विराजमान हों। उनके समक्ष कुछ ऊँचे स्थान पर अस्थि-आभूषणों से विभूषित एक योगी उन्हें धर्म-उपदेश देते हुए दिखलाई दें। योगी के हाथ उपदेश-मुद्रा में हों।

६९. कन्तलिपा

कन्तलिपा कपड़ा सिलते हुए योगी के वेश में बैठे हों। उनके सामने की ओर बैठी एक डाकिनी धर्मोपदेश-मुद्रा में उन्हें देशना दे रही हों।

७०. धगुलिपा

धगुलिपा-घास से रस्सी बनाते हुए योगी के रूप में रस्सियाँ बेचते हुए दिखलाई पड़ते हों।

७१. उडलिपा

उडलिपा-एक योगी के रूप में सिर पर पगड़ी बाँधे हों। शरीर पर चोला पहने, हलके रत्न-आभूषण, सँवरी हुई दाढ़ी और आश्चर्य के साथ आकाश की ओर देख रहे हों। उनके सामने के आकाश पर पञ्चरंगी बादल छाये हुए हों। उन रंगीन बादलों में घोड़ा, हाथी तथा विविध पक्षियों का आकार बना हुआ हो और बादलों के नीचे दो हंस उड़ते हुए जा रहे हों।

उडलिपा के समक्ष एक दूसरे योगी हाथ में वृक्ष की पत्तियाँ लिए हुए दिखलाये जाते हों।

७२. कपालिपा

कपालिपा-रंग के साँवले श्मशान में पड़े एक स्त्री के शव के कपाल को निकालकर हाथ में लिए हों, वे सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित हों।

---

१. इन शारीरिक अंगक्षोपण-मुद्राओं का आन्तरिक चित्त, वायु, नाड़ी मण्डल और ज्ञान आदि से विशेष सम्बन्ध रहता है। द्रष्टव्य, चक्रसंवर आदि तन्त्र, कंग्यु० पृ०...।

७३. किरपालपा

किरपालपा सुन्दर रूप रंग के एक योगी हैं। क्रोध से उनके चेहरे पर कुछ रेखाएँ उभरी हुई हों। रत्न-शिखा और पञ्चशिखावाले मुकुट पहने हुए हों। बाल के नीचे की सीमा पर रेशमी 'वीरसिरबन्धन' बाँधे हुए हों। उनके बाल दोनों ओर बँधे हुए सुवर्ण-सिकड़ी को अन्दर से निकालकर नीचे की ओर लहराते हुए हों। वे तलवार एवं ढाल हाथों में लिए राजगद्दी पर विराजमान हों।

७४. सागरपा

सागरपा-भिक्षु के रूप में हों। उनके समक्ष आर्य अवलोकेश्वर खड़े हों।

७५. सर्वभक्षपा

सर्वभक्षपा-एक योगी हैं। उनके सामने एक बहुत बड़े पात्र में विविध खाद्य-पदार्थ भरे हों; जिन्हें निकालकर वे खाने की मुद्रा में दिखलाई पड़ते हों।

७६. नागबोधि

नागबोधि-एक भिक्षु के रूप में समाहित-मुद्रा में विराजमान हों। उनके एक ओर गुफा के अन्दर एक भिक्षु हो, जिसके सिर से मृग का सींग निकला हुआ हो तथा वे समाहित अवस्था में विराजमान दिखलाई पड़ते हों।

७७. दारिकपा

दारिकपा-एक योगी हैं। वे जटा, अस्थि-आभूषण, हाथ में वज्र और घण्टी धारण किये हुए हों। अनेक स्त्री-परिवारों के साथ वे आकाश मार्ग से उड़ते हुए जा रहे हों और नीचे धरती पर बहुत बड़ा जन-समूह आचार्य की ओर देखरहा हो। एक स्थल पर एक बहुत लम्बे शिला-स्तम्भ के ऊपरी भाग पर एक पत्थर के हाथी की बहुत बड़ी प्रतिमा रखी हुई हो।

७८. पुतलिपा

पुतलिपा-एक योगी हैं। ''हेवज्र'' का थंका (पटचित्र) टाँगकर उसके समीप वे राजा के साथ कुछ वार्तालाप करते हुए दिखलाई पड़ते हों।

७९. पनहपा

पनहपा-एक योगी हैं। वे घुंघुरु आदि अनेक अलङ्कारों से ग्रथित जूते पहनकर दौड़ते हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ते हों।

८०. कोकिलपा

कोकिलपा एक राजा के रूप में दिखलाई पड़ते हों। वे अनेक फल-फूलों से लदे उपवन में गद्दी पर विराजमान हों। उनके आस-पास बहुत सारी युवतियाँ नृत्य, संगीत, करती हुई एवं विविध वाद्ययन्त्रों को बजाती हुई विद्यमान हों। कुछ युवतियाँ स्नान कर रही हों। उपवन के वृक्षों पर बहुत-सी कोयलें बैठी हुई हों। राजा उनके सामने उपस्थित एक भिक्षु से वार्तालाप कर रहे हों।

८१. अनङ्गपा

अनङ्गपा-अत्यन्त सुन्दर रूपवाले भिक्षु के रूप में दिखलाई पड़ते हों। वे झोपड़ी के अन्दर बैठे हों और एक अति सुन्दर भिक्षु सामने आकर उनसे भिक्षा माँग रहा हो।

८२. योगिनी लक्षिङ्कर

लक्षिङ्कर या लक्ष्मीकर श्मशान में बैठी हों। उनके बाल बिखरे हुए तथा हाथ में कुब्ज-खड्ग और नरकपाल हो। बायें बाहु में त्रिशूल धारण किये हुए तथा अस्थि-आभूषण पहनी हुई हों। इन्हें पगली के रूप में भी प्रतिबिम्बित किया जाता है।

८३. समुद्रपा

समुद्रपा-एक योगी हैं। वे समुद्र और नगर के बीच के रास्ते से गुजरते हुए दिखलाए जायें, सिर पर पगड़ी बाँधे हों। उनके समक्ष सिद्ध अचिन्तपा निर्वसन हों, फैली हुई जटावाले तथा प्रवचन-मुद्रा में बैठकर उन्हें उपदेश दे रहे हों।

८४. व्यालिपा

व्यापिला-ये ब्राह्मण पुरोहित के रूप में विराजमान हों। सामने बड़ा-सा पात्र तथा आस-पास और भी छोटे-मोटे बर्तन रखे हों; जिनमें रसायन द्रव्य भरे हों। स्वयं

उन रसायन द्रव्यों का प्रयोग करते हुए बहुत से लोहे को सोने में परिणत करने में कार्यरत हों। उनके बायीं ओर उनकी पत्नी, बाल-बच्चे और लड़के की पत्नी तथा एक घोड़ी भी हो।

उनके समीप समुद्र के पानी से एक पहाड़ निकलता हुआ दिखलाई दे तथा उस पहाड़ के ऊपरी भाग पर एक सुन्दर कुटिया बनी हो।

समाप्तम्

इस प्रकार चौरासी सिद्धों के चित्र (या मूर्ति) बनाने की विधि उनके जीवन वृत्तान्त के अनुरूप, भट्टारक तारानाथ के मत को बिना विकृत किये यहाँ यथावत लिखी गयी हैं।

इसे रिखा-रिग्जिन-छेवङ्-नोर बु द्वारा सिक्किम ङ्ग-रिरिवोइ द्व्येन् ग्नस् में लिखा गया है[१]।

॥ भवतु सर्वमङ्गलम् ॥

अनुवादक- आचार्य सेम्पा दोर्जे

---

१. इस मूल ग्रन्थ का भट्टारक तारानाथ कृत 'सिद्धों के चित्र लिखने की विधि' नामक ग्रन्थ है। उसके अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण एवं भ्रष्ट हो जाने पर उस ग्रन्थ के आधार पर श्री 'छेवंग नोरबु' ने इस ग्रन्थ को तैयार किया है।

विस्तृत जानकारी के लिए भूमिका देखें।